प्रस्तावना.



आ अनादि अनंत संसारचक्रमां सर्व जीवो देव, मनुष्य, तिर्यंच अने नारकी ए चार गतिमां पोतपोताना करेला कर्मने अनुसारे अनादिकाळथी परिभ्रमण कर्या करे छे. तेओ ज्यांसुधी सर्व शुभाशुभ कर्मनो क्षय करी केवळज्ञान प्राप्त करी मुक्तिपुरीमां पहोंचता नथी त्यांसुधी निरंतर तेमने भवभ्रमण शरु रहे छे, माटे संसारथी मुक्त थवाने इच्छनार प्राणिए मोक्ष प्राप्त करवा माटे सतत उद्यम करवो जोइए. ए ज आ मनुष्यभव प्राप्त थयानुं सत्फळ छे. ते मोक्ष प्राप्त करवाना उपाय मात्र ज्ञान, दर्शन अने चारित्र ए त्रण ज श्री वीतरागे प्ररूप्यां छे. ते सिवाय बीजा कोइपण उपायथी कोइपण शास्त्रमां मोक्षप्राप्ति कही नथी, ते निर्विवाद छे. श्री तीर्थंकरोए तीर्थनी स्थापना वखते "उप्पज्जए वा विगमए वा, धुवए वा" आ त्रिपदीनो उपदेश गणधरोने आपेलो छे अने ते त्रिपदी उपरथी ज गणधरोए समग्र द्वादशांगी रची छे. ते समग्र द्वादशांगी ज्ञान, दर्शन अने चारित्रने ज मोक्षना उपाय तरीके प्रतिपादन करे छे. शास्त्रोना मुख्य चार विभाग पाडेला छे—द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग, चरणकरणानुयोग अने धर्मकथानुयोग. तेमां आ छठुं अंग धर्मकथानुयोग संबंधी होवाथी तेनुं नाम श्रीज्ञाताधर्मकथांग राखवामां आव्युं छे.

आ तथा बीजा सर्व अंग, उपांगादिक आगमो बाळ, गोपाळ, स्त्री विगेरे सर्वने एकांतपणे समान उपकार करवाना हेतुथी पूज्य गणधरोए अर्ध मागधी भाषामां रचेला छे. तेमां आ चालता श्री वर्धमान स्वामीना तीर्थमां अग्यार गणधरो थया छे, तोपण

जूदा जूदा कारणोने लीधे दश गणधरोनी परंपरा चाली नथी, मात्र एक पांचमा गणधर श्रीसुधर्मास्वामीनी ज पाट परंपरा चाली छे अने तेमने ज श्री वर्धमानस्वामीए पोतानी पाटपर स्थापन कर्या छे. अने तेमनी रचेली द्वादशांगीनी ज अनुज्ञा आपी छे. तेथी हालना वर्तमान सर्व आगमोना कर्ता श्रीसुधर्मास्वामी ज छे. तेमणे पोताना मुख्य शिष्य श्रीजंबूस्वामीने संबोधीने आगमोनी रचना करी छे, एटले के जंबूस्वामीना प्रश्न अने श्रीसुधर्मास्वामीना उत्तर. तेमां पण उत्तर आपती वखते प्राये सुधर्मास्वामीए कह्युं छे के– अमुक वखते अमुक उद्यानमां समवसरेला श्रीमहावीरस्वामी पासे प्रथम गणधर श्री गौतमस्वामीए प्रश्न कर्या हता, तेना उत्तरमां भगवान श्रीमहावीर स्वामीए आ प्रमाणे कह्युं हतुं. आवा प्रकारनी सूत्ररचना स्पष्ट रीते जणावे छे के श्रीगौतम स्वामीए के श्री सुधर्मास्वामीए कोइपण प्ररूपणा पोते स्वतंत्र करी नथी, परतु 'भगवान श्रीमहावीर स्वामीए जे प्रमाणे कह्युं छे ते प्रमाणे हुं कहुं छुं' एम कहीने गुरुनी परतंत्रता मुख्यपणे सूचवी छे, अने 'आणाए धम्मो'='गुरुनी आज्ञाथी ज धर्म छे' ए वचनने संपूर्ण मान आपवुं ए ज धर्मनुं मुख्य अंग गणेलुं छे.

तेमज श्रीजंबूस्वामी प्रश्न पूछतां वखत कहे छे के—"भगवान् श्री महावीर स्वामीए पांचमा अंगनो तमे कह्यो ते प्रमाणे अर्थ कह्यो छे, तो पछी भगवान श्री महावीर स्वामीए छठ्ठा अंगनो शो अर्थ कह्यो छे ?" तेना उत्तरमां श्रीसुधर्मा स्वामीए कह्युं छे के—"भगवान श्री महावीर स्वामीए छठ्ठा अंगना बे श्रुत स्कंध कह्या छे, ते आ प्रमाणे—ज्ञाता अने धर्मकथा." फरी श्री जंबूस्वामीए प्रश्न कर्यो के—"जो भगवान श्री महावीर स्वामीए छठ्ठा अंगना बे श्रुतस्कंध कह्या छे ते आ प्रमाणे—ज्ञाता अने धर्मकथा. तो हे भगवन् ! ज्ञाता नामना पहेला श्रुतस्कंधना भगवान श्री महावीर स्वामीए केटला अध्ययन कह्यां छे ?" आ प्रमाणे दरेक

सूत्रना प्रारंभमां तथा दरेक अध्ययनना प्रारंभमां श्रीसुधर्मास्वामीए जे जे उत्तर आप्या छे ते ते उत्तरनो प्रथम अनुवाद करी त्यारपछीनो प्रश्न पूछयो छे, ते वांचतां ज पुनरुक्ति दोषनी शंका थाय तथा फरी फरीने तेवा पाठना आलावा व्यर्थ छे एम भासे, ते स्वाभाविक छे. परंतु तेवी शंका खोटी छे. केमके गुरुना के स्वामीना कहेलानो अनुवाद करी पछी ज बीजो प्रश्न पूछवो ए एक जातनो मोटो विनय छे, अने विनय ज चारित्रनुं मुख्य अंग छे. वळी अनुवाद करवाथी एम पण जणाय छे के गुरुनुं कथन सम्यक् प्रकारे पोते धारी लीधुं छे, अने त्यारपछी बीजुं नवुं जाणवा माटे बीजो प्रश्न कर्यो छे. आ पण विनयनुं ज लक्षण छे. तेमज राजा विगेरे स्वामीए बतावेलुं काम करी रह्या पछी सेवको आवीने स्वामीने कहे छे के—'तमे बतावेलुं अमुक काम अमे कर्युं छे.' आ रीते स्वामीनी आज्ञा जे पाछी सोंपवी ते पण विनय ज छे. ए रीते सर्वत्र जाणवुं. आ रीते आ छठ्ठा अंगनी शरुआतनी प्रस्तावना छे अने ए ज रीते प्रायः सर्व आगमोनी रचना छे.

आ छठ्ठा अंगनो पहेलो श्रुतस्कंध ज्ञाता नामनो छे, तेमां ज्ञात एटले उदाहरण—दृष्टांत, अर्थात् धर्मना कोइपण तत्त्वने दृढ करवा माटे कोइनुं दृष्टांत आपवुं ते. आवा ओगणीश दृष्टांतो आ पहेला श्रुतस्कंधमां आप्यां छे ते दरेक दृष्टांते एक एक अध्ययन कर्युं छे, तेथी ओगणीश ज्ञातनां ओगणीश अध्ययन छे. तेमां प्रथम सविस्तर दृष्टांत आपी छेवट दार्ष्टांतिक पण मूळमां अथवा टीकामां संक्षिप्त के सविस्तर आप्यां छे. क्या क्या ज्ञातमां=दृष्टांतमां (अध्ययनमां) क्या क्या धर्मतत्त्वनो उपदेश आप्यो छे, ते अध्ययनना प्रारंभे मूळसूत्रमां लखेलुं नथी, परतु टीकाकार महाराजाए ते बाबतनी अवतरणिका प्रथम ज आपेली छे, तथा कोइ कोइ अध्ययनमां मूळमां दृष्टांतनो उपनय बताव्यो नथी, ते ते ठेकाणे पण टीकाकारे सविस्तर उपनय अंते बताव्यो छे.

आ आखुं सूत्र गद्यबंध रचेलुं छे, मात्र क्वचित ज अल्प गाथाओ मूकवामां आवी छे. आ ग्रंथमां नगर, उद्यान, महेल, शय्या, समुद्र विगेरे स्थावर अने हाथी, राणी, पक्षी विगेरे जंगम पदार्थोना वर्णनो घणां आप्यां छे. तो पण केटलाकना वर्णन बाबत अन्य सूत्रोनी भलामण करी दीधी छे. तथा एक वखत आवी गयेलो विषय (वर्णन) फरीथी आवे त्यारे त्यां ' यावत् ' शब्द लखी सर्व पाठ लेवानी भलामण करी छे. तो पण कथाभाग करतां वर्णननो भाग घणो मोटो छे, तथा समासो, विशेषणो अने वाक्यो एटला मोटा मोटा आप्या छे के कादंबरी जेवा ग्रंथो पण आनी पासे हीसाबमां नथी. रस अने अलंकार विगेरेना विषयमय छतां पण नाटकादिकनी तेम आनां प्रौढ वर्णनो वांचतां कांइ पण कामरागादिकनी उत्पत्ति थती नथी, प्रत्युत शांतरस साथे भक्तिभाव उत्पन्न थाय छे तो पण एटलुं तो स्पष्ट रीते भासे छे के चरित्रादिकनी जेम आवा आगमना कथानको पण वांचवा के साभळवा सर्व कोइ अधिकारी होवा न जोइए चरित्रादिकमां देशकथादिक मिश्र धर्मकथा कहेवामां आवे छे अने आगममां एकली ज धर्मकथा कहेवामां आवे छे एटले के चरित्रादिकमां औपदेशिक विषय करतां कथाभाग अने प्रासंगिक कथाभाग वधारे होय छे अने आगममां सर्व कथाभाग औपदेशिक ज होय छे अने प्रासगिक कथाओ होती नथी. चरित्रादिकमां आपेलां वर्णनो, वृत्तांतो, शब्दार्थो अने भावार्थो सहेलाइथी समजी शकाय छे अने आगममां तेथी विपरीत छे, केमके आगममां गंभीरता, कठिनता अने गुरुगमता विशेष छे. प्राकृत व्याकरणना अने काव्योना अभ्यासीओ के विद्वानो पण आगमनी भाषामां स्वतंत्र प्रवेश करी शके तेवुं नथी. आवां कारणोथी ज पूर्वाचार्योए आगमना अधिकारीओ भिन्न कह्या छे. ते बाबत भूलवा जेवी के अनादर करवा जेवी नथी. दोषग्राही थवामां तो मात्र अमुक अंशे मानी लीधेली विद्वत्तानी ज जरुर छे अने गुणग्राही थवामां तो

संपूर्ण विद्वत्तानी साथे आत्मनिर्मळतानी अवश्य जरुर छे. तेवा गुणग्राही विना अधिकारी थइ शकातुं नथी, प्रत्युत अधःपतन थाय छे.

काव्य—चरित्रादिकमां हृष्ट अने तुष्ट, श्रुत्वा अने निशम्य, तेमज कल्याण, शिव, धन्य, मांगल्य विगेरे विगेरे शब्दोना अर्थमां परस्पर कांइ पण भेद गणवामां आवतो नथी, अने तेथी करीने ज तेवा शब्दो जो लखवामां आवे तो त्यां पुनरुक्ति दोष गणवामां आवे छे. परंतु आगमना ग्रंथोमां तो ते सर्व शब्दार्थमां अने भावार्थमां तफावत गणाय छे अने तेथी करीने ज तेवा समानार्थ जेवा अनेक शब्दो एकी साथे आपेला होय छे, अने ते सर्वना अर्थ जूदा जूदा करवामां आवेल छे. आ बाबत जिज्ञासुए ते ते स्थळ जोइ लेवां.

आ प्रथम विभागमां पहेलेथी आठ अध्ययनो लेवामां आव्यां छे. बाकीनां अग्यार अध्ययनो तथा बीजो श्रुतस्कंध बीजा विभागमां आपवामां आवशे. लगभग लखाणमां बन्ने विभाग समान थशे. प्रथम विभागना आठ अध्ययनोनो संक्षिप्त सार आ प्रमाणे छे.—

पहेला सात पानामां ग्रंथनी प्रस्तावना आपी छे.

पहेलुं उत्क्षिप्त नामनुं अध्ययन—पानुं ८ थी १११

कोइ पण अविनीत शिष्य होय तो तेने गुरुए मधुर वचनवडे उपालंभ आपी विनीत बनावी मार्गे लाववो जोइए. आवो उपदेश आपवा माटे राजगृह नगरमां श्रेणिक राजा अने तेमनी धारिणी नामनी राणीथी जन्मेला मेघकुमारनुं ज्ञात एटले दृष्टांत आप्युं छे.

तेमां मेघकुमारनु गर्भमां आववुं, माताने स्वप्न दर्शन, तेनो विचार, माताना दोहदनी पूर्ति अने मेघकुमारनो जन्म ए हकीकत सविस्तर आपी छे. पछी वयमां आवेला मेघकुमारने बहोंतेर कळाना अभ्यास प्रसंगे बहोंतेर कळाओनां नाम आपेलां छे. पछी युवावस्था पामेला मेघकुमारने आठ राजकन्याओ साथे पाणिग्रहण करावी कामभोगनो विलास करतो बताव्यो छे. तेवामां राजगृह नगरनी बहार गुणशील नामना चैत्यमां भगवान् श्रीमहावीर स्वामी समवसर्या. तेमने वांदवा तथा धर्मोपदेश सांभळवा राजा सहित नगरजनो गया, मेघकुमार पण गया, छेवट प्रतिबोध पामेला मेघकुमारे घेर आवी मातापितानी महा मुश्केलीथी रजा मेळवी महा महोत्सव पूर्वक भगवान् पासे चारित्र ग्रहण कर्युं. ते ज दिवसे रात्रे पोते सर्वथी लघु होवाने लीधे सर्व साधुओना संथाराने छेडे मुनिओने जवा आववाना मार्गमां तेमनो संथारो आववाथी जता आवता साधुओना पादसंघट्टनवडे निद्रासुख नहीं पामवाथी खेदयुक्त थइ लीधेली प्रव्रज्या प्रातःकाळे ज मूकी देवानो विचार कर्यो. सवारे प्रभु पासे रजा लेवा आव्या. तेमना विचार ज्ञानवडे जाणी श्री महावीर स्वामीए तेने चारित्रमां दृढ करवा माटे तेना मनमां करेला विचार कहेवा पूर्वक तेना पूर्वभवनो वृत्तांत कह्यो. तेमां पूर्वना बे भवमां ते हाथी थयो हतो, पहेला हाथीना भवमां ते दावानळना भयथी नाशीने जळ रहित तळावना पंकमां खुंची गयो हतो अने त्यां बीजा हाथीना प्रहारथी मरीने पण हाथी थयो हतो. त्यां एकदा दावानळ जोइ जातिस्मरण थवाथी तेणे दावानळथी बचवा माटे गंगा नदीना दक्षिण किनारे तृण, पत्र, वृक्ष विगेरे रहित त्रण मंडळ योजन योजन प्रमाणनां कर्यां, छेवट एकदा दावानळ थवाथी ते नाशीने मंडळमां आव्यो. त्यां प्रथमथी ज घणा मृगादिक पशुओ आवीने रह्या हता. ते हाथीए पोतानुं शरीर खजवाळवा एक पग उंचो कर्यो, तेटलामां ते पगने ठेकाणे कोइ ससलो आवीने रह्यो.

तेना पर दया आववाथी तेणे पोतानो उंचो करेलो पग अधर ज राख्यो. अढी दिवसे दावानळ शांत थयो अने सर्व पशुओ ते मंडळमांथी नीकळी स्वस्थाने गया त्यारे ते हाथीनो उंचो राखेलो पग लांबो थइ शक्यो नहीं तेथी चालवा जतां ते पडी गयो अने छेवट मरण पामी ते एक ससलानी पाळेली दयाथी तुं श्रेणिकनो पुत्र मेघकुमार थयो छे. इत्यादि पूर्वभवनो वृत्तांत कही भगवान बोल्या के–हे मेघ ! पूर्वे अज्ञानी तिर्यंचपणाना भवमां पण तें एक ससलापर दया राखी तो आ भवमां तो तुं सर्व प्रकारे समजे तेवो अने समर्थ छे तेथी साधुओना पादसंघट्टथी तुं केम खेद पामे छे ? इत्यादि भगवानना वचन सांमळी तेने जातिस्मरण थयुं, अने चारित्रमां ते दृढ थया. पछी तेणे भगवाननी आज्ञाथी भिक्षुनी बार प्रतिमा वही, गुणरत्नसंवत्सर विगेरे तपो कर्या तेनुं वर्णन आप्यु छे अने छेवटे संलेखना तथा अनशन विगेरेनुं स्वरूप बताव्युं छे. त्यांथी काळ करी तेत्रीश सागरोपमनी स्थितिए विजय नामना अनुत्तर विमानमां देव थइ त्यांथी चवी महाविदेह क्षेत्रमां मनुष्य थइ चारित्र पाळी मोक्षे जशे. इत्यादि. अही हाथीना भवमां एक पग उंचो राख्यो हतो, ते दृष्टांत लइने आ अध्ययननुं उत्क्षिप्त नाम राखेलुं छे.

बीजुं संघाट नामनुं अध्ययन. पानुं ११२ थी १३९.

अनुचित प्रवृत्ति करनारने अनर्थनी प्राप्ति अने उचित प्रवृत्ति करनारने अर्थनी प्राप्ति थाय छे, ए उपदेशने दृढ करवा माटे धन्य सार्थवाह अने विजय नामना तस्करनुं दृष्टांत आपवामां आव्युं छे. तेमां धन्यना बाळपुत्रने मारी कुवामां नांखी विजय तस्करे तेना आभूषणो लइ लीधां छे, तथी छेवट ते तस्करने राजसेवकोए शोधी केदखानामां नांख्यो छे. त्यारपछी एकदा दाण विगेरेनी चोरीना अपराधथी धन्यने पण ते तस्करनी साथे ज एक ज वेडीमां नांख्यो छे. छेवटे अन्य गति नहीं होवाने लीधे धन्य सार्थवाह पोताना

भोजनमांथी ते चोरने भोजन आपे छे. त्यारपछी धन्य बंधनमांथी मुक्त थइ घेर आव्यो त्यारे तेनी पत्नीए चोरने भोजन आप्युं ते जाणी तेनो घणो तिरस्कार कर्यो, तेना जवाबमां धन्ये जणाव्युं के–तेने आप्या विना निर्वाह थाय तेम नहोतुं, विगेरे सत्य हकीकत कही पत्नीनो क्रोध शमाव्यो. आ दृष्टांतनो उपनय मूळमां तथा टीकामां पण बहु सारो उतार्यो छे. एटले के साधुए धन्यनी जेम चोररूपी शरीरने मात्र संयमना निर्वाहने माटे ज भोजन आपवानुं छे. इत्यादि.

त्रीजुं अंडक नामनुं अध्ययन. पानुं १४० थी १५१.

समकितनी शुद्धि करवा माटे शंकित दोषनो त्याग करनारने लाभ अने शंकित दोषवाळाने गेरलाभ बताववा माटे अंडक (इंडा) नुं दृष्टांत आप्युं छे. तेमां बे सार्थवाह पुत्रो परस्पर प्रीतिवाळा हता. तेमणे कोइ उद्यानमां फरतां फरतां एक मयूरीनां बे इंडां जोयां. ते बन्ने मित्रोए घेर लइ जइ पोतपोताना मयूरपालकोने आप्यां, तेमां एक सार्थवाहने शंकादोष होवाथी ते इंडुं बराबर सेवायुं के नहीं एम शंका करी तेणे वारंवार जोया कर्युं तेथी ते बराबर सेवायुं नहीं अने तेमांथी मयूरबाळक थयो नहीं, बीजो निःशंकित होवाथी तेने मयूरबालक प्राप्त थयुं अने तेना नृत्यादिक जोइने ते सुखी थयो. ए ज रीते समकितनी बाबतमां पण उपनय उतारवानो कह्यो छे. समकिती जीवे शंकादोष तो सर्वथा तजी देवो ए रहस्य छे.

चोथुं कूर्म नामनुं अध्ययन. पानुं १५२ थी १५६.

जितेंद्रियने गुणप्राप्ति अने अजितेंद्रियने दोषनी प्राप्ति देखाडवा माटे आ अध्ययनमां बे कूर्म (काचबा) नुं दृष्टांत आप्युं छे.

तेमां एक द्रहमांथी एकीसाथे बे कूर्मो बहार नीकळी वनमां फरता हता. तेमने आहारार्थी कोइ बे शीयाळीयाए जोया. तेमां प्रथम तो ते बन्ने कूर्मो तेमना भयथी अंगोपांगने गोपवीने रह्या. परंतु छेवटे एक कूर्मे ते शीयाळीयाने गया धारी धीमे धीमे अनुक्रमे पग तथा ग्रीवा बहार काढी, तेथी ते धूर्त शीयाळीयानी झपटमां आवी तेमनुं लक्ष्य थइ पड्यो. बीजा कूर्मे इंद्रियोनी चपळता करी नहीं तेथी ते तेमना पाशमां सपडायो नहीं अने पोताना द्रहमां क्षेमकुशळ जइने सुखी थयो. आनुं दार्ष्टांतिक पण ते ज प्रमाणे कह्युं छे.

पांचमुं शैलक नामनुं अध्ययन. पानुं १५७ थी १९०.

प्रथम इंद्रियोने वश राखी न होय अने पछीथी पण वश राखी होय तो तेने पण अर्थसिद्धि थाय छे, ते वातने दृढ करवा माटे अहीं सेलक राजर्षिनुं दृष्टांत आप्युं छे. तेमां प्रथम द्वारिका नगरीमां कृष्ण वासुदेव राजा हता. त्यां थावच्चा नामनी सार्थवाही हती. तेने थावच्चापुत्र नामे पुत्र हतो, तेणे मेघकुमारनी जेम वैराग्य पामी श्री नेमिनाथ पासे बीजा हजार पुरुषो सहित प्रव्रज्या ग्रहण करी. अनुक्रमे ते थावच्चापुत्र अनगार हजार साधुओना परिवार सहित जूदो विहार करवा लाग्या. तेवा समयमां सेलकपुरना सेलक राजाए पोताना पंथक विगेरे पांच सो मंत्रीओ सहित थावच्चापुत्रना उपदेशथी प्रतिबोध पामी श्रावक धर्म अंगीकार कर्यो. ते समये सौगंधिका नगरीमां सुदर्शन नामनो श्रेष्ठी शुक परिव्राजकनो भक्त थयो हतो. तेणे शौचधर्म अंगीकार कर्यो हतो. त्यारपछी सौगंधिका नगरीमां थावच्चापुत्र पधार्या, तेमनी पासे नगरजनो गया, सुदर्शन श्रेष्ठी पण गयो, छेवट सुदर्शन श्रेष्ठीए तेमना उपदेशथी शौचधर्मनो त्याग करी विनयधर्म अंगीकार कर्यो, अने ते श्रावक थयो. त्यारपछी शुक परिव्राजक ते वृत्तांत जाणीने त्यां आव्यो. पण सुदर्शने तेनो आदर सत्कार कर्यो नहीं. छेवट शुक परिव्राजक सुदर्शननी

साथे थावच्चापुत्र पासे गयो. तेणे तेमनी पासे घणा प्रश्नो कर्या, ते सर्वेना तेमणे यथास्थित युक्तिवाळा उत्तरो आप्या. तेथी छेवट ते शुक परिव्राजके प्रतिबोध पामी पोताना हजार परिव्राजको सहित तेमनी पासे प्रव्रज्या अंगीकार करी. गुरुए ते शुकने ते हजार परिव्राजको शिष्यपणे आप्या. पछी थावच्चापुत्र केवळज्ञान पामी मोक्षे गया. शुक अनगारनी पासे प्रतिबोध पामी सेलक राजाए मंडुक कुमारने राज्य सोंपी पोताना पंथक विगेरे पांचसो मंत्रीओ सहित दीक्षा ग्रहण करी, शुक अनगारे सेलक राजर्षिने ते पांचसो मंत्रीरूपी साधुओने शिष्यपणे सोंप्या. पछी शुक अनगार पण मोक्षे गया. त्यारपछी सेलक राजर्षि पित्तज्वरथी पीडावा लाग्या. अनुक्रमे विहार करता पोताना नगरमां आव्या. त्यां मंडुक राजानी विज्ञप्तिथी तेनी दानशाळामां रह्या. त्यां राजानी करावेली चिकित्साथी ते साजा थया. परंतु मद्यादिकमां मूर्छित थयेला होवाथी तेमणे विहार कर्यो नहीं. तेथी पंथक सिवायना सर्व साधुओ विहार करी गया. पंथक साधु तेमनी सेवा करवा रह्या. राजर्षि तो सर्व साधुक्रियामां शिथिल थया. छेवट चातुर्मासिकना खामणा करतां पंथके तेमना पादनो स्पर्श कर्यो, त्यारे ते निद्रामां भंग पडवाथी क्रोध पाम्या. तेमने पंथके खमाव्या, त्यारे कारण पूछतां ते प्रतिबोध पाम्या, अने छेवट शुद्ध चारित्र पाळी सिद्धिपद पाम्या. इत्यादि.

छठ्ठुं तुंबक नामनुं अध्ययन. पानुं १६१ थी १६२.

प्रमादीने अनर्थनी प्राप्ति अने अप्रमादीने अर्थनी प्राप्ति थाय छे एटले के प्रमादथी जीव भारेकर्मी अने अप्रमादथी लघुकर्मी थाय छे. ते वातने दृढ करवा माटे तुंबक (तुंबडा) नुं दृष्टांत आप्युं छे. तेमां एक अखंड तुंबडाने दर्भ अने कुशवडे वींटी उपर माटीनो लेप करी तडके सुकवे. पछी फरी फरीने उपराउपर आठ वार एज रीते दर्भ अने कुश सहित माटीनो लेप करी तडके सुकवे. पछी तेने जळमां

मूके तो ते गुरुपणाने लीधे तळीये जइ रहे छे पछी तेनो एक एक लेप जेम जेम धोवातो जाय तेम तेम ते तुंबक धीमे धीमे उपर आवतुं जाय छे. छेवट आठे लेप दूर थाय त्यारे ते पाणीनी सीधी सपाटी पर तरे छे. ते ज रीते आठ कर्मना आवरणवाळा जीवनुं गुरुपणुं अने तेनाथी मुक्त थयेलानुं लघुपणुं जाणवुं.

सातमुं रोहिणी नामनुं अध्ययन. पानुं १६४ थी २०८.

पांच महाव्रतोना आराधक शुभ फळ पामे छे अने तेना विराधक अशुभ फळ पामे छे ते वात दृढ करवा माटे रोहिणीनुं दृष्टांत आप्युं छे. तेमां राजगृह नगरमां **धन्य** नामना सार्थवाहने चार पुत्रो हता, तेमने चार वहुओ हती, तेमनी परीक्षा करवा माटे धन्य सार्थवाहे सगा संबंधीने एकठा करी तेमनी रुबरु दरेक वहुओने पांच पांच शालिकण आप्या. तेमां मोटी वहुए ते नांखी दीधा हता तेथी ते उज्झिका नामनी थइ, तेने घरमांथी वासीदुं वाळवुं विगेरे मजुरीनुं काम सोंप्युं. बीजी वहु ते पांचे शालिकण खाइ गइ हती तेथी ते भक्षिका नामे थइ, तेणीने रसोइनुं काम सोंप्युं. त्रीजी वहुए अलंकारना दाबडामां मूकी साचवी राख्या हता तेथी तेनुं नाम रक्षिका थयुं, अने तेणीने सर्व घरनी मिल्कतनी भांडागारिणी बनावी. चोथी वहुए ते पांचे शालिकण पोताना बंधुवर्गने आपी तेमना क्षेत्रमां ववराव्या हता, तेना जेटला शालि थया तेने बीजे वर्षे ववराव्या, एम चार वर्ष ववरावीने घणां गाडां शालि उत्पन्न कर्या, तेथी तेनुं रोहिणी नाम प्रसिद्ध थयुं, तेणीने सर्व घरनी मालिक करवामां आवी. आ दृष्टांत आपी तेनुं दार्ष्टांतिक साधु उपर उतार्युं छे. तेमां कोइ पंच महाव्रत अंगीकार करी मूकी दे छे, बीजो कोइ खावा पीवा माटे ज वेप राखे छे. त्रीजो कोइ व्रतनुं पालन करी पोतानुं ज कल्याण करे छे अने चोथो कोइ ते व्रतोने वृद्धि पमाडी स्वपरनुं हित करे छे. इत्यादि

आठमुं मल्ली नामनुं अध्ययन. पानुं २०९ थी २=७.

पांच महाव्रतोने अल्प पण मायाकपटवडे दूषित कर्यां होय तो तेनुं संपूर्ण फळ प्राप्त थतुं नथी, ए वात दृढ करवा माटे मल्लीनाथनुं दृष्टांत आप्युं छे. तेमां प्रथम मल्लीनाथ पूर्वभवे महाबळ नामे राजा हता. तेमने अचळ १, धरण २, पूरण ३, वसु ४, वैश्रमण ५ अने अभिचंद्र ६—ए छ बाळमित्रो हता. ते छ मित्रो सहित महाबळ राजाए अवसरे प्रव्रज्या ग्रहण करी अग्यार अंगनो अभ्यास कर्यो. पछी ते साते साधुओ एक साथे छठ्ठ अठ्ठम विगेरे तप करवा लाग्या. तेमां ते बाळमित्रो छ साधुओ जे तप करता हता तेनाथी आ महाबळ साधु मायाथी कांइक वधारे तप करता हता. आ प्रसंगे भिक्षुनी बार प्रतिमा तेमज नहीं छे तेनुं तथा नानुं मोटुं सिंहनिष्क्रीडित तप करेल छे तेनुं वर्णन कर्युं छे. तथा तीर्थंकर नामगोत्रना कारणरूप वीश स्थानक पैकी एक अथवा वधारे स्थाननी आराधना करवाथी तीर्थंकर नामगोत्र बंधाय छे तेथी तेनुं वर्णन करेल छे. तेमांथी एक स्थाननी आराधना करीने महाबळे तीर्थंकर नामकर्म बांध्युं तेथी ते राजर्षि बीजे भवे मल्लीनाथ नामना तीर्थंकर थया, परंतु मायावडे तप कर्यो हतो तेथी स्त्रीपणे उत्पन्न थया. बीजा छ मित्र साधुओ बीजा भवे जूदा जूदा देशना राजा थया. तेओए पोतपोतानी सभामां अमुक अमुक वखते मल्ली नामनी राजकुमारीना रूप विगेरेनुं वृत्तांत सांभळी पोताने वरवा माटे पोतपोताना दूतो मोकली मल्लीना पिता कुंभराजा पासे मागणी करी. ते सर्वने कुंभराजाए कन्या आपवानी ना पाडी. तेथी ते छए राजाओ सैन्य लइने कुंभ राजा पर चडी आव्या. ते जोइ कुंभराजा गभराया. ते जोइ मल्लीकुमारीए पिताना मननुं सांत्वन करी ते छए राजाओने पृथक् पृथक् कुमारी आपवानी आशा अपावी एकांतमां एकला बोलाव्या अने तेमने एक मकानमां जूदी जूदी दिशाओना द्वारथी गुप्त रीते

दाखल कर्या. पछी प्रथमथी मल्ली कुमारीए पोताना ज स्वरूपवाळी सुवर्णनी प्रतिमा करावी तेना मस्तकना छिद्रद्वारा हमेशां भोजननो एक एक कवळ नांख्यो हतो, ते प्रतिमा ते छए राजाओए जोइ एटले तेओ तेमां आसक्त थया. मल्लीकुंवरीए गुप्त रीते ते प्रतिमाना मस्तकनुं ढांकणुं उघाड्युं, त्यारे तेमांथी अत्यंत दुर्गंध नीकळ्यो, तेथी तेओ अति व्याकुळ थया. ते वखते मल्ली कुमारीए अशुचि भावनानो उपदेश आपी तेमने प्रतिबोध करी पोतानी दीक्षा ग्रहण करवानी इच्छा जाहेर करी. त्यारे तेओए पण दीक्षा ग्रहण करवानी इच्छा बतावी. छेवट मल्लीनाथे वार्षिकदान आपी दीक्षा ग्रहण करी अने तेज दिवसे केवळज्ञान प्राप्त कर्युं. ते छ राजाओ पण तेमनी पासे दीक्षा ग्रहण करी केवळज्ञान पामी मोक्षे गया. इत्यादि सर्व कथाभाग घणो विस्तारथी आपेलो छे.

आ रीते आ आठ अध्ययनो आ प्रथम विभागमां आपवामां आवेला छे. आ सूत्रनो मूलपाठ प्रथम लखीने तेनी नीचे तेनुं भाषांतर आपवामां आव्युं छे. तेमां शब्दार्थ उपर वधारे लक्ष्य राखी भावार्थ लखवामां आव्यो छे. बनता प्रयासे भाषानी शुद्धि करवा तरफ दृष्टि राखी छे, परंतु खास लक्ष्य तेनापर राखवामां आवे तो मूळपाठने मेळववा पूर्वक भाषांतर वांचनार अभ्यासीओने केटलीक मुंझवण रहे तेथी तेमनी सगवड साचववा माटे सूत्रनो बराबर अर्थ आपवानो मुख्य उद्देश राखवामां आव्यो छे. अने फक्त ते ज उद्देश साचववामां आवे तो केवळ भाषांतर वांचनारने कांइ पण रस आवे नहीं तेथी तेमनी सगवड पण केटलेक अंशे सचवाय एम आ भाषांतर करतां ध्यानमां राखवामां आव्युं छे. मूळनो शब्दार्थ जवा न देवो एवी धारणा होवाथी भाषानी सुंदरता साचववा वधारे लक्ष्य आप्युं नथी. कोइ कोइ ठेकाणे मूळना कठण शब्दो ज लखी तेनां संस्कृत शब्दो लखवा पूर्वक शब्दार्थ अने भावार्थ लख्या छे. अमुक शब्दोना शब्दार्थ अने भावार्थ एक वार आवी गया छतां फरी फरीने ते ज

शब्दो मूळमां आव्या होय तेवा शब्दोना पण प्राये वारंवार शब्दार्थ अने भावार्थ लख्या छे, के जेथी वाचक अने अभ्यासी बन्नेने विस्तृत थयेला शब्दो अने तेना अर्थादिक शोधवानो प्रयास न पडे. अमुक अमुक स्थाने श्री अभयदेवसूरिनी करेली टीकामांथी विस्तरार्थ लखवामां आव्यो छे अने कोइ ठेकाणे टबानी लिखित प्रत उपरथी पण लखवामां आव्यो छे; परंतु आधार विना कांइ पण शब्दार्थ के भावार्थ प्राये लखवामां आव्यो नथी. छतां अल्पमति विगेरे कारणथी नानी मोटी जे कांइ स्खलना रही होय तेनुं मिथ्या दुष्कृत भाषांतर कर्ता आपे छे (क्षमा याचे छे) अने तेवी स्खलनाओनी सूचना महात्माओ तरफथी मळशे तो फरी तेवो समय आवे त्यारे तेवी स्खलना थती अटकी शकशे तेमज बीजी आवृत्तिमां पण सुधरी शकशे अथवा जूदी सूचना पण आपी शकाशे.

आगमोदय समिति तरफथी छपायेली आ अंगनी सटीक प्रत उपरथी आनुं मूळ तथा भाषांतर करवामां आव्युं छे, तेथी सूत्रोना अंक ते प्रमाणे ज करवामां आव्या छे. मात्र तेमां मोटा पारिग्राफो छे ते बदल आमां सरलताना हेतुथी नाना पारिग्राफो करवामां आव्या छे. तथा क्वचित् टबावाळी प्रतनो पण आधार राख्यो छे.

श्री उत्तराध्ययन सूत्रनुं भाषान्तर थया पछी गुरुणीजी श्री लाभश्रीजीने केटलीएक महत्तराओ तरफथी तथा अन्य मुनिजनो विगेरे तरफथी आ कार्य करवानी भलामण थवाथी अल्पज्ञानीओ उपर उपकार करवाना हेतुथी आ कार्य पण कराववा तेओश्रीनी उत्कंठा थई, तेथी श्री उत्तराध्ययन सूत्रनी जेम आ कार्य पण तेमणे पोतानी देखरेख नीचे शास्त्री जेठालाल हरिभाइनी पासे कराव्युं छे.

आ कार्य माटे कोइनी खास द्रव्य संबंधी मदद लीधी नथी, तेथी आनी योग्य किंमत राखवामां आवी छे. जेओए आगळथी थोडा

के घणा पैसा आप्या छे तेमने तेमना पैसाने अनुसारे प्रतो आपवामां आवशे अने प्रथमथी ग्राहक थनाराओनां नामोनी साथे तेमनां नामो पण बीजा भागमां छपावीने अमर करवामां आवशे.

प्रथमथी ग्राहक थनाराओनां नाम बीजा विभागनी प्रस्तावना साथे प्रसिद्ध करवामां आवनार होवाथी हजु पण टुंक मुदतमां जेमनी इच्छा होय तेमणे ग्राहक थवुं सारुं छे, जेथी तेमनां नामो पण छपाशे ने प्रतो मळशे. पाछळथी तो नकलो मळशे के नहीं तेनी पण शंका रहे छे, कारण के ग्राहको वधारे थवानो संभव छे.

प्रुफो सुधारवा विगेरेमां यथाशक्ति प्रयास कर्या छतां दृष्टिदोष के मतिमांद्यादिकने कारणे कांइ पण स्खलना रही होय ते शिष्टजनोए सुधारीने वांचवा अने अमने लखी जणाववा अमारी नम्र विज्ञप्ति छे. इति शम्.

संवत १९८५
अक्षय तृतीया.

श्री जैन धर्म प्रसारक सभा
भावनगर.

। श्री वीतरागाय नमः ।

षष्ठं श्री ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रम्

गुर्जरभाषानुवाद सहित

उत्क्षिप्त नाम प्रथम अध्ययन.

प्रणम्य श्री महावीरं, स्मृत्वा चैव सरस्वतीम् । वन्दे सद्गुरुपादाब्जं, स्तिबुकं किञ्चिदुच्यते ॥
ज्ञाताधर्मकथाङ्गस्य, सुखबोधैकहेतवे । स्वात्मपरोपकाराय, सतां चेच्छानुभावतः ॥

अर्थ—श्री महावीर स्वामीने प्रणाम करी तथा सरस्वती देवीनुं स्मरण करी हुं श्री सद्गुरुना चरणकमळने वांदुं छुं. अने अल्पज्ञानीओने सुखे बोध थाय तेटला माटे तेमज पोताना अने परना उपकार माटे सत्पुरुषोनी इच्छाना प्रभावथी ज्ञाताधर्मकथा नामना छठ्ठा अंगनो कांइक संक्षेपथी अर्थ कहेवा इच्छुं छुं.

श्री महावीर स्वामीए अर्थथी आगमनी प्ररूपणा करी छे तेथी ते आत्मागम कहेवाय छे, गणधरो तेनी सूत्र रूपे रचना

करे छे तेथी श्री सुधर्मास्वामीने आश्रीने ते अनंतरागम कहेवाय छे, तथा तेमना शिष्य जंबूस्वामी विगेरेने आश्रीने परंपरागम कहेवाय छे. आ रीते आ ज्ञाताधर्मकथानी शरुआत थाय छे.

मू०--ते णं काले णं ते णं समए णं चंपा नामं नयरी होत्था, वण्णओ ॥ १ ॥

अर्थ—ते काळने विषे (एटले आ अवसर्पिणीना चोथा आराने विषे) ते समयने विषे (एटले कूणिक राजाना वखते) चंपा नामनी नगरी हती. तेनुं वर्णन उववाय नामना प्रथम उपांग सूत्रथी जाणवुं. १

मू०--तीसे णं चंपाए णयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए पुण्णभद्दे नामं चेइए होत्था। वण्णओ ॥ २ ॥

अर्थ—ते चंपा नगरीनी बहार उत्तर पूर्वनी वच्चेनी ईशान दिशामां पूर्णभद्र नामनुं चैत्य हतुं. तेनुं वर्णन कहेवुं. २

मू०--तत्थ णं चंपाए नयरीए कोणिको नामं राया होत्था। वण्णओ ॥ ३ ॥

अर्थ—ते चंपा नगरीने विषे कोणिक नामे राजा हतो. तेनुं वर्णन पण कहेवुं. ३

मू०--ते णं काले णं ते णं समए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मे नामं थेरे जातिसंपन्ने, कुलसंपण्णे, बल-रूव-विणय-णाण-दंसण-चरित्त-लाघव-संपण्णे, ओयंसी,

तेयंसी, वच्चंसी, जसंसी, जियकोहे, जियमाणे, जियमाए, जियलोहे, जियइंदिए, जियनिद्दे, जियपरिसहे, जीवियासमरणभयाविप्पमुक्के, तवप्पहाणे, गुणप्पहाणे, एवं करण–चरण–निग्गह–णिच्छय–अज्जव–मद्दव–लाघव–खंति–गुत्ति–मुत्ति १० विज्जा–मंत–बंभ–वेय–नय–नियम–सच्च–सोय–णाण–दंसण २० चारित्तप्पहाणे, ओराले, घोरे, घोरव्वए, घोरतवस्सी, घोरबंभचेरवासी, उच्छूढसरीरे, संखित्तविउलतेयलेसे, चोद्दसपुव्वी, चउणाणोवगते, पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे, पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुगामं दूइज्जमाणे, सुहंसुहेणं विहरमाणे, जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहराति ॥ ४ ॥

अर्थ—ते काळने विषे अने ते समयने विषे श्रमण भगवंत महावीर स्वामीना अंतेवासी–शिष्य आर्य सुधर्मा नामना स्थविर. केवा ? ' जातिसंपन्न '–उत्तम मातृपक्ष सहित, ' कुलसंपन्न '–उत्तम पितृपक्ष सहित, ' बलसंपन्न '–उत्तम संघयणथी उत्पन्न थयेला बळे करीने सहित, ' रूपसंपन्न '–अनुत्तरविमानवासी देव करतां पण अनंत गुण सुंदर रूपवाळा, विनयवाळा, (चार) ज्ञानवाळा, दर्शनवाळा–क्षायिक समकितवाळा, चारित्रवाळा, ' लाघवसंपन्न '–द्रव्यथी अल्प उपधिवाळा

अने भावथी ऋद्धि, रस अने साता ए त्रण गारव रहित होवाथी लाघव सहित, 'ओजस्वी'–मन संबंधी तेजवाळा एटले चडता परिणामवाळा, 'तेजस्वी'–शरीरनी कांतिवाळा, 'वचस्वी'–सौभाग्यादिक गुण सहित वचनवाळा अथवा 'वचस्वी'–प्रभाववाळा, 'यशस्वी'–यशवाळा, क्रोधने जीतनारा, मानने जीतनारा, मायाने जीतनारा, लोभने जीतनारा, पांचे इन्द्रियोने जीतनारा, निद्राने जीतनारा, बावीश परीषहोने जीतनारा (एटले के उदयमां आवेला क्रोधादिकने निष्फळ करनारा), जीववानी आशा अने मरणना भयथी रहित, 'तपप्रधान'–बीजा मुनिओथी अधिक तप करता होवाथी तपवडे प्रधान अथवा प्रधान (उत्कृष्ट) तपवाळा, 'गुणप्रधान'–संयमरूप गुणवडे प्रधान अथवा उत्कृष्ट संयमगुणवाळा, एज प्रमाणे ':करणप्रधान'–पिंडविशुद्धि आदिक करणसीत्तरीवडे प्रधान,* 'चरणप्रधान'–महाव्रतादिक चरणसीत्तरीवडे प्रधान, 'निग्रहप्रधान'–अनाचारमां नहीं प्रवर्तवावडे प्रधान, निश्चयप्रधान–तत्त्वनो निश्चय करवावडे प्रधान, आर्जवप्रधान–मायानो निग्रह करवावडे प्रधान, मार्दवप्रधान–माननो निग्रह करवावडे प्रधान, लाघवप्रधान–क्रिया करवानी चतुराइवडे प्रधान, क्षांतिप्रधान–क्रोधनो निग्रह करवावडे प्रधान, गुप्तिप्रधान–मनोगुप्ति, वचनगुप्ति अने कायगुप्ति पाळवावडे प्रधान, मुक्तिप्रधान–निर्लोभीपणावडे प्रधान, विद्याप्रधान–देवता अधिष्ठित प्रज्ञप्ति आदि विद्याओवडे प्रधान, मंत्रप्रधान–हरिणेगमिषी विगेरे देव अधिष्ठित विद्याओवडे प्रधान, अथवा जे साधन सहित होय–साधवाथी सिद्ध थाय ते विद्या अने साधन रहित मात्र पाठ करवाथी ज सिद्ध थाय ते मंत्र, ते बन्नेवडे प्रधान, ब्रह्मप्रधान–ब्रह्मचर्यवडे अथवा सर्व कुशळ अनुष्ठानवडे प्रधान, वेदप्रधान–लौकिक,

* प्रधान शब्द सर्वत्र श्रेष्ठवाचक समजवो.

लोकोत्तर अने कुप्रवचननी कुशळतावडे प्रधान, नयप्रधान–नैगमादिक सात नयवडे प्रधान, नियमप्रधान–विचित्र प्रकारना अभिग्रहो धारवावडे प्रधान, सत्यप्रधान–सत्यवचन बोलवावडे प्रधान, शौचप्रधान–द्रव्यथी निर्लेपतावडे अने भावथी निरवद्य आचारवडे प्रधान, ज्ञानप्रधान–मतिज्ञानादिक चार ज्ञानवडे प्रधान, दर्शनप्रधान–चक्षुदर्शनादिकवडे अथवा समकित-वडे प्रधान, चारित्रप्रधान–प्रतिलेखनादिक सत्क्रिया करवावडे प्रधान, तथा ओराल–उदार अथवा भयानक एटले के उग्र तपस्या करवाथी पासे रहेता अल्प सत्त्ववाळा मनुष्योने भयानक लागे तेवा, घोर–परिषह, इंद्रियो अने कषाय नामना शत्रुओनो निग्रह करवामां निर्दय, घोरव्रत–बीजाओ पाळी न शके एवा महाव्रतोने पाळनारा, घोर तपस्वी–उग्र तपस्या करनारा, घोर ब्रह्मचर्यवासी–उत्कट ब्रह्मचर्यनुं पालन करनारा, उज्झित शरीर–शरीरनो सत्कार (सारवार) नहीं करनारा, संक्षिप्त विपुल तेजोलेश्य–अनेक योजन प्रमाण क्षेत्रमां रहेली समग्र वस्तुओने बाळी शके तेवी मोटी तेजोलेश्याने जेणे पोताना शरीरमां ज समावी दीधी छे एवा, चौद पूर्वने धारण करनारा, केवळज्ञान सिवाय बीजा चारे ज्ञाने करीने सहित, पांचसो साधुओनी साथे परिवरेला, अनुक्रमे चालता, एक गामथी बीजे गाम विहार करता, सुखे सुखे एटले शरीरने अने संयमने बाधा न थाय तेम विहार करता एवा सुधर्मा स्वामी जे देशमां चंपा नामनी नगरी छे, अने जे प्रदेशमां पूर्णभद्र नामनुं चैत्य छे, ते प्रदेशमां आव्या अने आवीने यथायोग्य अवग्रहने याचनापूर्वक ग्रहण कर्यो, ग्रहण करीने संयम अने तपवडे आत्माने भावता सता त्यां रह्या । ४।

मू०–तए णं चंपाए नयरीए परिसा निग्गया । कोणिओ निग्गओ । धम्मो कहिओ । परिसा

जामेव दिसं पाउब्भूआ, तामेव दिसिं पडिगया ॥

अर्थ—त्यारपछी चंपा नगरीमांथी पर्षदा नीकळी, कोणिक राजा पण (वांदवा) नीकळ्यो. सुधर्मा स्वामीए धर्म कह्यो. ते सांभळी पर्षदा जे दिशाथी आवी हती ते ज दिशामां पाछी गइ.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स जेट्ठे अंतेवासी अज्जजंबू णामं अणगारे कासवगोत्तेणं सत्तुस्सेहे जाव अज्जसुहम्मस्स थेरस्स अदूरसामंते उध्धंजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगते संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति ॥

अर्थ—ते काळे ते समये आर्य सुधर्मा स्वामी नामना अनगारना मोटा शिष्य आर्य जंबू नामना अनगार के जे काश्यप गोत्री अने सात हाथ उंचा शरीरवाळा विगेरे अनेक विशेषणोवाळा हता ते आर्य सुधर्मा स्थविरनी अति दूर के अति समीपे नहीं एवा नजीकना उचित स्थाने उंचा ढींचण राखी नीचुं मुख राखी ध्यानरूपी कोठारमां रह्या सता संयम (संवर) अने तपवडे पोताना आत्माने भावता सता रहेला छे.

मूळमां आपेला ' जाव ' शब्दवडे टीकामां जंबूस्वामीनां विशेषणो आप्यां छे.

विवेचन—साधुने केवळ पृथ्वीपर बेसवानो निषेध छे, तथा गुरुनी समीपे निषद्यांपर बेसवुं पण कल्पे नहीं तेथी

१ आसन विशेष ऊन विगेरेनुं.

जंबूस्वामी उंचा ढींचण राखी उत्कडुक (उभडक) आसने बेठा हता, तथा नीचुं मुख राखीने बेठा हता एटले के उंची के आडी अवळी कोइ ठेकाणे दृष्टि राख्यां विना मात्र पृथ्वीतळ उपर निश्चळ दृष्टि राखीने बेठा हता तथा जेम धान्यना कोठारमां नांखेलुं अनाज छुटुं छुटुं वेराया विना एक स्थाने समूहरूपे नियमितपणे रहे छे, तेम आ जंबूस्वामी धर्मध्यानरूपी कोठारमां रहेला होवाथी तेणे इंद्रियो अने मननो संवर कर्यो हतो एटले के तेनी इंद्रियो अने मन चंचळतानो त्याग करी एक धर्मध्यानमां ज लीन थयां हतां.

मू०—तते णं से अज्जजंबूणामे जायसड्ढे, जायसंसए, जायकोउहल्ले, संजातसड्ढे, संजातसंसए, संजातकोउहल्ले, उप्पन्नसड्ढे, उप्पन्नसंसए, उप्पन्नकोउहल्ले, समुप्पन्नसड्ढे, समुप्पन्नसंसए, समुप्पन्नकोउहल्ले, उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठाए उट्ठित्ता जेणामेव अज्जसुहम्मे थेरे तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अज्जसुहम्मे थेरे तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता अज्जसुहम्मस्स थेरस्स णच्चासन्ने नातिदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहं पंजलिउडे विणएणं पज्जुवासमाणे एवं वयासी ॥

अर्थ—त्यारपछी ते आर्यजंबू नामना अणगार केवा ? जातश्रद्ध—आगळ कहेवामां आवशे एवा पदार्थोना तत्त्वज्ञानने विषे जेनी इच्छा थइ छे, जातसंशय—जेने संशय थयो छे, जातकुतूहल—जेने कौतुक थयुं छे, संजातश्रद्ध—जेने पूछवानी

श्रद्धा विशेष थइ छे, संजातसंशय–जेने संशय विशेष थयो छे, संजातकुतूहल–जेने कौतुक विशेष थयुं छे, उत्पन्नश्रद्ध–जेने श्रद्धा उत्पन्न थइ छे, उत्पन्न संशय–जेने संशय उत्पन्न थयो छे, उत्पन्न कुतूहल–जेने कौतुक उत्पन्न थयुं छे, समुत्पन्नश्रद्ध–जेने विशेष प्रकारे श्रद्धा उत्पन्न थइ छे, समुत्पन्नसंशय–जेने विशेष प्रकारे संशय उत्पन्न थयो छे, समुत्पन्न कुतूहल–जेने विशेष प्रकारे कौतुक उत्पन्न थयुं छे, एवा सता शरीर उंचुं थाय तेम उभा थाय, उभा थइने जे ठेकाणे आर्य सुधर्मा स्थविर हता, ते ठेकाणे ज आवे, आवीने आर्य सुधर्मा स्थविरने त्रण वार जमणी बाजुथी आरंभीने परिभ्रमण करता करता जमणी बाजु सुधी फरीथी आववुं ए रीते प्रदक्षिणा करे, त्रण वार प्रदक्षिणा करीने वांदे एटले वाणीवडे स्तुति करे, तथा नमे एटले शरीरवडे नमस्कार करे. वांदीने तथा नमीने आर्यसुधर्मा स्थविरनी अति नजीक नहीं तेमज अति दूर पण नहीं ए रीते उचित प्रदेशने विषे रही सांभळवानी इच्छावाळा थइ, नमस्कार करी, तेमनी सन्मुख बे हाथ जोडी विनयवडे सेवा करता सता आ प्रमाणे बोले—

विवेचन—जातश्रद्ध–श्रद्धा एटले इच्छा, अर्थात् आगळ कहेवाशे एवा पदार्थोनुं तत्त्व जाणवा माटे जंबूस्वामीनी इच्छा थइ. कारण के “ श्री वर्धमान स्वामीए पांचमा अंगनो समग्र भावार्थ कह्यो छे ते ज प्रमाणे छठा अंगनो पण समग्र भावार्थ कह्यो छे के नहीं ? ” एम तेमने संशय थयो. संशय थवानुं कारण ए के–“ पांचमा अंगमां समग्र विश्वना पदार्थोनुं स्वरूप कही दीधुं छे, तो पछी छठा अंगमां भगवान श्री वर्धमान स्वामीए बीजो कयो पदार्थ कह्यो हशे ? ” आ प्रमाणे जंबूस्वामीने कौतुक थयुं. आ रीते श्रद्धा, संशय अने कुतूहलनो अर्थ जाणवो. तथा जात एटले सामान्य रीते थवुं अने

संजात एटले विशेष प्रकारे थवुं, ए ज रीते उत्पन्न एटले सामान्यरीते उत्पन्न थवुं अने समुत्पन्न एटले विशेष प्रकारे उत्पन्न थवुं. ए रीते दरेक शब्दोमां कथंचित भेद-विशेष समजवो. अथवा तो जात, संजात, उत्पन्न अने समुत्पन्न ए चार शब्दमां अनुक्रमे अवग्रह, ईहा, अपाय अने धारणा ए चार मतिज्ञानना भेद समजवा.

मू०-जति णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं, तित्थगरेणं, सयंसंबुद्धेणं, पुरिसुत्तमेणं, पुरिससीहेणं, पुरिसवरपुंडरीएणं, पुरिसवरगंधहत्थिणा, लोगुत्तमेणं, लोगनाहेणं, लोगहिएणं, लोगपईवेणं, लोगपज्जोयगरेणं, अभयदएणं, सरणदएणं, चक्खुदएणं, मग्गदएणं, बोहिदएणं, धम्मदएणं, धम्मदेसएणं, धम्मनायगेणं, धम्मसारहिणा, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टिणा, अप्पडिहयवरनाणदंसणधरेणं, वियट्टछउमेणं, जिणेणं, जाणएणं, तिन्नेणं, तारएणं, बुद्धेणं, बोहएणं, मुत्तेणं, मोअगेणं, सव्वन्नेणं, सव्वदरिसणेणं, सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्तिअं सासयंठाणमुवगएणं, पंचमस्स अंगस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, छट्ठस्स णं अंगस्स णं भंते! णायाधम्मकहाणं के अट्ठे पन्नत्ते? जंबू त्ति ॥

अर्थ—जो हे भगवान्! श्रमण भगवंत महावीर के जे आदिकर-शब्दरूपे श्रुतधर्मनी आदिने करनारा, तीर्थकर-

प्रवचनना आधाररूप चतुर्विध श्रमणसंघ अथवा प्रथम गणधररूप तीर्थने करनारा, स्वयंसंबुद्ध–तीर्थकरना जन्मने विषे गुरुनी अपेक्षा विना पोतानी मेळे सम्यक् प्रकारे बोध पामेला, पुरुषोत्तम--सर्व पुरुषोने विषे तथा भव्यत्वादिकपणाए करीने श्रेष्ठ, पुरुषसिंह–कर्मरूपी शत्रुनो विनाश करवामां सिंह जेवा शूरवीर होवाथी पुरुषोमां सिंह समान श्रेष्ठ, पुरुषवरपुंडरीक–पुरुषोना मध्यमां श्रेष्ठ कमळ समान एटले जेम कमळ पंकमां उत्पन्न थया छतां अने जळवडे वृद्धि पाम्या छतां पण ते बन्नेनो त्याग करी उपर रहे छे अने पोते स्वभावथीज सुंदर देखाय छे तेम भगवान पण कर्मरूपी पंकने विषे उत्पन्न थया छतां अने दिव्य भोगरूपी जळवडे वृद्धि पाम्या छतां पण ते बन्नेथी भिन्न रही पोताना स्वाभाविक अतिशयथीज सुंदर देखाय छे, पुरुषवरगंधहस्ती–पुरुषोने विषे श्रेष्ठ गंधहस्ती समान एटले जेम गंधहस्तीना गंधे करीनेज ते प्रदेशमां विचरता क्षुद्र हस्तीओ नाशी जाय छे तेम भगवानना अचिंत्य पुण्यप्रभावथी तेमना विहारवाळा देशमां तेमना शरीरने स्पर्शेला वायुना गंधथीज सात प्रकारनी ईतिओ, स्वचक्र–परचक्र भय, दुकाळ, मरकी विगेरे सर्व उपद्रवो नष्ट थाय छे.

लोकोत्तम–भव्यप्राणीरूप लोकने विषे उत्तम, लोकनाथ–तथा प्रकारना भव्यप्राणीरूप लोकना नाथ एटले योगक्षेमने करनारा, लोकहित–सांव्यवहारिकादिक सर्व प्राणीरूप लोकने हितकर एटले सम्यग्दर्शननी प्ररूपणावडे हितना करनारा, लोकप्रदीप–देशनादिकनुं श्रवण करी मिथ्यात्वनो नाश करी यथायोग्य ज्ञेय–पदार्थोने जाणनार संज्ञी[1] रूपी लोकने प्रदीप समान, लोकप्रद्योतकर–विशेष प्रकारना (अमुक) चौद पूर्वीरूप लोकने विषे जीवादिक सात तत्त्वनो

१ अहीं सम्यग्दृष्टिने संज्ञी समजवा.

प्रद्योत करनारा अर्थात् चौद पूर्वीओ छ स्थान पतित होय छे, ते सर्वने जीवादिक तत्त्वनो पूर्ण प्रद्योत थइ शकतो नथी, केमके प्रद्योत एटले विशिष्ट तत्त्व जाणवानी योग्यता, आवी योग्यता विशिष्ट चौदपूर्वीने ज होइ शके छे, तेथी विशिष्ट चौदपूर्वीरूप लोकनी अपेक्षाए तीर्थंकरो प्रद्योत करनारा होय छे.

अभयद–इहलोकादिक सात प्रकारना अभयने आपनारा, शरणद–शरणने आपनारा एटले संसारमां प्रबळ रागादिकथी पीडा पामेला प्राणीओने शरणरूप भगवान एक ज छे, चक्षुर्द–मार्गानुसारी जीवोने श्रद्धारूप चक्षुने आपनारा, एटले के जेम चक्षुवाळो माणस वस्तुनुं स्वरूप जोइ शके छे तेम मार्गानुसारी श्रद्धारूप चक्षुवाळो पुरुष पदार्थनुं स्वरूप जाणी शके छे. मार्गद–विशिष्ट प्रकारना क्षयोपशमरूप मार्गने आपनारा, बोधिद–जिनधर्मनी प्राप्तिरूप बोधिने आपनारा.

धर्मद–देशविरति अने सर्वविरतिरूप धर्मने आपनारा, धर्मदेशक–बन्ने प्रकारना धर्मने देखाडनारा, धर्मनायक–बन्ने प्रकारना धर्मना नायक, धर्मसारथि–धर्मनुं सम्यक् प्रकारे प्रवर्तन, पालन अने दमन करनार होवाथी धर्मना सारथि, धर्मवरचतुरंतचक्रवर्ती–श्रेष्ठ अने चार गतिनो अंत करनार धर्मरूपी चक्रे करीने सहित एटले त्रिकोटिनी शुद्धिवडे बौद्धादिके रचेला धर्मचक्रनी अपेक्षाए उभय लोकमां हितकारक होवाथी चक्रवर्तीना चक्र करतां पण आ धर्मचक्र श्रेष्ठ छे, नारक, तिर्यंच, नर, अने देव ए चारे गतिनो अंत करनार होवाथी चतुरंत छे अने महा भयंकर मिथ्यात्वादिक शत्रुनो नाश करनार होवाथी आ जैनधर्म चक्र समान छे.

---

२ श्रावकधर्म अने साधुधर्म.

अप्रतिहत–कोइ पण ठेकाणे स्खलनाने न पामे एवा वर–श्रेष्ठ केवळज्ञान अने केवळदर्शनने धारण करनारा, व्यावृत्तछद्म–ज्ञानावरणादिक घातिकर्मरूप छद्म जेमनुं नाश पाम्युं छे एवा.

जिन–रागादिकने जीतनारा, जापक–बीजा प्राणीओने उपदेशादिकवडे रागादिकने जीताडनारा, तीर्ण–सम्यग् ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप वहाणवडे संसारसागरने तरी गयेला, तारक–एज रीते बीजा योग्य प्राणीओने तारनारा, बुद्ध–अज्ञानमय आ जगतमां अन्यना उपदेश विना जीवाजीवादिक तत्त्वने पोताना अनुभवज्ञानथीज जाणनारा, बोधक–अन्य प्राणीओने जीवादिक तत्त्वनो बोध करनारा, मुक्त–चतुर्गति संसारना कारणरूप विचित्र कर्मना बंधनथी मूकायेला, मोचक–अन्य प्राणीओने कर्मबंधनथी मूकावनारा, सर्वज्ञ–सर्व लोकालोकना स्वरूपने जाणनारा, सर्वदर्शन–सर्व लोकालोकना स्वरूपने जोनारा, तथा शिव–सर्व उपद्रव रहित, अचल–स्वाभाविक के कोइनी प्रेरणाथी हालवा चालवानी क्रिया रहित, अरुज–शरीर अने मननो अभाव होवाथी व्याधिनी वेदना रहित, अनंत–अनंत ज्ञानना विषयवाळुं, अक्षय–विनाश रहित, अव्याबाध–कर्म नहीं होवाथी व्याबाधा–पीडा रहित, अपुनरावृत्ति–ज्यांथी पाछुं संसारमां आववानुं नथी, एवुं सिद्धिगति नामनुं जे शाश्वत स्थान ते प्रत्ये गयेला छे, ते श्री वर्धमान स्वामीए पांचमा अंगनो आ (तमे कह्यो ते) अर्थ कह्यो छे, तो हे भगवान्! छठ्ठा अंगनो एटले ज्ञाताधर्मकथानो शो अर्थ कह्यो छे? आ प्रमाणे जंबूस्वामीए श्री सुधर्मास्वामीने पूछयुं.

मू०—तए णं अज्जसुहम्मे थेरे अज्जजंबूणामं अणगारं एवं वयासी ॥

अर्थः—त्यार पछी आर्य सुधर्मा स्थविरे आर्य जंबू नामना अनगारने आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स दो सुयक्खंधा पन्नत्ता, तं जहा--णायाणि य धम्मकहाओ य ।

अर्थ--आ प्रकारे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवंत महावीरे यावत् मोक्षने पामेलाए छठ्ठा अंगना बे श्रुतस्कंध कह्या छे. ते आ प्रमाणे.--ज्ञाता अने धर्मकथा.

मू०—जति णं भंते ! समणेणं भगवता महावीरेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स दो सुयखंधा पन्नत्ता, तं जहा--णायाणि य धम्मकहाओ य, पढमस्स णं भंते ! सुयक्खंधस्स समणेणं जाव संपत्तेणं णायाणं कति अज्झयणा पन्नत्ता ? ।

अर्थ--हे भगवंत ! जो श्रमण भगवंत महावीर यावत् शाश्वत स्थानने पामेला प्रभुए छठ्ठा अंगना बे श्रुतस्कंध कह्या छे, ते आ प्रमाणे--ज्ञाता एटले उदाहरणो अने धर्मकथा-धर्म प्रधान कथाओ. तो हे भगवंत ! श्रमण भगवंत यावत् शाश्वत स्थानने पामेला महावीरे पहेला श्रुतस्कंध ज्ञातानां केटलां अध्ययनो कह्यां छे ?

मू०—एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं णायाणं एगूणवीसं अज्झयणा पन्नत्ता, तं जहा—

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवंत यावत् शाश्वत स्थानने पामेला महावीर प्रभुए ज्ञाताना ओगणीश अध्ययनो कह्यां छे, ते आ प्रमाणे--

मू०—उक्खित्तणाए १ संघाडे २, अंडे ३ कुम्मे ४ य सेलगे ५। तुंबे ६ य रोहिणी ७ मल्ली ८, मायंदी ९ चंदिमा १० इय ॥ १ ॥ दावद्दवे ११ उदगणाए १२, मंडुक्के १३ तेयली १४ विय। नंदीफले १५ अवरकंका १६, अतिन्ने १७ सुंसुमा १८ इय ॥ २ ॥ अवरे य पुंडरीय–णायए १९ इगुणवीसातिमे। (सूत्र ५).

अर्थ–उत्क्षिप्तज्ञात–पूर्वना हस्तीभवमां वर्तता मेघकुमारना जीवे जे पोतानो पग उंचो कर्यो हतो, ते वृत्तांत सहित मेघकुमारनुं चरित्र उत्क्षिप्त कहेवाय छे. ते उत्क्षिप्तरूपी ज्ञात–उदाहरण. आ उदाहरणनी भावना आ प्रमाणे समजवी.–जेनामां दयादिक गुणो रहेला होय तेओ एक पग उंचो करीने रहेला मेघकुमारना पूर्वभवना हस्तीनी जेम शरीरना कष्टने सहन करे ज छे. अर्थात् शरीरनुं कष्ट सहन करवा उपर मेघकुमारना पूर्वभवना हस्तीनुं उदाहरण जाणवुं. आ अर्थने कहेनारुं अध्ययन पण भणातुं होवाथी उत्क्षिप्तज्ञात नामनुं अध्ययन कहेवाय छे. आ रीते सर्व अध्ययनोनां नाम विषे भावना करवी १, संघाटक—श्रेष्ठी अने चोर एक बंधनवडे बंधाया, तेथी ते नामनुं बीजुं अध्ययन २, अंडक–मोरनुं इंडुं ३, कूर्म–काचबो ४, शैलक–शैलक नामना राजर्षि ५, तुंब–तुंबडुं ६, रोहिणी– ते नामनी श्रेष्ठीनी वहु ७, मल्ली–ओगणीशमा जिनने स्थाने थयेली तीर्थंकरी ८, माकंदी–ते नामनो वणिकपुत्र ९, चंद्रमा–चंद्र १०, दावद्रव–समुद्रने कांठे रहेला वृक्षविशेष ११, उदकज्ञात–नगरना खाळना पाणीरूप ज्ञात–उदाहरण १२, मंडूक—ते नामनो नंद मणिकार श्रेष्ठीनो जीव १३, तेतली–तेतलीसुत नामनो प्रधान १४,

नंदीफल—नंदि नामना वृक्षनुं फळ १५, अवरकंका—धातकी खंडमां आवेला भरतखंडनी राजधानी १६, आकीर्ण—समुद्र मध्ये रहेला जातिवंत अश्व १७, सुंसुमा—ते नामनी श्रेष्ठीनी पुत्री १८, ए नामना क्रमसर अध्ययनो तथा ओगणीशमुं पुंडरीकज्ञात नामनुं अध्ययन १९. (कहेल छे.)

मू०—जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं णायाणं एगूणवीसा अज्झयणा पन्नत्ता, तं जहा—उक्खित्तणाए जाव पुंडरीएत्ति य, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ? ।

अर्थ—हे भगवन् ! जो श्रमण यावत् शाश्वत स्थानने पामेला भगवंत महावीर स्वामीए ज्ञाताना ओगणीश अध्ययन कह्या छे, ते आ प्रमाणे.—उत्क्षिप्तज्ञात यावत् पुंडरीकज्ञात, तो हे भगवन् ! पहेला अध्ययनमां शो अर्थ कह्यो छे ?

आ प्रमाणे जंबूस्वामीए प्रश्न कर्यो, त्यारे श्रीसुधर्मा स्वामी जे प्रमाणे पोते श्रमण भगवंत महावीरस्वामीना मुखथी सांभळ्युं हतुं ते प्रमाणे प्रथम अध्ययननो अर्थ कहेवानो आरंभ करे छेः—

मू०—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे रायगिहे णामं नयरे होत्था । वण्णओ । गुणसेलए चेतिए । वण्णओ ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये आ ज जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे भारत नामना वर्ष (क्षेत्र) ने विषे दक्षिणार्ध भरत क्षेत्रने विषे राजगृह नामनुं नगर हतुं. (तेनुं वर्णन कहेवुं.) त्यां एक गुणशैल नामनुं

चैत्य[1] हतुं. (तेनुं पण वर्णन कहेवुं.)

मू०–तत्थ णं रायगिहे नगरे सेणिए नामं राया होत्था। महता हिमवंत०। वण्णओ। तस्स णं सेणियस्स रण्णो नंदा नामं देवी होत्था, सुकुमालपाणिपाया, वण्णओ। (सूत्र ६).

अर्थ—ते राजगृह नगरने विषे श्रेणिक नामे राजा हता. ते मोटा हिमवंत पर्वतनी जेवा बळवान हता. ए विगेरे वर्णन कहेवुं. ते श्रेणिक राजाने नंदा नामनी देवी–राणी हती. तेना हाथ पग अति कोमळ हता ए विगेरे वर्णन कहेवुं. ६.

मू०–तस्स णं सेणियस्स पुत्ते नंदाए देवीए अत्तए अभए नामं कुमारे होत्था, अहीणपंचिंदियसरीरे जाव सुरूवे, साम–दंड–भेय–उवप्पयाण–णीति–सुप्पउत्त–णय–विहिन्नू, ईहा–वूह–मग्गण–गवेसणअत्थसत्थमइविसारए, उप्पत्तियाए वेणइयाए कम्मियाए पारिणामिआए चउव्विहाए बुद्धिए उववेए, सेणियस्स रन्नो बहुसु कज्जेसु य कुडुंबेसु मंतेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य आपुच्छणिज्जे, पडिपुच्छणिज्जे, मेढी पमाणं आहारे आलंबणं चक्खू, मेढीभूए, पमाणभूए, आहारभूए, आलंबणभूए, चक्खूभूए, सव्वकज्जेसु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए, विइण्णवियारे,

१ नगर बहार रहेलुं यक्षमंदिर.

रज्जधुरचिंतए, यावि होत्था। सेणियस्स रन्नो रज्जं च रट्ठं च कोसं च कोट्ठागारं च बलं च वाहणं च पुरं च अंतेउरं च सयमेव समुवेक्खमाणे समुवेक्खमाणे विहरति। (सूत्र ७).

अर्थ—ते श्रेणिक राजानो पुत्र अने नंदा देवीनो आत्मज (अंगथी उत्पन्न थयेलो) अभय नामनो कुमार हतो. तेना शरीरना पांचे इंद्रियो लक्षण अने स्वरूपथी अहीन-परिपूर्ण हतां, यावत् सुरूप-सारा रूपवाळो हतो. तथा ते कुमार साम, दंड, भेद अने उपप्रदान-दान ए चारे प्रकारनी राजनीतिनो सारी रीते-यथायोग्य व्यापार करनारो अने नैगमादिक नयना प्रकारोने जाणनारो हतो. तथा ईहा, अपोह, मार्गण अने गवेषणवडे अर्थशास्त्रमां कहेली बुद्धिए करीने चतुर हतो. तथा औत्पत्तिकी, वैनयिकी, कर्मजा अने पारिणामिकी ए चार प्रकारनी बुद्धिए करीने सहित हतो. तथा श्रेणिक राजानां घणां कार्योने विषे, कुटुंबने विषे, मंत्र (विचार) ने विषे, गुप्त कार्यने विषे, एकांतना कार्यने विषे अने निश्चय (निर्णय) करवाना कार्यने विषे एक वार पूछवा लायक अने वारंवार पूछवा लायक हतो. कारण के ते मेढी-धान्यना खळानी मध्ये रहेला मोटा स्तंभनी जेवो हतो, एटले के जेम ते स्तंभनी साथे बांधेला बळदो धान्यमां प्रवेश करी (तेना उपर चाली) तेने छूंडुं पाडे छे, तेम ते अभयकुमारनुं अवलंबन करी बीजा सर्व मंत्रीओ विचारवा योग्य बाबतोनी विचारणा करता हता. तथा ते अभयकुमार प्रमाण-प्रत्यक्ष, अनुमान विगेरे प्रमाणरूप हतो, एटले के जेम प्रत्यक्षादिक प्रमाणथी सिद्ध थयेला पदार्थो सत्य होय छे तेम ते अभयकुमारे जोयेला (कहेला) पदार्थो सत्य ज होय छे. तथा आधार-आधारनी जेम सर्व कार्यमां लोकोनो उपकार करनार हतो. तथा आलंबन-रज्जु विगेरेनी जेम आलंबनरूप हतो, जेम रज्जु विगेरेनुं आलं-

भन करवाथी कूवा विगेरेमांथी नीकळी शकाय छे, तेम अभयकुमारना बुद्धिना आलंबनथी आपत्तिमांथी नीकळी शकाय छे. तथा चक्षु-मंत्री अने अमात्य विगेरेना विविध कार्योने विषे सारुं नरसुं बतावनार होवाथी ते नेत्र समान हतो. आ मेढी विगेरे पांच विशेषणोने ज विशेष स्पष्ट रीते कहे छे के-ते अभयकुमार मेढीभूत-मेढी जेवो, प्रमाणभूत-प्रमाण जेवो, आधारभूत-आधार जेवो, आलंबनभूत-आलंबन जेवो अने चक्षुभूत-चक्षु जेवो हतो. तथा संधि, विग्रहादिक सर्व कार्यने विषे अने मंत्री, अमात्यादिक सर्व भूमिका (स्थानो) ने विषे लब्धप्रत्यय-ते अभयकुमारना वचनो अविसंवादी हता. तथा वितीर्णविचार-विश्वासने लीधे श्रेणिक राजाए तेना विचारोने अंगीकार कर्या हता. घणुं कहेवाथी शुं ? सर्व राज्य-धुरानो चिंतक पण हतो. तेज बाबत कहे छे.-श्रेणिक राजानुं राज्य, देश, खजानो, कोठार, सैन्य, वाहन, नगर अने अंतःपुर ए सर्वनी पोतेज वारंवार संभाल राखतो रहेलो छे अर्थात् संभाळ राखे छे. ७.

मू०—तस्स णं सेणियस्स रन्नो धारिणी नामं देवी होत्था । जाव सेणियस्स रन्नो इट्ठा जाव विहरइ । (सूत्र ८).

अर्थ—ते श्रेणिक राजाने धारिणी नामनी बीजी देवी-राणी हती. यावत् ते राणी श्रेणिक राजाने इष्ट-प्रिय हती, यावत् श्रेणिक राजा साथे भोग भोगवती ते सुखे रहेली हती. ८.

मू०—तए णं सा धारिणी देवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि छक्कट्ठकलट्ठमट्ठसंठियखं-

भुग्गयपवरवरसालभंजियउज्जलमणिकणगरतणथूभियविडंकजालद्धचंदणिज्जूहकंतरकणयालिचंदसालियाविभत्तिकलिते, सरसच्छधाऊवलवण्णरइए, बाहिरओ दूमियघट्ठमट्ठे, अब्भिंतरओ पसत्तसुचिलिहियचित्तकम्मे, णाणाविहपंचवण्णमणिरयणकोट्टिमतले, पउमलयाफुल्लवल्लिवरपुप्फजातिउल्लोयचित्तियतले, वंदणवरकणगकलससुविणिम्मियपडिपूजिअसरसपउमसोहंतदारभाए, पयरग्गलंबंतमणिमुत्तदामसुविरइयदारसोहे, सुगंधवरकुसुममउयपम्हलसयणोवयारमणहिययनिव्वुइयरे, कप्पूरलवंगमलयचंदनकालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवडज्झंतसुरभिमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामे, सुगंधवरगंधिए, गंधवट्टिभूते, मणिकिरणपणासियंधकारे, किं बहुणा ? जुइग्गुणेहिं सुरवरविमाणवेलंबियवरघरए, तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगणवट्टिए उभओ बिब्बोयणे, दुहओ उन्नए, मज्जे णयगंभीरे, गंगापुलिणवालुयाउद्दालसालिसए, उयचियखोमदुग्गुल्लपट्टपडिच्छण्णे, अच्छरयमलयनवतयकुसत्तलिंबसीहकेसरपच्चुत्थए, सुविरइयरयत्ताणे, रत्तंसुयसंवुए, सुरम्मे, आइणगरूयबूरणवणीयतुल्लफासे, पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी ओहीरमाणी एगं महं सत्तुस्सेहं रययकू-

डसन्निहं नहयलंसि सोमं सोमागारं लीलायंतं जंभायमाणं मुहमतिगयं गयं पासित्ता णं पडिबुद्धा ।

अर्थ—त्यारपछी ते धारिणी देवी (राणी) एकदा कोइ समये ते तेवा प्रकारना वासगृहमां, केवा वासगृहमां ?—पद् काष्ठक—घरनी बहारना भागमां छ काष्ठनुं आलंदक नामनुं द्वारविशेष, तथा लष्ट एटले सुंदर, मृष्ट एटले कोमळ अने संस्थित एटले विशिष्ट संस्थान (आकार)वाळा थांभला, तथा उंचे उभी रहेली अत्यंत श्रेष्ठ शालभंजिका—पुतळीओ तथा उज्वळ चंद्रकांतादिक मणिओ, सुवर्ण अने कर्केतनादिक रत्नोनी स्तूपिका (शिखर), तथा विंटक—कपोतपाली एटले पारेवाने बेसवानुं स्थान, तथा जाल—जाळीयां, तथा अर्धचंद्र—अर्धचंद्रना आकारवाळा पगथियां, तथा निर्यूहक—द्वारनी पासे रहेला टोडला, तथा अंतर—पानीयांतर नामनो घरनो अवयव विशेष, तथा कणकालि—एक जातनो घरनो अवयव, तथा चंद्रशाला—अगाशी अथवा उपरनो माळ, आ सर्व घरना अवयवोनी रचनाए करीने सहित, सरस अने स्वच्छ धातूपल एटले गेरु विगेरेवडे जेने रंग करेलो छे, बहारथी घोळेलुं अने कोमळ पथ्थर विगेरे वडे घसीने कोमळ करेलुं, जेना अंदरना भागमां उत्तम अने पवित्र चित्रकर्म करवामां आव्युं छे, विविध प्रकारनां पंचरंगी मणि अने रत्ननुं भूमितळ बांधेलुं छे, पद्मना आकारवडे, अशोकादिक लताना आकारवडे, पुष्पनी लताओवडे अने मालती विगेरे श्रेष्ठ पुष्पनी जातिवडे(एवा आकारवडे) जेना उल्लोचनुं तळीयुं चितरेलुं छे एवुं तथा वंदन एटले मांगलिक श्रेष्ठ सुवर्णना कळशो के जे सारीरीते स्थापन करेला, चंदनादिकवडे पूजेला अने मुख उपर सरस पद्मवडे

आच्छादित करेला तेवा कळशोवडे जेना द्वारना प्रदेशो सुशोभित छे, प्रतर नामना सुवर्णना अलंकारोना अग्रभाग उपर लटकावेली मणि अने मोतीनी माळाओवडे सारी रीते जेना द्वारनी शोभा करेली छे, सुगंधी श्रेष्ठ पुष्पोवडे कोमळ अने सूक्ष्म (झीणा) शयननो उपचार करवामां आवेलो होवाथी हृदयने आनंद आपनार छे, कपूर, लविंग, मलयाचळ पर्वतनुं चंदन, काळागुरु, उत्तम कंद्रूक, तुरुष्क (सेल्हरस) ए सर्व प्रकारनो धूप उवेखवाथी तेनो मनोहर महमहतो सुगंध उत्पन्न थवाथी जे मनोहर देखाय छे, सारा प्रधान गंधना चूर्णवडे सुगंधवाळुं छे, जाणे के गंधद्रव्य (सुगंधि पदार्थो) नी गुटिका होय तेना जेवुं देखाय छे, मणिना किरणोवडे जेमांथी अन्धकारनो नाश थयेलो छे, घणुं कहेवाथी शुं ? कांति अने गुणवडे देवना उत्तम विमाननो पराजय करनारुं जे श्रेष्ठ वासगृह छे ते वासगृहमां तेवा प्रकारनी शय्या रहेली छे. तेमां सालिंगनवर्ती–शरीर प्रमाण लांबुं ओशिकुं रहेलुं छे, बन्ने बाजु एटले ओशीके अने पांगते ओशीका मूकेलां छे, तेथी बन्ने बाजुए ते शय्या उंची छे, मध्य भागमां नमेली होवाथी गंभीर–उंडी छे, गंगा नदीना कांठानी रेतीनी जेम तेमां पग विगेरे मूकवाथी पग उंडो खुंची जाय तेवी कोमळ छे, साफ धोयेलुं चौम–रेशमी अने दुकूल–रुना के अतसीना वस्त्रनो जोटो तेना पर आच्छादन करेलो छे, आस्तरक[1], मलक[2], नवत[3], कुशक्त[4], लिंब अने सिंहकेसर ए नामना विविध ओछाडोवडे ते आच्छादित करेली छे, तेनी उपर सारी रीते रजस्त्राणनी[5] रचना करवामां आवी छे, राता वस्त्रथी (मच्छरदानीथी) ते चोतरफ वींटायेली छे,

---

१ सामान्य ओछाड. २ उननुं वस्त्र—लोकमां तेने जीन कहे छे. ३ कोमळ उननुं वस्त्र. लोकमां तेने शाल—कामळी कहे छे. ४ दसीओवाळो जाडो धावळो. ५ शयन सिवायने वखते धूळ विगेरे न पडे तेटला माटे ढांकवानुं वस्त्र.

सारी रमणीय देखाय तेवी छे, आजिनक, रु, बूर, माखण अने आकडाना रु जेवो तेनो स्पर्श कोमळ छे, आवा प्रकारनी शय्यामां पूर्वरात्र अने अपररात्रनी मध्यमां एटले मध्यरात्रिने समये कांइक सुतेली अने कांइक जागती होवाथी वारंवार अल्प निद्राने लेती ते धारिणी देवी एक मोटो, सात हाथना प्रमाणवाळो अथवा कुंभस्थळ विगेरे सात ठेकाणे उंचो, रुपाना पर्वत जेवो, शांत, शांत आकारवाळो, क्रीडा करतो अने आळसथी बगासुं खातो एवो हाथी आकाशतळथी उतरी मुखमां प्रवेश करतो जोइने जागी गइ.

मू०—तए णं सा धारिणी देवी अयमेयारूवं उरालं कल्लाणं सिवं धन्नं मंगल्लं सस्सिरीयं महासुमिणं पासित्ता णं पडिबुद्धा समाणी हट्ठ तुट्ठा चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया धाराहयकलंबपुप्फगंपिव समूससियरोमकूवा तं सुमिणं ओगिण्हइ, ओगिण्हइत्ता सयणिज्जाओ उट्ठेति, उट्ठेतित्ता पायपीढातो पच्चोरुहइ, पच्चोरुहइत्ता अतुरियमचवलमसंभंताए अविलंबियाए रायहंससरिसीए गतीए जेणामेव से सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता सेणियं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं उरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं

१ चर्ममय वस्त्र–ते स्वभावथीज अति कोमळ होय छे.

धन्नाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरियाहिं हिययगमणिज्जाहिं हिययपल्हायणिज्जाहिं मियमहुररिभियगंभीर-सस्सिरीयाहिं गिराहिं संलवमाणी संलवमाणी पडिबोहेइ, पडिबोहेत्ता सेणिएणं रन्ना अब्भणुन्नाया समाणी णाणामणिकणगरयणभत्तिचित्तंसि भद्दासणंसि निसीयाति, निसीयइत्ता आसत्था विसत्था सुहासणवरगया करयलपरिग्गहिअं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु सेणियं रायं एवं वयासी ।

अर्थ–त्यारपछी ते धारिणी देवी आ आवा स्वरूपवाळा, उदार, प्रधान, कल्याणकारक अथवा नीरोगकारक, शिव–उपद्रवनो नाश करनार, धन्य–धननी प्राप्ति करनार, मंगल्य–पापनो नाश करनार होवाथी मंगलिक अने सश्रीक–सुशोभित एवा महास्वप्नने जोइने जागी सती हर्षित थइ–विस्मय पामी, तुष्ट थइ–संतोष पामी, चित्तमां आनंद पामी, मनमां प्रीति पामी, अत्यंत सारा मनने पामी, हर्षने लीधे हृदय विस्तार पाम्युं, मेघनी धाराथी हणायेला–भींजायेला कदंब वृक्षना पुष्पनी जेम तेना रोमकूप–रुंवाडा विकस्वर थया, एवी सती ते स्वप्नने ग्रहण करे (विचारे), ग्रहण करीने शय्यामांथी उभी थाय, उभी थइने पादपीठथी नीचे उतरे, नीचे उतरीने अत्वरित–मननी उतावळ रहित, अचपळ–शरीरनी चपळता रहित, असंभ्रांत–स्खलना रहित, अविलंबित–विलंब रहित, अविच्छिन्न अने राजहंसना गमन जेवी मनोहर गतिए करीने ज्यां श्रेणिकराजा छे त्यां आवे, आवीने श्रेणिक राजाने तेवा प्रकारनी इष्ट–वहाली, कांत–इच्छेली, प्रिय–सर्वने प्रीति करनारी, मनोज्ञ–मनोहर, मनः प्रिय–मनने व्हाली, उदार–श्रेष्ठ स्वर, वर्ण अने उच्चारवाळी, कल्याण–समृद्धि करनारी, शिव–

दोषवडे उपद्रव नहीं पामेली, धन्य–धनने प्राप्त करनारी, मंगल्य–मंगळरूप, सश्रीक–अलंकार विगेरेवडे शोभावाळी, हृदय-गमनीय–कोमळताने लीधे मनने गमती, हृदयप्रल्हादन–हृदयने आल्हाद आपनारी, मित–परिमित अक्षरवाळी, मधुर–स्वरवडे मीठी, रिभित–स्वरनी घोलनावाळी, गंभीर–शब्द अने अर्थनी गंभीरतावाळी तथा गुणरूप लक्ष्मीए करीने सहित एवी वाणीवडे बोलती अने वारंवार बोलती (ते धारिणी देवी) प्रतिबोध करे (जगाडे), प्रतिबोध करीने (जगाडीने) श्रेणिक राजाए आज्ञा आपी सती विविध प्रकारना मणि, सुवर्ण अने रत्नोनी रचनावडे विचित्र एवा भद्रासनपर बेसे, बेसीने आश्वस्त–चालवाना श्रम रहित थयेली, विश्वस्त–क्षोभ रहित होवाथी विश्वास पामेली अने सुखे करीने श्रेष्ठ आसनपर बेठेली (ते देवी) बे करतलथी ग्रहण करेला अने मस्तकनी चोतरफ भमता एवा अंजळीने मस्तकपर करी श्रेणिकराजाने आ प्रमाणे कहे.

मू०–एवं खलु अहं देवाणुप्पिया! अज्ज तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगणवट्टिए जाव नियगवयणमइवयंतं गयं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा। तं एयस्स णं देवाणुप्पिया! उरालस्स जाव सुमिणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ? (सू० १०).

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हुं हे देवानुप्रिय! आजे ते तेवा प्रकारना शरीर प्रमाण लांबा ओशीकावाळी विगेरे विशेषणवाळी शय्यामां सुतेली यावत् पोताना मुखमां प्रवेश करता हाथीने स्वप्नमां जोइ जागी गइ. तो हे देवानुप्रिय! हुं मानुं छुं, (तर्क करुं छुं,)

प्राप्त थशे ? (९)

के उदार विगेरे विशेषणवाळा ए स्वप्ननो केवो कल्याणकारक फळवृत्तिनो विशेष मने प्राप्त थशे ? (९)

मू०—तते णं सेणिए राया धारिणीए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियए धाराहयनीवसुरभिकुसुमचंचुमालइयतणू ऊससि(वि)यरोमकूवे तं सुमिणं उग्गिण्हइ, उग्गि- ण्हइत्ता ईहं पविसति, पविसित्ता अप्पणो साभाविएणं मइपुव्वएणं बुद्धिविन्नाणेणं तस्स सुमिणस्स अत्थोग्गहं करेति, करित्ता धारिणिं देविं ताहिं जाव हिययपल्हायणिज्जाहिं मिउ(य)महुररिभियगं- भीरसास्सिरियाहिं वग्गूहिं अणुवूहेमाणे एवं वयासी—

अर्थ—त्यारपछी श्रेणिक राजा धारिणी देवीनी पासेथी आ अर्थ सांभळी, हृदयमां अवधारी हर्ष पाम्यो, तुष्टमान थयो, हृदयमां आनंद पाम्यो, यावत् मेघनी धाराथी हणायेला नीप (कदंब) वृक्षना सुगंधी पुष्पनी जेम तेनुं शरीर पुल- कित (रोमांचित) थयुं, एटले तेना रोमराजि उभा थया, ते राजा ते स्वप्नने अर्थावग्रहथी ग्रहण करे, ग्रहण करीने सत्य अर्थना विचाररूप ईहामां प्रवेश करे एटले बुद्धिथी स्वप्नना फळनो विचार करे, प्रवेश करीने पोताना स्वाभाविक मतिपूर्वक आभिनिबोधिकथी उत्पन्न थयेला बुद्धिज्ञानवडे—मतिज्ञानना विशेषरूप औत्पत्तिकी विगेरे बुद्धिरूप ज्ञानवडे ते स्वप्नना अर्थावग्रहने—स्वप्नना फळना निश्चयने करे, करीने धारिणी देवीने तेवा प्रकारनी यावत् हृदयने प्रल्हाद करनारी, मृदु (मित), मधुर, रिभित, गंभीर अने सश्रीक—अलंकारादिक शोभावाळी वाणीवडे अनुमोदना—प्रशंसा करतो सतो आ प्रमाणे बोले—

मू०—उराले णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे, कल्लाणा णं तुमे देवाणुप्पिए सुमिणे दिट्ठे, सिवे धन्ने मंगल्ले सस्सिरीए णं तुमे देवाणुप्पिए सुमिणे दिट्ठे, आरोग्गतुट्ठिदीहाउयकल्लाणमंगल्लकारए णं तुमे देवी सुमिणे दिट्ठे, अत्थलाभो ते देवाणुप्पिए, पुत्तलाभो ते देवाणुप्पिए, रज्जलाभो भोगसोक्खलाभो ते देवाणुप्पिए, एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं विइक्कंताणं अम्हं कुलकेउं कुलदीवं कुलपव्वयं कुलवडिंसयं कुलतिलकं कुलकित्तिकरं कुलवित्तिकरं कुलणंदिकरं कुलजसकरं कुलाधारं कुलपायवं कुलविवद्धणकरं सुकुमालपाणिपायं जाव दारयं पयाहिसि ॥

अर्थ—हे देवानुप्रिया ! तमे उदार प्रधान स्वप्न जोयुं छे, हे देवानुप्रिया ! तमे कल्याणकारक अथवा नीरोगकारक स्वप्न जोयुं छे, हे देवानुप्रिया ! शिव—उपद्रवनो नाश करनार, धन्य—धननी प्राप्ति करनार, मंगल्य—पापनो नाश करनार होवाथी मंगलिक अने सश्रीक—सुशोभित एवुं स्वप्न तमे जोयुं छे, हे देवी ! आरोग्य, तुष्टि, दीर्घायुष्य, कल्याण अने मांगल्यकारक स्वप्न तमे जोयुं छे. हे देवानुप्रिया ! आ स्वप्नथी तमने अर्थनो—धननो लाभ थशे, हे देवानुप्रिया ! तमने पुत्रनो लाभ थशे, हे देवानुप्रिया ! तमने राज्यनो लाभ थशे, तथा भोग अने सुखनो लाभ थशे. आ प्रमाणे निश्चे हे देवानु-

प्रिया! तमे बराबर पूर्ण थयेला नव मास अने साडा सात रात्रि दिवस व्यतीत थशे त्यारे अमारा कुळना केतु–ध्वज समान, कुळना दीपक समान, कुळमां पर्वत समान कोइथी पराभव पमाडी न शकाय तेवा, कुळना अलंकार समान, कुळना तिलक समान, कुळनी कीर्ति करनार, कुळनी वृत्ति–आजीविका करनार, कुळने आनंद आपनार, कुळमां यश करनार, कुळना आधाररूप, कुळमां वृक्ष समान आश्रय करवा लायक अने कुळनी वृद्धि करनार तथा अति कोमळ हाथ पगवाळा यावत् पुत्रने प्रसवशो–उत्पन्न करशो.

मू०—से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमेत्ते जोव्वणगमणुपत्ते सूरे वीरे विक्कंते विच्छिन्नविपुलबलवाहणे रज्जवती राया भविस्सइ । तं उराले णं तुमे देवीए सुमिणे दिट्ठे जाव आरोग्गतुट्ठिदीहाउकल्लाणकारए णं तुमे देवी सुमिणे दिट्ठे त्ति कट्टु भुज्जो भुज्जो अणुवूहेइ ॥१०॥

अर्थ—वळी ते पुत्र बाल्यावस्थाने मूकी कळादिकना विज्ञानमां परिणाम पामी यौवन वयने पामशे त्यारे ते दान देवामां अथवा अंगीकार करेलानो निर्वाह करवामां शूर थशे, संग्राममां वीर थशे, भूमिमंडळनुं आक्रमण करवाथी विक्रमवाळो थशे, तेना बळ–सैन्य अने गवादिक वाहन विस्तारवाळा अने अति विस्तारवाळा थशे. आ रीते ते राज्यनो पति–स्वतंत्र राजा थशे. तेथी करीने हे देवी! तमे उदार–प्रधान स्वप्न जोयुं छे, यावत् हे देवी! तमे आरोग्यकारक, तुष्टिकारक, दीर्घ आयुष्यकारक अने कल्याणकारक स्वप्न जोयुं छे. आ प्रमाणे कहीने राजा वारंवार तेनी प्रशंसा करवा लाग्या. १०.

मू०—उराले णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे, कल्लाणा णं तुमे देवाणुप्पिए सुमिणे दिट्ठे, सिवे धन्ने मंगल्ले सस्सिरीए णं तुमे देवाणुप्पिए सुमिणे दिट्ठे, आरोग्गतुट्ठिदीहाउयकल्लाणमंगल्लकारए णं तुमे देवी सुमिणे दिट्ठे, अत्थलाभो ते देवाणुप्पिए, पुत्तलाभो ते देवाणुप्पिए, रज्जलाभो भोगसोक्खलाभो ते देवाणुप्पिए, एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं विइक्कंताणं अम्हं कुलकेउं कुलदीवं कुलपव्वयं कुलवडिंसयं कुलतिलकं कुलकित्तिकरं कुलवित्तिकरं कुलणंदिकरं कुलजसकरं कुलाधारं कुलपायवं कुलविवद्धणकरं सुकुमालपाणिपायं जाव दारयं पयाहिसि ॥

अर्थ—हे देवानुप्रिया ! तमे उदार प्रधान स्वप्न जोयुं छे, हे देवानुप्रिया ! तमे कल्याणकारक अथवा नीरोगकारक स्वप्न जोयुं छे, हे देवानुप्रिया ! शिव–उपद्रवनो नाश करनार, धन्य–धननी प्राप्ति करनार, मंगल्य–पापनो नाश करनार होवाथी मंगलिक अने सश्रीक–सुशोभित एवुं स्वप्न तमे जोयुं छे, हे देवी ! आरोग्य, तुष्टि, दीर्घायुष्य, कल्याण अने मांगल्यकारक स्वप्न तमे जोयुं छे. हे देवानुप्रिया ! आ स्वप्नथी तमने अर्थनो–धननो लाभ थशे, हे देवानुप्रिया ! तमने पुत्रनो लाभ थशे, हे देवानुप्रिया ! तमने राज्यनो लाभ थशे, तथा भोग अने सुखनो लाभ थशे. आ प्रमाणे निश्चे हे देवानु-

प्रिया! तमे बराबर पूर्ण थयेला नव मास अने साडा सात रात्रि दिवस व्यतीत थशे त्यारे अमारा कुळना केतु–ध्वज समान, कुळना दीपक समान, कुळमां पर्वत समान कोइथी पराभव पमाडी न शकाय तेवा, कुळना अलंकार समान, कुळना तिलक समान, कुळनी कीर्ति करनार, कुळनी वृत्ति–आजीविका करनार, कुळने आनंद आपनार, कुळमां यश करनार, कुळना आधाररूप, कुळमां वृक्ष समान आश्रय करवा लायक अने कुळनी वृद्धि करनार तथा अति कोमळ हाथ पगवाळा यावत् पुत्रने प्रसवशो–उत्पन्न करशो.

मू०—से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमेत्ते जोव्वणगमणुपत्ते सूरे वीरे विक्कंते विच्छिन्नविपुलबलवाहणे रज्जवती राया भविस्सइ। तं उराले णं तुमे देवीए सुमिणे दिट्ठे जाव आरोग्गतुट्ठिदीहाउकल्लाणकारए णं तुमे देवी सुमिणे दिट्ठे त्ति कट्टु भुज्जो भुज्जो अणुवूहेइ ॥१०॥

अर्थ—वळी ते पुत्र बाल्यावस्थाने मूकी कळादिकना विज्ञानमां परिणाम पामी यौवन वयने पामशे त्यारे ते दान देवामां अथवा अंगीकार करेलानो निर्वाह करवामां शूर थशे, संग्राममां वीर थशे, भूमिमंडळनुं आक्रमण करवाथी विक्रमवाळो थशे, तेना बळ–सैन्य अने गवादिक वाहन विस्तारवाळा अने अति विस्तारवाळा थशे. आ रीते ते राज्यनो पति–स्वतंत्र राजा थशे. तेथी करीने हे देवी! तमे उदार–प्रधान स्वप्न जोयुं छे, यावत् हे देवी! तमे आरोग्यकारक, तुष्टिकारक, दीर्घ आयुष्यकारक अने कल्याणकारक स्वप्न जोयुं छे. आ प्रमाणे कहीने राजा वारंवार तेनी प्रशंसा करवा लाग्या. १०.

मू०—तते णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठा जाव हियया कर-तलपरिग्गहियं जाव अंजलिं कट्टु एवं वयासी।

अर्थ—त्यारपछी ते धारिणी देवी श्रेणिक राजाना आ प्रमाणे कहेवाथी हर्षित थइ, संतोष पामी, यावत् हृदयमां आनंद पामी बन्ने हाथनां तळीयां भेगां करी यावत् हाथ जोडी आ प्रमाणे बोली.

मू०—एवमेयं देवाणुप्पिया! तहमेयं अवितहमेयं असंदिद्धमेयं इच्छियमेयं देवाणुप्पिया! पडिच्छियमेयं इच्छियपडिच्छियमेयं, सच्चे णं एसमट्ठे जं णं तुब्भे वयह त्ति कट्टु तं सुमिणं सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छइत्ता सेणिएणं रन्ना अब्भणुण्णायासमाणी णाणामणिकणगरयणभत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता सयंसि सयणिज्जंसि निसीयइ, निसीयइत्ता एवं वदासी।

अर्थ—हे देवानुप्रिय! जे तमे कहो छो ते तेमज छे. तमे जे कहो छो ते अन्वयथी सत्य छे, ते अवितथ–व्यतिरेक-थी पण सत्य छे, आ तमारुं वचन असंदिग्ध–संदेह रहित छे, हे देवानुप्रिय! आ तमारुं वचन मने इष्ट छे. आ तमारुं वचन प्रतीष्ट–मने अत्यंत इष्ट छे अथवा प्रतीप्सित– में अंगीकार कर्युं छे, आ तमारुं वचन मने इष्ट अने प्रतीष्ट एटले

अत्यंत इष्ट छे अथवा में अत्यंत अंगीकार कर्युं छे. आ अर्थ सत्य छे के जे तमे मने कहो छो. आ प्रमाणे करीने (कहीने) ते स्वप्नने सम्यक् प्रकारे अंगीकार करे, अंगीकार करीने श्रेणिक राजाए आज्ञा आपी सती विविध प्रकारना मणि, सुवर्ण अने रत्ननी रचनावडे चित्र विचित्र सिंहासन उपरथी उठे, उठीने ज्यां पोतानी शय्या हती त्यां आवे, आवीने पोतानी शय्या उपर बेसे, बेसीने आ प्रमाणे बोले (विचार करे).

मू०—मा मे से उत्तमे पहाणे मंगल्ले सुमिणे अन्नेहिं पावसुमिणेहिं पडिहम्मिहि त्ति कट्टु देवय-गुरुजणसंबद्धाहिं पसत्थाहिं धम्मियाहिं कहाहिं सुमिणजागरियं पडिजागरमाणी विहरइ ॥ ११ ॥

अर्थ—'मारुं ते आ स्वरूपथी उत्तम, फळवडे प्रधान अने मांगलिक एवुं स्वप्न बीजा अशुभ स्वप्नवडे हणाइ न जाओ' एम विचारी ते धारिणी देवी देव अने गुरुजनना संबंधवाळी प्रशस्त धार्मिक कथावडे शुभ स्वप्ननुं रक्षण करवा माटे जागरण करती विचरवा लागी (रही). ११.

मू०—तए णं सेणिए राया पच्चूसकालसमयंसि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावइत्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी श्रेणिक राजाए प्रातःकाळने समये कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! बाहिरियं उवट्ठाणसालं अज्ज सविसेसं परमरम्मं गंधोदग-

सित्तसुइयसंमज्जिओवलित्तं पंचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं कालागरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्क-धूवडज्झंतमघमघंतगंधुध्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूतं करेह य कारवेह य, करित्ता य, कारवित्ता य एव (य) माणत्तियं पच्चप्पिणह।

अर्थ—' हे देवानुप्रिय ! बहारनी उपस्थानशाला (सभा) आजे शीघ्रपणे विशेषे करीने अत्यंत रमणीय, गंधोदकवडे सींचेली, कचरो दूर करवाथी संमार्जन करेली, छाण विगेरेथी लींपेली, पवित्र, पंचवर्णना सरस सुगंधी विखेरेला पुष्पोना समूहरूप उपचारवडे सहित, कालागुरु, उत्तम कंदूरू, तुरुष्क (सेन्हरस) ए सर्व प्रकारना धूप उत्खेवाथी तेनो मनोहर महमहतो सुगंध उत्पन्न थवाथी (प्रसरवाथी) मनोहर, सारा प्रधान गंधना चूर्णवडे सुगंधवाळी, अने जाणे के गंधद्रव्य (सुगंधी पदार्थो) नी गुटिका होय एवी करो अने करावो, करीने तथा करावीने आ मारी आज्ञाने पाछी सोंपो एटले आज्ञा प्रमाणे कर्याना खबर आपो.

मू०—तते णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव पच्चप्पिणंति।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषो श्रेणिक राजाए आ प्रमाणे कहेवाया सता हर्षित थया, तुष्टमान थया यावत् (ते प्रमाणे करीने) तेनी आज्ञा पाछी सोंपी.

मू०—तते णं सेणिए राया कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियंमि,

अह पंडुरे पभाए, रत्तासोगपगासकिंसुयसुयमुहगुंजद्धरागबंधुजीवगपारावयचलणनयणपरहुयसुरत्तलोयण जासुय(मि)णकुसुमजलियजलणतवणिज्जकलसहिंगुलयनिगररूवाइरेगरेहन्तसस्सिरीए दिवागरे अहकमेण उदिए, तस्स दिणकरपरपरावयारपारद्धम्मि अंधयारे, बालातवकुंकुमेण खइय व्व जीवलोए, लोयणविसआणुआसविगसंतविसददंसियम्मि लोए, कमलागरसंडबोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सयणिज्जाओ उट्ठेति ।

अर्थ—त्यारपछी श्रेणिक राजा काले (स्वप्नवाळी रात्री पछीने बीजे दिवसे) रात्री प्रकाशमान प्रभातरूप थइ, प्रफुल्लित कमळोनां कोमळ पांदडां विकस्वर थयां अने कमल एटले कालियार मृगनां कोमळ नेत्रो निद्रा जवाथी विकस्वर थयां, त्यारपछी प्रभात उज्वळ–श्वेतवर्णवाळी थइ, तथा राता अशोकनी प्रभा, किंशुकनुं पुष्प, पोपटनुं मुख, चणोठीनो रातो अर्धभाग, बंधुजीवक (बपोरीया) नुं पुष्प, पारेवाना पग अने नेत्र, कोयलनां नेत्र, जासुदना पुष्प, जाज्वल्यमान अग्नि, सुवर्णनो कलश, हिंगळोकनो समूह, ए सर्वना रूपथी (रक्तपणाथी) जेनी लक्ष्मी (शोभा) अधिक शोभायमान छे (रक्त छे) एवो सूर्य अनुक्रमे उदय पाम्यो, दिवस करवाने माटे ते सूर्यना किरणोनी परंपरा नीचे उतरवाथी अंधकारनो विनाश थवा लाग्यो, बाळ आतपरूपी कंकुवडे सर्व जीवलोक व्याप्त थयो होय तेवो देखाव थयो, नेत्रना विषयनो प्रचार थवाथी स्पष्ट रीते विकास पामतो लोक देखावा लाग्यो, (एटले के अनुक्रमे अंधकारनी हानि थवाथी नेत्रना विषयनो प्रचार पण अ-

नुक्रमे ज थाय छे, अने तेथी करीने विकास पामतो लोक जोइ शकाय छे, अने अंधकार होय त्यारे दृष्टिनो प्रचार नहीं थवाथी सर्व लोक समूहरूपे ज भासे छे.) सरोवरादिकमां रहेला कमळना वनने विकस्वर करनार उदयनी पछीनी अवस्था पामेलो, हजार किरणोवाळो अने दिवसने करनारो सूर्य तेजवडे जाज्वल्यमान थयो त्यारे (श्रेणिक राजा) शय्यामांथी उभा थया.

मू०—उट्ठित्ता जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता अट्टणसालं अणुपविसाति, अणुपविसइत्ता अणेगवायामजोगवग्गणवामद्दणमल्लजुद्धकरणेहिं संते परिस्संते, सयपागेहिं सहस्स-पागेहिं सुगंधवरतेल्लमादिएहिं पीणणिज्जेहिं दीवणिज्जेहिं दप्पणिज्जेहिं मदणिज्जेहिं विंहणिज्जेहिं सव्विं-दियगायपल्हायणिज्जेहिं अब्भंगएहिं अब्भंगिए समाणे, तेल्लचम्मंसि पडिपुण्णपाणिपायसुकुमाल-कोमलतलेहिं पुरिसेहिं छेएहिं दक्खेहिं पट्ठेहिं कुसलेहिं मेहावीहिं निउणेहिं निउणसिप्पोवगतेहिं जियपरिस्समेहिं अब्भंगणपरिमद्दणुव्वलणकरणगुणनिम्माएहिं अट्ठिसुहाए मंससुहाए तयासुहाए रोमसुहाए चउव्विहाए संबाहणाए संबाहिए समाणे, अवगयपरिस्समे नरिंदे अट्टणसालाओ पडिनिक्खमइ ।

अर्थ—शय्यामांथी उठीने जे ठकाणे अट्टणशाला—कसरत करवानी शाला छे त्यां आवे, आवीने अट्टणशालामां प्र-

वेश करे, प्रवेश करीने अनेक प्रकारना व्यायाम (कसरत), योग्य (गोणी जेवा भारे पदार्थ उपाडवा), वल्गन (कुदवुं), व्यामर्दन (परस्पर बाहु विगेरे अंगनुं मरडवुं), मल्लयुद्ध अने करण (बाहुने अमुक प्रकारे वाळवा), ए सर्व करवावडे सामान्यपणे श्रम कर्यो, अने अंगोपांगनी अपेक्षाए सर्वथा प्रकारे श्रम कर्यो. पछी शतपाक अने सहस्रपाकादि सुगंधी श्रेष्ठ तेल विगेरे (घी, कपूरनुं जळ विगेरे) प्रीतिने उपजावनारा एटले रस–रुधिरादिक धातुओने समान करनारा, दीपन (जठराग्निने दीपन) करनारा, दर्पणीय (शरीरना बळने करनारा), मदनीय (कामदेवनी वृद्धिने करनारा), बृंहणीय (मांसनी वृद्धिने करनारा), तथा सर्व इंद्रियो अने अवयवोने आनंद आपनारा अभ्यंगो (चोळवाना पदार्थो) वडे राजा श्रेणिक अभ्यंगन कराया अर्थात् तेमणे अभ्यंगन कराव्युं. पछी ते तेल चोपडेला शरीरना चर्मने परिपूर्ण हाथपगना अति कोमळ तळीयावाळा, छेक (अवसर जाणनार अथवा संवाहकनी कलामां पंडित), दक्ष (कार्यने शीघ्रपणे करनारा), प्रष्ठ (वाचाळ अथवा अग्रगामी), कुशळ (संबाधन कर्ममां सारा), मेधावी (अपूर्व कळा ग्रहण करवामां शक्तिमान,) निपुण (क्रीडा करवामां कुशळ), निपुण (सूक्ष्म) अंगमर्दनादिक शिल्पने (क्रियाने) जाणनारा, परिश्रमने जीतनारा तथा अभ्यंगन, मर्दन अने उद्वर्तन करवाना गुणोने धारण करनारा पुरुषोवडे अस्थिने सुखकारक, मांसने सुखकारक, त्वचाने सुखकारक अने रुंवाडाने सुखकारक, ए प्रमाणे चार प्रकारनी संबाधनावडे श्रेणिक राजा संबाध कराया (तेमना शरीरे मर्दन कर्युं) तेमनो परिश्रम दूर थयो, पछी ते श्रेणिक राजा अट्टणशाळानी बहार नीकळ्या.

---

१ सोवार पकावेलु अथवा सो सोनामहोरवडे पाकेलु अथवा सो औषधीथी पाकेलु. ए रीते सहस्रपाक पण जाणवु.

मू०—पडिनिक्खमइत्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता मज्जणघरं अणुपविसति, अणुपविसित्ता समंत (मुत्त) जालाभिरामे विचित्तमणिरयणकोट्टिमतले रमणिज्जे ण्हाणमंडवंसि णाणामणिरयणभत्तिचित्तंसि ण्हाणपीढंसि सुहनिसन्ने सुहोदगेहिं पुप्फोदएहिं गंधोदएहिं शुद्धोदएहि य पुणो पुणो कल्लाणगपवरमज्जणविहीए मज्जिए, तत्थ कोउयसएहिं बहुविहेहिं कल्लाणगपवरमज्जणावसाणे पम्हलसुकुमालगंधकासाईयलूहियंगे अहतसुमहग्घदूसरयणसुसंवुए सरससुरभिगोसीसचंदणाणुलित्तगत्ते सुइमालावन्नगविलेवणे आविद्धमणिसुवन्ने कप्पियहारद्धहारतिसरयपालंबपलंबमाणकडिसुत्तसुकयसोहे पिणद्धगेवज्जे अंगुलेज्जगललियंगललियकयाभरणे णाणामणिकडगतुडियथंभियभुए अहियरूवसस्सिरीए कुंडलुज्जोइयाणणे मउडदित्तसिरए हारोत्थयसुकतरइयवच्छे पालंबपलंबमाणसुकयपडउत्तरिज्जे मुद्दियापिंगलंगुलीए णाणामणिकणगरयणविमलमहरिहनिउणोवियमिसिमिसंतविरइयसुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठसंठियपसत्थआविद्धवीरवलए, किं बहुणा ? कप्परुक्खए चेव सुअलंकियविभूसिए नरिंदे सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं उभओ चउचाम-

रवालवीइयंगे मंगलजयसद्दकयालोए अणेगगणनायगदंडणायगराईसरतलवरमाडंबियकोडंबियमंति-
महामंतिगणगदोवारियअमच्चचेडपीढमद्दनगरणिगमसेट्ठिसेणावइसत्थवाहदूयसंधिवालसद्धिं संपरिवुडे
धवलमहामेहनिग्गए विव गहगणदिप्पंतरिक्खतारागणाण मज्झे ससि व्व पियदंसणे नरवई मज्जण-
घराओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिआ उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवा-
गच्छइत्ता सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे संनिसन्ने ।

अर्थ—अट्टणशालानी बहार नीकळीने श्रेणिक राजा ज्यां मज्जनगृह (स्नान करवानुं घर) छे त्यां आवे, आवीने मज्जनगृहमां प्रवेश करे, प्रवेश करीने चोतरफ जाळीयांए करीने मनोहर अथवा समग्र जाळीयांवडे मनोहर अथवा मोतीना समूह सहित अने मनोहर, विचित्र प्रकारना मणि अने रत्नोनी भींत तथा तळीयावाळा अने रमणीय स्नानमंडपने विषे विविध प्रकारना मणि अने रत्नोनी रचनावडे चित्र विचित्र स्नान करवाना पीठ (बाजोठ) उपर सुखे करीने बेठेला राजाए पवित्र स्थानथी आणेला शुभ जळवडे, पुष्पमिश्रित जळवडे, गंधमिश्रित जळवडे अने शुद्ध जळवडे वारंवार कल्याणकारक श्रेष्ठ स्नाननी विधिए करीने स्नान कर्युं. ते स्नानने अंते घणा प्रकारना रक्षापोट्टली विगेरे सेंकडो कौतुकवडे कल्याण-कारक मंगळ करवामां आव्युं. एवी रीते श्रेष्ठ स्नान कर्या पछी अमुक पक्षीनी पांख जेवुं सूक्ष्म होवाथी अत्यंत कोमळ, सुगंधवाळा अने कषाय रंगथी रंगेला वस्त्रवडे शरीरने लुंछ्युं. पछी अहत एटले मळ अने मूषकादिकना उपद्रव रहित (नवुं—

कोरुं) अने घणा मूल्यवाळुं श्रेष्ठ वस्त्र तेमणे पहेर्युं, सरस अने सुगंधी गोशीर्षचंदनवडे तेमना शरीरे विलेपन करवामां आव्युं. पवित्र पुष्पनी माळा पहेरी. पवित्र केसर विगेरेनुं विलेपन कर्युं. मणि अने सुवर्णना अलंकार पहेर्या, अढार सेरनो हार, नव सेरनो अर्धहार, त्रण सेरनो नानो हार, लटकतुं झुमखुं अने कटिसूत्रवडे शरीरने शोभित कर्युं, कंठमां ग्रैवेयक (गळचवो) अने आंगळीओमां अंगुलीयक (वींटी) धारण करी, मनोहर अंग उपर बीजां पण मनोहर आभरणो पहेर्यां, विविध प्रकारना मणिओना कटक अने त्रुटिक नामना घणां आभूषणो पहेरवाथी तेमना हाथ स्तंभित जेवा थइ गया. अधिक रूपने लीधे ते राजा अत्यंत शोभवा लाग्या, कुंडळ पहेरेला होवाथी तेमनुं मुख देदीप्यमान थयुं, मुगटवडे तेमनुं मस्तक दीपवा लाग्युं, तेमनुं वक्षस्थल हारवडे आच्छादित करेलुं होवाथी अत्यंत प्रीतिने उत्पन्न करवा लाग्युं. लांबा लटकता दुपट्टा (खेस) वडे तेमणे सारी रीते उत्तरासंग कर्युं, मुद्रिकावडे तेनी आंगळीओ पीळी देखावा लागी, विविध प्रकारना मणि, सुवर्ण अने रत्नोवडे निर्मळ, महा मूल्यवाळा, निपुण कारीगरे बनावेला, देदीप्यमान, रचेला, सारी रीते मळी गयेली सांधवाळा, बीजा करतां विशेष प्रकारना, मनोहर, सुंदर आकारवाळा अने प्रशस्त एवा वीरवलयो तेणे पहेर्या, (कोइ बीजो सुभट वीरव्रतने धारण करनार होय तो ते मने जीतीने आ मारा वलयने मूकावो ए रीते स्पर्धाथी जे वलय धारण करवामां आवे छे ते वीरवलय कहेवाय छे.) घणुं कहेवाथी शुं ? सारी रीते मुगटादिक आभूषणोवडे अलंकृत थयेला अने वस्त्रवडे विभूषित थयेला आ राजा साक्षात् कल्पवृक्ष ज छे, एम जणावा लाग्युं, तथा कोरंट वृक्षना पुष्पोनी माळावाळुं छत्र तेमना मस्तकपर धारण करवामां आव्युं, बन्ने पडखे चार चामरोवडे तेनुं शरीर वींझावा लाग्युं, तेनुं दर्शन

थये सते लोको मांगलिक जय जय शब्द बोलवा लाग्या, तथा अनेक गणनायक (प्रजाओमां मोटा), दंडनायक (कटकना स्वामी); राजाओ (मांडलिक राजा), ईश्वर (युवराज अथवा अणिमादिक ऐश्वर्यवाळा), तलवर (राजाए आपेला पट्टबंधवाळा), मांडलिक (थोडा गामना स्वामी), कौटुंबिक (केटलाक कुटुंबना स्वामी), मंत्रीओ, महामंत्रीओ (मंत्रीमंडळना उपरी अथवा हाथीना सैन्यना उपरी), गणक (जोशी), द्वारपाळ, अमात्य (राज्यना अधिष्ठायक), चेट (पाद पासे रहेनारा), पीठमर्द (सभामां समीपे रहेनारा सेवको एटले मित्रो), नगर (नगरना लोको), निगम (वेपारी), श्रेष्ठीओ (लक्ष्मी देवीए अधिष्ठित सुवर्णना पट्टवडे विभूषित मस्तकवाळा), सेनापति (चतुरंग सेनाना नायक), सार्थवाह, दूत अने संधिपाल (राज्यनी संधिनुं रक्षण करनारा), ए सर्वनी साथे परिवरेला, अठ्यासी ग्रहगणमां देदीप्यमान अने अठावीश नक्षत्र तथा कोटाकोटि ताराओनी मध्यमां चंद्रनी जेवा प्रिय दर्शनवाळा ते नरपति उज्वल महामेघमांथी (वादळामांथी) जेम चंद्र नीकळे तेम मज्जनगृहमांथी बहार नीकळ्या, नीकळीने ज्यां बहारनी उपस्थानशाळा (सभा) हती, त्यां आव्या, आवीने श्रेष्ठ सिंहासन उपर पूर्व दिशा तरफ मुख राखीने बेठा.

मू०–तते णं से सेणिए राया अप्पणो अदूरसामंते उत्तरपुरच्छिमे दिसिभागे अट्ठ भद्दासणाइं सेयवत्थपच्चुत्थुयातिं सिद्धत्थमंगलोवयारकतसंतिकम्माइं रयावेइ, रयावित्ता णाणामणिरयणमंडियं अहियपेच्छणिज्जरूवं महग्घवरपट्टणुग्गयं सण्हबहुभत्तिसयचित्तट्ठाणं ईहामियउसभतुरयणरमगर-

विहगवालगकिन्नररुरुसरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्तं सुखचियवरकणगपवरपेरंतदेसभागं अब्भिंतरियं जवणियं अंछावेइ, अंछावइत्ता अच्छरगमउअमसूरगउच्छइयं धवलवत्थपच्चत्थुयं विसिट्ठं अंगसुहफासयं सुमउयं धारिणीए देवीए भद्दासणं रयावेइ, रयावइत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते श्रेणिक राजाए पोतानी समीपे ईशान खूणामां श्वेत वस्त्रथी ढांकेलां अने सिद्धार्थक (सरसव) ना मांगलिक उपचार (पूजा) वडे जेमां शांतिकर्म (विघ्नना विनाशनुं कर्म) कर्युं छे एवा आठ भद्रासन रचाव्यां, रचावीने सभाना अंदरना भागमां जवनिका (पडदो) बंधावी. ते विविध प्रकारना मणि अने रत्नोथी जडित हती, अत्यंत जोवा लायक हती, मोटा मूल्यवाळी हती, मोटा नगरमां उत्पन्न थयेली (वणेली) हती, सूक्ष्म अने सेंकडो रचनावाळा चित्रोना स्थानभूत हती, तेमां ईहामृग (वृक–वरु), वृषभ, अश्व, नर, मगर, पक्षी, सर्प, किंनर, रुरु जातिना मृग, सरभ (अष्टापद), चमरी गाय, हाथी, वनलता अने पद्मलता विगेरेनां चित्रो आळेखेलां हतां, तथा तेना छेडाना प्रदेश उत्तम सुवर्णथी भरेला होवाथी शोभता हता. आवी जवनिका बंधावीने तेनी अंदरना भागमां धारिणी देवीने माटे आस्तरक (ढांकण) वडे अने कोमळ चाकळावडे ढांकेलुं, श्वेत वस्त्रवडे आच्छादन करेलुं (ओछाडेलुं), विशिष्ट शोभावाळुं, स्पर्श करवाथी अंगने सुख उपजावे तेवुं अने अत्यंत कोमळ भद्रासन रचाव्युं, रचावीने कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने

तेमने श्रेणिक राजाए आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अट्ठंगमहानिमित्तसुत्तट्ठपाढए विविहसत्थकुसले सुमिणपाढए सद्दावेह, सद्दावइत्ता एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह ।

अर्थ—'हे देवानुप्रियो! शीघ्रपणे अष्टांग महानिमित्तना सूत्र तथा अर्थने भणेला अने विविध प्रकारनां शास्त्रोमां कुशळ एवा स्वप्नपाठकोने बोलावो, बोलावीने आ मारी आज्ञा मने शीघ्रपणे पाछी सोंपो.'

मू०—तते णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणा हट्ठ जाव हियया करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवो तह त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता सेणियस्स रन्नो अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सुमिणपाढगगेहाणि तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सुमिणपाढए सद्दावेंति।

अर्थ—त्यार पछी ते कौटुंबिक पुरुषो श्रेणिक राजाए आ प्रमाणे कह्या सता हृष्ट तुष्ट थया, यावत् आनंदित हृदयवाळा थया, अने करतल ग्रहण करी (बे हाथ जोडी) दश नखने एकठा करी मस्तकने आवर्त दइ मस्तके अंजलि जोडी "हे देव! एमज थाओ." एम कही विनयवडे तेनी आज्ञाना वचनने अंगीकार कर्युं, अंगीकार करीने श्रेणिक राजानी पासेथी नीकळ्या, नीकळीने राजगृह नगरना मध्यभागे थइने ज्यां स्वप्नपाठकोनां घर हतां त्यां आव्या, आवीने ते

विहगवालगकिन्नररुरुसरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्तं सुखचियवरकणगपवरपेरंतदेसभागं अब्भिंतरियं जवणियं अंछावेइ, अंछावइत्ता अच्छरगमउअमसूरगउच्छइयं धवलवत्थपच्चत्थुयं विसिट्ठं अंगसुहफासयं सुमउयं धारिणीए देवीए भद्दासणं रयावेइ, रयावइत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते श्रेणिक राजाए पोतानी समीपे ईशान खूणामां श्वेत वस्त्रथी ढांकेलां अने सिद्धार्थक (सरसव) ना मांगलिक उपचार (पूजा) वडे जेमां शांतिकर्म (विघ्नना विनाशनुं कर्म) कर्युं छे एवा आठ भद्रासन रचाव्यां, रचावीने सभाना अंदरना भागमां जवनिका (पडदो) बंधावी. ते विविध प्रकारना मणि अने रत्नोथी जडित हती, अत्यंत जोवा लायक हती, मोटा मूल्यवाळी हती, मोटा नगरमां उत्पन्न थयेली (वणेली) हती, सूक्ष्म अने सेंकडो रचनावाळा चित्रोना स्थानभूत हती, तेमां ईहामृग (वृक-वरु), वृषभ, अश्व, नर, मगर, पक्षी, सर्प, किंनर, रुरु जातिना मृग, सरभ (अष्टापद), चमरी गाय, हाथी, वनलता अने पद्मलता विगेरेनां चित्रो आळेखेलां हतां, तथा तेना छेडाना प्रदेश उत्तम सुवर्णथी भरेला होवाथी शोभता हता. आवी जवनिका बंधावीने तेनी अंदरना भागमां धारिणी देवीने माटे आस्तरक (ढांकण) वडे अने कोमळ चाकळावडे ढांकेलुं, श्वेत वस्त्रवडे आच्छादन करेलुं (ओछाडेलुं), विशिष्ट शोभावाळुं, स्पर्श करवाथी अंगने सुख उपजावे तेवुं अने अत्यंत कोमळ भद्रासन रचाव्युं, रचावीने कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने

तेमने श्रेणिक राजाए आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अट्ठंगमहानिमित्तसुत्तट्ठपाढए विविहसत्थकुसले सुमिणपाढए सद्दावेह, सद्दावइत्ता एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह ।

अर्थ—' हे देवानुप्रियो ! शीघ्रपणे अष्टांग महानिमित्तना सूत्र तथा अर्थने भणेला अने विविध प्रकारनां शास्त्रोमां कुशळ एवा स्वप्नपाठकोने बोलावो, बोलावीने आ मारी आज्ञा मने शीघ्रपणे पाछी सोंपो.'

मू०—तते णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणा हट्ठ जाव हियया करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवो तह त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता सेणियस्स रन्नो अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सुमिणपाढगागेहाणि तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सुमिणपाढए सद्दावेंति।

अर्थ—त्यार पछी ते कौटुंबिक पुरुषो श्रेणिक राजाए आ प्रमाणे कह्या सता हृष्ट तुष्ट थया, यावत् आनंदित हृदयवाळा थया, अने करतल ग्रहण करी (बे हाथ जोडी) दश नखने एकठा करी मस्तकने आवर्त दइ मस्तके अंजलि जोडी " हे देव ! एसज थाओ. " एम कही विनयवडे तेनी आज्ञाना वचनने अंगीकार कर्युं, अंगीकार करीने श्रेणिक राजानी पासेथी नीकळ्या, नीकळीने राजगृह नगरना मध्यभागे थइने ज्यां स्वप्नपाठकोनां घर हतां त्यां आव्या, आवीने ते

स्वप्नपाठकोने बोलाव्या.

मू०—तते णं ते सुमिणपाढगा सेणियस्स रन्नो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठ तुट्ठ जाव हियया ण्हाया कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा हरियालिय-सिद्धत्थयकयमुद्धाणा सतेहिं सतेहिं गिहेहिंतो पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता रायगिहस्स मज्झं-मज्झेणं जेणेव सेणियस्स रन्नो भवणवडेंसगदुवारे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एगतओ मिल-यंति, मिलित्ता सेणियस्स रन्नो भवणवडेंसगदुवारेणं अणुपविसंति, अणुपविसित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सेणियं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति। सेणिएणं रन्ना अच्चिय वंदिय पूतिय माणिय सक्कारिया सम्माणिया समाणा पत्तेयं पत्तेयं पुव्वन्नत्थेसु भद्दासणेसु निसीयंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते स्वप्नपाठको श्रेणिक राजाना कौटुंबिक पुरुषोए बोलाव्या सता हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हृदय-वाळा थया, नहाया, बलिकर्म (देवपूजन) कर्युं, यावत् कौतुक[1] मंगलमय[2] प्रायश्चित्त कर्युं, घणा मूल्यवाळा थोडा आभरणवडे

१ मेशनुं तिलक विगेरे. २ सरसव, दहीं, चोखा, धरो विगेरे.

शरीरने विभूषित कर्युं, तथा मस्तकपर धरो अने चोखा (मंगळिक निमित्ते) धारण कर्या, ए रीते करीने पोतपोताना घर-मांथी बहार नीकळ्या, बहार नीकळीने राजगृह नगरना मध्यभागवडे ज्यां श्रेणिक राजाना मुख्य महेलनुं द्वार हतुं, त्यां आव्या. आवीने सर्वे एकठा मळ्या, एकठा मळीने (एकने मुख्य कर्यो) पछी श्रेणिक राजाना मुख्य महेलना द्वारमां तेओए प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने ज्यां बहारनी उपस्थानशाला हती अने ज्यां श्रेणिक राजा रहेला हता, त्यां आव्या. आवीने श्रेणिकराजाने जैय अने विजेय एवा शब्दवडे वधाव्या. पछी श्रेणिकराजाए तेमनी चंदनादिकवडे अर्चा करी, छता गुणोनी प्रशंसावडे वंदन कर्युं, पुष्पोवडे पूजा करी, दृष्टिवडे जोवाथी अने प्रणामथी तेमने मान आप्युं, फळवस्त्रादिक आपी तेमनो सत्कार कर्यो, अनेक प्रकारनी भक्तिवडे तेमनुं सन्मान कर्युं, पछी तेओ प्रत्येक प्रत्येक प्रथमथी स्थापन करेला भद्रासनोपर योग्य रीते बेठा.

मू०—तते णं सेणिए राया जवणियंतरियं धारिणीं देवीं ठवेइ, ठवेत्ता पुप्फफलपडिपुण्णहत्थे परेणं विणएणं ते सुमिणपाढए एवं वदासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! धारिणी देवी अज्ज तंसि तारिसयंसि सयणिज्जंसि जाव महासुमिणं पासित्ता णं पडिबुद्धा, तं एयस्स णं देवाणुप्पिया! उरालस्स जाव सस्सिरीयस्स महासुमिणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सति ? ।

१ शत्रुथी पराजय न पामवो ते अथवा प्रतापनी वृद्धि. २ शत्रुनो पराभव करवो ते.

अर्थ—त्यारपछी श्रेणिकराजाए जवनिकानी अंदर धारिणीदेवीने अंतःपुरमांथी बोलावीने बेसाड्या, बेसाडीने पुष्प अने फळवडे परिपूर्ण हाथ करी मोटा विनयवडे ते स्वप्नपाठकोने आ प्रमाणे कह्युं के–हे देवानुप्रियो ! आजे ते तेवा प्रकारनी (उत्तम) शय्यामां सुतेली धारिणी यावत् महास्वप्नने जोइ जागी गइ. तो हे देवानुप्रियो ! हुं मानुं छुं के–ए उदार यावत् सश्रीक महास्वप्ननुं केवुं कन्याणकारक विशेष प्रकारनुं फळ थशे ? ते कहो—

मू०–तते णं ते सुमिणपाढगा सेणियस्स रन्नो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियया तं सुमिणं सम्मं ओगिण्हंति, ओगिण्हित्ता ईहं अणुपविसंति, अणुपविसित्ता अन्नमन्नेण सद्धिं संचालेंति, संचालित्ता तस्स सुमिणस्स लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा सेणियस्स रन्नो पुरओ सुमिणसत्थाइं उच्चारेमाणा उच्चारेमाणा एवं वदासी–

अर्थ–त्यारपछी ते स्वप्नपाठको श्रेणिक राजानी पासेथी आ प्रमाणे अर्थ सांभळीने तथा हृदयमां धारण करीने हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हृदयवाळा थइ ते स्वप्नने सम्यक् प्रकारे धारण करे, धारण करीने ईहा (विचारणा) मां प्रवेश करे, प्रवेश करीने एक बीजा साथे विचार करे, विचार करीने ते स्वप्ननो अर्थ पोतानी मेळे प्राप्त कर्यो. तेनो विशेष अर्थ बीजानो अभिप्राय जाणी ग्रहण कर्यो, ते अर्थ परस्पर पूछ्यो, तेवी रीते करवाथी तेना अर्थनो निश्चय कर्यो, अने तेम करीनेज तेनो खरो अर्थ जाण्यो. पछी तेओ श्रेणिक राजानी पासे स्वप्ननां शास्त्रोनो उच्चार करता करता आ प्रमाणे बोल्या.—

मू०—एवं खलु अम्हं सामी ! सुमिणसत्थंसि बायालीसं सुमिणा तीसं महासुमिणा बावत्तरिं सव्वसुमिणा दिट्ठा। तत्थ णं सामी ! अरिहंतमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा अरहंतंसि वा चक्कवट्टिंसि वा गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुमिणाणं इमे चोद्दस महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति ।

अर्थ—" हे स्वामी ! आ प्रकारे निश्चे अमारा स्वप्नशास्त्रने विषे बेंतालीश स्वप्न अने त्रीश महास्वप्न मळी कुल बोंतेर स्वप्नो कहेला अमे जोयां छे. तेमां हे स्वामी ! अरिहंतनी माता के चक्रवर्तीनी माता अरिहंत के चक्रवर्ती गर्भमां आवे त्यारे आ त्रीश महा स्वप्नोमांथी आ चौद महास्वप्नो जोइने जागे छे.

मू०—तं जहा—गयउसभसीहअभिसेयदामससिदिणयरं झयं कुंभं । पउमसरसागरविमाणभवणरयणुच्चयसिंहिं च ॥ १ ॥ वासुदेवमातरो वा वासुदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुमिणाणं अन्नतरे सत्त महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति । बलदेवमातरो वा बलदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुमिणाणं अण्णतरे चत्तारि महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति । मंडलियमायरो वा मंडलियंसि गब्भं वक्कमाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुमिणाणं अन्न-

तरं एगं महासुमिणं पासित्ता णं पडिबुज्झंति । इमे य णं सामी ! धारिणीए देवीए एगे महासुमिणे दिट्ठे । तं उराले णं सामी धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे जाव आरोग्गतुट्ठिदीहाउकल्लाणमंगल्लकारए णं सामी ! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे । अत्थलाभो सामी ! सोक्खलाभो सामी ! भोगलाभो सामी ! पुत्तलाभो रज्जलाभो, एवं खलु सामी ! धारिणी देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं जाव दारगं पयाहिसि । से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते सूरे वीरे विक्कंते विच्छिन्नविउलबलवाहणे रज्जवती राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा । तं उराले णं सामी धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे जाव आरोग्गतुट्ठि जाव दिट्ठे त्ति कट्टु भुज्जो भुज्जो अणुबूहेंति ।

अर्थ––ते चौद स्वप्नो आ प्रमाणे,––हाथी, वृषभ, सिंह, अभिषेक (लक्ष्मी), पुष्पनी माळा, चंद्र, सूर्य, ध्वज, पूर्णकुंभ, पद्मसरोवर, क्षीरसमुद्र, विमान अथवा भवन, रत्ननो राशि अने निर्धूम अग्नि. (देवलोकथी भगवान चवे तो माता विमान देखे अने नरकमांथी आवीने अवतरे तो भवनने देखे.) वासुदेवनी माता वासुदेव गर्भमां उपजे त्यारे आ चौद महास्वप्नोमांथी कोइ पण सात महास्वप्नो जोइने जागृत थाय. बळदेवनी माता बळदेव गर्भमां उपजे त्यारे आ चौद महा-

स्वप्नोमांथी कोइ पण चार महास्वप्नोने जोइ जाग्रत थाय. तथा मंडलिक राजानी माता मंडलिक राजा गर्भमां उपजे त्यारे आ चौद महास्वप्नोमांथी कोइ पण एक महास्वप्न जोइने जागे. तेथी हे स्वामी ! धारिणी देवीए आ महास्वप्नोमांथी एक महास्वप्न जोयुं छे. हे स्वामी ! धारिणी देवीए उदार स्वप्न जोयुं छे. यावत् आरोग्य, तुष्टि, दीर्घ आयुष्य, कल्याण अने मंगळने करनार एवुं स्वप्न हे स्वामी ! धारिणी देवीए जोयुं छे. तेथी हे स्वामी ! तमने अर्थनो लाभ थशे, हे स्वामी ! तमने सुखनो लाभ थशे, हे स्वामी ! तमने भोगनो लाभ थशे, तेमज पुत्रनो लाभ थशे अने राज्यनो पण लाभ थशे. ए प्रमाणे निश्चे हे स्वामी ! धारिणी देवी नव मास बरावर पूर्ण थया पछी तमारा कुळमां केतु (ध्वजा) समान यावत् सुरूप पुत्रने जन्म आपशे. ते पुत्र पण बाल्यावस्थाथी मुक्त थइ विज्ञात परिणत मात्र एटले गुरुनी साचीएज पोतानी बुद्धिवडे सर्व कळाओने जाणनार थइ युवावस्थाने पामी संग्रामने विषे शूर, पृथ्वीनुं आक्रमण करवामां वीर अने अधिक पराक्रमी थशे, तेना विपुल सैन्य अने वाहन अत्यंत विस्तारवाळा थशे, तथा राज्यनो पति एवो राजा थशे. अथवा अनगार-साधु थइ आत्माने भावित करशे. तेवा प्रकारनुं हे स्वामी ! धारिणी देवीए उदार स्वप्न जोयुं छे, यावत् आरोग्यकारक, तुष्टिकारक विगेरे विशेषणवाळुं स्वप्न यावत् जोयुं छे." एम कहीने ते स्वप्नपाठको वारंवार तेनी अनुमोदना-प्रशंसा करवा लाग्या.

मू०—तते णं सेणिए राया तेसिं सुमिणपाढगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियए करयल जाव एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी श्रेणिक राजा ते स्वप्नपाठकोनी पासे आ अर्थने सांभळी हृदयमां धारी हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित

हृदयवाळा थइ हाथ जोडी यावत् आ प्रमाणे बोल्या.-

मू०—एवमेयं देवाणुप्पिया ! जाव जन्नं तुब्भे वदह त्ति कट्टु तं सुमिणं सम्मं पडिच्छति, पडिच्छित्ता ते सुमिणपाढए विपुलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थगंधमल्लालंकारेण य सक्कारेति संमाणेति, सक्कारित्ता संमाणित्ता विपुलं जीवियारिहं पीतिदाणं दलयति, दलइत्ता पडिविसज्जेइ ।

अर्थ—हे देवानुप्रियो ! जे तमे कहो छो ते तेमज छे. एम कही ते स्वप्नना फळने सम्यक् प्रकारे अंगीकार करे, अंगीकार करीने ते स्वप्नपाठकोनो विपुल (घणा) अशन, पान, खादिम, स्वादिमवडे अने वस्त्र, गंध, माल्य, अलंकारवडे सत्कार करे, सन्मान करे, सत्कार करी सन्मान करी जींदगी पर्यंत आजीविकाने लायक विपुल प्रीतिदान आपे, आपीने विदाय करे.

मू०—तते णं से सेणिए राया सीहासणाओ अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठित्ता जेणेव धारिणी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता धारिणीदेवीं एवं वदासी—एवं खलु देवाणुप्पिए ! सुमिणसत्थंसि बायालीसं सुमिणा जाव एगं महासुमिणं जाव भुज्जो भुज्जो अणुवूहति ।

अर्थ—त्यारपछी ते श्रेणिक राजा सिंहासनपरथी उठे, उठीने ज्यां धारिणी देवी छे त्यां आवे, आवीने धारिणी देवीने आ प्रमाणे कहे.—आ रीते निश्चे हे देवानुप्रिया ! स्वप्नशास्त्रमां बेंतालीश स्वप्नो विगेरे कहेल छे. तेमांथी एक महास्वप्न तमे जोयुं छे. इत्यादि स्वप्नपाठके कह्या प्रमाणे बधुं कहे, कहीने वारंवार तेनी अनुमोदना करे.

मू०—तते णं धारिणी देवी सेणियस्स रन्नो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियया तं सुमिणं सम्मं पडिच्छाति, पडिच्छित्ता जेणेव सए वासघरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा जाव विपुलाहिं जाव विहरति ॥ १२ ॥

अर्थ-त्यारपछी धारिणी देवी श्रेणिक राजानी पासेथी आ अर्थ सांभळी हृदयमां धारण करी हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हृदयवाळी थइ ते स्वप्नना फळने सम्यक् प्रकारे अंगीकार करे, अंगीकार करी ज्यां पोतानुं वासगृह छे, त्यां आवे, आवीने स्नान करी, बलिकर्म (कुळदेवतानी पूजा) करी यावत् विपुल भोगोने भोगवती सती विचरे. १२.

मू०—तते णं तीसे धारिणीए देवीए दोसु मासेसु वीतिक्कंतेसु ततिए मासे वट्टमाणे तस्स गब्भस्स दोहलकालसमयंसि अयमेयारूवे अकालमेहेसु दोहले पाउब्भवित्था—

अर्थ—त्यारपछी ते धारिणी देवीने बे मास व्यतीत थया अने त्रीजो मास वर्तती हतो त्यारे ते गर्भना दोहदना काळने समये आवा प्रकारनो अकाळमेघनो दोहद उत्पन्न थयो.—

मू०—धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ, सपुन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ णं ताओ, कयपुन्नाओ, कयलक्खणाओ, कयविहवाओ, सुलद्धे णं तासिं माणुस्सए जम्मजीवियफले, जाओ णं

मेहेसु अब्भुग्गतेसु अब्भुज्जएसु अब्भुन्नतेसु अब्भुट्ठिएसु सगज्जिएसु सविज्जुएसु सफुसिएसु सथणिएसु धंतधोतरुप्पपट्टअंकसंखचंदकुंदसालिपिट्ठरासिसमप्पभेसु चिउरहरियालभेयचंपगसणकोरंटसरिसयपउमरयसमप्पभेसु लक्खारससरसरत्तकिंसुयजासुमणरत्तबंधुजीवगजातिहिंगुलयसरसकुंकुमउरब्भससरुहिरइंदगोवगसमप्पभेसु बरहिणनीलगुलियसुगचासपिच्छभिंगपत्तसासगनीलुप्पलनियरनवसिरीसकुसुमणवसद्दलसमप्पभेसु जच्चंजणभिंगभेयरिट्ठगभमरावलिगवलगुलियकज्जलसमप्पभेसु फुरंतविज्जुतसगज्जिएसु वायवसविपुलगगणचवलपरिसक्किरेसु निम्मलवरवारिधारापगलियपयंडमारुयसमाहयसमोत्थरंतउवरिउवरितुरियवासं पवासिएसु, धारापहकरणिवायनिव्वाविय मेइणितले हरियगणकंचुए, पल्लविय पायवगणेसु, वल्लिवियाणेसु पसारिएसु, उन्नएसु सोभग्गमुवागएसु, नगेसु नएसु वा, वेभारगिरिप्पवायतडकडगविमुक्केसु उज्झरेसु, तुरियपहावियपलोट्टफेणाउलं सकलुसं जलं वहंतीसु गिरिनदीसु, सज्जज्जुणनीवकुडयकंदलसिलिंधकलिएसु उववणेसु, मेहरसियहट्ठतुट्ठचिट्ठिय हरिसवसपमुक्ककंठकेकारवं मुयंतेसु बरहिणेसु उउवसमयजणियतरुणसहयरिपणच्चितेसु, नवसुरभि-

सिलिंधकुडयकंदलकलंबगंधद्धणिं मुयंतेसु उववणेसु, परहुयरुयरिभितसंकुलेसु उद्दायंतरत्तइंदगोवयथोवयकारुन्नविलवितेसु ओणयतणमंडिएसु दद्दुरपयंपिएसु संपिंडियदरियभमरमहुकरिपहकरपरिलिंतमत्तछप्पयकुसुमासवलोलमधुरगुंजंतदेसभाएसु उववणेसु, परिसामियचंदसूरगहगणपणट्ठनक्खत्ततारगपहे इंदाउहबद्धचिंधपट्टंसि अंबरतले उड्डीणबलागपंतिसोभंतमेहविंदे कारंडगचक्कवायकलहंसउस्सुयकरे संपत्ते पाउसम्मि काले, ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ताओ, किं ते ? वरपायपत्तणेउरमणिमेहलहाररइयउचियकडगखुड्डयविचित्तवरवलयथंभियभुयाओ, कुंडलउज्जोवियाणणाओ, रयणभूसियंगाओ, नासानीसासवायवोज्झं चक्खुहरं वण्णफरिससंजुत्तं हयलालापेलवाइरेयं धवलकणयखचियन्तकम्मं आगासफलिहसरिसप्पभं अंसुयं पवर परिहियाओ, दुगूल्लसुकुमालउत्तरिज्जाओ, सव्वोउयसुरभिकुसुमपवरमल्लसोभितासिराओ, कालागरुधूवधूवियाओ, सिरिसमाणवेसाओ, सेयणयगंधहत्थिरयणं दुरूढाओ समाणीओ, सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चंदप्पभवइरवेरुलियविमलदंडसंखकुंददगरयअमयमहियफेणपुंजसंनिगासचउचामरवालवीजितंगीओ,

सेणिएणं रन्ना सद्धिं हत्थिखंधवरगएणं, पिट्ठओ समणुगच्छमाणीओ चाउरंगिणीए सेणाए, महता हयाणीएणं गयाणीएणं रहाणीएणं पायत्ताणीएणं सव्वड्ढीए सव्वज्जुइए जाव निग्घोसणादियरवेणं रायगिहं नगरं सिंघाडगतियचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु आसित्तसित्तसुचियसंमज्जिओवलित्तं जाव सुगंधवरगंधियं गंधवट्टीभूयं अवलोएमाणीओ, नागरजणेणं अभिणंदिज्जमाणीओ, गुच्छलयारुक्खगुम्मवल्लिगुच्छओच्छाइयं सुरम्मं वेभारगिरिकडगपायमूलं सव्वओ समंता आहिंडेमाणीओ आहिंडेमाणीओ दोहलं विणियंति। तं जइ णं अहमवि मेहेसु अब्भुवगएसु जाव दोहलं विणिज्जामि ॥१३॥

अर्थ—(जे माताओ पोताने थयेला अकाळे मेघना दोहलाने पूर्ण करे छे,) ते माताओ धन्य छे. ते माताओ प्राप्त करवा लायक वस्तुवडे संपूर्ण छे अथवा सपुण्य एटले पुण्यवाळी छे, तेओ कृतार्थ छे, तेओए जन्मांतरमां पुण्य करेलुं छे, तेओ कृतलक्षण छे एटले तेओनां शरीरनां लक्षणो फळीभूत थयां छे, तेमनी संपदाओ सफळ छे, तथा तेओने मनुष्य संबंधी जन्म अने जीवितनुं फळ सारुं प्राप्त थयेलुं छे (सफळ छे) के जे माताओ आकाशमां मेघ उत्पन्न थया होय, अनुक्रमे वृद्धि पामता होय, गगनमंडळने व्यापवावडे उन्नत थयेला होय, अभ्युत्थित एटले वरसवानी तैयारीमां होय, गर्जारव करता होय, वीजळी सहित होय, बिंदुओ वरसता होय, मंद मंद ध्वनि थतो होय, तथा अग्निवडे धमेलुं अने

शोधेलुं रुपानुं पतरुं, अंकरत्न, शंख, चंद्र, कुंदनुं पुष्प अने चोखानो आटो, आ सर्व वस्तुनी जेवी कांतिवाळा एटले शुक्लवर्णवाळा, तथा चिकुर नामनो रंग, हडतालनो ककडो, चंपकना पुष्प, सनना पुष्प (अथवा सुवर्ण), कोरंटना पुष्प, सरसवना पुष्प अने कमळनी रज, ए सर्व वस्तु जेवा पीळा रंगवाळा, तथा लाचारस, रस सहित राता किंशुक (केसुडा)ना पुष्प, जासुना पुष्प, राता बंधुंजीवकना फूल, जातिवंत हिंगेलोक, रस सहित कंकु[3], घेटा अने ससलानुं रुधिर अने इंद्रगोप (इंद्रनी गाय), ए सर्वनी जेवा राता वर्णवाळा, तथा मयूर, नीलरत्न (लीलम मणि), गुलिका (गळी), पोपटनुं पिच्छ, चाष पत्तीनुं पिच्छ, भमरानी पांख, सासक (बीयक नामनो वृत्त) अथवा श्यामा (प्रियंगुलता), नील कमळनो समूह, नवा (ताजा) शिरीषना पुष्प अने ताजुं लीलुं घास, ए सर्वनी जेवी नील कांतिवाळा, तथा उत्तम अंजन (सोइरो), अम्लक जातना काळा भमरा अथवा कोलसा, रिष्ट रत्न, भ्रमरनो समूह, पाडाना शींगडानी गोळी अने कज्जल (मेष), ए सर्व वस्तु जेवा काळा रंगवाळा, (आ रीते पांचे वर्णवाळा) तथा वीजळी चमकती होय, गर्जारव थता होय, बहोळा आकाशमां वायुना वशथी चपळ थयेलां वादळां आमतेम चालता होय, निर्मळ श्रेष्ठ जळधारावडे गळेलो, प्रचंड वायुथी हणायेलो अने पृथ्वीतळने आक्रमण करतो (भींजावी देतो), उपरा उपर (निरंतर) शीघ्रपणे वरसाद वरसवानो आरंभ थयो होय, जळधाराना समूहना पडवाथी पृथ्वीतळ निर्वापित–शीतळ करायुं होय, (पृथ्वीरूप स्त्री)

---

१ बंधुजीवकना पुष्प पंच वर्णना होय छे तेमाथी अहीं राता लेवाना छे. २ कर्त्रिम हिंगलोक पण थाय छे तेथी अहीं जातिवंत लेवानो छे. ३ नीरस कंकुनो रंग जोइए तेवो न होय तेथी सरस कह्युं छे. ४ वर्षाऋतुमां राता जीवडा थाय छे ते.

लीला घासरूपी कंचुकने धारण करती होय, वृक्षोनो समूह नवपल्लवित थयो होय, वेलाना समूह विस्तार पाम्या होय, पृथ्वीना उंचा प्रदेशो सौभाग्यने पाम्या होय एटले पाणी रडी जवाथी कादव रहित साफ चोक्खा थया होय, अथवा पर्वतो अने द्रहो (कुंडो) सौभाग्यने पाम्या होय, वैभारगिरिना प्रपाततट[1] अने कटकथी[2] निर्झरणां नीकळतां होय, पर्वतनी नदीओ शीघ्र दोडवाथी उत्पन्न थयेला फीणवडे व्याप्त डोळा पाणीने वहेती होय, उपवनो (उद्यानो) सर्ज, अर्जुन, नीप अने कुटज नामना वृक्षोना अंकुरोवडे अने छत्राकार (बीलाडीना टोप) वडे सहित थया होय, मेघनी गर्जनावडे हृष्ट तुष्ट थइ नृत्यनी चेष्टा करता मयूरो हर्षने लीधे मोकळा कंठे केकारवने मूकता होय अने वर्षाऋतुना वशथी उत्पन्न थयेला मदवडे जुवान मयूरीओनी साथे नृत्य करता होय, उपवनो (घरनी पासेना बाग) शिलींध्र, कुटज, कंदल अने कदंब वृक्षना पुष्पोना नवीन अने सुरभि गंधनी तृप्तिने मूकता होय एटले उत्कट सुगंधने धारण करता होय, कोयलोना स्वरघोलनावाळा शब्दवडे व्याप्त (मनोहर) एवा नगरनी बहारना उद्यानो राता इंद्रगोप नामना कीडाओथी शोभता होय, तेमां चातक पक्षीओ करुणाजनक स्वर करता होय, ते उद्यानो नमी गयेला तृण (वनस्पति) थी सुशोभित होय, तेमां देडकाओ उंचे स्वरे शब्द करता होय, मदोन्मत्त भमरा अने भमरीओनो समूह एकठो थयो होय, तथा तेना प्रदेशोमां पुष्परसना लोलुपी अने मधुर गुंजारव करता मदोन्मत्त भमराओ लीन थता होय, तथा आकाशतळमां चंद्र, सूर्य अने ग्रहोनो समूह गाढ वादळांओवडे आच्छादित थवाथी श्याम देखातो होय, नक्षत्रो अने ताराओनी कांति नष्ट थइ

१ भृगुपात नामनो प्रदेश. २ पर्वतनो अमुक प्रदेश.

होय, इंद्रधनुषरूपी ध्वजपट फरकतो होय, अने तेमां रहेलो वादळांनो समूह उडती बगलीओनी श्रेणिवडे शोभतो होय, आवी रीते कारंडक, चक्रवाक अने राजहंस पक्षिओने मानस सरोवर तरफ जवा माटे उत्सुक करनार वर्षाऋतुनो समय प्राप्त थयो होय, त्यारे ते माताओ स्नान करी, बलिकर्म (गृह देवतानी पूजा) करी, कौतुक मंगळ अने प्रायश्चित्त करी, 'किं ते'? वळी धारिणीदेवी बीजुं शुं चिंतवे छे? ते कहे छे.—पगमां श्रेष्ठ नूपुर (झांझर) पहेरे, केडमां रत्ननी कटीमेखळा पहेरे, हृदयपर हार पहेरे, हाथमां उचित कडां रचे-स्थापन करे (पहेरे), आंगळीओमां वींटीओ पहेरे, बाहुने विचित्र अने श्रेष्ठ वलयोवडे स्तंभित करे, कुंडळवडे मुखने उद्योतित करे, रत्नोवडे अंगने भूषित करे, नासिकाना निश्वासना वायुवडे पण उडे एवुं बारीक, नेत्रने हरण करनारुं, वर्ण अने स्पर्शवडे युक्त एटले अतिशयवाळुं, अश्वना मुखना फीणथी पण अत्यंत पेलव एटले कोमळ अने झीणुं (हळवुं), धोळुं-उज्वळ, जेना छेडा सुवर्णना तारथी वणेला होय (सोनेरी कोरवाळुं), धोळुं होवाथी आकाश स्फटिकनी जेवी कांतिवाळुं तथा श्रेष्ठ-उत्तम एवुं वस्त्र पहेरे, अति कोमळ दुकूल वस्त्र एटले रेशमी वस्त्र अथवा दुकूल नामना वृक्षनी छालथी बनेलुं वस्त्र उपरनी काया उपर पहेरे, सर्व ऋतुनां सुगंधी पुष्पो अने श्रेष्ठ पुष्पमाळाओवडे मस्तकने सुशोभित करे, कालागरु आदिक प्रधान धूपवडे धूपित थाय, लक्ष्मीना जेवा वेषवाळी थइ सेचनक नामना गंधहस्तीरत्नपर आरूढ थइ सती, कोरंट पुष्पनी माळावडे शोभित छत्रने धारण करी, चंद्रप्रभ, वैर अने वैडूर्य रत्नना निर्मळ दंडवाळा तथा शंख, कुंदपुष्प, जळकण अने अमृतनुं मथन करतां उत्पन्न थयेला फीणना समूह जेवा उज्वल चार

१ बाजुबंध-बेरखा. २ घाघरो. ३ साडी.

चामरोना वाळवडे अंगे वींझाती, हस्तीरत्नना स्कंधपर (मावतरूपे) बेठेला श्रेणिक राजानी साथे बेसी, पाछळ चतुरंग सेना आवती होय, ते आ प्रमाणे.—मोटा अश्वसैन्यवडे, हाथीना सैन्यवडे, रथना सैन्यवडे अने पदातिना सैन्यवडे तथा छत्रादिक राजचिह्नरूप सर्व ऋद्धिवडे, आभरणादिकनी सर्व द्युति (कांति) वडे अथवा उचित इष्ट वस्तुनी सामग्रीरूप सर्व युक्तिवडे यावत् वाजित्रना पडछंदाना शब्दवडे राजगृह नगरना शृंगाटक[1], त्रिक[2], चतुष्क[3], चत्वर (चौटुं), चतुर्मुख (देवकुलादिक), महापथ (राजमार्ग) तथा सामान्य मार्गने विषे गंधोदकवडे एक वार छांटेला, अनेकवार छांटेला, पवित्र करेला, कचरो दूर करवाथी संमार्जन करेला, छाण विगेरेथी लींपेला, यावत् सारा प्रधान गंधना चूर्णवडे सुगंधवाळा अने जाणे के गंधद्रव्य (सुगंधि पदार्थो)नी गुटिका होय एवा ते नगरने जोती, नगरना लोकोए स्तुति कराती, तथा वृंताकी विगेरेना गुच्छा, सहकारादिकनी लता[4], सहकारादिकना वृक्षो[5], वंश विगेरेना गुल्म (झाडी) अने चीभडा विगेरेना वेलाओना समूहवडे व्याप्त थयेला, मनोहर, वैभारगिरिना प्रदेशोना नीचला भागनी समीपे चोतरफ सर्वत्र फरती फरती पोताना दोहलाने दूर करे छे—पूर्ण करे छे. तो हुं पण जो ए रीते मेघनो उदय विगेरे थाय तो उपर कह्या प्रमाणे मारो दोहलो दूर करुं—पूर्ण करुं. १३.

आ प्रमाणेनो दोहलो पूर्ण न थवाथी धारिणी देवीनी जे अवस्था थइ ते कहे छे.—

---

१ शींगोडाना आकारवाळो मार्ग. २ त्रण रस्ता भेगा थाय ते. ३ चार रस्ता भेगा थाय ते. ४ आम्रलता एटले आंबाना नाना छोडवा. ५ आंबाना मोटा वृक्षो.

मू०—तए णं सा धारिणी देवी तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि असंपन्नदोहला असंपुन्नदोहला असंमाणियदोहला सुक्का भुक्खा णिम्मंसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा पमइलदुब्बला किलंता ओमंथियवयणनयणकमला पंडुइयमुही करयलमलिय व्व चंपगमाला णित्तेया दीणविवण्णवयणा जहोचियपुप्फगंधमल्लालंकारहारं अणभिलसमाणी कीडारमणकिरियं च परिहावेमाणी दीणा दुम्मणा निराणंदा भूमिगयदिट्ठीया ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते धारिणीदेवी ते पोतानो दोहलो दूर (पूर्ण) नहीं थये सते मेघ विगेरे नहीं उत्पन्न थवाथी अप्राप्त दोहदवाळी थइ, ते मेघादिक उत्पन्न न थवाथी तेना दोहद संपूर्ण थया नहीं, तेथी करीने ज ते मेघादिकनो अनुभव न थवाथी तेना दोहदने सन्मान मळ्युं नहीं, तेथी ते मनना तापवडे लोहीनुं शोषण थवाथी शुष्क थइ, भूखथी व्याप्त थइ, तेथी करीने मांस रहित थइ, जीर्ण शरीरवाळी थइ, स्नाननो त्याग करवाथी मलिन थइ, भोजननो त्याग करवाथी दुर्बळ थइ, क्लांत थइ—ग्लानी पामी, तेणे मुख अने नेत्रकमळ नीचां राख्यां, तेनुं मुख पांडु वर्णवाळुं[1] (फिक्कुं) थयुं, हाथवडे मसळेली चंपक पुष्पनी माळानी जेम ते तेज रहित थइ, तेनुं मुख दीन अने विवर्ण थयुं, उचितपणाए करीने पुष्प, गंध, माळा, अलंकार अने हारने विषे अरुचिवाळी थइ (ते सर्वनो त्याग कर्यो), जळादिक क्रीडा अने पासादिक

१ वर्ण रहित एटले झाखुं.

रमतनी क्रियानो त्याग कर्यो, दीनतावाळी, दुभायेला (दुःखी) मनवाळी अने आनंद रहित थइ, भूमिपर दृष्टि राखीने बेठी, तेना मननो संकल्प हणाइ गयो—नाश पाम्यो, यावत् ते आर्त्तध्यान ध्यावा लागी.

मू०—तते णं तीसे धारिणीए देवीए अंगपडियारियाओ अब्भिंतरियाओ दासचेडीयाओ धारिणीं देवीं ओलुग्गं जाव झियायमाणिं पासंति, पासित्ता एवं वदासी—" किं णं तुमे देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव झियायसि ? "

अर्थ—त्यारपछी ते धारिणीदेवीनी अंगप्रतिचारिका[3] आभ्यंतर दास—चेटीओ धारिणीदेवीने जीर्ण जेवी, जीर्ण शरीरवाळी यावत् आर्तध्यान करती जुए, जोइने आ प्रमाणे बोले.—" हे देवानुप्रिया ! केम तमे जीर्ण जेवा, जीर्ण शरीरवाळा थया छो ? यावत् आर्तध्यान करो छो ? "

मू०—तते णं सा धारिणी देवी ताहिं अंगपडियारियाहिं अब्भिंतरियाहिं दासचेडियाहिं एवं वुत्ता समाणी नो आढाति णो य परियाणाति, अणाढायमाणी अपरियाणमाणी तुसिणीया संचिट्ठति।

अर्थ—त्यारपछी ते धारिणी देवी ते अंगप्रतिचारिका आभ्यंतर दास—चेटीकाओए आ प्रमाणे कही (पूछी) थकी

२ योग्यायोग्यनो विवेक. ३ शरीरनी सेवा करनारी—रक्षण करनारी.

चित्तरहितपणुं होवाथी तेमने आदर करती नथी, तेमने जाणती पण नथी. नहीं आदर करती अने नहीं जाणती सती मौन ज रहे छे.

मू०—तते णं ताओ अंगपडियारियाओ अब्भितरियाओ दासचेडियाओ धारिणीं देवीं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—" किं णं तुमे देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव झियायसि ? "

अर्थ—त्यारपछी ते अंगप्रतिचारिका आभ्यंतर दासचेटीओ धारिणी देवीने बे वार त्रण वार आ प्रमाणे कहेवा लागी—" हे देवानुप्रिया ! केम तमे जीर्ण जेवा जीर्ण शरीरवाळा थया छो यावत् आर्तध्यान करो छो ? "

मू०—तते णं सा धारिणी देवी ताहिं अंगपडियारियाहिं अब्भितरियाहिं दासचेडियाहिं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ता समाणी णो आढाति णो परियाणाति, अणाढायमाणी अपरियाणमाणी तुसिणीया संचिट्ठति ।

अर्थ—त्यारपछी ते धारिणी देवी ते अंगप्रतिचारिका आभ्यंतर दास चेटीकाओए बे वार त्रण वार आ प्रमाणे कही सती आदर करती नथी, जाणती पण नथी, तथा नहीं आदर करती अने नहीं जाणती मौन ज रही छे.

मू०—तते णं ताओ अंगपडियारियाओ अब्भितरियाओ दासचेडियाओ धारिणीए देवीए

अणाढातिज्जमाणीओ अपरिजाणिज्जमाणीओ (अपरियाणमाणीओ) तहेव संभंताओ समाणीओ धारिणीए देवीए अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करतलपरिग्गाहियं जाव कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावइत्ता एवं वदासी–" एवं खलु सामी ! किं पि अज्ज धारिणी देवी ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव अट्टज्झाणोवगया झियायति " ।

अर्थ—त्यारपछी ते अंगप्रतिचारिका आभ्यंतर दासचेटीओ धारिणी देवीए नहीं आदर करेली अने नहीं जाणेली तेज प्रकारे संभ्रांत (आकुळ व्याकुळ) थइ सती धारिणी देवीनी पासेथी नीकळे, नीकळीने ज्यां श्रेणिक राजा रहेला छे त्यां आवे, आवीने बे हस्ततलने एकठां करी यावत् मस्तकपर अंजळी करी जयवडे[1] अने विजयवडे[2] वधावे, वधावी आ प्रमाणे बोले.–" हे स्वामी ! आजे धारिणी देवी जीर्ण जेवी जीर्ण शरीरवाळी थइ सती यावत् आर्तध्यानने पामी सती कांइक ध्यान करे छे. "

मू०—तते णं से सेणिए राया तासिं अंगपडियारियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म तहेव सं-

१ विघ्ननो नाश थाय ते जय. २ शत्रुओने जीतवा ते विजय.

भंते समाणे सिग्घं तुरिअं चवलं वेइयं जेणेव धारिणी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता धारिणीं देवीं ओलुग्गं ओलुग्गसरीरं जाव अट्टज्झाणोवगयं झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वदासी–" किं णं तुमे देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव अट्टज्झाणोवगयां झियायसि ? "

अर्थ—त्यारपछी ते श्रेणिक राजा ते अंगप्रतिचारिकानी पासेथी आ अर्थ सांभळी मनमां धारी तेज प्रमाणे व्याकुळ थया सता शीघ्र, त्वरित, चपळतावेदित अर्थात् अत्यंत शीघ्रताथी जे ठेकाणे धारणी देवी बेठेली छे त्यां आवे, आवीने धारिणी देवीने जीर्ण जेवी जीर्ण शरीरवाळी यावत् आर्तध्यानने पामेली–आर्तध्यान करती जुए, जोइने आ प्रमाणे बोले–" हे देवानुप्रिये ! केम तुं जीर्ण जेवी जीर्ण शरीरवाळी थइ छे यावत् आर्तध्यानने पामी सती ध्यान करे छे ? "

मू०–तते णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणी नो आढाइ जाव तुसिणीया संतिट्ठति ।

अर्थ—त्यारपछी ते धारिणी देवी श्रेणिक राजाए आ प्रमाणे पूछाणी सती आदर न करे यावत् मौन रहे छे.

मू०–तते णं से सेणिए राया धारिणीं देवीं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वदासी–"किं णं तुमे देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा जाव झियायसि ? "

अर्थ—त्यारपछी ते श्रेणिक राजा धारिणी देवीने बेवार त्रणवार आ प्रमाणे कहे-" हे देवानुप्रिये ! केम तुं जीर्ण जेवी जीर्ण शरीरवाळी थइ छे अने यावत् ध्यान करे छे ?"

मू०—तते णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रन्ना दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ता समाणी णो आढाति णो परिजाणाति तुसिणीया संचिट्ठइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते धारिणी देवी श्रेणिक राजाए बेवार त्रणवार आ प्रमाणे पूछाया छतां पण तेनो आदर करती नथी, जाणती नथी, अने मौन रहे छे.

मू०—तते णं सेणिए राया धारिणीं देविं सवहसावियं करेइ, करित्ता एवं वयासी-" किं णं तुमं देवाणुप्पिए ! अहमेयस्स अट्ठस्स अणरिहे सवणयाए ? ता णं तुमं ममं अयमेयारूवं मणोमाणसियं दुक्खं रहस्सीकरोसि ?

अर्थ—त्यारपछी श्रेणिक राजा धारिणी देवीने (जो तुं मने तारा विकल्पने नहीं कहे तो तुं देव गुरुनी द्रोहकारी थइश एम) सोगन सांभळेली करे-सोगन संभळावे एटले सोगन आपे, सोगन आपीने आ प्रमाणे कहे—" हे देवानुप्रिये ! शुं हुं आ अर्थ (तारा मननी वात) सांभळवामां अयोग्य छुं ? के जेथी तुं मारी पासे आवा प्रकारना तारा मनमां वर्तता मानसिक दुःखने गोपवे छे ? "

मू०—तते णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रन्ना सवहसाविया समाणी सेणियं रायं एवं वदासी—" एवं खलु सामी ! मम तस्स उरालस्स जाव महासुमिणस्स तिण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अयमेयारूवे अकालमेहेसु दोहले पाउब्भूए–धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ, जाव वेभारगिरिपायमूलं आहिंडमाणीओ डोहलं विणिंति, तं जइ णं अहमवि जाव डोहलं विणिज्जामि । तते णं हं सामी ! अयमेयारूवंसि अकालदोहलंसि अविणिज्जमाणंसि ओलुग्गा जाव अट्टज्झाणोवगया झियायामि । एएणं अहं कारणेणं सामी ! ओलुग्गा जाव अट्टज्झाणोवगया झियायामि ।

अर्थ—त्यारपछी ते धारिणी देवी श्रेणिक राजाए सोगन संभळावी सती श्रेणिक राजा प्रत्ये आ प्रमाणे बोली—" ए प्रमाणे निश्चे हे स्वामी ! मने ते उदार विगेरे विशेषणवाळुं यावत् महास्वप्न आव्युं हतुं, त्यारपछी त्रण मास प्राये पूर्ण थया एटले आ आवा प्रकारनो अकाळ मेघ संबंधी दोहद उत्पन्न थयो के–ते माताओ धन्य छे अने ते माताओ कृतार्थ छे विगेरे यावत् वैभारगिरिना पादमूळमां (नजीकनी भूमिमां) फरती फरती दोहदने दूर करे छे–पूर्ण करे छे. तो जो हुं पण यावत् ए दोहदने दूर करुं–पूर्ण करुं तो धन्य थाउं. ते कारण माटे हे स्वामी ! हुं आ आवा स्वरूपनो मारो दोहद पूर्ण

नहीं थवाथी जीर्ण जेवी जीर्ण शरीरवाळी थइ छुं यावत् आर्तध्यानने पामी सती ध्यान करुं छुं. अर्थात् आ कारणे करीने ज हुं हे स्वामी ! जीर्ण जेवी थइ छुं यावत् आर्तध्यानने पामी सती ध्यान करुं छुं.

मू०—तते णं से सेणिए राया धारिणीए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म धारिणिं देविं एवं वदासी—" मा णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा जाव झियाहि, अहं णं तहा करिस्सामि जहा णं तुब्भं अयमेयारूवस्स अकालदोहलस्स मणोरहसंपत्ती भविस्सइ"त्ति कट्टु धारिणीं देवीं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं वग्गूहिं समासासेइ, समासासित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणामेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने धारिणीए देवीए एयं अकालदोहलं बहूहिं आएहि य उवाएहि य उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मियाहि य परिणामियाहि य चउव्विहाहिं बुद्धीहिं अणुचिंतेमाणे अणुचिंतेमाणे तस्स दोहलस्स आयं वा उवायं वा ठिइं वा उप्पत्तिं वा अविंदमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव झियायति ॥ १४ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते श्रेणिक राजा धारिणी देवीनी पासेथी आ अर्थ सांभळीने हृदयमां धारीने धारिणी देवी प्रत्ये आ प्रमाणे बोल्या—" हे देवानुप्रिया ! जीर्ण जेवी विगेरे विशेषणवाळी तुं आ प्रमाणे आर्तध्यान न कर. हुं ते प्रकारे

करीश (अथवा यत्न करीश) के जे प्रकारे तारा आ आवा स्वरूपना अकाळ दोहदना मनोरथनी पूर्त्ति थशे." एम कहीने धारिणी देवीने इष्ट (वहाली), कांत (वांछित), प्रिय (प्रीति करनारी), मनोज्ञ (मनोहर) अने मणामा (मनने गमती) वाणीवडे आश्वासन आपे, आश्वासन आपीने ज्यां बहारनी उपस्थान शाला हती, त्यां आवे, आवीने श्रेष्ठ सिंहासन पर पूर्व दिशानी सन्मुख बेसे. पछी धारिणी देवीना आ अकाळ दोहदने इच्छित अर्थना कारणना घणा आय (लाभ) वडे, उपायवडे, औत्पत्तिकी बुद्धिवडे, वैनयिकी बुद्धिवडे, कार्मिकी बुद्धिवडे अने पारिणामिकी बुद्धिवडे– ए चार प्रकारनी बुद्धिवडे विचारे, परंतु विचार करतां पण ते दोहदना लाभने, उपायने, स्थितिने अने उत्पत्तिने पाम्या नहीं, तेथी तेना मननो संकल्प (विवेक) नाश पाम्यो, अने यावत् आर्तध्यान करवा लाग्या. १४.

मू०–तदाणंतरं अभए कुमारे ण्हाते कयबलिकम्मे जाव सव्वालंकारविभूसिए पायवंदते पहारेत्थ गमणाए ।

अर्थ—त्यारपछी अभयकुमार स्नान करी बलिकर्म (गृहदेवतानुं पूजन) करी यावत् सर्व अलंकारवडे विभूषित थइ श्रेणिक राजाना पादवंदन करवा माटे जवानो विचार करे–जवा तैयार थाय.

मू०—तते णं से अभयकुमारे जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता सेणियं रायं ओहयमणसंकप्पं जाव पासइ, पासइत्ता अयमेयारूवे अब्भत्थिए चिंतिए (पत्थिए) मणोगते

संकप्पे समुप्पज्जित्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते अभयकुमार ज्यां श्रेणिक राजा बेठा छे त्यां आवे, आवीने जेना मननो संकल्प (विवेक) नाश पाम्यो छे एवा श्रेणिक राजाने यावत् दूरथी जुए, जोइने (ते अभयकुमारना मनमां) आ आवा स्वरूपवाळो, आध्यात्मिक (आत्मा संबंधी), चिंतवेलो (स्मरण करवारूप), प्रार्थित (पामवाने इच्छेलो) अने मनोगत (मनमां रहेलो—बहार नहीं प्रकाश करेलो) संकल्प उत्पन्न थाय. के—

मू०—अन्नया य ममं सेणिए राया एज्जमाणं पासति, पासइत्ता आढाति परिजाणाति सक्कारेइ सम्माणेइ आलवति संलवति अद्धासणेणं उवणिमंतेति मत्थयंसि अग्घाति । इयाणिं ममं सेणिए राया णो आढाति णो परियाणइ णो सक्कारेइ णो सम्माणेइ णो इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं ओरालाहिं वग्गूहिं आलवति संलवति, नो अद्धासणेणं उवणिमंतेति, णो मत्थयंसि अग्घाति य, किं पि ओहयमणसंकप्पे झियायति । तं भवियव्वं णं एत्थ कारणेणं । तं सेयं खलु मे सेणियं रायं एयमट्ठं पुच्छित्तए । एवं संपेहेइ, संपेहित्ता जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावइत्ता

एवं वदासी—

अर्थ—बीजे वखते तो श्रेणिक राजा मने आवतो जुए के तरत जोइने आदर करे छे, जाणे छे, वस्त्रादिकवडे सत्कार करे छे, आसनादिकवडे सन्मान करे छे, बोलावे छे, सम्यक् प्रकारे बोलावे छे, पोताना अर्ध आसनपर बेसवानुं निमंत्रण करे छे तथा मारा मस्तकने सुंघे छे; परंतु आजे तो मने श्रेणिक राजा आदर करता नथी, आव्यो जाणता नथी, सत्कार करता नथी, सन्मान करता नथी, इष्ट (वहाली), कांत (वांछित), प्रिय (प्रीति करनारी), मनोज्ञ (मनोहर) अने उदार (प्रधान) वाणीवडे बोलावता नथी, सम्यक् प्रकारे बोलावता नथी, अर्ध आसनपर बेसवा निमंत्रण करता नथी अने मस्तकने सुंघता नथी; परंतु अत्यारे तेमना मननो संकल्प (विवेक) नष्ट थयो छे, तेथी ते कांइक ध्यान करे छे, ते माटे अहीं कांइक कारण होवुं जोइए. तो मारे श्रेणिक राजाने आ अर्थ पूछवो ते श्रेय छे—योग्य छे. आ प्रमाणे अभयकुमार विचारे, विचारीने जे स्थाने श्रेणिक राजा बेठा छे त्यां आवे, आवीने बे करतलने एकठा करी मस्तके आवर्त करी (फेरवी) मस्तके अंजळी करी (जोडी) विघ्नना विनाशरूप जयवडे अने शत्रुना विनाशरूप विजयवडे वधावे, वधावीने आ प्रमाणे बोले.—

मू०—तुब्भेणं ताओ ! अन्नया ममं एज्जमाणं पासित्ता आढाह परिजाणह जाव मत्थयंसि अग्घायह, आसणेणं उवणिमंतेह, इयाणिं ताओ ! तुब्भे ममं नो आढाह जाव नो आसणेणं उवणिमंतेह, किं पि ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह, तं भवियव्वं ताओ ! एत्थ कारणेणं, तओ

तुब्भे मम ताओ ! एयं कारणं अगूहेमाणा असंकेमाणा अनिण्हवेमाणा अपच्छाएमाणा जहाभूतमवितहमसंदिद्धं एयमट्ठमाइक्खह । तते णं हं तस्स कारणस्स अंतगमणं गमिस्सामि ।

अर्थ—हे पिता ! तमे बीजे वखते तो मने आवतो जोइने आदर करता, जाणता, यावत् मारा मस्तकने सुंघता हता अने बेसवा माटे आसनवडे निमंत्रण करता हता; आजे तो हे पिता ! तमे मने आदर करता नथी यावत् आसनवडे निमंत्रण करता नथी अने मननो सकल्प नष्ट थयो होवाथी यावत् कांइक ध्यान करो छो, तेथी आ बाबतमां कांइ कारण होवुं जोइए, तो हे पिता ! तमे मने दुर्ध्याननुं हेतुरूप ते कारण आकारना संवरवडे गोपव्या विना, इष्ट प्राप्तिनो संदेह राख्या विना, ओळव्या विना, ढांक्या विना, जेवुं होय तेवुं, सत्य अने संदेह रहित ए अर्थने कहो. त्यारपछी (तमे कह्या पछी) ते कारणना पार पामवा प्रत्ये हुं जइश (पार पामवा प्रयत्न करीश.)

मू०—तते णं से सेणिए राया अभएणं कुमारेणं एवं वुत्ते समाणे अभयकुमारं एवं वदासी—“ एवं खलु पुत्ता ! तव चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए तस्स गब्भस्स दोसु मासेसु अइक्कंतेसु तइयमासे वट्टमाणे दोहलकालसमयंसि अयमेयारूवे दोहले पाउब्भवित्था—धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव विणिंति, तते णं अहं पुत्ता ! धारिणीए देवीए तस्स

अकालदोहलस्स बहूहिं आएहि य उवाएहिं जाव उप्पत्तिं अविंदमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव झियायामि, तुमं आगयं पि न याणामि, तं एतेणं कारणेणं अहं पुत्ता ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियामि"।

अर्थ—त्यारपछी ते श्रेणिक राजा अभयकुमारे आ प्रमाणे कहे सते अभयकुमार प्रत्ये आ प्रमाणे बोल्या—"आ प्रमाणे निश्चे हे पुत्र ! तारी लघु माता धारिणी देवीने रहेला गर्भना बे मास वीती गया, त्रीजो मास वर्ते छे, तेमां दोहदना काळ समयने विषे आ आवा स्वरूपनो दोहद उत्पन्न थयो छे के–ते माताओ धन्य छे विगेरे समग्र पूर्व प्रमाणे ज कहेवुं. यावत् दोहदने दूर करे छे (पूर्ण करे छे). ते कारणथी हे पुत्र ! हुं धारिणी देवीना ते अकाल दोहदने घणा लाभवडे उपायवडे यावत् उत्पत्तिने–ते पूर्ण करवाना उपायने नहीं जाणतो सतो मननो संकल्प (विवेक) नाश थयो होवाथी यावत् ध्यान करुं छुं, अने तेज कारणथी तने आवेलाने पण में जाण्यो नहीं. तेथी हे पुत्र ! आ कारणे करीने मननो विवेक जेनो नष्ट थयो छे एवो हुं यावत् ध्यान करुं छुं."

मू०—तते णं से अभयकुमारे सेणियस्स रन्नो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियए सेणियं रायं एवं वदासी–" मा णं तुब्भे ताओ ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह । अहं णं तहा करिस्सामि, जहा णं मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवस्स अकालडोहलस्स

मणोरहसंपत्ती भविसइ"त्ति कट्टु सेणियं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव समासासेइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते अभयकुमार श्रेणिक राजा पासेथी आ अर्थ सांभळी मनमां धारी हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हृदयवाळो थइ श्रेणिक राजा प्रत्ये आ प्रमाणे बोल्यो—" हे पिता ! नष्ट थयेला मनना विवेकवाळा तमे तेवुं दुर्ध्यान न करो. हुं ते प्रकारे करीश, के जे प्रकारे मारी लघु माता धारिणी देवीना आ आवा स्वरूपवाळा अकाळ दोहलाना मनोरथनी प्राप्ति (पूर्त्ति) थशे. " आ प्रमाणे कही श्रेणिक राजाने तेवी इष्ट, कांत यावत् मनोहर वाणीवडे आश्वासन आप्युं.

मू०—तते णं सेणिए राया अभएणं कुमारेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठ तुट्ठे जाव अभयकुमारं सक्कारेति संमाणेति, सक्कारित्ता संमाणित्ता पडिविसज्जेति ॥ १५ ॥

अर्थ—त्यारपछी श्रेणिक राजा अभयकुमारे आ प्रमाणे कहे सते हृष्ट तुष्ट यावत् आनंदित हृदयवाळा थइ अभयकुमारनो सत्कार करे, सन्मान करे. सत्कार करी सन्मान करीने विदाय करे (रजा आपे). १५

मू०—तते णं से अभयकुमारे सक्कारियसंमाणिए पडिविसज्जिए समाणे सेणियस्स रन्नो अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमइत्ता जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सीहासणे निसन्ने ।

अर्थ—त्यारपछी ते अभयकुमार (श्रेणिक राजावडे) सत्कार पाम्यो, सन्मान पाम्यो अने विदाय करायो सतो श्रेणिक राजानी पासेथी नीकळे, नीकळीने ज्यां पोतानुं भुवन छे त्यां आवे, आवीने सिंहासनपर बेसे. (अने विचार करे).

मू०—तते णं तस्स अभयकुमारस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—नो खलु सक्का माणुस्सएणं उवाएणं मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अकालडोहलमणोरहसंपत्तिं करेत्तए णन्नत्थ दिव्वेणं उवाएणं। अत्थि णं मज्झ सोहम्मकप्पवासी पुव्वसंगतिए देवे महिड्ढीए जाव महासोक्खे। तं सेयं खलु मम पोसहसालाए पोसहियस्स बंभचारिस्स उम्मुक्कमणिसुवन्नस्स ववगयमालावन्नगविलेवणस्स निक्खित्तसत्थमुसलस्स एगस्स अबीयस्स दब्भसंथारोवगयस्स अट्ठमभत्तं परिगिण्हित्ता पुव्वसंगतियं देवं मणसि करेमाणस्स विहरित्तए। तते णं पुव्वसंगतिए देवे मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवे अकालमेहेसु डोहलं विणेहिति।

अर्थ—त्यारपछी ते अभयकुमारने आ आवा स्वरूपवाळो आध्यात्मिक (आत्मा संबंधी) यावत् संकल्प उत्पन्न थयो.—दिव्य (देवता संबंधी) उपाय (सहाय) विना मात्र मनुष्य संबंधी उपायवडे मारी लघुमाता धारिणी देवीना अकाल दोहदना मनोरथनी प्राप्ति (पूर्त्ति) करवी शक्य नथी (करी शकाय तेम नथी.) तेथी सौधर्मकल्पमां रहेनार

महर्द्धिक यावत् महा सुखमां मग्न रहेलो देव मारो पूर्वनो मित्र छे. तो मारे आ प्रमाणे करवुं श्रेय (योग्य) छे के–पौषधशाळामां पौषध ग्रहण करी, ब्रह्मचर्य धारण करी, मणिसुवर्णादिकना अलंकारनो त्याग करी, पुष्पमाळा, वर्णक अने विलेपननो त्याग करी, शस्त्र मुशळ विगेरेने छोडी एकलो (राग द्वेष रहित) अने अद्वितीय (सेवक विगेरेना सहाय रहित) एवा मारे दर्भना संथारापर रही, अट्ठम तप ग्रहण करी पूर्वना मित्रदेवनुं मनमां ध्यान करीने रहेवुं योग्य छे. एम करवाथी ते पूर्वनो मित्रदेव अहीं आवीने मारी लघुमाता धारिणी देवीनो आ आवा स्वरूपवाळो दोहद दूर करशे–पूर्ण करशे.

मू०–एवं संपेहेति, संपेहित्ता जेणेव पोसहसाला तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जति, पमज्जित्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता दब्भसंथारगं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता दब्भसंथारगं दुरूहइ, दुरूहित्ता अट्ठमभत्तं परिगिण्हइ, परिगिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी जाव पुव्वसंगतियं देवं मणसि करेमाणे करेमाणे चिट्ठइ ।

अर्थ—आ प्रमाणे विचार करे, विचार करीने ज्यां पौषधशाळा छे त्यां आवे, आवीने पौषधशाळा प्रमार्जे, प्रमार्जी ठल्लामात्रानी भूमिने पडिलेहे, पडिलेहीने दर्भना संथाराने पडिलेहे, पडिलेहीने दर्भना संथारापर बेसे, बेसीने अट्ठम तप ग्रहण करे, ग्रहण करीने पौषधशाळामां पौषधव्रतवाळो ब्रह्मचर्य व्रतवाळो ते अभयकुमार यावत् पूर्वभवना मित्रदेवनुं मनमां ध्यान करे.

मू०–तते णं तस्स अभयकुमारस्स अट्ठमभत्ते परिणममाणे पुव्वसंगतिअस्स देवस्स आसणं

चलति । तते णं पुव्वसंगतिए सोहम्मकप्पवासी देवे आसणं चलियं पासति, पासित्ता ओहिं पउंजति । तते णं तस्स पुव्वसंगतियस्स देवस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—

अर्थ—त्यारपछी ते अभयकुमारनो अष्टम तप परिणाम पाम्यो एटले प्राये पूर्ण थवा आव्यो त्यारे पूर्वभवना मित्रदेवनुं आसन चलायमान थयुं. एटले पूर्वभवनो मित्र सौधर्मकल्पवासी देव पोताना आसनने चलायमान थयेलुं जुए, जोइने अवधिज्ञाननो उपयोग आपे, एटले ते पूर्वभवना मित्रदेवने आ आवा स्वरूपवाळो आध्यात्मिक (आत्मा संबंधी) यावत् संकल्प उत्पन्न थाय.

"मू०—एवं खलु मम पुव्वसंगतिए जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे वासे रायगिहे नयरे पोसहसालाए अभए नामं कुमारे अठमभत्तं परिगिण्हित्ता णं मम मणसि करेमाणे करेमाणे चिट्ठति । तं सेयं खलु मम अभयस्स कुमारस्स अंतिए पाउब्भवित्तए"। एवं संपेहेइ, संपेहित्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमति अवक्कमित्ता विउव्वियसमुग्घाएणं समोहणाति, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरति ।

अर्थ—"आ प्रमाणे निश्चे मारो पूर्वभवनो मित्र जंबूद्वीप नामना द्वीपमां भरतक्षेत्रमां दक्षिणार्ध भरतमां राजगृह नामना

नगरमां पौषधशाळामां पौषध व्रतवाळो अभय नामनो कुमार अट्ठम तप ग्रहण करी मनमां मारुं स्मरण करतो करतो रहेलो छे. तेथी मारे ते अभयकुमारनी समीपे जवुं–प्रगट थवुं ते श्रेय (योग्य) छे." आ प्रमाणे विचारे, विचारीने ईशान तरफना दिशाना भागमां आवे, आवीने वैक्रिय समुद्घातवडे समुद्घात करे, समुद्घात करीने प्रथम संख्याता योजननो दंड करे.

मू०—तं जहा—रयणाणं १ वइराणं २ वेरुलियाणं ३ लोहियक्खाणं ४ मसारगल्लाणं ५ हंसगब्भाणं ६ पुलगाणं ७ सोगंधियाणं ८ जोइरसाणं ९ अंकाणं १० अंजणाणं ११ रयणाणं १२ जायरूवाणं १३ अंजणपुलगाणं १४ फलिहाणं १५ रिट्ठाणं १६, अहाबायरे पोग्गले परिसाडेइ, परिसाडित्ता अहासुहुमे पोग्गले परिगिण्हाति, परिगिण्हइत्ता अभयकुमारमणुकंपमाणे देवे पुव्वभवजणियनेहपीइबहुमाणजायसोगे तओ विमाणवरपुंडरियाओ रयणुत्तमाओ धरणियलगमणतुरितसंजणितगमणपयारो वाघुण्णितविमलकणगपयरगवडिंसगमउडुक्कडाडोवदंसणिज्जो अणेगमणिकणगरतणपहकरप-

१ उत्तरवैक्रिय करवा माटे जीवनो जे विशेष प्रकारनो व्यापार ते समुद्घात कहेवाय छे. २ आत्मप्रदेशोने शरीर बहार काढवारूप व्यापार विशेषने करे. ३ उंचे नीचे संख्यात योजन लांबो अने शरीर जेटलो जाडो जीवना प्रदेश अने कर्मना पुद्गलनो समूह, ते दंड जेवो थवाथी दंड कहेवाय छे.

रिमंडितभत्तिचित्तविणिउत्तमणुगुणजणियहरिसे पेंखोलमाणवरललितकुंडलुज्जलियवयणगुणजनित-सोमरूवे उदितो विव कोमुदीनिसाए सणिच्छरंगारउज्जलियमज्झभागत्थे णयणाणंदो सरयचंदो दिव्वोसहिपज्जलुज्जलियदंसणाभिरामो उउलच्छिसमत्तजायसोहे पइट्ठगंधुध्धुयाभिरामो मेरुरिव नगवरो विगुव्वियविचित्तवेसे दीवसमुद्दाणं असंखपरिमाणनामधेज्जाणं मज्झंकारेणं वीइवयमाणो उज्जोयंतो पभाए विमलाते जीवलोगं रायगिहं पुरवरं च अभयस्स य तस्स पासं उवयाति दिव्वरूवधारी ॥ १४❀ ॥

अर्थ—दंड कर्या पछी कर्केतन रत्न १, वज्ररत्न २, वैडूर्य रत्न ३, लोहिताक्ष रत्न, ४, मसारगल्ल रत्न, ५ हंसगर्भ रत्न, ६, पुलक रत्न ७, सौगंधिक रत्न ८, ज्योतिसर रत्न ९, अंक रत्न १०, अंजन रत्न ११, रजत रत्न १२, जातरूप रत्न १३, अंजनपुलक रत्न १४, स्फटिक रत्न १५, रिष्ट रत्न १६, आ सर्व रत्नोना यथाबादर एटले असार पुद्गलोनो त्याग करे, त्याग करीने यथासूक्ष्म एटले सारभूत पुद्गलोने ग्रहण करे, ग्रहण करीने (नवुं उत्तरवैक्रिय शरीर करे—करीने)

❀ एक वार सूत्रनो १४–१९ नो अंक आवी गयो छे. फरीथी तेज अंक आवे छे. ते आगमोदय समिति तरफथी छपायेला आ सटीक सूत्रने आधारे लेवामां आव्या छे, तेमा अमे कांइ फेरफार कर्यो नथी.

अभयकुमार उपर अनुकंपा करतो ते देव पूर्वभवमां तेनी साथे स्नेहथी प्रीति उत्पन्न थइ हती तेथी अने बहुमानथी एटले तेना गुणने विषे अनुराग थवाथी वियोगने लीधे ते देवने शोक (खेद) उत्पन्न थयो. (अथवा रोमांचादिकरूप शोभा उत्पन्न थइ.) तेथी पोतानी रचनावडे अथवा रत्नोवडे उत्तम एवा विमानथी नीकळी पृथ्वीतळ पर जवा माटे तेने जलदी गतिनो (अथवा मननो) प्रचार उत्पन्न थयो (अर्थात् अत्यंत उतावळी गतिए चाल्यो.) ते वखते चलायमान थता निर्मळ (उज्वल) सुवर्णना प्रतर जेवा गोळ कर्णपूर अने मुगटना अत्यंत आडंबरवडे ते देखावडो लागतो हतो. अनेक मणि, कनक अने रत्नना समूहवडे शोभित अने विचित्र रचनावाळा पहेरेला योग्य कटिसूत्रवडे तेने हर्ष उत्पन्न थयो हतो, चलायमान एवा श्रेष्ठ अने मनोहर कुंडलोवडे उज्वळ करेला मुखनी कांतिथी तेनुं रूप मनोहर थयुं हतुं, तेथी करीने कार्त्तिकी पूर्णिमानी रात्रिए शनि अने मंगळना मध्यभागमां रहेला अने उदय पामेला शरद ऋतुना चंद्रनी जेम ते देव जोनारना नेत्रोने आनंद आपतो हतो, (शनि अने मंगळ जेवा बे कुंडलनी वच्चे तेनुं मुख अथवा रूप चंद्र जेवुं शोभतुं हतुं.) दिव्य औषधिओना प्रकाश जेवा मुकुटादिकना तेजवडे देदीप्यमान रूपे करीने मनोहर, अने सर्व ऋतुओनी पुष्पादिक लक्ष्मीवडे जेनी शोभा वृद्धि पामी छे एवा तथा प्रकृष्ट सुगंध उत्पन्न थवाथी मनोहर एवा मेरु नामना श्रेष्ठ पर्वतनी जेवो ते देव शोभतो हतो. आवुं विचित्र रूप विकुर्वी दिव्य रूपने धारण करतो ते देव असंख्य योजनना प्रमाणवाळा अने असंख्य नामवाळा द्वीप समुद्रोनी उपर थइने जतो अने पोतानी निर्मळ प्रभावडे उद्योत करतो तेमज नीचे उतरतो ते अनुक्रमे आ

१ अट्ठम तपना कष्टमा होवाथी अनुकंपा.

तिर्छा लोकमां आव्यो अने पछी उत्तम एवा राजगृह नगरमां अभयकुमारनी पासे आवी पहोंच्यो. १४.

मू० तते णं से देवे अंतलिक्खपडिवन्ने दसद्धवन्नाइं सखिंखिणियाइं पवरवत्थाइं परिहिए एक्को ताव एसो गमो, अण्णो वि गमो–ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए सीहाए उध्धुयाए जतिणाए छेयाए दिव्वाए देवगतिए जेणामेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे जेणामेव दाहिणद्धभरहे रायगिहे नगरे पोसहसालाए अभयए कुमारे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अंतरिक्खपडिवन्ने दसद्धवन्नाइं सखिंखिणियाइं पवरवत्थाइं परिहिए अभयं कुमारं एवं वयासी—

अर्थ—त्यारपछी पंचवर्णवाळा अने घुघरीओवाळा श्रेष्ठ वस्त्रो जेणे पहेर्या छे एवो ते देव आकाशमां रही (अभय कुमार प्रत्ये आ प्रमाणे बोले, एम आगळ संबंध लेवो.)

आ एक प्रकारनो गमो–पाठ छे. बीजो पण गमो–पाठ आ प्रमाणे छे.–तेवी उत्कृष्ट, त्वरावाळी (आकुळतावाळी–स्वाभाविक नहीं तेवी), आवी गति एकली मननी पण संभवे छे तेथी बीजुं विशेषण कहे छे–चपळ (कायावडे पण उतावळी), अति उत्कर्षना योगे करीने चंड (भयंकर), दृढतानी स्थिरता होवाथी सिंहा–सिंहना जेवी, गर्वना अतिशयने लीधे उद्धत, शत्रुने जीतनार होवाथी जय करनारी अने छेक एटले निपुणतावाळी एवी दिव्य देवगतिवडे (आ बीजो

गमो-पाठ जीवाभिगम सूत्रनी टीकाने आधारे लीधो छे.) ज्यां जंबूद्वीप नामनो द्वीप अने भरतक्षेत्र छे, तथा ज्यां दक्षिणार्ध भरतक्षेत्रने विषे राजगृह नामना नगरमां पौषधशाळाने विषे अभयकुमार बेठेल छे त्यां आवे, आवीने पंच वर्णवाळा अने घुघरीओवाळा श्रेष्ठ वस्त्र जेणे पहेर्या छे एवो ते देव आकाशमां रही अभयकुमार प्रत्ये आ प्रमाणे बोले.—

मू०—अहं णं देवाणुप्पिया ! पुव्वसंगतिए सोहम्मकप्पवासी देवे महड्डिए, जं णं तुमं पोसहसालाए अट्ठमभत्तं पगिण्हित्ता णं ममं मणसि करेमाणे चिट्ठसि, तं एस णं देवाणुप्पिया ! अहं इहं हव्वमागए । संदिसाहि णं देवाणुप्पिया ! किं करेमि ? किं दलामि ? किं पयच्छामि ? किं वा ते हियइच्छितं ? ।

अर्थ—" हे देवानुप्रिय ! हुं तारो पूर्वनो मित्र सौधर्मकल्पमां वसनारो महर्द्धिक देव छुं. जे कारण माटे तुं पौषधशाळामां अष्टम तप ग्रहण करी मने मनमां राखी बेठो छे. ते कारण माटे हे देवानुप्रिय ! आ हुं अहीं शीघ्रपणे आव्यो छुं, तेथी हे देवानुप्रिय ! तुं कहे, के हुं तारुं शुं इच्छित कार्य करुं ? तने शुं आपुं अथवा तारा संबंधी बीजा कोइने शुं आपुं ? अथवा तारा मननुं वांछित शुं छे ? (तारा मननी शी इच्छा छे ?)

मू०—तते णं से अभए कुमारे तं पुव्वसंगतियं देवं अंतलिक्खपडिवन्नं पासइ, पासित्ता हट्ठ-

तुट्ठे पोसहं पारेइ, पारित्ता करयल० अंजलिं कट्टु एवं वयासी—

अर्थ—त्यारपछी ते अभयकुमारे ते पूर्वना मित्र देवने आकाशमां रहेलो जोयो, जोइने हृष्ट तुष्ट थइ पौषधने पार्यो, पारी बे हाथ मस्तके जोडी आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—"एवं खलु देवाणुप्पिया! मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवे अकालडोहले पाउब्भूते—धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ तहेव पुव्वगमेणं जाव विणिज्जामि। तं णं तुमं देवाणुप्पिया! मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेवारूवं अकालदोहलं विणेहि"।

अर्थ—"हे देवानुप्रिय! मारी लघु माता धारिणीदेवीने आवा स्वरूपनो अकाळ दोहद उत्पन्न थयो छे के—ते माताओने धन्य छे. यावत् हुं पण मारा दोहदने दूर करुं, अहीं सुधीनो सर्व गमो—पाठ पूर्वनी जेम कहेवो. ते कारण माटे हे देवानुप्रिय! तुं मारी लघुमाता धारिणीदेवीनो आ आवा स्वरूपनो अकाल दोहद दूर कर—पूर्ण कर."

मू०—तते णं से देवे अभएणं कुमारेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठ तुट्ठ अभयकुमारं एवं वदासी—"तुमं णं देवाणुप्पिया! सुणिव्वुयवीसत्थे अच्छाहि, अहं णं तव चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवं डोहलं विणेमी ति" कट्टु अभयस्स कुमारस्स अंतियाओ पडिणिक्खमति, पडिणिक्ख-

मित्ता उत्तरपुरच्छिमे णं वेभारपव्वए वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णति, समोहण्णइत्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निस्सरति, जाव दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णति, समोहण्णइत्ता खिप्पामेव सगज्जतियं सविज्जुयं सफुसियं तं पंचवन्नमेहणिणाओवसोहियं दिव्वं पाउससिरिं विउव्वेइ, विउव्वेइत्ता जेणेव अभए कुमारे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता अभयं कुमारं एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते देवने अभयकुमारे आ प्रमाणे कहे सते ते देव हृष्टतुष्ट थइ अभयकुमार प्रत्ये आ प्रमाणे बोल्यो— " हे देवानुप्रिय ! तुं स्वस्थ चित्तवाळो अने विश्वासवाळो था, हुं तारी लघुमाता धारिणीदेवीना तें कह्या तेवा स्वरूपवाळा दोहदने दूर करीश—पूर्ण करीश. " एम कहीने ते देव अभयकुमारनी पासेथी नीकळे, नीकळीने ईशान खूणने विषे वैभार पर्वतपर जइ वैक्रिय समुद्घातवडे संख्याता योजनना प्रमाणवाळो दंड करे, यावत् बीजीवार पण वैक्रिय समुद्घात करे, समुद्घात करीने गर्जारव सहित, वीजळी सहित अने जळबिंदु सहित पंच वर्णवाळा मेघना निनादे (शब्दे) करीने शोभित दिव्य वर्षाऋतुनी लक्ष्मी विकुर्वे, विकुर्वीने ज्यां अभयकुमार हतो, त्यां आवे, आवीने अभयकुमारने आ प्रमाणे कहे—

मू०—" एवं खलु देवाणुप्पिया! मए तव पियट्ठयाए सगज्जिया सफुसिया सविज्जुया दिव्वा पाउससिरी विउव्विया, तं विणेउ णं देवाणुप्पिया ! तव चुल्लमाउया धारिणी देवी अयमेयारूवं अकालडोहलं " ।

अर्थ—" निश्चे हे देवानुप्रिय ! में तारी प्रीतिने माटे गर्जारव सहित, जळबिंदु सहित अने वीजळी सहित दिव्य वर्षा ऋतुनी लक्ष्मी विकुर्वी छे, तेथी हे देवानुप्रिय ! तारी लघुमाता धारिणी देवी तेवा स्वरूपवाळा अकाल दोहदने दूर करो-पूर्ण करो."

मू०—तते णं से अभयकुमारे तस्स पुव्वसंगतियस्स देवस्स सोहम्मकप्पवासिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठे सयातो भवणाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल० अंजलिं कट्टु एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते अभयकुमार सौधर्म कल्पमां रहेनार पूर्वना मित्रदेवनी पासेथी आ प्रमाणेनी हकीकत सांभळी हृदयमां धारी हृष्ट तुष्ट थइ पोताना महेलमांथी नीकळे, नीकळीने ज्यां श्रेणिकराजा बेठा हता त्यां आवे, आवीने मस्तकपर बे हाथ जोडी आ प्रमाणे बोले—

मू०—" एवं खलु ताओ ! मम पुव्वसंगतिएणं सोहम्मकप्पवासिणा देवेणं खिप्पामेव सगज्जिता सविज्जुता (सफुसिया) पंचवन्नमेहनिनाओवसोभिता दिव्वा पाउससिरी विउव्विया । तं विणेउ णं मम चुल्लमाउया धारिणी देवी अकालदोहलं "।

अर्थ—"निश्चे हे पिता ! मारा पूर्वना मित्र सौधर्मकल्पमां वसनारा देवे शीघ्रपणे गर्जारव सहित, वीजळी सहित अने (जळबिंदु सहित) पंच वर्णवाळा मेघना निनादे (शब्दे) करीने शोभित दिव्य वर्षाऋतुनी लक्ष्मी विकुर्वी छे, तेथी मारी लघुमाता धारिणी देवी पोताना अकाल दोहदने पूर्ण करो."

मू०—तते णं से सेणिए राया अभयस्स कुमारस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठ जाव कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! रायगिहं नयरं सिंघाडगतियचउक्कचच्चर० आसित्तसित्त जाव सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूयं करेह, करित्ता य मम एतमाणत्तियं पच्चप्पिणह"। तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति।

अर्थ—त्यारपछी ते श्रेणिकराजा अभयकुमारनी पासेथी आ अर्थ सांभळी हृदयमां धारी हृष्ट तुष्ट थइ यावत् कौटुंबिक[1] पुरुषोने बोलावे, बोलावीने आ प्रमाणे कहे—"हे देवानुप्रियो ! शीघ्रपणे राजगृह नगरमां शृंगाटक (शींगोडाना आकारवाळा मार्ग), त्रिक (त्रण मार्ग भेळा थाय ते), चतुष्क (चार मार्ग भेळा थाय ते) अने चत्वर (चौटा) वगेरेने सींचन करी यावत् श्रेष्ठ सुगंधे करी सुगंधवाळुं अने गंधनी वर्ती होय तेवुं करो, करीने मारी आ आज्ञा पाछी सोंपो." त्यार

१ सेवक.

पछी ते कौटुंबिक पुरुषोए ते प्रमाणे करीने यावत् तरतज तेमनी आज्ञा पाछी आपी. अर्थात् ते प्रमाणे कर्यानुं निवेदन कर्युं.

मू०—तते णं से सेणिए राया दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वदासी—"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हयगयरहजोहपवरकलितं चाउरंगिणिं सेन्नं सन्नाहेह, सेयणयं च गंधहत्थिं परिकप्पेह"। ते वि तहेव जाव पच्चप्पिणंति।

अर्थ—त्यारपछी ते श्रेणिक राजाए बीजी वार कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं के—"हे देवानुप्रियो! शीघ्रपणे अश्व, हाथी, रथ अने श्रेष्ठ योद्धाओ सहित चतुरंगी सेनाने तैयार करो, तथा सेचनक नामना गंधहस्तीने पण तैयार करो. (करीने मारी आज्ञा पाछी आपो)" त्यारे तेओए ते प्रमाणे करीने पण तरतज तेमनी आज्ञा पाछी आपी.

मू०—तते णं से सेणिए राया जेणेव धारिणी देवी तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता धारिणीं देवीं एवं वदासी—"एवं खलु देवाणुप्पिए ! सगज्जिया जाव पाउससिरी पाउब्भूता, तं णं तुमं देवाणुप्पिए ! एयं अकालदोहलं विणेहि"।

अर्थ—त्यारपछी ते श्रेणिक राजा ज्यां धारिणी देवी हती त्यां आव्या, आवीने धारिणी देवी प्रत्ये आ प्रमाणे

बोल्या—" निश्चे हे देवानुप्रिया ! गर्जारव सहित यावत् वर्षाऋतुनी लक्ष्मी प्रगट थइ छे, तेथी तुं हे देवानुप्रिया ! तारा अकाल दोहदने दूर कर-पूर्ण कर. "

मू०—तते णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठा जेणामेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसति, अणुपविसित्ता अंतो अंतेउरंसि ण्हाता कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता किं ते वरपायपत्तणेउर जाव आगासफालियसमप्पभं अंसुयं नियत्था, सेयणयं गंधहत्थिं दुरूढा समाणी अमयमहियफेणपुंजसण्णिगासाहिं सेयचामरवालवीयणीहिं वीइज्जमाणी वीइज्जमाणी संपत्थिता ।

अर्थ—त्यारपछी ते धारिणी देवी श्रेणिक राजाए आ प्रमाणे कही सती हृष्ट तुष्ट थइ ज्यां स्नान करवानुं गृह छे त्यां आवे, आवीने स्नानगृहमां प्रवेश करे, प्रवेश करीने अंतःपुरनी अंदर स्नान करी, बलिकर्म (गृह देवतानी पूजा) करी, मषी तिलकादिक कौतुक, दहीं धरो विगेरे मांगलिक अने विघ्न निवारक प्रायश्चित्त करी, वळी बीजुं शुं करे ? ते कहे छेः—पगने विषे प्रधान नूपुर पहेरी यावत् आकाश स्फटिक मणिनी जेवी प्रभावाळा वस्त्र पहेरे, पहेरीने सेचनक नामना गंधहस्ती उपर आरूढ थइ अमृतनुं मथन करतां थयेला फीणना समूह जेवा श्वेत चामरना वाळरूपी वींझणावडे वींझाती वींझाती आगळ चाली.

मू०—तते णं से सेणिए राया ण्हाए कयबलिकम्मे जाव सस्सिरीए हत्थिखंधवरगए सकोरंट-मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चउचामराहिं वीइज्जमाणे धारीणीं देवीं पिट्ठओ अणुगच्छति ।

अर्थ—श्रेणिक राजाए पण स्नान कर्युं, बलिकर्म (गृहदेवतानुं पूजन) कर्युं, यावत् लक्ष्मी (शोभा) सहित थइ, श्रेष्ठ गंधहस्तीना स्कंधपर आरुढ थइ, कोरंट पुष्पनी माळावाळा छत्रने मस्तकपर धारण करी, चार चामरोवडे वींझाता सता धारिणी देवीनी पाछळ चाल्या.

मू०—तते णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रन्ना हत्थिखंधवरगएणं पिट्ठतो पिट्ठतो समणुगम्ममाणमग्गा हयगयरहजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुए महताभडचडगरवंदपरिखित्ता सव्विड्ढीए सव्वजुइए जाव दुंदुभिनिग्घोसनादितरवेणं रायगिहे नगरे सिंघाडगातिगचउक्कचच्चर जाव महापहेसु नागरजणेणं अभिनंदिज्जमाणा अभिनंदिज्जमाणा जेणामेव वेभारगिरिपव्वए तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता वेभारगिरिकडगतडपायमूले आरामेसु य उज्जाणेसु य काणणेसु य वणेसु य वणसंडेसु य रुक्खेसु य गुच्छेसु य गुम्मेसु य लयासु य वल्लीसु य कंदरासु य दरीसु य चुंढीसु य दहेसु य कच्छेसु य नदीसु य संगमेसु य विवरतेसु य अच्छमाणी य पेच्छमाणी य मज्जमाणी य पत्ताणि

य पुप्फाणि य फलाणि य पल्लवाणि य गिण्हमाणी य माणेमाणी य अग्घायमाणी य परिभुंजमाणी य परिभाएमाणी य वेब्भारगिरिपायमूले दोहलं विणेमाणी सव्वतो समंता आहिंडति । तते णं धारिणी देवी विणीतदोहला संपुन्नदोहला संपन्नदोहला जाया यावि होत्था ।

अर्थ—श्रेष्ठ हाथीना स्कंध पर बेठेला श्रेणिक राजा धारिणी देवीनी पाछळ पाछळ चाल्या. ते वखते धारिणी देवी घोडा, हाथी, रथ अने योद्धाओ सहित चतुरंगी सेनाथी परिवरेली हती, तेनी फरता मोटा सुभटोना मनोहर समूह वींटायेला हता, ए रीते सर्व समृद्धिवडे अने सर्व दीप्तिवडे यावत् दुंदुभिना निर्घोष (शब्द) वडे राजगृह नगरना शृंगाटक (शींगोडाना आकारवाळा मार्ग), त्रिक, चतुष्क अने चत्वर (चौटा) विगेरेमां थइने यावत् मोटा राजमार्गमां थइने नीकळी, नगरना लोकोए जय जय शब्दथी तेने आनंद आप्यो, पछी अनुक्रमे ते ज्यां वैभारगिरि हतो, त्यां आवे, आवीने वैभारगिरिना कटकतळमां[1] अने पादमूळ (समीपना भाग)मां रहेला जेमां माधवीलतादिकना गृहोने विषे आवीने अनेक दंपतीओ क्रीडा करे छे तेवा आरामने विषे, पुष्पफळादिकवाळा वृक्षोवडे सहित अने उत्सवादिकमां घणा लोकोए भोगववा लायक उद्यानोने विषे सामान्य वृक्षोना समूह सहित अने नगरनी समीपे रहेला काननोने विषे, नगरथी दूर रहेला वनोने विषे, एक जातिना वृक्षोनो समूह जेमां होय तेवा वनखंडोने विषे, एक एक (अनेक) वृक्षोने विषे, वृंताकी विगेरेना गुच्छाओने विषे, वांसनी झाडी विगेरेना गुल्मने

१ अमुक प्रदेश.

विषे, आम्र विगेरेनी लताने विषे, नागरवेल विगेरे वल्लीओने विषे, कंदरा (गुफा)ओने विषे, शियाळ विगेरेने रहेवाना खाडाने विषे, खोद्या विनाना जळना खाबोचीयाने विषे, द्रहोने विषे, थोडा जळवाळा कच्छोने विषे, नदीओने विषे, नदीओना संगमने विषे तथा बीजा जळाशयोने विषे (अर्थात् तेनी नजीक नजीक) उभी रहेती, जोवा लायक वस्तुओने जोती अने स्नान करती, तथा पत्र, पुष्प, फळ अने पल्लवोने ग्रहण करती, स्पर्श करवावडे तेमने मानती (मान्य करती), पुष्पादिकने सुंघती, फळादिकने खाती, तथा बीजाओने वहेंची आपती वैभारगिरिनी समीपनी भूमिमां दोहलाने पूर्ण करती चोतरफ फरवा लागी. त्यारपछी ते धारिणी देवीए दोहलाने दूर कर्यो, दोहलाने पूर्ण कर्यो, अने दोहलानुं सन्मान कर्युं. आवी ते थइ.

मू०—तते णं से धारिणी देवी सेयणयगंधहत्थि दूरूढा समाणी सेणिएणं हत्थिखंधवरगएणं पिट्ठओ पिट्ठओ समणुगम्ममाणमग्गा हयगय जाव रहेणं जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छाति, उवागच्छित्ता विउलाइं माणुस्साइं भोगभोगाइं जाव विहरति ॥ १५ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते धारिणी देवी सेचनक नामना गंधहस्ती उपर चडी थकी, श्रेष्ठ हाथीना स्कंधपर रहेला श्रेणिक

२ नाना छोडवाने लता कहे छे.

राजा पाछळ पाछळ जेना मार्गने अनुसरता हता एवी, अश्व, हाथी यावत् रथवडे परिवरेली ज्यां राजगृह नगर छे त्यां आवे, आवीने राजगृह नगरना मध्य भागे चाली ज्यां पोतानुं भवन छे त्यां आवे, आवीने (सर्व सेना विगेरेने विसर्जन करी भवनमां दाखल थइ) मनुष्य संबंधी विपुल (विस्तारवाळा) भोगने भोगवती सती विचरे. १५.

मू०—तते णं से अभए कुमारे जेणामेव पोसहसाला तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता पुव्वसंगतियं देवं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते अभयकुमार ज्यां पौषधशाळा हती त्यां आवे, आवीने पूर्वना मित्रदेवनो सत्कार करे. सन्मान करे, सत्कार करी सन्मान करी तेने विदाय करे—रजा आपे.

मू०—तते णं से देवे सगज्जियं पंचवण्णं मेहोवसोहियं दिव्वं पाउससिरिं पडिसाहरति पडिसाहरित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए, तामेव दिसिं पडिगते ॥ १६ ॥

अर्थ—त्यारपछी (अभयकुमारे रजा आपेला) ते देवे गर्जारव सहित पंचवर्णवाळी मेघवडे शोभती दिव्य वर्षाऋतुनी लक्ष्मीने संहरी लीधी, संहरीने जे दिशामांथी प्रगट थयो हतो ते ज दिशामां चाल्यो गयो—अर्थात् स्वस्थाने गयो. १६.

मू०—तते णं सा धारिणी देवी तंसि अकालदोहलंसि विणीयंसि सम्माणियडोहला तस्स

गब्भस्स अणुकंपणट्ठाए जयं चिट्ठति, जयं आसयाति, जयं सुवति, आहारं पि य णं आहारेमाणी णाइतित्तं णातिकडुयं णातिकसायं णातिअंबिलं णातिमहुरं जं तस्स गब्भस्स हियं मियं पत्थयं देसे य काले य आहारं आहारेमाणी णाइचिंतं णाइसोगं णाइदेण्णं णाइमोहं णाइभयं णाइपरित्तासं ववगयचिंतासोयमोहभयपरित्तासा उदुभयमाणसुहेहिं भोयणच्छायणगंधमल्लालंकारेहिं तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहति ॥ १७ ॥

अर्थ—ए रीते ते धारिणी देवीए पोतानो अकाल दोहद पूर्ण थये सते ते दोहदने संमानित कर्यो. पछी ते गर्भनी अनुकंपाने माटे गर्भने बाधा न उपजे तेम यतनावडे उभी रहे छे, यतनावडे बेसे छे अथवा आसननो आश्रय करे छे, अने यतनावडे शयन करे छे. तथा आहार करती सती पण अत्यंत तीखुं खाती नथी, अत्यंत कडवुं खाती नथी, अत्यंत कषायलुं (तूरुं) खाती नथी, अत्यंत खाटुं खाती नथी, अने अत्यंत मधुर—मीठुं खाती नथी. परंतु देश काळने अनुसरी ते गर्भने हितकारक (बुद्धि, आयुष्य विगेरेनुं कारण), मित (इंद्रियोने अनुकूळ) अने पथ्य (आरोग्यकारक) आहारने ग्रहण करे छे. अति चिंता करती नथी, अति शोक करती नथी, अति दीनता करती नथी, अति मोह (कामने विषे आसक्ति) करती नथी, अति त्रास पामती नथी, तथा अति भय पामती नथी, अर्थात् चिंता, शोक, (दीनता) मोह, भय अने त्रास रहित थइने सर्व ऋतुमां सुख उपजे तेवी रीते भोजन, आच्छादन (वस्त्र), गंध, माल्य अने अलंकारवडे ते गर्भने सुखे

सुखे वहन करे छे-पालन करे छे. १७.

मू०-तते णं सा धारिणी देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाण राइंदियाणं वीतिक्कंताणं अद्धरत्तकालसमयंसि सुकुमालपाणिपादं जाव सव्वंगसुंदरंगं दारगं पयाया ।

अर्थ--त्यारपछी ते धारिणी देवी नव मास बराबर पूर्ण थया अने उपर साडासात रात्रि दिवस व्यतीत थया त्यारे अर्ध रात्रिने समये अति कोमळ हाथ पगवाळा यावत् सर्व अंगे सुंदर एवा पुत्रने प्रसवती हवी.

मू०-तते णं ताओ अंगपडियारिआओ धारिणीं देवीं नवण्हं मासाणं जाव दारगं पयायं पासंति, पासित्ता सिग्घं तुरियं चवलं चेतियं जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सेणियं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वदासी--

अर्थ--ते वखते तेनी अंगनी परिचारिका (दासीओ) धारिणी देवीने नव मास पूर्ण थये यावत् पुत्र उत्पन्न थयो जुए, जोइने हर्षने लीधे शीघ्र, मनवडे त्वरावाळी, कायावडे चपळ एवी ते दासीओ ज्यां श्रेणिक राजा रहेल छे त्यां आवे, आवीने श्रेणिक राजाने जय विजय शब्दवडे वधावे, वधावीने बे हस्ततल ग्रहण करी (भेळा करी) मस्तकपर फेरवी

माथे हाथ जोडी आ प्रमाणे कहे—

मू०—एवं खलु देवाणुप्पिया! धारिणी देवी णवण्हं मासाणं जाव दारगं पयाया, तं णं अम्हे देवाणुप्पियाणं पियं णिवेदेमो, पियं भे भवउ।

अर्थ—'निश्चे हे देवानुप्रिय! धारिणी देवीए नव मास पूर्ण थये यावत् पुत्र प्रसव्यो छे. तेथी अमे देवानुप्रिय एवा तमने ए प्रिय समाचार जणावीए छीए, ते तमने प्रिय थाओ.'

मू०—तते णं से सेणिए राया तासिं अंगपडियारियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठ० ताओ अंगपडियारियाओ महुरेहिं वयणेहिं विपुलेण य पुप्फगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेति सम्माणेति, सक्कारित्ता सम्माणित्ता मत्थयधोयाओ करेति पुत्ताणुपुत्तियं वित्तिं कप्पेति, कप्पित्ता पडिविसज्जेति।

अर्थ—त्यारपछी ते श्रेणिकराजा ते अंगपरिचारिकाओ (दासीओ) नी पासेथी आ अर्थ सांभळीने हृदयमां धारण करी हृष्ट तुष्ट थइ ते अंगपरिचारिकाओने मधुर वचनोवडे तथा घणा पुष्प, गंध, माल्य अने अलंकारवडे सत्कार करे, सन्मान करे, सत्कार करी सन्मान करी धोयेला मस्तकवाळी (दासीपणा रहित) करे, अने तेना पुत्र पौत्रादिक पर्यंत चाले तेवी आजीविका करी आपे-अर्थात् पुष्कळ द्रव्य आपे—आपीने विदाय करे.

मू०—तते णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! रायगिहं नगरं आसिय जाव परिगीयं करेह, करित्ता चारगपरिसोहणं करेह, करित्ता माणुम्माणवद्धणं करेह, करित्ता एतमाणत्तियं पच्चप्पिणह, जाव पच्चप्पिणंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते श्रेणिक राजा कौटुंबिक पुरुषोने बोलावे, बोलावीने आ प्रमाणे कहे—" हे देवानुप्रियो ! शीघ्रपणे राजगृह नगरमां (सर्वत्र) सुगंधी जळ छांटी यावत् बधे गीत गान करावो, चारकनी शुद्धि करो (केदखानामांथी केदीओने मुक्त करो), मुक्त करी, तोल अने मापनी वृद्धि करो, करीने आ मारी आज्ञा पाछी आपो." यावत् ते कौटुंबिक पुरुषोए तत्काळ ते प्रमाणे करी तेमनी आज्ञा पाछी आपी.

मू०—तते णं से सेणिए राया अट्ठारससेणीप्पसेणीओ सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! रायगिहे नगरे अब्भितरबाहिरिए उस्सुक्कं उक्करं अभडप्पवेसं अदंडिमकुडंडिमं अधरिमं अधारणिज्जं अणुध्धुयमुइंगं अमिलायमल्लदामं गणियावरणाडइज्जकलियं अणेगतालायराणुचरितं पमुइयपक्कीलियाभिरामं जहारिहं ठिइवडियं दसदिवसियं करेह, करित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह " । ते वि करिंति, करित्ता तहेव पच्चप्पिणंति ।

अर्थ—त्यारपछी श्रेणिक राजाए कुंभकार विगेरे जातिरूप अढार श्रेणि अने तेना भेदरूप अढार प्रश्रेणिने बोलावी, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रियो ! तमे राजगृह नगरनी अंदर अने बहार जाओ. तथा दश दिवसनी स्थितिपतिका करो अने करावो. ते आ प्रमाणे—दश दिवस सुधी शुल्क (दाण) मुक्त करवामां आवे छे एटले वेचवानी वस्तुनुं दाण मुकी देवामां आवे छे, गायो विगेरेनो दरवरसे जे कर लेवामां आवे छे ते मुक्त करवामां आवे छे, कुटुंबीओना (खेडुत विगेरे जातिना मनुष्योना) घरमां वेठ विगेरेनी आज्ञा आपवा माटे राजसुभटो प्रवेश करे छे तेनो निषेध करवामां आवे छे, गुनेगारना अपराधना प्रमाणमां दंड करीने जे द्रव्य लेवामां आवे छे ते तथा बुद्धि विगेरेना कारणे नोकरो मोटो अपराध करे तोपण तेमनो कुदंड (अल्प दंड) करी जे द्रव्य लेवामां आवे छे, ते लेवामां आवशे नहीं, कोइने माथे ऋण (देवुं) राखवामां आवशे नहीं (बधानुं देवुं राजा आपी देशे), कोइ देवादारने पकडवामां आवशे नहीं, आ प्रमाणे जाहेर करो. तथा स्थाने स्थाने मृदंग विगेरे वाजित्रो वगडावो, चोतरफ विकस्वर पुष्पोनी माळाओ लटकावो, उत्तम गणिकाओ जेमां मुख्य छे एवा नाटकना पेडाओ पासे नृत्यादिक करावो, अनेक तालाचरो (नाटक करनार) पासे नाटक करावो, तथा सर्व लोको हर्षवडे क्रीडा करे तेम करो. आ प्रमाणे यथायोग्य दश दिवस पर्यंतनी स्थितिपतिका करी करावीने आ मारी आज्ञा पाछी सोंपो. " आ प्रमाणे सांभळी तेओए तरतज ते प्रमाणे करी तेमनी आज्ञा पाछी सोंपी.

---

१ कुलमर्यादामा रहेली प्रक्रिया एटले पुत्रजन्मना महोत्सवनी रीति.

मू०—तते णं से सेणिए राया बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्नि-सन्ने सइएहि य साहस्सिएहि य सयसाहस्सिएहि य जाएहिं दाएहिं भागेहिं दलयमाणे दलयमाणे पडिच्छेमाणे पडिच्छेमाणे एवं च णं विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते श्रेणिक राजा बहारनी उपस्थान शाला (सभा)मां आवी श्रेष्ठ सिंहासन उपर पूर्वाभिमुखे बेठा, अने सेंकडो, हजारो तथा लाखो द्रव्यवडे देवतादिकनी पूजा करावी, याचकादिकने दान दीधां, अने उपजता द्रव्यमांथी अमुक हिस्साना भाग आप्या, तथा सेंकडो, हजारो अने लाखो द्रव्य जे प्राप्त थयुं ते ग्रहण करता सता बेठा.

मू०—तते णं तस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे जातकम्मं करेंति, करित्ता बितियदिवसे जागरियं करेंति, करित्ता ततियदिवसे चंदसूरदंसणियं करेंति, करित्ता एवामेव निव्वत्ते असुइजातकम्म-करणे संपत्ते बारसाहदिवसे विपुलं असणं पाणं खातिमं सातिमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावित्ता मित्तणातिणियगसयणसंबंधिपरिजणं बलं च बहवे गणणायग दंडणायग जाव आमंतेति ।

अर्थ—त्यारपछी तेना मातापिताए पहेले दिवसे (ते पुत्रनुं) जातकर्म[१] कर्युं, करीने बीजे दिवसे जागरिका (रात्रि-

१ जन्मनुं कार्य—नाळ छेद, तेने पृथ्वीमां दाटवुं विगेरे.

जागरणा) करी, करीने त्रीजे दिवसे चंद्रसूर्यनुं दर्शन कराव्युं, करावीने एज प्रमाणे अनुक्रमे अशुचि एवा जातकर्मादिकनी क्रिया निवृत्त (पूर्ण) थइ (अथवा पाठांतरे—पवित्र एवा जातकर्मादिकनी क्रिया करी) अने पछी बारमो दिवस प्राप्त थयो त्यारे विपुल (घणा) अशन, पान, खादिम अने स्वादिम पदार्थोने तैयार कराव्या, तैयार करावीने मित्र, बंधु आदिक ज्ञाति, पुत्रादिक निजजन, काका विगेरे स्वजन, ससरादिक संबंधीजन, दासादिक परिजन, सैन्यना तेमज घणा गणना नायक, दंडनायक विगेरे सर्वने यावत् आमंत्रण कर्युं.

मू०—ततो पच्छा ण्हाता कयबलिकम्मा कयकोउय० जाव सव्वालंकारविभूसिया महतिमहालयंसि भोयणमंडवंसि तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं मित्तणाति० गणणायग जाव सर्द्धि आसाएमाणा विसाएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा एवं च णं विहरति।

अर्थ—त्यारपछी स्नान कर्युं, बलिकर्म (गृहदेवतानुं पूजन) कर्युं, मषीतिलकादि कौतुक कर्युं, यावत् सर्व अलंकारवडे विभूषित थया. पछी अति मोटा विस्तारवाळा भोजनमंडपमां ते तैयार करावेला अशन, पान, खादिम अने स्वादिमनो मित्र, ज्ञाति विगेरेनी साथे तथा गणनायक विगेरेनी यावत् सर्वनी साथे आस्वाद करता, विस्वाद करता, परस्पर विभाग करता (आपता) समस्त प्रकारे जमवा लाग्या.

(अहीं आस्वाद करता एटले जे थोडुं खवाय अने घणुं नांखी देवाय ते शेरडी विगेरे, विस्वाद करता एटले जे घणुं

खवाय अने थोडुं नांखी देवाय ते खारेक खजुर विगेरे, तथा समस्त प्रकारे जमता एटले जे कांइपण नांखी न देवाय सर्व खाइ जवाय ते मोदक विगेरे.)

मू०—जिमितभुत्तुत्तरागता वि य णं समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया तं मित्तनातिनियगसयणसंबंधिपरिजण० गणणायग० विपुलेणं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेंति, संमाणेंति, सक्कारित्ता संमाणित्ता एवं वदासी—

अर्थ—ए रीते जम्यापछी–भोजन कर्या पछी आसन उपर आव्या सता शुद्ध जळवडे आचमन (चळु) कर्युं, मुख हाथ धोइ चोख्खा थया, अत्यंत पवित्र थया. पछी ते मित्र, ज्ञाति, नियक, स्वजन, संबंधी, परिजन, विगेरे यावत् गणनायक ए सर्वनो विपुल एवा पुष्प, वस्त्र, गंध, माल्य (पुष्पनीमाळा) अने अलंकारवडे सत्कार कर्यो, सन्मान कर्युं, सत्कार करी सन्मान करी आ प्रमाणे कह्युं—

मू०—" जम्हा णं अम्हं इमस्स दारगस्स गब्भत्थस्स चेव समाणस्स अकालमेहेसु डोहले पाउब्भूए, तं होउ णं अम्हं दारए मेहे नामेणं मेहकुमारे "। तस्स दारगस्स अम्मापियरो अयमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति।

अर्थ—"जे कारण माटे अमारो आ पुत्र गर्भमां रह्यो हतो त्यारे तेने (तेनी माताने) अकाळ मेघ संबंधी दोहलो प्रगट थयो हतो, तेथी करीने आ अमारो पुत्र नामे करीने मेघ एटले मेघकुमार हो." आ प्रमाणे मातापिताए गौण एटले गुणथी निष्पन्न थतुं ते पुत्रनुं नाम स्थापन कर्युं.

मू०—तए णं से मेहकुमारे पंचधातीपरिग्गहिए । तं जहा—खीरधातीए मंडणधातीए मज्जणधातीए कीलावणधातीए अंकधातीए, अन्नाहि य बहूहिं खुज्जाहिं चिलाइयाहिं वामणिवडभिबब्बरिबउसि जोणियाहिं पल्हवियईसिणिय धोरुगिणिलासियलउसियदमिलिसिंहलिआरबिपुलिंदिपक्कणिबहलिमुरुंडिसबरिपारसीहिं णाणादेसीहिं विदेसपरिमंडियाहिं इंगितचिंतियपत्थियवियाणियाहिं सदेसणेवत्थगहितवेसाहिं निउणकुसलाहिं विणीयाहिं चेडियाचक्कवालवरिसधरकंचुइअमहयरगवंदपरिखित्ते हत्थाओ हत्थं संहरिज्जमाणे अंकाओ अंकं परिभुज्जमाणे परिगिज्जमाणे चालिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे रम्मंसि मणिकोट्टिमतलंसि परिमिज्जमाणे परिमिज्जमाणे णिव्वायणिव्वाघायंसि गिरिकंदरमल्लीणे व चंपगपायवे सुहंसुहेणं वड्ढइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमार पांच धात्रीए ग्रहण करायो सतो (पळातो सतो) वृद्धि पामवा लाग्यो, ते पांच धात्री

आ प्रमाणे—क्षीरधात्री (स्तनपान करावनारी) १, मंडनधात्री (वस्त्राभूषण पहेरावनारी) २, मज्जनधात्री (स्नान करावनारी) ३, क्रीडनधात्री (क्रीडा करावनारी) ४ अने अंकधात्री (खोळामां बेसाडनारी) ५. आ सिवाय बीजी पण घणी कुब्जिका (कुबडी), चिलात देशमां उत्पन्न थयेली, वामन (नाना शरीरवाळी), वडभ (मोटा पेटवाळी), बर्बरी (बर्बर देशमां उत्पन्न थयेली), बकुश देशनी, योनक देशनी, पन्हविक देशनी, इसिनिक देशनी, धोरुकिन देशनी, लासक देशनी, लकुस देशनी, द्रविड देशनी, सिंहलदेशनी, आरब देशनी, पुलिंद्र देशनी, पक्कण देशनी, बहल देशनी, मुरुंड देशनी, शबर देशनी, पारस देशनी विगेरे विविध देशनी अने परदेशनी शोभती दासीओ के जे इंगित (मुख नेत्रादिकनी चेष्टा), चिंतित (मनमां विचारेलुं) अने प्रार्थित (अभिलाष करेलुं) ते सर्वने जाणनारी, पोतपोताना देशमां बनेला नेपथ्य (वस्त्र) ने धारण करनारी, निपुणने विषे पण अति निपुण—कुशळ, तेथी करीने ज विनयवाळी एवी दासीओवडे युक्त एवो ते मेघकुमार स्वदेशनी दासीओना समूहवडे, वर्षधर (वर्धितक विगेरेना प्रयोगवडे नपुंसक करेला) कंचुकीओवडे अने अंतःपुरमां रहेला महत्तरोवडे परिवरेलो रहेवा लाग्यो. ते एकना हाथथी बीजाना हाथमां लइ जवातो हतो, एकना उत्संगमांथी बीजाना उत्संगमां बेसाडातो हतो, बाळने उचित एवा गीतोवडे गवातो हतो, आंगळी पकडीने चलावातो हतो, क्रीडादिकवडे लालन पालन करातो हतो, मनोहर मणिजडित पृथ्वीतळ उपर चालतो चालतो तथा वायु रहित अने व्याघात (उपद्रव) रहित एवी गिरिनी गुफामां रहेला चंपकना वृक्षनी जेम सुखे सुखे वृद्धि पामतो हतो.

मू०—तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेणं नामकरणं च पज्जेमणं च एवं चंकम्मणगं च चोलोवणयं च महया महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं करिंसु।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारने मातापिताए अनुक्रमे नामकरण (नाम पाडवुं) पारणामां सुवाडवुं, पगे चलाववुं अने चौलकर्म (माथे चोटी राखवी ते) इत्यादिक कर्म मोटी मोटी ऋद्धि, सत्कार, पूजा अने माणसोना समुदाय सहित कर्या.

मू०—तते णं तं मेहकुमारं अम्मापियरो सातिरेगट्ठवासजातगं चेव गब्भट्ठमे वासे सोहणंसि तिहिकरणमुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेंति।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमार आठ वर्षथी अधिक वयनो थयो एटले गर्भथी आठ वर्षनो थयो त्यारे तेने मातापिताए उत्तम तिथि, करण अने मुहूर्तने विषे कळाचार्यनी पासे मोकल्यो.

मू०—तते णं से कलायरिए मेहं कुमारं लेहाइयाओ गणितप्पहाणाओ सउणरुतपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सेहावेति सिक्खावेति।

अर्थ—त्यारपछी ते कलाचार्ये मेघकुमारने गणित छे प्रधान जेमां एवा लेखनने आदि लइने पक्षीना शब्द पर्यंत बहोंतेर

कळाओ सूत्रथी, अर्थथी अने करणथी (प्रयोगथी) सिद्ध करावी, तथा शीखवाडी.

मू०-तं जहा-लेहं १, गणियं २, रूवं ३, नट्टं ४, गीयं ५, वाइयं ६, सरगयं ७, पोक्खरगयं ८, समतालं ९, जूयं १०, जणवायं ११, पासयं, १२, अट्ठावयं १३, पोरेकच्चं १४, दगमट्टियं १५, अन्नविहिं १६, पाणविहिं १७, वत्थविहिं १८, विलेवणविहिं १९, सयणविहिं २०, अज्जं २१, पहेलियं २२, मागहियं २३, गाहं २४, गीइयं २५, सिलोयं २६, हिरण्णजुत्तिं २७, सुवन्नजुत्तिं २८, चुन्नजुत्तिं २९, आभरणविहिं ३०, तरुणीपडिकम्मं ३१, इत्थिलक्खणं ३२, पुरिसलक्खणं ३३, हयलक्खणं ३४, गयलक्खणं ३५, गोणलक्खणं ३६, कुक्कुडलक्खणं ३७, छत्तलक्खणं ३८, डंडलक्खणं ३९, असिलक्खणं ४०, मणिलक्खणं ४१, कागणिलक्खणं ४२, वत्थुविज्जं ४३, खंधारमाणं ४४, नगरमाणं ४५, वूहं ४६, परिवूहं ४७, चारं ४८, परिचारं ४९, चक्कवूहं ५०, गरुलवूहं ५१, सगडवूहं ५२, जुद्धं ५३, निजुद्धं ५४, जुद्धातिजुद्धं ५५, अट्ठिजुद्धं ५६, मुट्ठिजुद्धं ५७, बाहुजुद्धं ५८, लयाजुद्धं ५९, ईसत्थं ६०, छरुप्पवायं ६१, धणुव्वेयं ६२, हिरन्नपागं ६३, सुवन्नपागं ६४, सुत्तखेडं

६५, वट्टखेडं ६६, नालियाखेडं ६७, पत्तच्छेज्जं ६८, कडगच्छेज्जं ६९, सज्जीवं ७०, णिज्जीवं ७१, सउणरुयमिति ७२. ॥ १७ ॥

अर्थ—ते कळाओ आ प्रमाणे–लखवानी कळा १, गणवानी कळा २, रूप परावतर्न करवानी कळा ३, नाटकनी कळा ४, गायननी कळा ५, वाजित्र वगाडवानी कळा ६, स्वर जाणवानी कळा ७, वाजित्र समारवानी कळा ८, समान ताल जाणवानी कळा ९, द्यूत रमवानी कळा १०, लोकें साथे वादविवाद करवानी कळा ११, पासा रमवानी कळा १२, अष्टापद (चोपाट) रमवानी कळा १३, नगरनी रक्षा करवानी कळा १४, जळ अने माटीना संयोगथी नवीन वस्तु बनाववानी कळा १५, धान्य नीपजाववानी कळा १६, नवुं पाणी उत्पन्न करवानी, संस्कारथी शुद्ध करवानी अने उनुं करवानी कळा १७, नवां वस्त्र बनाववानी, वस्त्र रंगवानी, वस्त्र शीववानी तथा पहेरवानी कळा १८, विलेपन विधि एटले विलेपननी वस्तु जाणवी, तैयार करवी, चोळवी विगेरेनी कळा १९, शयनविधि एटले शय्या बनाववानी, सुवानी युक्ति जाणवी विगेरेनी कळा २०, संस्कृत तथा प्राकृत भाषानी आर्या विगेरेना लक्षण जाणवा बनाववानी कळा २१, प्रहेलिका बांधवानी कळा २२, मागधिका एटले मगधदेशनी भाषामां गाथा विगेरे बनाववानी कळा २३, प्राकृत भाषामां गाथा विगेरे बनाववानी कळा २४, गीत बनाववानी कळा २५, अनुष्टुप श्लोक बनाववानी कळा २६, सुवर्ण नवुं बनाववुं, तेना अलंकार विगेरे बनाववा तथा पहेरवा विगेरेनी कळा २७, रुपुं नवुं बनाववुं, तेना अलंकार विगेरे बनाववा तथा पहेरवा विगेरेनी कळा २८, गुलाल अबील विगेरे चूर्ण बनाववानी तथा तेनो उपयोग करवानी कळा २९, आभूषण घडवा पहे-

रवा विगेरेनी कळा ३०, तरुणीनी सेवा करवानी कळा ३१, स्त्रीनां लक्षणो जाणवानी कळा ३२, पुरुषनां लक्षणो जाणवानी कळा ३३, अश्वनां लक्षणो ३४, हाथीनां लक्षणो ३५, गाय वृषभनां लक्षणो ३६, कुकडानां लक्षणो ३७, छत्रनां लक्षणो ३८, दंडनां लक्षणो ३९, खड्गनां लक्षणो ४०, मणिनां लक्षणो ४१, कागणी रत्नना लक्षणो जाणवानी कळा ४२, घर दुकान विगेरे वास्तुशास्त्रनी विद्या ४३, स्कंधावारनुं (सैन्यना पडावनुं) प्रमाण विगेरे ४४, नवुं नगर वसाववानुं प्रमाण विगेरे ४५, व्यूह–युद्धनी रचना ४६, प्रतिव्यूह–सामावाळाना सैन्य सन्मुख स्वसैन्य राखवानी कळा ४७, चार–सैन्य चलाववानी कळा ४८, प्रतिचार–सैन्यने सामा सैन्यनी सन्मुख चलाववानी कळा ४९, चक्रने आकारे व्यूह रचवानी कळा ५०, गरुडने आकारे व्यूह रचवानी कळा ५१, शकट एटले गाडाने आकारे व्यूह रचवानी कळा ५२, सामान्य युद्ध करवानी कळा ५३, विशेष युद्ध करवानी कळा ५४, अत्यंत विशेष युद्ध करवानी कळा ५५, अस्थि (अथवा यष्टि) वडे युद्ध करवानी कळा ५६, मुष्टिवडे युद्ध करवानी कळा ५७, बाहुवडे युद्ध करवानी कळा ५८, लतावडे युद्ध करवानी कळा ५९, थोडाने घणुं अने घणाने थोडुं देखाडवानी कळा ६०, खड्गनी मूठ बनाववा विगेरेनी कळा ६१, धनुषबाणनी कळा ६२, रुपानो पाक बनाववानी कळा ६३, सुवर्णनो पाक बनाववानी कळा ६४, सुतर छेदवानी कळा ६५, क्षेत्र खेडवानी कळा ६६, कमळना नाळ छेदवानी कळा ६७, पत्र छेदवानी कळा ६८, कडा चूडी कुंडळ विगेरे छेदवानी कळा ६९, मरेलाने (मूर्छा पामेलाने) मंत्रादिकवडे जीवतो करवानी कळा ७०, जीवताने मंत्रादिकवडे मरेला जेवो करवानी कळा ७१ तथा कागडा घुवड विगेरे पक्षीओना शब्द जाणवानी कळा ७२. (१७)

मू०—तते णं से कलायरिए मेहं कुमारं लेहादीयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सिहावेति सिक्खावेइ, सिहावेत्ता सिक्खावेत्ता अम्मापिऊणं उवणेति ।

अर्थ—ए प्रमाणे कळाचार्ये मेघकुमारने लेखादिक गणित प्रधान पक्षीना शब्द जाणवा पर्यंत बहोंतेर कळाओ सूत्रथी, अर्थथी अने प्रयोगथी सिद्ध करावी तथा शीखडावी. सिद्ध करावीने तथा शीखवीने पछी तेने मातापिता पासे लइने आव्या.

मू०—तते णं मेहस्स कुमारस्स अम्मापितरो तं कलायरियं मधुरेहिं वयणेहिं विपुलेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेंति सम्माणेंति, सक्कारित्ता संमाणित्ता विपुलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयंति, दलइत्ता पडिविसज्जेंति ॥ १८ ॥

अर्थ—ते वखते मेघकुमारना मातापिताए ते कलाचार्यनो मधुर वचनवडे तथा विपुल वस्त्र, गंध, माल्य अने अलंकारवडे सत्कार कर्यो, सन्मान कर्युं. सत्कार करी सन्मान करी जींदगी पर्यंत चाले तेटलुं विपुल प्रीतिदान आप्युं, आपीने तेने विदाय कर्यो. १८.

मू०—तते णं से मेहे कुमारे बावत्तरिकलापंडिए णवंगसुत्तपडिबोहिए अट्ठारसाविहिप्पगारदेसीभासाविसारए गीइरई गंधव्वनट्टकुसले हयजोही गयजोही रहजोही बाहुजोही बाहुप्पमद्दी अलं भोगसमत्थे साहसिए वियालचारी जाते यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमार बहोंतेर कळामां पंडित थयो, तेथी तेना बे श्रोत्र, बे नेत्र, बे नासिका (नस्कोरा), एक जिह्वा, एक त्वचा अने एक मन एम नव अंगो बाल्यावस्थाने लीधे जे सुतेलां जेवां एटले अव्यक्त चेतनावाळां हतां ते जागृत जेवां एटले युवावस्थाने लीधे व्यक्त चेतनावाळां थयां, ते अढार प्रकारनी देशी भाषामां निपुण थयो, गीतिमां प्रीतिवाळो थयो, गंधर्व एटले गीत अने नाट्यने विषे कुशळ थयो, अश्व साथे युद्ध करनार, हाथी साथे युद्ध करनार, रथ साथे युद्ध करनार, बाहुवडे युद्ध करनार, बाहुवडे बीजानुं मर्दन करनार, भोग भोगववामां अत्यंत समर्थ अने साहसिकपणाने लीधे विकालचारी—मध्य रात्रीए पण चालनार एटले रात्रिचर्या करनार पण थयो.

मू०—तते णं तस्स मेहकुमारस्स अम्मापियरो मेहं कुमारं बावत्तरिकलापंडितं जाव वियालचारी जायं पासंति, पासित्ता अट्ठ पासातवडिंसए करेंति अब्भुग्गयमुसिय पहसिए विव मणिकण-

१ संग्राममां अश्वादिकना स्वारो साथे युद्ध करवामां प्रवीण थयो विगेरे जाणवुं.

गरयणभत्तिचित्ते वाउद्धूतविजयवेजयंतीपडागाछत्ताइच्छत्तकलिए तुंगे गगणतलमभिलंघमाणसिहरे जालंतररयणपंजरुम्मिल्लिय व्व मणिकणगथूभियाए वियसितसयपत्तपुंडरीए तिलयरयणद्धयचंदच्चिए नानामणिमयदामालंकिते अंतो बहिं च सण्हे तवणिज्जरुइलवालुयापत्थरे सुहफासे सस्सिरीयरूवे पासादीए जाव पडिरूवे ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारना मातापिताए मेघकुमारने बहोंतेर कळामां पंडित यावत् विकाळचारी थयेलो जोयो. जोइने आठ उत्तम प्रासादो कराव्या. ते अत्यंत उंचा हता, उज्वळ कांतिना समूहने लीधे जाणे हसता होय तेवा देखाता हता, मणि, सुवर्ण अने रत्नोनी रचनावडे विचित्र हता, वायुवडे फरकती अने विजयने सूचवनारी वैजयंती नामनी पताका तथा छत्रातिछत्र (उपराउपर रहेला छत्र) वडे युक्त हता, तेना शिखरो गगनतळने ओळंगी जता होय तेवा उंचा हता, तेना जाळीयांनी मध्ये रत्नना पांजराओ हता तेथी जाणे के ते प्रासादोनां विकस्वर नेत्रो होय तेम शोभता हता, तेमां मणि अने सुवर्णनी थूभिकाओ हती, तेमां साक्षात् अथवा चितरेला शतपत्र अने पुंडरीक जातिना कमळो विकस्वर हता, तिलक रत्न अने अर्धचंद्र (पगथीया) वडे सहित हता अथवा भींतने विषे चंदनादिकना आळेखवडे (थापावडे) पूजायेला हता, चंद्रकांतादिक विविध मणिओनी माळाओवडे अलंकृत हता, अंदरथी तथा बहारथी पण सुंवाळा हता, तेना आंगणामां सुवर्णनी मनोहर रेती पाथरेली हती, ते प्रासादोनो स्पर्श सुखकारक हतो, तेनुं रूप शोभावाळुं हतुं, तेमने

जोतां चित्त प्रसन्न थतुं हतुं, यावत् ते प्रासादो प्रतिरूप एटले अत्यंत मनोहर देखाता हता. (आवा आठ प्रासादो कराव्या).

मू०—एगं च णं महं भवणं करेंति अणेगखंभसयसंनिविट्ठं लीलट्ठियसालभंजियागं अब्भुग्गयसुकयवइरवेतियातोरणवररइयसालभंजियासुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठसंठितपसत्थवेरुलियखंभनाणामणिकणगरयणखचितउज्जलं बहुसमसुविभत्तनिचियरमणिज्जभूमिभागं ईहामिय० जाव भत्तिचित्तं खंभुग्गयवयरवेइयापरिगयाभिरामं विज्जाहरजमलजुयलजुत्तं पिव अच्चीसहस्समालणीयं रूवगसहस्सकलियं भिसमाणं भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोयणलेसं सुहफासं सस्सिरीयरूवं कंचणमाणिरयणथूभियागं नाणाविहपंचवन्नघंटापडागपरिमंडियग्गासिरं धवलमरीचिकवयं विणिम्मुयंतं लाउल्लोइयमहियं जाव गंधवट्टिभूयं पासादीयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं ॥ १९ ॥

अर्थ—तथा मेघकुमारने माटे एक मोटुं भवन कराव्युं. ते अनेक सेंकडो स्तंभोवडे शोभित हतुं, तेमां लीला सहित अनेक पुतळीओ स्थापन करेली हती, तेमां उंची अने सारी रीते करेली (सुंदर) वज्र रत्ननी वेदिका अने तोरणो हतां, तेमां

१ लंबाइ करतां उंचाइ कांइक ओछी होय ते भवन कहेवाय छे, अने लंबाइ करतां बमणी उंचाइ होय ते प्रासाद कहेवाय छे.
२ बन्ने बाजुना ओटला.

मनोहर रचेली (स्थापन करेली) पुतळीओ सहित उत्तम, जाडा, अने प्रशस्त वैडूर्य रत्नना स्तंभो रहेला हता, ते विविध प्रकारना मणि सुवर्ण अने रत्नोवडे खचित (जडेलुं) होवाथी उज्वळ (देदीप्यमान) देखातुं हतुं, तेनो भूमिभाग अत्यंत सम (सरखो) विशाळ, गाढ अने रमणीय हतो, तेमां ईहामृग, वृषभ, तुरग, नर, मकर विगेरेनां विचित्र चित्रो चितरेलां हतां, स्तंभोनी उपर रहेली वज्ररत्ननी वेदिकावडे सहित होवाथी रमणीय देखातुं हतुं, तेमां समश्रेणिए रहेला विद्याधरोना युगलो यंत्रवडे चालता देखाता हता, ते भवन हजारो किरणोवडे व्याप्त अने हजारो चित्रोवडे खचित (सहित) होवाथी देदीप्यमान अने अत्यंत देदीप्यमान हतुं. ते भवनने जोतांज तेने विषे जोनारनां नेत्रो चोटी जतां हतां, तेनो स्पर्श सुखकारक हतो, तेनुं रूप शोभा सहित हतुं, तेमां सुवर्ण मणि अने रत्नोनी थूभिका हती, तेनुं अग्र (प्रधान) शिखर विविध प्रकारनी, पांच वर्णनी अने घंटाओ सहित एवी पताकाओवडे सुशोभित हतुं, ते चोतरफ उज्वळ किरणोना कवच (समूह) ने मूकतुं हतुं, वळी ते लींपेलुं, धोळेलुं, चंदरवा सहित हतुं, यावत् गंधवर्तीभूत एटले ठेकाणे ठेकाणे सुगंधी पदार्थो मूकेला होवाथी जाणे गंधनी वर्तीरूप होय तेवुं देखातुं हतुं, आ प्रमाणे ते भवन चित्तने प्रसन्न करनार, जोवा लायक, अभिरूप, प्रतिरूप विगेरे विशेषणवाळुं कराव्युं. १९.

मू०—तते णं तस्स मेहकुमारस्स अम्मापियरो मेहं कुमारं सोहणंसि तिहिकरणनक्खत्तमुहुत्तंसि सरिसियाणं सरिसव्वयाणं सरिसत्तयाणं सरिसलावन्नरूवजोव्वणगुणोववेयाणं सरिसएहिंतो

आणिअल्लियाणं पसाहणट्टंगअविहवबहुओवयणमंगलसुजंपियाहिं अट्ठहिं रायवरकण्णाहिं सद्धिं एग-दिवसेणं पाणिं गिण्हाविंसु ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारना मातापिताए मेघकुमारने उत्तम तिथि, करण, नक्षत्र अने मुहूर्त्तने विषे शरीरना प्रमाणे करीने सरखी, सरखी वयवाळी, सरखी त्वचा (छवि–कांति) वाळी, सरखा लावण्य (मनोज्ञता) वडे, सरखा रूप-(आकृति) वडे, सरखा यौवनवडे अने सरखा प्रियभाषित्वादिक गुणवडे सहित तथा सरखा राजकुळमांथी लावेली श्रेष्ठ राजाओनी आठ कन्याओ साथे आठे अंगमां अलंकार धारण करनारी सधवा (सौभाग्यवती) स्त्रीओए करेला धवलमंगल गीत अथवा दहीं अक्षत विगेरे मांगलिक पदार्थोवडे एकज दिवसे-एकसाथे पाणिग्रहण कराव्युं.

मू०—तते णं तस्स मेहस्स अम्मापितरो इमं एतारूवं पीतिदाणं दलयइ—अट्ठ हिरण्णकोडीओ अट्ठ सुवण्णकोडिओ गाहाणुसारेण भावियव्वं जाव पेसणकारियाओ, अन्नं च विपुलं धणकणगरयणमणिमोत्तियसंखसिलप्पवालरत्तरयणसंतसारसावतेज्जं अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तुं पंकामं परिभाएउं ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारना मातापिताए (ते आठे कन्याओने) आ प्रमाणेनुं प्रीतीदान आप्युं—आठ करोड

हिरण्य (रूपुं), आठ करोड सुवर्ण विगेरे गाथाओने अनुसारे जाणवुं, यावत् आठ आठ प्रेक्षण (नाटक) करनारी आपी. तथा बीजुं विपुल-घणुं धन, कनक, रत्न, मणि, मोती, शंख, शिलाप्रवाल (परवाळा), राता रत्न-पद्मरागादिक, विगेरे उत्तम सारभूत द्रव्य परिपूर्ण आप्युं के जे सात कुलवंश सुधी-सात पेढी सुधी दीनादिकने अत्यंत दान आपी शकाय, पोताने अत्यंत भोग उपभोग करी शकाय अने पित्राइ विगेरेने अत्यंत भाग पाडीने आपी शकाय, तोपण खुटे नहीं तेटलुं अखूट आप्युं.

मू०—तते णं से मेहे कुमारे एगमेगाए भारियाए एगमेगं हिरण्णकोडिं दलयति एगमेगं सुवन्नकोडिं दलयति जाव एगमेगं पेसणकारिं दलयति, अन्नं च विपुलं धणकणग जाव परिभाएउं दलयति।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारे एक एक भार्याने एक एक करोड हिरण्य (रूपुं), एक एक करोड सुवर्ण आप्युं, यावत् एक एक प्रेक्षण (नाटक) करनारी आपी, तथा बीजुं विपुल धन, कनक विगेरे यावत् पित्राइओने अत्यंत भाग पाडीने आपी शकाय तोपण खुटे नहीं तेटलुं अखूट द्रव्य आप्युं.

मू०—तते णं से मेहे कुमारे उप्पिं पासातवरगते फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं वरतरुणिसंपउत्तेहिं बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं उवगिज्जमाणे उवगिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे सद्दफरि-

---

१ अथवा पीसवानुं काम करनारी.

सरसरूवगंधविउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरति ॥ २० ॥

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमार श्रेष्ठ प्रासादनी उपर रह्यो सतो जाणे मृदंगना मुख फुटी जता होय एम उत्तम स्त्रीओए करेला बत्रीशबद्ध नाटकोवडे गायन करातो गायन करातो अने उत्तम क्रीडावडे क्रीडा करतो क्रीडा करतो शब्द, स्पर्श, रस, रूप अने गंधवडे विपुल एवा मनुष्य संबंधी कामभोगनो अनुभव करतो विचरे छे–रहेलो छे. (विचरवा लाग्यो.) २०.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणामेव रायगिहे नगरे गुणसिलए चेतिए जाव विहरति ।

अर्थ—ते काळे ते समये श्रमण भगवान महावीर स्वामी पूर्वानुपूर्वीए (अनुक्रमे) चालता एक गामथी बीजे गाम जता सुखे सुखे विहार करता यावत् ज्यां राजगृह नगर छे त्यां गुणशील नामना चैत्यमां आवीने यावत् रह्या. (समवसर्या.)

मू०—तते णं से रायगिहे नगरे सिंघाडग० महया बहुजणसद्देति वा जाव बहवे उग्गा भोगा जाव रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं एगादिसिं एगाभिमुहा निग्गच्छंति, इमं च णं मेहे कुमारे उप्पिं पासातवरगते फुट्टमाणेहिं मुयंगमत्थएहिं जाव माणुस्सए कामभोगे भुंजमाणे रायमग्गं च आलोएमाणे आलोएमाणे एवं च णं विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते राजगृह नगरमां शृंगाटक–शींगोडाना आकारवाळा विगेरे मार्गमां मोटा घणा लोकोना शब्द थवा लाग्या. यावत् घणा उग्र कुळना भोगकुळना विगेरे सर्व लोको यावत् राजगृह नगरना मध्य भागे थइने एकज दिशामां एकज तरफ मुखवाळा थइने नीकळवा लाग्या. ते समये मेघकुमार श्रेष्ठ प्रासादनी उपर रह्यो सतो जाणे फुटी जता होय एवा मृदंगना मुखवडे गायन गवातो यावत् मनुष्य संबंधी कामभोगने भोगवतो अने राजमार्गने जोतो जोतो विचरे छे–रहेलो छे. (रहेलो हतो.)

मू०—तए णं से मेहे कुमारे ते बहवे उग्गे भोगे जाव एगदिसाभिमुहे पासति, पासित्ता कंचुइज्जपुरिसं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी–" किं नं भो देवाणुप्पिया ! अज्ज रायगिहे नगरे इंदमहेति वा खंदमहेति वा एवं रुद्दसिववेसमणनागजक्खभूयनईतलायरुक्खचेतियपव्वयउज्जाणगिरिजत्ताइ वा ? जओ णं बहवे उग्गा भोगा जाव एगदिसिं एगाभिमुहा णिग्गच्छंति ? "।

अर्थ— ते वखते ते मेघकुमार ते घणा उग्रकुळना भोगकुळना यावत् सर्व लोकोने एक दिशा तरफ मुख राखीने जता जुए, जोइने कंचुकी पुरुषने बोलावे, बोलावीने आ प्रमाणे कहे–" हे देवानुप्रिय ! शुं आजे राजगृह नगरमां इंद्र महोत्सव छे ? के स्कंद (कार्तिकस्वामी) नो महोत्सव छे ? के रुद्र, शिव, वैश्रमण (कुबेर), नाग, यक्ष, भूत, नदी, तळाव, वृक्ष, चैत्य, पर्वत, उद्यान के कोइ गिरिनी यात्रा छे ? के जेथी घणा उग्रकुळना भोगकुळना विगेरे सर्व जनो एक दिशामां अने

एक दिशा तरफ मुख राखीने जाय छे ? ”

मू०—तते णं से कंचुइज्जपुरिसे समणस्स भगवओ महावीरस्स गहियागमणपवत्तीए मेहं कुमारं एवं वदासी—“ नो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज रायगिहे नयरे इंदमहेति वा जाव गिरिजत्ताओ वा, जं णं एए उग्गा जाव एगदिसिं एगाभिमुहा निग्गच्छंति एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे आइकरे तित्थकरे इहमागते इह संपत्ते इह समोसढे इह चेव रायगिहे नगरे गुणासिलए चेइए अहापडि जाव विहरति ” ॥ २१ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते कंचुकी पुरुषे श्रमण भगवान महावीर स्वामीना आगमननुं वृत्तांत जाणी मेघकुमारने आ प्रमाणे कह्युं—“ हे देवानुप्रिय ! आजे राजगृह नगरमां इंद्रमहोत्सव के यावत् गिरियात्रा विगेरे कांइपण नथी, के जेथी आ उग्रकुळना यावत् सर्व लोको एक दिशामां एक दिशा तरफ मुख राखीने जाय छे, परंतु हे देवानुप्रिय ! श्रमण भगवान महावीरस्वामी श्रुतधर्मनी आदिने करनारा तीर्थने करनारा अहीं राजगृह नगरे आव्या छे, अहीं गुणशिल चैत्यमां रह्या छे, अहीं साधुने उचित अवग्रहमां समवसर्या छे. एटले अहीं राजगृह नगरनी बहार गुणशील नामना चैत्यमां साधुने योग्य अवग्रहनी याचना करीने यावत् विचरे छे—रहेला छे. ” २१

मू०—तते णं से मेहे कंचुइज्जपुरिसस्स अंतिए एतमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—" खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह "। तह त्ति उवणेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारे कंचुकी पुरुषनी पासेथी आ अर्थ सांभळी हृदयमां धारी हृष्ट तुष्ट थइ कौटुंबिक (सेवक) पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रियो ! शीघ्रपणे चार घंटावाळा अश्वयुक्त रथने जोडीने जलदी अहीं लावो. " ते सांभळी " तह त्ति—" " बहु सारुं " एम कही तेओ तरतज चार अश्वयुक्त रथ जोडीने लाव्या.

मू०—तते णं से मेहे ण्हाते जाव सव्वालंकारविभूसिए चाउग्घंटं आसरहं दुरूढे समाणे सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भडचडगरविंदपरियालसंपरिवुडे रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणामेव गुणासिलए चेतिए तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स छत्तातिछत्तं पडागातिपडागं विज्जाहरचारणे जंभए य देवे ओवयमाणे उप्पयमाणे पासति, पासित्ता चाउग्घंटाओ आसरहाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता समणं

भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छति, तं जहा—सचित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए १, अचित्ताणं दव्वाणं अविउसरणयाए २, एगसाडियउत्तरासंगकरणेणं ३, चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं ४, मणसो एगत्तीकरणेणं ५, जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आदाहिणं पदाहिणं करेति, करित्ता वंदति णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स णच्चासन्ने नातिदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अंजलियउडे अभिमुहे विणएणं पज्जुवासति ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारे स्नान कर्युं, यावत् सर्व अलंकारवडे विभूपित थयो, चार घंटावाळा अश्व जोडेला रथ उपर आरूढ थयो. कोरंटना पुष्पनी माळा सहित थयो, तेना पर छत्र धारण करवामां आव्युं, सुभटोना विपुल समूहवाळा परिवारवडे परिवर्यो, ए रीते राजगृह नगरना मध्यभागे थइने नीकळ्यो, नीकळीने ज्यां गुणशिल चैत्य हतुं त्यां आव्यो, आवीने श्रमण भगवान महावीर स्वामीना छत्रपर छत्र अने पताकापर पताका विगेरे अतिशयोने तथा विद्याधरोने चारण मुनिओने अने तिर्यग् जृंभक देवताओने नीचे उतरता अने आकाशमां उपडता जोया, जोइने चार घंटावाळा अश्वयुक्त रथपरथी नीचे उतर्यो, उतरीने पांच प्रकारना अभिगम जाळवी श्रमण भगवान महावीर स्वामीनी सन्मुख चाल्यो, ते पांच अभिगम आ प्रमाणे—पुष्प, तांबूल, विगेरे सचित्त द्रव्यनो त्याग १, वस्त्र आभरण विगेरे अचित्त द्रव्यनो अत्याग २,

एक शाटिका (खेस) नुं उत्तरासण ३, भगवानने चक्षुवडे जुवे त्यारे बे हाथ जोडवा ४ तथा चित्तनी एकाग्रता करवी ५, आ रीते चालीने ज्यां श्रमण भगवान महावीर स्वामी हता त्यां आव्यो, आवीने श्रमण भगवान महावीर स्वामीने दक्षिण (जमणी) बाजुथी आरंभीने (त्रण) प्रदक्षिणा करी, प्रदक्षिणा करीने प्रभुने स्तुतिरूप वंदन कर्युं अने शरीरवडे नमस्कार कर्या, वंदन करी नमस्कार करी श्रमण भगवान महावीर स्वामीनी अत्यंत समीपे नहीं तेमज अत्यंत दूर नहीं एवा योग्य स्थानके बेसी भगवाननो उपदेश सांभळवाने इच्छतो अथवा सेवा करतो मस्तक नमावी बे हाथ जोडी सन्मुख रही विनयवडे प्रभुनी सेवा करवा लाग्यो (पासे बेठो).

मू०—तए णं समणे भगवं महावीरे मेहकुमारस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए मज्झगए विचित्तं धम्ममातिक्खति जहा जीवा बज्झंति मुच्चंति जह य संकिलिस्संति, धम्मकहा भाणियव्वा जाव परिसा पडिगया ॥ २२ ॥

अर्थ—त्यारपछी श्रमण भगवान महावीर स्वामीए मेघकुमारनी पासे अति मोटी पर्षदा मध्ये विचित्र प्रकारनो श्रुतधर्म अने चारित्र धर्म कह्यो. तेमां जे रीते जीवो कर्मथी बंधाय छे, जे रीते कर्मथी मुक्त थाय छे, अने जे रीते संक्लिष्ट परिणामवाळा थाय छे, आ सर्व धर्मकथा उपपातिक सूत्रमां कही छे ते प्रमाणे कहेवी, यावत् देशना सांभळीने पर्षदा पाछी

मू०—तते णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आदाहिणं पदाहिणं करेति, करित्ता वंदाति नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—" सद्दहामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं, एवं पत्तयामि णं, रोएमि णं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, एवमेयं भंते !, तहमेयं, अवितहमेयं, इच्छितमेयं, पडिच्छियमेयं भंते !, इच्छितपडिच्छियमेयं भंते !, से जहेव तं तुब्भे वदह, जं नवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तओ पच्छा मुंडे भवित्ता णं पव्वइस्सामि " " अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह । "

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारे श्रमण भगवान महावीरनी पासेथी धर्म सांभळी हृदयमां धारी हृष्ट तुष्ट थइ श्रमण भगवान महावीर स्वामीने त्रणवार दक्षिण (जमणी) बाजुथी प्रारंभीने प्रदक्षिणा आपी, प्रदक्षिणा दइने स्तुतिरूप वंदन कर्युं, शरीरवडे नमस्कार कर्या, वंदन करी नमस्कार करी आ प्रमाणे कह्युं.—" हे भगवान ! हुं निर्ग्रंथ प्रवचन उपर श्रद्धा करुं छुं एटले जैन शासन (श्रेष्ठ) छे एम अंगीकार करुं छुं, एज प्रमाणे हुं तेनी प्रतीति करुं छुं, मने ते (जैन शासन) रुचे छे एटले तेमां कह्या प्रमाणे हुं करवाने इच्छुं छुं, अर्थात् हे भगवान ! हुं निर्ग्रंथ प्रवचनने अंगीकार करवा इच्छुं छुं,

हे भगवान ! ए एमज छे (तमे कहो छो तेमज छे), ते तथा प्रकारे ज छे, अर्थात् ते अवितथ (सत्य) छे, ते में इच्छ्युं छे, हे भगवान ! ते में वारंवार इच्छ्युं छे, हे भगवान् ! ते में इच्छ्युं अने वारंवार इच्छ्युं छे. ते जेम तमे कहो छो ते तेमज छे. परंतु विशेष ए छे जे हे देवानुप्रिय ! हुं मारा मातापितानी रजा लउं, त्यारपछी हुं मुंड थइने प्रव्रज्या ग्रहण करीश." त्यारे भगवाने कह्युं के—"हे देवानुप्रिय ! तुं तारी इच्छा प्रमाणे कर, पण तेमां विलंब करीश नहीं.

मू०—तते णं से मेहे कुमारे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता जेणामेव चाउग्घंटे आसरहे तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरूहति, दुरूहित्ता महया भडचडगरपहकरेणं रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता चाउग्घंटाओ आसरहाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता जेणामेव अम्मापियरो तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अम्मापिऊणं पायवडणं करेति, करित्ता एवं वदासी—" एवं खलु अम्मयाओ ! मए समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए धम्मे णिसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिते पडिच्छिते अभिरुइए " ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारे श्रमण भगवान महावीर स्वामीने वंदन एटले स्तुति करी, कायावडे नमस्कार कर्या,

वंदन करी नमस्कार करी ज्यां चार घंटावाळो अश्वयुक्त रथ हतो त्यां आव्यो, आवीने चार घंटावाळा अश्वयुक्त रथ उपर चड्यो, चडीने मोटा सुभटो ने विपुल समूहवाळा परिवार सहित राजगृह नगरना मध्य भागे थइने ज्यां पोतानुं भवन हतुं त्यां आव्यो, आवीने चार घंटावाळा अश्वयुक्त रथपरथी उतर्यो, उतरीने ज्यां तेना मातापिता हता त्यां आव्यो, आवीने मातापिताना पगमां पडवुं कर्युं–पगे पड्यो. पादपतन करीने आ प्रमाणे बोल्यो–" हे मातापिता ! में श्रमण भगवान महावीर स्वामीनी पासे आ प्रमाणे धर्म सांभळ्यो छे, अने निश्चे ते धर्म में इच्छयो छे वारंवार इच्छयो छे अने ते मने रुच्यो छे. "

मू०–तते णं तस्स मेहस्स अम्मापियरो एवं वदासी—" धन्नो सि तुमं जाया ! संपुन्नो सि तुमं जाया ! कयत्थो सि तुमं जाया ! जं णं तुमे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे णिसंते, से वि य ते धम्मे इच्छिते पडिच्छिते अभिरुइए "।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारने मातापिताए आ प्रमाणे कह्युं–" हे पुत्र ! तुं धन्य छे, हे पुत्र ! तुं संपूर्ण पुण्यवान छे, हे पुत्र ! तुं कृतार्थ छे, के जेथी तें श्रमण भगवान महावीर स्वामीनी पासे धर्म सांभळयो, अने ते धर्म पण तें इच्छयो, वारंवार इच्छयो अने ते तने रुच्यो. "

मू०–तते णं से मेहे कुमारे अम्मापियरो दोच्चं पि तच्चं पि एवं वदासी–एवं खलु अम्म-

याओ ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडि-च्छिए अभिरुइए, तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता णं आगारातो अणगारियं पव्वइत्तए ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारे मातापिताने बीजी वार त्रीजी वार आ प्रमाणे कह्युं—" हे माता पिता ! में श्रमण भगवान महावीर स्वामीनी पासे धर्म सांभळ्यो छे, ते धर्मने में इच्छयो छे, विशेषे करीने इच्छयो छे अने ते मने रुच्यो छे, तेथी हुं इच्छुं छुं के हे मातापिता ! हुं तमोए अनुज्ञा आप्यो सतो श्रमण भगवान महावीर स्वामीनी पासे मुंड थइने गृहवास थकी नीकळी साधुपणाने अंगीकार करुं."

मू०—तते णं सा धारिणी देवी तमणिट्ठं अकंतं अप्पियं अमणुन्नं अमणामं अस्सुयपुव्वं फरुसं गिरं सोच्चा णिसम्म इमेणं एतारूवेणं मणोमाणासिएणं महया पुत्तदुक्खेणं अभिभूता समाणी सेयागयरोमकूवपगलंतविलीणगाया सोयभरपवेवियंगी णित्तेया दीणाविमणवयणा करय-लमलिय व्व कमलमाला तक्खणओलुग्गदुब्बलसरीरा लावन्नसुन्ननिच्छायगयसिरीया पसिढिलभू-सणपडंतखुम्मियसंचुन्नियधवलवलयपब्भट्ठउत्तरिज्जा सूमालविकिन्नकेसहत्था मुच्छावसणट्ठचेयगरुई

परसुनियत्त व्व चंपकलया निव्वत्तमहिम व्व इंदलट्ठी विमुक्कसंधिबंधणा कोट्टिमतलंसि सव्वंगेहिं धसत्ति पडिया ।

अर्थ—त्यारपछी ते धारिणी देवी ते अनिष्ट, अकांत (नहीं चाहेली), अप्रिय (नहीं वहाली), अमनोज्ञ, (नहीं सारी), अमणाम (मनने नहीं रुचती), पूर्वे कदापि नहीं सांभळेली अने कठोर एवी वाणी सांभळीने ते वाणीने हृदयमां धारीने आ आवा प्रकारना मनमां गुप्त उत्पन्न थयेला मोटा पुत्रना वियोगना दुःखवडे पराभव पामी, रोमकूपमां परसेवो आववाथी तेनां गात्रो पाणी झरवा लाग्यां अने भीनां थयां, शोकना समूहथी तेनुं शरीर कंपवा लाग्युं, ते तेज रहित थइ गइ, जाणे दीन थइ होय अने मन रहित थइ गइ होय तेम तेनुं मुख अथवा वचन दीनतावाळुं थयुं, हस्ततळवडे मसळेली कमळनी माळानी जेम ते झांखी थइ गइ. तत्त्वण एटले 'हुं दीक्षा ग्रहण करुं' एवुं वचन सांभळ्युं तेज वखते तेनुं शरीर म्लानि पाम्युं अने दुर्बळ (कृश) थयुं, ते लावण्य रहित थइ, कांति रहित थइ, लक्ष्मी (शोभा) रहित थइ, एकदम शरीर दुर्बळ थइ जवाथी तेना पहेरेला अलंकारो अत्यंत शिथिल थइ गयां, तेना हाथे पहेरेला उज्वळ वलय सरी जइने भूमिपर पडी जवाथी अन्य प्रदेशमां दडी गया तथा चूर्णरूप थया, तेनुं उत्तरीय (ओढेलुं) वस्त्र नीकळी गयुं, तेनो सुकोमळ केशपाश वीखराइ गयो, मूर्च्छाना वशथी चित्त नाश पामवाने लीधे तेनुं शरीर गुरु—भारवाळुं थयुं, परशुवडे कापेली चंपकलतानी जेम, महोत्सव पूर्ण थये इंद्रध्वजनी जेम शरीरना सांधा जेना शिथिल थइ गया छे, एवी ते धारिणी देवी सर्व अंगोवडे 'धस' एवा शब्दपूर्वक (धड दइने) पृथ्वीतळ उपर पडी गइ.

मू०—तते णं सा धारिणी देवी ससंभमोवत्तियाए तुरियं कंचणभिंगारमुहविणिग्गयसीयलजलविमलधाराए परिसिंचमाणा निव्वावियगायलट्ठी उक्खेवणतालवंटवीयणगजणियवाएणं सफुसिएणं अंतेउरपरिजणेणं आसासिया समाणी मुत्तावलिसन्निगासपवडंतअंसुधाराहिं सिंचमाणी पओहरे कलुणविमणदीणा रोयमाणी कंदमाणी तिप्पमाणी सोयमाणी विलवमाणी मेहं कुमारं एवं वयासी ॥ २३ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते धारिणी देवीने संभ्रम सहित (व्याकुळ चित्तपणे) शीघ्रताथी छांटेली सुवर्णकळशना मुखथी नीकळेली शीतळ जळनी निर्मळ धारावडे चोतरफथी सींची, तेथी तेनी अंगयष्टि (शरीर) शीतळ थइ, तथा उत्क्षेपक[1], तालवृंत[2] अने वींजनकथी[3] उत्पन्न थयेला जळकण सहित वायरा वडे अंतःपुरना परिवारजनोए आश्वासन पमाडी, त्यारे ते देवी मोतीना दाणा जेवी पडती अश्रुधारावडे स्तनने (छातीने) सींचती, करुणा उपजे एवी, मनमां दुभाती, दीनताने पामेली, रोती—अश्रुपात सहित शब्द करती, मोटा शब्दवडे आक्रंद करती, तेपती—परसेवाने तथा लाळने मूकती, हृदयमां शोक करती

---

१ वांसना दलमय मुठीवडे ग्रहण करी शकाय एवो दंडनो मध्य भाग जेनो होय तेवो पंखो. २ तालवृक्षना पांदडानो पंखो, अथवा चर्मनो पंखो. ३ जेनो दांडो अंदरथी पकडाय एवो वांसना दळमय पंखो.

अने आर्तस्वरे विलाप करती मेघकुमारने आ प्रमाणे कहेवा लागी. २३

मू०—तुमं सि णं जाया ! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते पिए मणुन्ने मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूते जीवियउस्सासय हिययाणंदजणणे उंबरपुप्फं व दुल्लभे सवणयाए किमंग पुण पासणयाए ? णो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो खणमवि विप्पओगं सहित्तते, तं भुंजाहि ताव जाया ! विपुले माणुस्सए कामभोगे जाव ताव वयं जीवामो, तओ पच्छा अम्हेहिं कालगतेहिं परिणयवए वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जम्मि निरावयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता आगारातो अणगारियं पव्वइस्सासि ।

अर्थ—" हे पुत्र ! तुं अमारे एकज पुत्र छे. अमारी इच्छाना खास विषयरूप होवाथी तुं इष्ट छे, कमनीय (चाहवा लायक) होवाथी कांत छे, प्रेमनुं कारण होवाथी प्रिय छे, मनोज्ञ (मनोहर) छे, मनमां पामवा लायक होवाथी मनोऽम छे, स्थिरताना गुणवाळो होवाथी स्थिर छे, विश्वासनुं स्थानरूप छे, कार्य करवामां संमत (मानेलो) छे, घणा कार्योमां घणो मानेलो छे, (मान्यवंत गणाएलो छे.) कार्य कर्या पछी पण मानेलो होवाथी अनुमत छे, आभरणना करंडीया (पेटी) समान छे, मनुष्य जातिमां तुं उत्तम होवाथी रत्न छे, (अथवा रंजन करनार छे.) चिंतामणि आदिक रत्नरूप

छे, अमारा जीवितना उच्छ्वास (श्वासोच्छ्वास) रूप छे. (अथवा अमारा जीवितना उत्सवरूप छे.) अमारा हृदयने आनंद उत्पन्न करनार छे, उदुंबर (उमरा) वृक्षना पुष्पनी जेम तारुं नामश्रवण पण दुर्लभ छे, तो पछी तारुं दर्शन दुर्लभ होय तेमां तो शुं कहेवुं ? हे पुत्र ! निश्चे अमे एक क्षणमात्र पण तारो वियोग सहन करवा इच्छता नथी–करी शकीए तेम नथी. तेथी हे पुत्र ! प्रथम तो ज्यां सुधी अमे जीवीए छीए त्यांसुधी मनुष्य संबंधी विपुल कामभोगने तुं भोगव. त्यारपछी अमे काळधर्म पामीए त्यारे तुं पण परिणत वयवाळो थाय एटले युवावस्था पूर्ण थइ जाय, पुत्रपौत्रादिक कुळवंशरूपी तंतुनुं कार्य वृद्धि पामेलुं थाय अने संसारना कार्यमां अपेक्षा रहे नहीं, त्यारे तुं श्रमण भगवान महावीरस्वामीनी पासे मुंड थइने गृहवासनो त्याग करी अनगार (साधु) व्रतने अंगीकार करजे.

मू०–तते णं से मेहे कुमारे अम्मापिऊहिं एवं वुत्ते समाणे अम्मापियरो एवं वदासी–" तहेव णं तं अम्मतायो (अम्मो) ! जहेव णं तुम्हे ममं एवं वदह तुमं सि णं जाया ! अम्हं एगे पुत्ते तं चेव जाव निरावयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइस्ससि, एवं खलु अम्मयाओ ! माणुस्सए भवे अधुवे अणियए असासए वसणसउवद्दवाभिभूते विज्जुलयाचंचले अणिच्चे जलबुब्बुयसमाणे कुसग्गजलबिंदुसन्निभे संझब्भरागसरिसे सुविणदंसणोवमे सडणपडणविद्धंसण-

धम्मे पच्छा पुरं च णं अवस्स विप्पजहणिज्जे से के णं जाणति अम्मयाओ ! के पुव्विं गमणाए ? के पच्छा गमणाए ? तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाते समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वतित्तए " ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारने मातापिताए उपर प्रमाणे कह्युं त्यारे ते मातापिता प्रत्ये आ प्रमाणे बोल्यो–" हे मातापिता (माता) ! ते वात तेज प्रकारे छे के जे प्रकारे तमे मने आ प्रमाणे कहो छो के–' हे पुत्र ! तुं अमारे एकज पुत्र छे, विगेरे सर्व ते प्रकारे जाणवुं. यावत् संसारना कार्यमां अपेक्षा रहित था त्यारे तुं श्रमण भगवान महावीर स्वामीनी पासे यावत् व्रतने अंगीकार करजे. ' परंतु निश्चे हे मातापिता ! आ मनुष्यनो भव ध्रुव नथी एटले सूर्योदयनी जेम नियमित काळे अवश्य फरी फरीने मळे तेम नथी, ईश्वरादिक पण दरिद्रादिक थइ जाय छे माटे ते भाव पण नियत (नित्यस्थायी) नथी, क्षणमां नाश पामनार होवाथी शाश्वत नथी, (मनुष्यनो भव) द्युतादिक व्यसनो अने सेंकडो (अथवा सदा) उपद्रवोथी व्याप्त छे, वीजळीनी जेवो चंचळ छे, अनित्य छे, जळना बुदबुद (परपोटा) समान छे, डाभना अग्र भागपर रहेला जळबिंदुनी जेवो छे, संध्या समयना वादळां जेवो छे, स्वप्न दर्शन समान छे, शटन, पतन[3] अने विध्वंसन (सर्वथा

१ धनवान राजा विगेरे. २ कुष्टादिक व्याधिवडे आंगळी विगेरे सडी जाय ते. ३ खड्गादिकवडे हाथ पग कपाइ जाय ते.

नाश पामवुं) एज आ शरीरनो धर्म (स्वभाव) छे, पछी अथवा पहेलां अवश्य आ शरीर त्याग करवा लायक छे. हे मातापिता ! आ बाबत कोण जाणे छे ? के पहेलां कोण जशे (मरशे) ? अने पछी कोण जशे (मरशे) ? ते कारण माटे हे मातापिता ! तमारी आज्ञाने पाम्यो सतो हुं श्रमण भगवान श्रीमहावीर स्वामीनी पासे यावत् दीक्षा ग्रहण करवाने इच्छुं छुं."

मू०—तते णं तं मेहं कुमारं अम्मापियरो एवं वदासी—" इमातो ते जाया ! सरिसियाओ सरिसत्तयाओ सरिसव्वयाओ सरिसलावन्नरूवजोव्वणगुणोववेयाओ सरिसेहिंतो रायकुलेहिंतो आणियल्लियाओ भारियाओ, तं भुंजाहि णं जाया ! एताहिं सद्धिं विपुले माणुस्सए कामभोगे, तओ पच्छा भुत्तभोगे समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइस्ससि " ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारने तेना मातापिताए आ प्रमाणे कह्युं—" हे पुत्र ! आ तारी भार्याओ सरखा शरीरवाळी, सरखी त्वचा (चामडी) वाळी, सरखा वयवाळी, सरखा लावण्य, रूप, यौवन अने गुणे करीने सहित तथा सरखा राजकुळमांथी आणेली छे. तेथी हे पुत्र ! तेओनी साथे तुं मनुष्य संबंधी विपुल कामभोगने भोगव, अने त्यारपछी ज्यारे भोग भोगवी ले त्यारे श्रमण भगवान महावीर स्वामीनी पासे जइने यावत् तुं दीक्षा ग्रहण करजे. "

मू०—तते णं से मेहे कुमारे अम्मापितरं एवं वदासी—" तहेव णं अम्मयाओ ! जं णं तुब्भे

ममं एवं वदह—'इमाओ ते जाया! सरिसियाओ जाव समणस्स भगवओ महावीरस्स पव्वइस्ससि, एवं खलु अम्मयाओ ! माणुस्सगा कामभोगा असुई असासया वंतासवा पित्तासवा खेलासवा सुक्कासवा सोणियासवा दुरुस्सासनीसासवा दुरूयमुत्तपुरिसपूयबहुपडिपुन्ना उच्चारपासवणखेलजल्ल-सिंघाणगवंतपित्तसुक्कसोणितसंभवा अधुवा अणितया असासया सडणपडणविद्धंसणधम्मा पच्छा पुरं च णं अवस्सविप्पजहणिज्जा । से के णं अम्मयाओ ! जाणंति के पुव्विं गमणाए के पच्छा गमणाए ?, तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! जाव पव्वतित्तए "।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारे मातापिताने आ प्रमाणे कह्युं–" हे मातापिता ! तमे मने आ प्रमाणे कहो छो के– ' हे पुत्र ! आ तारी भार्याओ सरखा शरीरवाळी विगेरे साथे भोग भोगवी यावत् श्रमण भगवान महावीर स्वामीनी पासे दीक्षा ग्रहण करजे. ' तो आ प्रमाणे निश्चे हे मातापिता ! आ मनुष्य संबंधी कामभोगो (अर्थात् कामभोगना आधारभूत स्त्रीपुरुषनां शरीरो) अशुचिनां कारणरूप होवाथी अशुचि–अपवित्र छे, अशाश्वत छे, वमनने स्रवनारा (झरनारा) छे, पित्तने स्रवनारा छे, खेल (थुंक) ने स्रवनारा छे, शुक्र (वीर्य) ने स्रवनारा छे, शोणित (रक्त) ने स्रवनारा छे, दुर्लभ एवा उच्छ्वास निश्वासने स्रवनारा छे, दुर्गंधवाळा मूत्र, विष्टा अने परुवडे अत्यंत परिपूर्ण (भरेला) छे, विष्टा,

मूत्र, थुंक, सिंघाण (नाकनो मळ), वमन, पित्त, शुक्र अने शोणितथी आ शरीरनी उत्पत्ति छे, आ शरीर ध्रुव नथी एटले सूर्योदयनी जेम नियमित काळे फरीथी अवश्य मळे तेम नथी, ईश्वरादिक पण दरिद्रादिक थइ जाय छे माटे नियत (नित्यस्थायी) नथी, क्षणमां नाश पामनार होवाथी शाश्वत नथी, शटन[1], पतन[2] अने विध्वंस (सर्वथा नाश पामवो) एज तेनो स्वभाव छे, पछी के पहेलां अवश्य त्याग करवा लायक छे. तो हे मातापिता ! कोण जाणे छे ? के पहेलां कोण जशे (मरशे) ? अने पछी कोण जशे (मरशे) ? ते कारण माटे हे माता पिता ! हुं यावत् दीक्षा ग्रहण करवाने इच्छुं छुं. "

मू०—तते णं तं मेहं कुमारं अम्मापितरो एवं वदासी—" इमे ते जाया ! अज्जयपज्जयपिउपज्जयागए सुबहु हिरन्ने य सुवण्णे य कंसे य दूसे य मणिमोत्तिए य संखसिलप्पवालरत्तरयणसंतसारसावतिज्जे य अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पगामं दाउं पगामं भोत्तुं पगामं परिभाएउं तं अणुहोहि ताव जाव जाया ! विपुलं माणुस्सगं इड्ढिसक्कारसमुदयं, तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पव्वइस्ससि "।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारने मातापिताए आ प्रमाणे कह्युं—" हे पुत्र ! आ तारा आर्यक (पितामह), प्रार्यक

१ आंगळी विगेरे सडी जवी २ हाथपग कपाइने पडी जवा.

(पिताना पितामह) अने पितृप्रार्यक (पिताना प्रपितामह) थकी आवेलुं घणुं हिरण्य, सुवर्ण, कांसु, दूष्य (वस्त्र), मणि, मोती, शंख, सिला, प्रवाल, राता रत्न, विगेरे छतुं-(विद्यमान) सारभूत स्वापतेय (द्रव्य) परिपूर्ण यावत् सात कुल-वंश (पेढी) पर्यंत खूटे नहीं तेटलुं छे, तेने तुं अत्यंत (पुष्कळ) दीनादिकने आप, अत्यंत पोते भोगव, अने पित्राइ विगेरेनो अत्यंत विभाग कर, आ रीते हे पुत्र ! जेटलो विपुल मनुष्य संबंधी ऋद्धि-सत्कारनो समुदाय छे तेटलो तुं अनुभव कर (भोगव). त्यारपछी जेणे कल्याणनो (द्रव्यनो) अनुभव कर्यो छे एवो तुं श्रमण भगवान महावीर स्वामीनी पासे दीक्षा ग्रहण करजे. ”

मू०-तते णं से मेहे कुमारे अम्मापियरं एवं वदासी-“ तहेव णं अम्मयाओ ! जं णं तं वदह ‘इमे ते जाया ! अज्जगपज्जगपिउपज्जयागए जाव तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे पव्वइस्ससि ’ एवं खलु अम्मयाओ ! हिरन्ने य सुवण्णे य जाव सावतेज्जे अग्गिसाहिए चोरसाहिए रायसाहिए दाइयसाहिए मच्चुसाहिए अग्गिसामन्ने जाव मच्चुसामन्ने सडणपडणविद्धंसणधम्मे पच्छा पुरं च णं अवस्सविप्पजहणिज्जे, से के णं जाणइ अम्मयाओ ! के जाव गमणाए ? तं इच्छामि णं जाव पव्वातित्तए ” ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारे मातापिताने आ प्रमाणे कह्युं—" हे मातापिता ! तमे कहो छो ते तेम ज छे के—' हे पुत्र ! आ तारा पितामह, प्रपितामह अने वृद्ध प्रपितामहथी आवेलुं द्रव्य यावत् तुं भोगव अने त्यारपछी जेणे कल्याण (द्रव्य) नो अनुभव कर्यो छे एवो तुं यावत् दीक्षा लेजे.' परंतु आ प्रमाणे हे मातापिता ! हिरण्य, सुवर्ण यावत् स्वापतेय (द्रव्य) ए सर्व अग्निने स्वाधीन छे, चोरने आधीन छे, राजाने स्वाधीन छे, पित्राइओने स्वाधीन छे, तथा मृत्युने स्वाधीन छे (एटले मरण पामीए त्यारे ते पोतानुं मटी जाय छे.) तेम ज ते सर्व द्रव्य अग्निने साधारण छे (एटले जेम द्रव्य तेना स्वामीनुं छे एम अग्निनुं पण छे) ए ज रीते चोर, राजा, पित्राइ अने मृत्युने पण साधारण छे. तथा ते द्रव्य शटन[1], पतन[2] अने विध्वंस (सर्वथा विनाश) पामवाना स्वभाववाळुं छे, (मरण) पछी अथवा पहेलां (जीवतां) अवश्य त्याग करवा लायक छे. तो हे मातापिता ! कोण जाणे छे के पहेलां कोण जशे ? अने पछी कोण जशे ? ते कारण माटे हुं यावत् दीक्षा ग्रहण करवा इच्छुं छुं."

मू०—तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो जाहे नो संचाएइ मेहं कुमारं बहूहिं विसयाणुलोमाहिं आघवणाहि य पन्नवणाहि य संनवणाहि य विन्नवणाहि य आघवित्तए वा पन्नवित्तए वा सन्नवित्तए वा विन्नवित्तए वा, ताहे विसयपडिकूलाहिं संजमभउव्वेयकारियाहिं पन्नवणाहिं

१ अत्यंत संभाळ राख्या छता वस्त्रादिक सडी जाय छे. २ वर्णादिकनो विनाश थाय छे.

पन्नवेमाणा एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारना मातापिता ज्यारे मेघकुमारने विषयने अनुकूळ एवी घणी आख्यापना (सामान्य रीते प्रतिपादन करनारी वाणी) वडे, प्रज्ञापना (विशेष कहेवानी वाणी) वडे, संज्ञापना (संबोध करनारी वाणी) वडे, तथा विज्ञापना (विनंतिवाळी वाणी) वडे सामान्यथी कहेवाने, विशेषथी कहेवाने, संबोध करवाने तथा विनंति करवाने समर्थ (शक्तिमान) न थया, त्यारे विषयने प्रतिकूळ तथा संयमने विषे भय अने उद्वेगने करनारी (संयमनुं दुष्करपणुं कहेनारी) एवी प्रज्ञापना (वाणी) वडे प्रज्ञापन करवा माटे (जणाववा माटे) आ प्रमाणे बोल्या.

मू०–" एस णं जाया ! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवलिए पडिपुन्ने णेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे, अहीव एगंतदिट्ठीए, खुरो इव एगंतधाराए, लोहमया इव जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव निरस्साए, गंगा इव महानदी पडिसोयगमणाए, महासमुद्दो इव भुयाहिं दुत्तरे, तिक्खं चंकमियव्वं, गरुअं लंबेयव्वं, असिधार व्व संचरियव्वं । णो य खलु कप्पति जाया ! समणाणं निग्गंथाणं आहाकम्मिए वा उद्देसिए वा कीयगडे वा ठवियए वा रइयए वा दुब्भिक्खभत्ते वा कंतारभत्ते वा वद्दलियाभत्ते वा

गिलाणभत्ते वा मूलभोयणे वा कंदभोयणे वा फलभोयणे वा बीयभोयणे वा हरियभोयणे वा भोत्तए वा पायए वा । तुमं च णं जाया ! सुहसमुचिए णो चेव णं दुहसमुचिए, णालं सीयं णालं उण्हं णालं खुहं णालं पिवासं णालं वाइयपित्तियसिंभियसंनिवाइयविविहे रोगायंके उच्चावए गामकंटए बावीसं परीसहोवसग्गे उदिन्ने सम्मं अहियासित्तए । भुंजाहि ताव जाया ! माणुस्सए कामभोगे, ततो पच्छा भुत्तभोगी समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वतिस्ससि ”।

अर्थ—“ हे पुत्र ! आ निर्ग्रंथ प्रवचन सत्य (सत्पुरुषने हितकारक) छे, अनुत्तर (सर्वोत्तम) छे, कैवलिक एटले अद्वितीय छे अथवा केवलज्ञानीए प्ररूपेलुं छे, प्रतिपूर्ण एटले मोक्षने पमाडनारा गुणोवडे भरेलुं छे, नैयायिक एटले मोक्ष-प्रत्ये लइ जवाना स्वभाववाळुं छे अथवा प्रत्यक्षादिक प्रमाणथी न्यायसिद्ध छे अर्थात् मोक्षने पमाडनारुं छे, संशुद्ध एटले समस्त प्रकारे शुद्ध (कलंक रहित) छे, शल्यकर्त्तन एटले मायादिक शल्यनो नाश करनारुं छे, सिद्धिमार्ग एटले हितार्थनी प्राप्तिनो मार्ग छे, मुक्तिमार्ग एटले पापकर्मना नाशनो उपाय छे, निर्याणमार्ग एटले निरुपम यान (प्रयाण) रूप जे सिद्धिक्षेत्र तेनो मार्ग छे, ए ज प्रमाणे निर्वाणनो मार्ग छे एटले समग्र कर्म रहित एकांत सुखवाळा मोक्षनो मार्ग छे, सर्व दुःखो क्षीण करवानो मार्ग एटले उपाय छे, जेम सर्प पोतानुं भक्ष्य ग्रहण करवामां निश्चळ दृष्टि राखे छे तेम आ प्रवचनमां निश्चळ दृष्टि राखवानी छे, आ प्रवचन सजायानी जेम एक धारवाळुं छे एटले बीजी धारतुल्य अपवाद मार्गनी

क्रियानो अभाव छे, आ प्रवचन लोढाना चणा चाववा तुल्य छे एटले पाळवुं दुष्कर छे, वेळूना कोळीयानी जेम स्वाद रहित[1] छे, आ प्रवचननुं पालन करवुं ते गंगा नामनी महानदीने सामे पूरे तरवा जेवुं दुष्कर छे, बे भुजावडे महासमुद्र तरवानी जेम न तरी शकाय तेवुं छे, तीक्ष्ण खड्गादिकने आक्रमण करवा जेवुं, महा शिला जेवा भारे पदार्थने अवलंबन करवा जेवुं (कंठे बांधवा जेवुं) अने खड्गनी धार उपर चालवा जेवुं आ व्रत पाळवुं दुष्कर छे.

कारण के–हे पुत्र ! श्रमण निर्ग्रंथो (साधुओ) ने आधाकर्मिक, औद्देशिक, क्रीतकृत, स्थापित[3], रचित[4], दुर्भिक्षभक्त एटले साधुने माटे दुकाळमां रांधे ते, ए ज रीते कांतारभक्त एटले साधुने माटे अरण्यमां पकावे ते, वर्दलिकाभक्त एटले वृष्टिने लीधे उपाश्रयादिकमां आवी साधुने माटे पकावे ते, ग्लानभक्त एटले मांदो माणस साजा थवानी इच्छाथी साधुने आपे ते, विगेरे दूषित आहार लेवो कल्पतो नथी. तेम ज मूळनुं भोजन, कंदनुं भोजन, फळनुं भोजन, शालि विगेरे बीजनुं भोजन अथवा हरित भोजन एटले लीलुं स्वादिष्ट तृण विगेरेनुं भोजन, ए सर्व खावाने के पीवाने कल्पतुं नथी.

वळी हे पुत्र ! तुं सुख भोगववाने लायक छे, पण दुःख सहन करवाने लायक नथी. तुं शीत सहन करवा समर्थ नथी, उष्ण (ताप) सहन करवा समर्थ नथी, क्षुधा सहन करवा समर्थ नथी, पिपासा (तरश) सहन करवा समर्थ नथी,

१ विषय सुखना स्वादनी अपेक्षाए स्वाद रहित छे. २ श्रावक वेचातुं लइने आपे ते. ३ साधुने माटे राखी मूके ते. ४ साधुने उद्देशी मोदकना चूर्णादिकने फरीथी मोदक रूपे बनावे ते.

तेमज उदयमां आवेला वात, पित्त, कफ अने सन्निपात विगेरेना विविध रोगांतकोने, उंचा नीचा एटले विविध प्रकारना ग्रामकंटक एटले इंद्रियोने प्रतिकूल वचनोने, बावीश परिसहो अने दिव्यादिक उपसर्गोने सम्यक् प्रकारे सहन करवा तुं समर्थ नथी. तेथी करीने हे पुत्र ! तुं हमणां मनुष्य संबंधी कामभोगने भोगव, अने त्यारपछी जेणे भोग भोगव्या छे एवो तुं श्रमण भगवान महावीर स्वामीनी पासे दीक्षा ग्रहण करजे."

मू०—तते णं से मेहे कुमारे अम्मापिऊहिं एवं वुत्ते समाणे अम्मापितरं एवं वदासी—" तहेव णं तं अम्मयाओ ! जं णं तुब्भे ममं एवं वदह ' एस णं जाया ! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे० पुणरवि तं चेव जाव तओ पच्छा भुत्तभोगी समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइस्ससि ' एवं खलु अम्मयाओ ! णिग्गंथे पावयणे कीवाणं कायराणं कापुरिसाणं इहलोगपडिबद्धाणं परलोगनिप्पिवासाणं दुरणुचरे पाययजणस्स, णो चेव णं धीरस्स निच्छियववसियस्स एत्थ किं दुक्करं करणयाए ? तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइत्तए ॥ २३ ॥

१ कुष्ठ विगेरे रोग तथा तत्काळ मरण करनारा शूळ विगेरे आतंक कहेवाय छे.

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारने तेना मातापिताए आ प्रमाणे कहे सते तेणे मातापिताने आ प्रमाणे कह्युं—" हे मातापिता ! ते ते ज प्रमाणे छे के तमे जे मने आ प्रमाणे कहो छो के—' हे पुत्र ! आ निर्ग्रंथ प्रवचन सत्य छे, अनुत्तर छे, फरीने पण ते ज प्रमाणे कहेवुं यावत् त्यारपछी जेणे भोग भोगव्या छे एवो तुं श्रमण भगवान महावीर स्वामीनी पासे यावत् दीक्षा ग्रहण करजे.' परंतु हे मातापिता ! आ प्रमाणे आ निर्ग्रंथ प्रवचन क्लीब एटले मंद संघयणवाळाने, चित्तनी दृढता रहित कायर पुरुषोने, कुत्सित मनुष्योने, आ लोक संबंधी ज विषय सुखनी वांछा करनारने तथा परलोकना सुखनी वांछा नहीं करनार एवा सामान्य माणसने ज पाळवुं दुश्कर छे. पण धीर एटले साहसिक अने निश्चित व्यवसायवाळा पुरुषने आ प्रवचन पाळवुं दुष्कर नथी ज. अहीं करणताने विषे एटले संयमयोगने विषे शुं दुष्कर छे ? कांइ ज दुष्कर नथी. तेथी हे मातापिता ! तमोए आज्ञा आप्यो सतो हुं श्रमण भगवान महावीर स्वामीनी पासे यावत् दीक्षा लेवा इच्छुं छुं." २३

मू०—तते णं तं मेहं कुमारं अम्मापियरो जाहे नो संचाइंति बहूहिं विसयाणुलोमाहि य विसयपडिकूलाहि य आघवणाहि य पन्नवणाहि य सन्नवणाहि य विन्नवणाहि य आघवित्तए वा पन्नवित्तए वा सन्नवित्तए वा विन्नवित्तए वा, ताहे अकामए चेव मेहं कुमारं एवं वदासी—" इच्छामो ताव जाया ! एगदिवसमवि ते रायसिरिं पासित्तए "।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारने मातापिता ज्यारे विषयोने अनुकूळ अने विषयोने प्रतिकूळ घणी आघवणा (सामान्य

वाणी) वडे, प्रज्ञापना (विशेष वाणी) वडे, संज्ञापना (बोध करनारी वाणी) वडे तथा विज्ञापना (विनंतिवाळी वाणी) वडे सामान्यथी कहेवाने, विशेषथी कहेवाने, संबोध करवाने अने विनंति करवाने समर्थ (शक्तिमान) न थया, त्यारे इच्छा विना ज मेघकुमार प्रत्ये आ प्रमाणे बोल्या—" हे पुत्र ! एक दिवस पण तारी राज्यलक्ष्मी जोवाने अमे इच्छीए छीए " (तुं एक दिवस पण राज्यलक्ष्मी भोगव एम अमे इच्छीए छीए.)

मू०—तते णं से मेहे कुमारे अम्मापितरमणुवत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठति ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमार मातापिताने अनुसरतो सतो मौन रह्यो.

मू०—तते णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—" खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मेहस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेह " ।

अर्थ—त्यारपछी ते श्रेणिक राजाए कौटुंबिक (सेवक) पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रियो ! मेघकुमारने माटे मोटा प्रयोजनवाळी, मोटा मूल्यवाळी अने महा पूज्य (अथवा मोटाने लायक) विपुल राज्याभिषेकनी सामग्री शीघ्रपणे प्राप्त करो-तैयार करो. "

मू०—तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव ते वि तहेव उवट्ठवेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषो (ते अंगीकार करी) यावत् तेओए पण ते ज प्रमाणे सर्व सामग्री तैयार करी.

मू०—तते णं से सोणिए राया बहूहिं गणणायगदंडणायगेहि य जाव संपरिवुडे मेहं कुमारं अट्ठसएणं सोवन्नियाणं कलसाणं एवं रुप्पमयाणं कलसाणं सुवन्नरुप्पमयाणं कलसाणं मणिमयाणं कलसाणं सुवन्नमणिमयाणं कलसाणं रुप्पमणिमयाणं कलसाणं सुवन्नरुप्पमणिमयाणं कलसाणं भोमेज्जाणं कलसाणं सव्वोदएहिं सव्वमट्टियाहिं सव्वपुप्फेहिं सव्वगंधेहिं सव्वमल्लेहिं सव्वोसहिहि य सिद्धत्थएहि य सव्विड्ढीए सव्वजुईए सव्वबलेणं जाव दुंदुभिनिग्घोसणादितरवेणं महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचति, अभिसिंचित्ता करयल जाव कट्टु एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते श्रेणिक राजा घणा गणनायक अने दंडनायक विगेरे वडे यावत् परिवर्या सता मेघकुमारने एक सो आठ सुवर्णना कळश, ए ज प्रमाणे एक सो आठ रुपाना कळश, एक सो आठ सुवर्ण अने रुपाना कळश, एक सो आठ मणिना कळश, एक सो आठ सुवर्ण अने मणिना कळश, एक सो आठ रुपा अने मणिना कळश, एक सो आठ सुवर्ण रुपा अने मणिना कळश तथा एक सो आठ मृत्तिकाना कळश एम कुल आठ सो चोसठ कळशोमां सर्व जातनां जळ भरीने तथा सर्व जातनी मृत्तिका, सर्व जातना पुष्पो, सर्व जातना गंधो, सर्व जातनी माळाओ, सर्वौषधि अने सिद्धार्थक (सरसव) वडे तेने परिपूर्ण करीने सर्व समृद्धिवडे, सर्व द्युति (कांति) वडे अने सर्व चतुरंग बळ (सैन्य) वडे यावत् दुंदुभिना निर्घोषना प्रतिध्वनि शब्दवडे उंचा प्रकारना राज्याभिषेकवडे अभिषेक कर्यो, अभिषेक करीने श्रेणिक राजा बे

हाथ जोडी यावत् आ प्रमाणे बोल्या.—

मू०—" जय जय णंदा ! जय जय भद्दा ! जयणंदा ! भद्दं ते, अजियं जिणेहि, जियं पालयाहि, जियमज्झे वसाहि, अजियं जिणेहि सत्तुपक्खं, जियं च पालेहि मित्तपक्खं, जाव भरहो इव मणुयाणं रायगिहस्स नगरस्स अन्नेसिं च बहूणं गामागरनगर जाव संनिवेसाणं आहेवच्चं जाव विहराहि " त्ति कट्टु जयजयसद्दं पउंजंति ।

अर्थ—" हे नंदे ! तमे जय पामो, जय पामो. हे भद्रे ! तमे जय पामो, जय पामो. हे जगन्नंद ! तमारुं भद्र (कल्याण) थाओ. तमे नहीं जीतेलाने जीतो. जीतेलानुं पालन करो. जित (आचारने पालन करनार) नी मध्ये निवास करो. तमे नहीं जीतेला शत्रुना पक्षने जीतो. जीतेला मित्रना पक्षनुं पालन करो. यावत् मनुष्योनी मध्ये भरत राजानी जेम राजगृह नगरनुं तथा बीजा पण घणा गाम, आकर, नगर विगेरे यावत् संनिवेश पर्यंत सर्व राज्यनुं अधिपतिपणुं विगेरे पाळता सता यावत् सुखे सुखे विचरो. " आ प्रमाणे कही श्रेणिक राजाए जय जय शब्द कर्यो.

मू०—तते णं से मेहे राया जाते महया जाव विहरति ।

---

१ समृद्धिवाळा अथवा समृद्धिने आपनार ! २ कल्याणकारक ! ३ जगतने आनंद आपनार ! ४ शत्रुने.

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमार राजा थयो सतो महा हिमवंतनी जेम शोभतो सतो यावत् विचरवा लाग्यो.

मू०—तते णं तस्स मेहस्स रन्नो अम्मापितरो एवं वदासी—" भण जाया ! किं दलयामो ? किं पयच्छामो ? किं वा ते हियइच्छिए सामत्थे (मंते) ?।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघ राजाने मातापिताए आ प्रमाणे कह्युं—" हे पुत्र ! तुं कहे. अमे तारा कया अनिष्टनो नाश करीए ? अथवा तारा इष्ट जनने अमे शुं आपीए ? तथा तने ज अमे शुं आपीए ? तारा हृदयमां इच्छेलो शो विचार छे ? जे होय ते कहे. "

मू०—तते णं से मेहे राया अम्मापितरो एवं वदासी—" इच्छामि णं अम्मयाओ ! कुत्तियावणाओ रयहरणं पडिग्गहगं च उवणेह, कासवयं च सद्दावेह "।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघ राजाए मातापिताने आ प्रमाणे कह्युं—" हे मातापिता ! हुं इच्छुं छुं के कुत्रिकापण[1] थकी रजोहरण अने पात्रां लावो. तथा काश्यपने एटले हजामने बोलावो. "

मू०—तते णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वदासी—" गच्छह

१ त्रण विश्वनी सर्व वस्तु मळे तेवी देव अधिष्ठित दुकान.

णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सिरिघरातो तिन्नि सयसहस्सातिं गहाय दोहिं सयसहस्सेहिं कुत्तियावणाओ रयहरणं पडिग्गहगं च उवणेह, सयसहस्सेणं कासवयं सद्दावेह "।

अर्थ—त्यारपछी ते श्रेणिक राजाए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ. श्रीगृह (खजाना) मांथी त्रण लाख सोनामहोर लइने तेमांथी बे लाख सोनामहोरवडे कुत्रिकापणथकी रजोहरण अने पात्रां लावो, तथा एक लाख सोनामहोर आपवावडे हजामने बोलावो."

मू०—तते णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा सिरिघराओ तिन्नि सयसहस्सातिं गहाय कुत्तियावणाओ दोहिं सयसहस्सेहिं रयहरणं पडिग्गहं च उवणेंति, सयसहस्सेणं कासवयं सद्दावेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषो श्रेणिक राजाए आ प्रमाणे कह्या सता हृष्ट तुष्ट थइ श्रीगृह (भंडार) मांथी त्रण लाख सोनामहोर लइने कुत्रिकापणथकी बे लाख सोनामहोरवडे रजोहरण अने पात्रां लाव्या, तथा एक लाख सोनामहोरवडे तेमणे नापितने बोलाव्यो.

मू०—तते णं से कासवए तेहिं कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविए समाणे हट्ठे जाव हयहियए ण्हाते

कतबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसातिं वत्थाइं मंगलाइं पवरपरिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकितसरीरे, जेणेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छाति, उवागच्छित्ता सेणियं रायं करयलमंजलिं कट्टु एवं वयासी—" संदिसह णं देवाणुप्पिया ! जं मए करणिज्जं " ।

अर्थ—त्यारपछी ते नापित ते कौटुंबिक पुरुषोए बोलाव्यो सतो हृष्ट तुष्ट यावत् हृदयमां आनंद पाम्यो. पछी तेणे स्नान कर्युं, बलिकर्म (गृहदेवतानुं पूजन) कर्युं, मषीतिलकादिक कौतुक अने दहीं दुर्वा विगेरे मंगल तथा दुष्ट स्वप्नना निवारणरूप प्रायश्चित्त कर्युं, शुद्ध (धोयेलां), राजसभामां प्रवेश करवा योग्य, मांगलिक अने श्रेष्ठ वस्त्रो पहेर्यां, थोडा अने महा मूल्यवाळा आभरणोवडे शरीरने अलंकृत कर्युं. आ प्रमाणे करी ते नापित ज्यां श्रेणिक राजा हता, त्यां आव्यो. आवीने श्रेणिक राजा प्रत्ये बे हाथवडे अंजळी करी आ प्रमाणे बोल्यो—" हे देवानुप्रिय ! जे मारे करवानुं होय तेनी आज्ञा आपो."

मू०—तते णं से सेणिए राया कासवयं एवं वदासी—" गच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिया ! सुरभिणा गंधोदएणं णिक्के हत्थपाए पक्खालेह, सेयाए चउप्फालाए पोत्तीए मुहं बंधेत्ता मेहस्स कुमारस्स चउरंगुलवज्जे णिक्खमणपाउग्गे अग्गकेसे कप्पेहि " ।

अर्थ—त्यारपछी ते श्रेणिक राजाए ते नापितने आ प्रमाणे कह्युं.—" हे देवानुप्रिय ! तुं जा अने सुगंधी गंधोदकवडे सर्वथा निरू (मळ रहित) थाय तेम तारा हाथ पगने धो, पछी चार पडवाळा श्वेत वस्त्रवडे मुख बांधीने (मुखकोश करीने) मेघकुमारना मस्तकपर रहेला केशने दीक्षाने योग्य एवा चार आंगळ बाकी राखीने बीजा सर्व कापी नांख -काढी नांख. "

मू०—तते णं से कासवए सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ते समाणे हट्ठ तुठ जाव हियए जाव पडिसुणेति, पडिसुणित्ता सुरभिणा गंधोदएणं हत्थपाए पक्खालेति, पक्खालित्ता सुद्धवत्थेणं मुहं बंधति, बंधित्ता परेणं जत्तेणं मेहस्स कुमारस्स चउरंगुलवज्जे णिक्खमणपाउग्गे अग्गकेसे कप्पति।

अर्थ—त्यारपछी ते नापित श्रेणिक राजाए आ प्रमाणे कह्ये सते हृष्ट तुष्ट यावत् हृदयमां आनंद पाम्यो. यावत् श्रेणिक राजानुं वचन तेणे अंगीकार कर्युं, अंगीकार करी सुगंधी गंधोदकवडे हाथ पग धोया, धोइने शुद्ध वस्त्रवडे मुख बांध्युं, बांधीने अत्यंत यतनावडे मेघकुमारना मस्तकपरना केश दीक्षाने लायक एवा चार आंगळ बाकी राखी बीजा सर्व कापी नांख्या.

मू०—तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स माया महरिहेणं हंसलक्खणेणं पडसाडएणं अग्गकेसे पडिच्छति, पडिच्छित्ता सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेति, पक्खालित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं

चच्चाओ दलयाति, दलइत्ता सेयाए पोतीए बंधेति, बंधित्ता रयणसमुग्गयंसि पक्खिवाति, पक्खिवित्ता मंजूसाए पक्खिवाति, पक्खिवित्ता हारवारिधारसिंदुवाराछिन्नमुत्तावलिपगासाइं अंसूइं विणिम्मुयमाणी विणिम्मुयमाणी रोयमाणी रोयमाणी कंदमाणी कंदमाणी विलवमाणी विलवमाणी एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारनी माताए ते अग्रकेशने महा मूल्यवाळा अने हंसना चित्रवाळा उज्वळ वस्त्रमां ग्रहण कर्या, ग्रहण करी तेने सुगंधी गंधोदकवडे धोया, धोइने रसवाळा गोशीर्ष चंदनवडे तेनी पूजा करी—छांटा नांख्या, छांटा दइ श्वेत वस्त्रमां बांध्या, बांधी रत्नना दाभडामां नांख्या, नांखी ते दाभडो पेटीमां मूक्यो, मूकी जळधारा जेवा, सिंदूवारना पुष्प जेवा अने तुटेला मोतीना हार जेवा उज्वळ अश्रुने मूकती मूकती, रोती रोती, आक्रंद करती करती अने विलाप करती करती ते आ प्रमाणे बोली.—

मू०—" एस णं अम्हं मेहस्स कुमारस्स अब्भुदएसु य उस्सवेसु य पसवेसु य तिहीसु य छणेसु य जन्नेसु य पव्वणीसु य अपच्छिमे दरिसणे भविस्सइ " त्ति कट्टु उस्सीसामूले ठवेति ।

अर्थ—" आ मेघकुमारना केशनुं दर्शन अमने राज्यादिकना लाभरूप अभ्युदयने विषे, उत्सवने विषे एटले प्रिय

जनना समागमने विषे, प्रसवने विषे एटले पुत्रजन्मने विषे, कामत्रयोदशी विगेरे तिथिओने विषे, इंद्र महोत्सवादिक महोत्सवोने विषे, यज्ञने विषे एटले नागादिकनी पूजाने विषे तथा कार्तिकी पूर्णिमा विगेरे पर्वणीने विषे छेल्ला दर्शनरूप थशे, एटले केश रहित थयेला आ मेघकुमारनुं दर्शन छेल्ला दर्शनरूप थशे. अथवा आ केशना दर्शन करवाथी वारंवार मेघकुमारनुं दर्शन थशे (ते याद आपशे). " एम धारीने माताए ते केशनी पेटी पोताना ओशिकाना मूळमां (ओशिका नीचे) स्थापन करी.

मू०—तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापितरो उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेंति । मेहं कुमारं दोच्चं पि तच्चं पि सेयपीयएहिं कलसेहिं ण्हावेंति, ण्हावित्ता पम्हलसुकुमालाए गंधकासाइयाए गायातिं लूहेंति, लूहित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायातिं अणुलिंपति, अणुलिंपित्ता नासानीसासवायवोज्झं जाव हंसलक्खणं पडगसाडगं नियंसेंति, नियंसित्ता हारं पिणद्धंति, पिणद्धित्ता अद्धहारं पिणद्धंति, पिणद्धित्ता एगावलिं मुत्तावलिं कणगावलिं रयणावलिं पालंबं पायपलंबं कडगाइं तुडिगाइं केउरातिं अंगयातिं दसमुद्दियाणंतयं कडिसुत्तयं कुंडलातिं चूडामणिं रयणुक्कडं मउडं पिणद्धंति, पिणद्धित्ता दिव्वं सुमणदामं पिणद्धंति, पिणद्धित्ता दद्दुरमलयसुगंधिए गंधे पिणद्धंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारना मातापिताए उत्तरापक्रमण एटले उत्तर दिशाना मुखवाळुं (उत्तराभिमुख) सिंहासन रचाव्युं. पछी मेघकुमारने बे वार त्रण वार श्वेत-पीत (रुपा अने सोनाना) कळशोवडे नवराव्यो, नवरावीने पक्ष्मल (दसीओवाळा) अने अति कोमळ गंधकाषाय वस्त्रवडे तेनां गात्रो लुंछ्यां, लुंछीने रसवाळा गोशीर्षचंदनवडे तेनां गात्रोपर विलेपन कर्युं. विलेपन करीने नासिकाना निःश्वासना वायुवडे उडी जाय एवा यावत् हंसना जेवा लक्षण-वाळा (एटले हंसना चित्रवाळा अथवा अति उज्ज्वळ अने कोमळ) पटशाटक (वस्त्र) पहेराव्या, पहेरावीने हार पहेराव्यो. ते पहेरावीने अर्धहार पहेराव्यो, ते पहेरावीने एकावली, मुक्तावली, कनकावली, रत्नावली, प्रालंब (झुंमणां), पादप्रलंब (पग सुधी पहोंचे तेवा अलंकार), कटक (कडां), तुटिक (बाहुना बेरखा), केयूर (बाजुबंध), अंगद (बाहुनो अलंकार), दश आंगळीनी दश मुद्रिका, कटिसूत्र (कंदोरो), कुंडळ, चूडामणि तथा रत्नजडित मुगट ए सर्व अलंकारो पहेराव्या, पहेरावीने दिव्य (मनोहर) पुष्पनी माळा पहेरावी, पहेरावीने दर्दरमां पकावेला चंदनना सुगंधि गंध (तेल) तेना शरीर पर लगाव्यां.

मू०—तते णं तं मेहं कुमारं गंठिमवेढिमपूरिमसंघाइमेण चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खगंपि व

१ उत्तर दिशा तरफथी उतरी शकाय तेवुं. राज्याभिषेक वखते पूर्वाभिमुख होय छे. २ सुगंधी कषायला रंगवडे रंगेला.

१ माटीना घडाने मुखे वस्त्र बांधी अग्निना तापे तेल पाडवामां आवे छे ते.

अलंकितविभूसियं करेंति।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारने सुतरवडे गुंथेली, पुष्पादिकवडे वींटेली, वांसनी सळी विगेरेथी पूरेली तथा परस्पर वस्तुना संयोगथी संघातरूप करेली एम चार प्रकारनी पुष्पमाळावडे कल्पवृक्षनी जेम अलंकृत तथा विभूषित कर्यो.

मू०—तते णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दाविता एवं वयासी—" खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखंभसयसन्निविट्ठं लीलट्ठियसालभंजियागं ईहामिगउसभतुरयनरमगर-विहगवालगकिन्नररुरुसरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्तं घंटावलिमहुरमणहरसरं सुभकंतद-रिसणिज्जं निउणोचियमिसिमिसिंतमणिरयणघंटियाजालपरिखित्तं खंभुग्गयवइरवेतियापरिगयाभि-रामं विज्जाहरजमलजंतजुत्तंपि व अच्चीसहस्समालणीयं रूवगसहस्सकलियं भिसमाणं भिब्भिसमाणं चक्खुलोयणलेस्सं सुहफासं सस्सिरीयरूवं सिग्घं तुरितं चवलं चेतियं पुरिससहस्सवाहिणीं सीयं उवट्ठवेह "।

अर्थ—त्यारपछी ते श्रेणिक राजाए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं.—" हे देवानुप्रियो ! तमे शीघ्रपणे आवी शिबिका करीने लावो. केवी ? जे अनेक स्तंभोना सेंकडाए करीने सहित होय, जेमां क्रीडा करती

पुतळीओ रहेली होय, जे ईहामृग, वृषभ, अश्व, मनुष्य, मगर, पक्षी, व्याल (सर्प), किन्नर (देव विशेष), रुरु (कालियार मृग), सरभ (अष्टापद मृग), चमरी गाय, कुंजर (हाथी), वनलता अने पद्मलता विगेरेना चित्रोथी चितरेली होय, जेमां घंटा (घुघरा) ना समूहना मधुर अने मनोहर शब्द थता होय, जे शुभ (कल्याणकारक), कांत (मनोहर) अने दर्शनीय (जोवा लायक) होय, जेमां निपुण पुरुषे (कारीगरे) बनावेल देदीप्यमान मणि अने रत्ननी घुघरीओना समूह मूकेला होय, जे स्तंभपर रहेली वज्रनी वेदिका सहित होवाथी मनोहर देखाती होय, जे चितरेला विद्याधरोना युगलोथी युक्त होय, चितरेला सूर्यना हजार किरणोवडे शोभित होय, आ प्रमाणे हजारो रूपो (चित्रो) सहित, देदीप्यमान, अत्यंत देदीप्यमान, नेत्रोवडे जोतां तृप्ति न थाय एवी, सुख स्पर्शवाळी, शोभा सहित रूप (चित्रो) वाळी, शीघ्र (उतावळी), त्वरित (अत्यंत उतावळी), चपळतावाळी, अत्यंत चपळतावाळी अने हजार पुरुषोए वहन करेली (उपाडेली) एवी शिबिका तैयार करी अहीं लावो.

मू०—तते णं ते कोडुंबियपुरिसा हट्ठ तुट्ठा जाव उवट्ठवेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषो हृष्ट तुष्ट थइ यावत् तेवी शिबिका करी लाव्या.

मू०—तते णं से मेहे कुमारे सीयं दुरुहति, दुरुहित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमार शिबिका उपर चड्यो, चडीने श्रेष्ठ सिंहासन उपर पूर्व दिशा तरफ मुख राखी बेठो.

मू०—तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स माया ण्हाता कयबलिकम्मा जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा सीयं दुरुहति, दुरुहित्ता मेहस्स कुमारस्स दाहिणे पासे भद्दासणांसि निसीयति ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारनी माताए स्नान कर्युं, बलिकर्म (गृह देवतानुं पूजन) कर्युं, यावत् थोडा अने महा मूल्यवाळा आभूषणोवडे शरीरने अलंकृत करी ते शिबिका उपर चडी, चडीने मेघकुमारनी दक्षिण (जमणी) बाजुए भद्रासन उपर बेठी.

मू०—तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अंबधाती रयहरणं च पडिग्गहगं च गहाय सीयं दुरुहति, दुरुहित्ता मेहस्स कुमारस्स वामे पासे भद्दासणांसि निसीयति ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारनी अंबधात्री (दूध पानारी माता) रजोहरण अने पात्रां ग्रहण करी शिबिका उपर चडी, चडीने मेघकुमारनी वाम (डावी) बाजु भद्रासनपर बेठी.

मू०—तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पिट्ठतो एगा वरतरुणी सिंगारागारचारुवेसा संगयगयहसियभणियचेट्ठियविलाससंलावुल्लावनिउणजुत्तोवयारकुसला आमेलगजमलजुयलवट्टियअब्भुन्नयपीणरतियसंठितपओहरा हिमरययकुंदेंदुपगासं सकोरेंटमल्लदामधवलं आयवत्तं गहाय सलीलं ओहा-

रेमाणी ओहारेमाणी चिट्ठति ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारनी पाछळ शृंगार रसना घररूप, मनोहर वेषवाळी, सुंदर गति, सुंदर हास्य, सुंदर वचन, सुंदर चेष्टा, सुंदर विलास, (नेत्रनो विकार), सुंदर संलाप (परस्पर वातचीत) अने सुंदर उल्लाप (वर्णन) करवामां निपुण एवी, योग्य उपचार करवामां कुशळ एवी तथा परस्पर मळेला, सम श्रेणिए रहेला, गोळ, उंचा, पुष्ट, प्रीतिने आपनारा अने विशिष्ट (उत्तम) संस्थानवाळा स्तनयुगलने धारण करनारी एक श्रेष्ठ स्त्री हिम, रुपुं, कुंदपुष्प अने चंद्र जेवा प्रकाशवाळा तथा कोरंट पुष्पना गुच्छा सहित पुष्पमाळा जेमां शोभती हती एवा उज्वळ (श्वेत) छत्रने धारण करी लीला सहित डोलती डोलती उभी रही.

मू०—तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स दुवे वरतरुणीओ सिंगारागारचारुवेसाओ जाव कुसलाओ सीयं दुरुहंति, दुरुहित्ता मेहस्स कुमारस्स उभओ पासिं नाणामणिकणगरयणमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाओ चिल्लियाओ सुहुमवरदीहवालाओ संखकुंददगरयअमयमहियफेणपुंजसन्निगासाओ चामराओ गहाय सलीलं ओहारेमाणीओ ओहारेमाणीओ चिट्ठंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारनी समीपे शृंगारना घररूप, मनोहर वेषवाळी, यावत् युक्त उपचार करवामां कुशळ बे श्रेष्ठ स्त्रीओ शिबिकापर चडी, चडीने मेघकुमारनी बन्ने बाजुए विविध प्रकारना मणि, कनक (पीत सुवर्ण), रत्न अने

महा योग्य तपनीय (रक्तवर्ण सुवर्ण) मय, उज्वळ अने विचित्र दांडीवाळा, देदीप्यमान, सूक्ष्म श्रेष्ठ अने लांबा वाळवाळा, तथा शंख, कुंदपुष्प, जळना कणीया अने मथन करेला अमृतना फीणना समूह जेवा (श्वेत) बे चामरो धारण करी लीला सहित वींजती वींजती उभी रही.

मू०—तते णं तस्स मेहकुमारस्स एगा वरतरुणी सिंगारा० जाव कुसला सीयं जाव दुरुहति, दुरुहित्ता मेहस्स कुमारस्स पुरतो पुरत्थिमेणं चंदप्पभवइरवेरुलियविमलदंडं तालविंटं गहाय चिट्ठति।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारनी समीपे शृंगारना घररूप यावत् योग्य उपचार करवामां कुशळ एक श्रेष्ठ स्त्री शिबिकापर यावत् चडी, चडीने मेघकुमारनी पासे पूर्व दिशानी सन्मुख चंद्रकांत मणि, वज्ररत्न अने वैडूर्यरत्नमय निर्मळ दांडीवाळा वींझणाने ग्रहण करीने उभी रही.

मू०—तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स एगा वरतरुणी जाव सुरूवा सीयं दुरुहति, दुरुहित्ता मेहस्स कुमारस्स पुव्वदक्खिणेणं सेयं रययामयं विमलसलिलपुन्नं मत्तगयमहामुहाकितिसमाणं भिंगारं गहाय चिट्ठति ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारनी समीपे यावत् सुंदर रूपवाळी एक श्रेष्ठ स्त्री शिबिकापर चडी, चडीने मेघकुमारथी अग्निखूणामां श्वेतवर्णवाळा, रुपामय, निर्मळ जळथी भरेला तथा मदोन्मत्त हाथीना मोटा मुख समान आकृतिवाळा कळ-

शने ग्रहण करी उभी रही.

मू०—तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—“ खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सरिसयाणं सरिसत्तयाणं सरिसव्वयाणं एगाभरणगहितनिज्जोयाणं कोडुंबियवरतरुणाणं सहस्सं सद्दावेह ”। जाव सद्दावेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारना पिताए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं–“ हे देवानुप्रियो ! शीघ्रपणे शरीरना प्रमाणे करीने सरखा, सरखी वयवाळा, सरखी त्वचा (छवी–कांति) वाळा अने एक सरखा आभूषणोवडे सरखा वेषने ग्रहण करनारा कौटुंबिकना एक हजार श्रेष्ठ तरुण पुरुषोने बोलावो. ” ते सांभळी यावत् तेओए तेमने बोलाव्या.

मू०—तए णं कोडुंबियवरतरुणपुरिसा सेणियस्स रन्नो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठा ण्हाया जाव एगाभरणगहितणिज्जोया जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सेणियं रायं एवं वदासी–“ संदिसह णं देवाणुप्पिया ! जं नं (णं) अम्हेहिं करणिज्जं ”।

अर्थ—त्यारपछी कौटुंबिकना (सेवक जातिना) श्रेष्ठ तरुण पुरुषोने श्रेणिक राजाना कौटुंबिक पुरुषोए बोलाव्या

सता ते हर्ष पाम्या, तेओ स्नान करी यावत् एक सरखा आभूषणोवडे सरखा वेषने ग्रहण करी, ज्यां श्रेणिक राजा हता त्यां आव्या, आवीने तेमणे श्रेणिक राजाने आ प्रमाणे कह्युं-"हे देवानुप्रिय ! जे अमारे करवा लायक होय ते फरमावो."

मू०-तते णं से सेणिए तं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं एवं वदासी-" गच्छह णं देवाणुप्पिया ! मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं परिवहेह "।

अर्थ—त्यारपछी ते श्रेणिक राजाए ते एक हजार कौटुंबिकना श्रेष्ठ तरुण पुरुषोने आ प्रमाणे कह्युं-"हे देवानुप्रियो! तमे जाओ, अने हजार पुरुषोए वहन करी शकाय तेवी मेघकुमारनी शिबिकाने वहन करो."

मू०-तते णं तं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं सेणिएणं रन्ना एवं वुत्तं संतं हट्ठं तुट्ठं तस्स मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं परिवहति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिकना हजार श्रेष्ठ तरुण पुरुषो श्रेणिक राजाए आ प्रमाणे कह्या सता हृष्ट तुष्ट थया, अने हजार पुरुषोथी वहन करी शकाय तेवी ते मेघकुमारनी शिबिकाने वहन करवा लाग्या.

मू०-तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरुढस्स समाणस्स इमे अट्ठ-ट्ठमंगलया तप्पढमयाए पुरतो अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया । तं जहा-सोत्थिय १ सिरिवच्छ २ णंदि-

यावत्त ३ वद्धमाणग ४ भद्दासण ५ कलस ६ मच्छ ७ दप्पण ८ जाव बहवे अत्थत्थिया जाव ताहिं इट्ठाहिं जाव अणवरयं अभिणंदंता य अभिथुणंता य एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमार हजार पुरुषोए वहन करी शकाय तेवी शिविकापर आरूढ थये सते तेनी आगळ सौथी प्रथम आ अष्टमंगळ अनुक्रमे चाल्या (चलावचामां आव्या). ते आ प्रमाणे—स्वस्तिक (साथीओ) १, श्रीवत्स २, नंदावर्त ३, वर्धमान ४, भद्रासन ५, कळश ६, मत्स्य ७, अने दर्पण ८. उपरांत बीजा धनना अर्थीओ (याचको) विगेरे यावत् तेवी इष्ट विगेरे विशेषणवाळी वाणीवडे यावत् निरंतर प्रशंसा करता अने स्तुति करता आ प्रमाणे बोल्या—

मू०—" जय जय णंदा ! जय जय भद्दा ! जयणंदा ! भद्दं ते, अजियाइं जिणाहि इंदियाइं, जियं च पालेहि समणधम्मं जियविग्घोऽविय वसाहि तं देव ! सिद्धिमज्झे, निहणाहि रागदोसमल्ले तवेणं धितिधणियबद्धकच्छे, मद्दाहि य अट्ठकम्मसत्तू झाणेणं उत्तमेणं सुक्केणं अप्पमत्तो, पावय वितिमिरमणुत्तरं केवलं नाणं, गच्छ य मोक्खं परमपयं सासयं च अयलं हंता परीसहचमुं णं अभीओ परीसहोवसग्गाणं, धम्मे ते अविग्घं भवउ " त्ति कट्टु पुणो पुणो मंगलजयजयसद्दं पउंजंति।

१ सरावलुं अथवा पुरुषपर आरूढ थयेलो पुरुष, अथवा पाच साथीया, अथवा विशेष प्रकारनो प्रासाद.

अर्थ—"हे नंदं ! तमे जय पामो, जय पामो. हे भद्र (कल्याणकारक) ! तमे जय पामो, जय पामो. हे जगनंदं ! तमारुं भद्र (कल्याण) थाओ. नहीं जीतेला पांचे इंद्रियोने तमे जीतो, अने जीतेला (आत्माने आधीन करेला) साधुधर्मनुं पालन करो, तथा वळी हे देव ! तमे विघ्नोने जीती सिद्धिने विषे वसो. धैर्यवडे अत्यंत केड बांधीने तमे बाह्य अभ्यंतर तपवडे राग द्वेषरूपी मल्लने हणो. प्रमाद रहित थयेला तमे उत्तम शुक्लध्यानवडे आठ कर्मरूपी शत्रुओनुं मर्दन करो, अज्ञानरूपी अंधकारना समूह रहित अने सर्वोत्तम एवा केवळज्ञानने तमे प्राप्त करो, परीसहोरूपी सेनाने हणनारा तथा परीसह अने उपसर्गथी भय रहित एवा तमे शाश्वत अने अचळ परमपदरूप मोक्षने पामो. तमारा धर्ममां तमने अविघ्न (विघ्नरहितपणुं) हो." आ प्रमाणे कही तेओ वारंवार मांगलिक जय जय शब्द बोलवा लाग्या.

मू०—तते णं से मेहे कुमारे रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव गुणसेलए चेतिए तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुहति ॥ २४ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमार राजगृह नगरना मध्य भागवडे नीकळ्यो, नीकळीने ज्यां गुणशैल चैत्य हतुं त्यां आव्यो, आवीने हजार पुरुषोए वहन करेली शिबिकामांथी नीचे उतर्यो. २४

१ समृद्धिवाळा अथवा समृद्धि आपनार. २ जगतने आनंद आपनार.

मू०—तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो मेहं कुमारं पुरओ कट्टु जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेंति, करित्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारना मातापिता मेघकुमारने आगळ करीने जे ठेकाणे श्रमण भगवान महावीर स्वामी हता त्यां आव्या, आवीने तेमणे श्रमण भगवान महावीर स्वामीने त्रणवार जमणी बाजुथी प्रदक्षिणा करी. प्रदक्षिणा करीने भगवानने वंदना करी तथा नमस्कार कर्या, वांदी नमस्कार करी आ प्रमाणे बोल्या.—

मू०—एस णं देवाणुप्पिया ! मेहे कुमारे अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते जाव जीवियऊसासए हियणंदिजणए उंबरपुप्फं पिव दुल्लहे सवणयाए किमंग पुण दरिसणयाए ? से जहानामए उप्पलेति वा पउमेति वा कुमुदेति वा पंके जाए जले संवड्ढिए, नोवलिप्पइ पंकरएणं, णोवलिप्पइ जलरएणं, एवामेव मेहे कुमारे कामेसु जाए भोगेसु संवुड्ढे, नोवलिप्पति कामरएणं, नोवलिप्पति भोगरएणं, एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गे भीए जम्मणजरमरणाणं इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वतित्तए । अम्हे णं देवाणुप्पियाणं सिस्सभिक्खं दलयामो

पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सभिक्खं ।

अर्थ—" हे देवानुप्रिय ! आ मेघकुमार अमारे एक ज पुत्र छे. ते अमने इष्ट छे, कांत छे, जीवितरूप छे, उच्छ्वासरूप छे, अमारा हृदयने आनंद उपजावनार छे, उंबराना पुष्पनी जेम तेनुं नामश्रवण पण दुर्लभ छे, तो दर्शन दुर्लभ होय तेमां शुं कहेवुं ? जेम उत्पल (काळुं कमळ) पद्म (सूर्य विकासी कमळ) अथवा कुमुद (चंद्र विकासी कमळ) पंकने विषे उत्पन्न थाय छे अने जळने विषे वृद्धि पामे छे, तो पण ते पंकनी रजवडे लेपातुं नथी अने जळना रज (कण) वडे पण लेपातुं नथीं, ए ज प्रमाणे आ मेघकुमार कामने विषे उत्पन्न थयो छे अने भोगने विषे (भोगे करीने) वृद्धि पाम्यो छे, तो पण ते कामना रज (लेश) वडे लेपायो नथी अने भोगना रज (लेश) वडे पण लेपायो नथी. तेथी हे देवानुप्रिय ! आ कुमार संसारना भयथी उद्वेग पाम्यो छे, तथा जन्म, जरा अने मरणथी भय पाम्यो छे, तेथी ते देवानुप्रिय (आप) नी पासे मुंड थइ अगार थकी अनगार प्रत्ये जवाने (दीक्षा लेवाने) इच्छे छे. तेथी अमे देवानुप्रिय (आप) ने आ शिष्यरूप भिक्षा आपीए छीए. तो हे देवानुप्रिय ! (आप) आ शिष्यरूप भिक्षाने अंगीकार करो. "

मू०—तते णं से समणे भगवं महावीरे मेहस्स कुमारस्स अम्मापिऊएहिं एवं वुत्ते समाणे एयमट्ठं सम्मं पडिसुणेति ।

१ श्रेणिक राजाने घणा पुत्रो हता, तोपण धारिणी राणीने आ एक ज हतो, ए अपेक्षाए आ वचन छे.

अर्थ—त्यारपछी ते श्रमण भगवान महावीर स्वामी मेघकुमारना मातापिताए आ प्रमाणे कह्या सता आ अर्थ (कार्य) ने सम्यक् प्रकारे अंगीकार करता हवा.

मू०—तते णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ उत्तरपुरच्छिमं दिसिभागं अवक्कमति, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयति ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमार श्रमण भगवान महावीर स्वामीनी पासेथी उत्तरपूर्व एटले ईशान दिशाना भागमां गया, जइने पोतेज आभूषणो, माल्य (माळाओ) अने अलंकार (वस्त्रो) उतार्या.

मू०—तते णं से मेहकुमारस्स माया हंसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरणमल्लालंकारं पडिच्छति, पडिच्छित्ता हारवारिधारसिंदुवारछिन्नमुत्तावलिपगासातिं अंसूणि विणिम्मुयमाणी विणिम्मुयमाणी रोयमाणी रोयमाणी कंदमाणी कंदमाणी विलवमाणी विलवमाणी एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारनी माताए हंसना लक्षणवाळा एटले उज्वळ अने कोमळ पटसाटक (वस्त्र) ने विषे ते आभूषण, माल्य अने अलंकार ग्रहण कर्या, ग्रहण करीने जळनी धारा, सिंदुवारना पुष्प अने तुटेला मुक्तावलीना हार जेवा (मोटा अने श्वेत) अश्रुने मूकती मूकती, रोती रोती, आक्रंद करती करती अने विलाप करती करती आ प्रमाणे बोली—

मू०—" जतियव्वं जाया ! घडियव्वं जाया ! परक्कमियव्वं जाया ! अस्सिं च णं अट्ठे नो पमादेयव्वं, अम्हं पि णं एमेव मग्गे भवउ " त्ति कट्टु मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूता तामेव दिसिं पडिगया ॥२५॥

अर्थ—" हे पुत्र ! आ प्राप्त थयेला चारित्र योगने विषे तमारे प्रयत्न करवो, हे पुत्र ! प्राप्त न थयेला चारित्र योगने विषे तमारे घटना करवी, तथा हे पुत्र ! तेमां तमारे पराक्रम करवुं अर्थात् पुरुषत्वनुं अभिमान सिद्धफळवाळुं करवुं, एटले के आ अर्थने विषे (प्रव्रज्या पाळवाने विषे) तमारे प्रमाद न करवो. अमारो पण (योग्य समये) आ ज मार्ग (चारित्र-मार्ग) थाओ " आ प्रमाणे कही ते मेघकुमारना मातापिताए श्रमण भगवान महावीर स्वामीने वंदना करी, नमस्कार कर्या, वंदना करी नमस्कार करी जे दिशामांथी आव्या हता ते ज दिशामां पाछा गया. २५.

मू०—तते णं से मेहे कुमारे सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति, करित्ता जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति, करित्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारे पोते ज पंचमुष्टि लोच कर्यो, करीने ज्यां श्रमण भगवान महावीर स्वामी हता, त्यां

ज आव्या, श्रावीने श्रमण भगवान महावीर स्वामीने त्रण वार जमणी बाजुथी प्रदक्षिणा करी, करीने वंदना करी नमस्कार कर्या, वंदना करी नमस्कार करी आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—'आलित्ते णं भंते ! लोए, पलित्ते णं भंते ! लोए आलित्तपलित्ते णं भंते ! लोए जराए मरणेण य। से जहानामए केई गाहावती आगारंसि झियायमाणंसि जे तत्थ भंडे भवति अप्पभारे मोल्लगुरुए तं गहाय आयाए एगंतं अवक्कमति—'एस मे णित्थारिए समाणे पच्छा पुरा हियाए सुहाए खमाए णिस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सति, एवामेव मम वि एगे आयाभंडे इट्ठे कंते पिए मणुन्ने मणामे एस मे नित्थारिए समाणे संसारवोच्छेयकरे भविस्सति, तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाहिं सयमेव पव्वावियं सयमेव मुंडावियं सेहावियं सिक्खावियं सयमेव आयारगोयरविणयवेणइयचरणकरणजायामायावत्तियं धम्ममाइक्खियं"।

अर्थ—"हे भगवान् ! आ लोक (संसार) जरा अने मरणवडे (ते रूप अग्निवडे) आदीप्त (कांइक बळेलो) छे, हे भगवान् ! आ लोक जरामरणवडे प्रदीप्त (विशेष बळेलो) छे, तथा हे भगवान् ! आ लोक जरामरणवडे आदीप्त प्रदीप्त (अत्यंत बळेलो) छे, जेम कोइ गृहपति पोतानुं घर अग्निथी बळते सते तेमां रहेला जे भांड (वस्तु) अल्प भारवाळा

अने महा मूल्यवाळा होय ते ग्रहण करीने पोते एकांत स्थानमां जाय, (अने विचारे के-) 'आ भांड अग्निमांथी काढे सते आ जीवलोकने विषे मारे पछी (उत्तर काळमां) अने पहेलां एटले हमणां ज (अथवा पश्चात् लोकमां एटले आवता जन्ममां अने पुरालोकमां एटले आ भवमां ज) मारा हितने माटे, सुखने माटे, क्षमा (समर्थपणा) माटे, कल्याणने माटे तथा आवता काळमां उपयोगने माटे थशे' (एम विचारे छे). ते ज प्रमाणे मारुं पण आ आत्मारूपी भांड मने इष्ट छे, कांत (वहालुं) छे, प्रिय छे, मनोज्ञ छे अने मनने गमतुं छे. आ आत्मारूपी भांड निस्तार पामे सते (तेनो उद्धार थये सते) ते संसारनो विच्छेद करनार थशे. तेथी हुं इच्छुं छुं के देवानुप्रिय (आप) पोते ज मने वेष आपवावडे दीक्षा आपो, आप पोते ज मने मुंड (लोच) करो, आप पोते ज सेधित (निष्पादित) एटले पडिलेहणादिक ग्रहण करावी सिद्ध करो, आप पोते ज सूत्र अने अर्थ आपी मने शिक्षित (भणेलो) करो, तथा आप पोते ज मने ज्ञानादिक आचार, गोचरी (भिक्षाटन), विनय, वैनयिक (विनयना फळरूप कर्मक्षयादिक), व्रतादिक चरण सीत्तरी, पिंडविशुद्धि आदि करण सीत्तरी, यात्रा (संयम यात्रा) अने मात्रा (संयमने माटे ज आहारनुं प्रमाण), ए सर्व जेमां कहेला होय एवो धर्म कहो.

मू०—तते णं समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं सयमेव पव्वावेति, सयमेव आयार० जाव धम्ममातिक्खइ—"एवं देवाणुप्पिया ! गंतव्वं चिट्ठितव्वं णिसीयव्वं तुयट्टियव्वं भुंजियव्वं भासियव्वं, एवं उट्ठाए उट्ठाय पाणेहिं भूतेहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेणं संजामितव्वं अस्सिं च णं अट्ठे णो पमादेयव्वं"।

अर्थ—त्यारपछी श्रमण भगवान महावीर स्वामीए मेघकुमारने पोते ज प्रव्रज्या आपी अने पोते ज आचार विगेरे यावत् धर्म कह्यो.—"हे देवानुप्रिय ! आ प्रमाणे पृथ्वीपर युगमात्र दृष्टि राखीने चालवुं, शुद्ध भूमिपर उभा रहेवुं, भूमिने प्रमार्जन करी बेसवुं, सामायिकादिकनो उच्चार करवा पूर्वक शरीरनी प्रमार्जना करी संस्तारक अने उत्तरपट्टने विषे पोतानी भुजानुं ओशीकुं करी डाबे पडखे शयन करवुं, वेदनादिकने कारणे अंगारादिक दोष रहित भोजन करवुं, हित, मित अने मधुर वचनवडे बोलवुं, ए ज प्रमाणे उठी उठीने एटले प्रमाद अने निद्राने दूर करी बोध पामीने प्राण[1], भूत[2], जीव[3] अने सत्त्वने[4] विषे संयम (रक्षण करवा) वडे सम्यक् प्रकारे यतना करवी. आ अर्थमां एटले प्राणादिकनी रक्षा करवामां जरा पण प्रमाद करवो नहीं."

मू०—तते णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए इमं एयारूवं धम्मियं उवएसं णिसम्म सम्मं पडिवज्जइ, तमाणाए तह गच्छइ तह चिट्ठइ जाव उट्ठाए उट्ठाय पाणेहिं भूतेहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमइ ॥ २६॥

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारे श्रमण भगवान महावीर स्वामीनी पासेथी आवा स्वरूपनो धर्म संबंधी उपदेश सांभळी सम्यक् प्रकारे ते धर्म अंगीकार कर्यो. ते पूर्वे कहेली आज्ञाए करीने ते प्रकारे गमन करे छे, ते प्रकारे बेसे छे, यावत्

१ विकलेंद्रिय. २ वनस्पतिकाय. ३ पंचेंद्रियः ४ वनस्पति सिवायना एकेंद्रिय.

उठी उठीने एटले प्रमाद अने निद्रानो त्याग करी बोध पामी पामीने प्राण, भूत, जीव अने सत्त्वने विषे यतनापूर्वक रक्षण करवारूप संयमने पाळे छे.

मू०—जं दिवसं च णं मेहे कुमारे मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए, तस्स णं दिवसस्स पच्चावरण्हकालसमयंसि समणाणं निग्गंथाणं अहारातिणियाए सेज्जासंथारएसु[1] विभज्जमाणेसु मेहकुमारस्स दारमूले सेज्जासंथारए जाए यावि होत्था ।

अर्थ—हवे जे दिवसे मेघकुमारे मुंड थइ अगार (गृहवास) थकी नीकळी अणगारपणुं (चारित्र) अंगीकार कर्युं, ते ज दिवसना छेल्ला काळने समये (सांजे) रात्निकना (दीक्षापर्यायना) अनुक्रमथी श्रमण निर्ग्रंथो (साधुओ) ना शय्यासंस्तारकोनो विभाग करतां मेघकुमारनो शय्यासंस्तारक द्वारनी पासे (छेल्लो) थयो.

मू—तते णं समणा निग्गंथा पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वायणाए पुच्छणाए परियट्टणाए धम्माणुजोगचिंताए य उच्चारस्स य पासवणस्स य अइगच्छमाणा य निग्गच्छमाणा य अप्पेगतिया मेहं कुमारं हत्थेहिं संघट्टंति, एवं पाएहिं सीसे पोट्टे कायंसि, अप्पेगतिया ओलंडेति, अप्पेगइया

१ शयनने माटे संथारो करवानी भूमिनो अथवा शय्या (वसति—उपाश्रय) ने विषे संथाराओनो.

पोलंडेइ, अप्पेगतिया पायरयरेणुगुंडियं करेंति। एवं महालियं च णं रयणीं मेहे कुमारे णो संचाएति खणमवि अच्छिं निमीलित्तए।

अर्थ—त्यारपछी श्रमण निर्ग्रंथो (बीजा साधुओ) पहेली अने पाछली रात्रिने समये वाचनाने माटे, पूछवाने माटे, परावर्तन करवा माटे, धर्मनी व्याख्यानुं चिंतवन करवा माटे, उच्चार (वडी नीति) ने माटे तथा प्रस्रवण (लघु नीति) ने माटे प्रवेश करता हता अने बहार नीकळता हता. तेमां केटलाक साधुओने मेघकुमारना हाथनो संघट्ट (स्पर्श) थयो, ए ज प्रमाणे एटले केटलाकने पगनो स्पर्श थयो, केटलाकने मस्तकनो स्पर्श थयो, केटलाकने पेटनो स्पर्श थयो, केटलाक मेघकुमारने ओळंगी गया, केटलाक वारंवार ओळंगी गया, केटलाके तेने पादरजनी रेणुथी[1] भरी दीधा, ए प्रमाणे थवाथी मोटी (आखी) रात्रि सुधी मेघकुमार एक क्षण वार पण आंख मींचवाने समर्थ थया नहीं.

मू०—तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—“एवं खलु अहं सेणियस्स रन्नो पुत्ते धारिणीए देवीए अत्तए मेहे जाव सवणयाए, तं जया णं अहं अगारमज्झे वसामि, तया णं मम समणा णिग्गंथा आढायंति परिजाणंति सक्कारेंति संमाणेंति अट्ठाइं

१ अथवा पगना वेगथी उडेली रेणुवडे.

हेऊतिं पसिणातिं कारणाइं वाकरणाइं आतिक्खंति, इट्ठाहिं कंताहिं वग्गूहिं आलवेंति, संलवेंति, जप्पभितिं च णं अहं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए, तप्पभितिं च णं मम समणा नो आढायंति जाव नो संलवंति, अदुत्तरं च णं मम समणा निग्गंथा राओ (संथाराओ आयंति) पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वायणाए पुच्छणाए जाव महालियं च णं रत्तिं नो संचाएमि अच्छिं णिमिलावेत्तए, तं सेयं खलु मज्झं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव तेयसा जलंते समणं भगवं महावीरं आपुच्छित्ता पुणरवि आगारमज्झे वसित्तए " त्ति कट्टु एवं संपेहेति, संपेहित्ता अट्टदुहट्टवसट्टमाणसगए णिरयपडिरूवियं च णं तं रयणिं खवेति, खवित्ता कल्लं पाउप्पभायाए सुविमलाए रयणीए जाव तेयसा जलंते जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तिखुत्तो आदाहिणं पदाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जाव पज्जुवासति ॥ २६ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारने आवा स्वरूपवाळो आत्माने विषे चिंतवनरूप अध्यवसाय उत्पन्न थयो के—" हुं

श्रेणिक राजानो पुत्र अने धारिणी देवीनो आत्मज मघकुमार नामनो पुत्र यावत् उदुंबरना पुष्पनी जेम नामश्रवण माटे पण दुर्लभ छुं. ज्यारे हुं गृहवासने विषे वसतो हतो त्यारे सर्व श्रमण निर्ग्रंथो (साधुओ) मारो आदर करता हता, 'आ आवा प्रकारनो छे' एम मने जाणता हता, वस्त्रादिकवडे मारो सत्कार (पूजा) करता हता, उचिततावडे सन्मान करता हता, तथा जीवादिक पदार्थोने, तेने सिद्ध करवा माटे अन्वय अने व्यतिरेक पूर्वक हेतुओने, प्रश्न (शंका) ने कारण-(घटना) ने तथा व्याकरण (प्रश्नना उत्तर) ने कहेता हता, तथा इष्ट अने कांत (मनोहर) वाणीवडे मारी साथे आलाप करता हता (एक वार बोलता हता), संलाप करता हता (वारंवार बोलता हता), परंतु ज्यारथी आरंभीने में मुंड थइ गृहवासमांथी नीकळी अनगारपणुं (साधुपणुं) अंगीकार कर्युं छे त्यारथी आरंभीने साधुओ मारो आदर करता नथी, यावत् संलाप करता नथी. उलटा ते श्रमण निर्ग्रंथो (साधुओ) पहेली अने पाछली रात्रिने समये वाचना माटे, पूछवा माटे जता आवतां मारा संथाराने ओळंगे छे, यावत् मोडी रात्रि सुधी हुं नेत्र मींचवा पण समर्थ थयो नथी, तेथी निश्चे मारे काले रात्रि प्रभातरूप थये सते-सवार पडे त्यारे यावत् तेजवडे जाज्वल्यमान थये सते श्रमण भगवान महावीर स्वामीनी रजा लइ फरीथी गृहवास मध्ये वसवुं ए ज श्रेयस्कर छे." आ प्रमाणे तेणे विचार कर्यो, विचार करी आर्तध्यानवडे दुःखे पीडाता अने विकल्पने वश थयेला मनने प्राप्त थयेला ते मेघकुमारे नरकना जेवी ते रात्रि खपावी (निर्गमन करी). निर्गमन करीने काले (बीजे दिवसे) रात्रि प्रभातरूप थइ अत्यंत निर्मळ यावत् तेजवडे जाज्वल्यमान थइ त्यारे जे

१ उदरथी उत्पन्न थयेलो. २ टीकामां वस्त्रादिकवडे लख्युं छे, परंतु संभवतुं नथी.

ठेकाणे श्रमण भगवान महावीर स्वामी हता, त्यां आव्यो. आवीने त्रणवार जमणी बाजुथी प्रदक्षिणा करी, प्रदक्षिणा करीने भगवानने वांद्या, नमस्कार कर्या, वांदी नमस्कार करी यावत् भगवाननी पर्युपासना करवा लाग्यो.

मू०—तते णं मेहा! ति समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं एवं वदासी—" से णूणं तुमं मेहा! राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि समणेहिं निग्गंथेहिं वायणाए पुच्छणाए जाव महालियं च णं राइं णो संचाएमि (सि) मुहुत्तमवि अच्छि निमिलावेत्तए, तते णं तुब्भं मेहा! इमे एयारूवे अब्भत्थिए० समुप्पज्जित्था—' जया णं अहं अगारमज्झे वसामि तया णं मम समणा निग्गंथा आढायंति जाव परियाणंति, जप्पभितिं च णं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वयामि तप्पभितिं च णं मम समणा णो आढायंति जाव नो परियाणंति, अदुत्तरं च णं समणा निग्गंथा राओ अप्पेगतिया वायणाए जाव पायरयरेणुगुंडियं करेंति, तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए समणं भगवं महावीरं आपुच्छित्ता पुणरवि आगारमज्झे आवसित्तए ' त्ति कट्टु एवं संपेहेसि, संपेहित्ता अट्टदुहट्टवसट्टमाणसे जाव रयणिं खवेसि, खवित्ता जेणामेव अहं तेणामेव हव्वमागए, से णूणं मेहा! एस अत्थे समट्ठे ? "

अर्थ—त्यारपछी 'हे मेघ !' ए प्रमाणे संबोधन करी श्रमण भगवान महावीर स्वामीए मेघकुमारने आ प्रमाणे कह्युं–" अथ (हवे) निश्चे हे मेघ ! तुं आजे मध्य रात्रिने समये श्रमण निर्ग्रंथो (साधुओ) ए वाचना प्रच्छनाने माटे जाव आव करी तेथी यावत् आखी रात्रिमां एक क्षणवार पण आंख मींचवाने शक्तिमान थयो नहीं, तेथी हे मेघ ! तने आ आवा स्वरूपवाळो अध्यवसाय उत्पन्न थयो के–' ज्यारे हुं गृहवासमां वसतो हतो, त्यारे श्रमण निर्ग्रंथ साधुओ मारो आदर करता हता, यावत् मने सारो जाणता हता, परंतु ज्यारथी में मुंड थइने अगारवासथी नीकळी अनगारपणुं अंगीकार कर्युं छे त्यारथी आ साधुओ मारो आदर करता नथी, यावत् मने सारो जाणता नथी, पण उलटा ते श्रमण निर्ग्रंथ साधुओ केटलाक रात्रिए वाचना विगेरे माटे जता आवता होइ यावत् तेमणे पादरजनी रेणुवडे मने भरी दीधो. तेथी काले प्रभाते श्रमण भगवान महावीर स्वामीनी रजा लइ मारे फरीथी गृहावास मध्ये वसवुं ए ज श्रेयकारक छे. ' ए प्रमाणे तें विचार कर्यो, विचार करीने आर्तध्यानवडे दुःखथी पीडाता अने विकल्पने वश थयेला मनने प्राप्त थयेला तें रात्रि निर्गमन करी, रात्रि निर्गमन करीने ज्यां हुं रहेलो छुं त्यां तुं शीघ्रपणे आव्यो छे. तो निश्चे हे मेघ ! आ हुं कहुं छुं ते अर्थ सत्य छे ? "

मू०—हंता अत्थे समट्ठे ।

अर्थ—मेघकुमारे जवाब आप्यो–" हा जी, ते अर्थ सत्य छे. "

मू०—एवं खलु मेहा ! तुमं इओ तच्चे अईए भवग्गहणे वेयड्ढगिरिपायमूले वणयरेहिं णिव्वत्तियणामधेज्जे सेते संखदलउज्जलविमलनिम्मलदहिघणगोखीरफेणरयणियर (दगरयरययणियर) प्पयासे सत्तुस्सेहे णवायए दसपरिणाहे सत्तंगपतिट्ठिए सोमे समिए सुरूवे पुरतो उदग्गे समूसियसिरे सुहासणे पिट्ठओ वराहे अतियाकुच्छी अच्छिद्दकुच्छी अलंबकुच्छी पलंबलंबोदराहरकरे धणुपट्ठागिइविसिट्ठपुट्ठे अल्लीणपमाणजुत्तपुच्छे पडिपुन्नसुचारुकुम्मचलणे पंडुरसुविसुद्धनिद्धणिरुवहयविंसतिणहे छद्दंते सुमेरुप्पभे नामं हत्थिराया होत्था ।

अर्थ—भगवान बोल्या—" ए प्रमाणे निश्चे हे मेघ ! तुं आ भवनी पहेलां गयेला त्रीजा भवने विषे वैताढ्य पर्वतना पादमूलने[1] विषे वनचरो (भिल्लो) ए जेनुं नाम पाडयुं छे एवो सुमेरुप्रभ हस्तीराज हतो, तेनो वर्ण श्वेत हतो, शंखना दळ (चूर्ण) समान उज्वळ, विमळ (मळ रहित), निर्मळ, दहींना फोदा जेवो, गायना दूध जेवो, समुद्रना फीण जेवो अने चंद्र जेवो (अथवा जळना कणीया जेवो अने रुपाना समूह जेवो) हतो, सात हाथ उंचो, नव हाथ लांबो, मध्य भागे—उदरने भागे दश हाथना प्रमाणवाळो, तेना चार पग, सुंढ, पुच्छ अने लिंग ए सात अंग प्रतिष्ठित एटले भूमिने स्पर्श करता हता, सौम्य[2] आकार-

१ पर्वतनी नीचेनो प्रदेश. २ भयंकर नहीं एवो.

वाळो अथवा नीरोगी, सम्मित (प्रमाण युक्त अंगवाळो), सुंदर रूपवाळो, अग्र भागमां उंचो, उंचा मस्तकवाळो हतो, तथा तेना स्कंध विगेरे आसनो शुभ अथवा सुखकारक हता, तेनो पाछलो भाग वराह (भुंड) नी जेवो नमी गयेलो हतो, बकरीनी कुक्षिनी जेम तेनी कुक्षि उंची हती, तेनी कुक्षिमां छिद्र (खाडा) नहोता, अपलक्षण नहीं होवाथी तेनी कुक्षि लांबी नहोती, ते लांबा उदरवाळो, लांबा होठवाळो अने लांबी सुंढवाळो हतो, (अथवा लंबोदर एटले गणपतिनी जेवा तेने लांबा होठ अने सुंढ हता,) तेनुं प्रधान (श्रेष्ठ) पृष्ठ खेंचेला धनुषना पृष्ठनी आकृतिवाळुं हतुं, तेना बीजा गात्रो (अवयवो) सारी रीते मळेलां, प्रमाणयुक्त, वृत्त (गोळ) अने पुष्ट हतां, तेनुं पुच्छ सारी रीते मळेलुं अने प्रमाण युक्त हतुं, तेना पग काचबानी जेवा परिपूर्ण अने मनोहर हता, तेना वीश नखो श्वेत, विशुद्ध (निर्मळ), स्निग्ध (कांतिवाळा) अने निरुपहत (खंडित आदि दोष रहित) हता, तथा तेने छ दांत हता.

मू०—तत्थ णं तुमं मेहा ! बहूहिं हत्थीहि य हत्थीणियाहि य लोट्टएहि य लोट्टियाहि य कलभेहि य कलभियाहि य सद्धिं संपरिवुडे हत्थिसहस्सणायए देसए पागट्ठी पट्ठवए जूहवई वंदपरियट्टए अन्नेसिं च बहूणं एकल्लाणं हत्थिकलभाणं आहेवच्चं जाव विहरसि ।

अर्थ—त्यां तुं हे मेघ ! घणा हाथीओ, हाथणीओ, *लोट्टक, *लोट्टिका, +कलभ अने +कलभिकानी साथे परिवर्यो

१ पीठ. २ अथवा गात्र एटले छाती अने अपर एटले पाछलो भाग. * कुमार अवस्थावाळा. + बाल्यावस्थावाळा.

सतो हजार हाथीओनो नायक, देशक[1], प्राकर्षी[2], प्रस्थापक[3], यूथपति अने वृंदपरिवर्धक[4] तथा बीजा घणा एकलीया हाथीना बच्चांओनुं अधिपतिपणुं करतो सतो यावत् (तुं) विचरतो हतो.

मू०—तते णं तुमं मेहा ! णिच्चप्पमत्ते सइं पललिए कंदप्परई मोहणसीले अवितण्हे कामभोगतिसिए बहूहिं हत्थीहि य जाव संपरिवुडे वेयड्ढगिरिपायमूले गिरीसु य दरीसु य कूहरेसु य कंदरासु य उज्झरेसु य निज्झरेसु य वियरएसु य गड्डासु य पल्लवेसु य चिल्ललेसु य कडयेसु य कडयपल्ललेसु य तडीसु य वियडीसु य टंकेसु य कूडेसु य सिहरेसु य पब्भारेसु य मंचेसु य मालेसु य काणणेसु य वणेसु य वणसंडेसु य वणराईसु य नदीसु य नदीकच्छेसु य जूहेसु य संगमेसु य वावीसु य पोक्खरिणीसु य दीहियासु य गुंजालियासु य सरेसु य सरपंतियासु य सरसरपंतियासु य वणयरएहिं दिन्नवियारे बहूहिं हत्थीहि य जाव सर्द्धिं संपरिवुडे बहुविहतरुपल्लवपउरपाणियतणे निब्भए निरुव्विग्गे सुहंसुहेणं विहरसि ।

अर्थ—त्यारपछी तुं हे मेघ ! निरंतर प्रमादी, सदा प्रललित–अत्यंत क्रीडा करनार, कंदर्परति–क्रीडा करवामां

१ हितमार्गने देखाडनार. २ अग्रेसर. ३ विविध कार्यमां प्रवर्तावनार. ४ यूथनी वृद्धि करनार.

प्रीतिवाळो, मोहनशील–मैथुनमां प्रीतिवाळो, अवितृप्त–मैथुन सेववामां अतृप्त अने कामभोगने विषे तृष्णावाळो एवो तुं घणी हाथणीओ विगेरेवडे यावत् परिवर्यो सतो वैताढ्य पर्वतना पादमूळने[1] विषे, पर्वतोने विषे, दरीने[2] विषे, कुहरने[3] विषे, कंदरा (गुफा)ने विषे, उज्झरने[4] विषे, निर्झरणाने[5] विषे, विदरोने विषे, गर्ता (खाडा)ने विषे, पल्वल (खाबोचीया) ने विषे, चिल्लल (कादववाळा खाबोचीया)ने विषे, कटक (पर्वतना तट) ने विषे, कटकपल्वल (पर्वतना तट पासे रहेला खाबोचीया)ने विषे, नदी विगेरेना तटने विषे, वितटी (अटवी)ने विषे, टंक[6] जातिना पर्वतोने विषे, कूट[7] जातिना पर्वतोने विषे, पर्वतना शिखरोने विषे, प्राग्भार (कांइक नमेला पर्वतना भागो)ने विषे, मंचोने[8] विषे, माळाओने[9] विषे, काननोने[10] विषे, वनोने[11] विषे, वनखंडोने[12] विषे, वनोनी श्रेणिओने विषे, नदीओने विषे, नदीकच्छो (नदी पासेना वनो)ने विषे, यूथ (वानरादिकनां स्थानो)ने विषे, नदीओना संगमस्थानोने विषे, चार खूणावाळी वावोने विषे, पुष्करिणी (गोळाकार वाव

---

१ समीप भागमां. २ अमुक प्रकारनी गुफा. ३ पर्वतोना आंतरा, ४ पाणी पडवाना स्थान. ५ नानी नदीओ एटले नहेरां विगेरे. ६ एक दिशा तरफ छेदेला एटले जाणे टांकणाथी टांकीने सीधा कर्या होय तेवा. ७ नीचे पहोळा अने उंचे जतां सांकडा एवा गोळ पर्वत, अथवा हाथी विगेरेने बांधवाना स्थानो. ८ नदी विगेरे ओळंगवाने माटे थांभला उपर पाटीया नांखीने बनावेला पूल जेवा मांचा. ९ सिंहादिकथी रक्षण करवा माटे एक स्तंभ उपर पाटीया विगेरे नांखी रहेवा माटे बनावेलो आश्रम. १० स्त्रीजाति अथवा पुरुषजाति बेमांथी एकने भोगववा लायक वनविशेष. ११ जेमां एक ज जातिना वृक्षो होय ते वन कहेवाय छे. १२ जेमां अनेक जातिनां वृक्षो होय एवां वनो.

अथवा कमळोवाळी वाव)ने विषे, दीर्घिकाने[1] विषे, गुंजालिकाने[2] विषे, सरोवरने विषे, सरोवरनी पंक्तिने विषे तथा सरःसरः पंक्तिने[3] विषे वनचरोए (भिल्लोए) दीधो छे विचार (विचरवुं) जेने एवो तुं घणा हाथीओ विगेरेवडे यावत् परिवर्यो सतो, घणा प्रकारना वृक्षोना पल्लवोने खातो घणा पाणीने पीतो अने घणा घासने खातो सतो, शूरवीर होवाथी निर्भय अने अनुकूळ विषयोनी प्राप्तिने लीधे उद्वेग रहित एवो तुं सुखे सुखे विचरतो हतो.

मू०—तते णं तुमं मेहा ! अन्नया कयाई पाउसवरिसारत्तसरयहेमंतवसंतेसु कमेण पंचसु उऊसु समतिक्कंतेसु, गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूलमासे, पायवघंससमुट्ठिएणं सुक्कतणपत्तकयवरमारुतसंजोगदीविएणं महाभयंकरेणं हुयवहेणं वणदवजालासंपलित्तेसु वणंतेसु, धूमाउलासु दिसासु, महावायवेगेणं संघट्टिएसु छिन्नजालेसु आवयमाणेसु, पोल्लरुक्खेसु अंतो अंतो झियायमाणेसु, मयकुहितविणिविट्ठकिमियकद्दमनदीवियरगजिण्णपाणीयंतेसु वणंतेसु भिंगारकदीणकंदियरवेसु, खरफरुसअणिट्ठरिट्ठवाहितविद्दुमग्गेसु दुमेसु, तण्हावसमुक्कपक्खपयडियजिब्भतालुयअसंपुडिततुंडप-

१ जेमां पाणीनी नीक सीधी अने लांबी होय तेवी वाव. २ जेमां पाणीनी नीक वांकी होय तेवी वाव. ३ एक सरोवरमांथी बीजा सरोवरमा पाणी जवा आववा माटे वच्चे बारणां मूकेलां होय एवा सरोवरनी पंक्ति.

क्खिसंघेसु ससंतेसु, गिम्हउम्हउण्हवायखरफरुसचंडमारुयसुक्कतणपत्तकयवरवाउलिभमंतदित्तसंभंतसावयाउलमिगतण्हाबद्धचिण्हपट्टेसु गिरिवरेसु, संवट्टिएसु तत्थमियपसवासिरीसिवेसु, अवदालियवयणविवरणिल्लालियग्गजीहे, महंततुंबइयपुन्नकन्ने, संकुचियथोरपीवरकरे, ऊसियलंगूले, पीणाइयविरसरडियसद्देणं फोडयंतेव अंबरतलं, पायदद्दरएणं कंपयंतेव मेइणितलं, विणिम्मुयमाणे य सीयारं, सव्वतो समंता वल्लिवियाणाइं छिंदमाणे, रुक्खसहस्साति तत्थसुबहूणि णोल्लायंते, विणट्ठरट्ठे व्व णरवरिंदे, वायाइद्धेव्व पोए, मंडलवाएव्व परिब्भमंते, अभिक्खणं अभिक्खणं लिंडणियरं पमुंचमाणे पमुंचमाणे, बहूहिं हत्थीहि य जाव सद्धिं दिसोदिसिं विप्पलाइत्था ।

अर्थ—त्यारपछी तुं हे मेघ! एकदा कदाचित् प्रावृट् ऋतु (अषाड ने श्रावण), वर्षारात्र–ऋतु (भाद्रपद ने आश्विन), शरद ऋतु (कार्तिक ने मार्गशीर्ष), हेमंत ऋतु (पोष ने माघ). वसंत ऋतु (फाल्गुन ने चैत्र) ए पांच ऋतुओ अनुक्रमे वीती गइ त्यारे अने ग्रीष्मऋतुना काळनो (वैशाख जेठनो) समय आव्यो त्यारे ज्येष्ठ मासमां वृक्षोना परस्पर घसावाथी उत्पन्न थयेला तथा सुकां घास अने पांदडांरूप कचरा अने वायुना संयोगथी देदीप्यमान थयेला महा

१ टीकामां आ प्रमाणे मासो लख्या छे. अन्यना मतमां अन्यथा मास पण लीधेला छे.

भयंकर अग्निथी उत्पन्न थयेला वनना दावानळनी ज्वाळावडे वननो मध्यभाग सळगवा लाग्यो, दिशाओ धूमाडावडे आकुळ (व्याप्त) थइ, महा वायुना वेगवडे स्पर्श करीने तुटक थयेली ज्वाळाओ चोतरफ पडवा लागी, पोला वृक्षो मध्यमां पण बळवा लाग्या, वनना विभागोमां रहेली नदीओ तथा नाळांओनां पाणी मरेला मृगादिकवडे कोही गयां, विनष्ट थयां एटले तेनो निर्मळतारूप स्वभाव नष्ट थयो, तेनो कादव कृमियावाळो थयो, तेना जळना पर्यंत भागो क्षीण थया एटले तेनां पाणी सुकाइ गयां, अने भृंगारक जातिना पक्षीओना दीनता भरेला आक्रंद शब्दो थवा लाग्या, उत्तम वृक्षो उपर रहेला कागडाओ अत्यंत कठोर अने अनिष्ट शब्द करवा लाग्या अने ते वृक्षोना अग्रभागो अग्निना के पल्लवोना योगथी विद्रुम (परवाळा) जेवा राता देखावा लाग्या. पक्षीओना समूहो तृष्णा (तरश) ना वशथी पांखो ढीली करी जिह्वा अने ताळु प्रगट करी मुखने पहोळुं करी श्वासोश्वास मूकवा लाग्या, ग्रीष्म ऋतुनी उष्णता, उष्णपात (सूर्यना किरणोनो ताप), अति कठोर अने प्रचंड वायु तथा शुष्क तृण, पर्ण अने कचरायुक्त वींटोळीयावडे भ्रमण करता, दृप्त (गर्विष्ठ) अने संभ्रमवाळा सिंहादिक श्वापदोवडे श्रेष्ठ पर्वतो आकुळ व्याकुळ थया अने ते पर्वतो पर मृगतृष्णिकारूप पट्टबंध बांध्यो होय तेम देखावा लाग्युं, तथा त्रास पामेला मृगो, बीजा पशुओ अने गोधादिक सरीसृपो आमतेम तरफडवा लाग्या. (आ रीते दावानळने लीधे वनना विभागो त्रासदायक थया).

ते वखते आ सुमेरुप्रभ नामना हाथीनुं पण मुखविवर पहोळुं थयुं, तेनी जिह्वानो अग्रभाग बहार नीकळी पड्यो, तेना मोटा बन्ने कान अरघट्टना तुंबना आकार जेवा स्तब्ध अने पुण्य एटले व्याकुळतावडे शब्द ग्रहण करवामां तत्पर थया,

तेनी जाडी अने मोटी सूंढ संकोच पामी, तेणे पुंछडुं उंचुं कर्युं, पैनायिकनी जेवा विरस आराटिना शब्दवडे जाणे आकाशतळने फोडी नांखतो होय, पादना आघातवडे जाणे पृथ्वीतळने कंपावतो होयँ, एवो ते हाथी चीत्कार शब्दने मूकतो, सर्वत्र चोतरफथी वेलाओना समूहने छेदतो, त्रास पामेला घणा हजारो वृक्षोने भांगतो, राज्यथी भ्रष्ट थयेला राजानी जेम, वायुथी डोलता वहाणनी जेम अने वींटोळीयाना वायुनी जेम आमतेम भमतो, वारंवार लींडाना समूहने मूकतो मूकतो घणी हाथीणीओ विगेरेनी साथे यावत् दिशा अने विदिशामां नासवा लाग्यो.

मू०—तत्थ णं तुमं मेहा ! जुन्ने जराजज्जरियदेहे आउरे झंझिए पिवासिए दुब्बले किलंते नट्ठसुइए मूढदिसाए सयातो जूहातो विप्पहूणे वणदवजालापरद्धे उण्हेण य तण्हाए य छुहाए य परब्भाहए समाणे भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे संजातभए सव्वतो समंता आधावमाणे परिधावमाणे एगं च णं महं सरं अप्पोदयं पंकबहुलं अतित्थेणं पाणियपाए उइन्नो ।

अर्थ—त्यां हे मेघ ! जीर्ण (घरडो), जरावडे जाजरा देहवाळो, आतुर (व्याकुळ), झंझित (भूख्यो), तरस्यो, दुर्बळ, क्लांत (ग्लानि पामेलो), नष्टश्रुतिक (बहेरो) अने दिग्मूढ थयेलो एवो तुं पोताना (तारा) यूथथी छूटो पड्यो, वनना दावानळनी ज्वाळाथी पराभव पाम्यो, उष्णतावडे तरशवडे अने क्षुधावडे पराभव पाम्यो सतो, भय पाम्यो, त्रास पाम्यो, आनंदरसना शोषणवडे शुष्क थयो, आ अनर्थथी शी रीते मुक्त थाउं एम विचारी उद्वेग पाम्यो, सर्व प्रकारे भय

उत्पन्न थयो चोतरफ थोडुं दोडवा लाग्यो, सर्वथा प्रकारे अत्यंत दोडवा लाग्यो, एवामां थोडा पाणीवाळुं अने घणा कादववाळुं एक मोटुं सरोवर तें जोयुं, तेमां आरा विनाने मार्गे जळ पीवा माटे तुं उतर्यो.

मू०—तत्थ णं तुमं मेहा ! तीरमतिगते पाणियं असंपत्ते अंतरा चेव सेयंसि विसन्ने ।

अर्थ—त्यां तुं हे मेघ ! कांठाथी दूर गयो अने पाणीने पाम्यो नहीं एटलामां वच्चे ज कादवमां मग्न थयो—खुंची गयो.

मू०—तत्थ णं तुमं मेहा ! पाणियं पाइस्सामि त्ति कट्टु हत्थं पसारेसि, से वि य ते हत्थे उदगं न पावति ।

अर्थ—त्यां तें हे मेघ ! हुं पाणी पीउं एम धारीने सूंढ पसारी, परंतु ते तारी सूंढ पाणी सुधी पहोंची नहीं.

मू०—तते णं तुमं मेहा ! पुणरवि कायं पच्चुद्धरिस्सामीत्ति कट्टु बलियतरायं पंकंसि खुत्ते ।

अर्थ—त्यारपछी तुं हे मेघ ! फरीथी हुं कायाने उध्धरीश (खेंची काढीश) एम धारीने कायाने उंची करवा लाग्यो, परंतु उलटो गाढ कादवमां खुंची गयो.

मू०—तते णं तुमं मेहा ! अन्नया कदाइ एगे चिरनिज्जूढे गयवरजुवाणए सगाओ जूहाओ करचरणदंतमुसलप्पहारेहिं विप्परद्धे समाणे तं चेव महद्दहं पाणीयं पादेउं समोयरेति ।

अर्थ—त्यारपछी हे मेघ ! एकदा कदाचित् एक जुवान श्रेष्ठ हाथीने तें सूंढ, पग अने दांतरूपी मुशळना प्रहारवडे मार्यो हतो अने पोताना (तारा) यूथथी तेने तें चिरकाळथी काढी मूक्यो हतो, ते पाणी पीवा माटे ते ज महाद्रहमां उतर्यो.

मू०—तते णं से कलभए तुमं पासाति, पासित्ता तं पुव्ववेरं समरति, समरित्ता आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे जेणेव तुमं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तुमं तिक्खेहिं दंतमुसलेहिं तिक्खुत्तो पिट्ठतो उच्छुभति, उच्छुभित्ता पुव्ववेरं निज्जाएति, निज्जाइत्ता हट्ठ तुट्ठे पाणियं पियति, पिइत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।

अर्थ—त्यारपछी ते कलभे (जुवान हाथीए) तने जोयो, जोइने तेणे ते पूर्वनुं वेर संभार्युं (तेने सांभर्युं). संभारीने तेना कोपनुं चिह्न फरक्युं, रुष्ट थयो एटले तेने क्रोध उदयमां आव्यो, कुपित एटले तेना कोपनो उदय वृद्धि पाम्यो, चांडिक्यित एटले तेनुं रौद्र स्वरूप प्रगट थयुं, अने ते क्रोधाग्निवडे देदीप्यमान थयो, तेथी ते ज्यां तुं हतो, त्यां आव्यो, आवीने तीक्ष्ण दांतरूपी मुशळवडे तेणे तारी पीठने त्रणवार वींधी, वींधीने पूर्वनुं वेर समाप्त कर्युं—पूर्ण कर्युं, पूर्ण करीने हृष्ट तुष्ट थइ पाणी पीधुं, पाणी पीने जे दिशामांथी प्रगट थयो हतो—आव्यो हतो, ते ज दिशामां पाछो गयो.

मू०—तते णं तव मेहा ! सरीरगंसि वेयणा पाउब्भवित्था उज्जला विउला तिउला कक्खडा

जाव दुरहियासा पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए यावि विहरित्था ।

अर्थ—त्यारपछी हे मेघ ! तारा शरीरने विषे वेदना प्रगट थइ. केवी ? उज्वल एटले जरापण साता न उपजे एवी, विपुला एटले आखा शरीरमां व्यापी रहेली, त्रितुला एटले मन, वचन अने कायानी तुलना करनारी (तन्मयपणाने पामेली), कर्कश एटले कठोर पदार्थनी जेम अनिष्ट लागे तेवी, यावत् दुःसह एटले सहन न थइ शके तेवी वेदना तने प्रगट थइ. तेथी तारुं शरीर पित्त ज्वरथी व्याप्त थयुं अने तारा शरीरमां अत्यंत दाह उत्पन्न थयो. आ रीते तुं रहेलो हतो.

मू०—तते णं तुमं मेहा ! तं उज्जलं जाव दुरहियासं सत्तराइंदिणं वेयणं वेदेसि सवीसं वाससतं परमाउं पालइत्ता अट्टवसट्टदुहट्टे कालमासे कालं किच्चा इहेव जंबुद्दीवे भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे गंगाए महाणदीए दाहिणे कूले विंझगिरिपायमूले एगेणं मत्तवरगंधहत्थिणा एगाए गयवरकरेणूए कुच्छिंसि गयकलभए जणिते । ततेणं सा गयकलभिया णवण्हं मासाणं वसंतमासम्मि तुमं पयाया ।

अर्थ—त्यारपछी तुं हे मेघ ! तेवी उज्वळ (जरा पण साता न उपजे एवी) यावत् दुःसह एटले सहन न थइ शके तेवी वेदनाने सात रात्रि दिवस भोगवीने कुल एक सो वीश वर्षनुं मोटुं आयुष्य पाळीने (भोगवीने) आर्तध्यानने वश

थयेलो अने दुःखथी पीडा पामेलो तुं कालने मासे (काळ करवाने समये) काळ करीने (मरीने) आ ज जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रमां दक्षिणार्ध भरतमां गंगा नामनी मोटी नदीना दक्षिण तरफने कांठे विंध्याचळ पर्वतना पादमूळमां (समीपे) एक मदोन्मत्त श्रेष्ठ गंधहस्तीथी एक श्रेष्ठ हाथणीनी कुक्षिने विषे हाथीना बच्चापणाए (तुं) उत्पन्न थयो. त्यारपछी ते गजकलभिका (हाथणी) ए नव मास पूर्ण थये वसंतमासने विषे तने जन्म आप्यो.

मू०—तते णं तुमं मेहा ! गब्भवासाओ विप्पमुक्के समाणे गयकलभए यावि होत्था, रत्तुप्पलरत्तसूमालए जासुमणारत्तपारिजत्तयलक्खारससरसकुंकुमसंझब्भरागवन्ने इट्ठे णिगस्स जूहवइणो गणियायारकणेरुकोत्थहत्थी अणेगहत्थिसयसंपरिवुडे रम्मेसु गिरिकाणणेसु सुहंसुहेणं विहरसि ।

अर्थ—त्यारपछी तुं हे मेघ ! गर्भावासथी मूकायो सतो गजनो कलभक (नानो हाथी) पण थयो. ते वखते राता कमळ जेवो रातावर्णनो अने अति सुकुमाळ थयो, जासुमण (जपासुमन) अने आरक्त पारिजात नामना वृक्ष, लाक्षारस, रसवाळुं कुंकुम अने संध्याकाळना वादळांना रंग जेवो तेनो रक्तवर्ण थयो, पोताना यूथना स्वामीने वल्लभ थयो, गणिकाना जेवी जुवान हाथणीओना उदर स्थानने विषे ते पोतानो हस्त (शुंडादंड) नांखतो हतो एटले कामक्रीडामां तत्पर रहेतो हतो. आ रीते सेंकडो हाथीओवडे परिवरेलो तुं रमणीय पर्वतना वनोने विषे सुखे सुखे विचरतो हतो.

मु०—तते णं तुमं मेहा ! उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुपत्ते जूहवइणा कालधम्मुणा संजु-

त्तेणं तं जूहं सयमेव पडिवज्जसि।

अर्थ—त्यारपछी तुं हे मेघ! बाल्यावस्थाथी मुक्त थइ यौवनने पाम्यो, एटलामां ते यूथनो स्वामी काळधर्मवडे युक्त थयो (मरण पाम्यो), त्यारे तुं पोते ज यूथने वहन करवा लाग्यो—यूथपति थयो.

मु०—तते णं तुमं मेहा! वणयरेहिं निव्वत्तिनामधेज्जे जाव चउदंते मेरुप्पभे हत्थिरयणे होत्था। तत्थ णं तुमं मेहा! सत्तंगपइट्ठिए तहेव जाव पडिरूवे। तत्थ णं तुमं मेहा! सत्तसइयस्स जूहस्स आहेवच्चं जाव अभिरमेत्था।

अर्थ—त्यारपछी तुं हे मेघ! वनचरो (भिल्लो) ए जेनुं नाम मेरुप्रभ पाड्युं छे एवो यावत् चार दांतवाळो तुं हस्तीरत्न थयो. त्यां तुं हे मेघ! सात अंगे प्रतिष्ठित (भूमिने स्पर्श करतो) विगेरे तेज प्रमाणे यावत् सुंदर रूपवाळो थयो. त्यां तुं हे मेघ! सात सो हाथीओना यूथनुं अधिपतिपणुं पाळतो सतो यावत् मनोहर रूपवाळो थयो सतो विचरवा लाग्यो.

मू०—तते णं तुमं अन्नया कयाइ गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूले वणदवजालापलित्तेसु वणंतेसु सुधूमाउलासु दिसासु जाव मंडलवाए व्व परिब्भमंते भीते तत्थे जाव संजायभए बहूहिं हत्थीहि

१ प्रथमना भवमां ते श्वेतवर्ण हतो अने आ भवमां उपर कह्या प्रमाणे रक्तवर्ण हतो, एटलो विशेष जाणवो.

य जाव कलभियाहि य सद्धिं संपरिवुडे सव्वतो समंता दिसोदिसिं विप्पलाइत्था ।

अर्थ—त्यारपछी तुं एकदा कदाचित् ग्रीष्मकाळने समये ज्येष्ठ मासमां वनना दावानळनी ज्वाळावडे वनना विभागो सळगवा लाग्या, सर्व दिशाओ अत्यंत धुमाडावडे व्याप्त थइ गइ, यावत् वींटोळीयाना वायुनी जेम आम तेम भमवा लाग्यो, भय पाम्यो, त्रास पाम्यो, यावत् तने भय उत्पन्न थयो, त्यारे घणा हाथीओ अने यावत् हाथणीओवडे परिवरेलो तुं सर्वत्र चोतरफ दिशाविदिशामां नाशी गयो.

मू०—तते णं तव मेहा ! तं वणदवं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—"कहिं णं मन्ने मए अयमेयारूवे अग्गिसंभवे अणुभूयपुव्वे ?"। तते णं तव मेहा ! लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं अज्झवसाणेणं सोहणेणं सुभेणं परिणामेणं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स सन्निपुव्वे जातिसरणे समुप्पज्जित्था ।

अर्थ—त्यारपछी हे मेघ ! ते वनना दावानळने जोइ तने आवा प्रकारनो अध्यवसाय यावत् उत्पन्न थयो के—"हुं मानुं छुं के में आवा प्रकारनी अग्निनी उत्पत्ति पूर्वे क्यां अनुभवी छे ?" त्यारपछी हे मेघ ! विशुद्ध लेश्यावडे, सुंदर अध्य-

१ मननो परिणाम.

वसायवडे अने आत्माना शुभ परिणामवडे जातिस्मरणने आवरण करनारा कर्मनो क्षयोपशम थवाथी ईहा, अपोह, मार्गणा अने गवेषणाने करता एवा तने संज्ञी जीवोने थनारुं पूर्व भवनुं जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं.

मू०—तते णं तुमं मेहा ! एयमट्ठं सम्मं अभिसमेसि—" एवं खलु मया अतीए दोच्चे भवग्गहणे इहेव जम्बुद्दीवे दीवे भारहे वासे वियड्ढगिरिपायमूले जाव सुहंसुहेणं विहरइ, तत्थ णं महया अयमेयारूवे अग्गिसंभवे समणुभूए "। तते णं तुमं मेहा ! तस्सेव दिवसस्स पच्चावरण्हकालसमयंसि नियएणं जूहेणं सद्धिं समन्नागए यावि होत्था। तते णं तुमं मेहा ! सत्तुस्सेहे जाव सन्निजाइस्सरणे चउद्दंते मेरुप्पभे नाम हत्थी होत्था।

अर्थ—त्यारपछी हे मेघ ! तें आ अर्थ सम्यक् प्रकारे जाण्यो के—" आ प्रमाणे निश्चे में गयेला बीजा भवने विषे आ ज जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे भरतक्षेत्रमां वैताढ्य पर्वतना पादमूळमां (समीपे) यावत् सुखे सुखे विचरतो हतो, त्यां आवा प्रकारनो मोटो अग्निनो संभव सम्यक् प्रकारे अनुभव्यो छे. " त्यारपछी हे मेघ ! तुं ते भवमां ते ज दिवसना छेल्ला पहोरना समय सुधी पोताना यूथनी साथे फरतो हतो, ए रीते हे मेघ ! तुं (त्यांथी काळ करीने) आ बीजा भवने विषे सात हाथ उंचो यावत् संज्ञी जातिस्मरणवाळो अने चार दांतवाळो मेरुप्रभ नामनो हाथी थयो.

मू०—तते णं तुज्झं मेहा ! अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—" तं सेयं खलु मम इयाणिं गंगाए महानदीए दाहिणिल्लंसि कूलंसि विंझगिरिपायमूले दवग्गिसंताणकारणट्ठा सएणं जूहेणं महालयं मंडलं घाइत्तए " त्ति कट्टु एवं संपेहेसि, संपेहित्ता सुहं सुहेणं विहरासि ।

अर्थ—त्यारपछी हे मेघ ! तने आवा प्रकारनो अध्यवसाय यावत् उत्पन्न थयो के—" मारे हमणा गंगा नामनी महा नदीना दक्षिण तीरे विंध्याचळ पर्वतना पादमूळने विषे (समीपे) दावानळथी रक्षण करवा माटे पोताना यूथनी पासे एक मोटुं (घासादि विनानुं) मंडळ करवुं सारुं छे. " एम करी ए प्रमाणे तें विचार कर्यो, विचार करीने तुं सुखे सुखे विचरवा लाग्यो.

मू०—तते णं तुमं मेहा ! अन्नया कदाइं पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि सन्निवइयंसि गंगाए महानदीए अदूरसामंते बहूहिं हत्थीहिं जाव कलभियाहि य सत्तहि य हत्थिसएहिं संपरिवुडे एगं महं जोयणपरिमंडलं महतिमहालयं मंडलं घाएसि, जं तत्थ तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा कंटए वा लया वा वल्ली वा खाणुं वा रुक्खे वा खुवे वा, तं सव्वं तिखुत्तो आहुणिय आहुणिय पाएण उद्धवेसि हत्थेणं गेण्हसि एगंते पाडेसि ।

अर्थ—त्यारपछी हे मेघ ! तुं एकदा कदाचित् प्रथम वर्षाकाळने विषे महा वृष्टिकाय पडते सते (घणो वरसाद वरसते सते) गंगा नामनी महानदीनी समीपे घणा हाथीओवडे यावत् हाथणीओवडे एटले सात सो हाथीओवडे परिवर्यो सतो एक योजन प्रमाण मोटा घेरावावाळा अति मोटा मंडळने (तुं) करतो हवो. ते मंडळमां जे कांइ तृण, पर्ण, काष्ठ, कांटा, लता, वेला, ठुंठा, वृक्ष, नाना वृक्ष हता, ते सर्वने त्रणवार हलावी हलावीने पगवडे उखेडी हाथवडे (सूंढवडे) उपाडी एकांतमां (एक स्थाने) तुं नांखतो हवो.

मू०—तते णं तुमं मेहा ! तस्सेव मंडलस्स अदूरसामंते गंगाए महानदीए दाहिणिल्ले कूले विंझगिरिपायमूले गिरीसु य जाव विहरसि ।

अर्थ—त्यारपछी हे मेघ ! तुं ते ज मंडळनी समीपे गंगा महानदीने दक्षिण कांठे विंध्याचळ पर्वतना पादमूळमां (समीपमां) पर्वत विगेरेने विषे यावत् विचरवा लाग्यो.

मु०—तते णं मेहा ! अन्नया कदाइ मज्झिमए वरिसारत्तंसि महाविट्ठिकायंसि संनिवइयंसि जेणेव से मंडले तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता दोच्चं पि मंडलं घाएसि । एवं चरिमे वासारत्तंसि महावुट्ठिकायंसि सन्निवइयमाणंसि जेणेव से मंडले तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता तच्चं पि

मंडलघायं करेसि। जं तत्थ तणं वा जाव सुहंसुहेणं विहरासि।

अर्थ—त्यारपछी हे मेघ! एकदा कदाचित् मध्य वर्षाऋतुने विषे मोटो वृष्टिकाय पडते सते (घणो वरसाद वरसते सते) जे ठेकाणे ते मंडळ हतुं, त्यां तुं आव्यो, आवीने बीजीवार ते मंडळने साफ करतो हवो. एज प्रमाणे छेल्ली वर्षाऋतुमां महा वृष्टिकाय पडते सते जे ठेकाणे ते मंडळ हतुं, त्यां तुं आव्यो, आवीने त्रीजीवार ते मंडळने साफ करतो हवो. त्यां जे तृण विगेरे हतुं ते सर्व यावत् काढी नांखीने सुखे सुखे विचरवा लाग्यो.

मू०—अह मेहा! तुमं गइंदभावम्मि वट्टमाणो कमेणं नलिणिवणविवहणगरे हेमंते कुंदलोद्धउद्धततुसारपउरम्मि अतिक्कंते, अहिणवे गिम्हसमयंसि पत्ते, वियट्टमाणो वणेसु वणकरेणुविविहदिण्णकयपसवघाओ तुमं उउयकुसुमकयचामरकन्नपूरपरिमंडियाभिरामो मयवसविगसंतकडतडाकिलिन्नगंधमदवारिणा सुरभिजणियगंधो करेणुपरिवारिओ उउसमत्तजणितसोभो काले दिणयरकरपयंडे परिसोसियतरुवरसिहरभीमतरदंसणिज्जे भिंगारवंतभेरवरवे णाणाविहपत्तकट्ठतणकयवरुद्धतपइमारुयाइद्धनहयलदुमगणे वाउलियादारुणतरे तण्हावसदोसदूसियभमंतविविहसावयसमाउले भीमदरिसणिज्जे वट्टंते दारुणम्मि गिम्हे मारुतवसपसरपसरियवियंभिएणं अब्भहियभीमभेरवरवप्पगारेणं महु-

धारापडियसित्तउद्धायमाण[धग]धगधगंतसद्दुध्धुएणं दित्ततरसफुलिंगेणं धूममालाउलेणं सावयसयं-तकरणेणं अब्भहियवणदवेणं जालालोवियनिरुद्धधूमंधकारभीओ आयवालोयमहंततुंबइयपुन्नकन्नो आकुंचियथोरपीवरकरो भयवसभयंतदित्तनयणो वेगेण महामेहो व्व पवणोल्लियमहल्लरूवो जेणेव कओ ते पुरा दवग्गिभयभीयहियएणं अवगयतणप्पएसरुक्खो रुक्खोद्देसो दवग्गिसंताणकारणट्ठाए जेणेव मंडले तेणेव पहारेत्थ गमणाए । एक्को ताव एस गमो ।

अर्थ—हवे हे मेघ ! गजेंद्रपणामां वर्ततो तुं अनुक्रमे कमलिनीना वननो विनाश करनार, कुंदपुष्प अने खीलेला लोध्रवृक्षवडे समृद्धिवाळो तथा अत्यंत हिमवाळो हेमंत (शीत) ऋतु व्यतीत थयो अने नवीन ग्रीष्म ऋतुनो समय प्राप्त थयो त्यारे वनोने विषे विचरतो हतो, त्यां क्रीडा करतां वननी हाथणीओ तारी उपर विविध प्रकारना कमळ अने पुष्पोनो प्रहार करती हती, ते ऋतुमां उत्पन्न थयेला पुष्पोवडे करेला चामरना जेवा कर्णाभरणे करीने तुं मंडित अने मनोहर थयो, मदना वशथी विकस्वर थयेला गंडस्थळने आर्द्र करनार झरता सुगंधि मदजळे करीने तुं सुगंधमय बन्यो, ते वखते हाथणीओवडे परिवरेला तारी समस्त प्रकारे ऋतु संबंधी सारी शोभा उत्पन्न थइ. जे ग्रीष्म काळने विषे सूर्यना प्रचंड

१ वायणो० इति पाठान्तरम्.

किरणो पडता हता, जेथे श्रेष्ठ वृक्षोना शिखरोने अत्यंत शुष्क (नीरस) कर्या हता, जे अत्यंत भयंकर देखातो हतो, जेमां शब्द करता भृंगार जातिना पक्षीओ भयंकर शब्द करता हता, जेमां नाना प्रकारना पत्र, काष्ठ, तृण अने कचराने उडाडनार प्रतिकूळ वायुवडे आकाशतळ अने वृक्षनो समूह व्याप्त थयो हतो, वींटोळीया वडे जे भयंकर देखातो हतो, तृषाना वशथी उत्पन्न थयेला वेदनादिक दोषोथी दूषित थयेला अने तेथी करीने ज आमतेम भमता श्वापद (शिकारी पशुओ) वडे जे व्याप्त थयो हतो, तेथी ज जेनुं दर्शन भयंकर हतुं, आवो ग्रीष्मऋतु अत्यंत अधिक उत्पन्न थयेला दावानळ वडे अति भयंकर देखावा लाग्यो. ते दावानळ वायुना वशथी प्राप्त थयेला प्रचारवडे प्रसरेलो अने विकास पामेलो (बळवान थयेलो) हतो, ते दावानळना शब्दनो प्रकार अत्यंत अधिक भयंकर हतो, वृक्षोपरथी मधनी धारा पडवावडे सींचन थयेलो होवाथी ते अत्यंत वृद्धि पामीने धगधगायमान (जाज्वल्यमान) अने शब्दवडे उद्धत थतो हतो (देखातो हतो), वळी ते दावानळ अत्यंत देदीप्यमान, स्फुलिंग (तणखा) सहित अने धूमनी श्रेणिवडे व्याप्त हतो, तथा सेंकडो श्वापदोनो अंत करनार हतो, आवा अत्यंत अधिकपणाने पामेला दावानळवडे ते ग्रीष्मऋतु अत्यंत भयंकर देखातो हतो (एम पूर्वे संबंध करवो). आ समये हे मेघ ! ते दावानळनी ज्वाळावडे तुं आलोपित (आच्छादित) थयो, रुंधायो एटले इच्छित दिशामां जवाने असमर्थ होवाथी तुं निवारण करायो, अने धूमाडाथी उत्पन्न थयेला अंधकारथी तुं भय पाम्यो, तथा अग्निनो आताप जोवाथी तारा मोटा बे कान अरघट्टना तुंबनी जेम पुण्य एटले स्तब्ध थया, तारी जाडी अने मोटी सूंढ संकोच पामी, तारा देदीप्यमान नेत्रो भयना वशथी दिशाओने भजवा लाग्या (चोतरफ जोवा लाग्या), जेम वायु-

वडे महामेघनुं स्वरूप मोटुं थाय छे तेम ते वखते वेगवडे तारुं मोटुं स्वरूप थयुं, प्रथम दावाग्निना भयथी भीति पामेला हृदयवाळा तें दावाग्निथी पोतानुं रक्षण करवाने कारणे जे दिशामां तृण, तृणना प्रदेशो (मूळीयां विगेरे) अने वृक्षो दूर करीने रुक्ष (उज्जड) प्रदेश कर्यो हतो, तथा जे दिशामां ते मंडळ हतुं. त्यां ज जवाने माटे तें निश्चय कर्यो (तुं घणा हाथीओ विगेरे सहित दोड्यो). आ प्रथम आलापक कोइ आचार्यना मते कह्यो छे.

मू०—तते णं तुमं मेहा ! अन्नया कयाइं कमेणं पंचसु ऊउसु समतिक्कंतेसु गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूले मासे पायवसंघससमुट्ठिएणं जाव संवट्टिएसु मियपसुपक्खिसिरीसिवे दिसो दिसिं विप्पलायमाणेसु तेहिं बहूहिं हत्थीहि य सद्धिं जेणेव मंडले तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

(आ हकीकत बीजा आचार्यना मते कहे छे.)

अर्थ—त्यारपछी तुं हे मेघ ! एकदा कदाचित् अनुक्रमे पांच (प्रावृट् ऋतु, वर्षा ऋतु, शरद ऋतु, हेमंत ऋतु अने वसंत ऋतु) ऋतुओ व्यतीत थइ अने ग्रीष्म काळना समयने विषे ज्येष्ठ मास प्राप्त थयो त्यारे वांस विगेरे वृक्षोना परस्पर घसावाथी उत्पन्न थयेल दावानळवडे यावत् घणो अग्नि वृद्धि पामे सते मृग, पशु, पक्षी अने सरीसृप (सर्प) विगेरे नासवा लाग्या, त्यारे तुं पूर्वे कहेला घणा हाथी विगेरेनी साथे ज्यां ते मंडळ हतुं त्यां जवाने दोड्यो. (आ बीजो गमो छे.)

मू०—तत्थ णं अण्णे बहवे सीहा य वग्घा य विगया दीविया अच्छा य रिंछतरच्छा य पारा-

सरा य सरभा य सियाला विराला सुणहा कोला ससा कोकंतिया चित्ता चिल्लला पुव्वपविट्ठा अग्गिभयविद्दुया एगयाओ बिलधम्मेणं चिट्ठंति ।

अर्थ—ते मंडळमां बीजा घणा सिंह, वाघ, वरगडा (वरु), दीपिका (चित्रा), अच्छा, रींछ, तरच्छा, शरभ (अष्टापद मृग), शियाळ, विराल, (सुवर), कूतरा, कोल, ससला, कोकंतिक (लोमटक), चित्ता अने चिल्ललगा विगेरे पशुओ अग्निना भयथी पराभव पामी प्रथमथी आवीने रहेला हता, तेओ एक ठेकाणे बिलना धर्मवडे रहेला छे एटले जेम एक बिलमां घणा मकोडा विगेरे रहे छे तेम ते सर्वे संकोचाइने रहेला हता.

मू०—तए णं तुमं मेहा ! जेणेव से मंडले तेणेव उवागच्छासि, उवागच्छित्ता तेहिं बहूहिं सीहेहिं जाव चिल्ललएहि य एगयओ बिलधम्मेणं चिट्ठसि ।

अर्थ—त्यारपछी तुं हे मेघ ! जे ठेकाणे ते मंडळ हतुं ते ठेकाणे आव्यो, आवीने ते घणा सिंहो यावत् चिल्ललगा विगेरेनी साथे एक ठेकाणे बिलधर्मवडे संकोचाइने रह्यो.

मू०—तते णं तुमं मेहा ! पाएणं गत्तं कंडुइस्सामीति कट्टु पाए उक्खित्ते, तेसिं च णं अंतरंसि अन्नेहिं बलवंतेहिं सत्तेहिं पणोलिज्जमाणे पणोलिज्जमाणे ससए अणुपविट्ठे ।

अर्थ—त्यारपछी तें हे मेघ ! 'पगवडे हुं शरीरने खजवाळीश' एम धारीने एक पग उंचो कर्यो, ते आंतराने विषे एटले ते पगनी जग्याए बीजा बळवंत प्राणीओनी धकाधकीने लीधे एक ससलो आवीने रह्यो.

मू०—तते णं तुमं मेहा ! गायं कंडुइत्ता पुणरवि पायं पडिनिक्खमिस्सामि त्ति कट्टु तं ससयं अणुपविट्ठं पाससि, पासित्ता पाणाणुकंपयाए भूयाणुकंपयाए जीवाणुकंपाए सत्ताणुकंपयाए सो पाए अंतरा चेव संधारिए, नो चेव णं णिक्खित्ते।

अर्थ—त्यारपछी तें हे मेघ ! गात्रने खजवाळीने पछी फरीने पगने हुं पाछो मूकुं एम विचार्युं. त्यां तो ते ससलाने ते स्थाने पेठेलो जोयो, जोइने द्वींद्रियादिक प्राणोनी अनुकंपावडे, वनस्पतिरूप भूतनी अनुकंपावडे, पंचेंद्रियरूप जीवोनी अनुकंपावडे अने वनस्पति सिवाय बिजा पृथ्वीकायादिक सत्त्वोनी अनुकंपावडे ते पगने तें वच्चे ज (अधर ज) धारण करी राख्यो, परंतु नीचे मूक्यो ज नहीं.

मू०—तते णं तुमं मेहा ! ताए पाणाणुकंपयाए जाव सत्ताणुकंपयाए संसारे परित्तीकते माणुस्साउए निबद्धे।

अर्थ—त्यारपछी तें हे मेघ ! ते प्राणोनी अनुकंपावडे यावत् सत्त्वोनी अनुकंपावडे संसारने परित्त (परिमित) कर्यो, अने मनुष्यनुं आयुष्य बांध्युं.

मू०—तते णं से वणदवे अड्ढातिज्जातिं रातिंदियाइं तं वणं झामेइ, निट्ठिए, उवरए, उवसंते, विज्झाए यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते वननो दावानळ अढी रात्रि दिवस सुधी ते वनने बाळीने स्वयमेव ओलवाइ गयो, निष्ठाने पाम्यो एटले पोतानुं कार्य करीने कृतार्थ थयो, उपराम पाम्यो एटले बाळवाना पदार्थोना अभावने लीधे पाछो फर्यो, अर्थात् बुझायो. ज्वाळा शांत थवाथी उपशांत थयो अने विध्यात थयो एटले अंगारा अने तणखा विगेरेनो अभाव थवाथी सर्वथा ओलवाइ गयो.

मू०—तते णं ते बहवे सीहा य जाव चिल्लला य तं वणदवं निट्ठियं जाव विज्झायं पासंति, पासइत्ता अग्गिभयविप्पमुक्का तण्हाए य छुहाए य परब्भाहया समाणा ताओ मंडलाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता सव्वओ समंता विप्पसरित्था, [तए णं ते बहवे हत्थि जाव छुहाए य परब्भाहया समाणा तओ मंडलाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता दिसो दिसिं विप्पसरित्था]।

अर्थ—त्यारपछी ते घणा सिंहो विगेरे यावत् चिल्ललगा विगेरे पशुओए ते वनना दावानळने निष्ठित थयेलो यावत् सर्वथा ओलवाइ गयेलो जोयो, जोइने अग्निना भयथी मुक्त थया, अने तृषा, क्षुधाए पराभव (पीडा) पाम्या सता ते मंडल-

मांथी बहार नीकळ्या, बहार नीकळीने एकदम चोतरफ फरवा लाग्या. [त्यारपछी ते घणा हाथीओ विगेरे यावत् क्षुधा-तृषावडे पराभव (पीडा) पाम्या सता ते मंडळमांथी बहार नीकळ्या. बहार नीकळीने दिशा विदिशामां फरवा लाग्या.]

मू०—तए णं तुमं मेहा ! जुन्ने जराजज्जरियदेहे सिढिलवलितयापिणिद्धगत्ते दुब्बले किलंते जुंजिए पिवासिते अत्थामे अबले अपरक्कमे अचंकमणो वा ठाणुखंडे वेगेण विप्पसरिस्सामि त्ति कट्टु पाए पसारेमाणे विज्जुहते विव रयतगिरिपब्भारे धरणितलंसि सव्वंगेहि य सन्निवइए ।

अर्थ—त्यारपछी तुं हे मेघ ! जीर्ण (वृद्ध), जरावडे जर्जरित शरीरवाळो, शिथिल अने वळीयांवाळी चामडीवडे व्याप्त गात्रवाळो, दुर्बळ, क्लांत (थाकी गयेलो), क्षुधा पामेलो, तरस्यो थयेलो, अस्थाम एटले शरीरना बळ रहित, अबळ एटले टेका रहित होवाथी बळ रहित, अपराक्रम एटले चालवानी हिंमत रहित, अचंक्रमण एटले चालवानी शक्ति रहित तथा स्थाणुखंड एटले निरंतर उभा रहेवाए करीने वृक्षना ठुंठानी जेम स्तंभित (अक्कड) गात्रवाळो थयो हतो. तेथी 'हुं वेगे करीने चालुं' एम धारीने तें जेटलामां तारो पग पसार्यो तेटलामां वीजळीथी हणायेला रजतगिरिना प्राग्भारनी (शिखरनी) जेम तुं पृथ्वीतळने विषे सर्व अंगोए करीने पडी गयो.

---

१ रुपाना पर्वतनो प्राग्भार एटले कोइक नमेलो प्रदेश. ते प्राग्भार मोटो होवाथी अहीं हाथीने उपमा दीधी छे, रुपाना श्वेतगुणने लइने उपमा आपी नथी. केमके आ हाथीनो वर्ण रक्त कह्यो छे तेथी अथवा मतांतरे आ हाथीने श्वेत पण कह्यो छे.

मू०—तते णं तव मेहा ! सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूआ उज्जला जाव दाहवक्कंतिए यावि विहरसि। तते णं तुमं मेहा ! तं उज्जलं जाव दुरहियासं तिन्नि राइंदियाइं वेयणं वेएमाणे विहरित्ता एगं वाससतं परमाउं पालइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नयरे सेणितस्स रन्नो धारिणीए देवीए कुच्छिंसि कुमारत्ताए पच्चायाए ॥ २७ ॥

अर्थ—त्यारपछी हे मेघ ! तारा शरीरने विषे उज्वळ (उग्र) वेदना उत्पन्न थइ यावत् दाहज्वर उत्पन्न थयो, एवी अवस्थाए तुं त्यां ज रह्यो. त्यारपछी हे मेघ ! तुं उज्वळ (उग्र) यावत् दुःखे करीने सहन थाय तेवी वेदनाने त्रण रात्रि दिवस सुधी वेदीने—अनुभवीने छेवट एक सो वर्षनुं पूर्ण आयुष्य पाळीने आ ज जंबूद्वीप नामना द्वीपना भरतक्षेत्रने विषे राजगृह नगरमां श्रेणिक राजाथकी धारिणी देवीनी कुक्षिने विषे कुमारपणे उत्पन्न थयो. २७.

मू०—तते णं तुमं मेहा ! आ (अ) णुपुव्वेणं गब्भवासाओ निक्खंते समाणे उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुपत्ते मम अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए। तं जति जाव तुमे मेहा ! तिरिक्खजोणियभावमुवागएणं अप्पाडिलद्धसम्मत्तरयणलंभेणं से पाए पाणाणुकंपयाए जाव अंतरा चेव संधारिते, नो चेव णं निक्खित्ते, किमंग पुण तुमं मेहा ! इयाणिं विपुलकुलसमुब्भवे

णं निरुवहयसरीरदंतलद्धपंचिंदिए णं एवं उट्ठाणबलवीरियपुरिसगा (क्का) रपरक्कमसंजुत्ते णं मम अंतिए मुंडे भवित्ता आगारातो अणगारियं पव्वतिए समाणे समणाणं निग्गंथाणं राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वायणाए जाव धम्माणुओगचिंताए य उच्चारस्स वा पासवणस्स वा अतिगच्छमाणाण य निग्गच्छमाणाण य हत्थसंघट्टणाणि य पायसंघट्टणाणि य जाव रयरेणुगुंडणाणि य नो सम्मं सहासि खमसि तितिक्खसि अहियासेसि ।

अर्थ—त्यारपछी हे मेघ ! तुं अनुक्रमे गर्भावासथी बहार नीकळ्यो (जन्म्यो), बाल्यावस्थाथी मुक्त थयो, अने युवावस्थाने पाम्यो, त्यारे तुं मारी पासे मुंड थइ गृहवासथी अनगार (साधु) पणाने पाम्यो. हवे ज्यारे हे मेघ ! तुं तिर्यंच योनिने पामेलो हतो त्यारे तने सम्यक्त्व रत्ननो लाभ पण थयो न होतो. छतां ते वखते तें तारो ते पग प्राणीओनी उपर अनुकंपाने लीधे उंचो ज धारण करी राख्यो हतो, पृथ्वीपर स्थापन कर्यो न हतो, तो पछी हे मेघ ! हमणां तो तुं विशाळ कुळमां उत्पन्न थयो छे, उपद्रव रहित शरीरने तुं पामेलो छे, प्रथमथी ज पांचे इंद्रियोने तें दम्या छे एटले उपशम पमाडया छे, तेज प्रमाणे तुं उत्थान[1], बळ[2], वीर्य[3], पुरुषकार[4] अने पराक्रमथी[5] युक्त छे, आवा प्रकारना तें मारी पासे मुंड थइ अगार-

१ असुक प्रकारनी शरीरनी चेष्टा. २ शरीर संबंधी बळ. ३ आत्मा संबंधी वीर्य. ४ असुक प्रकारनुं अभिमान. ५ फळने—कार्यने साधनार पराक्रम.

वासथी नीकळी अनगारपणुं अंगीकार कर्युं छे, छतां पहेली अने पाछली रात्रिने समये श्रमण निर्ग्रंथो वाचनाने माटे यावत् धर्मानुयोगना चिंतवनने माटे तथा उच्चारप्रस्रवणने[१] माटे आवता हता अने जता हता (नीकळता हता) ते वखते तने तेमना हस्तनो स्पर्श थयो हतो, पगनो स्पर्श थयो हतो, यावत् रजरेणुथी तुं भराइ गयो हतो, ते सर्वने निर्भयपणे तुं सहन करी शक्यो नहीं, क्षोभ पाम्या विना खमी शक्यो नहीं, दीनता रहितपणे तितिक्षा (सहन) करी शक्यो नहीं, अने शरीरने निश्चळ राखी अध्यास (सहन) करी शक्यो नहीं.

मू०—तते णं तस्स मेहस्स अणगारस्स समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए एतमट्ठं सोच्चा णिसम्म सुभेहिं परिणामेहिं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहावूहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स सन्निपुव्वे जातीसरणे समुप्पन्ने, एतमट्ठं सम्मं अभिसमेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमार अणगारने श्रमण भगवान महावीरस्वामीनी पासेथी आ अर्थ(वृत्तांत) सांभळी शुभ परिणामवडे, प्रशस्त अध्यवसायवडे, विशुद्ध लेश्यावडे अने जातिस्मरणज्ञानावरणीय कर्मना क्षयोपशमवडे ईहा, अपोह, मार्गणा अने गवेषणा करतां संज्ञी पूर्व एटले संज्ञी जीवोने थनारुं जातिस्मरण उत्पन्न थयुं. तेथी ते अर्थ (पूर्वभवनो वृत्तांत) तेणे सम्यक् प्रकारे जाण्यो.

१ वडीनीति लघुनीतिने माटे—ठल्लामात्राने माटे.

मू०-तते णं से मेहे कुमारे समणेणं भगवया महावीरेणं संभारियपुव्वजातीसरणे दुगुणाणीयसंवेगे आणंदयंसुपुन्नमुहे हरिसवसेणं धाराहयकदंबकं पिव समुस्ससितरोमकूवे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमारने श्रमण भगवान महावीर स्वामीए पूर्वना बे भवने संभारी आप्या तेथी तेने बमणो संवेग प्राप्त थयो, आनंदना अश्रुवडे तेनुं मुख भराइ गयुं, अने हर्षना वशवडे मेघधाराथी हणायेला कदंब वृक्षना पुष्पनी जेम तेना रोमांच विकस्वर थया, एटले तेणे श्रमण भगवान महावीरने वंदना करी, नमस्कार कर्या, तथा वांदीने नमीने आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०-" अज्जप्पभिती णं भंते ! मम दो अच्छीणि मोत्तूणं अवसेसे काए समणाणं णिग्गंथाणं निसट्ठे " त्ति कट्टु पुणरवि समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी

अर्थ—" हे भगवान् ! आजथी आरंभीने मात्र मारां बे नेत्रोने छोडी बाकीनुं समग्र शरीर श्रमण निर्ग्रंथो (साधुओ)-ने हुं अर्पण करी दउं छुं. " एम कही फरीथी पण श्रमण भगवान् महावीर स्वामीने तेणे वंदना करी, नमस्कार कर्या, वांदीने अने नमीने आ प्रमाणे कह्युं.

मू०—" इच्छामि णं भंते ! इयाणिं सयमेव दोच्चं पि पव्वावियं सयमेव मुंडावियं जाव सयमेव आयारगोयरं जायामायावत्तियं धम्ममातिक्खह "।

अर्थ—" हे भगवान् ! हुं इच्छुं छुं के हमणां आप पोते ज बीजीवार मने प्रव्रज्या आपो, पोते ज मने मुंड करो, यावत् आप पोते ज ज्ञानादिक आचार, गोचर—गोचरीने माटे फरवुं ते, यात्रा—पिंडविशुद्ध्यादिक संयमयात्रा अने मात्रा—प्रमाणोपेत आहार ग्रहण विगेरे जेमां वर्ते छे एवा श्रमण धर्मनो मने उपदेश आपो. "

मू०—तए णं समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं सयमेव पव्वावेइ जाव जायामायावत्तियं धम्ममाइक्खइ—" एवं देवाणुप्पिया ! गंतव्वं, एवं चिट्ठियव्वं, एवं णिसीयव्वं, एवं तुयट्टियव्वं, एवं भुंजियव्वं, एवं भासियव्वं, उट्ठाय उट्ठाय पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं संजमेणं संजमियव्वं "।

अर्थ—त्यारपछी श्रमण भगवान् महावीर स्वामीए मेघकुमारने पोते ज फरीने प्रव्रज्या आपी, यावत् संयम यात्रा अने आहार मात्रा—प्रमाण जेमां वर्ते छे एवा धर्मनो उपदेश कर्यो, के—" हे देवानुप्रिय ! तारे आ प्रमाणे—धूसरा प्रमाण पृथ्वीपर दृष्टि राखीने चालवुं, आ प्रमाणे—भूमिने पुंजीने उभा रहेवुं, आ प्रमाणे—भूमिने प्रमार्जीने बेसवुं, आ प्रमाणे—भूमि तथा शरीरने पुंजीने सुवुं, आ प्रमाणे—दोष रहित आहार करवो, अने आ प्रमाणे—भाषासमिति पूर्वक बोलवुं. उठी उठीने एटले यतनापूर्वक प्राण, भूत, जीव अने सत्त्वोनी रक्षारूप संयमने विषे सम्यक् प्रकारे उद्यम करवो. "

मू०—तते णं से मेहे समणस्स भगवतो महावीरस्स अयमेयारूवं धम्मियं उवएसं सम्मं पडिच्छात्ति, पडिच्छित्ता तह चिट्ठति जाव संजमेणं संजमति ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघ साधुए श्रमण भगवान् महावीर स्वामीना कहेला आवा प्रकारना धर्म संबंधी उपदेशने सम्यक् प्रकारे अंगीकार कर्यो. अंगीकार करीने ते प्रकारे चेष्टा करवा लाग्यो—वर्तवा लाग्यो यावत् संयमने विषे उद्यम करवा लाग्यो.

मू०—तते णं से मेहे अणगारे जाए इरियासमिए, अणगारवन्नओ भाणियव्वो ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघकुमार इर्यासमिति विगेरेवडे युक्त एवो अनगार-साधु थयो. अहीं अनगारनुं वर्णन कहेवुं. (उववाय सुत्रमांथी जाणवुं.)

मू०—तते णं से मेहे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एतारूवाणं थेराणं सामातियमातियाणि एक्कारस अंगातिं अहिज्जाति, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहराति ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघ अनगार (साधु) श्रमण भगवान् महावीर स्वामीनी समीपे रही तेवा प्रकारना स्थविर

मुनिओनी पासे सामायिक विगेरे अग्यार अंगोने भण्या, भणीने घणा चतुर्थ (उपवास), छठ, अठम, दशम (चार उपवास), द्वादश (पांच उपवास) विगेरेवडे तथा अर्धमासक्षमण मासक्षमण विगेरे तपवडे आत्माने भावता सता विहरवा लाग्या.

मू०—तते णं समणे भगवं महावीरे रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेतियाओ पडिनिक्खमाति, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहराति ॥ २८ ॥

अर्थ—त्यारपछी श्रमण भगवान महावीर स्वामी राजगृह नगरमांथी अने गुणशैल नामना चैत्य थकी नीकळ्या, नीकळीने अन्य अन्य देशना विहारने करवा लाग्या. २८

मू०—तते णं से मेहे अणगारे अन्नया कदाइ समणं भगवं महावीरं वदंति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—" इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाते समाणे मासिअं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए " । " अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह " ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघ अनगारे एकदा कदाचित् श्रमण भगवान महावीर स्वामीने वांद्या, नमस्कार कर्या, वांदीने नमस्कार करीने आ प्रमाणे कह्युं—" हुं इच्छुं छुं के हे भगवान ! हुं तमारी आज्ञा पाम्यो सतो एक मासना प्रमाणवाळी भिक्षु प्रतिमाने अंगीकार करी विचरुं. " भगवाने कह्युं—" हे देवानुप्रिय ! तने जेम सुख उपजे तेम कर, प्रतिबंध एटले

इच्छित कार्यनो विघात न कर अर्थात् तेमां विलंब न कर."

मू०—तते णं से मेहे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुन्नाते समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरति, मासियं भिक्खुपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं सम्मं काएणं फासेति पालेति सोभेति तीरेति किट्टेति, सम्मं काएण फासित्ता पालित्ता सोभेत्ता तीरेत्ता किट्टेत्ता पुणरवि समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते मेघ अनगार श्रमण भगवान महावीर स्वामीवडे आज्ञा पाम्या सता एक मासनी भिक्षु प्रतिमाने अंगीकार करी विचरवा लाग्या. एक मासनी भिक्षु प्रतिमाने यथासूत्र—सूत्रमां कह्या प्रमाणे, यथाकल्प—प्रतिमाना आचारमां कह्या प्रमाणे अने यथामार्ग—ज्ञानादि मार्ग प्रमाणे अथवा पोताना क्षायोपशममिक भाव प्रमाणे मात्र मनोरथवडे ज नहीं पण सम्यक् प्रकारे कायाए करीने उचित काळे विधिपूर्वक ग्रहण करवाथी प्रतिमाने स्पर्श करता हता, वारंवार उपयोगवडे जागता होवाथी तेने पाळता हता, पारणाने दिवसे (वहोरी लावी तेमांथी प्रथम) गुरुने आपी बाकीनो आहार करवाथी शोभावता हता, अथवा अतिचाररूप पंकने धोवाथी शुद्ध करता हता, प्रतिमानो काळ पूर्ण थया छतां पण थोडो काळ प्रतिमामां रहेवाथी तरी जता हता, तथा 'में आ प्रतिमानुं अमुक अमुक कृत्य कर्युं छे' एम पारणाने दिवसे ते कीर्तन करता हता. आ प्रमाणे सम्यक् प्रकारे कायावडे प्रतिमाने स्पर्श करी, पाळी, शोभावी, तरी तथा कीर्तन करी

फरीने ते मेघ अनगारे श्रमण भगवान महावीर स्वामीने वंदना करी, नमस्कार कर्या, अने वांदी तथा नमी आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—“ इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाते समाणे दोमासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ”। “ अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ”। जहा पढमाए अभिलावो तहा दोच्चाए तच्चाए चउत्थाए पंचमाए छम्मासियाए सत्तमासियाए पढमसत्तराइंदियाए दोच्चं सत्तराइंदियाए तइयं सत्तराइंदियाए अहोरातिंदियाए वि एगराइंदियाए वि।

अर्थ—“ हुं इच्छुं छुं के हे भगवान ! हुं तमोए अनुज्ञा आप्यो सतो बे मासनी बीजी भिक्षु प्रतिमाने अंगीकार करी विचरुं. ” भगवान बोल्या–“ हे देवानुप्रिय ! जेम सुख उपजे तेम कर. प्रतिबंध (इच्छित कार्यनो विघात) न कर. ” जे प्रमाणे पहेली प्रतिमाने विषे अभिलाप (आलावो) कह्यो, ते ज प्रमाणे बीजी प्रतिमा बे मासनी, त्रीजी त्रण मासनी, चोथी चार मासनी, पांचमी पांच मासनी. छठ्ठी छ मासनी, सातमी सात मासनी, त्यारपछी पहेली एटले आठमी सात रात्रिदिवसनी, बीजी एटले नवमी सात रात्रिदिवसनी, त्रीजी एटले दशमी पण सात रात्रिदिवसनी, पछी अग्यारमी पडिमा एक रात्रिदिवसनी अने छेल्ली बारमी पडिमा एक रात्रिदिवसनी (एक रात्रिनी) ज कहेवी.

जे साधु उच्च संहनन अने धृतियुक्त होय, मोटा सत्त्ववाळा होय, अने जेनो आत्मा भावित होय, ते ज गुरुनी आज्ञाथी आ बार पडिमाओने अंगीकार करी शके छे. आ पडिमा वहन करनार साधु गच्छवासी ज होवा जोइए (अर्थात् जिनकल्पी न होय), ते न्यून दश पूर्व भणेला होवा जोइए, तेने जघन्यथी नवमा पूर्वनी त्रीजी वस्तु सुधी श्रुतनो अभ्यास होवो जोइए, आ पडिमावाही साधु जिनकल्पीनी जेम कायोत्सर्ग वडे (अमुक वखत सुधी) देहनो त्याग करे छे, उपसर्गोने सहन करे छे, तेनी एषणा अभिग्रह सहित होय छे (एटले के पहेली पडिमाने विषे आहार अने पाणीनी एक एक दत्ती, बीजीने विषे बबे दत्ती, त्रीजीने विषे त्रण त्रण दत्ति विगेरे). दुष्ट हाथी घोडा विगेरे सन्मुख आवे तो पण भयथी एक पगलुं पण पाछा हठे नहीं. आ प्रमाणे नियमोनुं सेवन करता ते पडिमाधारी साधु परिपूर्ण मासादिक सुधी विचरे छे. आ प्रमाणे ग्रंथांतरमां कहेलो पडिमानो विधि जाणवो. अहीं शंका थाय के–आ मेघ अनगार अग्यार अंग ज भणेला हता तेथी ते पडिमाधारी केम थइ शके ? उत्तर ए छे जे–सर्वज्ञनी आज्ञा होवाथी थइ शके छे.

मू०–तते णं से मेहे अणगारे बारस भिक्खुपडिमाओ सम्मं काएणं फासेत्ता पालेत्ता सोभेत्ता तीरेत्ता किट्टेत्ता पुणरवि वंदति नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते मेघ अनगारे बार भिक्षुप्रतिमाओने सम्यक् प्रकारे कायावडे स्पर्श करी, पालन करी, शोभावी, तरी तथा कीर्तन करी फरीथी पण भगवानने वंदना करी, नमस्कार कर्या, वांदी नमस्कार करी आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—" इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे गुणरतणसंवच्छरं तवोकम्मं उवसंपाज्जित्ता णं विहरित्तए "। " अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह "

अर्थ—" हुं इच्छुं छुं के हे भगवान ! हुं तमोए अनुज्ञा आप्यो सतो गुणरत्नसंवत्सर नामनुं तपकर्म अंगीकार करीने विचरुं. " भगवान बोल्या–" हे देवानुप्रिय ! जेम सुख उपजे तेम कर. प्रतिबंध (इच्छित कार्यमां विलंब) न कर. "

जे तपने विषे त्रिभाग सहित एक वर्षे करीने विशेष प्रकारनी निर्जरारूप गुणोनी रचना करवामां आवे छे ते गुणरचनसंवत्सर नामनो तप कहेवाय छे, अथवा गुणरूपी रत्नो जे संवत्सरमां होय ते गुणरत्न संवत्सर कहेवाय छे, अने ते गुणरत्न संवत्सर जे तपने विषे होय ते गुणरत्नसंवत्सर नामनो तप कहेवाय छे. आ तपमां तेर मास अने सत्तर दिवस (उपवासना) थाय छे, अने तोंतेर दिवस पारणाना थाय छे. कुल सोळ मासे पूर्ण थाय छे. ते आ प्रमाणे—१५–२०–२४–२४–२५–२४–२१–२४–२७–३०–३३–२४–२६–२८–३०–३२ आटला तपना दिवसो (४०७) अनुक्रमे जाणवा, ते ज प्रमाणे पारणाना दिवसो अनुक्रमे—१५–१०–८–६–५–४–३–३–३–३–३–२–२–२–२–२ (७३) जाणवा. विशेष समजुति माटे नीचेनो यंत्र जुओ.—

मास	तप	तपोदिन	पारणादिन	कुल दिन.
१	उपवास	१५	१५	३०
२	छठ	२०	१०	३०
३	अट्ठम	२४	८	३२
४	४ उप.	२४	६	३०
५	५ उ०	२५	५	३०
६	६ उ०	२४	४	२८
७	७ उ०	२१	३	२४
८	८ उ०	२४	३	२७

मास	तप	तपोदिन	पारणादिन	कुल दिन.
९	९ उ०	२७	३	३०
१०	१० उ०	३०	३	३३
११	११ उ०	३३	३	३६
१२	१२ उ०	२४	२	२६
१३	१३ उ०	२६	२	२८
१४	१४ उ०	२८	२	३०
१५	१५ उ०	३०	२	३२
१६	१६ उ०	३२	२	३४
		४०७	७३	४८०

अहीं अष्ठम विगेरे तपमां दिवसो ओछा थता होय एटले के अष्ठमना पारणा सहित दिवसो ३२ थाय छे, ते बीजा (पछीना) मासमांथी बे दिवस लेवा. तथा जे मासमां कहेलो तप करतां दिवसो बाकी रहेता होय–वधता होय तो तेटला दिवसो पछीना मासमां भेळववा.

मू०–तते णं से मेहे अणगारे पढमं मासं चउत्थंचउत्थेणं अणिखित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउडएणं।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघ अनगार पहेले मासे निरंतर एक एक चोथभक्त एटले एकांतर उपवास नामना तपकर्मवडे विचरवा लाग्या. तेमां दिवसे उत्कट (गोदोहिक) आसने रहेवुं अने सूर्यनी सन्मुख आतापना लेवानी भूमिने विषे आतापना लेवा लाग्या. तथा रात्रे प्रावरण विना एटले शरीरे वस्त्र ओढ्या विना (उघाडे शरीरे) वीरासने रहेवा लाग्या. (पृथ्वीपर पग राखी सिंहासन उपर बेसे अने पछी सिंहासन लइ लेवामां आवे ए रीते अधर जे रहेवुं ते वीरासन कहेवाय छे.)

मू०–दोच्चं मासं छट्ठंछट्ठेणं० । तच्चं मासं अट्ठमंअट्ठमेणं० । चउत्थं मासं दसमंदसमेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउडएणं !

अर्थ—बीजे मासे छठ छठना तपवडे, त्रीजे मासे अठ्ठम अठ्ठमना तपवडे, चोथे मासे निरंतर दशम दशमना (चार चार उपवासना) तपकर्मवडे विचरवा लाग्या. तेमां दिवसे उत्कट आसने रही सूर्यनी सन्मुख आतापना भूमिने विषे आतापना लेवा लाग्या अने रात्रे प्रावरण विना वीरासने रहेवा लाग्या.

मू०—पंचमं मासं दुवालसमंदुवालसमेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउडएणं। एवं खलु एएणं अभिलावेणं छट्ठे चोद्दसमंचोद्दसमेणं, सत्तमे सोलसमंसोलसमेणं, अट्ठमे अट्ठारसमंअट्ठारसमेणं, नवमे वीसतिमंवीसतिमेणं, दसमे बावीसतिमंबावीसतिमेणं, एक्कारसमे चउवीसतिमंचउवीसतिमेणं, बारसमे छव्वीसतिमंछव्वीसातिमेणं, तेरसमे अट्ठावीसतिमंअट्ठावीसातिमेणं, चोद्दसमे तीसइमंतीसइमेणं, पंचदसमे बत्तीसतिमंबत्तीसातिमेणं, सोलसमे मासे चउत्तीसतिमंचउत्तीसातिमेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुएणं सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेण य अवाउडतेण य।

अर्थ—पांचमे मासे द्वादशम द्वादशम (पांच पांच उपवास) ना निरंतर तपकर्म करवा लाग्या. तेमां दिवसे उत्कट

आसने रही सूर्यनी सन्मुख आतापनाभूमिने विषे आतापना लेता हता अने रात्रे प्रावरण रहित वीरासने रहेता हता. आ प्रमाणे आ अभिलाप (आलावा) वडे छठ्ठे मासे चतुर्दशम चतुर्दशम (छ छ उपवास) ना निरंतर तपकर्मवडे, सातमे मासे सात सात उपवासना, आठमे मासे आठ आठ उपवासना, नवमे मासे नव नव उपवासना, दशमे मासे दश दश उपवासना, अग्यारमे मासे अग्यार अग्यार उपवासना, बारमे मासे बार बार उपवासना, तेरमे मासे तेर तेर उपवासना, चौदमे मासे चौद चौद उपवासना, पंदरमे मासे पंदर पंदर उपवासना अने सोळमे मासे सोळ सोळ उपवासना निरंतर तपकर्मवडे दिवसे उत्कट आसने सूर्यनी सन्मुख आतापना भूमिने विषे आतापना लेता हता अने रात्रे प्रावरण रहित वीरासने रहेता हता.

मू०—तते णं से मेहे अणगारे गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं अहासुत्तं जाव सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोभेइ तीरेइ किट्टेइ, अहासुत्तं अहाकप्पं जाव किट्टेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता बहूहिं छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरति ॥ २९ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते मेघ अनगारे उपर कह्या प्रमाणे गुणरत्नसंवत्सर अथवा गुणरचनसंवत्सर नामनुं तपकर्म सूत्रमां कह्या प्रमाणे यावत् सम्यक् प्रकारे कायावडे फरस्युं, पाळ्युं, शोभाव्युं, तर्युं (ओळंग्युं) अने कीर्तन कर्युं, तथा सूत्रमां कह्या प्रमाणे अने कल्पमां कह्या प्रमाणे यावत् कीर्तन करी (आराधी) श्रमण भगवान महावीर स्वामीने वंदना करी, नमस्कार

कर्या, वांदी नमस्कार करी घणा छठ, अठम, दशम (चार उपवास), द्वादशम (पांच उपवास) विगेरे तथा अर्धमासखमण, मासखमण विगेरे विचित्र प्रकारना तपकर्मवडे आत्माने भावता सता विचरवा लाग्या (रह्या). २६.

मू०—तते णं से मेहे अणगारे तेणं उरालेणं विपुलेणं सस्सिरीएणं पयत्तेणं पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं धन्नेणं मंगल्लेणं उदग्गेणं उदारएणं उत्तमेणं महाणुभावेणं तवोकम्मेणं सुक्के भुक्खे लुक्खे निम्मंसे निस्सोणिए किडिकिडियाभूए अट्ठिचम्मावणद्धे किसे धमणिसंतए जाते यावि होत्था।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघ अनगारनुं शरीर तेवा प्रकारना उराल—प्रधान, विपुल—घणा दिवसनो होवाथी विस्तीर्ण, सश्रीक—शोभावाळा, पयत्त—गुरुए आपेला अथवा प्रयत्नवाळा एटले प्रमाद रहित, बहुमानथी ग्रहण करेला, कल्याणकारक—नीरोगपणुं करनार, शिव—मोक्षना कारणभूत, धन्य—धनने आपनार, मंगल्य—पापनो नाश करनार, उदग्र—तीव्र, उदार—निःस्पृहपणुं होवाथी औदार्यवाळा, उत्तम—अंधकार (अज्ञान) रहित अने मोटा प्रभाववाळा तपकर्मवडे शुष्क—नीरस थयुं, भूखने लीधे भुक्ष थयुं, रुक्ष—चीकाश रहित लूखुं थयुं, मांस रहित थयुं, रुधिर रहित थयुं, बेसतां उठतां तेना हाडकां कडकड शब्द करवा लाग्या, तेनां हाडकां मात्र चामडाथी ज मढेलां रह्यां, तेनुं शरीर कृश थयुं, अने नसोथी व्याप्त पण थयुं.

मू०—जीवंजीवेणं गच्छति, जीवंजीवेणं चिट्ठति, भासं भासित्ता गिलायति, भासं भासमाणे गिलायति, भासं भासिस्सामि त्ति गिलायति ।

अर्थ—ते मेघ अनगार पोताना जीवना बळवडे चालता हता, अने जीवना ज बळवडे उभा रहेता हता. ते मुनि भाषा (वचन) बोल्या पछी ग्लानि पामता हता, भाषा बोलती वखते ग्लानि पामता हता, अने 'हुं भाषा बोलीश' एम विचारतां ज एटले भाषा बोल्या पहेलां पण ग्लानि पामता हता.

मू०—से जहा नामए इंगालसगडियाइ वा कट्ठसगडियाइ वा पत्तसगडियाइ वा तिलसगडियाइ वा एरंडकट्ठसगडियाइ वा उण्हे दिन्ना सुक्का समाणी ससद्दं गच्छइ ससद्दं चिट्ठति, एवामेव मेहे अणगारे ससद्दं गच्छइ ससद्दं चिट्ठइ, उवचिए तवेणं, अवचिते मंससोणिएणं, हुयासणे इव भासरासिपरिच्छन्ने तवेणं तेएणं तवतेयसिरीए अतीव अतीव उवसोभेमाणे उवसोभेमाणे चिट्ठति।

अर्थ—जेम कोइ कोलसानी भरेली गाडी, काष्ठ भरेली गाडी, पांदडां भरेली गाडी, तल भरेली गाडी अथवा एरंडना काष्ठनी भरेली गाडी तडके मूकीने सुकावी सती खडखड शब्द सहित चाले छे अने शब्द सहित उभी रहे छे, ते ज प्रमाणे मेघ अनगार हाडकांना खडखड शब्द सहित चालता हता अने शब्द सहित उभा रहेता हता. वळी ते साधु तपवडे वृद्धि पामता हता, मांस अने रुधिरवडे हानि पामता हता, भस्मना समूहथी ढंकायेला अग्निनी जेम तपरूपी तेजवडे दीपता हता, एटले के जेम भस्मथी ढंकायेलो अग्नि बहारथी तेज रहित छतां अंदर देदीप्यमान होय छे, तेम मेघ अनगार पण

१ तलना तलसरा.

मांसादिक रहित होवाथी बहारथी निरतेज देखाता हता, पण अंदर शुभध्यानरूप तपवडे दीपता हता. तेथी करीने तपस्तेजनी लक्ष्मीवडे अत्यंत शोभता शोभता रहेला हता.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे जाव पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दुतिज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणामेव रायगिहे नगरे जेणामेव गुणसिलए चेतिए तेणामेव उवागच्छति उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं उगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहराति।

अर्थ—ते काळे ते समये श्रमण भगवान महावीर स्वामी चतुर्विध संघनी तथा धर्मनी आदिने करनारा, तीर्थने करनारा, यावत् पूर्वानुपूर्वीए (अनुक्रमे) चालता, एक गामथी बीजे गाम अतिक्रमण करता (ओळंगता) अने सुखे सुखे विहार करता सता जे टेकाणे राजगृह नगर छे अने जे ठेकाणे गुणशैल नामनुं चैत्य छे, ते ज ठेकाणे आव्या, आवीने यथाप्रतिरूप (मुनिजनने योग्य) अवग्रहने—आवासने अनुज्ञापूर्वक ग्रहण करीने संयमवडे अने तपवडे पोताना आत्माने भावता सता रह्या.

मू०—तते णं तस्स मेहस्स अणगारस्स राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिते जाव समुपज्जित्था—

अर्थ—त्यारपछी ते मेघ अनगारने रात्रिने विषे पूर्वरात्रि अने पाछलीरात्रिना काळ समयने विषे एटले मध्यरात्रिने समये धर्म जागरिका प्रत्ये जागतां आवा प्रकारनो अध्यवसाय यावत् उत्पन्न थयो.—

मू०—एवं खलु अहं इमेणं उरालेणं तहेव जाव भासं भासिस्सामीति गिलामि, तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे सद्धा धिई संवेगे तं जाव ता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसगारपरक्कमे सद्धा धिई संवेगे जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहराति ताव ताव मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव तेयसा जलंते सूरे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता समणेणं भगवता महावीरेणं अब्भणुन्नायस्स समाणस्स सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहित्ता गोयमादिए समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य खामेत्ता तहारूवेहिं कडाईहिं थेरेहिं सद्धिं विउलं पव्वयं सणियं सणियं दुरूहित्ता सयमेव मेहघणसन्निगासं पुढविसिलापट्टयं पडिलेहित्ता संलेहणाझूसणाए झूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खितस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हुं आवा उराल-प्रधान तपवडे ते ज प्रमाणे सर्व कहेवुं यावत् 'हुं भाषा बोलीश' एम

विचारतां ज हुं ग्लानि पामुं छुं. ते कारण माटे प्रथम हजु सुधी मारे उठवानी शक्ति छे, क्रिया करवानी शक्ति छे, बळ, वीर्य, पुरुषकार, पराक्रम, श्रद्धा (वांछा), धृति (संतोष) अने संवेग पण छे, तो ज्यां सुधी मारे उठवानी शक्ति, कर्म करवानी शक्ति, बळ, वीर्य, पुरुषकार, पराक्रम, श्रद्धा, धृति अने संवेग छे, तथा ज्यां सुधी मारा धर्माचार्य, धर्मोपदेशक, श्रमण भगवान् महावीर गंधहस्तीनी जेवा अथवा क्षायिक ज्ञानादिक शुभ अर्थवाळा जिनेश्वर विचरे छे, त्यां सुधीमां मारे काले रात्रि प्रभातरूप प्रगट थाय त्यारे यावत् तेजवडे सूर्य देदीप्यमान थाय त्यारे श्रमण भगवान महावीर स्वामीने वंदना करी नमस्कार करी श्रमण भगवान महावीर स्वामीनी आज्ञा लइ हुं पोते ज पांच महाव्रतो प्रत्ये आरोहण करी (पंच महाव्रतो फरीने अंगीकार करी) गौतमादिक सर्व श्रमण निर्ग्रंथोने तथा निर्ग्रंथी (साध्वी)ओने खमावी तेवा प्रकारना अने योगवहनादिक क्रियाओ जेमणे करेली छे एवा स्थविर साधुओनी साथे विपुल नामना पर्वत उपर धीमे धीमे आरूढ थइ (चडी) हुं पोते ज गाढ (निबिड) मेघनी जेवा काळा पृथ्वीशिलापट्टकने पडिलेही संलेखना[1] अंगीकार करी भक्त-पाननुं प्रत्याख्यान करी पादपोपगमन अनशन ग्रहण करी मृत्युनी पण इच्छा राख्या विना मारे विचरवुं श्रेयस्कर छे.

मू०—एवं संपेहेइ, संपेहइत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आदाहिणं पदाहिणं

१ कषाय अने शरीरने कृश करनार तप विशेष.

करेइ, करित्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासन्ने नातिदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिपुडे पज्जुवासति ।

अर्थ—आ प्रमाणे एटले उपर कह्या प्रमाणे ते मेघ अनगारे विचार कर्यो, विचार करीने काले (बीजे दिवसे) रात्रि प्रगट प्रभातरूप थइ त्यारे यावत् सूर्य देदीप्यमान थयो त्यारे जे ठेकाणे श्रमण भगवान महावीर स्वामी हता, ते ठेकाणे आव्या, आवीने श्रमण भगवान महावीरने त्रण वार दक्षिण (जमणी बाजु) थी आरंभीने पाछा दक्षिण सुधी आववारूप प्रदक्षिणा करी, प्रदक्षिणा करीने वंदना करी, नमस्कार कर्या, वंदना अने नमस्कार करी भगवानने अति समीपे नहीं तेम ज अति दूर नहीं एवा योग्य प्रदेशमां रही भगवानने सेवा करता अने नमस्कार करता सता भगवानने सन्मुख विनयवडे अंजलिपुट (बे हाथ) जोडी सेवा करवा लाग्या अर्थात् बेठा.

मू०—मेहेत्ति समणे भगवं महावीरे मेहं अणगारं एवं वदासी—“ से णूणं तव मेहा ! राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिते जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं जाव जेणेव अहं तेणेव हव्वमागए । से णूणं मेहा अट्ठे समट्ठे ? ” । “ हंता अत्थि ”। अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ”।

अर्थ—हे मेघ ! ए प्रमाणे श्रमण भगवान महावीर स्वामीए मेघ अनगारने आ प्रमाणे कह्युं के—" हवे निश्चे हे मेघ ! रात्रिने समये पूर्व रात्रि अने पाछली रात्रिना काळ समये एटले मध्य रात्रिने समये धर्म जागरण प्रत्ये जागता एवा तने आवा प्रकारनो अध्यवसाय यावत् उत्पन्न थयो के—आ प्रमाणे निश्चे हुं आवा उराल—प्रधान तपवडे इत्यादि विचार करी यावत् ज्यां हुं छुं त्यां तुं शीघ्रपणे आव्यो छे, तो निश्चे हे मेघ ! आ हुं कहुं छुं ते अर्थ समर्थ छे—सत्य छे ? " मेघ साधुए कह्युं के—" हा जी, ए अर्थ सत्य छे. " भगवाने कह्युं—" हे देवानुप्रिय ! जेम तने सुख उपजे तेम कर. प्रतिबंध (धारेला कार्यमां विघ्न अथवा विलंब) न कर. "

मू०—तते णं से मेहे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुन्नाए समाणे हट्ठ जाव हियए उट्ठाइ उट्ठेइ, उट्ठाइ उट्ठित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता सयमेव पंच महव्वयाइं आरुभेइ, आरुभित्ता गोयमाति समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य खामेति, खामेत्ता य तहारूवेहिं कडाईहिं थेरेहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं सणियं दुरूहति, दुरूहित्ता सयमेव मेहघणसन्निगासं पुढविसिलापट्टयं पडिलेहति, पडिलेहित्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहति, पडिलेहित्ता दब्भसंथारगं संथरति, संथरित्ता दब्भसंथारगं

तुरूहति, दुरूहित्ता पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसन्ने करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते मेघ अनगार श्रमण भगवान महावीर स्वामीए अनुज्ञा आप्या सता हृष्ट तुष्ट यावत् हृदयमां आनंद पामी उभा थवावडे उभा थया, उभा थइ श्रमण भगवान महावीरने त्रण वार दक्षिण भागथी आरंभी पाछा दक्षिणे आववारूप प्रदक्षिणा करी, प्रदक्षिणा करीने वंदना करी, नमस्कार कर्या, वांदी नमस्कार करी, पंच महाव्रत प्रत्ये आरूढ थया, आरूढ थइ फरीने पांच महाव्रतनो (उच्चार करी) गौतमादिक श्रमण साधुओने तथा साध्वीओने खमाव्या, खमावीने तेवा प्रकारना चारित्रवान अने जेमणे योगवहनादिक कर्या छे एवा स्थविर साधुओनी साथे विपुल नामना पर्वत उपर धीमे धीमे आरूढ थया, आरूढ थइ (चडी) पोतानी मेळे ज गाढ मेघनी जेवा काळा पृथ्वीशिलापट्टकनी पडिलेहण करी, पडिलेहण करीने उच्चार प्रस्रवण (ठल्ला मात्रा) नी भूमिने पडिलेही, पडिलेहीने दर्भनो संथारो पाथर्यो, पाथरीने दर्भना संथारापर आरूढ थया, आरूढ थइने पूर्व दिशानी सन्मुख पद्मासने बेसी करतलने भेळा करी मस्तकने स्पर्श करे तेम मस्तके अंजली करी (बे हाथ जोडी) आ प्रमाणे बोल्या—

मू०—" नमोऽत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं जाव संपत्ताणं, णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स, वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासउ

मे भगवं तत्थगते इहगतं " ति कट्टु वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—

अर्थ—" अरिहंत भगवानने यावत् सिद्धि गतिने पामेला सर्व तीर्थंकरोने नमस्कार थाओ. श्रमण भगवान महावीर स्वामी यावत् सिद्धिगति पामवानी इच्छावाळा मारा धर्माचार्यने नमस्कार थाओ. त्यां (राजगृह नगरना गुणशैलचैत्यमां) रहेला भगवानने अहीं (विपुल पर्वतपर) रहेलो हुं वांदुं छुं. त्यां रहेला भगवान अहीं रहेला मने जुओ. " आ प्रमाणे कही भगवानने वांद्या, नमस्कार कर्या, वांदी नमस्कार करी आ प्रमाणे बोल्या—

मू०—पुव्विं पि य णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए, मुसावाए अदिन्नादाणे मेहुणे परिग्गहे कोहे माणे माया लोभे पेज्जे दोसे कलहे अब्भक्खाणे पेसुन्ने परपरिवाए अरतिरति मायामोसे मिच्छादंसणसल्ले पच्चक्खाते ।

अर्थ—पहेलां पण में श्रमण भगवान महावीर स्वामीनी पासे सर्व (सर्वथा) प्राणातिपातनुं पच्चख्खाण कर्युं छे, तथा सर्वथा मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, प्रेम (राग), द्वेष, कलह, अभ्याख्यान[1], पैशुन्य, (चाडी), परपरिवाद[2], धर्ममां अरति अने अधर्ममां रति, मायामृषा[3] अने मिथ्यादर्शनशल्य ए सर्वनुं पच्चख्खाण कर्युं छे.

१ अछता दोषनो आरोप करवो ते. २ पारका दोष उघाडा करवा ते. ३ अन्य वेष करी लोकोने छेतरवा ते.

मू०—इयाणिं पि य णं अहं तस्सेव अंतिए सव्वं पाणातिवायं पच्चक्खामि जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि । सव्वं असणपाणखादिमसातिमं चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए । जं पि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं जाव विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतीति कट्टु एयं पि य णं चरमेहिं ऊसासनिस्सासेहिं वोसिरामि " त्ति कट्टु संलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंखमाणे विहरति ।

अर्थ—हमणां पण हुं ते ज भगवाननी समीपे सर्व प्राणातिपातनुं पच्चख्खाण करुं छुं, यावत् मिथ्यादर्शनशल्यनुं पच्चख्खाण करुं छुं. तथा सर्व अशन, पान, खादिम अने स्वादिम ए चारे प्रकारना आहारनुं हुं जावज्जीव पर्यंत पच्चख्खाण करुं छुं. तथा वळी जे आ मारुं शरीर मने इष्ट (इच्छेलुं) कांत (मनोहर) अने प्रिय (वहालुं) छे तेने यावत् रोगो[1], आंतको[2], बावीश परीसहो अने दिव्यादिक उपसर्गो स्पर्श करे छे, तेथी करीने आ शरीरने पण हुं छेल्ला श्वासोश्वासनी साथे वोसिरावुं छुं (तजुं छुं)." आ प्रमाणे कही संलेखनाने अंगीकार करता भक्तपाननुं प्रत्याख्यान करी पादपोपगमन अनशनने अंगीकार करी मृत्युनी पण इच्छा नहीं राखता ते मेघ अनगार विचरवा लाग्या.

१ ज्वरादिक व्याधि. २ शीघ्र प्राणनो नाश करनार शूलादिक व्याधि.

मू०—तते णं ते थेरा भगवंतो मेहस्स अणगारस्स आगिलाए वेयावडियं करेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते स्थविर भगवंतो ग्लानि (खेद) रहितपणे मेघ अनगारनी वैयावच्च करता हवा.

मू०—तते णं से मेहे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहुपडिपुन्नाइं दुवालस वरिसाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोतियपडिक्कंते उद्धियसल्ले समाहिपत्ते आणुपुव्वेणं कालगए ।

अर्थ—त्यारपछी ते मेघ अनगार श्रमण भगवान महावीर स्वामीना तेवा प्रकारना स्थविर मुनिओनी पासे सामायिक विगेरे अग्यार अंग भणी बहु परिपूर्ण (प्राये करीने संपूर्ण) एवा बार वर्ष सुधी चारित्र पर्यायनुं पालन करी एक मासनी संलेखनावडे आत्मा (शरीर) ने क्षीण करी अनशनवडे साठ भक्तने छेदी (३० उपवास करी) आलोचना तथा प्रतिक्रमण करी त्रणे शल्यनो उद्धार करी समाधिपूर्वक अनुक्रमे कालधर्मने पाम्या.

मू०—तते णं ते थेरा भगवंतो मेहं अणगारं आणुपुव्वेणं कालगयं पासेंति, पासित्ता परिनि-

१ सामान्यरीते एक दिवसमा बे भक्त होवाथी एक मासना साठ भक्त थाय.

ठ्वाणवत्तियं काउस्सग्गं करेंति, करित्ता मेहस्स आयारभंडयं गेण्हंति, गेण्हित्ता विउलाओ पव्वयाओ सणियं सणियं पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता जेणामेव गुणसिलए चेइए जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

अर्थ— त्यारपछी ते स्थविर भगवंतोए मेघ अनगारने अनुक्रमे काळधर्मने पामेला जोया, जोइने निर्वाणना[1] निमित्तनो कायोत्सर्ग कर्यो, करीने मेघ अनगारना ज्ञानादिक आचारना भांड एटले ओघो अने पात्रादिक उपकरण ग्रहण कर्या, ग्रहण करीने विपुल नामना पर्वतथी धीमे धीमे नीचे उतर्या, नीचे उतरी ज्यां गुणशैल चैत्य हतुं अने ज्यां श्रमण भगवान महावीर स्वामी हता, त्यां आव्या, आवीने श्रमण भगवान महावीरने वांद्या, नमस्कार कर्या, वांदी नमस्कार करी आ प्रमाणे बोल्या—

मू०—"एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी मेहे णामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीते। से णं देवाणुप्पिएहिं अब्भणुन्नाए समाणे गोतमातिए समणे निग्गंथे निग्गंथीओ अ खामेत्ता अम्हेहिं

१ मरण पामेलाने परठववाना निमित्ते.

सद्धिं विउलं पव्वयं सणियं सणियं दुरूहति, दुरूहित्ता सयमेव मेघघणसन्निगासं पुढविसिलं पट्टयं पडिलेहेति, पडिलेहित्ता भत्तपाणपडियाइक्खित्ते अणुपुव्वेणं कालगए। एस णं देवाणुप्पिया ! मेहस्स अणगारस्स आयारभंडए " ॥ ३० ॥

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे देवानुप्रिय एवा आपना शिष्य मेघ नामना अनगार प्रकृतिवडे भद्रक यावत् विनयवाळा हता, ते देवानुप्रिय एवा आपे अनुज्ञा आप्या सता गौतमादिक श्रमण निर्ग्रंथ निर्ग्रंथीओ (साध्वीओ) ने खमावी अमारी साथे विपुल नामना पर्वत उपर धीमे धीमे चड्या, चडीने पोते ज गाढ मेघनी जेवा काळा पृथ्वीशिलापट्टकनी पडिलेहना करी, पडिलेहना करीने भक्तपाननुं प्रत्याख्यान करी अनुक्रमे काळधर्मने पाम्या छे. हे देवानुप्रिय ! भगवान ! ते मेघ अनगारना आ ज्ञानादि आचारना भंडोपकरण छे. ३०.

मू०—भंते त्ति भगवं गोतमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—" एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी मेहे णामं अणगारे, से णं भंते ! मेहे अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए ? कहिं उववन्ने ? "।

अर्थ—हे भगवान ! एम कही भगवान (ज्ञानादिक गुणवान) गौतमस्वामीए श्रमण भगवान महावीर स्वामीने

वांद्या, नमस्कार कर्या. वांदी नमस्कार करी आ प्रमाणे कह्युं के—" ए प्रमाणे निश्चे देवानुप्रिय एवा आपना शिष्य मेघ नामना अनगार हता, ते हे भगवान ! मेघ नामना अनगार काळधर्मने समये काळ करीने क्यां कइ गतिमां गया ? अने क्या देवलोकादिकमां उत्पन्न थया ? "

मू०—गोतमादि समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—" एवं खलु गोयमा ! मम अंतेवासी मेहे णामं अणगारे पगतिभद्दए जाव विणीए, से णं तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइ-यमाइयाति एक्कारस अंगाति अहिज्जति, अहिज्जित्ता बारस भिक्खुपडिमाओ गुणरयणसंवच्छरं तवो-कम्मं काएणं फासेत्ता जाव किट्टेत्ता मए अब्भणुन्नाए समाणे गोयमाइ थेरे खामेइ, खामित्ता त-हारूवेहिं जाव विउलं पव्वयं दुरूहति, दुरूहित्ता दब्भसंथारगं संथरति, संथरित्ता दब्भसंथारोवगए सयमेव पंच महव्वए उच्चारेइ । बारस वासाति सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताति अणसणाए छेदेत्ता आलोइयपडिक्कंते उद्धियसल्ले समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिमसूरगहगणनक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहूइं जोयणकोडीओ बहूइं जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं

दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलंतगमहासुक्कसहस्साराणयपाणयारणच्चुते तिण्णि य अट्ठारसुत्तरे गेवेज्जविमाणावाससए वीइवइत्ता विजए महाविमाणे देवत्ताए उववण्णे ।

अर्थ—' हे गौतम ! ' ए प्रमाणे कही श्रमण भगवान महावीर स्वामीए भगवान गौतमने आ प्रमाणे कह्युं—" ए प्रमाणे निश्चे हे गौतम ! मारो शिष्य मेघ नामनो अनगार प्रकृतिवडे भद्रिक यावत् विनयवाळो हतो. ते तथाप्रकारना स्थविर साधुओनी पासे सामायिकादिक अग्यार अंगने भण्यो हतो, भणीने साधुनी बार प्रतिमाओ अने गुणरचन (अथवा गुणरत्न) संवत्सर नामना तपकर्मने कायावडे स्पर्शी यावत् कीर्तन करी में आज्ञा आप्यो सतो गौतमादिक स्थविरोने खमावी तथाप्रकारना स्थविरोनी साथे यावत् विपुल नामना पर्वतपर चड्यो, चडीने दर्भनो संथारो कर्यो, संथारो करीने दर्भना संथारापर बेसी पोते ज पांच महाव्रतोनो उच्चार कर्यो, बार वर्षनो चारित्र पर्याय पाळी एक मासनी संलेखनावडे पोताना आत्माने (शरीरने) क्षीण करी साठ भक्तने अनशनवडे छेदीने (३० उपवास करीने) आलोचना तथा प्रतिक्रमण करी त्रण शल्यनो उद्धार करी समाधिने पाम्यो सतो काळमासे काळ करीने उंचे चंद्र, सूर्य, ग्रहगण, नक्षत्र अने तारारूप ज्योतिषथी घणा योजनो, घणा योजनना सेंकडाओ, घणा हजार योजनो, घणा लाख योजनो, त्रणा करोड योजनो अने घणा कोटाकोटि योजनो ओळंगी उंचे दूर जइने सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, माहेंद्र, ब्रह्मलोक, लांतक, महाशुक्र, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण अने अच्युत ए बार देवलोकने तथा त्रण सो ने अढार नवग्रैवेयक संबंधी विमानना आ-

वासोने ओळंगी विजय नामना महाविमानने विषे देवपणे उत्पन्न थयो छे.

मू०—तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । तत्थ णं मेहस्स विदेवस्स तेत्तीसं सागरोवमातिं ठिती पण्णत्ता "।

अर्थ—ते विजय देवलोकमां केटलाक देवोनी तेत्रीश सागरोपनी स्थिति कहेली छे. तेमां ते मेघ नामना देवनी तेत्रीश सागरोपमनी स्थिति कहेली छे. "

मू०—" एस णं भंते ! मेहे देवे ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं ठितिक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ? "।

अर्थ—" हे भगवान ! ते मेघ नामनो देव ते देवलोकमांथी आयुष्यना एटले आयुष्य कर्मना दळीयांना क्षयवडे, स्थितिना क्षयवडे एटले आयुष्य कर्मनी स्थितिना वेदवा—अनुभववावडे तथा भव एटले देवभवनां कारणरूप कर्मना क्षयवडे अनंतर एटले देवभव संबंधी चयने—शरीरने तजी कइ गतिमां जशे ? अने क्या स्थाने उत्पन्न थशे ? "

मू०—" गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति, बुज्झिहिति, मुच्चिहिति, परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं काहिति "।

अर्थ—" हे गौतम ! महाविदेह नामना क्षेत्रने विषे (मनुष्यपणे) उत्पन्न थइ सिद्ध थशे एटले विशेषे करीने सिद्धिगमननी योग्यताए करीने अथवा मोटी ऋद्धिनी प्राप्तिवडे करीने सर्व प्रयोजनने समाप्त करशे, केवळज्ञानवडे सर्व पदार्थोने जाणशे, समग्र कर्मना अंशोवडे मूकाशे, परिनिर्वाण पामशे एटले कर्मे करेला सर्व प्रकारना विकार रहित थवाथी स्वस्थ थशे, अर्थात् समग्र दुःखोना अंतने करशे."

मू०—एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं जाव संपत्तेणं अप्पोपालंभनिमित्तं पढमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति बेमि ॥ ३१ ॥

॥ पढमं अज्झयणं समत्तं ॥

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवान महावीर स्वामी के जे प्रवचननी आदिने करनार, तीर्थने (चतुर्विध संघने) करनार यावत् मोक्षने पामेला छे तेमणे आप्त (हितकारक) एवा गुरुए अविनीत शिष्यने उपालंभ आपवो जोइए ते निमित्ते पहेला ज्ञाताध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे. (जेम भगवाने मेघकुमारने उपालंभ आप्यो, तेम अविधिमां प्रवर्तेला शिष्यने गुरुए उपालंभ आपवो, एम जणाववा माटे आ अध्ययन कह्युं छे.) एम हुं कहुं छुं, एटले के जे प्रमाणे तीर्थंकरे उपदेश आप्यो छे ते प्रमाणे आ में तमने कह्युं छे, पण मारी बुद्धिथी में कह्युं नथी. आम कहेवाथी सुधर्मास्वा-

मीए पोतानुं गुरुवचननुं पराधीनपणुं जंबूस्वामीने बताव्युं छे. ए ज प्रमाणे अन्य साधुए पण गुरुने आधीन रहेवुं ए तात्पर्य छे. आ विषय जणाववा माटे आ प्रमाणे गाथा छे—

महुरेहिं निउणेहिं, वयणेहिं चोययंति आयरिया । सीसे कहिंचि खलिए, जह मेहमुणिं महावीरो ॥ १ ॥

" कोइ पण प्रकारे शिष्य स्खलना पामे तो तेने आचार्ये (गुरुए) मधुर अने निपुण (युक्तियुक्त) वचनवडे प्रेरणा करवी (मार्गमां स्थापन करवो). जेम मेघमुनिने महावीर स्वामीए स्थापन कर्या (तेवी रीते कहीने पाछा धर्मने विषे स्थिर कर्या) तेम. "

इति मेघकुमारना कथानक नामनुं पहेलुं अध्ययन समाप्त थयुं.



संघाट नामनुं बीजुं अध्ययन.

पहेला अध्ययनमां अनुचित प्रवृत्तिवाळा शिष्यने उपालंभ देवो एम कह्युं, हवे आ बीजा अध्ययनमां अनुचित प्रवृत्तिवाळाने अनर्थनी प्राप्ति अने उचित प्रवृत्तिवाळाने अर्थनी प्राप्ति थाय छे, ए वात कहेवा माटे कहे छे.—

मू०—जति णं भंते। समणेणं भगवया महावीरेणं पढमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, बितियस्स णं भंते नायज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?।

अर्थ—"हे भगवान! जो श्रमण भगवान महावीर स्वामीए पहेला ज्ञाताध्ययननो आ (आपे कह्यो ते) अर्थ कह्यो छे, तो हे भगवान! बीजा ज्ञाताध्ययननो शो अर्थ कह्यो छे? एम जंबूस्वामीए सुधर्मास्वामीने पूछयुं. त्यारे सुधर्मास्वामी बोल्या.

मू०—एवं खलु जंबू! ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे णामं नयरे होत्था। वन्नओ। तत्थ णं रायगिहे णयरे सेणिए नामं राया होत्था, महया वण्णओ। तस्स णं रायगिहस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए गुणसिलए नामं चेतिए होत्था। वन्नओ।

अर्थ—ए प्रमाणे निश्चे हे जंबू! ते काळे ते समये राजगृह नामनुं नगर हतुं. तेनुं वर्णन कहेवुं. ते राजगृह नगरमां

श्रेणिक नामना राजा हता, मोटा हिमवंत जेवा विगेरे वर्णन कहेवुं. ते राजगृह नगरनी बहार उत्तर अने पूर्व दिशानी वचली दिशाए एटले ईशान खूणामां गुणशैल नामनुं चैत्य हतुं. तेनुं वर्णन कहेवुं.

मू०—तस्स णं गुणसिलयस्स चेतियस्स अदूरसामंते एत्थ णं महं एगे पडिय जिण्णुज्जाणे यावि होत्था विणट्ठदेवउले परिसडियतोरणघरे नाणाविहगुच्छगुम्मलयावल्लिवच्छच्छाइए अणेगवालसयसंकणिज्जे यावि होत्था ।

अर्थ—ते गुणशैल नामना चैत्यनी अति दूर नहीं अने अति समीप नहीं एवा भागने विषे एक मोटुं पडी गएलुं जीर्ण उद्यान हतुं. ते उद्यानमां रहेला देवकुलो (देवालयो) विनाश पाम्या हता, तेमां प्राकारद्वार अने देवकुलनां तोरणो अने बीजां घरो भांगी गयेलां हतां, विविध प्रकारनां रींगणी विगेरेना गुच्छो, वांसनी झाडी विगेरे गुल्मो, अशोकलता विगेरे लताओ, चीभडा विगेरेना वेलाओ अने आम्र विगेरे वृक्षोवडे ते उद्यान आच्छादित (व्याप्त) हतुं, तथा व्याल[1] (श्वापद)ना अनेक सेंकडाओवडे ते उद्यान शंका (भय) उपजावे तेवुं पण हतुं.

मू०—तस्स णं जिन्नुज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे भग्गकूवए यावि होत्था ।

अर्थ—ते जीर्ण उद्यानना बहु मध्य देश भागने विषे एक मोटो भांगी गयेलो कुवो पण हतो.

---

१ व्याघ्रादि शिकारी पशुओ.

मू०—तस्स णं भग्गकूवस्स अदूरसामंते एत्थ णं महं एगे मालुयाकच्छए यावि होत्था, किण्हे किण्होभासे जाव रम्मे महामेहनिउरंबभूते बहूहिं रुक्खेहि य गुच्छेहि य गुम्मेहि य लयाहि य वल्लीहि य तणेहिय कुसेहि य[1] खाणुएहि[2] य संछन्ने पलिच्छन्ने अंतो झुसिरे बाहिं गंभीरे अणेगवालसयसंकणिज्जे यावि होत्था ॥ ३७॥

अर्थ—ते भांगेला कूवानी नहीं अति दूर अने नहीं अति समीपे एवे ठेकाणे एक मोटो मालुकाकच्छ[3] पण हतो. ते अंजनना जेवा कृष्ण वर्णवाळो हतो. तथा जोनारने पण कृष्ण वर्णवाळो ज भासतो (देखातो) हतो,[4] यावत् रमणीय हतो, तथा महा मेघना समूह जेवो हतो, तेम ज ते मालुकाकच्छ घणा वृक्षोवडे, गुच्छोवडे, गुल्मोवडे, लताओवडे, वेलाओवडे, घासवडे, दर्भोवडे अने झाडना ठुंठाओवडे व्याप्त हतो, तथा चोतरफथी ढंकायेलो हतो. अंदर (मध्यमां)

१ कूविएहिय (कूवाओवडे) पाठांतर. २ खत्तएहि य (खाडाओ वडे) पाठातर.

३ मालुक नामना वृक्ष विशेष छे, तेना फळमा एकज ठळीयो होय छे. अथवा मालुक एटले चीभडा, काकडी विगेरे. तेनी जे झाडी ते मालुकाकच्छ कहेवाय छे.

४ कोइ वस्तु अमुक वर्णवाळी होय, छता ते समीपपणा अने दूरपणाना कारणथी अन्य वर्णवाळी भासे छे, तेथी अहीं कृष्ण वर्णवाळो अने तेवा ज आभासवाळो एम लख्युं छे.

शुषिर–पोलो एटले विस्तारवाळो हतो, अने बहारथी गंभीर एटले अंदर दृष्टिनो प्रचार नहीं थतो होवाथी गाढ (घीचोघीच) हतो, तथा अनेक व्याल एटले शिकारी पशुओ अथवा सर्पोना सेंकडाओवडे शंका करवा लायक पण हतो. ३२

मू०–तत्थ णं रायगिहे नगरे धण्णे नामं सत्थवाहे अड्ढे दित्ते जाव विउलभत्तपाणे।

अर्थ—ते राजगृहनगरमां धन्य नामनो सार्थवाह हतो, ते आढ्य–समृद्धिवाळो, दीप्त–देदीप्यमान यावत् विपुल भक्तपानवाळो हतो.

मू०–तस्स णं धन्नस्स सत्थवाहस्स भद्दा नामं भारिया होत्था सुकुमालपाणिपाया अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरा लक्खणवंजणगुणोववेया माणुम्माणप्पमाणपडिपुन्नसुजातसव्वंगसुंदरंगी ससिसोमागारा कंता पियदंसणा सुरूवा करयलपरिमियतिवलियमज्झा कुंडलुल्लिहियगंडलेहा कोमुदिरयणियरपडिपुण्णसोमवयणा सिंगारागारचारुवेसा जाव पडिरूवा वंझा अवियाउरी जाणुकोप्परमाया यावि होत्था ॥ ३३ ॥

अर्थ—ते धन्य सार्थवाहने भद्रा नामनी भार्या हती. तेना हाथ पग सुकुमाळ हता, तेना शरीरना पांचे इंद्रियो हीनता रहित परिपूर्ण हता, स्वस्तिक चक्रादिक लक्षण[1] अने तिल मसा विगेरे व्यंजनना[2] गुणोए करीने सहित हती, मान,

१ जन्मनी साथे होय ते लक्षण २ जन्म पछी थाय ते व्यंजन.

उन्मान अने प्रमाणे करीने परिपूर्ण अने सारी रीते उत्पन्न थयेला सर्व अवयवोए करीने तेनुं शरीर सुंदर हतुं, तेनो आकार चंद्र जेवो सुंदर हतो, ते कांत एटले पतिने मनोहर हती, तेनुं दर्शन सर्वने प्रिय लागतुं हतुं, तेनुं रूप सुंदर हतुं, करतल एटले मुठिमां आवे तेवो अने त्रिवळीथी शोभतो तेनो मध्य भाग (कटि प्रदेश) हतो, कुंडलवडे तेना गंडस्थळनी रेखा (कपोलमूल) घसाती हती, तेनुं मुख पूर्णिमाना चंद्र जेवुं सौम्य-सुंदर हतुं, ते शृंगारना घर समान हती, तेनो वेष सुंदर हतो, यावत् प्रतिरूपा एटले जोनार जोनार प्रत्ये तेनुं रूप मनोहर देखातुं हतुं, परंतु ते वंध्या एटले संतानरूप फळ रहित हती, प्रसूतिना स्वभाव रहित हती, अने तेथी फरीने ज जानु अने कूर्पर (कोणी) मात्रनी ज ते माता हती, अर्थात् संतति नहीं होवाथी जानु अने कूर्पर ज तेना स्तनने स्पर्श करनारा हता अथवा तेना उत्संगमां बेसवा लायक जानु अने कूर्परज हता, पण पुत्र न होतो. ३३.

मू०—तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स पंथए नाम दासचेडे होत्था सव्वंगसुंदरंगे मंसोवचिते बालकीलावणकुसले यावि होत्था ।

अर्थ—ते धन्य सार्थवाहने एक पंथक नामनो दासकुमार हतो, ते सर्व शरीरे सुंदर अंगवाळो, मांसवडे पुष्ट थयेलो अने बाळकोने क्रीडा कराववामां एटले रमाडवामां कुशळ हतो.

मू०—तते णं से धण्णे सत्थवाहे रायगिहे नयरे बहूणं नगरनिगमसेट्ठिसत्थवाहाणं अट्ठारसण्ह

य सेणिप्पसेणीणं बहुसु कज्जेसु य कुडुंबेसु य मंतेसु य जाव चक्खुभूते यावि होत्था। नियगस्स वि य णं कुडुंबस्स बहुसु य कज्जेसु जाव चक्खुभूते यावि होत्था ॥ ३४॥

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाह राजगृह नगरना निगम—वेपारी, श्रेष्ठी अने सार्थवाहोना तथा अढार श्रेणि प्रश्रेणिनां घणा कार्योमां, कुडुंबोमां अने मंत्र (विचार) मां यावत् चक्षुरूप हतो, तथा पोताना कुडुंबनां पण घणां कार्योमां यावत् चक्षुरूप हतो. ३४.

मू०—तत्थ णं रायगिहे नगरे विजए नामं तक्करे होत्था, पावे चंडालरूवे भीमतररुद्दकम्मे आरुसियदित्तरत्तनयणे खरफरुसमहल्लविगयबीभत्थदाढिए असंपुडितउट्ठे उध्धुयपइन्नलंबंतमुद्धए भमरराहुवन्ने निरणुक्कोसे निरणुतावे दारुणे पइभए निसंसतिए निरणुकंपे अहि व्व एगंतादिट्ठिए खुरे व एगंतधाराए गिद्धे व आमिसतल्लिच्छे अग्गिमिव सव्वभक्खे जलमिव सव्वगाही उक्कंचणवंचणमायानियडिकूडकवडसाइसंपओगबहुले चिरनगरविणट्ठदुट्ठसीलायारचरित्ते जूयपसंगी मज्जपसंगी भोज्जपसंगी मंसपसंगी दारुणे हिययदारए साहासिए संधिच्छेयए उवहिए विस्संभघाती आलीयगातित्थभेयलहुहत्थसंपउत्ते परस्स दव्वहरणम्मि निच्चं अणुबद्धे तिव्ववेरे रायगिहस्स नग-

रस्स बहूणि अइगमणाणि य निग्गमणाणि य दाराणि य अवदाराणि य छिंडिओ य खंडिओ य नगरनिद्धमणाणि य संवट्टणाणि य निव्वट्टणाणि य जूवखलयाणि य पाणागाराणि य वेसागाराणि य तद्दारट्ठाणाणि य (¹तक्करट्ठाणाणि) य तक्करघराणि य सिंगाडगाणि य तियाणि य चउक्काणि य चच्चराणि य नागघराणि य भूयघराणि य जक्खदेउलाणि य सभाणि य पवाणि य पणियसालाणि य सुन्नघराणि य आभोएमाणे आभोएमाणे मग्गमाणे गवेसमाणे बहुजणस्स छिद्देसु य विसमेसु य विहुरेसु य वसणेसु य अब्भुदएसु य उस्सवेसु य पसवेसु य तिहीसु य छणेसु य जन्नेसु य पव्वणीसु य मत्तपमत्तस्स य वक्खित्तस्स य वाउलस्स य सुहितस्स य दुक्खियस्स य विदेसत्थस्स य विप्पवसियस्स य मग्गं च छिद्दं च विरहं च अंतरं च मग्गमाणे गवेसमाणे एवं च णं विहरति।

अर्थ—ते राजगृह नगरमां विजय नामनो एक तस्कर (चोर) हतो. ते पापी—पापकर्म करनारो हतो, चंडाळ जेवुं तेनुं ²रूप हतुं, ते अत्यंत भयंकर अने रौद्र (क्रूर) कर्म करनारो हतो, क्रोध पामेलानी जेम तेनां नेत्रो देदीप्यमान अने रातां हतां, तेनी दाढी मूछ अथवा दाढाओ अत्यंत कठोर, मोटी, विकारवाळी अने बीभत्स (बिहामणी) हती, तेना बे ओष्ठ

१ आ पद बीजी प्रतोमां नथी. टीकामां पण तेनो अर्थ लीधो नथी. २ स्वभाव.

असंपुटित–परस्पर अडकता नहोता एटले के दांत मोटा–वहार नीकळेला अने ओष्ठ नाना हता, तेना मस्तकना केश वायुवडे उडता, वीखरायेला अने लांबा हता, तेनो वर्ण भ्रमर अने राहु जेवो श्याम हतो, ते निर्दय हतो अने पश्चात्ताप रहित हतो, तेथी दारुण (रौद्र) हतो, अने तेथी ज प्रतिभय एटले भयने उत्पन्न करनारो हतो. निःसंशय–अति शूरताने लीधे कार्य साधवामां तेने संशय नहोतो, अथवा नृशंस–मनुष्योने हणनारो हतो, अथवा निःशंस–वखाणवा लायक नहोतो. निरनुकंप–प्राणीओ उपर अथवा मनुष्यो उपर अनुकंपा नहीं करनारो हतो. सर्पनी जेम ते एकांत दृष्टिवाळो हतो एटले अमुक मारे ग्रहण करवुं ज छे एम तेनी निश्चयवाळी दृष्टि हती. छरीनी जेम ते एक धारवाळो हतो एटले ते जेनी चोरी करवानुं धारतो हतो तेमां ज तेनी एकांत प्रवृत्ति हती. गीध पक्षीनी जेम ते मांसमां लोलुप हतो, जेम गीध पक्षी मांसमां लुब्ध होवाथी जेनी पाछळ पडे तेने छोडे नहीं तेम ते चोर जेनुं धन लेवाने इच्छतो तेनुं लीधा विना रहेतो नहीं. अग्निनी जेम ते सर्वभक्षी हतो, जेम अग्नि सर्व वस्तुने बाळी भस्म करे छे तेम ते चोर जेनी चोरी करे तेनुं सर्वस्व लइ लेतो हतो. जळनी जेम सर्वग्राही हतो, जेम जळ पोतामां पडेली सर्व वस्तुने डुबावी के ताणी जइ विनाश करे छे तेम ते चोर पोतानी नजरे चडेली सर्व वस्तु हरण करी लेतो हतो. तेम ज ते चोर उत्कंचन–हीन गुणवाळा पदार्थने अधिक मूल्य लेवा माटे उत्कृष्ट गुणवाळो करवो, वंचन–अन्यने छेतरवा, माया–परने ठगवानी बुद्धि, निकृति–बगलानी जेवो दंभ, कूट–परने छेतरवा माटे तोलादिकने नाना मोटा करवा ते अने कपट–वेष अने भाषानुं परावर्तन करवुं ते, आ सर्वनो प्रयोग करवामां

१ सर्पने एक नेत्र मध्यमा ज होय छे.

अति निपुण हतो, अथवा सातिसंप्रयोग एटले कस्तूरी विगेरे अतिशयवाळी वस्तु साथे बीजी वस्तुनो प्रयोग (मिश्र) करवामां घणो निपुण हतो, अथवा साति एटले अविश्वास, तेना प्रयोगमां घणो निपुण हतो. चिरकाळथी (बहुवखतथी) ते नगरने उपद्रव करतो हतो, (जे चिरकाळ सुधी उपद्रव करनार होय ते अत्यंत धूर्त होय छे) तेना स्वभाव, आकृति अने चरित्र अत्यंत दुष्ट हता, ते द्यूतने विषे प्रसंगवाळो एटले आसक्त हतो, मदिरा पीवामां आसक्त हतो, सारा सारा भोजन करवामां आसक्त हतो, मांसने विषे आसक्त हतो, लोकोना हृदयने विदारण करनार होवाथी दारुण-क्रूर हतो, साहसिक एटले आगळथी तर्क कर्या विना ज तात्कालिक कार्य करनार हतो, संधिच्छेदक-खातर पाडनार हतो, उपधिक-मायावी होवाथी गुप्तपणे चालनार हतो, विश्वासघाती हतो, आदीपक-अग्नि मूकनार हतो (बीजानुं बाळी देतो हतो), तीर्थने भेदनार एटले तीर्थरूप देवद्रोणी[1] विगेरेने भांगी तेमांथी द्रव्य लेवा माटे तेना परिवारने भेदतो हतो, (खुटवतो हतो), तेना हाथ लघुलाघवी कळामां निपुण हता, परनुं द्रव्य हरण करवामां ते निरंतर प्रतिबद्ध-तैयार हतो, ते तीव्र वैरवाळो हतो, तेम ज ते चोर राजगृह नगरना घणा प्रवेश करवाना मार्ग, नीकळवाना मार्ग, दरवाजा, अपद्वार-पाछळनी नानी बारीओ, छींडीओ, खंडीओ-किल्लानी नानी बारीओ, नगरनुं पाणी नीकळवाना खाळीया, मार्गो मळवानां स्थानो, मार्ग जूदा पडवानां स्थानो, द्यूतना अखाडानां स्थानो, मदिरापानना स्थानो, वेश्यानां घरो, (तेवी स्त्रीओना स्थानो) चोरने छुपावानां स्थानो, चोरने रहेवानां घरो, शृंगाटक-शींगोडाने आकारे रहेला मार्गो, त्रण मार्गो भेगा थाय तेवां स्थानो, चार मार्गो भेगा थाय तेवां स्थानो,

१ महादेवनुं थाळुं विगेरे. २ आ अर्थ शंकित छे.

घणा मार्ग भेगा थाय तेवां स्थानो, नागदेवनां गृहो, भूतप्रेतनां गृहो, यक्षनां गृहो, सभा–लोकोने बेसवानां स्थानो, प्रपा–पाणीनां परबो, दुकानो अने शून्यगृहो, ए सर्वने जोतो जोतो फरतो हतो, मार्गणा करतो हतो एटले अन्वय धर्मवडे विचारतो हतो, गवेषणा करतो हतो एटले व्यतिरेक धर्मवडे विचारतो हतो, घणा जनोना छिद्रोने विषे एटले थोडो परिवार होय तो चोरनो प्रवेश थइ शके तेवा छिद्रोने विषे, विषम एटले तीव्र रोगनी आतुरताने विषे, विधुर एटले इष्ट जनना वियोगने विषे, व्यसन एटले राज्यादिकना उपद्रवने विषे, अभ्युदय एटले राज्यलक्ष्मी विगेरेना लाभने विषे, उत्सव एटले इंद्रोत्सव विगेरे उत्सवोने विषे, प्रसव एटले पुत्रादिकना जन्मने विषे, मदन त्रयोदशी विगेरे तिथिओने विषे, क्षण एटले घणा लोकोना जमणवारने विषे, यज्ञ एटले नागादिकनी पूजाने विषे तथा कौमुदी विगेरे पर्वणीने विषे, घणा लोको मद्यपानथी मत्त थयेला होय, प्रमादी थयेला होय, व्याक्षिप्त एटले अमुक ज कार्यमां रोकाया होय, विविध कार्यमां आकुळ व्याकुळ थया होय, सुखमां होय, दुःखमां होय, परदेशमां गयेला होय, परदेश जवानी तैयारीमां होय, तेवा समये ते लोकोना मार्गने, छिद्रने (बारीने), विरहने एटले एकांत स्थानने तथा अंतरने एटले अवसरने विचारनारो हतो–तेनी विचारणा करतो अने गवेषणा करतो (लाग जोतो) रहेलो हतो.

मू०–बहिया वि य णं रायगिहस्स नगरस्स आरामेसु य उज्जाणेसु य वाविपोक्खरणीदीहिया-गुंजालियासरेसु य सरपंतिसु य सरसपंतियासु य जिण्णुज्जाणेसु य भग्गकूवएसु य मालुयाकच्छए-

सुय सुसाणएसु य गिरिकंदरलेणउवट्ठाणेसु य बहुजणस्स छिद्देसु य जाव एवं च णं विहरति ॥३४॥

अर्थ—बहार पण राजगृह नगरना आरामोने विषे एटले दंपतीओने क्रीडा करवाना माधवीलतादिना गृहो जेमां होय एवा बागने विषे, उद्यान एटले पुष्पादिकनी ऋद्धिवाळा वृक्षो जेमां होय अने उत्सवादिकने समये लोकोनी उजाणीओ जेमां थती होय एवा उद्यानोने विषे, चार खुणावाळी वावने विषे, गोळाकार अथवा कमळवाळी पुष्करिणीने विषे, लांबी दीर्घिकाने विषे, जळनी वांकी नीकवाळी गुंजालिकाने विषे, सरोवरने विषे, सरोवरोनी पंक्तिने विषे, एक सरोवरनुं जळ बीजा सरोवरमां जइ शके तेवी नीकवाळी सरोवरोनी पंक्तिने विषे, जीर्ण उद्यानोने विषे, भांगेला कूवाओने विषे, मालुका वृक्षोनी झाडीने विषे, स्मशानोने विषे, पर्वतनी कंदरा (गुफा) ओने विषे, लयन एटले पर्वतपर रहेला पत्थरना गृहोने विषे, उपस्थान एटले पर्वतपर रहेला पाषाणना मंडपोने विषे, तथा उपर कहेला घणा जनोनां छिद्रो विगेरेने विषे—तेने जाणतो यावत् तेनी विचारणा करतो—गवेषणा करतो ते चोर रहेलो हतो. ३४

मू०—तते णं तीसे भद्दाए भारियाए अन्नया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—

अर्थ—अहीं धनशेठनी भद्रा नामनी भार्या एकदा कदाचित् मध्यरात्रिने समये कुटुंबनी चिंता करती जागी, ते वखते तेने आवा प्रकारनो अध्यवसाय—विचार थयो—

मू०—अहं धण्णेणं सत्थवाहेण सद्धिं बहूणि वासाणि सद्दफरिसरसगंधरूवाणि माणुस्सगाइं कामभोगाइं पच्चणुभवमाणी विहरामि । नो चेव णं अहं दारगं वा दारिगं वा पयायामि ।

अर्थ—हुं धन्य नामना सार्थवाहनी साथे घणा वर्षोथी शब्द, स्पर्श, रस, गंध अने रूप ए पांचे प्रकारना मनुष्य-संबंधी कामभोगोने अनुभवती सती विचरुं छुं—रहेली छुं. तो पण एक पण पुत्रने के पुत्रीने में प्रसव्या नथी.

मू०—तं धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव सुलद्धे णं माणुस्सए जम्मजीवियफले तासिं अम्मयाणं, जासिं मन्ने णियगकुच्छिसंभूयातिं थणदुद्धलुद्धयातिं महुरसमुल्लावगातिं मम्मणपयं-पियातिं थणमूलकक्खदेसभागं अभिसरमाणातिं मुद्धयाइं थणयं पिबंति । ततो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊणं उच्छंगे निवेसियाइं देंति समुल्लावए पिए सुमहुरे पुणो पुणो मंजुलप्पभणिते ।

अर्थ—ते कारण माटे ते माताओने धन्य छे, यावत् ते माताओने मनुष्य संबंधी जन्म अने जीवितनुं फळ सारी रीते प्राप्त थयुं छे, एम हुं मानुं छुं के जे माताओ पोतानी कुक्षिथी उत्पन्न थयेला, स्तननुं दूध पीवामां लुब्ध थयेला, मधुर शब्दने करनारा, मन्मन (कालुं घोबडुं) बोलनारा, स्तनना मूळथी कक्षा (काखली) ना प्रदेश प्रत्ये चालता मुग्ध बाळकोने स्तनपान करावती होय छे अने त्यारपछी कमळनी जेवा कोमळ हाथवडे तेमने ग्रहण करी पोताना उत्संगमां बेसाडे छे, अने वारंवार अत्यंत प्रिय वचनवाळा मधुर समुल्लाप—हुलामणा आपे छे—करे छे, ते माताओने धन्य छे.

मू०—तं अहं णं अधन्ना अपुन्ना अलक्खणा अकयपुन्ना एत्तो एगमवि न पत्ता ।

अर्थ—तेथी करीने हुं अधन्य छुं, पूर्वना पुण्य रहित छुं, शुभ लक्षण रहित छुं, अने अकृत पुण्यवाळी एटले पापवाळी छुं, के जेथी आ पूर्वे कहेलां बाळकनां विशेषणोमांथी एक पण विशेषणने हुं पामी नथी.

मू०—तं सेयं मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते धण्णं सत्थवाहं आपुच्छित्ता धण्णेणं सत्थवाहेणं अब्भणुन्नाया समाणी सुबहुं विपुलं असणपाणखातिमसातिमं उवक्खडावेत्ता सुबहुं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारं गहाय बहूहिं मित्तनातिनियगसयणसंबंधिपरिजणमहिलाहिं सद्धिं संपरिवुडा जाइं इमाइं रायगिहस्स नगरस्स बहिया णागाणि य भूयाणि य जक्खाणि य इंदाणि य खंदाणि य रुद्दाणि य सेवाणि य वेसमणाणि य तत्थ णं बहूणं नागपडिमाण य जाव वेसमणपडिमाण य महरिहं पुप्फच्चणियं करेत्ता जाणुपायपडियाए एवं वइत्तए—

अर्थ—तेथी करीने ए ज श्रेयस्कर छे के मारे काले रात्रि प्रभातरूप प्रगट थये सते यावत् सूर्य जाज्वल्यमान थये सते (उगे सते) धन्य सार्थवाहने पूछीने धन्य सार्थवाहे अनुज्ञा आपी सती हुं अति घणा विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने तैयार करी अति घणां पुष्प, वस्त्र, गंध, माल्य अने अलंकारो ग्रहण करी घणा मित्र, ज्ञाति, निजक (पोताना),

स्वजन, संबंधी अने परिवारनी स्त्रीओनी साथे परिवरी सती आ राजगृह नगरनी बहार जे नाग, भूत, प्रेत, यक्ष, इंद्र, स्कंद, रुद्र, शिव अने वैश्रवण विगेरे देवोना गृहो छे, तेमां नागनी प्रतिमा छे यावत् वैश्रवणनी प्रतिमा छे, तेमनी बहु मूल्यवाळी पुष्पादिकवडे पूजा करी ढींचण अने पगने नमावी एटले तेमने पगे पडी आ प्रमाणे कहुं.—

मू०—जइ णं अहं देवाणुप्पिया ! दारगं वा दारिगं वा पयायामि, तो णं अहं तुब्भं जायं च दायं च भायं च अक्खयणिहिं च अणुवड्ढेमि त्ति कट्टु उवातियं उवाइत्तए ।

अर्थ—जो हुं हे देवानुप्रिय ! एक पण पुत्रने के पुत्रीने जन्म आपीश तो हुं तमारी याग–पूजा करीश, दाय–पर्वना दिवसे दान आपीश, भाग–द्रव्यना लाभनो अंश आपीश अने तमारा अक्षय निधिने हुं वृद्धि पमाडीश. आ प्रमाणे उपयाचितनी याचना करुं–मानता मानुं.

मू०—एवं संपेहेति, संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते जेणामेव धण्णे सत्थवाहे तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता एवं वदासी—

अर्थ—आ प्रमाणे तेणीए विचार कर्यो, विचार करीने काले प्रभाते यावत् सूर्योदय थयो त्यारे जे ठेकाणे धन्य सार्थवाह हतो त्यां ते आवी, आवीने आ प्रमाणे बोली.—

मू०—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं सद्धिं बहूइं वासाइं जाव देति समुल्लावए सुमहुरे

पुणो पुणो मंजुलप्पभाणिते, तं णं अहं अहन्ना अपुन्ना अकयलक्खणा एत्तो एगमवि न पत्ता, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाता समाणी विपुलं असणं ४ जाव अणुवड्ढेमि उवाइयं करेत्तए ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे में हे देवानुप्रिय ! तमारी साथे घणा वर्ष सुधी कामभोग भोगव्या, (पण बीजी स्त्रीओ तो पुत्रादि प्रसवे छे) यावत् वारंवार अति मधुर मनोहर वचनवाळा हुलामणाने आपे छे, परंतु हुं तो अधन्य, पुण्य रहित अने लक्षण रहित छुं, तेथी पूर्वे कहेलामांथी एक पण विशेषणने पामी नथी. तेथी हुं इच्छुं छुं के हे देवानुप्रिय ! तमारी अनुज्ञा पामी सती हुं विपुल अशनादिक करावी (पूर्व सूत्रमां कह्या प्रमाणे) यावत् अक्षय निधिनी वृद्धि करुं, ए प्रमाणे मानता करुं.

मू०—तते णं धण्णे सत्थवाहे भद्दं भारियं एवं वदासी—" ममं पि य णं खलु देवाणुप्पिए ! एस चेव मणोरहे—कहं णं तुमं दारगं दारियं वा पयाएज्जसि ? " भद्दाए सत्थवाहीए एयमट्ठं अणुजाणाति ।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाहे भद्रा नामनी भार्याने आ प्रमाणे कह्युं—" मारो पण निश्चे हे देवानुप्रिया ! ए ज

मनोरथ छे के—क्यारे तने पुत्र के पुत्री उत्पन्न थशे ? " एम कही तेणे भद्रा सार्थवाहीने ते अर्थनी एटले तेम करवानी अनुज्ञा आपी.

मू०—तते णं सा भद्दा सत्थवाही धण्णेणं सत्थवाहेणं अब्भणुन्नाता समाणी हट्ठ तुट्ठ जाव हयहियया विपुलं असणपानखातिमसातिमं उवक्खडावेति, उवक्खडावित्ता सुबहुं पुप्फगंधवत्थमल्लालंकारं गेण्हति, गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पुक्खरिणीए तीरे सुबहुं पुप्फ जाव मल्लालंकारं ठवेइ, ठवेत्ता पुक्खरिणिं ओगाहइ, ओगाहित्ता जलमज्जणं करेति, जलकीडं करेति, करित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा उल्लपडसाडिगा जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हइ, गिण्हित्ता पुक्खरिणीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता तं सुबहुं पुप्फगंधमल्लं गेण्हति, गेण्हित्ता जेणामेव नागघरए य जाव वेसमणघरए य तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तत्थ णं नागपडिमाण य जाव वेसमणपडिमाण य आलोए पणामं करेइ, ईसिं पच्चुन्नमइ, पच्चुन्नमित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता नागपडिमाओ य जाव वेसमणपडिमाओ य लोमहत्थेणं पमज्जति,

उदगधाराए अब्भुक्खेति, अब्भुक्खित्ता पम्हलसुकुमालाए गंधकासाईए गायाइं लूहेइ, लूहित्ता महरिहं वत्थारुहणं च मल्लारुहणं च गंधारुहणं च चुन्नारुहणं च वन्नारुहणं च करेति, करित्ता जाव धूवं डहति, डहित्ता जाणुपायपडिया पंजलिउडा एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते भद्रा सार्थवाही धन्य सार्थवाहे अनुज्ञा आपी सती हृष्ट तुष्ट यावत् हरण करायुं छे हृदय जेनुं एवी थइने विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने तैयार करावे, तैयार करावीने अति घणा पुष्प, गंध, वस्त्र, माल्य (माळा) अने अलंकारने ग्रहण करे. ग्रहण करीने पोताना घरथी नीकळे, नीकळीने राजगृह नगरना मध्य मध्य भागवडे बहार नीकळे, नीकळीने ज्यां पुष्करिणी हती त्यां आवे, आवीने पुष्करिणीने कांठे अति घणा पुष्प यावत् माल्य अने अलंकार स्थापन कर्या, स्थापन करीने पुष्करणिमां प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने जळमज्जन कर्युं, जळक्रीडा करी, करीने स्नान कर्युं, बलिकर्म कर्युं. पछी ओढवानुं अने पहेरवानुं ए बन्ने वस्त्रो जेना भीनां छे एवी ते भद्राए ते ठेकाणे जे उत्पल–कमळ यावत् सहस्रपत्र–कमळो हतां, ते ग्रहण कर्यां, ग्रहण करी पुष्करिणी थकी बहार नीकळी, बहार नीकळीने प्रथम मूकेलां अति घणां पुष्प, गंध अने मालादिक ग्रहण कर्यां, ग्रहण करीने ज्यां नागनुं गृह हतुं, यावत् वैश्रवणनुं गृह हतुं, त्यां आवी, आवीने त्यां रहेली नागनी प्रतिमानुं यावत् वैश्रवणनी प्रतिमानुं[1] दर्शन थये सते तेमने प्रणाम कर्या, कांइक नीची नमी, नमीने लोम-

१ मोरपिंछनी पुंजणी.

हस्तकने ग्रहण कर्युं; ग्रहण करी ते लोमहस्तकवडे नागनी प्रतिमानुं यावत् वैश्रवणनी प्रतिमानुं प्रमार्जन कर्युं, जळ धारावडे तेनी पखाळ करी, पखाळ करीने पद्मल (रुंछडावाळा) अने अति कोमळ गंधकाषाय वस्त्रवडे ते प्रतिमाना गात्रोने लूंछ्या, लूंछीने घणा मूल्यवाळा वस्त्रनुं आरोपण कर्युं (वस्त्र पहेराव्यां), पुष्पनी माळा पहेरावी, गंधनुं लेपन कर्युं, चूर्ण चडाव्युं, शोभाकारक वर्णनुं स्थापन कर्युं, यावत् ते प्रतिमानी पासे धूप कर्यो. पछी ढींचण अने पगने नीचे राखी बे हाथ जोडी आ प्रमाणे बोली—

मू०—जइ णं अहं दारगं वा दारिगं वा पयायामि तो णं अहं जायं च जाव अणुवड्ढेमि त्तिकट्टु उवातियं करेति, करित्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता विपुलं असणपाणखातिमसातिमं आसाएमाणी जाव विहरति। जिमिया जाव सुईभूया जेणेव सए गिहे तेणेव उवागया।

अर्थ—"जो हुं पुत्रने के पुत्रीने जन्म आपीश तो हुं तमारी याग–पूजा करीश यावत् अक्षय निधिने वृद्धि पमाडीश." एम कही ते भद्राए मानता करी. करीने ज्यां पुष्करिणी हती त्यां आवी, आवीने विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने खाती सती यावत् विचरती हती. भोजन करीने यावत् पवित्र थइने ज्यां पोतानुं घर हतुं त्यां आवी.

१ सुगंधी अने कषाय रंगवाळा.

मू०—अदुत्तरं च णं भद्दा सत्थवाही चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुन्नमासिणीसु विपुलं असणपाणखातिमसातिमं उवक्खडेति, उवक्खडित्ता बहवे नागायणे जाव वेसमणायणे उवायमाणी नमंसमाणी जाव एवं च णं विहराति ॥ ३६ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते भद्रा सार्थवाही चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या अने पूर्णिमा, ए चार तिथिए विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने तैयार करती हती, तैयार करीने घणा नागना आयतनमां यावत् वैश्रवणना आयतनमां देवोनी मानता करती एटले भोग चडावती तथा नमस्कार करती यावत् विचरवा लागी—रहेवा लागी. ३६.

मू०—तते णं सा भद्दा सत्थवाही अन्नया कयाइ केणाति कालंतरेणं आवन्नसत्ता जाया यावि होत्था।

अर्थ—त्यारपछी ते भद्रा सार्थवाही एकदा कदाचित् केटलाक काळ पछी आपन्नसत्त्वा (गर्भिणी) थयेली पण होती हवी.

मू०—तते णं तीसे भद्दाए सत्थवाहीए दोसु मासेसु वीतिक्कंतेसु ततिए मासे वट्टमाणे इमेयारूवे दोहले पाउब्भूते—धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ, जाओ णं विउलं असणपाणखातिमसातिमं सुबहुयं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारं गहाय मित्तनातिनिय-

गसयणसंबंधिपरियणमहिलियाहि य सद्धिं संपरिवुडाओ रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोक्खरिणीं ओगाहिंति, ओगाहित्ता ण्हायाओ कयबलिकम्माओ सव्वालंकारविभूसियाओ विपुलं असणपाणखातिमसातिमं आसाएमाणीओ जाव पडिभुंजेमाणीओ दोहलं विणेति, एवं संपेहेति, संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छाति, उवागच्छित्ता धण्णं सत्थवाहं एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते भद्रा सार्थवाहीने बे मास वीती गया अने त्रीजो मास वर्ततो हतो त्यारे आवा प्रकारनो दोहलो उत्पन्न थयो.—" ते माताओने धन्य छे, यावत् ते माताओ कृत लक्षणवाळी (शुभ लक्षणवाळी) छे, के जे माताओ विपुल अशन , पान, खादिम अने स्वादिम ए चार प्रकारना आहारने तथा अति घणां पुष्प, वस्त्र, गंध, माल्य अने अलंकार ग्रहण करीने मित्र, ज्ञाति, निजक (पोताना), स्वजन, संबंधी अने परिवारनी स्त्रीओनी साथे परिवरेली सती राजगृह नगरना मध्य मध्य भागवडे नीकळे, नीकळीने ज्यां पुष्करिणी छे त्यां आवे, आवीने पुष्करिणीमां प्रवेश करे, प्रवेश करीने स्नान करे, बलिकर्म करे, सर्व अलंकारथी विभूषित थाय, विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने आस्वादन करती यावत् भोजन करती पोताना दोहलाने संपूर्ण करे छे." आ प्रमाणे ते भद्राए विचार कर्यो, विचार करीने काले–बीजे दिवसे प्रातःकाळे सूर्योदय थयो त्यारे ज्यां धन्य सार्थवाह हतो त्यां ते आवी, आवीने धन्य सार्थवाहने आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—"एवं खलु देवाणुप्पिया! मम तस्स गब्भस्स जाव विणेतिं, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाता समाणी जाव विहरित्तए"। "अहासुहं देवाणुप्पिया (ये)! मा पडिबंधं करेह"।

अर्थ—"आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय! मने ते गर्भना प्रभावे दोहलो उत्पन्न थयो छे; यावत् जे रीते बीजी धन्य माताओ दोहला दूर करे छे, ते प्रमाणे हुं इच्छुं छुं के हे देवानुप्रिय! तमोए आज्ञा आपी सती हुं पण ते दोहद पूर्ण करी यावत् विचरुं." ते सांभळी धन्य सार्थवाहे कह्युं के—"हे देवानुप्रिया! जेम सुख उपजे तेम करो तेमां प्रतिबंध—विलंब न करो."

मू०—तते णं सा भद्दा सत्थवाही धण्णेणं सत्थवाहेणं अब्भणुन्नाया समाणी हट्ठतुट्ठा जाव विपुलं असणपाणखातिमसातिमं जाव ण्हाया जाव उल्लपडसाडगा जेणेव नागघरते जाव धूवं दहाति, दहित्ता पणामं करेति, पणामं करेत्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छाति, उवागच्छित्ता तते णं ताओ मित्तनाति जाव नगरमहिलाओ भद्दं सत्थवाहिं सव्वालंकारविभूसितं करेति।

अर्थ—त्यारपछी ते भद्रा सार्थवाही धन्य सार्थवाहे आज्ञा आपी सती हृष्ट तुष्ट थइ यावत् विपुल अशन, पान,

खादिम अने स्वादिम तैयार करी यावत् स्नान करी यावत् जेनुं पहेरेलुं तथा ओढेलुं बन्ने वस्त्रो भीनां छे एवी सती ज्यां नाग विगेरेनां गृह छे त्यां आवी यावत् धूप उवेख्यो, प्रणाम कर्या, प्रणाम करीने ज्यां पुष्करिणी हती, त्यां आवी, आवीने पछी ते मित्र, ज्ञाति यावत् नगरनी स्त्रीओए भद्रा सार्थवाहीने सर्व अलंकारवडे विभूषित करी.

मू०—तते णं सा भद्दा सत्थवाही ताहिं मित्तनातिनियगसयणसंबंधिपरिजणणगरमहिलियाहिं सद्धिं तं विपुलं असणपाणखातिमसातिमं जाव परिभुंजमाणी य दोहलं विणेति, विणित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूता तामेव दिसिं पडिगया।

अर्थ—त्यारपछी ते भद्रा सार्थवाही ते मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन, संबंधी, परिवार अने नगरनी स्त्रीओनी साथे ते विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने यावत् खाती सती दोहलाने पूर्ण करती हवी. पूर्ण करीने जे दिशामांथी प्रगट थइ हती—आवी हती ते ज दिशामां पाछी गइ—घरे गइ.

मू०—तते णं सा भद्दा सत्थवाही संपुन्नडोहला जाव तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहति।

अर्थ—त्यारपछी ते भद्रा सार्थवाही दोहलाने संपूर्ण करी यावत् ते गर्भने सुखे सुखे वहन करती हती.

मू०—तते णं सा भद्दा सत्थवाही णवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाण राइंदियाणं सुकुमालपाणिपादं जाव दारगं पयाया।

अर्थ—त्यारपछी ते भद्रा सार्थवाहीए नव मास बराबर पूर्ण थया अने ते उपर साडा सात रात्रि दिवस व्यतीत थया त्यारे कोमळ छे हाथ पग जेना एवा पुत्रने प्रसव्यो.

मू०—तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे जातकम्मं करेंति, करित्ता तहेव जाव विपुलं असणपाणखातिमसातिमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावित्ता तहेव मित्तनाति० भोयावेत्ता अयमेयारूवं गोन्नं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति—" जम्हा णं अम्हं इमे दारए बहूणं नागपडिमाण य जाव वेसमणपडिमाण य उवाइयलद्धे णं तं होउ णं अम्हं इमे दारए देवदिन्ननामेणं "

अर्थ—त्यारपछी मातापिताए पहेले दिवसे ते पुत्रनुं जातकर्म कर्युं, करीने ते ज प्रमाणे यावत् विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने तैयार कराव्युं, तैयार करावी ते ज प्रमाणे मित्र, ज्ञाति विगेरेने भोजन करावी आ आवा प्रकारनुं गौण एटले गुणथी नीपजेलुं तेनुं नाम कर्युं.—" जे कारण माटे अमारो आ पुत्र घणी नागप्रतिमा यावत् वैश्रवण प्रतिमानी मानता मानवाथी प्राप्त थयो छे, ते कारण माटे अमारो आ पुत्र देवदिन्न नामे हो.

मू०—तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो जायं च दायं च भायं च अक्खयनिहिं च अणुवड्ढेंति ॥ ३५ ॥

---

१ देवदत्त.

अर्थ—त्यारपछी ते पुत्रना मातापिता ते देवोनी पूजा करवा लाग्या, दान देवा लाग्या, प्राप्त थयेला धननो भाग आपवा लाग्या, अने अक्षय निधिनी वृद्धि करवा लाग्या.३७.

मू०—तते णं से पंथए दासचेडए देवदिन्नस्स दारगस्स बालग्गाही जाए, देवदिन्नं दारयं कडीए गेण्हति, गेण्हित्ता बहूहिं डिंभएहि य डिंभगाहि य दारएहि य दारियाहि य कुमारेहि य कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे अभिरममाणे अभिरमति ।

अर्थ—त्यारपछी ते पंथक नामनो दासपुत्र ते देवदिन्न नामना पुत्रनो [1]बालग्राही थयो. तेथी ते देवदिन्न कुमारने पोतानी केड उपर ग्रहण करतो हतो, ग्रहण करीने घणा बाळको, बाळिकाओ, छोकरा, छोकरीओ, कुमार अने कुमारिकाओ साथे परिवर्यो सतो रमतो हतो—रमाडतो हतो.

मू०—तते णं सा भद्दा सत्थवाही अन्नया कयाइं देवदिन्नं दारयं ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्तं सव्वालंकारभूसियं करेति, पंथयस्स दासचेडयस्स हत्थयंसि दलयति ।

अर्थ— त्यारपछी ते भद्रा सार्थवाही एकदा कदाचित् देवदिन्न कुमारने स्नान करावी, बलिकर्म करी, कौतुक, मंगळ, प्रायश्चित्त करी तथा सर्व अलंकारोवडे विभूषित करी पंथक नामना दासपुत्रना हाथमां आप्यो.

१ बाळकने रमाडनार.

मू०—तते णं से पंथए दासचेडए भद्दाए सत्थवाहीए हत्थाओ देवदिन्नं दारगं कडिए गिण्हति, गिण्हित्ता सयातो गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता बहूहिं डिंभएहि य डिंभियाहि य जाव कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवदिन्नं दारगं एगंते ठावेति, ठावित्ता बहूहिं डिंभएहि य जाव कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे पमत्ते यावि होत्था विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते पंथक दासपुत्रे भद्रा सार्थवाहीना हाथमांथी देवदिन्न कुमारने लइ पोतानी केड उपर ग्रहण कर्यो, ग्रहण करीने पोताना घरमांथी बहार नीकळ्यो, बहार नीकळीने घणा बाळको, बाळिकाओ यावत् कुमारिकाओनी साथे परिवर्यो सतो ज्यां राजमार्ग हतो, त्यां आव्यो, आवीने देवदिन्न कुमारने एकांत स्थळे स्थापन कर्यो (बेसाड्यो), स्थापन करी घणा बाळको यावत् कुमारिकाओ साथे परिवर्यो सतो प्रमादी[1] थइने विचरवा लाग्यो—रमवा लाग्यो.

मू०—इमं च णं विजए तक्करे रायगिहस्स नगरस्स बहूणि बाराणि य अवदाराणि य तहेव जाव आभोएमाणे मग्गेमाणे गवेसेमाणे जेणेव देवदिन्ने दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

१ देवदिन्ननी संभाळ राखवामा प्रमादी.

देवदिन्नं दारगं सव्वालंकारविभूसियं पासति, पासित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स आभरणालंकारेसु मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववन्ने पंथयं दासचेडं पमत्तं पासति, पासित्ता दिसालोयं करेति, करेत्ता देवदिन्नं दारगं गेण्हति, गेण्हित्ता कक्खंसि अल्लियावेति, अल्लियावित्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ, पिहेइत्ता सिग्घं तुरियं चवलं वेतियं रायगिहस्स नगरस्स अवदारेणं निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव जिण्णुज्जाणे जेणेव भग्गकूवए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता देवदिन्नं दारयं जीवियाओ ववरोवेति, ववरोवित्ता आभरणालंकारं गेण्हति, गेण्हित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवियविप्पजढं भग्गकूवए पक्खिवति, पक्खिवित्ता जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मालुयाकच्छयं अणुपविसति, अणुपविसित्ता निच्चले निप्फंदे तुसिणीए दिवसं खिवेमाणे चिट्ठति ॥३६॥

अर्थ—आ समये विजय नामनो चोर राजगृह नगरना घणां द्वारो, अपद्वारो, विगेरेने ते ज प्रमाणे यावत् जोतो, मार्गणा करतो, गवेषणा करतो ज्यां देवदिन्नकुमार हतो, त्यां आव्यो, आवीने ते देवदिन्न कुमारने सर्व अलंकारोवडे विभूषित जोयो, जोइने देवदिन्न कुमारना आभरण अने अलंकारो उपर मूर्छित (मूढ) एटले विवेक चैतन्य रहित थयो, लोभ-

तंतुवडे ग्रथित थयो, गृद्ध-आकांक्षावाळो थयो, अने अभ्युपपन्न एटले तेमां ज एकाग्रताने पाम्यो. पछी पंथक नामना दासपुत्रने प्रमादी जोयो, प्रमादी जोइने चोतरफ दिशाओमां अवलोकन कर्युं, करीने देवदिन्न कुमारने ग्रहण कर्यो, ग्रहण करीने काखमां नांख्यो, नांखीने उत्तरीय वस्त्रवडे तेने ढांकी दीधो, ढांकीने शीघ्र, त्वरित, चपळ अने उतावळथी राजगृह नगरना अपद्वारवडे नीकळ्यो, नीकळीने ज्यां जीर्णउद्यान हतुं अने ज्यां भांगेलो कूवो हतो त्यां आव्यो, आवीने देवदिन्न कुमारने जीवितथी रहित कर्यो, जीव रहित करी तेना आभरण अने अलंकार ग्रहण कर्या, ग्रहण करीने देवदिन्न कुमारना प्राण रहित, चेष्टा रहित अने जीवितथी मूकायेला शरीरने भांगेला कूवामां नांखी दीधुं. नांखी दइने मालुका कच्छने[1] विषे प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने निश्चळ-गमनागमनादिक रहित, निष्पंद-हस्तादिक अवयवने स्थिर राखी, तूष्णीक-मुंगो रही दिवसने निर्गमन करतो रह्यो. ३८.

मू०-तते णं से पंथए दासचेडे तओ मुहुत्तंतरस्स जेणेव देवदिन्ने दारए ठविए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता देवदिन्नं दारगं तंसि ठाणंसि अपासमाणे रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे देवदिन्नदारगस्स सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेइ, करित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स कत्थइ सुतिं

१ मालुक नामना वृक्षोनी झाडीमां.

वा खुतिं वा पउत्तिं वा अलभमाणे जेणेव सए गिहे जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छाति, उवागच्छित्ता धण्णं सत्थवाहं एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते पंथक नामनो दासपुत्र एक क्षणवार पछी ज्यां देवदिन्न कुमारने स्थापन कर्यो हतो, त्यां आव्यो, आवीने देवदिन्न कुमारने ते स्थाने जोयो नहीं, तेथी ते रोवा लाग्यो, आक्रंद करवा लाग्यो अने विलाप करवा लाग्यो. पछी देवदिन्न कुमारनी सर्वत्र सर्व दिशाओमां मार्गणा गवेषणा करवा लाग्यो, करीने देवदिन्न कुमारनी कोइपण ठेकाणे श्रुति-खबरने, क्षुत-छींक विगेरेना शब्दने अथवा प्रवृत्तिने नहीं पामवाथी ज्यां पोतानुं घर हतुं अने ज्यां धन्य सार्थवाह हतो त्यां आव्यो, आवीने तेणे धन्य सार्थवाहने आ प्रमाणे कह्युं—

मू०—एवं खलु सामी ! भद्दा सत्थवाही देवदिन्नं दारयं ण्हायं जाव मम हत्थंसि दलयाति। तते णं अहं देवदिन्नं दारयं कडीए गिण्हामि, गिण्हित्ता जाव मग्गणगवेसणं करेमि, तं न णज्जाति णं सामि ! देवादिन्ने दारए केणइ ह (णी) ते वा अवहिए वा अवखित्ते वा पायवडिए धण्णस्स सत्थवाहस्स एतमट्ठं निवेदेति।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे स्वामी ! भद्रा सार्थवाहीए देवदिन्न कुमारने नवरावी यावत् मारा हाथमां आप्यो हतो,

त्यारपछी में ते देवदिन्न कुमारने मारी केड उपर ग्रहण कर्यो हतो, ग्रहण करीने (बहार लइ जइ एक जग्याए बेसाड्यो. पछी) यावत् तेनी मार्गणा गवेषणा में करी, परंतु हुं नथी जाणतो के हे स्वामी ! देवदिन्न कुमारने कोइ मित्रादिक पोताने घेर लइ गयो ? के कोइ चोरादिक तेने हरी गयो ? के कोइए लोभ पमाड्यो ? " आ प्रमाणे तेणे धन्य सार्थवाहना पगमां पडी आ अर्थ (वृत्तांत) निवेदन कर्यो.

मू०—तते णं से धण्णे सत्थवाहे पंथयदासचेडयस्स एतमट्ठं सोच्चा णिसम्म तेण य महया पुत्तसोएणाभिभूते समाणे परसुणियत्ते चंपगपायवे धसत्ति धरणीयलंसि सव्वंगेहिं सन्निवइए ।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाह पंथक नामना दासपुत्र पासेथी आ अर्थ (वृत्तांत) सांभळीने हृदयमां धारीने ते पुत्र संबंधी मोटा शोकवडे पराभव पाम्यो सतो कुहाडावडे छेदायेला चंपकना वृक्षनी जेम धस (भस) दइने पृथ्वीतळ उपर सर्व अंगे करीने पडी गयो. (मूर्च्छा आवी गइ)

मू०—तते णं से धन्ने सत्थवाहे ततो मुहुत्तंतरस्स आसत्थे पच्छागयपाणे देवदिन्नस्स दारगस्स सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करोति । देवदिन्नस्स दारगस्स कत्थइ सुइं वा खुइं वा पउत्तिं वा अलभमाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता महत्थं पाहुडं गेण्हति, गेण्हित्ता जेणेव नगरगुत्तिया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तं महत्थं पाहुडं उवणाति, उवणातित्ता एवं वयासी—

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाह केटलीक वार पछी आश्वासन पाम्यो (स्वस्थ थयो), तेना प्राण जाणे पाछा आव्या होय तेम थयुं; पछी तेणे देवदिन्न कुमारनी सर्वत्र सर्व दिशामां मार्गणा गवेषणा करी, पण ते देवदिन्न कुमारनी कोइ ठेकाणे वार्ताने के छुतने-छींक जेवा शब्दने के प्रवृत्तिने पण नहीं पाम्यो सतो ज्यां पोतानुं घर हतुं त्यां आव्यो, आवीने मोटुं भेटणुं ग्रहण कर्युं, ग्रहण करीने ज्यां नगरगुप्तिका (कोटवाळ) हता त्यां आव्यो, आवीने ते मोटुं भेटणुं तेमनी पासे मूक्युं, मूकीने आ प्रमाणे बोल्यो—

मू०—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए देवदिन्ने नाम दारए इट्ठे जाव उंबरपुप्फं पिव दुल्लहे सवणयाए किमंग पुण पासणयाए ?

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! मारो पुत्र अने भद्रा भार्यानो आत्मज (पोताथी उत्पन्न थयेलो) देवदिन्न नामनो कुमार अमने इष्ट छे यावत् उंबराना पुष्पनी जेम तेना नामनुं श्रवण पण दुर्लभ छे, तो पछी तेनुं दर्शन दुर्लभ होय तेमां शुं कहेवुं ?

मू०—तते णं सा भद्दा देवदिन्नं ण्हायं सव्वालंकारविभूसियं पंथगस्स हत्थे दलाति जाव पायवडिए तं मम निवेदेति, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! देवदिन्नदारगस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं कयं (करित्तए—करेह)।

अर्थ—त्यारपछी (आज) ते भद्राए देवदिन्नने स्नान करावी सर्व अलंकारोवडे विभूषित करी पंथक नामना दासपुत्रना हाथमां आप्यो हतो, यावत् ते पंथके मारा पगमां पडीने ते हकीकत मने निवेदन करी, तो हुं इच्छुं छुं के हे देवानुप्रियो ! देवदिन्न कुमारनी सर्वत्र सर्व दिशाओमां तमे मार्गणा गवेषणा करो.

मू०—तए णं ते नगरगोत्तिया धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा सन्नद्धबद्धवम्मियकवया उप्पीलियसरासणवट्टिया जाव गहियाउहपहरणा धण्णेणं सत्थवाहेणं सद्धिं रायगिहस्स नगरस्स बहूणि अतिगमणाणि य जाव पवासु य मग्गणगवेसणं करेमाणा रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव जिण्णुज्जाणे जेणेव भग्गकूवए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवविप्पजढं पासंति, पासित्ता हा हा अहो अकज्जमिति कट्टु देवदिन्नं दारगं भग्गकूवाओ उत्तारेंति, उत्तारित्ता धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थे णं दलयंति ॥३८॥

अर्थ—त्यारपछी ते नगरना आरक्षकोने धन्य सार्थवाहे आ प्रमाणे कह्युं त्यारे तेओए बख्तर संनद्ध—तैयार करी बद्ध—कसा (दोरी) ना बंधवडे बांधी वर्मित-शरीरपर धारण कर्या, धनुषरूपी पट्टिका उपर प्रत्यंचा (दोरी) चडावी अथवा

वाहुने विषे चर्मना पट्टा बांध्या, तथा प्रहार करवा माटे आयुधो (शस्त्र) ग्रहण कर्यां अथवा आयुध एटले तीर विगेरे फेंकवानां हथियार अने प्रहरण एटले खड्गादिक शस्त्रोने ग्रहण कर्यां. पछी धन्य सार्थवाहनी साथे राजगृह नगरना घणा नीकळवाना मार्गो विगेरेने विषे यावत् पाणीनी परबने विषे मार्गणा गवेषणा करता सता अनुक्रमे राजगृह नगरनी वहार नीकळ्या. नीकळीने ज्यां ते जीर्ण उद्यान हतुं अने ज्यां ते भांगेलो कूवो हतो त्यां आव्या. आवीने ते कूवामां प्राण रहित, चेष्टा रहित अने जीवथी मुक्त थयेलुं देवदिन्न कुमारनुं शरीर जोयुं, जोइने " हा हा ! अहो ! आ अकार्य ! " एम खेद सहित बोली तेओए देवदिन्न कुमारने ते कूवामांथी बहार काढ्यो, वहार काढीने धन्य सार्थवाहना हाथमां आप्यो. ३८.

मू०—तते णं ते नगरगुत्तिया विजयस्स तक्करस्स पयमग्गमणुगच्छमाणा जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मालुयाकच्छयं अणुपविसंति, अणुपविसित्ता विजयं तक्करं ससक्खं सहोडं सगेवेज्जं जीवग्गाहं गिण्हंति, गिण्हित्ता अट्ठिमुट्ठिजाणुकोप्परपहारसंभग्गमहियगत्तं करेंति, करित्ता अवउडाबंधणं करेंति, करित्ता देवदिन्नगस्स दारगस्स आभरणं गेण्हंति, गेण्हित्ता विजयस्स तक्करस्स गीवाए बंधंति, बंधित्ता मालुयाकच्छगाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता रायगिहं नगरं अणुपविसंति, अणुपविसित्ता

रायगिहे नगरे सिंघाडगतियचउक्कचच्चरमहापहपहेसु कसप्पहारे य लयप्पहारे य छिवापहारे य निवाएमाणा निवाएमाणा छारं च धूलिं च कयवरं च उवरिं पक्किरमाणा पक्किरमाणा महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा एवं वदंति—

अर्थ—त्यारपछी ते नगरना आरक्षको विजय चोरना पगलाना मार्गे चालतां ज्यां मालुकाकच्छ हतो त्यां आव्या, आवीने मालुकाकच्छने विषे तेओए प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने विजय नामना तस्करने साक्षी सहित एटले पंचनी साक्षीए होड सहित एटले चोरीना माल सहित ग्रीवाने विषे बांध्यो (डोकमां बांध्यो) अने जीवतो ग्रहण कर्यो–पकड्यो. पछी अस्थि,[1] मुष्टि, जानु[2] अने कूर्परना[3] प्रहारोए करीने तेना शरीरने भग्न अने मथित एटले जाजरुं कर्युं (अथवा तेना अस्थि विगेरेमां प्रहार करीने तेनुं शरीर जाजरुं कर्युं). करीने अवझोटन एटले तेनी गरदन तथा बन्ने हाथने पीठपर अवळा करीने बांध्या. बांधीने देवदिन्न कुमारना आभरणो ग्रहण कर्यां, ग्रहण करीने विजय तस्करने गळे बांध्यां. बांधीने मालुकाकच्छमांथी बहार नीकळ्या. नीकळीने ज्यां राजगृह नगर हतुं त्यां आव्या, आवीने राजगृह नगरमां प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने राजगृह नगरना शृंगाटक, त्रिक, चतुष्क, चत्वर अने महापथ विगेरे मार्गोमां कशाना[4] प्रहारवडे, लता–(सोटी) ना प्रहारवडे तथा छिवा (कंवा) ना प्रहारवडे तेने मारता मारता अने तेना उपर छार (राख), धूळ अने

१ हाडकानी लाकडी. २ ढींचण. ३ कोणी. ४ चाबक.

कचराने नांखता नांखता मोटा मोटा शब्दवडे आघोषणा करता आ प्रमाणे बोल्या.—

मू०—एस णं देवाणुप्पिया ! विजए नामं तक्करे जाव गिद्धे विव आमिसभक्खी बालघायए बालमारए, तं नो खलु देवाणुप्पिया ! एयस्स केति राया वा रायपुत्ते वा रायमच्चे वा अवरज्झति एत्थट्ठे अप्पणो सयातिं कम्माइं अवरज्झंति त्ति कट्टु जेणामेव चारगसाला तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता हडिबंधणं करेंति, करित्ता भत्तपाणनिरोहं करेंति, करित्ता तिसंझं कसप्पहारे य जाव निवाएमाणा निवाएमाणा विहरंति ।

अर्थ—हे देवानुप्रिय लोको ! आ विजय नामनो चोर यावत् गीध पक्षीनी जेम मांसनुं भक्षण करनार, बाळकनो घात करनार (प्रहार करनार) अने बाळकने मारनार (जीवितनो नाश करनार) छे. तेथी हे देवानुप्रिय लोको ! कोइ राजा, राजपुत्र के राजाना प्रधाने आनो कांइ पण अपराध कर्यो नथी (आना उपर फोगट गुस्से थया नथी.) आ बाबतमां तेनां पोतानां करेलां कर्मो ज अपराधी छे (अनर्थ करनारा छे.). " आ प्रमाणे कहीने ज्यां चोरकशाळा[1] हती त्यां आव्या, आवीने तेने हेड (बेडी) नुं बंधन कर्युं, बंधन करीने भातपाणीनो निषेध कर्यो, करीने त्रणे संध्याकाळे चाबक विगेरेना प्रहारोवडे यावत् तेने मारता मारता विचरवा लाग्या.

१ केदखानुं.

मू०—तते णं से धण्णे सत्थवाहे मित्तनातिनियगसयणसंबंधिपरियणेणं सद्धिं रोयमाणे जाव विलवमाणे देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरस्स महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं निहरणं करेंति, करित्ता बहूइं लोतियातिं मयगकिच्चाइं करेंति, करित्ता केणइ कालंतरेणं अवगयसोए जाए यावि होत्था ॥३९॥

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाहे मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन, संबंधी अने परिवारनी साथे रोता रोता यावत् विलाप करता करता देवदिन्न कुमारना शरीर (शब) नुं मोटी ऋद्धि सत्कारना समुदायवडे नीहरण कर्युं, (स्मशान लइ गया). पछी घणा लौकिक मृतकने लगता कार्य कर्या, करीने केटलेक काळे ते धन्य सार्थवाह शोक रहित पण थयो. ३९.

मू०—तते णं से धण्णे सत्थवाहे अन्नया कयाइं लहूसयंसि रायावराहंसि संपलत्ते जाए यावि होत्था । तते णं ते नगरगुत्तिया धण्णं सत्थवाहं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव चारगे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता चारगं अणुपवेसंति, अणुपवेसित्ता विजएणं तक्करेणं सद्धिं एगयओ हडिबंधणं करेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाहनो एकदा कदाचित् पिशुन लोकोए कहेलो दाणचोरी जेवो नानो राजानो अप-

राध थयेलो तेथी नगरना रक्षकोए धन्य सार्थवाहने ग्रहण कर्यो (पकडयो), ग्रहण करीने ज्यां केदखानुं हतुं त्यां आव्या, आवीने तेने केदखानामां प्रवेश कराव्यो (नांख्यो), प्रवेश करावीने विजय तस्करनी साथे एक ज हेड (बेडी)-नुं बंधन कर्युं. (एक हेडमां ज बंनेने नांख्या)

मू०—तते णं सा भद्दा भारिया कल्लं जाव जलंते विपुलं असणपाणखातिमसातिमं उवक्खडेति, उवक्खडित्ता भोयणपिंडए करेति, करित्ता भोयणाइं पक्खिवति, पक्खिवित्ता लंछियमुद्दियं करेइ, करित्ता एगं च सुरभिवारिपडिपुन्नं दगवारयं करोति, करित्ता पंथयं दासचेडं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—“ गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया ! इमं विपुलं असणपाणखातिमसातिमं गहाय चारगसालाए धन्नस्स सत्थवाहस्स उवणेहि ”।

अर्थ—त्यारपछी ते भद्रा भार्याए बीजे दिवसे यावत् सूर्य देदीप्यमान थयो त्यारे विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम ए चारे प्रकारना आहारने तैयार कर्यो, तैयार करीने भोजननुं पात्र मूकवानो पिटक (करंडीयो) तैयार कर्यो, तैयार करीने तेमां भोजननां पात्रो मूक्यां, मूकीने ते करंडीयो रेखादिकवडे लांछित (चिन्हवाळो) कर्यो तथा मुद्रावडे मुद्रित कर्यो, करीने सुगंधी जळनो भरेलो नानो घडो तैयार कर्यो, तैयार करीने पंथक नामना दासपुत्रने बोलाव्यो, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—“ हे देवानुप्रिय ! तुं जा. आ विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने ग्रहण करी केद-

खानामां धन्य सार्थवाहनी पासे लइ जा.

मू०—तते णं से पंथए भद्दाए सत्थवाहीए एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे तं भोयणपिंडयं तं च पडिनिक्ख-
सुरभिवरवारिपडिपुन्नं दगवारयं गेण्हति, गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमति, उवागच्छति,
मित्ता रायगिहे नगरे मज्झंमज्झेणं जेणेव चारगसाला जेणेव धन्ने सत्थवाहे तेणेव गेण्हित्ता
उवागच्छित्ता भोयणपिंडयं ठावेति, ठावित्ता उल्लंछति, उल्लंछित्ता भायणाइं गेण्हति, असणपा-
भायणाइं धोवेति, धोवित्ता हत्थसोयं दलयति, दलयित्ता धण्णं सत्थवाहं तेणं विपुलेणं
णखातिमसातिमेणं परिवेसाति ।

अर्थ—त्यारपछी ते पंथके भद्रा सार्थवाहीए आ प्रमाणे कहे सते हृष्ट तुष्ट थइ ते भोजननो पिटक (करंडीयो) तथा ते सुगंधी अने श्रेष्ठ जळनो भरेलो नानो घडो ग्रहण कर्यो, ग्रहण करी पोताना घरथी नीकळ्यो, नीकळी राजगृह नगरना मध्य भागवडे ज्यां केदखानुं हतुं अने ज्यां धन्य सार्थवाह हतो त्यां आव्यो, आवीने भोजननो करंडीयो (भूमि उपर) स्थापन कर्यो, स्थापन करीने लांछन–मुद्रा रहित कर्यो, लांछन–मुद्रा रहित करी भाजन (पात्रो) ग्रहण कर्यां, ग्रहण करीने ते भाजनो धोयां, धोइने हस्तशौच–हाथ धोवानुं पाणी आप्युं, आपीने धन्य सार्थवाहने ते विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम ए चार प्रकारनो आहार पीरस्यो (जमाडवा लाग्यो).

मू०—तते णं से विजए तक्करे धण्णं सत्थवाहं एवं वदासी—" तुमं णं देवाणुप्पिया ! मम एयाओ विपुलातो असणपाणखातिमसातिमातो संविभागं करेहि "।

अर्थ—ते वखते ते विजय तस्करे धन्य सार्थवाहने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रिय ! तुं मने आ विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम ए चार प्रकारना आहारनो संविभाग कर (तेमांथी कांइक आप). "

मू०—तते णं से धण्णे सत्थवाहे विजयं तक्करं एवं वदासी—" अवियाइं अहं विजया ! एयं विपुलं असणपाणखातिमसातिमं कायाणं वा सुणगाणं वा दलएज्जा उक्कुरुडियाए वा णं छड्डेज्जा, नो चेव णं तव पुत्तघायगस्स पुत्तमारगस्स अरिस्स वेरियस्स पडिणीयस्स पच्चामित्तस्स एत्तो विपुलाओ असणपाणखातिमसातिमाओ संविभागं करेज्जामि "।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाहे विजय तस्करने आ प्रमाणे कह्युं—" हे विजय ! हुं आ विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम कागडाने अथवा कूतराने आपी दइश, अथवा उकरडे नांखी दइश, परंतु तुं मारा पुत्रनो घात करनार अने पुत्रनो मारनार छे, तेथी तुं मारो अरि–शत्रु छे, वेरी–सानुबंध वेरवाळो छे, प्रत्यनीक–प्रतिकूळ आचरण करनार छे अने प्रत्यमित्र–वस्तु वस्तु प्रत्ये अमित्र छे, तेथी तने आ विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमनो संविभाग नहीं ज करुं एटले कांइ पण नहीं आपुं. "

मू०–तते णं से धण्णे सत्थवाहे तं विपुलं असणपाणखातिमसातिमं आहारेति, आहारित्ता तं पंथयं पडिविसज्जेति। तते णं से पंथए दासचेडे तं भोयणपिडगं गिण्हति, गिण्हित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूते तामेव दिसिं पडिगए।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाहे ते विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमनो आहार कर्यो, आहार करीने ते पंथकने रजा आपी, त्यारे ते पंथक दासपुत्रे ते भोजननो करंडीयो ग्रहण कर्यो, ग्रहण करीने जे दिशामांथी प्रगट थयो हतो (आव्यो हतो) ते ज दिशामां पाछो गयो.

मू०–तते णं तस्स धण्णस्स सत्थवाहस्स तं विपुलं असणपाणखातिमसातिमं आहारियस्स समाणस्स उच्चारपासवणे णं उव्वाहित्था।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाहने ते विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमनो आहार करता सता ठल्ला-मात्रानी बाधा उत्पन्न थइ.

मू०–तते णं से धण्णे सत्थवाहे विजयं तक्करं एवं वदासी–"एहि ताव विजया! एगंतमवक्कमामो, जेणं अहं उच्चारपासवणं परिट्ठवेमि"।

अर्थ—त्यारे ते धन्य सार्थवाहे विजय तस्करने आ प्रमाणे कह्युं—"हे विजय ! चाल, आपणे एकांतमां जइए, के जेथी हुं ठल्लो मात्रुं परठवुं (दस्त पेशाब करुं)"

मू०—तते णं से विजए तक्करे धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी—"तुब्भं देवाणुप्पिया ! विपुलं असणपाणखातिमसातिमं आहारियस्स अत्थि उच्चारे वा पासवणे वा, ममं णं देवाणुप्पिया ! इमेहिं बहूहिं कसप्पहारेहि य जाव लयापहारेहि य तण्हाए य छुहाए य परब्भवमाणस्स णत्थि केइ उच्चारे वा पासवणे वा, तं छंदेणं तुमं देवाणुप्पिया ! एगंते अवक्कमित्ता उच्चारपासवणं परिट्ठवेहि"।

अर्थ—त्यारे ते विजय तस्करे धन्य सार्थवाहने आ प्रमाणे कह्युं—"हे देवानुप्रिय ! तें विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमनो आहार कर्यो छे तेथी तारे उच्चार अने प्रश्रवणनी बाधा थइ छे, परंतु हे देवानुप्रिय ! हुं तो आ कशाना प्रहारोवडे यावत् लताना प्रहारोवडे तथा तृषा अने क्षुधावडे पीडा पामेलो छुं तेथी मने कांइ पण उच्चार प्रश्रवणनी बाधा नथी, ते कारणथी हे देवानुप्रिय ! तुं तारी इच्छा प्रमाणे एकांते जइने उच्चार प्रश्रवणने परठव-कर."

मू०—तते णं से धण्णे सत्थवाहे विजएणं तक्करेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठति । तते णं से धण्णे सत्थवाहे मुहुत्तंतरस्स बलियतरागं उच्चारपासवणेणं उव्वाहिज्जमाणे विजयं तक्करं एवं

वदासी–" एहि ताव विजया ! जाव अवक्कमामो । "

अर्थ—त्यारपछी (ते सांभळी) ते धन्य सार्थवाह विजय तस्करे आ प्रमाणे कहे सते मौन रह्यो. त्यारपछी ते धन्य सार्थवाह एक मुहूर्त (क्षणवार) पछी उच्चार प्रश्रवणवडे अत्यंत बाधा पामवा लाग्यो, त्यारे तेणे विजय तस्करने आ प्रमाणे कह्युं—" हे विजय ! चाल, यावत् आपणे एकांतमां जइए, विगेरे "

मू०–तते णं से विजए धण्णं सत्थवाहं एवं वदासी–" जइ णं तुमं देवाणुप्पिया ! ततो विपुलाओ असणपाणखातिमसातिमाओ संविभागं करेहि, ततो हं तुमेहिं सद्धिं एगंतं अवक्कमामि। "

अर्थ—त्यारे ते विजय तस्करे धन्य सार्थवाहने आ प्रमाणे कह्युं–" हे देवानुप्रिय ! जो तुं ते विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमनो संविभाग करे (मने आपे) तो हुं तारी साथे एकांतमां आवुं. "

मू०–तते णं से धण्णे सत्थवाहे विजयं एवं वदासी–" अहं णं तुब्भं ततो विपुलाओ असणपाणखातिमसातिमाओ संविभागं करिस्सामि " ।

अर्थ—त्यारे ते धन्य सार्थवाहे विजयने आ प्रमाणे कह्युं–" हुं तने ते विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमनो संविभाग करीश. (आपीश) "

मू०—तते णं से विजए धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं पडिसुणेति । तते णं से विजए धण्णेणं सद्धिं एगंते अवक्कमेति उच्चार पासवणं परिट्ठवेति, आयंते चोक्खे परमसुइभूए तमेव ठाणं उवसंकमित्ता णं विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते विजये धन्य सार्थवाहनो आ अर्थ अंगीकार कर्यो, पछी ते विजय धन्य सार्थवाहनी साथे एकांतमां गयो, सार्थवाहे उच्चार प्रश्रवण कर्युं. पछी जळवडे चोख्खा थइ परम पवित्र थइ फरीथी प्रथमना स्थाने आवीने रह्या.

मू०—तते णं सा भद्दा कल्लं जाव जलंते विपुलं असणपाणखातिमसातिमं जाव परिवेसेति । तते णं से धण्णे सत्थवाहे विजयस्स तक्करस्स ततो विपुलाओ असणपाणखातिमसातिमाओ संविभागं करेति । तते णं से धण्णे सत्थवाहे पंथयं दासचेडं विसज्जेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते भद्रा सार्थवाहीए काले (बीजे दिवसे) यावत् सूर्य देदीप्यमान थयो त्यारे विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम तैयार करी पंथकने मोकल्यो, तेणे यावत् ते अशनादिक पीरस्युं. ते वखते ते धन्य सार्थवाहे ते विजय तस्करने ते विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमनो संविभाग कर्यो. (खावा आप्युं.) त्यारपछी ते धन्य सार्थवाहे पंथक नामना दासपुत्रने रजा आपी.

मू०—तते णं से पंथए भोयणपिडयं गहाय चारगाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गेहे जेणेव भद्दा भारिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भद्दं सत्थवाहिणिं एवं वयासी—"एवं खलु देवाणुप्पिए ! धण्णे सत्थवाहे तव पुत्तघायगस्स जाव पच्चामित्तस्स ताओ विपुलाओ असणपाणखातिमसातिमाओ संविभागं करेति" ॥ ४०॥

अर्थ—त्यारपछी ते पंथक नामनो दासपुत्र ते भोजननो करंडीयो लइ केदखानामांथी बहार नीकळ्यो, बहार नीकळी राजगृह नगरना मध्यभागवडे जे ठेकाणे पोतानुं घर हतुं अने जे ठेकाणे भद्रा भार्या हती ते ठेकाणे आव्यो, आवीने तेणे भद्रा सार्थवाहीने आ प्रमाणे कह्युं—" निश्चे हे देवानुप्रिया ! धन्य सार्थवाह तमारा पुत्रना घात करनारने यावत् प्रत्यमित्र (शत्रु) ने ते विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमनो संविभाग आप्यो छे. ४०.

मू०—तते णं सा भद्दा सत्थवाही पंथयस्स दासचेडयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरत्ता रुट्ठा जाव मिसिमिसेमाणा धण्णस्स सत्थवाहस्स पओसमावज्जति ।

अर्थ—ते वखते ते भद्रा सार्थवाही पंथक नामना दासपुत्रनी पासेथी आ अर्थ (वृत्तांत) सांभळी तत्काळ रक्त (राता नेत्रवाळी) थइ, क्रोध पामी, यावत् धगधगायमान थइ अने धन्य सार्थवाह उपर प्रद्वेष करवा लागी.

मू०—तते णं से धण्णे सत्थवाहे अन्नया कयाइं मित्तनातिनियगसयणसंबंधिपरियणेणं सएण य अत्थसारेणं रायकज्जातो अप्पाणं मोयावेति, मोयावित्ता चारगसालाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अलंकारियकम्मं करेति, करित्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अह धोयमट्टियं गेण्हाति, गेण्हित्ता पोक्खरिणीं ओगाहाति, ओगाहित्ता जलमज्जणं करेति, करित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे जाव रायगिहं नगरं अणुपविसति, अणुपविसित्ता रायगिहनगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव पधारेत्थ गमणाए।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाहे एकदा कदाचित् मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन, संबंधी अने परिवार लोकोद्वारा पोताना सारभूत अर्थ (धन) वडे राजकार्य (राजदंड) थकी पोताना आत्माने मुक्त कराव्यो (छोडाव्यो), मुक्त करावी केदखानामांथी बहार नीकळ्यो, बहार नीकळी ज्यां अलंकारिकेनी सभा हती, त्यां आव्यो, आवीने अलंकारनुं कर्म कर्युं, करीने ज्यां पुष्करिणी (वाव) हती, त्यां आव्यो आवीने नीचे रहेली धोवानी माटी ग्रहण करी, ग्रहण करीने पुष्क-

१ ज्यां हजाम विगेरे लोकोथकी शरीर सत्कार करातो होय तथा नख लेवा अने हजामत विगेरे कार्य थतुं होय ते स्थान.

रिणीमां प्रवेश कर्यो, प्रवेश करी जळने विषे मज्जन कर्युं मज्जन करी स्नान कर्युं, बलिकर्म कर्युं, यावत् राजगृह नगरमां प्रवेश कर्यो, प्रवेश करी राजगृह नगरना मध्य भागे थइने ज्यां पोतानुं घर हतुं त्यां जवा प्रवर्त्यो.

मू०—तते णं तं धण्णं सत्थवाहं एज्जमाणं पासित्ता रायगिहे नगरे बहवे नियगसेट्ठिसत्थवाहपभितओ आढंति परिजाणंति सक्कारेंति सम्माणेंति अब्भुट्ठेंति सरीरकुसलं पुच्छंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाहने आवतो जोइने राजगृह नगरने विषे घणा पोताना श्रेष्ठी, सार्थवाह विगेरेए तेनो आदर कर्यो, मानथी बोलाव्यो, वस्त्रादिकवडे सत्कार कर्यो, नमस्कारादिकवडे सन्मान कर्युं, उभा थइ मान आप्युं, अने तेना शरीरनी कुशळता पूछी.

मू०—तते णं से धण्णे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता जावि य से तत्थ बाहिरिया परिसा भवति, तं जहा—दासाति वा पेस्साति वा भियगाइ वा भाइल्लगाइ वा, से वि य णं धण्णं सत्थवाहं एज्जंतं पासति, पासित्ता पायवडियाए खेमकुसलं पुच्छंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाह ज्यां पोतानुं घर हतुं त्यां आव्यो, आवीने त्यां जे पोतानी बाह्य सभा हती, ते आ प्रमाणे—दास (दासीना पुत्र), प्रेष्य (कार्य प्रसंगे बहार गाम मोकलाय ते), भृतक (बाल्यावस्थाथी पोषण करेला) अने भाइल्लक (वेपारना भागीदार) ते सर्वेए पण धन्य सार्थवाहने आवतो जोयो, जोइने तेने पगे पडी तेनुं

खेमं कुशळ पूछ्युं.

मू०—जावि य से तत्थ अब्भंतरिगा परिसा भवति, तं जहा—मायाइ वा पियाइ वा भायाति वा भगिणीति वा, सावि य णं धण्णं सत्थवाहं एज्जमाणं पासति, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठित्ता कंठाकंठियं अवयासिय बाहप्पमोक्खणं करेति ।

अर्थ—वळी त्यां जे आभ्यंतर सभा हती, (अंदर बेसवानी जग्या हती) ते आ प्रमाणे—माता, पिता, भाइ अने बहेन विगेरे रहेला हता तेओए पण धन्य सार्थवाहने आवता जोया, जोइने तेओ आसनपरथी उभा थइ एक बीजाना कंठने विषे वळगीने हर्षनां अश्रु मूकवा लाग्या.

मू०—तते णं से धण्णे सत्थवाहे जेणेव भद्दा भारिया तेणेव उवागच्छति । तते णं सा भद्दा सत्थवाही धण्णं सत्थवाहं एज्जमाणं पासति, पासित्ता णो आढाति नो परियाणाति, अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी तुसिणीया परम्मुही संचिट्ठति ।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाह ज्यां भद्रा भार्या हती त्यां आव्यो. ते वखते ते भद्रा सार्थवाहीए धन्य सार्थवाहने

१ अनर्थनी अप्राप्ति. २ आवेला अनर्थनो विनाश.

आवता जोया, जोइने तेणीए तेनो आदर कर्यो नहीं, तेने ओळख्या पण नहीं, आदर नहीं करती अने नहीं ओळखती एवी ते मौनपणे पराङ्मुख (अवळुं मुख राखीने) रही.

मू०–तते ण से धण्णे सत्थवाहे भद्दं भारियं एवं वदासी—किं णं तुब्भं देवाणुप्पिए ! न तुट्ठी वा न हरिसे वा नाणंदे वा ? जं मए सएणं अत्थसारेणं रायकज्जातो अप्पाणं विमोतिए।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाहे भद्रा भार्याने आ प्रमाणे कह्युं–" हे देवानुप्रिया ! केम तुं मारा आववाथी संतोष पामती नथी ? हर्ष पामती नथी ? अने आनंद पामती नथी ? कारण के में पोताना सार द्रव्यवडे राजकार्यथी (राजदंड आपवाथी) मारा आत्माने मूकाव्यो छे. "

मू०–तते णं सा भद्दा धण्णं सत्थवाहं एवं वदासी–" कहं णं देवाणुप्पिया ! मम तुट्ठी वा जाव आणंदे वा भविस्सति ? जेणं तुमं मम पुत्तघायगस्स जाव पच्चामित्तस्स ततो विपुलातो असणपाणखातिमसातिमातो संविभागं करेसि "

अर्थ—त्यारे ते भद्राए धन्य सार्थवाहने आ प्रमाणे कह्युं–" हे देवानुप्रिय ! शी रीते मने संतोष के यावत् आनंद थाय ? कारण के तमे मारा पुत्रना घात करनारने यावत् प्रत्यमित्र (शत्रु) ने ते विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमनो संविभाग आप्यो छे. "

मू०—तते णं से धण्णे भद्दं एवं वदासी—" नो खलु देवाणुप्पिए ! धम्मो त्ति वा तवो त्ति वा कयपडिकइया वा लोगजत्ता ति वा नायए ति वा घाडिए ति वा सहाए ति वा सुहि त्ति वा तओ विपुलाओ असणपाणखातिमसातिमाओ संविभागे कए नन्नत्थ सरीरचिंताए "।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्ये भद्राने आ प्रमाणे कह्युं–" हे देवानुप्रिया ! धर्म छे एम धारीने, तप छे एम धारीने, कृतप्रतिकृतता छे एम धारीने, लोक यात्रा छे–लोकमां देखाव (उचितपणुं) करवो जोइए एम धारीने, नायक छे अथवा न्याय छे एम धारीने, सहचारी छे एम धारीने, सहायरूप छे एम धारीने के सुहृद् (मित्र) छे एम धारीने ते विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमनो में संविभाग कर्यो नथी, एक शरीरचिंताने छोडीने अन्यत्र (बीजा हेतुथी) करेल नथी. अर्थात् में जे ते तस्करने अशनादिकनो संविभाग कर्यो छे, ते मात्र शरीरचिंतामां तेनी सहायनी जरुर होवाथी ज कर्यो छे, परंतु तेने आपवाथी धर्म थशे, तप थशे विगेरे कोइ हेतुथी कांइ संविभाग कर्यो नथी. "

मू०—तते णं सा भद्दा धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठा जाव आसणातो अब्भुट्ठेति कंठाकंठिं अवयासेति खेमकुसलं पुच्छति, पुच्छित्ता ण्हाया जाव पायच्छित्ता विपुलातिं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरति ।

१ करेलानो प्रत्युपकार. २ उच्चार प्रश्रवण.

अर्थ—त्यारपछी ते भद्रा धन्य सार्थवाहे आ प्रमाणे कही सती हृष्ट तुष्ट थइ, यावत् आसनपरथी उभी थइ, तथा परस्पर कंठे वळगीने क्षेम कुशळ पूछ्युं, पूछीने स्नान कर्युं, यावत् प्रायश्चित्त (तिलकादिक) कर्युं, पछी तेनी साथे विपुल पंचेंद्रियना भोग भोगवती रहेवा लागी.

मू०—तते णं से विजए तक्करे चारगसालाए तेहिं बंधेहिं वहेहिं कसप्पहारेहि य जाव तण्हाए य छुहाए य परब्भवमाणे कालमासे कालं किच्चा नरएसु नेरइयत्ताए उववन्ने। से णं तत्थ नेरइए जाते काले कालोभासे जाव वेयणं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते विजय तस्कर केदखानामां ते बंधन, वध अने कशाना प्रहारवडे यावत् तृषा अने क्षुधावडे पराभव पामी काळ समये काळ करी नरकने विषे नारकीपणे उत्पन्न थयो. ते त्यां नरकने विषे उत्पन्न थयो सतो काळो अत्यंत काळो देखातो यावत् वेदनाने अनुभवतो रह्यो.

मू०—से णं ततो उव्वट्टित्ता अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिस्सति ।

अर्थ—ते (विजय चोरनो जीव) ते नरकमांथी उद्धरीने अनादि, अनंत, दीर्घ मार्गवाळा अथवा दीर्घ काळवाळा अने चार विभागवाळा (गतिवाळा) संसाररूपी अरण्यने विषे पर्यटन करशे—भटकशे.

मू०—एवामेव जंबू ! जे णं अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरियउवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वतिए समाणे विपुलमणिमुत्तियधणकणगरयणसारे णं लुब्भति से वि य एवं चेव ॥ ४१ ॥

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे जंबू ! जे अमारा साधु अथवा साध्वी आचार्य अने उपाध्यायनी पासे मुंड थइने अगार (घर) थी नीकळी अनगारपणा प्रत्ये पाम्या सता–प्रव्रजित थया सता विपुल मणि, मौक्तिक, धन, कनक अने रत्नना सारने विषे लुब्ध थाय तो ते पण ए ज प्रमाणे एटले विजयनी जेम नरकादिकने ज पामे छे. ४१

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं धम्मघोसा नामं थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना कुलसंपन्ना जाव पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव रायगिहे नगरे जेणेव गुणसिलए चेतिए जाव अहापडिरूव उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति । परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ ।

अर्थ—ते काळे अने ते समये धर्मघोष नामना स्थविर भगवान उत्तम जाति युक्त, उत्तम कुळे युक्त यावत् पूर्वानुपूर्वी–अनुक्रमे चालता यावत् ज्यां राजगृह नगर हतुं अने ज्यां गुणशैल नामनुं चैत्य हतुं त्यां आव्या, यावत् यथायोग्य अवग्रह (उपाश्रय) नी याचना करी संयम अने तपवडे पोताना आत्माने भावता सता विचर्या–रह्या. तेमनुं आगमन सां-

१ मातृपक्ष. २ पितृपक्ष.

भळी राजगृह नगरमांथी पर्षदा नीकळी, तेमनी पासे धर्म कह्यो.

मू०—तते णं तस्स धणस्स सत्थवाहस्स बहुजणस्स अंतिए एतमट्ठं सोच्चा णिसम्म इमेतारूवे अज्झत्थिते जाव समुपज्जित्था—

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाहने घणा माणसोनी पासेथी आ अर्थ (गुरुनुं पधारवुं) सांभळी हृदयमां अवधारी आवा प्रकारनो अध्यवसाय (विचार) यावत् उत्पन्न थयो.

मू०—" एवं खलु भगवंतो जातिसंपन्ना इहमागया इह संपत्ता, तं इच्छामि णं थेरे भगवंते वंदामि नमंसामि "। ण्हाते जाव सुद्धप्पावेसातिं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए पायविहारचारेणं जेणेव गुणसिले चेतिए जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता वंदति नमंसति। तते णं थेरा धणस्स विचित्तं धम्ममातिक्खंति ।

अर्थ—"आ प्रमाणे निश्चे उत्तम जातियुक्त स्थविर भगवान अहीं विहारना क्रमे आव्या छे, अहीं गुणशैल चैत्यमां प्राप्त थया छे. तेथी हुं इच्छुं छुं के ते स्थविर भगवान पासे जइने तेमने हुं वंदन करुं, नमस्कार करुं." आ प्रमाणे विचार करी ते धन्य सार्थवाहे स्नान कर्युं, यावत् शुद्ध–उज्वळ बहु मूल्यवाळा, अल्प, राजद्वारने योग्य मांगलिक वस्त्रो

पहेर्यां. पछी पादविहारे चालीने ज्यां गुणशैल चैत्य हतुं अने ज्यां स्थविर भगवान हता, त्यां आव्यो, आवीने भगवानने वंदना करी, नमस्कार कर्या, त्यारपछी स्थविर भगवाने ते धन्य सार्थवाहने विचित्र प्रकारनो धर्म कह्यो–धर्मोपदेश आप्यो.

मू०–तते णं से धण्णे सत्थवाहे धम्मं सोच्चा एवं वदासी–" सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथे पावयणे " जाव पव्वातिए, जाव बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता भत्तं पच्चक्खातित्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, छेदित्ता कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववन्ने ।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाहे धर्म सांभळी आ प्रमाणे कह्युं.—" हे भगवान ! हुं निर्ग्रंथ प्रवचननी उपर श्रद्धा करुं छुं. " इत्यादि कही यावत् तेणे स्थविर भगवान पासे दीक्षा ग्रहण करी. यावत् घणा वर्ष सुधी चारित्रपर्यायने पाळी भक्त (भातपाणी) नुं पच्चख्खाण करी एक मासनी संलेखना (अनशन) वडे साठ[1] भक्तने अनशनवडे छेदी काळ समये काळ करी सौधर्म देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थयो.

मू०–तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पन्नत्ता । तत्थ णं धण्णस्स देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पन्नत्ता ।

१ हंमेशां बे वखत भोजन होवाथी एक मासे साठ भोजन थाय छे.

अर्थ—त्यां केटलाक देवोनी चार पल्योपमनी स्थिति कही छे, तेमां ते धन्य नामना देवनी पण चार पल्योपमनी स्थिति कही छे.

मू०– से णं धण्णे देवे ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं ठितीक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति ॥ ४२॥

अर्थ—ते धन्य नामनो देव ते देवलोक थकी देवना आयुष्यना दळियांना क्षयवडे, स्थितिना क्षयवडे (आयुष कर्मनी स्थितिने वेदवावडे) अने भवना क्षयवडे (देव भवना कारणभूत गत्यादिक कर्मनी निर्जरावडे) तरत ज देहनो त्याग करी महाविदेह क्षेत्रने विषे (मनुष्यपणे उत्पन्न थइ) सिद्धि पदने पामशे, यावत् सर्व दुःखना अंतने करशे. ४२.

मू०–जहा णं जंबू ! धण्णेणं सत्थवाहेणं नो धम्मो त्ति वा जाव विजयस्स तक्करस्स ततो विपुलाओ असणपाणखातिमसातिमाओ संविभागे कए नन्नत्थ सरीरसारक्खणट्ठाए, एवामेव जंबू ! जे णं अम्हं निग्गंथे वा निग्गंथी वा जाव पव्वतिए समाणे ववगयण्हाणुम्मद्दणपुप्फगंधमल्लालंकार-विभूसे इमस्स ओरालियसरीरस्स नो वन्नहेउं वा रूवहेउं वा विसयहेउं वा असणपाणखातिमसा-तिमं आहारमाहारेति, नन्नत्थ णाणदंसणचरित्ताणं वहणयाए, से णं इह लोए चेव बहूणं समणाणं

समणीणं सावगाण य साविगाण य अच्चणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे भवति, परलोए वि य णं नो बहूणि हत्थच्छेयणाणि य कन्नच्छेयणाणि य नासाछेयणाणि य एवं हिययउप्पायणाणि य वसणुप्पाडणाणि य उल्लंबणाणि य पाविहिति अणातीयं च णं अणवदग्गं दीहं जाव वीतिवातिस्साति जहा व से धण्णे सत्थवाहे ।

अर्थ—हे जंबू ! जेम धन्य सार्थवाहे धर्म छे एम जाणीने यावत् विजय तस्करने ते विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमनो संविभाग कर्यो नहोतो, शरीररक्षणना प्रयोजन सिवाय बीजा कोइ कार्य माटे संविभाग कर्यो नहोतो, अर्थात् शरीरना रक्षणने माटे ज तेने संविभाग आप्यो हतो. ते ज प्रमाणे हे जंबू ! जे अमारा साधु, साध्वी यावत् प्रव्रज्या ग्रहण करीने स्नान, मर्दन, पुष्प, गंध, माल्य (माळा), अलंकार विगेरेनी विभूषानो त्याग करीने पछी जे अशन, पान, खादिम अने स्वादिम ए चार प्रकारनो आहार करे छे, ते आ औदारिक शरीरना वर्णने माटे, रूपने माटे के विषयने माटे करता नथी. मात्र ज्ञान, दर्शन अने चारित्रने वहन करवा सिवाय बीजे कोइ पण कारणे करता नथी—ज्ञानादिकनो निर्वाह करवा माटे ज आहार करे छे. तेओ आ लोकने विषे घणा साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकाओने पूजवा लायक यावत् पर्युपासना करवा लायक थाय छे, अने परलोकमां पण तेओ घणा प्रकारना हस्तछेदने, कर्णछेदने के नासिकाना छेदने, ए ज प्रमाणे हृदयना उत्पातने, व्यसनना उत्पातने तथा उद्बंधनने पामता नथी, तेम ज अनादि, अनंत अने दीर्घ मार्गवाळा यावत् चतु-

१ उंचे बांधीने लटकाववुं ते.

गीति संसाररूप अरण्यनुं ते धन्य सार्थवाहनी जेम उल्लंघन करे छे.

अहीं बहुश्रुतो आ दृष्टांतनी विशेष योजना आ प्रमाणे करे छे.—अहीं राजगृह नगर कह्युं, ते स्थाने मनुष्य क्षेत्र जाणवुं, धन्य सार्थवाहने स्थाने साधुनो जीव जाणवो, विजय चोरने स्थाने ते साधुनुं शरीर जाणवुं, पुत्रने स्थाने निरुपम अने निरंतर आनंदना कारणरूप संयम जाणवुं. दासे करेलो पुत्र जाळववामां प्रमाद ते रूप शरीरनी अशुभ प्रवृत्ति थवाथी पुत्रस्थानीय संयमनो विघात थाय छे, आभरणने स्थाने शब्दादि विषयो जाणवा, ते विषयोने माटे प्रवर्तेलुं शरीर संयमनो विघात करवा तैयार थाय छे, हेडना बंधनने ठेकाणे जीव अने शरीरनुं अभिन्नपणे रहेवुं जाणवुं, राजाने स्थाने कर्मनो परिणाम (कर्म परिणाम राजा) जाणवो, राजपुरुषोने स्थाने कर्मना भेदो (प्रकृतिओ) जाणवा, अल्प अपराधने स्थाने मनुष्यायुष्यना बंधना हेतुओ जाणवा, उच्चार प्रश्रवणने स्थाने प्रत्युपेक्षणादिक क्रियाओ जाणवी, जेम अशनादिक नहीं आपवाथी विजय चोर उच्चार प्रश्रवण करवा माटे न प्रवर्त्यो, तेम शरीर पण आहार विना प्रत्युपेक्षणादिक क्रिया करवामां प्रवर्ततुं नथी, पंथक नामनो जे दासपुत्र कह्यो तेने स्थाने मुग्ध साधु जाणवो, सार्थवाहीने स्थाने आचार्य (गुरु) जाणवा, ते आचार्य मुग्ध साधु पासेथी अशनादिकवडे शरीरनुं पोषण करता ते साधुने सांभळी तेने उपालंभ आपे छे, त्यारे ते साधु क्षुधावेदनीय अने वैयावच्च विगेरे भोजननां कारणो जणावे छे, ते जाणी गुरु प्रसन्न थाय छे. इत्यादि आ अध्ययननो उपनय जाणवो. कह्युं छे के—

" सिवसाहणेसु आहारविरहिओ जं न वट्टए देहो । तम्हा धण्णो व्व विजयं साहू तं तेण पोसेज्जा ॥ १ ॥ "

" जे कारण माटे आहार रहित देह मोचना साधनरूप प्रतिलेखनादिक क्रियामां प्रवर्ततो नथी, तेथी जेम धन्य सार्थवाहे विजय चोरनुं पोषण कर्यु तेम ते आहारादिकवडे साधुओए देहनुं पोषण करवुं योग्य छे. "

मू०–एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव दोच्चस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि ॥४३॥

॥ बितीयं अज्झयणं समत्तं ॥ २ ॥

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवान महावीर स्वामीए बीजा ज्ञाताध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे, एम हुं तेमनी पासेथी ज जाणीने तमने कहुं छुं.

इति द्वितीय अध्ययन समाप्त.



त्रीजुं अंडक नामनुं अध्ययन.

बीजा अध्ययनमां अनुचित प्रवृत्तिवाळाना दोष अने उचित प्रवृत्तिवाळाना गुण बतावी चारित्रनी शुद्धि करवानो उपदेश कर्यो, हवे आ त्रीजा अध्ययनमां शंकितना दोष अने निःशंकना गुण कहेवा पूर्वक संयमनी शुद्धिना कारणरूप समकितनी शुद्धि करवानो उपदेश आपे छे, आवा संबंधवाळा आ अध्ययननुं आ प्रथम सूत्र छे.—जंबूस्वामी सुधर्मास्वामीने पूछे छे.—

मू०—जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं दोच्चस्स अज्झयणस्स णायाधम्मकहाणं अयमट्ठे पन्नत्ते, तइअस्स अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?।

अर्थ—हे भगवान् ! जो श्रमण भगवान महावीर स्वामीए ज्ञाताधर्मकथाना बीजा अध्ययननो आ प्रमाणे अर्थ कह्यो छे, तो त्रीजा अध्ययननो कयो अर्थ कह्यो छे ?

मू०—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं चंपा नामं नयरी होत्था। वन्नओ। तीसे णं चंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए सुभूमिभाए नामं उज्जाणे होत्था, सव्वोउय० सुरम्मे नंदणवणे इव सुहसुरभिसीयलच्छायाए समणुबद्धे।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये चंपा नामनी नगरी हती, तेनुं वर्णन कहेवुं, ते चंपा नगरीनी बहार उत्तरपूर्व (ईशान) दिशामां सुभूमिभाग नामनुं एक उद्यान हतुं, ते वसंतादिक सर्व ऋतुओ संबंधी पुष्पफळ सहित हतुं, अति रमणीय हतुं, अने नंदन वननी जेम शुभ अथवा सुखकारक, सुगंधी अने शीतळ छायावडे समनुबद्ध—व्याप्त हतुं.

मू०—तस्स णं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उत्तरओ एगदेसम्मि मालुयाकच्छए । वन्नओ । तत्थ णं एगा वरमऊरी दो पुट्ठे परियागते पिट्ठुंडीपंडुरे निव्वणे निरुवहए भिन्नमुट्ठिप्पमाणे मऊरीअंडए पसवति, पसवित्ता सतेणं पक्खवाएणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी संविट्ठेमाणी विहरति ।

अर्थ—ते सुभूमिभाग नामना उद्याननी उत्तर दिशाए एक प्रदेशमां मालुका जातिना वृक्षनो वनखंड हतो, तेनुं वर्णन कहेवुं. ते मालुका कच्छमां एक श्रेष्ठ मयूरीए पुष्ट—वृद्धि पामेला. पर्यायवडे—प्रसवकाळना अनुक्रमवडे प्राप्त थयेला, चोखाना लोटना पिंडा जेवा श्वेत वर्णवाळा, व्रण—छिद्र रहित, वायु विगेरेना उपद्रवने नहीं पामेला अने पोली मुठी जेवडां बे मयूरीनां[1] इंडां प्रसव्यां, प्रसवीने पोतानी पांखोना वायुवडे रक्षण करती, गोपवती—ढांकी देती, संवेष्टन—पोषण करती सती रहेली हती.

१ मयूरनी जातिनां इंडांने, पण कुकडानी जातिनां इंडांने नहीं.

मू०—तत्थ णं चंपाए नयरीए दुवे सत्थवाहदारगा परिवसंति, तं जहा—जिणदत्तपुत्ते य सागरदत्त पुत्ते य। सहजायया सहवड्डियया सहपंसुकीलियया सहदारदरिसी अन्नमन्नमणुरत्तया अन्नमन्नमणुव्वयया अन्नमन्नच्छंदाणुवत्तया अन्नमन्नहियतिच्छियकारया अन्नमन्नेसु गिहेसु किच्चाइं करणिज्जाइं पच्चणुभवमाणा विहरंति ॥ ४४ ॥

अर्थ—ते चंपा नगरीने विषे बे सार्थवाहना पुत्रो वसता हता ते आ प्रमाणे—एक जिनदत्तनो पुत्र अने बीजो सागरदत्तनो पुत्र हतो. ते बन्ने साथे जन्म्या हता, साथे ज वृद्धि पाम्या हता, साथे ज पांशु (धूळ) नी क्रीडा करता हता, साथे ज भार्याने जोनारा हता एटले समान युवावस्थावाळा होवाथी एक ज अवसरे कामविकार थवाथी पोतपोतानी भार्याने तथाप्रकारनी दृष्टिवडे जोनारा हता, अथवा साथे ज रहेता सता एक बीजाना घरना द्वारने जोता हता—प्रवेश करता हता, ते बन्ने परस्पर प्रीतिवाळा हता, एक बीजानी पाछळ जता हता, एक बीजानी इच्छाने अनुसरनारा हता, एक बीजाना हृदयनुं इच्छित करनारा हता, एक बीजाने घेर करवा लायक कार्योने अथवा कृत्य एटले नित्यकर्म अने करणीय एटले कदाचित करवाना कार्यने करता सता रहेला हता. ४४.

मू०—तते णं तेसिं सत्थवाहदारगाणं अन्नया कयाई एगतओ सहियाणं समुवागयाणं सन्नि-

सन्नाणं सन्निविट्ठाणं इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—"जन्नं देवाणुप्पिया ! अम्हं सुहं वा दुक्खं वा पव्वज्जा वा विदेसगमणं वा समुप्पज्जति तन्नं अम्हेहिं एगयओ समेच्चा णित्थरियव्वं" ति कट्टु अन्नमन्नमेयारूवं संगारं पडिसुणेंति पडिसुणित्ता सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था ॥ ४५०॥

अर्थ—त्यारपछी ते बन्ने सार्थवाहना पुत्रो एकदा कदाचित् एक प्रदेशमां एकठा थया हता, एक जणने घेर प्राप्त थया हता, बेठा हता, एक साथे स्थिर अने सुखवाळा आसने रहेला हता, ते वखते ते बन्नेने परस्पर आवा प्रकारनी वातचीत थइ—"हे देवानुप्रिय ! जे कांइ आपणने सुख, दुःख, प्रव्रज्या के परदेश गमन प्राप्त थाय ते सर्वनो आपणे एकठा मळीने (साथे ज) निर्वाह करवो." आ प्रमाणे कहीने ते बन्नेए परस्पर एवा प्रकारनो संकेत अंगीकार कर्यो, अंगीकार करी पोतपोताना कार्यमां प्रवृत्त थया. ४५.

मू०—तत्थ णं चंपाए नयरीए देवदत्ता नामं गणिया परिवसइ अड्ढा जाव भत्तपाणा चउसट्ठिकलापंडिया चउसट्ठिगणियागुणोववेया अउणत्तीसं विसेसे रममाणी एक्कवीसरतिगुणप्पहाणा बत्तीसपुरिसोवयारकुसला णवंगसुत्तपडिबोहिया अट्ठारसदेसीभासाविसारया सिंगारागारचारुवेसा

संगयगयहासियभणियविहियविलाससललियसंलावनिउणजुत्तोवयारकुसला ऊसियज्झया सहस्सलंभा विदिन्नछत्तचामरबालवियणिया कन्नीरहप्पयाया यावि होत्था बहूणं गणियासहस्साणं आहेवच्चं जाव विहराति ।

अर्थ—ते चंपा नगरीमां देवदत्ता नामनी गणिका वसती हती. ते समृद्धिवाळी हती, यावत् घणा भक्तपानवाळी हती, गीत नृत्य विगेरे स्त्रीजनने उचित चोसठ कळामां पंडित हती, गणिकाना [1]चोसठ गुणोए करीने सहित हती, ओगणत्रीश प्रकारनी विशेष क्रीडावडे क्रीडा करनारी हती, रति (कामक्रीडा) ना एकवीश गुणोवडे प्रधान (श्रेष्ठ) हती, पुरुषना बत्रीश प्रकारना उपचार करवामां कुशळ हती, सुतेलां [2]नव अंगोने प्रतिबोध करनारी (जागृत करनारी) अर्थात् युवावस्थाने पामेली हती, अढार देशनी भाषा जाणवामां निपुण हती, जाणे शृंगार रसनुं स्थान ज होय तेम तेणीनो सुंदर वेष हतो. संगत (उचित) गति, हास्य, वचन, विहित (चेष्टा), विलास (नेत्रचेष्टा) तथा सललित (प्रसन्नता सहित) संलाप (वातचीत) करवामां निपुण हती, योग्य एवा उपचार (लोकव्यवहार) करवामां कुशळ हती, तेना घर पर ध्वजा फरकती हती, हजार रुपीया आपनारने ते प्राप्त थती हती (एक दिवसनी फी हजार रुपीया हती), राजाए

---

१ आलिंगनादिक आठ क्रिया छे, ते दरेकना आठ आठ प्रकार होवाथी चोसठ प्रकार थाय छे, ते वात्स्यायन शास्त्रमां प्रसिद्ध छे.

२ बे कान, बे नेत्र, बे नासिका, एक जिव्हा, एक त्वचा, एक मन.

तेणीने छत्र, चामर अने वालव्यजन आपेलां हतां, ते कर्णीरथ नामना वाहनमां बेसीने जती आवती हती, यावत् हजार गणिकाओना अधिपतिपणाने करती सती ते रहेली हती.

मू०—तते णं तेसिं सत्थवाहदारगाणं अन्नया कदाइ पुव्वावरण्हकालसमयंसि जिमियभुत्तुत्तरागयाणं समाणाणं आयंताणं चोक्खाणं परमसुतिभूयाणं सुहासणवरगयाणं इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पजित्था—

अर्थ—त्यारपछी ते बन्ने सार्थवाहना पुत्रो एकदा कदाचित् मध्यान्ह समये भोजन कर्या पछी आचमन (चलु) करी हाथ अने मुख धोवावडे चोख्खा थइ अत्यंत पवित्र थइ सुखे बेसवाना आसनपर आवीने बेठा, ते वखते ते बन्नेने परस्पर आवा प्रकारना आलाप संलाप थया.—

मू०—" तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! कल्लं जाव जलंते विपुलं असणपाणखातिमसातिमं उवक्खडावेत्ता तं विपुलं असणपाणखातिमसातिमं धूवपुप्फगंधवत्थं गहाय देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुभवमाणाणं विहरित्तए " त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एय-

१ अमुक प्रकारना चामर. २ घणी समृद्धिवाळाने ज आवो रथ होय छे.

मट्ठं पडिसुर्णेति पडिसुणित्ता कल्लं पाउब्भूए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वदासी—

अर्थ—" हे देवानुप्रिय ! आपणे ते करवुं श्रेय छे के-काले यावत् सूर्य देदीप्यमान थाय त्यारे विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम तैयार करावीने ते विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम तथा धूप, पुष्प, गंध अने वस्त्र विगेरे लइ देवदत्ता गणिकानी साथे सुभूमिभाग नामना उद्यानमां उद्याननी शोभानो अनुभव करता आपणे विचरीए." आ प्रमाणे कही अन्योऽन्यनो आ अर्थ अन्योऽन्ये अंगीकार कर्यो, अंगीकार करी काले-बीजे दिवसे सूर्य प्रगट थयो त्यारे ते बन्नेए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—" गच्छह णं देवाणुप्पिया ! विपुलं असणपाणखातिमसातिमं उवक्खडेह, उवक्खडित्ता तं विपुलं असणपाणखातिमसातिमं धूवपुप्फं गहाय जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव णंदापुक्खरिणी तेणामेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता नंदापुक्खरिणीतो अदूरसामंते थूणामंडवं आहणह, आहणित्ता आसितसंमज्जितोवालित्तं सुगंध जाव कलियं करेह, करित्ता अम्हे पडिवालेमाणा चिट्ठह, " जाव चिट्ठंति ।

अर्थ—" हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ, अने विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने तैयार करो, तैयार करीने

ते विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम तथा धूप, पुष्प विगेरे लइ ज्यां सुभूमिभाग नामनुं उद्यान छे अने ज्यां नंदा पुष्करिणी (वाव) छे, त्यां जाओ, जइने नंदा पुष्करिणीनी समीपे थूर्णामंडप[1] तैयार करो, तैयार करीने त्यां जळ छांटी संमार्जन करी, लींपण करी यावत् सुगंधी श्रेष्ठ धूप उखेवी ते स्थान सुगंध युक्त करो, करीने अमे आवीए त्यां सुधी अमारी राह जोता रहो." ते सांभळी ते कौटुंबिक पुरुषो ते प्रमाणे करी यावत् तेमनी राह जोता रह्या.

मू—तए णं सत्थवाहदारगा दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वदासी—" खिप्पामेव लहुकरणजुत्तजोतियं समखुरवालिहाणसमलिहियतिक्ख[ग्ग] सिंगएहिं रययामयघंटसुत्त-रज्जुयपवरकंचणखचियणत्थपग्गहोवग्गाहितेहिं नीलुप्पलकयामेलएहिं पवरगोणजुवाणएहिं नाणाम-णिरयणकंचणघंटियाजालपरिक्खित्तं पवरलक्खणोववेयं जुत्तमेव पवहणं उवणेह " । ते वि तहेव उवणेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते बन्ने सार्थवाहना पुत्रोए फरीथी (बीजा) कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रियो ! शीघ्रपणे सरखी खरी अने पूछडावाळा, सरखा चित्रेला तीक्ष्ण शींगडावाळा, रुपानी घंटडीओ-

१ वस्त्रवडे आच्छादित मंडप (तंबु).

वाळा, सुतरनी दोरीमय श्रेष्ठ सुवर्ण जडित नाथने विषे प्रग्रह (राश) वडे अवगृहीत—बांधेला अने मस्तकपर काळा कमळना शेखर करवामां आव्या होय एवा श्रेष्ठ युवान बे बळदोवडे जोडेलुं, लघुकरण (निपुणता) वडे युक्त पुरुषोए धोंसरुं, सांबेल विगेरेवडे बराबर तैयार करेलुं, विचित्र प्रकारना मणि, रत्न अने सुवर्णनी घंटडीओना समूहे करीने युक्त अने श्रेष्ठ लक्षणोए करीने सहित एवुं प्रवहन (वाहन—रथ) अहीं लावो. " ते सांभळी तेओ पण ते ज प्रमाणे करी ते वाहन लाव्या.

मू०—तते णं ते सत्थवाहदारगा ण्हाया जाव सरीरा पवहणं दुरूहंति, दुरूहित्ता जेणेव देवदत्ताए गणियाए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पवहणातो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता देवदत्ताए गणियाए गिहं अणुपविसंति।

अर्थ—त्यारपछी ते बन्ने सार्थवाहना पुत्रो स्नान करी, यावत् शरीरे अलंकार धारण करी वाहनपर चड्या, चडीने ज्यां देवदत्ता गणिका हती त्यां आव्या, आवीने वाहनथी नीचे उतर्या, उतरीने देवदत्ता गणिकाना घरमां प्रवेश कर्यो.

मू०—तते णं सा देवदत्ता गणिया सत्थवाहदारए एज्जमाणे पासति, पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठ पदातिं अणुगच्छति, अणुगच्छित्ता ते सत्थवाहदारए एवं

वदासी-" संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किमिहागमणप्पतोयणं ? " ।

अर्थ—त्यारे ते देवदत्ता गणिकाए ते सार्थवाहना बे पुत्रोने आवता जोया, जोइने हृष्ट तुष्ट थइ आसनपरथी उठी, उठीने सात आठ पगलां सन्मुख गइ, सन्मुख जइने ते सार्थवाहना पुत्रोने आ प्रमाणे कह्युं-" हे देवानुप्रियो ! तमारे अहीं आववानुं शुं प्रयोजन छे ? ते कहीने मने आज्ञा आपो. "

मू०—तते णं ते सत्थवाहदारगा देवदत्तं गणियं एवं वदासी-" इच्छामो णं देवाणुप्पिए ! तुम्हेहिं सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरित्तए " ।

अर्थ—त्यारपछी ते सार्थवाहना पुत्रोए देवदत्ता गणिकाने आ प्रमाणे कह्युं-" हे देवानुप्रिया ! अमे इच्छीए छीए के तारी साथे सुभूमिभाग नामना उद्यानने विषे उद्याननी शोभानो अनुभव करता आपणे विचरीए. "

मू०—तते णं सा देवदत्ता तेसिं सत्थवाहदारगाणं एतमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता ण्हाया कयकिच्चा किं ते पवर जाव सिरिसमाणवेसा जेणेव सत्थवाहदारगा तेणेव समागया ।

अर्थ—त्यारपछी ते देवदत्ताए ते सार्थवाहना पुत्रोना ते अर्थनो अंगीकार कर्यो, अंगीकार करी स्नान करी मंगळ कृत्य करी, घणुं शुं कहेवुं ? यावत् लक्ष्मी समान श्रेष्ठ वेष धारण करी ज्यां सार्थवाहना पुत्रो हता त्यां आवी.

मू०–तते णं ते सत्थवाहदारगा देवदत्ताए गणिआए सद्धिं जाणं दुरूहाति, दुरुहित्ता चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव नंदापुक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पवहणातो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता नंदापोक्खरिणीं ओगाहिंति, ओगाहित्ता जलमज्जणं करेंति, जलकीडं करेंति, ण्हाया देवदत्ताए सद्धिं पच्चुत्तरंति, जेणेव थूणामंडवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता थूणामंडवं अणुपविसंति, अणुपविसित्ता सव्वालंकारविभूसिया आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया देवदत्ताए सद्धिं तं विपुलं असणपाणखातिमसातिमं धूवपुप्फगंधवत्थं आसाएमाणा वीसाएमाणा परिभुंजेमाणा एवं च णं विहरंति । जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा देवदत्ताए सद्धिं विपुलातिं माणुस्सगाइं कामभोगाइं भुंजमाणा विहरंति ॥ ४६ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते सार्थवाहना पुत्रो देवदत्ता गणिकानी साथे यानमां (रथमां) आरूढ थया, आरूढ थइ चंपा नगरीना मध्य भागे थइने जे ठेकाणे सुभूमिभाग नामनुं उद्यान हतुं अने जे ठेकाणे नंदापुष्करिणी (वाव) हती, त्यां आव्या, आवीने वाहनथी नीचे उतर्या, नीचे उतरी नंदापुष्करिणीमां उतर्या, उतरी जळमज्जन (स्नान) कर्युं, जळक्रीडा

करी, स्नान करी देवदत्तानी साथे बहार नीकळ्या, पछी ज्यां थूणामंडप हतो त्यां आव्या, आवीने थूणामंडपने विषे प्रवेश कर्यो, प्रवेश करी सर्व अलंकारवडे विभूषित थया, आश्वस्त (स्वस्थ) थया, विश्वस्त (विश्रांतिवाळा) थया, श्रेष्ठ सुखासन उपर बेठा, देवदत्ता गणिकानी साथे ते विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम तथा धूप, पुष्प, गंध अने वस्त्रनो आस्वाद लेता, विशेषे करीने स्वाद लेता तथा भोगवता सता विचरवा लाग्या (रह्या). जम्या पछी स्वस्थ थया सता देवदत्ता गणिकानी साथे मनुष्य संबंधी विपुल कामभोगने भोगवता विचरवा लाग्या-रह्या. ४६.

मू०—तते णं ते सत्थवाहदारगा पुव्वावरण्हकालसमयंसि देवदत्ताए गणियाए सद्धिं थूणामंडवाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता हत्थसंगेल्लीए सुभूमिभागे बहूसु आलिघरएसु य कयलीघरेसु य लयाघरएसु य अच्छणघरएसु य पेच्छणघरएसु य पसाहणघरएसु य मोहणघरएसु य सालघरएसु य जालघरएसु य कुसुमघरएसु य उज्जाणसिरिं पच्चणुभवमाणा विहरंति ॥ ४७ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते सार्थवाहना पुत्रो दिवसना पाछला पहोरने समये देवदत्ता गणिकानी साथे थूणामंडपमांथी बहार नीकळ्या, बहार नीकळी एक बीजाना हाथनुं अवलंबन करी सुभूमिभाग नामना उद्यानने विषे रहेला घणा आलिवृक्षोनां गृहोमां, केळनां गृहोमां, लतानां गृहोमां, आसन (बेसवा) नां गृहोमां, प्रेक्षणनां गृहोमां, मंडन करवानां गृहोमां,

१ वस्त्रथी आच्छादन करेलो मंडप.

मैथुन सेववानां गृहोमां, सालवृक्षोनां गृहोमां, जाळीयांवाळा गृहोमां तथा पुष्पोनां गृहोमां उद्याननी शोभानो अनुभव करता विचरवा लाग्या. ४७.

मू०—तते णं ते सत्थवाहदारया जेणेव से मालुयाकच्छए तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तते णं सा वणमऊरी ते सत्थवाहदारए एज्जमाणे पासति, पासित्ता भीया तत्था० महया महया सद्देणं केकारवं विणिम्मुयमाणी विणिम्मुयमाणी मालुयाकच्छाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता एगंसि रुक्खडालयंसि ठिच्चा ते सत्थवाहदारए मालुयाकच्छयं च अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणी पेहमाणी चिट्ठति।

अर्थ—त्यारपछी ते सार्थवाहना पुत्रो ज्यां ते मालुकाकच्छ हतो त्यां जवा प्रवर्त्या-गया. त्यारपछी ते वननी मयूरीए ते सार्थवाहना पुत्रोने जोया, जोइने ते भय पामी, स्तब्ध थइ, मोटा मोटा शब्दवडे केकारवने करती करती मालुयाकच्छमांथी बहार नीकळी, नीकळीने एक वृक्षनी डाळी उपर बेसी ते सार्थवाहना पुत्रो अने मालुयाकच्छ ए बन्नेने अनिमेष दृष्टिए जोती जोती रही.

मू०—तते णं ते सत्थवाहदारगा अण्णमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वदासी—" जहा णं दे-

वाणुप्पिया ! एसा वणमऊरी अम्हे एज्जमाणा पासित्ता भीता तत्था तसिया उव्विग्गा पलाया महता महता सद्देणं जाव अम्हे मालुयाकच्छयं च पेच्छमाणी पेच्छमाणी चिट्ठति, तं भवियव्वमेत्थ कारणेणं" ति कट्टु मालुयाकच्छयं अंतो अणुपविसंति, अणुपविसित्ता तत्थ णं दो पुट्ठे परियागए जाव पासित्ता अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वदासी–

अथ—त्यारपछी ते सार्थवाहना पुत्रोए अन्योन्यने (एकबीजाने) बोलाव्या, बोलावीने परस्पर आ प्रमाणे बोल्या के–" हे देवानुप्रिय ! आ वननी मयूरी आपणने आवता जोइ भय पामी, स्तब्ध थइ, त्रास पामी, उद्वेग पामी, नाशी गइ, अने मोटा मोटा शब्दवडे यावत् आपणने अने मालुयाकच्छने जोती जोती रही छे, तेथी अहीं कांइ पण कारण होवुं जोइए." एम बोलीने मालुयाकच्छनी अंदर ते बन्नेए प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने त्यां पुष्ट अने अनुक्रमे वृद्धि पामेलां बे मयूरीनां इंडां यावत् जोइने तेमणे एकबीजाने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०–" सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमे वणमऊरीअंडए साणं जाइमंताणं कुक्कुडियाणं अंडएसु अ पक्खिवावेत्तए । तते णं ताओ जातिमंताओ कुक्कुडियाओ ताए अंडए सए य अंडए सएणं पक्खवाएणं सारक्खमाणीओ संगोवेमाणीओ विहरिस्संति ।

अर्थ—" हे देवानुप्रिय ! आपणे आ वननी मयूरीनां इंडां पोतानी (आपणी) जातिवंत कुकडीनां इंडाओने विषे नांखवां सारां छे. तेम करवाथी ते आपणी जातिवंत कुकडीओ ते (आ) इंडांओ अने पोतानां इंडाओने पोतानी पांखना वायुवडे रक्षण करती अने गुप्त राखती सती विचरशे-रहेशे.

मू०—तते णं अम्हं एत्थं दो कीलावणगा मऊरपोयगा भविस्संति " त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एतमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता सए सए दासचेडे सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वदासी—" गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! इमे अंडए गहाय सगाणं जाइमंताणं कुक्कुडीणं अंडएसु पक्खिवह " । जाव ते वि पक्खिवेंति ।

अर्थ—त्यारपछी अहीं आपणा बन्ने क्रीडा करवाना मयूरना बाळको थशे. " एम कहीने तेओए एक बीजाना आ अर्थने अंगीकार कर्यो, अंगीकार करी तेमणे पोतपोताना दासपुत्रोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं.—" हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ. आ बे इंडांओ लइने पोतानी (आपणी) जातिवंत कुकडीओनां इंडांओने विषे नांखो. " ते सांभळी ते दासपुत्रोए पण ते ज प्रमाणे यावत् ते इंडाओने पोतानी कुकडीओनां इंडांओ भेळा नांख्यां.

मू०—तते णं ते सत्थवाहदारगा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुभवमाणा विहरित्ता तमेव जाणं दुरूढा समाणा जेणेव चंपानयरीए जेणेव देवदत्ताए

गणियाए गिहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता देवदत्ताए गिहं अणुपविसंति, अणुपविसित्ता देवदत्ताए गणियाए विपुलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयंति, दलइत्ता सक्कारेंति, सक्कारित्ता संमाणेंति, संमाणित्ता देवदत्ताए गिहातो पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सयाइं सयाइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था ॥ ४८ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते सार्थवाहना पुत्रो देवदत्ता गणिकानी साथे सुभूमिभाग नामना उद्यानने विषे उद्याननी शोभानो अनुभव करता विचरीने ते ज वाहन उपर आरूढ थया सता ज्यां चंपा नगरी हती अने ज्यां देवदत्ता गणिकानुं घर हतुं त्यां आव्या, आवीने देवदत्ताना घरमां प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने देवदत्ता गणिकाने विपुल जीविकाने योग्य प्रीतिदान आप्युं, आपीने तेणीनो सत्कार कर्यो, सत्कार करीने सन्मान कर्युं, सन्मान करीने ते बन्ने देवदत्ताना घरमांथी बहार नीकळ्या, बहार नीकळी ज्यां पोतपोतानां घर हतां, त्यां आव्या, आवीने पोताना कार्य करवामां प्रवर्त्या. ४८.

मू०—तते णं जे से सागरदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए से णं कल्लं जाव जलंते जेणेव से वणमऊरीअंडए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तंसि मऊरीअंडयंसि संकिते कंखिते वितिगिच्छासमावन्ने भेयसमावन्ने कलुससमावन्ने किं नं ममं एत्थ किलावणमऊरीपोयए भविस्सति ? उदाहु णो भवि-

स्सइ ? त्ति कट्टु तं मऊरीअंडयं अभिक्खणं अभिक्खणं उव्वत्तेति परियत्तेति आसारेति संसारेति चालेति फंदेए घट्टेति खोभेति अभिक्खणं अभिक्खणं कन्नमूलंसि टिट्टियावेति। तते णं से मऊरीअंडए अभिक्खणं अभिक्खणं उव्वत्तिज्जमाणे जाव टिट्टियावेज्जमाणे पोच्चडे जाते यावि होत्था।

अर्थ—त्यारपछी जे ते सागरदत्तनो पुत्र सार्थवाहदारक (पुत्र) हतो, ते काले (बीजे दिवसे) यावत् सूर्य देदीप्यमान थयो त्यारे जे ठेकाणे ते वननी मयूरीनुं [1]इंडुं हतुं, ते ठेकाणे आव्यो, आवीने ते मयूरीना इंडा विषे शंका पाम्यो एटले " आ इंडुं नीपजशे के नहीं ? " एम कल्पना करवा लाग्यो, तेना फळनी आकांक्षावाळो थयो एटले " आनाथी क्यारे इच्छित फळ थशे ? " ए प्रमाणे उत्सुक थयो, विचिकित्साने पाम्यो एटले "आनाथी मयूरनो बाळक थया छतां पण मने तेनुं क्रीडा लक्षण फळ प्राप्त थशे के नहीं ? " एम फळने विषे शंकावाळो थयो, भेद पाम्यो एटले बे प्रकारनी बुद्धिने पाम्यो अर्थात् आ इंडामां बच्चुं छे के नहीं ? एम सद्भाव अने असद्भावना विषयनी कल्पनावडे व्याकुळ थयो, तथा कलुषपणाने पाम्यो एटले बुद्धिनी मलिनताने पाम्यो. तेथी तेणे विचार कर्यो के—" शुं मारे आ इंडामांथी क्रीडा करवानो मयूरीबाळक थशे के नहीं थाय ? " एम विचारी ते मयूरीना इंडाने वारंवार ते उद्वर्तन करवा लाग्यो एटले नीचेनो भाग उपर करी फेरववा लाग्यो, ते ज प्रमाणे वारंवार फेरववा लाग्यो, आसारण—कांइक तेना स्थानथी तेने दूर मूकवा

१ बन्ने जणाए एक एक इंडुं लीधुं हतुं.

लाग्यो, संसारण–वारंवार एक स्थानथी बीजे स्थाने मूकवा लाग्यो, चालन–बीजे स्थाने लइ जवा लाग्यो, स्पन्दन-कांइक हलाववा लाग्यो, घट्टन–हाथवडे स्पर्श करवा लाग्यो, चोभण–भूमिने कांइक खणीने तेमां मूकवा लाग्यो, तथा वारंवार पोताना कर्ण पासे तेने राखी शब्द कराववा लाग्यो, त्यारपछी ते मयूरीनुं ईंडुं वारंवार उद्वर्तनादिक करवाथी यावत् शब्द कराववाथी पोचड-असाररूप (जीव रहित) थइ गयुं.

मू०–तते णं से सागरदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए अन्नया कयाइं जेणेव से मऊरअंडए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तं मऊरीअंडयं पोच्चडमेव पासति, पासित्ता " अहो णं ममं एस किलावणए मऊरीपोयए ण जाए " त्ति कट्टु ओहतमण० जाव झियायति ।

अर्थ—त्यारपछी ते सागरदत्तनो पुत्र सार्थवाहनो दारक एकदा कदाचित् ज्यां ते मयूरीनुं इंडुं हतुं त्यां आव्यो, आवीने ते मयूरीनां इंडाने पोचड–सार रहित (जीव रहित) जोयुं, जोइने "अहो ! आ मयूरीनो बाळक मारे क्रीडा करवा माटे न थयो " एम विचारी खेदयुक्त मनने विषे यावत् विचारवा लाग्यो.

मू०–एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरियउवज्झायाणं अंतिए पव्वतिए समाणे पंचमहव्वएसु जाव छज्जीवनिकाएसु निग्गंथे पावयणे संकिते जाव कलुससमावन्ने से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं सावगाणं साविगाणं हीलणिज्जे खिंसणिज्जे गरहणिज्जे

परिभवणिज्जे परलोए वि य णं आगच्छति बहूणि दंडणाणि य जाव अणुपरियट्टए ॥४९॥

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे आयुष्मान् श्रमणो ! जे अमारा साधु के साध्वी आचार्य के उपाध्यायनी पासे प्रव्रज्या ग्रहण करीने पांच महाव्रतने विषे यावत् छ जीवनिकायने विषे के निर्ग्रंथना प्रवचनने विषे शंका करे यावत् कलुषभावने पामे, ते आ भवने विषे ज घणा साधु, घणी साध्वीओ, श्रावको अने श्राविकाओने हीलना करवा लायक एटले गच्छमांथी काढी मूकवा लायक, मनवडे निंदवा लायक, लोकने विषे खिंसा (निंदा) करवा लायक, तेनी समक्ष ज गर्हा करवा लायक अने अभ्युत्थानादिक न करवावडे पराभव करवा लायक थाय छे. तेम ज परलोकमां पण ते घणा दंडोने पामे छे, यावत् अनंत संसारमां परिभ्रमण करे छे. ४९.

मू०—तते णं से जिणदत्तपुत्ते जेणेव से मऊरीअंडए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तंसि मऊरीअंडयंसि निस्संकिते, सुवत्तए णं मम एत्थ कीलावणए मऊरीपोयए भविस्सतीति कट्टु तं मऊरीअंडयं अभिक्खणं अभिक्खणं नो उव्वत्ते त्ति जाव नो टिट्टियावेति ।

अर्थ—हवे बीजो जिनदत्तनो पुत्र ज्यां ते मयूरीनुं इंडुं हतुं त्यां आव्यो, आवीने ते मयूरीना इंडाने विषे शंका रहित थयो, अने " मारे आ इंडामांथी क्रीडा करवा माटे सुवृत्त–सारा गोळ आकारवाळो मयूरीनो बाळक थशे " एम मनमां निश्चय करी ते मयूरीना इंडाने तेणे वारंवार उद्वर्तन कर्युं नहीं, यावत् कान पासे राखी शब्द कराव्यो नहीं.

मू०—तते णं से मऊरीअंडए अणुव्वत्तिज्जमाणे जाव अटिट्टियाविज्जमाणे ते णं काले णं ते णं समए णं उब्भिन्ने मऊरीपोयए एत्थ जाते ।

अर्थ—त्यारपछी ते मयूरीना इंडाने नहीं उद्वर्तन करवाथी यावत् शब्द नहीं करावबाथी ते काळे ते समये (समय पूर्ण थये) ते इंडु फूटयुं अने तेमांथी मयूरीनो बाळक थयो.

मू०—तते णं से जिणदत्तपुत्ते तं मऊरपोययं पासति, पासित्ता हट्ठ तुट्ठे मऊरपोसए सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—" तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! इमं मऊरपोययं बहूहिं मऊरपोसणपाउग्गेहिं दव्वेहिं अणुपुव्वेणं सारक्खमाणा संगोवेमाणा संवड्ढेह, नट्टुल्लगं च सिक्खावेह ।

अर्थ—त्यारपछी ते जिनदत्तना पुत्रे ते मयूरना बाळकने जोयो, जोइने हृष्ट तुष्ट थइ मयूरना पोषकोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—"हे देवानुप्रियो ! तमे आ मयूरना बाळकने मयूरना पोषणने योग्य एवा घणा द्रव्यो (पदार्थो) वडे अनुक्रमे रक्षण करता अने सम्यक् प्रकारे गुप्त राखता सता वृद्धि पमाडो तथा नृत्यकळाने शीखवो.

मू०—तते णं ते मऊरपोसगा जिणदत्तस्स पुत्तस्स एतमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता तं मऊरपोययं गेण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं मयूरपोयगं जाव

नट्टुल्लगं सिक्खावेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते मयूरपालकोए जिनदत्तना पुत्रनी ते आज्ञा अंगीकार करी. अंगीकार करीने ते मयूरना बच्चाने ग्रहण कर्युं, ग्रहण करीने ज्यां पोतानुं घर हतुं त्यां आव्या, आवीने ते मयूरना बच्चाने यावत् नृत्यकळा शीखवी.

मू०—तते णं से मऊरपोयए उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमेत्ते जोव्वणगमणुपत्ते लक्खण-वंजणगुणोववेए माणुम्माणपमाणपडिपुन्नपक्खपेहुणकलावे विचित्तपिच्छे सतचंदए नीलकंठए नच्चण-सीलए एगाए चप्पुडियाए कयाए समाणीए अणेगाति नट्टुल्लगसयाति केकारवसयाणि य करेमाणे विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते मयूरनो बाळक बाळपणाथी मुक्त थयो, तेनामां विज्ञान परिणम्युं, ते यौवन वयने पाम्यो, लक्षण अने तिल विगेरे व्यंजनना गुणने पाम्यो, विष्कंभरूप मान, स्थूलतारूप उन्मान अने लंबाइरूप प्रमाणवडे तेनी पांखो अने पींछानो समूह परिपूर्ण थयो, तेनां पींछां विचित्र रंगना थया, तेमां सेंकडो चंद्रक हता, तेना कंठनो वर्ण नील थयो, ते नृत्य करवाना स्वभाववाळो थयो, तेथी हाथनी एक चपटी वगाडवाथी अनेक प्रकारना सेंकडो नृत्यने तथा सेंकडो केकारवना शब्दने करतो ते विचरवा लाग्यो.

मू०—तते णं ते मऊरपोसगा तं मऊरपोयगं उम्मुक्कबालभावं जाव करेमाणं पासित्ता पासित्ता तं

मऊरपोयगं गेण्हंति, गेण्हित्ता जिणदत्तस्स पुत्तस्स उवणेंति। तते णं से जिणदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए मऊरपोयगं उम्मुक्कबालभावं जाव करेमाणं पासित्ता हट्ठ तुट्ठे तेसिं विपुलं जीवियारिहं पीतिदाणं जाव पडिविसज्जेइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते मयूरपालकोए ते मयूरबाळकने बाळपणाथी मूकायेलो यावत् केकारवने करतो जोइ जोइने ते मयूरबाळकने ग्रहण कर्यो, ग्रहण करी तेने जिनदत्तना पुत्र पासे तेओ लइ गया. त्यारपछी ते सार्थवाहना दारक जिनदत्तना पुत्रे ते मयूरबाळकने बाळपणाथी मूकायेलो यावत् केकारवने करतो जोइ हृष्ट तुष्ट थइ तेओने जीवितने योग्य एवुं मोटुं प्रीतिदान आपी यावत् विसर्जन कर्या.

मू०—तए णं से मऊरपोतए जिणदत्तपुत्तेणं एगाए चप्पुडियाए कयाए समाणीए णंगोला(ल)-भंगसिरोधरे सेयावंगे अवयारियपइन्नपक्खे उक्खित्तचंदकातियकलावे केक्काइयसयाणि विम्मुच्चमाणे णच्चइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते मयूर बाळके जिनदत्तना पुत्रे एक चपटी वगाडे सते लांगूलना भंगनी जेम एटले जेम सिंहादिक पोताना पुच्छने वाळी वांकुं करे तेम ग्रीवाने वांकी करी, तेना शरीरपर परसेवो आव्यो अथवा तेना अपांग एटले नेत्रना खूणा श्वेत थया, तेणे वीखरायेला पींछांवाळी बन्ने पांखोने शरीरथी जूदी करी—पहोळी करी, तेणे चंद्रक विगेरेवडे

युक्त एवो पींछानो समूह उंचो कर्यो, अने पछी सेंकडो केकारवना शब्दने मूकतो (करतो) ते नृत्य करवा लाग्यो.

मू०—तते णं से जिणदत्तपुत्ते तेणं मऊरपोयएणं चंपाए नयरीए सिंघाडग जाव पहेसु सतिएहि य साहस्सिएहि य सयसाहस्सिएहि य पणिएहि य जयं करेमाणे विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते जिनदत्तनो पुत्र ते मयूरबाळके करीने चंपानगरीना शृंगाटक यावत् मोटा नाना मार्गमां सो, हजार अने लाखनी होड (शरत) वडे विजय पामतो विचरवा लाग्यो.

मू०—एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वतिए समाणे पंचसु महव्वएसु छसु जीवनिकाएसु निग्गंथे पावयणे निस्संकिते निक्कंखिए निव्वितिगिच्छे से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं समणीणं जाव वीतिवतिस्सति । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं णायाणं तच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति बेमि ॥ ५४ ॥

तच्चं नायज्झयणं समत्तं ३

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे आयुष्मान साधुओ ! जे अमारा साधु साध्वी प्रव्रज्या अंगीकार करीने पांच महाव्रतने विषे, छ जीवनिकायने विषे अने निर्ग्रंथना (जिनेश्वरना) प्रवचन (सिद्धांत) ने विषे शंका रहित, कांक्षा रहित अने विचिकि-

त्सा रहित होय छे, ते आ भवमां ज घणा साधु, साध्वी विगेरेमां मान पामी यावत् दीर्घ संसाररूप अटवीनुं उल्लंघन करशे-करे छे, आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवान महावीर स्वामीए ज्ञाताधर्मकथाना त्रीजा अध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे. ५०.

सार—जिनेश्वरे कहेला सत्य पदार्थोने विषे बुद्धिमान पुरुषे मनमां कांइ पण संदेह करवो नहीं, केमके संदेह ज अनर्थनो हेतु छे. जे संदेह रहितपणुं छे ते ज गुणनो हेतु छे, तेथी ते निःशंकपणुं ज करवा योग्य छे. आ बाबतमां मोरनां इंडां ग्रहण करनार बे श्रेष्ठीपुत्रोनुं उदाहरण आ अध्यनमां आप्युं छे. शास्त्रमां कोइ ठेकाणे मतिनी दुर्बलताने लीधे, के तेवा विद्वान आचार्यने अभावे के ज्ञेय पदार्थनी गहनताने लीधे के ज्ञानावरणना उदयने लीधे अथवा हेतु के उदाहरणना असंभवने लीधे जे विषय बराबर न समजाय, तो ते वखते बुद्धिमान मनुष्ये पोताना चित्तमां आ प्रमाणे विचार करवो योग्य छे के-" सर्वज्ञ तीर्थंकरनो मत सत्य ज छे. कारण के जिनेश्वरो पोते उपकार के प्रत्युपकारनी इच्छा राख्या विना ज सर्व अन्य प्राणीओनो उपकार करवामां ज तत्पर होय छे, तेमणे राग, द्वेष अने मोहने सर्वथा जीती लीधा छे, तेथी तेओ जगतमां सर्वथा श्रेष्ठ छे, ते कारणथी तेओ कदापि असत्यवादी होता ज नथी. "

इति ज्ञाताधर्मकथांगनुं त्रीजुं अध्ययन. ३



चोथुं कूर्म नामनुं अध्ययन.

त्रीजा अध्ययनमां कह्युं के आगमना अर्थने विषे शंका करनार प्राणीने दोष थाय छे अने शंका नहीं करनारने गुण प्राप्त थाय छे. हवे आ चोथा अध्ययनमां पांच इंद्रियोने नियममां राखनारने गुण थाय छे अने तेने नियममां नहीं राखनारने दोष प्राप्त थाय छे, ए कहेवामां आवे छे. तेथी अहीं कूर्म (काचबा)नुं दृष्टांत आपे छे.—

मू०—जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं नायाणं तच्चस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, चउत्थस्स णं णायाणं के अट्ठे पन्नत्ते ? ।

अर्थ—जंबूस्वामी सुधर्मास्वामीने पूछे छे के—हे भगवान ! जो श्रमण भगवान महावीरस्वामीए ज्ञातासूत्रमां त्रीजा ज्ञात अध्ययनमां आ प्रमाणे (पूर्वोक्त) अर्थ कह्यो छे, तो ज्ञातासूत्रमां चोथा ज्ञात अध्ययनमां शो अर्थ कह्यो छे ?

मू०—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं वाणारसी नामं नयरी होत्था, वन्नओ ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये वाणारसी नामनी नगरी हती तेनुं वर्णन अहीं कहेवुं.

मू०—तीसे णं वाणारसीए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसिभागे गंगाए महानदीए मयंग-

तीरद्दहे नामं दहे होत्था, अणुपुव्वसुजायवप्पगंभीरसीयलजले अच्छविमलसलिलपलिच्छन्ने संछन्न-पत्तपुप्फपलासे बहुउप्पलपउमकुमुयनलिणसुभगसोगंधियपुंडरीयमहापुंडरीयसयपत्तसहसपत्तकेसर-पुप्फोवचिए पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ।

अर्थ—ते वाणारसी नामनी नगरीनी बहार उत्तर पूर्वनी वच्चेनी ईशान नामनी दिशाना भागमां गंगा नामनी महा-नदीमां मृतगंगातीरद्रह[1] नामनो एक द्रह हतो, तेना अनुक्रमे (एक पछी एक) सारा शोभता किनाराओ थयेला हता, तेनुं पाणी गंभीर (उंडुं) अने शीतल हतुं, ते द्रह अति निर्मळ जळथी आच्छादित (भरेलो) हतो, पद्मिनीनां पत्रो अने पुष्पनी पांखडीओवडे ते ढंकायेलो हतो, घणा उत्पल—काळां कमळ, पद्म—राता कमळ, कुमुद—रात्रिविकासी कमळ, नलिन, सुभग, सौगंधिक, पुंडरीक, महापुंडरीक, शतपत्र, सहस्रपत्र विगेरे कमळो तथा केसर प्रधान अन्य पुष्पोवडे ते द्रह समृद्धिवाळो हतो, तेथी ते आनंदकारक दर्शनीय, अभिरूप अने प्रतिरूप हतो.

मू०—तत्थ णं बहूणं मच्छाण य कच्छभाण य गाहाण य मगराण य सुंसुमाराण य सइयाण य साहस्सियाण य सयसाहस्सियाण य जूहाइं निब्भयाइं निरुव्विग्गाइं सुहंसुहेणं अभिरममाण-गातिं अभिरममाणगातिं विहरंति ।

---

१ जे ठेकाणे गंगानुं जळ वहेतुं होय ते मृतगंगा कहेवाय छे.

अर्थ—त्यां घणा मत्स्य, कच्छप, ग्राह, मगर अने सुंसुमार जातिना जळचरोना सेंकडो, हजारो अने लाखो यूथो (समूहो) भय रहित, उद्वेग रहित अने सुखे सुखे रमता रमता विचरता–रहेला हता.

मू०—तस्स णं मयंगतीरद्दहस्स अदूरसामंते एत्थ णं महं एगे मालुयाकच्छए होत्था, वन्नओ।

अर्थ—ते मृतगंगातीरद्रहनी समीपे एक मोटो मालुकाकच्छ हतो. तेनुं वर्णन अहीं कहेवुं.

मू०—तत्थ णं दुवे पावसियालगा परिवसंति, पावा चंडा रोद्दा तल्लिच्छा साहसिया लोहितपाणी आमिसत्थी आमिसाहारा आमिसप्पिया आमिसलोला आमिसं गवेसमाणा रत्तिं वियालचारिणो दिया पच्छन्नं चावि चिट्ठंति।

अर्थ—ते मालुकाकच्छने विषे बे पापी शियाळीया रहेता हता, तेओ पापकर्म करनार होवाथी पापी हता, क्रोधी होवाथी चंड-प्रचंड हता, भयंकर आकार होवाथी रौद्र हता, ते ते इष्ट वस्तुने मेळववानी इच्छावाळा हता, साहसिक हता, तेमना हाथ एटले आगला पग राता हता अथवा तेओ रुधिरनुं पान करनारा हता, मांसना अर्थी हता, मांसनो आहार करनारा हता, तेमने मांस प्रिय हतुं, तेओ मांसना लंपटी हता, अने मांसनी गवेषणा करता हता, तेथी तेओ रात्रे अने संध्या समये फरता हता अने दिवसे संताइने (छुपा) रहेता हता.

मू०—तते णं ताओ मयंगतीरद्दहातो अन्नया कदाइं सूरियंसि चिरत्थमियंसि लुलियाए संझाए

पविरलमाणुसंसि णिसंतपडिणिसंतंसि समाणंसि दुवे कुम्मगा आहारत्थी आहारं गवेसमाणा सणियं सणियं उत्तरंति, तस्सेव मयंगतीरद्दहस्स परिपेरंतेणं सव्वतो समंता परिघोलेमाणा परिघोलेमाणा वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते मृतगंगातीर द्रहमांथी एकदा कदाचित् सूर्य अस्त थया घणो वखत थयो हतो, संध्याकाळ वीती गयो हतो, विरल विरल मनुष्यो फरता हता, सर्व माणसो पोतपोताना घरमां विश्रांति पाम्या हता अथवा सर्व माणसो भ्रमण करवाथी विराम पाम्या हता. ते वखते कोइ बे कूर्म (काचबा) आहारना अर्थी होवाथी आहारनी शोध करता द्रहनी बहार नीकळ्या, अने ते ज मृतगंगातीर द्रहनी पासे आमतेम चोतरफ सर्व दिशामां फरता फरता आजीविकाने करता सता विचरवा लाग्या.

मू०—तयणंतरं च णं ते पावसीयालगा आहारत्थी जाव आहारं गवेसमाणा मालुयाकच्छयाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव मयंगतीरे दहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तस्सेव मयंगतीरद्दहस्स परिपेरंतेणं परिघोलेमाणा परिघोलेमाणा वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते बन्ने पापी शियाळीया आहारना अर्थी यावत् आहारनी गवेषणा करता मालुकाकच्छथकी

बहार नीकळ्या, बहार नीकळीने ज्यां मृतगंगातीर द्रह हतो त्यां आव्या, आवीने ते ज मृतगंगातीर द्रहनी पासे आमतेम चोतरफ फरता फरता आजीविकाने करता विचरवा लाग्या-रह्या.

मू०—तते णं ते पावसियाला ते कुम्मए पासंति, पासित्ता जेणेव ते कुम्मए तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

अर्थ—ते वखते ते बन्ने पापी शियाळीयाए ते बे कूर्मने जोया, जोइने जे ठेकाणे ते बे कूर्म हता, ते ज ठेकाणे आववानो आरंभ कर्यो.

मू०—तते णं ते कुम्मगा ते पावसियालए एज्जमाणे पासंति, पासित्ता भीता तत्था तासिया उव्विग्गा संजातभया हत्थे य पादे य गीवाए य सएहिं सएहिं काएहिं साहरंति, साहरित्ता निच्चला निप्फंदा तुसिणीया संचिट्ठंति।

अर्थ—त्यारपछी ते बे काचबाओए ते बे पापी शीयाळीयाने आवता जोया, जोइने भय पाम्या, त्रास पाम्या, नासवा लाग्या, उद्वेग पाम्या, तथा भयभीत थया, तेथी तेमणे पोताना बे हाथ, बे पग अने एक ग्रीवा ए पांचे अवयवोने पोतपोतानी काया (ढाल) ने विषे गोपवी दीधा, गोपवीने निश्चळ—स्थिर, निष्पंद—हाल्या चाल्या विनाना अने तूष्णी—मुंगा रह्या.

मू०—तते णं ते पावसियालया जेणेव ते कुम्मगा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता ते कुम्मगा सव्वतो समंता उव्वत्तेंति परियत्तेंति आसारेंति संसारेंति चालेंति घट्टेंति फंदेंति खोभेंति नहेहिं

आलुंपंति दंतेहि य अक्खोडेंति, नो चेव णं संचाएंति तेसिं कुम्मगाणं सरीरस्स आबाहं वा पबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएत्तए छविच्छेयं वा करेत्तए ।

अर्थ—त्यारपछी ते बन्ने पाप शीयाळीयाओ जे ठेकाणे ते बे काचबाओ हता त्यां आव्या, आवीने ते काचबाओने चोतरफथी सर्व दिशाए जोवा लाग्या, आमतेम फेरववा लाग्या, बीजे बीजे स्थाने मूकवा लाग्या, सारी रीते सारवार करे तेम करवा लाग्या, चलाववा लाग्या, संघट्टो करवा लाग्या, फरकाववा लाग्या, क्षोभ पमाडवा लाग्या, नखोवडे विदारवा लाग्या, अने दांतवडे तोडवा लाग्या, परंतु ते बन्ने काचबाओना शरीरने आबाधा—कांइक बाधा, प्रबाधा—प्रकृष्ट बाधा के व्याबाधा—विशेष बाधा उत्पन्न करवाने के छविच्छेद—चामडीनो छेद करवाने तेओ शक्तिमान थया नहीं.

मू०—तते णं ते पावसियालया एए कुम्मए दोच्चं पि तच्चं पि सव्वतो समंता उव्वत्तेंति जाव नो चेव णं संचाएंति करित्तए । ताहे संता तंता परितंता निव्विन्ना समाणा सणियं सणियं पच्चोसक्कंति एगंतमवक्कमंति, निच्चला निप्फंदा तुसिणीया संचिट्ठंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते बे पापी शीयाळीयाओ ते बन्ने काचबाओने बीजीवार त्रीजीवार चोतरफथी सर्व दिशाए जोवा लाग्या, परंतु यावत् छविच्छेद करवाने पण शक्तिमान न थया, त्यारे तेओ श्रांत—शरीरथी थाकी गया, तांत—मनमां ग्लानि पाम्या, परितांत—शरीर अने मनथी थाकी गया, तथा निर्वेद—खेद पाम्या सता धीमे धीमे पाछा फर्या, एकांतमां गया

तथा निश्चळ, निष्पंद अने मूंगा थइने रह्या.

मू०—तत्थ णं एगे कुम्मगे ते पावसियालए चिरंगते दूरगए जाणित्ता सणियं सणियं एगं पायं निच्छुभति ।

अर्थ—हवे ते बेमांथी एक काचबाए ते पापी शीयाळीयाओने घणा वखतथी गयेला अने दूर गयेला जाणी धीमे धीमे पोतानो एक पग बहार काढ्यो.

मू०—तते णं ते पावसियालया तेणं कुम्मएणं सणियं सणियं एगं पायं नीणियं पासंति, पासित्ता ताए उक्किट्ठाए गईए सिग्घं चवलं तुरियं चंडं जतिणं वेगितं जेणेव से कुम्मए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तस्स णं कुम्मगस्स तं पायं नखेहिं आलुंपंति, दंतेहिं अक्खोडेंति ततो पच्छा मंसं च सोणियं च आहारेंति, आहारित्ता तं कुम्मगं सव्वतो समंता उव्वत्तेंति जाव नो चेव णं संचाइंति करेत्तए, ताहे दोच्चं पि अवक्कमंति, एवं चत्तारि वि पाया जाव सणियं सणियं गीवं णीणेति । तते णं ते पावसियालगा तेणं कुम्मएणं गीवं णीणियं पासंति, पासित्ता सिग्घं चवलं तुरियं चंडं नहेहिं दंतेहिं कवालं विहाडेंति, विहाडित्ता तं कुम्मगं जीवियाओ ववरोवेंति,

ववरोवित्ता मंसं च सोणियं च आहारेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते पापी शीयाळीयाए ते काचबाए धीमे धीमे एक पग बहार काढ्यो ते देख्यो, देखीने तेवा प्रकारनी उत्कृष्ट गतिवडे शीघ्र, चपळ, त्वरित, चंड, जय अने वेग सहित ज्यां ते काचबो हतो त्यां आव्या, आवीने ते काचबानो ते पग तेमणे नखोवडे विदार्यो, अने दांतवडे तोड्यो. त्यारपछी तेना मांस अने रुधिरनो तेमणे आहार कर्यो, आहार करीने ते काचबाने चोतरफ चारे दिशाए जोवा लाग्या यावत् तेनो छविच्छेद करवाने समर्थ थया नहीं, त्यारे बीजी वार तेओ पाछा फर्या, ए प्रमाणे अनुक्रमे चारे पग अने यावत् धीमे धीमे ग्रीवाने पण ते काचबाए बहार काढी, ते वखते ते पापी शीयाळीयाए ते काचबाए ग्रीवा बहार काढेली जोइ, जोइने शीघ्र तेनी पासे आवी नखवडे विदारी दांतवडे तोडी तेना कपाल (ढाल) ने जूदुं करी नांख्युं, जूदुं करी नांखीने ते काचबाने जीवितथी मुक्त कर्यो, जीवित रहित करी तेना मांस अने रुधिरनो आहार कर्यो.

मू०—एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरियउवज्झायाणं अंतिए पव्वतिए समाणे पंचय से इंदियाइं अगुत्ताइं भवंति, से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं सावगाणं साविगाणं हीलणिज्जे परलोगे वि य णं आगच्छाति बहूणं (णि) दंडणाणं (णि) जाव अणुपरियट्टाति, जहा से कुम्मए अगुत्तिंदिए ।

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे आयुष्मान साधुओ ! जे अमारा साधु के साध्वी आचार्य के उपाध्याय विगेरेनी पासे प्रव्रज्या लइने ते पांचे इंद्रियोने गोपवता नथी, ते आ भवमां ज घणा साधुओ, घणी साध्वीओ, श्रावको अने श्राविकाओने हीलना करवा लायक थाय छे, परलोकमां पण घणा दंडने पामे छे, यावत् अनंत संसारमां परिभ्रमण करे छे. जेम ते इंद्रियोने नहीं गोपवनार काचबो मरण पाम्यो तेम.

मू०—तते णं ते पावसियालगा जेणेव से दोच्चए कुम्मए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं कुम्मगं सव्वतो समंता उव्वत्तेंति जाव दंतेहिं अक्खुडेंति जाव करित्तए ।

अर्थ—त्यारपछी ते बन्ने पापी शियाळीया ज्यां ते बीजो काचबो हतो त्यां आव्या, आवीने ते काचबाने चोतरफ सर्व दिशाए जोवा लाग्या यावत् दांतवडे तोडवा लाग्या. परंतु तेनो छविच्छेक करवाने अशक्त थया.

मू०—तते णं ते पावसियालगा दोच्चं पि तच्चं पि जाव नो संचाएंति तस्स कुम्मगस्स किंचि आबाहं वा विबाहं वा जाव छविच्छेयं वा करेत्तए, ताहे संता तंता परितंता निव्विन्ना समाणा जामेव दिसिं पाउब्भूआ तामेव दिसिं पडिगया ।

अर्थ—त्यारपछी ते पापी शियाळीया बीजी वार त्रीजीवार दूर एकांतमां गया तोपण (ते काचबाए पोतानुं अंग बहार न काढवाथी) यावत् ते काचबाने कांइ पण आबाधा, विबाधा यावत् छविच्छेद करवाने शक्तिमान थया नहीं, त्यारे

तेओ श्रांत, तांत, परितांत अने निर्विण्ण थया सता जे दिशाएथी आव्या हता ते ज दिशाए पाछा गया.

मू०—तते णं से कुम्मए ते पावसियालए चिरंगए दूरगए जाणित्ता सणियं सणियं गीवं नेणेति, नेणित्ता दिसावलोयं करेइ, करित्ता जमगसमगं चत्तारि वि पादे नीणेति, नीणेत्ता ताए उक्किट्ठाए कुम्मगईए वीइवयमाणे वीइवयमाणे जेणेव मयंगतीरद्दहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मित्तनातिनियगसयणसंबंधिपरियणेणं सद्धिं अभिसमन्नागए यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते काचबाए ते पापी शियाळीयाने घणा वखतथी गयेला अने दूर गयेला जाणी धीमे धीमे पोतानी ग्रीवा बहार काढी, काढीने सर्व दिशामां अवलोकन कर्यु, अवलोकन करी एकी साथे शीघ्रपणे चारे पग बहार काढ्या, काढीने तेवा प्रकारनी उत्कृष्ट काचबानी गतिवडे दोडतो दोडतो ते ज्यां मृतगंगातीर द्रह हतो त्यां आव्यो, आवीने (द्रहमां प्रवेश करी) मित्र, ज्ञाति, आप्त, स्वजन, संबंधी अने परिजननी साथे मळ्यो एवो थयो—तेमने मळीने सुखे रहेवा लाग्यो.

मू०—एवामेव समणाउसो! जो अम्हं समणो वा समणी वा पंच से इंदियातिं गुत्तातिं भवंति जाव जहा उ से कुम्मए गुत्तिंदिए । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं चउत्थस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि ॥ ५१ ॥

चउत्थं नायज्झयणं समत्तं ४.

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे आयुष्मान साधुओ ! जे अमारा साधु के साध्वी ते पांचे इंद्रियोने गुप्त राखे छे यावत् जेम ते काचबाए पोताना पग विगेरे इंद्रियोने गुप्त राखी तेम राखे छे ते आ संसारने तरी जाय छे. आ प्रमाणे हे जंबू ! श्रमण भगवान महावीर स्वामीए चोथा ज्ञाताध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे. एम हुं कहुं छुं.

उपनय—अहीं बे काचबाने स्थाने बे प्रकारना साधु जाणवा, शियाळीयाने ठेकाणे राग अने द्वेष जाणवा, चार पग अने ग्रीवाने स्थाने पांच इंद्रियो जाणवी, पग अने ग्रीवाने बहार काढवा ते स्थाने अहीं शब्दादिक विषयोमां इंद्रियोनी प्रवृत्ति करवी ते जाणवी, शियाळीयानी प्राप्ति जेवी राग द्वेषनी प्राप्ति जाणवी, पादादिकना छेदपूर्वक एक काचबानुं मरण थयुं, तेम अहीं रागादिकथी उत्पन्न थयेला कर्मोवडे तिर्यंच, नर अने नरक गतिमां विविध दुःखो प्राप्त थाय छे. बीजा काचबाए पादादिकनुं गोपन कर्युं ते अहीं इंद्रियोनुं गोपन जाणवुं, शियाळीयावडे ते प्राप्त न थवाथी मृतगंगाना द्रहमां जइ ज्ञातिनी साथे मळी जइ सुख पाम्यो, तेम अहीं इंद्रियोनुं गोपन करनार साधुने राग द्वेष दुःख आपी शकता नथी, तेथी ते द्रहनी प्राप्ति समान मोक्षनी प्राप्ति करी शके छे, अनंत सुखमां मग्न थाय छे.

सार—जेओ विषयोथकी इंद्रियोने रुंधे छे–विषयोमां इंद्रियोनी प्रवृत्ति थवा देता नथी अने जेओ राग द्वेषथी मुक्त

थया छे, तेओ बीजा काचबानी जेम मृतगंगा द्रहना सुख समान निर्वाण (मोक्ष) ना सुखने पामे छे. तेनाथी बीजा एटले इंद्रियोने पराधीन थयेला साधु शियाळीयाथी ग्रसायेला पहेला काचबानी जेम पापकर्ममां प्रवृत्ति करवाथी संसारसागरमां पर्यटन करता सता अनर्थपरंपराने पामे छे.

ज्ञाता धर्मकथानुं चोथुं अध्ययन समाप्त. ४



पांचमुं शैलक नामनुं अध्ययन ५.



गया अध्ययनमां इंद्रियोने गोपवनारनी सिद्धि अने नहीं गोपवनारने अनर्थनी प्राप्ति कही. हवे आ पांचमा अध्ययनमां जेणे प्रथम इंद्रियोने गोपवेल न होय, परंतु पाछळथी इंद्रियोने गोपवनार थाय तेने पण अर्थसिद्धि थाय छे ते वात कहेवामां आवशे. तेनो आरंभ आ प्रमाणे छे.—

मू०—जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं चउत्थस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, पंचमस्स णं भंते ! णायज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ? ।

अर्थ—जंबूस्वामी सुधर्मास्वामीने पूछे छे के—हे भगवान (पूज्य)! श्रमण भगवान महावीर स्वामीए चोथा ज्ञात अध्ययननो आ अर्थ कह्यो, तो हे भगवान ! पांचमा ज्ञाता अध्ययननो शो अर्थ कह्यो छे ?

मू०—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं बारवती नामं नयरी होत्था पाईणपडीणायया उदीणदाहिणविच्छिन्ना नवजोयणविच्छिन्ना दुवालसजोयणायामा धणवइमतिनिम्मिया चामीयरपवरपागारणाणामणिपंचवन्नकविसीसगसोहिया अलयापुरिसंकासा पमुतियपक्कीलिया पच्चक्खं देवलोयभूता ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये द्वारिका नामनी नगरी हती, ते पूर्व पश्चिम लांबी अने उत्तर दक्षिण पहोळी हती, ते नव योजन पहोळी अने बार योजन लांबी हती, ते धनपति (कुबेर) नी मतिथी बनावेली हती, तेनी फरतो सुवर्णनो श्रेष्ठ प्राकार अने तेने पंच वर्णना विविध मणिओना कांगरा होवाथी ते शोभती हती, ते अलका नगरी जेवी हती, तेमां रहेला लोको निरंतर आनंद युक्त अने क्रीडामां मग्न हता, तेथी ते नगरी साक्षात् देवलोक (स्वर्ग) जेवी शोभती हती.

मू०—तीसे णं बारवतीए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए रेवतगे नाम पव्वए होत्था

तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे णाणाविहगुच्छगुम्मलयावल्लिपरिगते हंसमिगमयूरकोंचसारसचक्कवायमयणसारकोइलकुलोववेए अणेगतडकडगवियरउज्झरयपवायपब्भारसिहरपउरे अच्छरगणदेवसंघचारणविज्जाहरमिहुणसंविचिन्ने निच्चच्छणए दसारवरवीरपुरिसतेलोक्कबलवगाणं सोमे सुभगे पियदंसणे सुरूवे पासातीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ।

अर्थ— ते द्वारिका नगरीनी बहार उत्तर अने पूर्वनी वच्चे एटले ईशान दिशाना विभागमां रैवतक (गिरनार) नामनो पर्वत हतो, ते घणो उंचो हतो, तेनां शिखरो आकाशतळने चाटता हता—स्पर्श करता हता, ते पर्वत विविध प्रकारना गुच्छ, गुल्म, लता, अने वल्लीथी व्याप्त हतो, ते पर्वत हंस, मृग, मयूर, कौंच, सारस, चक्रवाक, मदनसारिका अने कोयल पक्षीओना कुळे (समूहे) करीने सहित हतो, तेमां अनेक तटो अने गंडशैलो हता, तेमां घणी गुफाओ, निर्झरणां, प्रपात (भृगुपात), प्राग्भार[1] अने शिखरो हता, ते पर्वत अप्सराओना समूह, देवोना समूह, जंघाचारण मुनिओ अने विद्याधरना मिथुनोथी सेवातो हतो, तेमां निरंतर श्रेष्ठ दशार वंशना समुद्रविजयादिक वीर पुरुषो के जेओ श्रीनेमिनाथ सहित होवाथी त्रण लोकथी पण अधिक बळवान हता, तेमना नवा नवा उत्सवो थता हता, वळी ते पर्वत सौम्य, सुभग, जोवा मात्रथी ज प्रिय, सारा रूपवाळो (शोभीतो), आनंददायी, दर्शनीय, अभिरूप अने प्रतिरूप हतो.

१ काइक नमता गिरिना प्रदेशो.

मू०—तस्स णं रेवयगस्स अदूरसामंते एत्थ णं णंदणवणे नामं उज्जाणे होत्था सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे रम्मे नंदणवणप्पगासे पासातीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ।

अर्थ—ते रैवतक पर्वतनी अति दूर नहीं तथा अति समीप नहीं एवे ठेकाणे नंदनवन नामनुं उद्यान हतुं. ते उद्यान सर्व ऋतु संबंधी पुष्प अने फळे करीने समृद्धिवाळुं, रम्य-मनोहर अने नंदनवन जेवुं आनंददायी, दर्शनीय, अभिरूप अने प्रतिरूप हतुं.

मू०—तस्स णं उज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए सुरप्पिए नामं जक्खाययणे होत्था दिव्वे वन्नओ।

अर्थ—ते उद्याननना बहुमध्य देश भागमां सुरप्रिय नामना यक्षनुं दिव्य आयतन (देरुं) हतुं. तेनुं वर्णन अहीं कहेवुं.

मू०—तत्थ णं बारवतीए नयरीए कण्हे नामं वासुदेवे राया परिवसति । से णं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं, बलदेवपामोक्खाणं पंचण्हं महावीराणं, उग्गसेणपामोक्खाणं सोलसण्हं राईसहस्साणं, पज्जुन्नपामोक्खाणं अध्धुट्ठाणं कुमारकोडीणं, संबपामोक्खाणं सट्ठीए दुद्दंतसाहस्सीणं, वीरसेणपामोक्खाणं एक्कवीसाए वीरसाहस्सीणं, महासेनपामोक्खाणं छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीणं, रुप्पिणीपामोक्खाणं बत्तीसाए महिलासाहस्सीणं, अणंगसेणापामोक्खाणं अणेगाणं

गणियासाहस्सीणं, अन्नेसिं च बहूणं ईसरतलवर जाव सत्थवाहपभिईणं वेयड्ढगिरिसायरपेरंतस्स य दाहिणड्ढभरहस्स य बारवतीए नयरीए आहेवच्चं जाव पालेमाणे विहरति ॥ ५३ ॥

अर्थ—ते द्वारिका नामनी नगरीने विषे कृष्ण नामना वासुदेव राजा वसता हता. ते वासुदेव त्यां (ते नगरीमां) समुद्रविजय विगेरे दश दशारो, बळदेव विगेरे पांच मोटा वीर, उग्रसेन विगेरे सोळ हजार राजाओ, प्रद्युम्न विगेरे साडा-त्रण क्रोड कुमारो, सांब विगेरे साठ हजार दुर्दांत (मोटा) योद्धाओ, वीरसेन विगेरे एकवीश हजार वीर पुरुषो, महासेन विगेरे छप्पन हजार बळवान पुरुषो, रुक्मिणी विगेरे बत्रीश हजार स्त्रीओ, अनंगसेना विगेरे अनेक हजार गणिकाओ तथा बीजा घणा ईश्वर (शेठीया), तलवर (कोटवाळ)यावत् सार्थवाह विगेरेनुं तेम ज उत्तरमां वैताढ्य पर्वत अने बीजी त्रण दिशाए समुद्र पर्यंत दक्षिण भरतार्धनुं अने द्वारिका नगरीनुं आधिपतिपणुं यावत् पाळता सता विचरता हता–रहेला हता.

मू०—तत्थ णं बारवतीए नयरीए थावच्चा णामं गाहावतिणी परिवसाति अड्ढा जाव अपरिभूता। तीसे णं थावच्चाए गाहावतिणीए पुत्ते थावच्चापुत्ते णामं सत्थवाहदारए होत्था सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे।

अर्थ—ते द्वारिका नगरीने विषे थावच्चा नामनी गाथापतिनी[1] रहेती हती. ते आढ्य–ऋद्धिवाळी यावत् कोइथी परा-

१ गृहस्थनी स्त्री.

भव न पामे तेवी हती. ते थावच्चा नामनी गाथापतिनीनो थावच्चा नामे पुत्र सार्थवाहनो बाळक हतो. तेना हाथ पग अत्यंत कोमळ हता यावत् ते सारा रूपवाळो हतो.

मू०—तते णं सा थावच्चा गाहावइणी तं दारयं सातिरेगअट्ठवासजाययं जाणित्ता सोहणंसि तिहिकरणनक्खत्तमुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेति, जाव भोगसमत्थं जाणित्ता बत्तीसाए इब्भकुलबालियाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेंति बत्तीसतो दाओ जाव बत्तीसाए इब्भकुलबालियाहिं सद्धिं विपुले सद्दफरिसरसरूपवन्नगंधे जाव भुंजमाणे विहरति।

अर्थ—त्यारपछी ते थावच्चा गाथापतिनीए ते पुत्रने आठ वर्षथी अधिक वयनो थयो जाणी तेने शुभ तिथि, करण, नक्षत्र अने मुहूर्त वखते कळाचार्यनी पासे मोकल्यो, यावत् भोग भोगववामां समर्थ एवो युवान थयो जाणी मोटा इभ्यना कुळनी बत्रीश बालिकाओनी साथे एक ज दिवसे पाणिग्रहण कराव्युं, अने प्रासाद विगेरे सर्व बत्रीश बत्रीशनो दायजो आप्यो, यावत् ते बत्रीश इभ्यकुळनी बाळिकाओनी साथे विपुल एवा शब्द, स्पर्श, रस, रूप, वर्ण अने गंधने भोगवतो यावत् विचरवा लाग्यो-रह्यो.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं अरहा अरिट्ठनेमी सो चेव वण्णओ, दसधणुस्सेहे नीलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगासे अट्ठारसहि समणसाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे चत्तालीसाए अज्जि-

यासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव बारवती नगरी जेणेव रेवयगपव्वए जेणेव नंदणवणे उज्जाणे जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति। परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ।

अर्थ—ते काळे ते समये अरिहंत अरिष्टनेमि धर्मनी आदिने करनारा, तीर्थने करनारा विगेरे वर्णन ते ज प्रमाणे एटले महावीर स्वामीनी जेम कहेवुं. विशेष ए के—दश धनुष उंचा, काळुं कमळ, भेंशनुं शींगडुं, गुलिका—गळी अने अतसीना पुष्प जेवी श्याम कांतिवाळा, अढार हजार साधुओ साथे परिवरेला, चाळीश हजार साध्वीओनी साथे परिवरेला अनुक्रमे विहार करता यावत् ज्यां द्वारिका नगरी हती, ज्यां रैवतक पर्वत हतो, ज्यां नंदनवन नामनुं उद्यान हतुं, ज्यां सुरप्रिय नामना यक्षनुं यक्षायतन हतुं, अने ज्यां अशोक नामनुं वृक्ष हतुं, त्यां ज आव्या, आवीने यथाविधि अवग्रहने ग्रहण करीने संयम अने तपवडे पोताना आत्माने भावता सता विचरवा लाग्या—रह्या. नगरीमांथी पर्षदा नीकळी (प्रभु पासे आवी, प्रभुए) धर्म कह्यो.

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—" खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए मेघोघरसियं गंभीरं महुर-

सद्दं कोमुदितं भेरिं तालेह "।

अर्थ—त्यारपछी कृष्ण वासुदेवे आ कथा (वृत्तांत) सांभळी त्यारे तेणे कौटुंबिक (सेवक) पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रियो ! शीघ्रपणे सुधर्मा सभाने विषे जइ मेघना समूह जेवा शब्दवाळी, गंभीर अने मधुर ध्वनिवाळी कौमुदी नामनी भेरीने वगाडो."

मू०—तते णं ते कोडुंबियपुरिसा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ तुट्ठ जाव मत्थए अंजलिं कट्टु—'एवं सामी ! तह' त्ति जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सहा सुहम्मा जेणेव कोमुदिया भेरी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं मेघोघरसियं गंभीरं महुरसद्दं भेरिं तालेंति।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषोए कृष्ण वासुदेवे आ प्रमाणे कह्या सता हृष्ट तुष्ट थइ यावत् मस्तके अंजलि करी—'ए प्रमाणे हे स्वामी ! बहु सारुं' एम कही यावत् तेमनुं वचन अंगीकार कर्युं, अंगीकार करी कृष्ण वासुदेवनी पासेथी नीकळ्या, नीकळीने ज्यां सुधर्मा सभा हती, अने ज्यां कौमुदी नामनी भेरी हती, त्यां आव्या, आवीने ते मेघनी घटा जेवा शब्दवाळी, गंभीर अने मधुर ध्वनिवाळी भेरी तेमणे वगाडी.

मू०—ततो निद्धमहुरगंभीरपडिसुएणं पिव सारइएणं बलाहएणं पिव अणुरसियं भेरीए ।

अर्थ—त्यारपछी स्निग्ध, मधुर अने गंभीर प्रतिशब्दने करतो एवो जाणे शरद ऋतुनो मेघ होय एम ते भेरीनो शब्द थयो.

मू०—तते णं तीसे कोमुदियाए भेरियाए तालियाए समाणीए बारवतीए नयरीए नवजोयणविच्छिन्नाए दुवालसजोयणायामाए सिंघाडगतियचउक्कचच्चरकंदरदरीयविवरकुहरगिरिसिहरनगरगोउरपासातदुवारभवणदेउलपडिसुयासयसहस्ससंकुलं सद्दं करेमाणे बारवतिं नगरिं सब्भिंतरबाहिरियं सव्वतो समंता से सद्दे विप्पसरित्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते कौमुदी नामनी भेरी वगाडे सते नव योजन पहोळी अने बार योजन लांबी एवी द्वारिका नगरीना शृंगाटक, त्रिक, चतुष्क, चत्वर, कंदरा, दरी, विवर, कुहर, गिरिशिखर, नगरना दरवाजा, प्रासाद, द्वार, भवन (घर) अने देवालय ए सर्व ठेकाणे लाखो प्रतिध्वनिए करीने सहित तथा अंदर अने बहारना विभाग सहित द्वारिका नगरीने शब्दायमान करतो ते भेरीनो शब्द चोतरफ सर्व दिशामां फेलायो.

अहीं शृंगाटक एटले शींगोडाना आकारवाळो त्रिकोण मार्ग, त्रिक एटले त्रण मार्ग ज्यां एकठा थता होय ते, चतुष्क एटले ज्यां चार मार्ग एकठा थता होय ते, चत्वर एटले ज्यां घणा मार्ग एकठा थाय ते, कंदरा एटले नानी गुफा,

दरी एटले मोटी गुफा, विवर एटले पर्वतना चीरा, कुहर एटले बे पर्वतनी वच्चेनो भाग विगेरे जाणवुं.

मू०—तते णं बारवतीए नयरीए नवजोयणविच्छिन्नाए बारसजोयणायामाए समुद्दविजयपामोक्खा दस दसारा जाव गणियासहस्साइं कोमुदीयाए भेरीए सद्दं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठा जाव ण्हाया आविद्धवग्घारियमल्लदामकलावा अहतवत्थचंदणोक्किन्नगायसरीरा अप्पेगतिया हयगया एवं गयगया रहसीयासंदमाणीगया अप्पेगतिया पायविहारचारेणं पुरिसवग्गुरापरिखित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियं पाउब्भवित्था ।

अर्थ—त्यारपछी नव योजन पहोळी अने बार योजन लांबी द्वारिका नगरीने विषे समुद्रविजय विगेरे दश दशार यावत् अनेक हजार गणिकाओ (पूर्वे कह्या प्रमाणे) ते कौमुदी नामनी भेरीनो शब्द सांभळी हृदयमां धारी हृष्ट तुष्ट थइ यावत् स्नान करी, लांबी लटकती पुष्पमाळाओना समूहने धारण करी, अहत (कोरुं दशावळ सहित) वस्त्रने पहेरी, शरीरे चंदननुं विलेपन करी केटलाक अश्वपर चडी, ए ज प्रमाणे केटलाक हाथीपर आरूढ थइ, केटलाक रथमां बेसी, केटलाक शिबिकामां बेसी, केटलाक मीयानामां बेसी अने केटलाक पगवडे चाली पुरुषोना समूह सहित कृष्ण वासुदेवनी समीपे प्रगट थया—आव्या.

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामोक्खे दसदसारे जाव अंतियं पाउब्भवमाणे पासति, पासित्ता हट्ठ तुट्ठ जाव कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी—" खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउरंगिणीं सेणं सज्जेह, विजयं च गंधहत्थिं उवट्ठवेह "। ते वि तह त्ति उवट्ठवेंति, जाव पज्जुवासंति ॥ ५३॥

अर्थ—त्यारपछी ते कृष्ण वासुदेवे समुद्रविजय विगेरे दश दशार यावत् अनेक हजार गणिकाओने पोतानी पासे प्रगट थयेला—आवेला—जोया, जोइने हृष्ट तुष्ट थइ यावत् कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रियो ! तमे शीघ्रपणे चतुरंग सैन्यने तैयार करो, अने विजय नामना गंधहस्तीने लावो. " ते सांभळी तेओए पण ' तह त्ति ' बहु सारुं एम कही ते प्रमाणे करी हाथीने लावी स्थापन कर्यो यावत् कृष्ण वासुदेव सर्व सामग्री सहित प्रभु पासे जइ वांदीने तेमनी सेवा करवा लाग्या.

मू०—थावच्चापुत्ते वि निग्गए जहा मेहे तहेव धम्मं सोच्चा णिसम्म जेणेव थावच्चा गाहावतिणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पायग्गहणं करेति, जहा मेहस्स तहा चेव णिवेयणा, जाहे नो संचाएति विसयाणुलोमाहि य विसयपडिकूलेहि य बहूहिं आघवणाहि य पन्नवणाहि य सन्नवणाहि

य विन्नवणाहि य आघवित्तए वा पन्नवित्तए वा संन्नवित्तए वा विन्नवित्तए वा, ताहे अकामिया चेव थावच्चापुत्तदारगस्स निक्खमणमणुमन्नित्था, नवरं निक्खमणाभिसेयं पासामो । तए णं से थावच्चापुत्ते तुसिणीए संचिट्ठइ ।

अर्थ—जेम मेघकुमार भगवानने वांदवा नीकळ्या हता तेम आ थावच्चापुत्र पण नेमिनाथ भगवानने वांदवा नीकळ्यो. ते ज प्रमाणे धर्म सांभळी हृदयमां धारी ज्यां थावच्चा गाथापतिनी हती त्यां आव्यो, आवीने माताना पगनुं ग्रहण कर्युं—पगमां पड्यो. पछी तेणे मेघकुमारनी जेम माताने पोतानो वैराग्य निवेदन कर्यो. तेमां छेवट माता ज्यारे विषयने अनुकूळ तथा विषयने प्रतिकूळ एवा घणा आघवण एटले सामान्यथी कहेवावडे, पन्नवण एटले विशेषथी कहेवावडे, सन्नवण एटले धनादिक वैभव देखाडी लोभ पमाडवावडे तथा विन्नवण एटले विनंति करवावडे तेने सामान्यथी कहेवा माटे, विशेषथी कहेवा माटे, धनादिक वैभव देखाडी लोभ पमाडवा माटे अथवा विनंति करवा माटे समर्थ न थइ, त्यारे इच्छा विना ज ते थावच्चापुत्र बाळकना दीक्षामहोत्सवने तेणीए कबूल कर्यो. विशेषमां तेणीए कह्युं के—"अमे तारो दीक्षाअभिषेक जोइए." त्यारे ते थावच्चापुत्र मौन रह्यो—अर्थात् मातानुं वचन अंगीकार कर्युं.

मू०—तते णं सा थावच्चा आसणाओ अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठित्ता महत्थं महग्घं महरिहं रायरिहं पाहुडं गेण्हति, गेण्हित्ता मित्त जाव संपरिवुडा जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स भवणवरपडिदुवारदेस-

भाए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पडिहारदेसिएणं मग्गेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल व(व)द्धावेति, वद्धावित्ता तं महत्थं महग्घं महारिहं रायरिहं पाहुडं उवणेइ, उवणित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते थावच्चा सार्थवाही आसनपरथी उभी थइ, उठीने मोटा अर्थवाळुं, मोटा मूल्यवाळुं, मोटा पुरुषने योग्य तथा राजाने योग्य एवुं प्राभृत (भेटणुं) ग्रहण कर्युं, ग्रहण करीने मित्र, ज्ञाति विगेरेवडे यावत् परिवरेली सती ज्यां कृष्ण वासुदेवना श्रेष्ठ महेलना मुख्य द्वारनो देशभाग हतो त्यां आवी, आवीने प्रतिहारे देखाडेला मार्गवडे ज्यां कृष्ण वासुदेव हता त्यां आवी, आवीने बे हाथ जोडी कृष्ण वासुदेवने वधाव्या, वधावीने तेणे मोटा अर्थवाळुं, मोटा मूल्यवाळुं, मोटा पुरुषने लायक अने राजाने लायक एवुं प्राभृत (भेटणुं) तेनी पासे मूक्युं. मूकीने आ प्रमाणे बोली—

मू०—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम एगे पुत्ते थावच्चापुत्ते नामं दारए इट्ठे जाव से णं संसारभयउव्विग्गे इच्छति अरहओ अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वतित्तए । अहं णं निक्खमणसक्कारं करेमि। इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्तस्स निक्खममाणस्स छत्तमउडचामराओ य विदिन्नाओ ।

अर्थ—"आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! मारे एक ज पुत्र थावच्चापुत्र नामे बाळक इष्ट, कांत विगेरे विशेषणवाळो छे,

यावत् ते संसारना भयथी उद्वेग पामी अरिहंत अरिष्टनेमि भगवाननी पासे यावत् प्रव्रज्या ग्रहण करवाने इच्छे छे. हुं तेनो निष्क्रमण महोत्सव करवा इच्छुं छुं, तेथी हे देवानुप्रिय ! प्रव्रज्या ग्रहण करनार थावच्चापुत्रने आप छत्र, मुकुट अने चामर विगेरे सामग्री आपो एम हुं इच्छुं छुं. "

मू०—तते णं कण्हे वासुदेवे थावच्चागाहावतिणीं एवं वदासी—" अच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिए ! सुनिव्वुया वीसत्था, अहं णं सयमेव थावच्चापुत्तस्स दारगस्स निक्खमणसक्कारं करिस्सामि "।

अर्थ—त्यारपछी ते कृष्ण वासुदेवे थावच्चा सार्थवाहीने आ प्रमाणे कह्युं.—" हे देवानुप्रिया ! तुं निश्चित अने विश्वासवाळी थइने सुखे रहे, हुं पोते ज थावच्चापुत्र बाळकनो दीक्षामहोत्सव करीश. "

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणीए सेणाए विजयं हत्थिरयणं दुरूढे समाणे जेणे व थावच्चाए गाहावतिणीए भवणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता थावच्चापुत्तं एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते कृष्ण वासुदेव चतुरंगी सेना सहित विजय नामना हस्तीरत्नपर आरूढ थइ ज्यां थावच्चा सार्थवाहीनुं घर हतुं त्यां आव्या, आवीने थावच्चापुत्रने आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—" मा णं तुमे देवाणुप्पिया ! मुंडे भवित्ता पव्वयाहि, भुंजाहि णं देवाणुप्पिया ! विउले माणुस्सए कामभोए मम बाहुच्छायापरिग्गहिए, केवलं देवाणुप्पियस्स अहं णो संचाएमि वाउ-

कायं उवरिमेणं गच्छमाणं निवारित्तए, अण्णे णं देवाणुप्पियस्स जं किंचिवि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएति तं सव्वं निवारेमि ”।

अर्थ—“ हे देवानुप्रिय ! तुं मुंडित थइने प्रव्रज्या ग्रहण न कर. हे देवानुप्रिय ! तुं मारा बाहुनी छाया तळे रहीने मनुष्य संबंधी विपुल कामभोगने भोगव. फक्त देवानुप्रिय एवा तारी उपर थइने जता वायुने निवारवा माटे हुं शक्तिमान नथी. ते सिवाय देवानुप्रिय एवा तने जे बीजी कांइ पण अल्प पीडा के अधिक पीडा उत्पन्न थशे-करशे ते सर्वने हुं निवारीश. ”

मू०—तते णं से थावच्चापुत्ते कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी —“ जइ णं तुमं देवाणुप्पिया ! मम जीवियंतकरणं मच्चुं एज्जमाणं निवारेसि जरं वा सरीररूवविणासिणिं सरीरं अइवयमाणिं निवारेसि, तते णं अहं तव बाहुच्छायापरिग्गहिए विउले माणुस्सए कामभोगे भुंजमाणे विहरामि ”।

अर्थ—त्यारपछी ते थावच्चापुत्रने कृष्ण वासुदेवे आ प्रमाणे कह्युं त्यारे तेणे कृष्ण वासुदेवने आ प्रमाणे कह्युं—“ हे देवानुप्रिय ! जो तमे मारा जीवितनो अंत करनार मृत्युने आवतुं निवारता हो, अथवा शरीर प्रत्ये आवती शरीरना रूपने विनाश करनारी जरावस्थाने तमे निवारता हो, तो हुं तमारा बाहुनी छायानो आश्रय करी मनुष्य संबंधी विपुल कामभो-

गने भोगवतो विचरुं. "

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे थावच्चापुत्तं एवं वदासी— " एए णं देवाणुप्पिया ! दुरतिक्कमणिज्जा णो खलु सक्का सुबलिएणावि देवेण वा दाणवेण वा णिवारित्तए णन्नत्थ अप्पणो कम्मक्खएणं "। " तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! अन्नाणमिच्छत्तअविरइकसायसंचियस्स अत्तणो कम्मक्खयं करित्तए "।

अर्थ—त्यारपछी ते कृष्ण वासुदेवने थावच्चापुत्रे उपर प्रमाणे कह्युं त्यारे तेणे थावच्चापुत्रने आ प्रमाणे कह्युं के—" हे देवानुप्रिय ! आ मरण, जरा विगेरे ओळंगी शकाय तेवा नथी—वश करी शकाय तेवा नथी. अत्यंत बळवान एवा पण देव के दानव तेमने निवारी शके तेम नथी. मात्र एक आत्माना कर्मनो क्षय ज निवारी शके छे. " (त्यारे थावच्चापुत्रे कृष्ण प्रत्ये कह्युं)—" तेथी करीने ज हे देवानुप्रिय ! अज्ञान, मिथ्यात्व, अविरति अने कषाये संचय करेला आत्माने लागेला कर्मनो ज क्षय करवा माटे हुं इच्छुं छुं. "

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—" गच्छह णं देवाणुप्पिया ! बारवतीए नयरीए सिंघाडगतियगचउक्कचच्चर

जाव हत्थिखंधवरगया महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा उग्घोसणं करेह. ”

अर्थ—त्यारपछी ते कृष्ण वासुदेवने थावच्चापुत्रे आ प्रमाणे कह्युं त्यारे तेणे कौडुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं के—“ हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ, अने द्वारका नगरीना शृंगाटक, त्रिक, चतुष्क अने चत्वर विगेरे ठेकाणे यावत् श्रेष्ठ हस्तीना स्कंधपर आरूढ थइने मोटा मोटा शब्दवडे आघोषणा करता आघोषणा करता सता आ प्रमाणे आघोषणा करो ”—

मू०—“ एवं खलु देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्ते संसारभउव्विग्गे भीए जम्मणमरणाणं इच्छति अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए, तं जो खलु देवाणुप्पिया ! राया वा जुवराया वा देवी वा कुमारे वा ईसरे वा तलवरे वा कौडुंबिय माडंबिय इब्भसेट्ठिसेणावइसत्थवाहे वा थावच्चापुत्तं पव्वयंतमणुपव्वयाति, तस्स णं कण्हे वासुदेवे अणुजाणाति, पच्छातुरस्स वि य से मित्तनातिनियगसंबंधिपरिजणस्स जोगखेमं वट्टमाणं पडिवहाति त्ति कट्टु घोसणं घोसेह”। जाव घोसंति।

अर्थ—“ आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! संसारना भयथी उद्वेग पामेला अने जन्म मरणथी भय पामेला थावच्चापुत्र अरिहंत अरिष्टनेमि भगवाननी पासे मुंडित थइ प्रव्रज्या लेवा इच्छे छे. तो हे देवानुप्रियो ! राजा, युवराज, राणी,

कुमार, ईश्वर, तलवर, कौटुंबिक, माडंबिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति के सार्थवाह जे कोइ प्रव्रज्या लेता आ थावच्चापुत्रनी साथे प्रव्रज्या लेशे, ते सर्वने कृष्ण वासुदेव अनुज्ञा आपे छे, अने पाछळ रहेला तेना मित्र, ज्ञाति, निजक, संबंधी के परिवारमांथी कोइ पण आतुर–दुःखी हशे तो तेना वर्तमान काळ संबंधी योग[1] क्षेम[2]नो पण (कृष्ण) निर्वाह करशे." आवा प्रकारनी आघोषणा तमे करो " ते सांभळी ते कौटुंबिक पुरुषोए यावत् ते प्रमाणे आघोषणा करी.

मू०–तते णं थावच्चापुत्तस्स अणुराएणं पुरिससहस्सं निक्खमणाभिमुहं ण्हायं सव्वालंकार-विभूसियं पत्तेयं पत्तेयं पुरिससहस्सवाहिणीसु सिवियासु दुरूढं समाणं मित्तणातिपरिवुडं थावच्चा-पुत्तस्स अंतियं पाउब्भूयं ।

अर्थ—त्यारपछी थावच्चापुत्रपरना अनुराग (स्नेह) वडे तेनी साथे एक हजार पुरुषो दीक्षा लेवा तैयार थया, तेओ स्नान करी, सर्व अलंकारवडे विभूषित थइ, दरेक दरेक हजार हजार पुरुषोए वहन करेली शिबिका उपर आरूढ थइ, मित्र, ज्ञाति विगेरे परिवार सहित थावच्चापुत्रनी समीपे प्रगट थया–आव्या.

मू०–तते णं से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्समंतियं पाउब्भवमाणं पासति, पासित्ता कोडुंबिय-पुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी–जहा मेहस्स निक्खमणाभिसेओ तहेव सेयापीएहिं ण्हावेति।

---

१ अप्राप्त वस्तुने प्राप्त करी आपवी ते योग. २ प्राप्त थयेली वस्तुनुं रक्षण करवुं ते क्षेम.

अर्थ—त्यारपछी ते कृष्ण वासुदेवे हजार पुरुषोने दीक्षा लेवा तैयार थइ पासे प्रगट थयेला जोया, जोइने कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं–(" हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ अने थावच्चापुत्रने स्नान करावो, यावत् सर्व अलंकारवडे विभूषित करी हजार पुरुषोए वहन कराती शिबिकापर आरूढ करावो " इत्यादि) जे प्रमाणे मेघकुमारनो दीक्षा अभिषेक कह्यो छे ते प्रमाणे अहीं कहेवुं. पछी श्वेत अने पीत एटले रूपाना अने सुवर्णना एम दरेक जातना कळशोवडे तेमणे स्नान कराव्युं यावत् वस्त्रालंकारवडे विभूषित कर्यो. इत्यादि.

मू०—तए णं से थावच्चापुत्ते सहस्सपुरिसेहिं सद्धिं सिवियाए दुरूढे समाणे जाव रवेणं बारवइणयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव अरहतो अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइच्छत्तं पडागातिपडागं पासंति, पासित्ता विज्जाहरचारणे जाव पासित्ता सिवियाओ पच्चोरुहंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते थावच्चापुत्र ते हजार पुरुषोनी साथे शिबिकापर आरूढ थयो सतो यावत् वाजित्रोना शब्दवडे द्वारका नगरीना मध्य मध्य भागे थइने ज्यां अरिहंत अरिष्टनेमि भगवानना छत्र उपर छत्र अने पताका उपर पताका विगेरे अतिशयोने जोया, जोइने विद्याधर अने चारण मुनि विगेरेने जता आवता जोया यावत् जोइने शिबिका थकी नीचे उतर्या.

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तं पुरओ काउं जेणेव अरिहा अरिट्ठनेमी,सव्वं तं

चेव, आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते कृष्ण वासुदेव थावच्चापुत्रने आगळ करी ज्यां अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान हता त्यां आव्या, विगेरे सर्व ते ज प्रमाणे (मेघकुमारनी जेम कहेवुं. यावत् थावच्चापुत्रे ईशान दिशामां जइ पोते ज) आभरण, पुष्पमाळा अने अलंकारो उतार्या.

मू०—तते णं से थावच्चागाहावइणी हंसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरणमल्लालंकारे पडिच्छइ, पडिच्छित्ता हारवारिधारसिंदुवाराछिन्नमुत्तावलिपगासातिं असूणि विणिम्मुंचमाणी विणिम्मुंचमाणी एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते थावच्चा सार्थवाहीए हंसना लक्षण (चित्र) वाळा वस्त्रने विषे ते आभरण, पुष्पमाळा अने अलंकारो ग्रहण कर्या, ग्रहण करीने मोतीना हार, जळनी धारा, सिंदुवारना पुष्प अने छेदेली मोतीनी श्रेणिना जेवा अश्रुने मूकती मूकती आ प्रमाणे बोली.—

मू०—" जतियव्वं जाया ! घडियव्वं जाया ! परि(र)क्कमियव्वं जाया ! अस्सिं च णं अट्ठे णो पमादेयव्वं, " जामेव दिसिं पाउब्भूआ तामेव दिसिं पडिगया ।

अर्थ—" हे पुत्र ! आ प्रव्रज्यारूप अर्थने विषे तारे यत्न करवो, हे पुत्र ! शुभ क्रिया करवामां तारे घटना करवी, अने हे पुत्र ! चारित्र पाळवामां तारे पराक्रम करवुं. जरा पण प्रमाद करवो नहीं. " आ प्रमाणे कही जे दिशामांथी ते आवी हती ते ज दिशाए पाछी गइ.

मू०—तते णं से थावच्चापुत्ते पुरिससहस्सेहिं सद्धिं सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति, जाव पव्वतिए । तते णं से थावच्चापुत्ते अणगारे जाते ईरियासमिए भासासमिए जाव विहराति ।

अर्थ—त्यारपछी ते थावच्चापुत्रे हजार पुरुषोनी साथे पोते ज पंचमुष्टि लोच कर्यो, अने यावत् (प्रभु पासे) प्रव्रज्या ग्रहण करी. त्यारपछी ते थावच्चापुत्र अनगार (साधु) थया सता ईर्यासमिति, भाषासमिति विगेरेने पाळता सता यावत् विचरवा लाग्या.

मू०—तते णं से थावच्चापुत्ते अरहतो अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाति चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जाति, अहिज्जित्ता बहूहिं जाव चउत्थेणं विहराति ।

अर्थ—त्यारपछी ते थावच्चापुत्रे अरिहंत अरिष्टनेमि भगवानना तेवा प्रकारना स्थविर| साधुओनी पासे सामायिकथी आरंभीने चौद पूर्वनो अभ्यास कर्यो, अभ्यास करी घणा छठ्ठ, अठ्ठम, यावत् उपवास विगेरे तप करता विचरवा लाग्या.

मू०—तते णं अरिहा अरिट्ठनेमी थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स तं इब्भाइयं अणगारसहस्सं सीस-

त्ताए दलयति ।

अर्थ—त्यारपछी अरिहंत अरिष्टनेमि भगवाने थावच्चापुत्र अनगारने ते इभ्य विगेरे हजार साधुओ तेना शिष्य तरीके आप्या.

मू०—तते णं से थावच्चापुत्ते अन्नया कयाइं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—" इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाते समाणे सहस्सेणं अणगारेणं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरित्तए "। अहासुहं देवाणुप्पिया !।

अर्थ—त्यारपछी ते थावच्चापुत्रे एकदा कदाचित् अरिहंत अरिष्टनेमि भगवानने वंदना करी, नमस्कार कर्या, वांदी नमीने आ प्रमाणे कह्युं.—" हे भगवान् ! तमारी आज्ञा होय तो हुं हजार साधुओ सहित बहार जनपद (देश) मां विहार करवाने इच्छुं छुं. " त्यारे भगवाने कह्युं—" हे देवानुप्रिय ! तने जेम सुख उपजे तेम कर—तारी इच्छा प्रमाणे कर. "

मू०—तते णं से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं सद्धिं तेणं उरालेणं उदग्गेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं बहिया जणवयविहारं विहरति ॥ ५४ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते थावच्चापुत्र हजार साधुओ सहित ते उदार—प्रधान, उदग्र—तीव्र, प्रयत्नवाळा—प्रमाद रहित अथवा प्रदत्त—गुरुए आपेला अने प्रगृहीत—बहुमानथी ग्रहण करेला तप चारित्रवडे अलंकृत थइने बहार जनपद (देश) मां

विहार करता विचरवा लाग्या. ५४.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं सेलगपुरे नामं नगरं होत्था, सुभूमिभागे उज्जाणे, सेलए राया, पउमावती देवी, मंडुए कुमारे जुवराया।

अर्थ—ते काळे ते समये सेलकपुर नामनुं नगर हतुं. ते नगरनी बहार सुभूमिभाग नामनुं उद्यान हतुं. ते नगरमां सेलक नामे राजा हतो. तेने पद्मावती नामनी राणी हती. तेमने मंडुक नामनो युवराज कुमार हतो.

मू०—तस्स णं सेलगस्स पंथगपामोक्खा पंच मंतिसया होत्था, उप्पत्तियाए वेणइयाए (पारिणामियाए कम्मिगाए) चउविहाए बुद्धीए उववेया रज्जधुरचिंतया वि होत्था।

अर्थ—ते सेलक राजाने पंथक विगेरे पांचसो मंत्रीओ हता. तेओ औत्पत्तिकी, वैनयिकी, पारिणामिकी अने कार्मिकी ए चार प्रकारनी बुद्धिए करीने सहित हता तथा राज्यधुराना चिंतक पण हता.

मू०—तए णं थावच्चापुत्ते नामं अणगारे सहस्सेणं अणगारेणं सद्धिं जेणेव सेलगपुरे जेणेव सुभूमिभागे नामं उज्जाणे तेणेव समोसढे। सेलए वि राया विणिग्गए। धम्मो कहिओ।

अर्थ—त्यारपछी ते थावच्चापुत्र नामना अनगार एक हजार साधुओनी साथे ज्यां सेलकपुर नगर हतुं अने ज्यां सुभूमिभाग नामनुं उद्यान हतुं, त्यां समवसर्या (पधार्या). सेलक राजा पण तेमने वांदवा नीकळ्यो. गुरुए धर्म कह्यो.

मू०—धम्मं सोच्चा " जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे उग्गा भोगा जाव चइत्ता हिरन्नं जाव पव्वइया, तहा णं अहं नो संचाएमि पव्वइत्तए। तओ णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वयं जाव समणोवासए, " जाव अहिगयजीवाजीवे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। पंथगपामोक्खा पंच मंतिसया समणोवासया जाया। थावच्चापुत्ते बहिया जणवयाविहारं विहरति।

अर्थ—धर्म सांभळीने सेलक राजाए कह्युं के—" जेम देवानुप्रिय एवा आपनी पासे घणा उग्रकुळना, भोगकुळना विगेरे पुरुषोए यावत् हिरण्यनो त्याग करी प्रव्रज्या लीधी छे, ते प्रमाणे हुं प्रव्रज्या ग्रहण करवा शक्तिमान नथी. तेथी हुं तो देवानुप्रिय एवा आपनी पासे पांच अणुव्रत विगेरे (श्रावकधर्म) ने ग्रहण करी यावत् श्रमणोपासक—श्रावक थइश." आ प्रमाणे कही श्रमणोपासक थइ यावत् जीवाजीवादिक तत्त्वोने जाणी यावत् पोताना आत्माने भावतो सतो विचरवा लाग्यो—रह्यो. ते ज प्रमाणे पंथक विगेरे पांच सो मंत्रीओ पण श्रमणोपासक—श्रावक थया. पछी थावच्चापुत्र अनगार त्यांथी विहार करी बहार जनपद (देश) मां विहार करता विचरवा लाग्या.

मू—ते णं काले णं ते णं समए णं सोगंधिया नाम नयरी होत्था। वण्णओ। नीलासोए उज्जाणे। वण्णओ। तत्थ णं सोगंधियाए नयरीए सुदंसणे नामं नगरसेट्ठी परिवसति, अड्ढे जाव अपरिभूते।

अर्थ—ते काळे ते समये सौगंधिका नामनी नगरी छे. तेनुं वर्णन कहेवुं. ते नगरीनी बहार नीलाशोक नामनुं उद्यान छे. तेनुं पण वर्णन कहेवुं. ते सौगंधिका नगरीने विषे सुदर्शन नामनो नगरशेठ वसतो हतो. ते घणी ऋद्धिवाळो हतो, यावत् अपरिभूत एटले कोइ तेने पराभव पमाडी शकतुं नहीं.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं सुए नामं परिव्वायए होत्था रिउव्वेयजजुव्वेयसामवेय-अथव्वणवेयसट्ठितंतकुसले संखसमए लद्धट्ठे पंचजमपंचनियमजुत्तं सोयमूलयं दसप्पयारं परिव्वायगधम्मं दाणधम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणे पन्नवेमाणे धाउरत्तवत्थपवरपरिहिए तिदंडकुंडियछत्तछन्नालियंकुसपवित्तयकेसरीहत्थगए परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे जेणेव सोगंधिया नगरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहंसि भंडगनिक्खेवं करेइ, करित्ता संखसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहराति।

अर्थ—ते काळे ते समये शुक नामनो एक परिव्राजक हतो, ते ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वणवेद तथा षष्टितंत्रमां[1] कुशळ हतो, सांख्यमतना शास्त्रने विषे लब्धार्थ[2] हतो, पांच यम[3] अने पांच नियमे[4] करीने सहित दश प्रकारना शौचमूळ

१ कपिलनुं शास्त्र. २ अर्थनो जाणकार. ३ प्राणातिपात विरमण विगेरे पांच महाव्रतो. ४ शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय अने ईश्वरनुं ध्यान.

परिव्राजक धर्मनो, दानधर्मनो, शौचधर्मनो अने तीर्थस्नाननो उपदेश करतो हतो तथा प्ररूपणा करतो हतो. गेरुथी रंगेला श्रेष्ठ वस्त्रने ते पहेरतो हतो, त्रिदंड[1], कुंडिका-कमंडलु, मोरपिच्छनुं छत्र, छन्नालिक[2], अंकुश, पवित्री[3] अने केसरी[4] ए सात उपकरणोने ते हाथमां राखतो हतो, आ रीते एक हजार परिव्राजकोनी साथे परिवरेलो ते शुक परिव्राजक ज्यां सौगंधिका नामनी नगरी हती अने ज्यां परिव्राजकोने रहेवानो आवसथ (मठ) हतो, त्यां आव्यो, आवीने ते परिव्राजकना मठमां पोताना भांड (उपकरण) नो निक्षेप कर्यो (मूक्या). करीने सांख्यमतवडे पोताना आत्माने भावतो विचरवा लाग्यो-रह्यो.

मू०-तते णं सोगंधियाए सिंघाडगतिगचउक्कचच्चर० बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ-एवं खलु सुए परिव्वायए इह हव्वमागते जाव विहरइ । परिसा निग्गया । सुदंसणो निग्गए ।

अर्थ—त्यारपछी सौगंधिका नगरीने विषे शृंगाटक, त्रिक, चतुष्क अने चत्वर विगेरे ठेकाणे घणा जनो एकठा थइ परस्पर आ प्रमाणे कहेवा लाग्या के-" आ प्रमाणे निश्चे शुक नामना परिव्राजक अहीं शीघ्र आवेला छे, यावत् आत्माने भावता विचरे छे. " एम कही तेने नमवा माटे पर्षदा नीकळी, सुदर्शन शेठ पण नीकळ्यो.

---

१ त्रण पांखडीवाळा काष्टनुं उपकरण. २ वृक्षना पल्लव छेदवानुं उपकरण. ३ ताबु, रुपुं विगेरे धातुनी बनावेली वींटी. ४ प्रमार्जन करवा माटे वस्त्रनो खंड.

मू०—तते णं से सुए परिव्वायए तीसे परिसाए सुदंसणस्स य अन्नेसिं च बहूणं संखाणं परिकहेति—" एवं खलु सुदंसणा ! अम्हं सोयमूलए धम्मे पन्नत्ते । से वि य सोए दुविहे पन्नत्ते, तं जहा—दव्वसोए य भावसोए य । दव्वसोए य उदएणं मट्टियाए य । भावसोए दब्भेहि य मंतेहि य । जं णं अम्हं देवाणुप्पिया ! किंचि असुई भवति, तं सव्वं सज्जो पुढवीए आलिप्पति, ततो पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जति, ततो तं असुई सुई भवति । एवं खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणो अविग्घेणं सग्गं गच्छंति " ।

अर्थ—त्यारपछी ते शुक परिव्राजके ते पर्षदामां सुदर्शनने तथा बीजा घणा जनोने आ प्रमाणे सांख्यमतनो उपदेश आप्यो के—" आ प्रमाणे निश्चे हे सुदर्शन ! अमारो शौचमूळ धर्म कहेलो छे. अने ते शौच पण बे प्रकारे कह्युं छे, ते आ प्रमाणे—द्रव्यशौच अने भावशौच. तेमां द्रव्यशौच जळवडे अने माटीवडे थाय छे. तथा भावशौच दर्भवडे अने मंत्रवडे थाय छे. हे देवानुप्रिय ! अमारी जे कांइ वस्तु अशुचि थाय छे, ते सर्वने तत्काळ पृथ्वी (माटी) वडे लेप करवामां आवे छे अने पछी शुद्ध जळवडे धोवामां आवे छे. त्यारे ज ते अशुचि वस्तु शुचि थाय छे. ए ज प्रमाणे निश्चे जीवो (मनुष्यो) पण जळना अभिषेक (स्नान) वडे पोताना आत्माने पवित्र करी विघ्न रहितपणे स्वर्गे जाय छे. "

मू० तते णं से सुदंसणे सुयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा हट्ठे, सुयस्स अंतियं सोयमूलयं धम्मं गेण्हति, गेण्हित्ता परिव्वायए विपुलेणं असणपाणखादिमसादिमवत्थेणं पडिलाभेमाणे जाव विहरति। तते णं से सुए परिव्वायगे सोगंधियाओ नयरीओ निगच्छति, निगच्छित्ता बहिया जणवयविहारं विहरति।

अर्थ—त्यारपछी ते सुदर्शन शेठ आ प्रमाणे शुक परिव्राजकनी पासे धर्म सांभळी हृष्ट तुष्ट थयो, अने तेथी तेणे शुकनी पासे शौचमूळ धर्म अंगीकार कर्यो. अंगीकार करीने ते परिव्राजकने विपुल एवा अशन, पान, खादिम, स्वादिम अने श्रेष्ठ वस्त्रवडे पडिलाभीने यावत् विचरवा लाग्यो–रह्यो. त्यारपछी ते शुक परिव्राजक सौगंधिका नगरीथी नीकळ्यो, नीकळीने बहारना जनपद (देश) मां विहार करवावडे विचरवा लाग्यो.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं थावच्चापुत्ते णामं अणगारे सहस्सेणं अणगारेणं सद्धिं पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दुइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव सोगंधिया नयरी जेणेव नीलासोए उज्जाणे तेणेव समोसढे।

अर्थ—ते काळे ते समये थावच्चापुत्र नामना अनगार एक हजार अनगार सहित अनुक्रमे विहार करता, एक गामथी

बीजे गाम जता अने सुखे सुखे विचरता सता ज्यां सौगंधिका नामनी नगरी हती अने ज्यां नीलाशोक नामनुं उद्यान हतुं, त्यां समवसर्या–आवीने रह्या.

मू०–परिसा निग्गया । सुदंसणो वि णिग्गए । थावच्चापुत्तं नामं अणगारं आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी–"तुम्हाणं किंमूलए धम्मे पन्नत्ते?।

अर्थ—ते जाणी तेमने नमवा माटे नगरीमांथी पर्षदा नीकळी, सुदर्शन शेठ पण नीकळ्या. तेमणे थावच्चापुत्र नामना अनगारने दक्षिण बाजुथी आरंभी दक्षिण बाजु सुधी प्रदक्षिणा करी, प्रदक्षिणा करीने तेमने वंदना करी अने नमस्कार कर्या, वांदी नमस्कार करी सुदर्शन शेठ आ प्रमाणे बोल्या के–" तमारो धर्म शा मूळवाळो कह्यो छे? (तमारा धर्मनुं मूळ शुं छे?) "

मू०–तते णं थावच्चापुत्ते सुदंसणेणं एवं वुत्ते समाणे सुदंसणं एवं वदासी–" सुदंसणा! विणयमूले धम्मे पन्नत्ते, से वि य विणए दुविहे पन्नत्ते, तं जहा–अगारविणए य अणगारविणए य । तत्थ णं जे से अगारविणए से णं पंच अणुव्वयाति सत्त सिक्खावयाति एक्कारस उवासगपडिमाओ । तत्थ णं जे से अणगारविणए से णं पंच महव्वयाइं पन्नत्ताइं, तं जहा–सव्वातो पाणातिवा-

याओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वातो अदिन्नादाणातो वेरमणं, सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं, सव्वाओ राइभोयणाओ वेरमणं, जाव मिच्छादंसणसल्लाओ वेरमणं, दसविहे पच्चक्खाणे, बारस भिक्खुपडिमाओ, इच्चेएणं दुविहेणं विणयमूलएणं धम्मेणं अणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपगडीओ खवेत्ता लोयग्गपइट्ठाणे भवंति "।

अर्थ—त्यारपछी थावच्चापुत्रने सुदर्शन शेठे उपर प्रमाणे कह्युं त्यारे तेणे सुदर्शन शेठने आ प्रमाणे कह्युं—" हे सुदर्शन ! अमारो विनय मूळ धर्म कहेलो छे. अने ते विनय पण बे प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे—अगार विनय—गृहस्थनो विनय अने अनगार विनय—साधुनो विनय. तेमां जे अगार विनय छे, ते पांच अणुव्रतो, सात शिक्षाव्रतो अने अग्यार उपासक प्रतिमा—श्रावक प्रतिमा रूप छे, अने जे अनगार विनय छे ते पांच महाव्रतो रूप कहेलो छे. ते महाव्रतो आ प्रमाणे—सर्वथा प्राणातिपातथी विरमण, सर्वथा मृषावादथी विरमण, सर्वथा अदत्तादानथी विरमण, सर्वथा मैथुनथी विरमण, सर्वथा परिग्रहथी विरमण, उपरांत सर्वथा रात्रिभोजनथी विरमण, यावत् सर्वथा मिथ्यादर्शनशल्यथी विरमण, तथा दश प्रकारनुं प्रत्याख्यान अने बार भिक्षुप्रतिमा. (आ बधो अनगार धर्म अथवा अनगार विनय छे.) आ प्रमाणे बे प्रकारना विनयमूळ धर्मवडे अनुक्रमे आठ कर्मनी प्रकृतिओने खपावी (जीवो) लोकना अग्रभागने विषे (मोक्षमां) प्रतिष्ठित थाय छे.

मू०—तते णं थावच्चापुत्ते सुदंसणं एवं वदासी "तुब्भे णं सुदंसणा ! किंमूलए धम्मे पन्नत्ते ?"।

अम्हाणं देवाणुप्पिया ! सोयमूले धम्मे पन्नत्ते, जाव सग्गं गच्छंति " ।

अर्थ—त्यारपछी-आ प्रमाणे-पोतानो धर्म कह्या पछी थावच्चापुत्रे फरीथी सुदर्शन शेठने आ प्रमाणे कह्युं-पूछ्युं के-" हे सुदर्शन ! कया मूळवाळो तमारो धर्म कह्यो छे-तमारा धर्मनुं मूळ शुं छे ? " त्यारे सुदर्शने कह्युं के-" हे देवानुप्रिय ! अमारो शौचमूळ धर्म कह्यो छे, तेथी जीवो यावत् स्वर्गे जाय छे. "

मू०—तते णं थावच्चापुत्ते सुदंसणं एवं वदासी—" सुदंसणा ! से जहानामए केइ पुरिसे एगं महं रुहिरकयं वत्थं रुहिरेण चेव धोवेज्जा, तते णं सुदंसणा ! तस्स रुहिरकयस्स रुहिरेण चेव पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि काइ सोही ? " । " णो तिणट्ठे समट्ठे " ।

अर्थ—त्यारपछी थावच्चापुत्रे सुदर्शनने आ प्रमाणे कह्युं के-" हे सुदर्शन ! ते यथा नामवाळो (कोइ पण नामवाळो) कोइ पुरुष एक मोटा रुधिरथी खरडायेला वस्त्रने रुधिरथी ज धोवे, तो हे सुदर्शन ! ते रुधिरथी खरडाएला अने रुधिरथी ज धोयेला वस्त्रनी कांइ पण शुद्धि थाय खरी ? " सुदर्शने उत्तर आप्यो के-" आ अर्थ समर्थ नथी एटले ते वस्त्रनी कांइ पण शुद्धि थाय नहीं. (पण वधारे खरडाय.) "

मू०—" एवामेव सुदंसणा ! तुब्भं पि पाणातिवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं नत्थि सोही, जहा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव पक्खालिज्जमाणस्स नत्थि सोही " ।

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे सुदर्शन ! तारे पण—तारा धर्मने विषे पण प्राणातिपात—जीवहिंसा विगेरे यावत् मिथ्यादर्शनरूपी शल्यवडे करीने कांइ पण शुद्धि नथी, जेम ते रुधिरथी खरडायेला वस्त्रनी रुधिरवडे जं प्रक्षालन करवाथी—धोवाथी शुद्धि थती नथी तेम. "

मू०—" सुदंसणा ! से जहाणामए केइ पुरिसे एगं महं रुहिरकयं वत्थं सज्जियाखारेणं अणुलिंपति, अणुलिंपित्ता पयणं आरुहेति, आरुहित्ता उण्हं गाहेइ, गाहित्ता ततो पच्छा सुद्धेणं वारिणा धोवेज्जा, से णूणं सुदंसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स सज्जियाखारेणं अणुलित्तस्स पयणं आरुहियस्स उण्हं गाहितस्स सुद्धेणं वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स सोही भवाति ?"। " हंता भवइ "।

अर्थ—" वळी हे सुदर्शन ! ते यथा नामवाळो कोई पुरुष एक मोटा रुधिरथी खरडायेला वस्त्रने साजीखारवडे लेप करे—साजीखारना पाणीमां पलाळे, पलाळीने पाकस्थान (चूला) उपर चडावे, चडावीने उष्णता ग्रहण करावे (उकाळे), उष्णता ग्रहण करावीने (उकाळीने) त्यारपछी शुद्ध जळवडे धोवे, तो निश्चे हे शुदर्शन ! ते रुधिरथी खरडायेलुं वस्त्र साजीखारमां पलाळ्युं होय, चूलापर चडाव्युं होय अने उष्णता ग्रहण करावी (उकाळ्युं) होय अने पछी शुद्ध जळवडे धोयुं होय तो तेनी शुद्धि थाय छे ? " सुदर्शने उत्तर आप्यो के—" हा. तेनी शुद्धि थाय छे. "

मू०—" एवामेव सुदंसणा ! अम्हं पि पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं

अत्थि सोही, जहा वि तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स जाव सुद्धेणं वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि सोही "।

अर्थ—" ए ज प्रमाणे हे सुदर्शन ! अमारे पण–अमारा धर्ममां पण प्राणातिपात (जीवहिंसा) ना विरमणवडे यावत् मिथ्यादर्शन रूपी शल्यना विरमणवडे शुद्धि थाय छे. जेम ते रुधिरथी खरडायेला वस्त्रनी यावत् शुद्ध जळवडे धोवाथी शुद्धि थाय छे तेम."

मू०–तत्थ णं से सुदंसणे संबुद्धे थावच्चापुत्तं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी– " इच्छामि णं भंते ! धम्मं सोच्चा जाणित्तए, जाव समणोवासए जाए अहिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुदर्शन शेठ प्रतिबोध पाम्यो, तेथी तेणे थावच्चापुत्रने वंदना करी अने नमस्कार कर्या, वंदना करी नमस्कार करी आ प्रमाणे कह्युं के–" हे भगवान ! आपनो धर्म सांभळीने ते जाणवाने–अंगीकार करवाने हुं इच्छुं छुं. " विगेरे कही यावत् ते श्रमणोपासक–श्रावक थयो, जीवाजीव विगेरे तत्त्वनो जाणकार थयो, यावत् ते गुरुने अशनादिकनो प्रतिलाभ देतो विचरवा लाग्यो–रह्यो.

मू०–तए णं तस्स सुयस्स परिव्वायगस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स अयमेयारूवे

जाव समुप्पज्जित्था—" एवं खलु सुदंसणेणं सोयधम्मं विप्पजहाय विणयमूले धम्मे पडिवन्ने । तं सेयं खलु मम सुदंसणस्स दिट्ठिं वामेत्तए, पुणरावि सोयमूलए धम्मे आघवित्तए " त्ति कट्टु एवं संपेहेति, संपेहित्ता परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं जेणेव सोगंधिया नगरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहंसि भंडनिक्खेवं करेति, करित्ता धाउरत्तवत्थपरिहिते पविरलपरिव्वायगेणं सद्धिं संपरिवुडे परिव्वायगावसहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता सोगंधियाए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सुदंसणस्स गिहे जेणेव सुदंसणे तेणेव उवागच्छति ।

अर्थ—त्यारपछी ते शुक परिव्राजके आ वातनो अर्थ जाण्यो त्यारे तेने आवा प्रकारनो विचार उत्पन्न थयो के—" आ प्रमाणे निश्चे सुदर्शने शौचधर्मनो त्याग करी विनयमूळ धर्मनो अंगीकार कर्यो छे. तेथी निश्चे मारे ते सुदर्शननी दृष्टि वमाववी (सम्यग्धर्मनो त्याग कराववो) अने फरीथी पण शौचमूळ धर्मनो उपदेश करवो, ते श्रेय (योग्य) छे." आ प्रमाणे तेणे विचार कर्यो. विचार करीने एक हजार परिव्राजको सहित ज्यां सौगंधिका नगरी हती अने ज्यां परिव्राजकनो आवसथ (मठ) हतो, त्यां आव्यो, आवीने परिव्राजकना आवसथमां पोताना भांड (उपकरण) नो निक्षेप कर्यो (मूक्या), निक्षेप करीने धातु (गेरु) वडे रंगेला वस्त्र पहेरी थोडा परिव्राजकोने साथे लइ परिव्राजकना आवसथमांथी नीकळ्यो, नीकळीने सौगंधिका नगरीना मध्य भागे थइने ज्यां सुदर्शननुं घर हतुं अने ज्यां सुदर्शन रहेलो हतो त्यां आव्यो.

मू०—तते णं से सुदंसणे तं सुयं एज्जमाणं पासति, पासित्ता नो अब्भुट्ठेति, नो पच्चुग्गच्छति, णो आढाइ, नो परियाणाइ, नो वंदति, तुसिणीए संचिट्ठति ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुदर्शन शेठे ते शुक परिव्राजकने आवता जोया, जोइने पोते उभो थयो नहीं, तेनी सन्मुख गयो नहीं, तेनो आदर कर्यो नहीं, तेने जाण्या पण नहीं, तेम ज तेने वंदना करी नहीं. परंतु मुंगो ज रह्यो.

मू०—तए णं से सुए परिव्वायए सुदंसणं अणब्भुट्ठियं पासित्ता एवं वदासी—"तुमं णं सुदंसणा! अन्नदा ममं एज्जमाणं पासित्ता अब्भुट्ठेसि जाव वंदासि, इयाणिं सुदंसणा! तुमं ममं एज्जमाणं पासित्ता जाव णो वंदासि, तं कस्स णं तुमे सुदंसणा! इमेयारूवे विणयमूलधम्मे पडिवन्ने?"।

अर्थ—त्यारपछी ते शुक परिव्राजक सुदर्शनने नहीं उभो थयेलो विगेरे जोइ आ प्रमाणे बोल्यो के—"हे सुदर्शन! पहेलां तो कोइ पण वखत मने आवतो जोइने तुं उभो थतो हतो, यावत् मने वंदना करतो हतो, पण हे सुदर्शन! हमणां तो तुं मने आवतो जोइने उभो थतो नथी, यावत् वंदना करतो नथी, तो हे सुदर्शन! तें कोनी पासे आवा प्रकारनो विनयमूल धर्म अंगीकार कर्यो छे?"

मू०—तते णं से सुदंसणे सुएणं परिव्वायएणं एवं वुत्ते समाणे आसणाओ अब्भुट्ठेति, अ-

ब्भुट्ठित्ता करयल० सुयं परिव्वायगं एवं वदासी–" एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतेवासी थावच्चापुत्ते नामं अणगारे जाव इहमागए इह चेव नीलासोए उज्जाणे विहरति, तस्स णं अंतिए विणयमूले धम्मे पडिवन्ने " ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुदर्शन शेठने शुक परिव्राजके उपर प्रमाणे कह्युं त्यारे ते आसनपरथी उभो थयो, उभो थइ बे हाथ जोडी तेणे शुक परिव्राजकने आ प्रमाणे कह्युं–" निश्चे हे देवानुप्रिय ! अरिहंत अरिष्टनेमिना शिष्य थावच्चापुत्र नामना अनगार यावत् अहीं पधार्या छे, अने अहीं ज नीलाशोक नामना उद्यानमां विचरे छे–रहेला छे. तेमनी पासे में विनयमूळ धर्म अंगीकार कर्यो छे. "

मू०–तते णं से सुए परिव्वायए सुदंसणं एवं वदासी–" तं गच्छामो णं सुदंसणा ! तव धम्मायरियस्स थावच्चापुत्तस्स अंतियं पाउब्भवामो, इमाइं च णं एयारूवातिं अट्ठाइं हेऊइं पसिणातिं कारणातिं वागरणातिं पुच्छामो । तं जइ णं मं से इमाइं अट्ठातिं जाव वागराति तते णं अहं वंदामि नमंसामि । अह मे से इमातिं अट्ठातिं जाव नो से वाकरेति तते णं अहं एएहिं चेव अट्ठेहिं हेऊहिं निप्पट्ठपसिणवागरणं करिस्सामि ।

अर्थ— त्यारपछी ते शुक परिव्राजके सुदर्शनने आ प्रमाणे कह्युं के—" हे सुदर्शन ! तो चालो आपणे जइए. तारा धर्माचार्य थावच्चापुत्रनी समीपे आपणे प्रगट थइए–जइए, अने आ आवा प्रकारना अर्थने–वच्यमाण यात्रा, यापना विगेरे प्रार्थना करवा योग्य होवाथी प्रयोजनने, हेतुने–मनमां वर्तती ज्ञानसंपदाना हेतुने, पूछवा लायक होवाथी प्रश्नोने, कारणोने–विवक्षित अर्थनो निश्चय करनारा कारणोने तथा व्याकरणने–उत्तरने आपणे पूछीए. तेम करतां जो ते मारा आ अर्थने यावत् व्याकरण (उत्तर)ने कहेशे तो हुं तेमने वंदन करीश, नमस्कार करीश. अने जो ते मारा आ अर्थने यावत् व्याकरण (उत्तर) ने नहीं कहे तो हुं तेमने आ ज अर्थ वडे अने हेतु विगेरे वडे प्रश्न अने उत्तर रहित करी दइश.

मू०—तते णं से सुए परिव्वायगसहस्सेणं सुदंसणेण य सेट्ठिणा सद्धिं जेणेव नीलासोए उज्जाणे जेणेव थावच्चापुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता थावच्चापुत्तं एवं वदासी–" जत्ता ते भंते ! जवणिज्जं ते अव्वाबाहं पि ते फासुयं विहारं ते ? "।

अर्थ—त्यारपछी ते शुक परिव्राजक पोताना एक हजार परिव्राजको अने सुदर्शन शेठ सहित ज्यां नीलाशोक उद्यान हतुं अने ज्यां थावच्चापुत्र अनगार हता, त्यां आव्या, आवीने तेणे थावच्चापुत्रने आ प्रमाणे कह्युं के—" हे भगवान ! तमारे यात्रा प्रवर्ते छे ? तमारे यापनीय वर्ते छे ? तमारे अव्याबाध (बाधा रहितपणुं) वर्ते छे ? तथा तमारो प्रासुक विहार वर्ते छे ? "

मू–तते णं से थावच्चापुत्ते सुएणं परिव्वायगेणं एवं वुत्ते समाणे सुयं परिव्वायगं एवं वदासी –" सुया ! जत्ता वि मे जवणिज्जं पि मे अव्वाबाहं पि मे फासुयविहारं पि मे "।

अर्थ—त्यारपछी ते थावच्चापुत्रे शुक परिव्राजके उपर प्रमाणे कहे सते शुक परिव्राजकने आ प्रमाणे कह्युं के—" हे शुक ! मारे यात्रा पण वर्ते छे, मारे यापनीय पण वर्ते छे, मारे अव्याबाधपणुं पण वर्ते छे अने मारे प्रासुक विहार पण वर्ते छे."

मू०–तते णं से सुए थावच्चापुत्तं एवं वदासी–" किं भंते ! जत्ता ? " " सुया ! जं णं मम णाणदंसणचरित्ततवसंजममातिएहिं जोएहिं जो(ज)यणा से तं जत्ता."

अर्थ—त्यारपछी ते शुक परिव्राजके थावच्चापुत्रने आ प्रमाणे कह्युं (पूछयुं) के—" हे भगवान ! तमारे यात्रा कइ छे ? " उत्तर—" हे शुक ! अमारे ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप अने संयम विगेरे जोगे करीने छकायने विषे यतना करवी ते यात्रा कहेवाय छे. "

मू०–" से किं तं भंते ! जवणिज्जं ? " सुया ! जवणिज्जे दुविहे पन्नत्ते, तं जहा–इंदियजवणिज्जे य नोइंदियजवणिज्जे य "। " से किं तं इंदियजवणिज्जं ? " सुया ! जं णं मम सोतिंदिय-

चक्खिंदियघाणिंदियजिब्भिंदियफासिंदियाइं निरुवहयाइं वसे वट्टंति, से तं इंदियजवणिज्जं "।
" से किं तं नोइंदियजवणिज्जे ? " सुया ! जन्नं कोहमाणमायालोभा खीणा उवसंता नो उदयंति से तं नोइंदियजवणिज्जे ।

अर्थ—प्रश्न–"हे भगवान! तमारे यापनीय शुं छे?" उत्तर–"हे शुक! यापनीय बे प्रकारे कह्युं छे, ते आ प्रमाणे– इंद्रिय यापनीय अने नोइंद्रिय यापनीय." प्रश्न–"इंद्रिय यापनीय शुं कहेवाय?" उत्तर–"हे शुक! जे अमारा श्रोत्रेंद्रिय, चक्षुरिंद्रिय घ्राणेंद्रिय, जिव्हेंद्रिय अने स्पर्शेन्द्रिय ए पांचे इंद्रियो निरुपहत एटले उपद्रव रहित सारी रीते प्रवर्ते अने वशमां वर्ते, ते अमारे इंद्रिय यापनीय कहेवाय छे." प्रश्न–"तमारे नोइंद्रिय यापनीय शुं छे?" उत्तर–"हे शुक! जे अमारे क्रोध, मान, माया अने लोभ ए कषायो क्षीण थया होय, उपशांत थया होय अने उदयमां आवता न होय, ते अमारे नोइंद्रिय यापनीय कहेवाय छे."

मू०–" से किं तं भंते ! अव्वाबाहं ? "। " सुया ! जन्नं मम वातियपित्तियसिंभियसन्निवाइया विविहा रोगातंका णो उदीरेंति से तं अव्वाबाहं "।

अर्थ—प्रश्न–"हे भगवान! तमारे अव्याबाध पणुं शी रीते वर्ते छे?" उत्तर–"हे शुक! जे अमारे वात, पित्त, कफ

अने सन्निपात (ते त्रणेनुं मिश्रपणुं) विगेरे संबंधी विविध प्रकारना रोगातंक उदयमां न आवे, ते अमारे अव्याबाधपणुं छे."

मू०—"से किं तं भंते ! फासुयविहारं ?" । "सुया ! जन्नं आरामेसु उज्जाणेसु देवउलेसु सभासु पव्वासु इत्थिपसुपंडगविवज्जियासु वसहीसु पाडिहारियं पीठफलगसेज्जासंथारयं उग्गिण्हित्ता णं विहरामि से तं फासुयविहारं"।

अर्थ—प्रश्न—"हे भगवान ! तमारो प्रासुक विहार शो छे ? (केवी रीते छे ?)" उत्तर—"हे शुक ! जे अमे आरामने विषे, उद्याननने विषे, देवकुलने विषे, सभाने विषे, पाणीनी परबने विषे तथा स्त्री, पशु अने नपुंसक रहित एवा उपाश्रयने विषे प्रौतिहारिक एवा पीठ, फलक, शय्या, संस्तारक विगेरे ग्रहण करीने विचरीए छीए—रहीए छीए, ते अमारो प्रासुक विहार छे."

मू०—"सरिसवया ते भंते ! भक्खेया अभक्खेया ?"। "सुया ! सरिसवया भक्खेया वि

---

१ उपाय करवाथी दूर थाय ते रोग, अने तत्काळ प्राणनो नाश करे ते आतंक कहेवाय छे.

२ जेमा घणा माणसोनी आव जाव न होय ते. ३ जेमां घणा माणसो आवीने क्रीडा करता होय ते. ४ याचना करीने लावे अने पछी जरुर न होय त्यारे अथवा अन्यत्र विहार करे त्यारे जे पाछा आपवामां आवे ते.

अभक्खेया वि ”। “ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि ? ”। “ सुया ! सरिसवया दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—मित्तसरिसवया धन्नसरिसवया य । तत्थ णं जे ते मित्तसरिसवया ते तिविहा पन्नत्ता, तं जहा—सहजायया सहवड्ढियया सहपंसुकीलियया, ते णं समणाणं णिग्गंथाणं अभक्खेया ।

अर्थ—प्रश्न–“ हे भगवान ! तमारे सरिसवया भक्ष्य छे के अभक्ष्य छे ? ” उत्तर–“ हे शुक ! सरिसवया अमारे भक्ष्य पण छे अने अभक्ष्य पण छे. ” प्रश्न–“ हे भगवान ! केवी रीते तमे एम कहो छो के सरिसवया भक्ष्य पण छे अने अभक्ष्य पण छे ? ” उत्तर–“ हे शुक ! सरिसवया बे प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे–मित्ररूप [1]सरिसवया अने धान्यरूप [2]सरिसवया. तेमां जे मित्ररूप सरिसवया छे, ते त्रण प्रकारना कहेला छे, ते आ प्रमाणे–साथे उत्पन्न थयेला (जन्मेला), साथे वृद्धि पामेला अने साथे पांसुक्रीडा करनारा. आ त्रणे प्रकारना मित्ररूप सरिसवया श्रमण निर्ग्रंथ साधुओने अभक्ष्य छे.

मू० तत्थ णं जे ते धन्नसरिसवया ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—सत्थपरिणया य असत्थपरिणया य । तत्थ णं जे ते असत्थपरिणया तं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया । तत्थ णं जे ते

१ सदृश वयवाळा एटले सरखी उमरवाळा मित्र. २ सर्षपा—सरसव नामनुं धान्य.

सत्थपरिणया ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—फासुगा य अफासुगा य। अफासुगा णं सुया ! नो भक्खेया। तत्थ णं जे ते फासुया ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—जातिया य अजातिया य। तत्थ णं जे ते अजातिया ते अभक्खेया। तत्थ णं जे ते जाइया ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—एसणिज्जा य अणेसणिज्जा य। तत्थ णं जे ते अणेसणिज्जा ते णं अभक्खेया। तत्थ णं जे ते एसणिज्जा ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—लद्धा य अलद्धा य। तत्थ णं जे ते अलद्धा ते अभक्खेया। तत्थ णं जे ते लद्धा ते निग्गंथाणं भक्खेया। एएणं अट्ठेणं सुया ! एवं वुच्चति सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि"।

अर्थ—तेमां जे धान्यरूप सरिसवया छे ते बे प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे—शस्त्रथी परिणाम पामेला एटले अग्नि आदिकथी अचित्त करवानो प्रयत्न कर्यो होय तेवा अने शस्त्रथी अपरिणित थयेला एटले तेवो प्रयास कर्या विनाना होय ते. तेमां जे शस्त्रथी परिणाम पामेला न होय ते श्रमण निर्ग्रंथ साधुओने अभक्ष्य छे. तेमां जे शस्त्रथी परिणाम पामेला कह्या, ते बे प्रकारना कहेला छे, ते आ प्रमाणे—प्रासुक अने अप्रासुक, तेमां जे अप्रासुक छे ते हे शुक ! साधुओने भक्ष्य नथी. अने तेमां जे प्रासुक छे ते बे प्रकारना कहेला छे, ते आ प्रमाणे—याचना करेला अने नहीं याचना करेला. तेमां जे याचना

१ गृहस्थ पासे मागेला.

करेला नथी, ते साधुओने अभक्ष्य छे अने जे याचना करेला छे, ते बे प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे-एषणीय[1] अने अनेषणीय[2]. तेमां जे अनेषणीय छे. ते साधुओने अभक्ष्य छे. अने जे एषणीय छे, ते बे प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे-लब्ध[3] अने अलब्ध[4]. तेमां जे अलब्ध छे ते अभक्ष्य छे. अने जे लब्ध छे, ते निर्ग्रंथ साधुओने भक्ष्य छे--खावा योग्य छे. आ कारणने लीधे हे शुक ! अमे एम कहीए छीए के सरिसवया भक्ष्य पण छे, अने अभक्ष्य पण छे. "

मू०--एवं कुलत्था वि भाणियव्वा। नवरि इमं णाणत्तं--इत्थिकुलत्था य धन्नकुलत्था य। इत्थिकुलत्था तिविहा पन्नत्ता, तं जहा--कुलवधुया य कुलमाउया य कुलधूया य। धन्नकुलत्था तहेव।

अर्थ---ए ज प्रमाणे एटले जेम सरिसवय संबंधी प्रश्न अने उत्तर कह्या ते ज प्रमाणे कुलत्था पण कहेवा एटले कुलत्थाना संबंधमां पण प्रश्न अने उत्तर कहेवा. तेमां विशेष आ प्रमाणे जाणवो.-कुलत्था बे प्रकारना छे-स्त्रीरूप[5] कुलत्था अने धान्यरूप[6] कुलत्था. तेमां स्त्रीरूप कुलत्था एटले कुलीन स्त्री त्रण प्रकारे कही छे, ते आ प्रमाणे-कुळवधू, कुळमाता अने कुळपुत्री ते अभक्ष्य छे, विगेरे पूर्ववत् जाणवुं. धान्यरूप कुलत्था भक्ष्य पण छे अने अभक्ष्य पण छे ए विगेरे सर्व पूर्ववत् जाणवुं.

---

१ बेंतालीश दोष रहित होय ते. २ कोइपण दोष सहित होय ते. ३ याचना करवाथी मळेला--प्राप्त थयेला. ४ याचना करतां नहीं मळेला--गृहस्थे नहीं आपेला. ५ उच्च कुळमां उत्पन्न थयेली अने रहेली. ६ कळथी नामनुं धान्य.

मू०—एवं मासा वि। नवरि इमं नाणत्तं—मासा तिविहा पन्नत्ता, तं जहा—कालमासा य अत्थमासा य धन्नमासा य। तत्थ णं जे ते कालमासा ते णं दुवालसविहा पन्नत्ता, तं जहा—सावणे जाव आसाढे, ते णं अभक्खेया। अत्थमासा दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—हिरन्नमासा य सुवण्णमासा य, ते णं अभक्खेया। धन्नमासा तहेव।

अर्थ—ए ज प्रमाणे मास संबंधी पण प्रश्नोत्तर जाणवा तेमां विशेष आ प्रमाणे छे—मासा त्रण प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे—काळरूप मासा[1], अर्थरूप (द्रव्यरूप) मासा[2] अने धान्यरूप मासा[3]. तेमां जे आ काळरूप मास छे ते बार प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे—श्रावण, यावत् अषाढ एटले श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पोष, माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, जेठ अने अषाढ. ते आ मास अभक्ष्य छे. अर्थरूप मासा बे प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे—हिरण्यना मासा अने सुवर्णना मासा ते पण अभक्ष्य छे. हवे त्रीजा धान्यरूप मासा छे ते भक्ष्य पण छे अने अभक्ष्य पण छे इत्यादि पूर्ववत् जाणवुं.

मू०—"एगे भवं? दुवे भवं? अणेगे भवं? अक्खए भवं? अव्वए भवं? अवट्ठिए भवं? अणेगभूयभावभविए वि भवं?"।

१ महिना. २ तोल विशेष मासो. ३ माष अडद नामनुं धान्य.

अर्थ—प्रश्न-" हे भगवान ! तमे एक छो ? तमे बे छो ? तमे अनेक छो ? तमे अक्षय छो ? तमे अव्यय छो ? तमे अवस्थित छो ? के तमे अनेक भूत, भाव अने भावीवाळा छो ? "

आ प्रश्नो पूछवानी शुक परिव्राजकनी मतलब (हेतु) आ प्रमाणे छे-' तमे एक छो ? एम पूछवानुं तात्पर्य ए छे के-जो सूरि महाराज आत्मानुं एकत्व अंगीकार करशे तो श्रोत्रादिक इंद्रियोनां ज्ञान अने शरीरना अवयवो घणा होवाथी आत्मानुं अनेकपणुं सिद्ध करीने आचार्यना एकत्वपक्षनुं हुं खंडन करीश. बीजो पक्ष एटले आत्मानुं बेपणुं स्वीकारशे तो ' अहं ' एटले ' हुं ' एवो शब्द बोलवाथी एकपणानो ज भास थाय छे, माटे एकत्वने द्वित्वनी साथे विरोध आवे छे एम कही हुं तेना द्वित्व पक्षनुं खंडन करीश. तथा जो कदाच आत्मा अक्षय एटले क्षय रहित, अव्यय एटले नाश के फेरफार रहित अने अवस्थित एटले स्थिर रहे एवो आत्मानो नित्यत्व पक्ष स्वीकारशे, अथवा तो अनेक आत्माओ भूत-थइ गया, भाव-सत्तामां छे (वर्तमानकाळे छे) अने भावी एटले थशे एवो आत्मानो अनित्यत्व पक्ष स्वीकारशे, तो हुं आ बेमांथी एकनो स्वीकार करेथी बीजा पक्षने आश्री तेना पक्षनुं खंडन करीश.

आ सर्व प्रश्ननुं रहस्य जाणीने सूरि महाराज समग्र दोप रहित एवा स्याद्वादनो आश्रय करी अनुक्रमे सर्व प्रश्नना उत्तर आपे छे.—

मू०—" सुया ! एगे वि अहं, दुवे वि अहं, जाव अणेगभूयभावभविए वि अहं "। " से केणट्ठेणं भंते ! एगे वि अहं जाव ? "।

अर्थ—उत्तर–" हे शुक ! हुं एक पण छुं, हुं बे पण छुं, यावत् हुं अनेक भूत, वर्तमान अने भावीवाळो पण छुं."

प्रश्न–" हे भगवान ! क्या अर्थवडे एटले केवी रीते ' हुं एक पण छुं, हुं बे पण छुं, यावत् हुं अनेक भूत, वर्तमान अने भावीवाळो पण छुं. एवुं तमारुं मानवुं घटी शके ? "

मू०–सुया ! दव्वट्ठयाए एगे अहं, नाणदंसणट्ठयाए दुवे वि अहं, पएसट्ठयाए अक्खए वि अहं अव्वए वि अहं अवट्ठिए वि अहं, उवओगट्ठयाए अणेगभूयभावभविए वि अहं " ।

अर्थ—उत्तर–" हे शुक ! द्रव्यार्थपणाए करीने हुं एक छुं, केमके द्रव्यपणे जीवद्रव्य एक ज छे. परंतु प्रदेशार्थपणे मारा ' श्रोत्रादिक ज्ञान अने अवयवो विगेरे कहेवाथी ' आत्माना अनेकपणानो भास थाय छे तो पण तेमां विरोध आवतो नथी. तथा ज्ञान अने दर्शन अर्थपणाए करीने हुं बे पण छुं. केमके कोइ पण स्वभावने आश्रीने कोइ पदार्थ एक ज होय तो पण तेना बीजा स्वभावने आश्रीने तेने बे कहेवामां विरोध आवतो नथी. तेथी ज्ञान अने दर्शन ए बे स्वभावने आश्री आत्मानुं द्वित्व पण सिद्ध थाय छे. तथा वळी प्रदेशार्थपणाए करीने हुं अक्षय पण छुं, हुं अव्यय पण छुं अने अवस्थित पण हुं छुं. केमके आत्माना प्रदेशो असंख्याता छे, तेमनो कदापि सर्वथा क्षय थतो ज नथी, तेमांना

१ जेम देवदत्त नामनो पुरुष एक ज पदार्थ छे. तो पण एक ज काळे ते भिन्न भिन्न अपेक्षाए पिता, भ्राता, पुत्र, काको, मामो विगेरे थइ शके छे.

केटलाक प्रदेशोनो जरा पण व्यय एटले नाश के फेरफार थतो नथी, तेथी ते अवस्थित एटले स्थिर-नित्य छे. एटले के आत्मानुं असंख्यात प्रदेशपणुं कदापि नाश पामतुं नथी तेथी ते नित्य छे. तथा वळी उपयोगार्थपणाए करीने अनेक भूत, वर्तमान अने भावीवाळो पण हुं छुं, एटले के विविध वस्तुना विषयवाळा घणा उपयोगोने आश्रीने अनेक भूत, वर्तमान अने भावी पण हुं छुं. अतीतकाळ अने अनागतकाळ संबंधी अनेक विषयोनुं ज्ञान आत्माने होय छे, ते ज्ञानोनुं आत्मा साथे कथंचित् अभेदपणुं होवाथी ते आत्मानां ज्ञानोनो उत्पाद अने विगम थवाथी अनित्य पक्ष पण दोषवाळो नथी."

मू०—एत्थ णं से सुए संबुद्धे थावच्चापुत्ते वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी— " इच्छामि णं भंते ! तुब्भे अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामित्तए "। धम्मकहा भाणियव्वा ।

अर्थ—आ प्रमाणे सांभळी ते शुक परिव्राजके प्रतिबोध पामी थावच्चापुत्र अनगारने वंदना करी, नमस्कार कर्या. वांदी नमस्कार करी आ प्रमाणे कह्युं-" हे भगवान ! हुं तमारी पासे केवळीभाषित धर्मने सांभळवा इच्छुं छुं. " त्यारे सूरिए तेने धर्म कह्यो. अहीं धर्मकथा कहेवी.

मू०—तए णं से सुए परिव्वायए थावच्चापुत्तस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म एवं वदासी— " इच्छामि णं भंते ! परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए "। अहासुहं देवाणुप्पिया ! जाव उत्तरपुरच्छिमे दिसीभागे तिडंडयं जाव धाउरत्ताओ

य एगंते एडेति, एडित्ता सयमेव सिहं उप्पाडेति, उप्पाडित्ता जेणेव थावच्चापुत्ते० मुंडे भवित्ता जाव पव्वतिए, सामाइयमातियाइं चोद्दसपुव्वातिं अहिज्जति । तते णं थावच्चापुत्ते सुयस्स अणगारसहस्सं सीसत्ताए वियरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते शुक परिव्राजक थावच्चापुत्रनी पासे धर्म सांभळी हृदयमां धारी आ प्रमाणे बोल्या के-"हे भगवान ! हजार परिव्राजको साथे परिवरेलो हुं देवानुप्रिय एवा तमारी पासे मुंडित थइ प्रव्रज्या लेवाने इच्छुं छुं." भगवान बोल्या-"हे देवानुप्रिय ! जेम सुख उपजे तेम करो-तमारी इच्छा प्रमाणे करो." ते सांभळी यावत् उत्तरपूर्व (ईशान) दिशामां जइ ते शुके त्रिदंडने यावत् गेरुना रंगेला वस्त्रने एकांतमां उतारी मूक्या, मूकीने पोतानी जाते ज मस्तकउपरनी शिखा उखेडी नांखी, उखेडीने ज्यां थावच्चापुत्र हता त्यां आव्या, आवीने तेमनी पासे मुंडित थइ यावत् प्रव्रज्या ग्रहण करी. पछी सामायिकथी आरंभी यावत् चौद पूर्व सुधी तेणे अभ्यास कर्यो. त्यारपछी थावच्चापुत्रे ते शुक अनगारने ते हजार परिव्राजक साधुओ शिष्यपणे आप्या.

मू०—तते णं थावच्चापुत्ते सोगंधियाओ नयरीओ नीलासोयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरति । तते णं से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे जेणेव पुंडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुंडरीयं पव्वयं सणियं सणियं दुरूहति,

दुरूहित्ता मेघघणसन्निगासं देवसन्निवायं पुढविसिलापट्टयं जाव पाओवगमणं समणुवन्ने ।

अर्थ—त्यारपछी ते थावच्चापुत्र अनगार सौगंधिका नगरीथी अने नीलाशोक नामना उद्यानथी नीकळ्या. नीकळीने बहार जनपदविहार एटले जुदा जुदा देशमां विहार करवा लाग्या. त्यारपछी ते थावच्चापुत्र अणगार (अंतसमय नजीक जाणीने) हजार साधुओनी साथे परिवर्या सता ज्यां पुंडरीक (शत्रुंजय) पर्वत हतो त्यां आव्या, आवीने ते पुंडरीक पर्वत पर धीमे धीमे चढ्या, चडीने मेघना समूह जेवा अत्यंत श्याम अने ज्यां देवोनुं आगमन थतुं हतुं एवा पृथ्वीशिलापट्ट उपर आरूढ थइ यावत् पादपोपगम नामनुं अनशन ग्रहण कर्युं.

मू०—तते णं से थावच्चापुत्ते बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए सर्ट्ठि भत्तातिं अणसणाए जाव केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडेत्ता ततो पच्छा सिद्धे जाव पहीणे ॥५५॥

अर्थ—त्यारपछी ते थावच्चापुत्र घणा वर्षो सुधी चारित्रना पर्यायने पाळी एक मासनी संलेखना वडे साठ भक्तना (एक मासना) अनशनवडे यावत् केवळज्ञान अने केवळदर्शन उत्पन्न करी त्यारपछी सिद्ध थया यावत् सर्व दुःखथी मुक्त थया.

मू०—तते णं से सुए अन्नया कयाइं जेणेव सेलगपुरे नगरे जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव समोसरिए। परिसा निग्गया, सेलओ निग्गच्छति। धम्मं सोच्चा जं णवरं "देवाणुप्पिया! पंथगपामोक्खातिं पंच मंतिसयातिं आपुच्छामि, मंडुयं च कुमारं रज्जे ठावेमि, ततो पच्छा देवाणुप्पियाणं

अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वयामि "। "अहासुहं देवाणुप्पिया !"।

अर्थ—त्यारपछी ते शुक अनगार एकदा कदाचित् ज्यां सेलकपुर नगर हतुं अने ज्यां सुभूमिभाग नामनुं उद्यान हतुं, त्यां समवसर्या—आव्या. तेमने वांदवा माटे नगरमांथी पर्षदा नीकळी, सेलक राजा पण नीकळ्यो. धर्म सांभळीने ते प्रतिबोध पाम्यो. विशेषमां तेणे शुक अनगारने कह्युं के—"हे देवानुप्रिय ! पंथक विगेरे मारा पांच सो मंत्रीओने हुं पूछुं—रजा मागुं अने मंडुक कुमारने राज्यपर स्थापन करुं. त्यारपछी देवानुप्रिय एवा आपनी पासे मुंडित थइने गृहवास थकी नीकळी अनगारपणानी प्रव्रज्या ग्रहण करीश." ते सांभळी शुक अनगार बोल्या के—"हे देवानुप्रिय ! जेम सुख उपजे तेम करो—तमारी इच्छा प्रमाणे करो."

मू०—तते णं से सेलए राया सेलगपुरं नयरं अणुपविसति, अणुपविसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणं सन्निसन्ने।

अर्थ—त्यारपछी ते सेलक राजाए सेलकपुर नगरमां प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने ज्यां पोतानुं घर (राजमहेल) हतुं अने ज्यां पोतानी बहारनी उपस्थानशाला (राजसभानुं स्थान) हती, त्यां आव्या, आवीने सिंहासन उपर बेठा.

मू०—तते णं से सेलए राया पंथयपामोक्खे पंच मंतिसए सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वदासी— "एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए सुयस्स अंतिए धम्मे निसंते, से वि य धम्मे मए इच्छिए पडि-

च्छिए अभिरुतिए, अहं णं देवाणुप्पिया ! संसारभयउव्विग्गे जाव पव्वयामि, तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! किं करेह ? किं वसेह ? किं वा ते हियं इच्छियं सामत्थे ?"।

अर्थ—त्यारपछी ते सेलक राजाए पंथक विगेरे पोताना पांच सो मंत्रीओने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—"निश्चे हे देवानुप्रियो ! में (आजे) शुक अनगारनी समीपे धर्म सांभळ्यो छे, ते धर्म में इच्छयो छे, विशेषे करीने इच्छयो छे, मने ते धर्म रुच्यो छे. तेथी हे देवानुप्रियो ! हुं संसारना भयथी उद्वेग पाम्यो छुं, माटे यावत् प्रव्रज्या लेवा इच्छुं छुं तो हे देवानुप्रियो ! तमे शुं करशो ? क्यां रहेशो ? अने तमारुं हित तथा इच्छित शुं छे ?"

मू०—तते णं तं पंथयपामोक्खा सेलगं रायं एवं वदासी—"जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संसार० जाव पव्वयह, अम्हाणं देवाणुप्पिया ! किमन्ने आहारे वा आलंबे वा ! अम्हे वि य णं देवाणुप्पिया ! संसारभयउव्विग्गा जाव पव्वयामो, जहा देवाणुप्पिया ! अम्हं बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य जाव तहा णं पव्वतियाण वि समाणाणं बहुसु जाव चक्खुभूते"।

अर्थ—त्यारपछी ते पंथक विगेरे मंत्रीओ सेलक राजाने आ प्रमाणे कहेवा लाग्या के—"हे देवानुप्रिय ! जो तमे संसारना भयथी उद्वेग पाम्या छो, यावत् प्रव्रज्या ग्रहण करवा इच्छो छो, तो हे देवानुप्रिय ! अमारो बीजो कोण आधार के

अवलंबन छे ? तो पछी हे देवानुप्रिय ! अमे पण संसारना भयथी उद्वेग पाम्या छीए तेथी अमे पण (तमारी साथे) यावत् प्रव्रज्या ग्रहण करशुं, हे देवानुप्रिय ! जेम अहीं संसारमां घणा कार्योमां अने कारणोमां यावत् अमे मंत्रीरूप छीए तेम प्रव्रज्या ग्रहण कर्या सता तमारा घणा कार्योने विषे अमे चक्षुरूप (मार्गदर्शक) थइशुं. "

मू०—तते णं से सेलगे पंथगपामोक्खे पंच मंतिसए एवं वदासी—"जति णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे संसार जाव पव्वयह, तं गच्छह णं देवाणुप्पिया सएसु सएसु कुडुंबेसु जेट्ठे पुत्ते कुडुंबमज्झे ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा समाणा मम अंतियं पाउब्भवह" त्ति। तहेव पाउब्भवंति।

अर्थ—त्यारपछी ते सेलक राजाए पंथक विगेरे पांचसो मंत्रीओने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रियो ! जो तमे संसारना भयथी उद्वेग पामी यावत् मारी साथे प्रव्रज्या ग्रहण करवा इच्छता हो तो हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ, अने पोतपोताना कुटुंबने विषे पोतपोताना मोटा पुत्रोने कुटुंबना मध्यमां स्थापन करी (तेना पर गृहभार मुकी) हजार पुरुषोए वहन कराती शिबिकाओ उपर आरूढ थया सता मारी समीपे प्रगट थाओ (आवो). " ते सांभळी तेओ ते प्रमाणे करी ते प्रमाणे प्रगट थया. (शिबिकामां बेसी त्यां आव्या).

मू०—तते णं से सेलए राया पंच मंतिसयाइं पाउब्भवमाणाति पासति, पासित्ता हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—" खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मंडुयस्स कुमारस्स

महत्थं जाव रायाभिसेयं उवट्ठवेह० ” अभिसिंचाति जाव राया जाए, जाव विहराति ।

अर्थ—त्यारपछी ते सेलक राजाए पांचसो मंत्रीओने पोतानी पासे प्रगट थयेला जोया, जोइने हृष्ट तुष्ट थइ कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं–“शीघ्रपणे हे देवानुप्रियो ! मंडुक कुमारने माटे मोटा मूल्यवाळा (मोटा खर्चे थाय तेवा) यावत् राज्याभिषेकने तैयार करो.” तेओए ते प्रमाणे कर्युं, यावत् सेलक राजाए मंडुक कुमारने राज्याभिषेक कर्यो, एटले ते राजा थयो, यावत् सुखे विचरवा लाग्यो.

मू०—तते णं से सेलए मंडुयं रायं आपुच्छइ । तते णं से मंडुए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वदासी—“ खिप्पामेव सेलगपुरं नगरं आसित्त जाव गंधवट्टिभूतं करेह य कारवेह य, करित्ता कारवित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ” ।

अर्थ—त्यारपछी ते सेलक राजाए मंडुक राजानी पासे दीक्षा लेवानी रजा मागी. त्यारे ते मंडुक राजाए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं–“ हे देवानुप्रियो ! शीघ्रपणे सेलकपुर नगरने साफ करी जळ छांटी यावत् सुगंधनी वाटरूप करो अने करावो. ते प्रमाणे करी करावीने मारी आ आज्ञा पाछी आपो–ते प्रमाणे कर्याना खबर आपो.” ते सांभळी तेओए ते प्रमाणे कर्युं.

मू०—तते णं से मंडुए दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वदासी—“ खिप्पामेव

सेलगस्स रन्नो महत्थं जाव निक्खमणाभिसेयं" जहेव मेहस्स तहेव, णवरं पउमावती देवी अग्गकेसे पडिच्छति, सव्वे वि पडिग्गहं गहाय सीयं दुरूहंति, अवसेसं तहेव, जाव सामातियमातियातिं एक्कारस अंगाइं अहिज्जाति, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ जाव विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते मंडुक राजाए बीजीवार कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रियो ! शीघ्रपणे सेलक राजाने माटे मोटा मूल्यवाळा (मोटे खर्चे थाय तेवा) यावत् दीक्षाना अभिषेकने तैयार करो." जे प्रमाणे मेघकुमारना अधिकारमां कह्युं हतुं ते ज प्रमाणे अहीं सर्व कहेवुं. विशेष ए के पद्मावती देवीए तेना अग्रकेश ग्रहण कर्या, सर्वे दीक्षा लेवावाळा प्रतिग्रह—पात्रां विगेरे ग्रहण करी शिबिकापर आरूढ थया. शेष अधिकार प्रथमनी जेम जाणवो. यावत् शेलकराजर्षि दीक्षा लइने सामायिक आदि अग्यार अंगने भण्या, भणीने घणा उपवास विगेरे तपवडे यावत् आत्माने भावता सता विचरवा लाग्या.

मू०—तए णं से सुए सेलयस्स अणगारस्स ताइं पंथयपामोक्खातिं पंच अणगारसयाइं सीसत्ताए वियरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते शुक अणगारे सेलक अनगारने ते पंथक विगेरे पांच सो साधु शिष्यपणे आप्या.

मू०—तते णं से सुए अन्नया कयाइं सेलगपुराओ नगराओ सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ पडि-

निक्खमति पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहराति ।

अर्थ—त्यारपछी ते शुक अनगार एकदा कदाचित् सेलकपुर नगरथी अने सुभूमिभाग नागना उद्यानथी बहार नीकळ्या, नीकळीने बहार जनपद विहार प्रत्ये विचरवा लाग्या. (जुदा जुदा देशमां विहार करवा लाग्या).

मू०—तते णं से सुए अणगारे अन्नया कयाइं तेणं अणगारसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं विहरमाणे जेणेव पोंडरीए पव्वए जाव सिद्धे ॥ ५६ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते शुक अनगार एकदा कदाचित् ते पोताना एक हजार अनगारनी साथे परिवर्या सता अनुक्रमे विहार करता एक गामथी बीजे गाम विहार करता (अंत समय नजीक जाणीने) ज्यां पुंडरीक (शत्रुंजय) पर्वत हतो त्यां आव्या, (आवीने एक मासनुं अनशन कर्युं. केवळज्ञान पाम्या) विगेरे पूर्ववत् जाणवुं, यावत् सिद्ध थया. ५६.

मू०—तते णं तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स तेहिं अंतेहि य पंतेहि य तुच्छेहि य लूहेहि य अरसेहि य विरसेहि य सीएहि य उण्हेहि य कालातिक्कंतेहि य पमाणाइक्कंतेहि य णिच्चं पाणभोयणेहि य पयइसुकुमालयस्स सुहोचियस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूता उज्जला जाव दुरहियासा, कंडुयदाहपित्तज्जरपरिगयसरीरे यावि विहराति । तते णं से सेलए तेणं रोगायंकेण सुक्के जाए यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते सेलक राजर्षिने तेवा प्रकारना अंत (वाल चणा विगेरे), प्रांत (पर्युषित–ठंडा अथवा खातां वधेला), तुच्छ (अल्प–थोडा), रुच (लूखा), अरस (हिंगादिकथी संस्कार नहीं करेला), विरस (ठंडा थवाथी रस–स्वाद रहित थयेला), शीतळ, उष्ण, कालातिक्रांत (क्षुधातृषाना काळने वीती गयेला), अने प्रमाणातिक्रांत (क्षुधा तृषाना प्रमाणने अयोग्य–अधिक अथवा अल्प) एवा निरंतर पान भोजन मळवावडे प्रकृतिथी ज कोमळ अने सुखने उचित एवा ते राजर्षिना शरीरने विषे उज्वळ–उत्कट यावत् दुःखे करीने सहन थइ शके तेवी वेदना प्रगट थइ, अने तेनुं शरीर कंडू (खरज) अने दाह उत्पन्न करे तेवा पित्तज्वरवडे व्याप्त थयुं, एवी रीते व्याधि सहित ते विचरवा लाग्या. त्यारपछी ते सेलक राजर्षि ते रोगातंकवडे शुष्क थया सता रह्या.

मू०—तते णं सेलए अन्नया कदाइं पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव विहरइ । परिसा निग्गया, मंडुओ वि निग्गओ, सेलयं अणगारं जाव वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता पज्जुवासति ।

अर्थ—त्यारपछी ते सेलक राजर्षि एकदा कदाचित् अनुक्रमे विहार करता यावत् ज्यां सुभूमिभाग नामनुं उद्यान हतुं त्यां आवीने रह्या. तेमने वंदन करवा माटे पर्षदा नगरमांथी नीकळी, मंडुक राजा पण नीकळ्यो. यावत् सेलक अनगारने वंदना करी, नमस्कार कर्या, वंदन नमस्कार करीने यावत् सेववा लाग्यो.

मू०—तते णं से मंडुए राया सेलयस्स अणगारस्स सरीरयं सुक्कं भुक्कं जाव सव्वाबाहं सरोगं पासति, पासित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते मंडुक राजाए ते सेलक अनगारनुं शरीर शुष्क, निस्तेज यावत् सर्व प्रकारनी पीडावाळुं अने रोगवाळुं जोयुं, जोइने तेणे आ प्रमाणे कह्युं—

मू०—" अहं णं भंते ! तुब्भं अहापवित्तेहिं तिगिच्छिएहिं अहापवित्तेणं ओसहभेसज्जेणं भत्त-पाणेणं तिगिच्छं आउंटावेमि । तुब्भे णं भंते ! मम जाणसालासु समोसरह, फासुअं एसणिज्जं पीढफलगसेज्जासंथारगं ओगिण्हित्ताणं विहरह " ।

अर्थ—" हे भगवान ! हुं तमारी साधुने योग्य एवा चिकित्सको (वैद्यो) पासे साधुने योग्य एवा औषध, भैषज्य तथा भक्तपानवडे चिकित्सा (दवा) कराबुं. तेथी तमे हे भगवान ! मारी यानशाळामां पधारो. त्यां प्रासुक अने एषणीय पीठ, फलक, शय्या अने संथाराने ग्रहण करी विचरो-रहो. "

मू०—तते णं से सेलए अणगारे मंडुयस्स रन्नो एयमट्ठं तह त्ति पडिसुणेति । तते णं से

१ औषध एटले चूर्ण अने भैषज्य एटले पथ्य. अथवा औषध एटले एक वस्तुनी दवा अने भैषज्य एटले घणी वस्तुनी दवा.

मंडुए सेलयं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूते तामेव दिसिं पडिगए।

अर्थ—त्यारपछी ते सेलक अनगारे मंडुक राजाना आ अर्थ (विज्ञप्ति) ने ' तह त्ति '–' ठीक, बहु सारुं ' एम कही अंगीकार कर्यो. त्यारपछी ते मंडुक राजाए सेलक अनगारने वांद्या, नमस्कार कर्या, वांदीने नमस्कार करीने ते जे दिशामां प्रगट थयो हतो–जे दिशामांथी आव्यो हतो, ते दिशामां पाछो गयो.

मू०—तते णं से सेलए कल्लं जाव जलंते सभंडमत्तोवगरणमायाय पंथयपामोक्खेहिं पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं सेलगपुरमणुपविसति, अणुपविसित्ता जेणेव मंडुयस्स जाणसाला तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता फासुयं पीढ जाव विहरति।

अर्थ—त्यारपछी ते सेलक अनगारे काले (बीजे दिवसे) यावत् सूर्य जाज्वल्यमान थयो (उग्यो) त्यारे वर्षाकाळने योग्य एवा पोताना भांडमात्र (पात्र) तथा उपकरण–वस्त्रादिक उपधिने ग्रहण करी पंथक विगेरे पांच सो अनगार सहित सेलकपुरमां प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने ज्यां मंडुक राजानी यानशाळा हती, त्यां आव्या, आवीने प्रासुक अने एषणीय पीठ, फलक विगेरे ग्रहण करी यावत् विचरवा लाग्या–रह्या.

मू०—तते णं से मंडुए राया चिगिच्छए सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी–" तुब्भे णं देवा-

णुप्पिया ! सेलयस्स फासुयएसणिज्जेणं जाव तेगिच्छं आउट्टेह "।

अर्थ—त्यारपछी ते मंडुक राजाए चिकित्सको (वैद्यो) ने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं-"हे देवानुप्रियो ! तमे सेलक राजर्षिने प्रासुक अने एपणीय औषधादिकवडे यावत् चिकित्सा करो."

मू०—तते णं तेगिच्छया मंडुएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणा हट्ठ तुट्ठा सेलयस्स रायरिसिस्स अहापवित्तेहिं ओसहभेसज्जभत्तपाणेहिं तेगिच्छं आउट्टेंति । मज्जपाणयं च से उवदिसंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते चिकित्सको (वैद्यो) मंडुक राजाए आ प्रमाणे कह्या सता हृष्ट तुष्ट थइ सेलक राजर्षिने साधुने योग्य एवा औषध, भैषज्य, भोजन अने पानवडे चिकित्सा (दवा) करवा लाग्या, अने मद्यपान करवानुं कह्युं.

मू०—तते णं तस्स सेलयस्स अहापवित्तेहिं जाव मज्जपाणेण रोगायंके उवसंते होत्था, हट्ठे जाव बलियसरीरे जाते ववगयरोगायंके ।

अर्थ—त्यारपछी ते सेलक राजर्षिनो रोगातंक साधुने योग्य एवा औषधादिकवडे यावत् मद्यपानवडे उपशांत थयो. तेथी ते हृष्टपुष्ट यावत् शरीरे बळवान थया अने तेनो रोगातंक नाश पाम्यो.

मू०—तते णं से सेलए तंसि रोयायंकंसि उवसंतंसि समाणंसि तंसि विपुलंसि असणपाणखा-

दिमसादिमंसि मज्जपाणए य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववन्ने ओसन्नो ओसन्नविहारी एवं पासत्थे पासत्थविहारी कुसीले कुसीलविहारी पमत्ते पमत्तविहारी संसत्ते संसत्तविहारी उउबद्धपीढफलगसेज्जासंथारए पमत्ते यावि विहराति । नो संचाएति फासुयं एसणिज्जं पीढं पच्चप्पिणित्ता मंडुयं च रायं आपुच्छित्ता बहिया जणवयविहारं विहरित्तए ॥ ५७ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते सेलक राजर्षि ते पोतानो रोगातंक उपशांत थये सते पण ते विपुल एवा अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने विषे तथा मद्यपानने विषे मूर्छित–मूर्छावाळा, ग्रथिल–घेला, गृद्ध–लोभी अने तद्रूप अध्यवसायवाळा थया तेथी ते ओसन्न (अवसन्न) थया एटले के विवक्षित क्रिया अनुष्ठानमां आळसु थया अर्थात् छ आवश्यक, स्वाध्याय, प्रत्युपेक्षणा अने ध्यानादिक सम्यक् प्रकारे करता नहीं. आवा प्रकारना ओसन्न तो एक वार अयोग्य करवाथी अल्प काळ सुधी पण होय छे तेथी ओसन्नविहारी ए पद कह्युं एटले के वारंवार घणा दिवस सुधी ओसन्ननी जेवा विहारवाळा एटले स्थितिवाळा थया. तथा पासत्था एटले ज्ञानदर्शनादिकनी समीपे रहेनारा थया (एटले ज्ञानदर्शनादिने बाजुपर मूकी राखनारा थया). अने वारंवार घणा दिवस तेवा थवाथी पासत्थविहारी थया, तथा कुशील थया एटले काल, विनय विगेरे

१ गाढ मांदगी विगेरेना कारण विना शय्यातरनो तथा अभ्याहृतादिक दोषवाळो आहार करे ते पासत्था कहेवाय छे.

ज्ञान, दर्शन अने चारित्रना आचारोना विराधक थया, अने वारंवार घणा दिवस तेवा थवाथी कुशीलविहारी थया. तथा प्रमत्त एटले पांच प्रकारना प्रमादवाळा थया, अने वारंवार घणा दिवस तेवा थवाथी प्रमत्तविहारी थया, तथा संसक्त एटले कदाचित् संविग्नना गुणवाळा अने कोइ वखत पासत्थादिकना दोषवाळा अने त्रण गारवमां आसक्त थया, अने वारंवार तेम करवाथी संसक्तविहारी थया. ऋतुबद्ध (शेष) काळने विषे पण शय्या संस्तारकने माटे पीठफलकने राखनारा थइ प्रमादी रहेवा लाग्या. तथा प्रासुक अने एषणीय पीठफलकादिकने पाछा सोंपी मंडुक राजानी रजा लइ बहार यावत् जनपदने विषे विहारवडे विचरवा समर्थ न थया. ५७.

मू०—तते णं तेसिं पंथयवज्जाणं पंचण्हं अणगारसयाणं अन्नया कयाइं एगयओ सहियाणं जाव पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणाणं अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था--" एवं खलु सेलए रायरिसी चइत्ता रज्जं जाव पव्वतिए, विपुले णं असणपाणखादिमसादिमे मज्जपाणए मुच्छिए, नो संचाएति जाव विहरित्तए, नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया ! समणाणं जाव पमत्ताणं विहरित्तए। तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं कल्लं सेलयं रायरिसिं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढफलगसेज्जासंथारगं पच्चप्पिणित्ता सेलगस्स अणगारस्स पंथयं अणगारं वे-

यावच्चकरं ठवेत्ता बहिया अब्भुज्जएणं जाव विहरित्तए"। एवं संपेहेंति, संपेहित्ता कल्लं जेणेव सेलए आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढफलगसेज्जासंथारगं पच्चप्पिणंति, पच्चप्पिणित्ता पंथयं अणगारं वेयावच्चकरं ठावेंति, ठावित्ता बहिया जाव विहरंति ॥

अर्थ—त्यारपछी एक पंथक विना ते पांचसो(४९९) अनगार एकदा कदाचित् एक ठेकाणे एकत्र थया. यावत् मध्य रात्रिने समये धर्मजागरिकाए जागता तेमने आवा प्रकारनो अध्यवसाय (विचार) यावत् उत्पन्न थयो के–"आ प्रमाणे निश्चे सेलक राजर्षिए राज्यनो त्याग करी यावत् प्रव्रज्या ग्रहण करी छे. परंतु हमणां विपुल एवा अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने विषे तथा मद्यपानने विषे ते मूर्छित थया छे, यावत् जनपद विहारवडे विहार करवाने शक्तिमान नथी. तो हे देवानुप्रियो! साधुओने प्रमत्तादिकपणे विचरवुं न कल्पे. तेथी हे देवानुप्रियो! आपणे काले सेलक राजर्षिनी रजा लइ प्रातिहारिक[1] पीठ, फलक, शय्या संस्तारकने पाछा सोंपी सेलक राजर्षिनी वैयावच्च करवा माटे पंथक अनगारने स्थापन करी (अहीं राखी) बहार जनपदने विषे अभ्युद्यत (उद्यम सहित) विहार करवो ते श्रेयकारक छे." आ प्रमाणे तेओए विचार कर्यो, विचार करीने काले (बीजे दिवसे) प्रातःकाळे ज्यां सेलक राजर्षि हता त्यां आवी तेमनी रजा लइ प्रातिहारिक पीठफलकादिक पाछा सोंप्या, पाछा सोंपीने पंथक नामना अनगारने वैयावच्च करवा माटे तेमनी पासे राख्या,

१ मागी लीधेली वस्तु के जे पाछी सोंपवी पडे ते.

राखीने तेओए बहार जनपद विहारवडे यावत् विहार कर्यो. ५८.

मू०—तते णं से पंथए सेलयस्स सेज्जासंथारउच्चारपासवणखेलसंघाणमत्तओसहभेसज्जभत्तपाणएणं अगिलाए विणएणं वेयावडियं करेइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते पंथक मुनि सेलक अनगारनी शय्या, संस्तारक, ठल्ला, मात्रा, खेल[1]–संघाण[2]नी कुंडी, औषध, भैषज्य, भात, पाणी विगेरेवडे ग्लानि रहितपणे विनयपूर्वक वैयावच्च करवा लाग्या.

मू०—तते णं से सेलए अन्नया कयाइं कत्तियचाउम्मासियंसि विपुलं असणपाणखादिमसादिमं आहारमाहारिए सुबहुं मज्जपाणयं पीए पुव्वावरण्हकालसमयंसि सुहप्पसुत्ते ।

अर्थ—त्यारपछी ते सेलक राजर्षि एकदा कदाचित् कार्तिक चातुर्मासिकने दिवसे विपुल एवा अशन, पान, खादिम अने स्वादिमरूप आहारनो आहार करीने तथा अति घणुं मद्यपान करीने सायंकाळे सुखे सुता हता.

मू०—तते णं से पंथए कत्तियचाउम्मासियंसि कयकाउस्सग्गे देवसियं पडिक्कमणं पडिक्कंते चाउम्मासियं पडिक्कमिउंकामे सेलयं रायरिसिं खामणट्ठयाए सीसेणं पाएसु संघट्टेइ ।

१ श्लेष्म. २ नाकनो मळ.

अर्थ—ते वखते ते पंथक मुनिए कार्तिक चातुर्मासीने दिवसे कायोत्सर्ग करी देवसी (दिवस संबंधी) प्रतिक्रमण करी चातुर्मासिक प्रतिक्रमण करवानी इच्छाथी सेलक राजर्षिने खमाववा माटे पोताना मस्तकवडे तेमना पादनो संघर्ष–स्पर्श कर्यो.

मू०—तते णं सेलए पंथएणं सीसेणं पाएसु संघट्टिए समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे उट्ठेति, उट्ठित्ता एवं वदासी—" से केस णं भो ! एस अपत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए जे णं ममं सुहपसुत्तं पाएसु संघट्टेति ?" ।

अर्थ—त्यारे ते सेलक राजर्षि पंथक नामना शिष्ये तेना पगने मस्तकवडे स्पर्श करे सते तत्काळ रोष पामी यावत् क्रोधवडे धमधमता उठ्या–जागृत थया, उठीने आ प्रमाणे बोल्या–" अरे ! ते कोण आ अप्रार्थित (मृत्यु) नी प्रार्थना करनार (इच्छा करनार) यावत् लज्जा रहित छे के जेणे सुखे सुतेला मारा पगनो स्पर्श कर्यो ? "

मू०—तते णं से पंथए सेलएणं एवं वुत्ते समाणे भीए तत्थे तसिए करयल० कट्टु एवं वदासी—" अहं णं भंते ! पंथए कयकाउस्सग्गे देवसियं पडिक्कमणं पडिक्कंते चाउम्मासियं पडिक्कंते चाउम्मासियं खामेमाणे देवाणुप्पियं वंदमाणे सीसेणं पाएसु संघट्टेमि । तं खमंतु णं देवाणु-

प्पिया ! खमतुं मेऽवराहं, तुमं णं देवाणुप्पिया ! णाइभुज्जो एवं करणयाए " त्ति कट्टु सेलयं अणगारं एतमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते पंथक मुनि सेलक राजर्षिए उपर प्रमाणे कहे सते भय पाम्या, त्रास पाम्या अने खेद पाम्या, तथा बे हाथ जोडी आ प्रमाणे बोल्या के-" हे भगवान ! हुं पंथक छुं. में कायोत्सर्ग पूर्वक देवसी प्रतिक्रमण कर्युं छे, तथा चातुर्मासिक प्रतिक्रमण करुं छुं. तेथी चातुर्मासिक खामणा देवा माटे देवानुप्रिय एवा आपने वांदतां मारा मस्तकवडे आपना पगनो में स्पर्श कर्यो छे, ते आप क्षमा करो. हे देवानुप्रिय ! मारा अपराधने तमे खमो. हे देवानुप्रिय ! फरीथी आ प्रमाणे करवा माटे हुं नहीं प्रवर्तु. (नहीं करुं.) " आ प्रमाणे कही सेलक अनगारनी पासे आ अर्थ (अपराध) ने सम्यक् प्रकारे विनयवडे वारंवार ते पंथक मुनि खमाववा लाग्या.

मू-तते णं तस्स सेलयस्स रायरिसिस्स पंथएणं एवं वुत्तस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था-" एवं खलु अहं रज्जं च जाव ओसन्नो जाव उउबद्धपीढ० विहरामि, तं नो खलु कप्पति समणाणं णिग्गंथाणं पासत्थाणं जाव विहरित्तए । तं सेयं खलु मे कल्लं मंडुयं रायं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढफलगसेज्जासंथारयं पच्चप्पिणित्ता पंथएणं अणगारेणं सद्धिं बहिया अब्भुज्जएणं

जाव जणवयविहारेणं विहरित्तए " । एवं संपेहेति संपेहित्ता कल्लं जाव विहराति ॥ ५९ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते सेलक राजर्षिने पंथक मुनिए उपर प्रमाणे कह्युं त्यारे तेना मनमां आवा प्रकारनो अध्यवसाय (विचार) यावत् उत्पन्न थयो—" आ प्रमाणे निश्चे हुं राज्य विगेरेनो यावत् त्याग करी यावत् ओसन्न विगेरे यावत् थइने ऋतुबद्ध (शेष) काळने विषे पण पीठ फलक राखीने यावत् विचरुं छुं—रहुं छुं. श्रमण निर्ग्रंथोने पासत्थानी जेम यावत् विचरवुं कल्पे नहीं—योग्य नथी. तेथी करीने मारे काले मंडुक राजानी रजा लइने प्रातिहारिक पीठ, फलक, शय्या, संस्तारक विगेरेने पाछा सोंपी पंथक अनगारनी साथे बहार जनपदने विषे अभ्युद्यत (उद्यमवाळा) विहारवडे विचरवुं ए ज श्रेय—कल्याणकारक छे. " आ प्रमाणे तेणे विचार कर्यो, विचार करीने काले बीजे (दिवसे) यावत् ते प्रमाणे करी त्यांथी विहार कर्यो. ५६.

मू०—एवामेव समणाउसो ! जाव निग्गंथो वा निग्गंथी वा ओसन्ने जाव संथारए पमत्ते विहरति, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं हीलणिज्जे, संसारो भाणियव्वो ।

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे आयुष्मान श्रमणो ! यावत् कोइ पण साधु के साध्वी ओसन्न विगेरे थइ यावत् संस्तारकादिकने विषे प्रमादी थइ विचरे छे—रहे छे, ते आ लोकने विषे ज घणा साधुओ, घणी साध्वीओ, घणा श्रावको अने

घणी श्राविकाओने हीलना विगेरे करवा लायक थाय छे, यावत् ते चिरकाळ सुधी संसारमां भ्रमण करे छे. एम संसार कहेवो.

मू०—तते णं ते पंथगवज्जा पंच अणगारसया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी—

अर्थ—त्यारपछी पंथक विनाना ते पांच सो मुनिओए आ वृत्तांतनो अर्थ जाण्यो, त्यारे तेओए एकबीजाने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं.

मू०—" सेलए रायरिसी पंथएणं बहिया जाव विहरति, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं सेलयं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए "। एवं संपेहेंति, संपेहित्ता सेलयं रायरिसिं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति ॥ ६० ॥

अर्थ—" सेलक राजर्षि पंथक मुनिनी साथे बहार यावत् विचरे छे, तो हे देवानुप्रियो ! हवे आपणे सेलकसूरिनी पासे जइ तेमनी आज्ञा प्रमाणे विचरवुं ए श्रेय-कल्याणकारक छे." आ प्रमाणे तेमणे विचार कर्यो; विचार करीने तेओ सेलक राजर्षि पासे जइ विचरवा लाग्या-तेमनी साथे रह्या. ६०.

मू०—तते णं ते सेलयपामोक्खा पंच अणगारसया बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता जेणेव पोंडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता जहेव थावच्चापुत्ते तहेव सिद्धा ।

अर्थ—त्यारपछी ते सेलक विगेरे पांच सो मुनिओ घणा वर्षो सुधी चारित्र पर्यायने पाळी ज्यां पुंडरीक (शत्रुंजय) पर्वत हतो, त्यां आव्या, आवीने जेम थावच्चापुत्र तेम ते सर्व (अनशन करीने) सिद्धिपदने पाम्या.

मू०—एवामेव समणाउसो ! जो निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव विहरिस्सति, एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं पंचमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति बेमि ॥ ६१॥

। पंचमं नायज्झयणं समत्तं । ५ ।

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे आयुष्मान श्रमणो ! जे कोइ साधु के साध्वी यावत् प्रमाद रहितपणे विचरशे, ते आ लोकमां पण पूज्य थइ अंते मोक्षपद पामशे. आ प्रमाणे हे जंबू ! श्रमण भगवान महावीर स्वामीए पांचमा ज्ञाताध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे, एम (तेमना कहेवा प्रमाणे) हुं कहुं छुं. ६१.

आ अध्ययननुं तात्पर्य ए छे जे—कदाच प्रथम संयमनी क्रियाना अनुष्ठानमां शिथिल थइने जो पछीथी पण संवेग रंगथी पाछा चारित्रमां उद्यमवान थाय, तो ते पण सेलक राजर्षिनी जेम आराधक थाय छे.

इति पांचमुं ज्ञाताध्ययन. ५.

—❀—

छट्ठुं तुंबक नामनुं अध्ययन.

अर्थ—पांचमा अध्ययनमां प्रमादीने अनर्थ अने अप्रमादीने अर्थ कह्यो. हवे आ छट्ठा अध्ययनमां पण ते ज संबंधमां विशेष कहे छे.—

मू०–" जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं पंचमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, छट्ठस्स णं भंते ! णायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? "

अर्थ—जंबू स्वामी सुधर्मा स्वामीने पूछे छे–" हे भगवान ! जो श्रमण भगवान यावत् मोक्ष सुखने पामेला महावीर स्वामीए पांचमा ज्ञाताध्ययननो आ उपर कह्यो ते अर्थ कह्यो छे, तो हे भगवान् ! छट्ठा ज्ञाताध्ययननो कयो अर्थ श्रमण यावत् मोक्ष सुखने पामेला महावीर भगवाने कह्यो छे ? "

मू०–एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे णामं नगरे होत्था। तत्थ णं रायगिहे णगरे सेणिए नामं राया होत्था। तस्स णं रायगिहस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थ णं गुणसिलए नामं चेइए होत्था "।

अर्थ—सुधर्मास्वामी जवाब आपे छे–आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये राजगृह नामनुं नगर हतुं. ते राजगृह नगरमां श्रेणिक नामना राजा हता. ते राजगृह नगरनी बहार उत्तरपूर्व (ईशान) दिशामां गुणशील नामनुं एक चैत्य (उद्यान) हतुं.

मू०–ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव रायगिहे णयरे जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव समोसढे । अहापडिरूवं उग्गहं गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । परिसा निग्गया, सेणिओ वि निग्गओ, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया ।

अर्थ—ते काळे ते समये श्रमण भगवान महावीर स्वामी अनुक्रमे विहार करता यावत् ज्यां राजगृह नगर हतुं अने ज्यां गुणशील नामनुं चैत्य हतुं त्यां समवसर्या–पधार्या. यथायोग्य–साधुने योग्य एवा अवग्रहने ग्रहण करी संयमवडे अने तपवडे पोताना आत्माने भावता विचरता हता–रह्या हता. ते वखते तेमने वांदवा नगरमांथी पर्षदा नीकळी, श्रेणिक राजा पण नीकळ्या. भगवाने धर्म कह्यो. ते सांभळी पर्षदा पाछी नगरमां गइ.

मू०–ते णं काले णं ते णं समए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे अदूरसामंते जाव सुक्कज्झाणोवगए विहरइ ।

अर्थ—ते काळे ते समये श्रमण भगवान महावीरना मोटा शिष्य इंद्रभूति (गौतम) नामना अनगार अति दूर नहीं तेमज अति नजीक नहीं एवा स्थाने रही यावत् शुक्लध्यानने[1] पाम्या सता विचरता हता–रह्या हता.

मू०—तते णं से इंदभूती जायसड्ढे समणस्स भगवओ महावीरस्स एवं वदासी—" कहं णं भंते ! जीवा गुरुयत्तं वा लहुयत्तं वा हव्वमागच्छंति ? " ।

अर्थ—त्यारपछी जेने श्रद्धा उत्पन्न थइ छे एवा ते इंद्रभूति अनगारे श्रमण भगवान महावीर स्वामीने आ प्रमाणे कह्युं–पूछ्युं के–" हे भगवान ! जीवो केवी रीते गुरुपणाने अथवा लघुपणाने शीघ्रपणे पामे छे ? "

मू०—" गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे एगं महं सुक्कं तुंबं णिच्छिड्डं निरुवहयं दब्भेहिं कुसेहिं वेढेइ, वेढित्ता मट्टियालेवेणं लिंपति, उण्हे दलयइ, दलइत्ता सुक्कं समाणं दोच्चं पि दब्भेहि य कुसेहि य वेढेति, वेढित्ता मट्टियालेवेणं लिंपति, लिंपित्ता उण्हे सुक्कं समाणं तच्चं पि दब्भेहि य कुसेहि य वेढेति, वेढित्ता मट्टियालेवेणं लिंपति । एवं खलु एएणुवाएणं अंतरा वेढेमाणे अंतरा लिंपेमाणे अंतरा सुक्कवेमाणे जाव अट्ठहिं मट्टियालेवेहिं आलिंपति अत्थाहमतारमपोरिसियंसि उद-

१ शुक्लध्यान तो बारमाने अने चौदमाने अंते होय छे. अहीं शुक्ल शब्दे उज्वळध्यान–श्रेष्ठ ध्यान समजवुं.

गांसि पक्खिवेज्जा । से णूणं गोयमा ! से तुंबे तेसिं अट्ठण्हं मट्टियालेवेणं गुरुययाए भारिययाए गुरुयभारिययाए उप्पिं सलिलमतिवइत्ता अहे धरणियलपइट्ठाणे भवति ।

अर्थ—" हे गौतम ! ते यथानामक–अमुक नामवाळो पुरुष एक मोटा, शुष्क, छिद्र रहित अने निरुपहत (अखंडित) तुंबडाने दर्भ अने कुशवडे चोतरफ वींटे, वींटीने माटीना लेपवडे लींपे, पछी तेने तडके मूके, तडके मूकी ते तुंबडुं सुकाइ जाय त्यारे बीजी वार पण तेने दर्भ अने कुशवडे चोतरफ वींटे, वींटीने माटीना लेपवडे लींपे, लींपीने तडके सुकावीने पछी त्रीजी वार पण दर्भ अने कुशवडे तेने वींटे, वींटीने माटीना लेपवडे लींपे, विगेरे. आ प्रमाणे निश्चे आ उपायवडे वच्चे वच्चे वींटीने वच्चे वच्चे लेप करीने अने आंतरे आंतरे तडके सुकवीने यावत् आठ वार माटीना लेपवडे लींपे. पछी ते तुंबडाने अस्ताध–ताग विनाना, अतार–तरी न शकाय एवा अने अपौरुषीय–पुरुष प्रमाण न करी शकाय अर्थात् केटला माथोडा उंडुं छे एम जाणी न शकाय एवा द्रहना पाणीमां नांखे, तो निश्चे हे गौतम ! ते तुंबडुं आठ माटीना लेपवडे गुरु (मोटा) पणाने पाम्युं सतुं, वजनमां पण घणुं भारे थयुं सतुं गुरुपणा तथा भारेपणाने लीधे उपर रहेला जळने ओळंगी नीचे पृथ्वीतळपर प्रतिष्ठानवाळुं–स्थितिवाळुं थाय छे–पृथ्वीतळपर जइ रहे छे.

मू०—एवामेव गोयमा ! जीवा वि पाणातिवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं अणुपुव्वेणं अट्ठकम्म-पगडीओ समज्जिणंति। तासिं गुरुययाए भारिययाए गरुयभारिययाए कालमासे कालं किच्चा धरणि-

यलमतिवतित्ता अहे नरगतलपइट्ठाणा भवंति। एवं खलु गोयमा ! जीवा गुरुयत्तं हव्वमागच्छंति।

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे गौतम ! जीवो पण प्राणातिपातवडे यावत् मिथ्यादर्शनरूप शल्यवडे (अढारे पापस्थानको सेववा वडे) अनुक्रमे आठ कर्मनी प्रकृतिओने उपार्जन करे छे—बांधे छे. ते कर्मप्रकृतिना गुरुपणाए करीने, भारेपणाए करीने अने गुरुपणाना भारवडे करीने मृत्युने समये मरण पामीने आ पृथ्वीतळने ओळंगी नीचे नरकना तळमां प्रतिष्ठान (स्थिति) वाळा थाय छे. आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम ! जीवो शीघ्र गुरुपणाने पामे छे.

मू०—अहण्णं गोतमा ! से तुंबे तंसि पढमिल्लुगंसि मट्टियालेवंसि तिन्नंसि कुहियांसि परिसडियांसि ईसिं धरणियलाओ उप्पतित्ता णं चिट्ठति। ततोऽणंतरं च णं दोच्चं पि मट्टियालेवे जाव उप्पतित्ता णं चिट्ठति। एवं खलु एएणं उवाएणं तेसु अट्ठसु मट्टियालेवेसु तिन्नेसु जाव विमुक्कबंधणे अहे धरणियलमइवइत्ता उप्पिं सलिलतलपइट्ठाणे भवति।

अर्थ—हवे हे गौतम ! ते तुंबडानो ते प्रथमनो (उपरनो) माटीनो लेप विगेरे स्तिमित एटले आर्द्र थाय, कोही जाय अने परिशटित एटले शीर्ण—विशीर्ण थइ जाय, त्यारे ते कांइक पृथ्वीतळ उपरथी उंचुं थइने रहेशे (उंचुं आवशे). त्यारपछी बीजो माटीनो लेप विगेरे यावत् आर्द्र विगेरे थाय त्यारे तेथी वधारे पृथ्वीतळ उपरथी उंचुं थइने रहेशे. ए ज प्रमाणे आ उपायवडे ते आठे माटीना लेप विगेरे आर्द्र थयेथी यावत् बंधन रहित थवाथी नीचेना धरणीतळने ओळंगीने

छेक उपर पाणीने तळीये-जळनी सपाटीपर प्रतिष्ठान (स्थिति) वाळुं थइने रहेशे.

मू०—एवामेव गोयमा ! जीवा पाणातिपातवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं अणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपगडीओ खवेत्ता गगणतलमुप्पइत्ता उप्पिं लोयग्गपतिट्ठाणा भवंति । एवं खलु गोयमा ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति " ।

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे गौतम ! जीवो प्राणातिपातनी विरतिवडे यावत् मिथ्यादर्शनरूप शल्यनी विरतिवडे अनुक्रमे आठ कर्मनी प्रकृतिओने खपावी गगनतळ तरफ उडी उपर लोकाग्रने विषे (सिद्धस्थानमां) प्रतिष्ठान (स्थिति)वाळा थाय छे. ए प्रमाणे हे गौतम ! जीवो शीघ्रपणे लघुपणाने-हळवापणाने पामे छे. "

मू०—एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति बेमि ॥ ६२ ॥

॥ छट्ठं नायज्झयणं समत्तं ॥ ६ ॥

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवान महावीर स्वामीए छट्ठा ज्ञाताध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे. ते प्रमाणे में तमने कह्यो. ६२.

आ अध्ययननुं रहस्य ए छे के—जेम माटीना लेपादिकथी तुंबडुं पाणीमां नीचे तळीये जइने रहे छे, तेम आश्रवथी

बांधेला कर्मना गुरुपणावाळा जीवो अधोगतिने पामे छे. अने जेम ते ज तुंबडुं ते लेपादिकथी मुक्त थतुं जाय त्यारे लघुपणुं पामवाने लीधे जळ उपर आवतुं जाय छे, छेवट तद्दन उपर आवे छे–तरे छे, तेम कर्मथी मुक्त थयेला जीवो उंचे लोकाग्रने विषे जइने रहे छे.

इति छठ्ठुं अध्ययन ६.

अथ सातमुं रोहिणीज्ञात नामनुं अध्ययन

उपरना छठ्ठा अध्ययनमां जीवहिंसादिक करनाराओ कर्मथी भारे थइने अधोगति पामे छे, अने तेथी मुक्त थयेला ऊर्ध्व–सिद्धिगतिने पामे छे एम कह्युं. हवे आ सातमा अध्ययनमां प्राणातिपातविरमणादिक व्रतोने भांगनारा (विराधनारा) अने पाळनारा (आराधनारा) ने माटे अनुक्रमे अशुभ अने शुभ फळ कहे छे.

मू०—" जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, सत्तमस्स णं भंते नायज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ? "

अर्थ—जंबूस्वामी सुधर्मास्वामीने पूछे छे.—" हे भगवन् ! जो श्रमण भगवान यावत् मोक्षने पामेला श्रीमहावीर-

स्वामीए छट्ठा ज्ञाताध्ययननो आ (उपर कह्या प्रमाणे) अर्थ कह्यो छे, तो हे भगवन् ! सातमा ज्ञाताध्ययननो शो अर्थ कह्यो छे ?"

मू०—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे नाम नयरे होत्था । तत्थ णं रायगिहे णयरे सेणिए नामं राया होत्था । तस्स णं रायगिहस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए गुणसेलए (सुभूमिभागे) उज्जाणे होत्था ।

अर्थ—सुधर्मास्वामी उत्तर आपे छे.—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये राजगृह नामनुं नगर हतुं. ते राजगृह नगरमां श्रेणिक नामना राजा हता. ते राजगृह नगरनी बहार उत्तर पूर्व (ईशान) दिशामां गुणशैल नामनुं (पाठांतरे-सुभूमिभाग नामनुं) उद्यान हतुं.

मू०—तत्थ णं रायगिहे नगरे धण्णे नामं सत्थवाहे परिवसति अड्ढे जाव अपरिभूए । तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स भद्दा नामं भारिया होत्था अहीणपंचिंदियसरीरा जाव सुरूवा ।

अर्थ—ते राजगृह नगरमां धन्य नामनो सार्थवाह रहेतो हतो, ते आढ्य एटले समृद्धिवाळो यावत् बीजाथी पराभव न पामे तेवो हतो. ते धन्य सार्थवाहने भद्रा नामनी भार्या हती, तेनी पांचे इंद्रियो अने शरीरना अवयवो परिपूर्ण हता, यावत् ते सारा रूपवाळी हती.

मू०—तस्स णं धन्नस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए भारियाए अत्तया चत्तारि सत्थवाहदारया होत्था, तं जहा—धणपाले, धणदेवे, धणगोवे, धणरक्खिए ।

अर्थ—ते धन्य सार्थवाहना पुत्रो भद्रा नामनी भार्याना [1]आत्मजो चार सार्थवाहपुत्रो हता, ते आ प्रमाणे—धनपाळ, धनदेव, धनगोप अने धनरक्षित.

मू०—तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स चउण्हं पुत्ताणं भारियाओ चत्तारि सुण्हाओ होत्था, तं जहा—उज्झिया, भोगवतिया, रक्खतिया, रोहिणिया ।

अर्थ—ते धन्य सार्थवाहना चारे पुत्रोनी चार भार्याओ—वधूओ हती, ते आ प्रमाणे—उज्झिका, भोगवती, रक्षिका अने रोहिणी.

मू०—तते णं तस्स धण्णस्स सत्थवाहस्स अन्नया कदाइं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्यसार्थवाहने एकदा कदाचित् पूर्व अने पाछली रात्रिने (मध्य रात्रिने) समये आवा प्रकारनो

१ पोताथी उत्पन्न थयेला.

अध्यवसाय यावत् उत्पन्न थयो.

मू०—“ एवं खलु अहं रायगिहे णयरे बहूणं राईसर जाव पभिईणं सयस्स कुडुंबस्स बहूसु कज्जेसु य करणिज्जेसु य कुडुंबेसु य मंतणेसु य गुज्झे रहस्से निच्छए ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे मेढीपमाणे आहारे आलंबणे चक्खुमेढीभूते सव्वकज्जवट्टावए ।

अर्थ—“ आ प्रमाणे निश्चे हुं राजगृह नगरमां घणा राजा, ईश्वर, यावत् तलवर विगेरेना तथा पोताना कुटुंबना घणां कार्योमां, कारणोमां, कुटुंबोमां, विचारमां, गुह्य—छानी वातमां, रहस्य—एकांतमां तात्पर्यवाळी बाबतमां, कोइ बाबतनो निश्चय करवामां अने व्यापारना कार्यमां पूछवालायक, वांरवार पूछवा लायक, मेढी[1]प्रमाण, आधाररूप, आलंबनरूप, चक्षुनी जेम मेढीरूप तथा सर्व कार्यनी प्रवृत्ति करावनार छुं.

मू०—तं ण णज्जइ जं मए गयंसि वा चुयंसि वा मयंति वा भग्गंसि वा लुग्गंसि वा सडियंसि वा पडियंसि वा विदेसत्थंसि वा विप्पवसियंसि वा इमस्स कुडुंबस्स किं मन्ने आहारे वा आलंबे वा पडिबंधे वा भविस्सति ?

---

१ मेढी एटले धान्यना खळानी मध्ये राखेलो स्तंभ, ते वृषभोनो नियामक छे, तेम नियामक.

अर्थ—तो हुं नथी जाणतो के हुं गामादिक प्रत्ये गयो होउं, च्युत—कोइ पण अनाचारवडे पोताना स्थानथी भ्रष्ट थयो होउं, मृत—मरण पाम्यो होउं, भग्न—वायु विगेरेवडे कुबडो लुलो विगेरे थवाथी असमर्थ थयो होउं, रुग्ण—जीर्ण (वृद्ध) थयो होउं, शटित—विशेष प्रकारनी व्याधिवडे विशीर्ण थयो होउं, पतित—प्रासादादिकथी पड्यो होउं अथवा मांदगीने लीधे खाटलामां पड्यो होउं, परदेशमां जइने रह्यो होउं अथवा विप्रोषित—घेरथी नीकळी परदेश जवा प्रवृत्त थयो होउं, त्यारे हुं मानुं छुं के आ मारा कुटुंबनो पृथ्वीनी जेम आधार, दोरडानी जेम अवलंबन अने सावरणीनी सळीयोनी जेम प्रतिबंध करनार (सुलेह—संप जाळवनार) कोण थशे ?

मू०—तं सेयं खलु मम कल्लं जाव जलंते विपुलं असणं पाणं खादिमं सादिमं उवक्खडावेत्ता मित्तणातिणियगसयण० चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गं आमंतेत्ता तं मित्तणाइणियगसयण० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गं विपुलेणं असणपाणखादिमसादिमेणं धूवपुप्फवत्थगंध० जाव सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाति० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरतो चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणट्ठयाए पंच पंच सालिअक्खए दलइत्ता जाणामि ताव का किहं वा सारक्खेइ वा संगोवेइ वा संवड्ढेति वा ?।

अर्थ—तेथी ते ज श्रेय—कल्याणकारक छे के मारे काले यावत् जाज्वल्यमान सूर्यनो उदय थाय त्यारे विपुल एवुं

अशन, पान, खादिम अने स्वादिम ए चतुर्विध आहारने तैयार करावी मित्र, ज्ञाति, निजक अने स्वजन विगेरेने तथा चारे वधूओना कुळगृहना समुदायने आमंत्रण करी ते मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन विगेरेने तथा चारे वधूना कुळगृहना समुदायने ते विपुल एवा अशन, पान, खादिम अने स्वादिम ए चतुर्विध आहारवडे तथा धूप, पुष्प, वस्त्र, गंध विगेरेवडे यावत् सत्कार करी सन्मान करी ते ज मित्र, ज्ञाति विगेरेनी तथा वधूओना कुळगृहना समुदायनी समक्ष चारे वहुओनी परीक्षा करवा माटे तेमने पांच पांच शालिना दाणा आपुं. तेथी हुं जाणी शकीश के कइ वधू केवी रीते तेनुं रक्षण करे छे ? गोपवे छे ? के वृद्धि पमाडे छे ? "

मू०—एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं जाव मित्तणाति० चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गं आमंतेइ, आमंतित्ता विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ।

अर्थ—आ प्रमाणे तेणे विचार कर्यो, विचार करी काले (बीजे दिवसे) यावत् मित्र, ज्ञाति विगेरेने तथा चारे वधूओना कुळगृहना समुदायने आमंत्रण करी विपुल एवुं अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने तैयार कराव्युं.

मू०—ततो पच्छा ण्हाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए मित्तणाति० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गेणं सद्धिं तं विपुलं असणं पाणं खादिमं सादिमं जाव सक्कारेति सम्माणेति, सक्कारित्ता

---

१ कुळगृह—पितृगृह तेनो समुदाय माता, पिता विगेरे. २ नाश थवा न देवो ते रक्षण. ३ संवर करवो—साचवी राखवा ते गोपन.

सम्माणित्ता तस्सेव मित्तणाति० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरतो पंच सालिअक्खए गेण्हति, गेण्हित्ता जेट्ठा सुण्हा उज्झितिया तं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाहे स्नान कर्युं, अने ते भोजनमंडपमां आवीने उत्तम सुखासन (पाटला) पर बेठो, पछी ते मित्र, ज्ञाति विगेरे तथा चारे वहुओना कुळगृहना (पितृगृहना) समुदायनी साथे ते विपुल एवा अशन, पान, खादिम अने स्वादिमनुं भोजन करी यावत् ते सर्वनो सत्कार कर्यो, सन्मान कर्युं, सत्कार करी सन्मान करी ते ज मित्र, ज्ञाति विगेरे तथा चारे वधूओना कुळगृहना वर्गनी समक्ष ते धन्य सार्थवाहे पोताना हाथमां पांच शालिकण ग्रहण कर्या, ग्रहण करीने मोटी वधू जे उज्झिका हती, तेने बोलावी, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—

मू०—" तुमं णं पुत्ता ! मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, गेण्हित्ता अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणी संगोवेमाणी विहराहि । जया णं अहं पुत्ता ! तुमं इमे पंच सालिअक्खए जाएज्जा, तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिदिज्जाएज्जासि " त्ति कट्टु सुण्हाए हत्थे दलयति, दलइत्ता पडिविसज्जेति ।

अर्थ—" हे पुत्री ! तुं मारा हाथमांथी आ पांच शालिना दाणा ग्रहण कर, ग्रहण करीने अनुक्रमे तेनुं रक्षण करती अने सम्यक् प्रकारे गोपन करती विचर–रहे. हे पुत्री ! ज्यारे हुं तारी पासे आ पांच शालिना दाणा मागुं, त्यारे तुं मने आ ज

पांच शालिना दाणा पाछा आपजे." आ प्रमाणे कही तेणे वहुना हाथमां ते दाणा आप्या, आपीने तेने रजा आपी.

मू०—तते णं सा उज्झिया धण्णस्स तह त्ति एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थाओ ते पंच सालिअक्खए गेण्हति, गेण्हित्ता एगंतमवक्कमति, एगंतमवक्कमियाए इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जेत्था—

अर्थ—त्यारपछी ते उज्झिकाए धन्य सार्थवाहना ए अर्थने-आज्ञाने ' तह त्ति '—बहु सारुं एम कही अंगीकार कर्यो, अंगीकार करी धन्य सार्थवाहना हाथथी ते पांच शालिना दाणा ग्रहण कर्या, ग्रहण करीने ते एकांते गइ, एकांतमां गयेली एवी तेने आवा प्रकारनो अध्यवसाय (विचार) यावत् उत्पन्न थयो.—

मू०—" एवं खलु तायाणं कोट्ठागारंसि बहवे पल्ला सालीणं पडिपुण्णा चिट्ठंति, तं जया णं ममं ताओ इमे पंच सालिअक्खए जाएस्सति, तया णं अहं पल्लंतराओ अन्ने पंच सालिअक्खए गहाय दाहामि " त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता ते पंच सालिअक्खए एगंते एडेति, एडित्ता सकम्मसंजुत्ता जाया यावि होत्था !

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे पिताना (ससराना) कोठारमां शालिना भरेला घणा पाला (निरंतर) रहेला होय छे.

तेथी ज्यारे पिता मारी पासे आ पांच शालिना अक्षत मागशे, त्यारे हुं बीजा पालामांथी बीजा पांच शालि–अक्षत लइने आपीश "–आ प्रमाणे तेणीए विचार कर्यो; विचार करीने ते पांच शालि–अक्षतने एकांतमां तजी दीधा, तजी दइने पोताना कार्यमां युक्त थइने रही:–पोतानुं कार्य करवा लागी.

मू०–एवं भोगवतीयाए वि, णवरं सा छोल्लेति, छोल्लित्ता अणुगिलति, अणुगिलित्ता सकम्मसंजुत्ता जाया ।

अर्थ—ए ज प्रमाणे भोगवतीने पण बोलावीने पांच अक्षत आप्या विगेरे सर्व जाणवुं. विशेष ए के तेणीए ते दाणा छोल्या (फोतरां उखेड्यां), छोलीने खाइ गइ, खाइने (ज्यारे मागशे त्यारे बीजा आपवानुं विचारीने) पोताना कार्यमां युक्त थइ.

मू०–एवं रक्खिया वि, नवरं गेण्हति, गेण्हित्ता इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जेत्था–" एवं खलु ममं ताओ इमस्स मित्तनाति० चउण्ह सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरतो सद्दावेत्ता एवं वदासी–' तुमं णं पुत्ता ! मम हत्थाओ जाव पडिदिज्जाएज्जासि ' त्ति कट्टु मम हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयाति, तं भवियव्वमेत्थ कारणेणं " ति कट्टु एवं संपेहेति, संपेहित्ता ते पंच सा-

लिअक्खए सुद्धे वत्थे बंधइ, बंधित्ता रयणकरंडियाए पक्खिवेइ, पक्खिवित्ता ऊसीसामूले ठावेइ, ठावित्ता तिसंझं पडिजागरमाणी विहरइ।

अर्थ— ए ज प्रमाणे रक्षिका पण जाणवी, एटले तेने पण शालिना पांच दाणा ते ज प्रमाणे कहीने आप्या विगेरे पूर्ववत् जाणवुं. विशेष ए के-तेणीए ते पांच दाणा ग्रहण कर्या, ग्रहण करीने तेणीने आवा प्रकारनो अध्यवसाय (विचार) यावत् उत्पन्न थयो के-आ प्रमाणे निश्चे मारा पिताए (ससराए) आ मित्र, ज्ञाति विगेरे तथा चारे वहुओना कुळगृहना वर्गनी समक्ष मने बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं के-' हे पुत्री ! तुं मारा हाथमांथी आ पांच दाणा ग्रहण कर विगेरे यावत् मने पाछा आपजे. ' एम कही मारा हाथमां तेणे पांच शालि अक्षत आप्या छे, तो आ बाबतमां कांइ मोटुं कारण होवुं जोइए. " आ प्रमाणे तेणीए विचार कर्यो, विचार करीने ते पांच शालिना दाणाने शुद्ध वस्त्रने छेडे बांध्या, बांधीने रत्नना दाभडामां नांख्या, नांखीने ओसीकाने मूळे स्थापन कर्या, स्थापन करीने दररोज त्रण संध्याए ते दाणानी संभाळ राखती सती विचरवा लागी-रही.

मू०-तए णं से धण्णे सत्थवाहे तस्सेव मित्त० जाव चउत्थिं रोहिणीयं सुण्हं सद्दावेति, सद्दावित्ता जाव " तं भवियव्वं एत्थ कारणेणं, तं सेयं खलु मम एए पंच सालिअक्खए सारक्खमाणीए संगोवेमाणीए संवड्ढेमाणीए " त्ति कट्टु एवं संपेहेति, संपेहित्ता कुलघरपुरिसे सद्दावेति,

सद्दावित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाहे ते ज मित्रादिकनी समक्ष यावत् चोथी रोहिणी नामनी वहुने बोलावी, बोलावीने पांच दाणा आप्या विगेरे सर्व पूर्ववत् जाणवुं. यावत् तेणे विचार्युं के—"आ बाबतमां कांइ कारण होवुं जोइए, तेथी करीने मारे आ पांच शालि अक्षतने रक्षण करवा, सम्यक् प्रकारे गोपववा अने वृद्धि पमाडवा, ए श्रेय–कल्याणकारक छे." एम तेणीए विचार कर्यो, विचार करीने तेणीए पोताना कुळगृहना (पीयरना) पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—"तुब्भे णं देवाणुप्पिया। एते पंच सालिअक्खए गेण्हह, गेण्हित्ता पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि समाणंसि खुड्डागं केयारं सुपरिकम्मियं करेह, करित्ता इमे पंच सालिअक्खए वावेह, वावित्ता दोच्चं पि तच्चं पि उक्खयनिक्खए करेह, करित्ता वाडिपक्खेवं करेह, करित्ता सारक्खेमाणा संगोवेमाणा अणुपुव्वेणं संवड्ढेह।"

अर्थ—"हे देवानुप्रियो! तमे आ पांच शालि अक्षतने ग्रहण करो, ग्रहण करीने पहेली वर्षाऋतुमां (वर्षा ऋतुना प्रारंभमां) महा वृष्टिकाय पडते सते–महावृष्टि थाय त्यारे एक नाना क्याराने परिकर्मित एटले तृण घास रहित करी साफ करो, करीने आ पांच शालिअक्षतने वावो, वावीने बीजी वार त्रीजी वार उत्क्षेप निक्षेप करो एटले उखेडीने अन्यत्र

नांखवुं-रोपवुं करो, करीने ते क्यारानी चोतरफ वाडनो प्रक्षेप करो, करीने रक्षण करता अने गोपवता सता अनुक्रमे तेने वृद्धि पमाडो. "

मू०-तते णं ते कोडुंबिया रोहिणीए एतमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता ते पंच सालिअक्खए गेण्हंति, गेण्हित्ता अणुपुव्वेणं संरक्खंति संगोवंति विहरंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषोए रोहिणीना ए अर्थने अंगीकार कर्यो, अंगीकार करीने ते पांच शालिअक्षत ग्रहण कर्या, ग्रहण करीने अनुक्रमे रक्षण करता अने गोपवता विचरवा लाग्या-रह्या.

मू०-तए णं ते कोडुंबिया पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि णिवइयंसि समाणंसि खुड्डायं केदारं सुपरिकम्मियं करेंति, करित्ता ते पंच सालिअक्खए ववंति, ववित्ता दोच्चं पि तच्चं पि उक्खयनिहए करेंति, करित्ता वाडिपरिक्खेवं करेंति, करित्ता अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणा संगोवेमाणा संवड्ढेमाणा विहरंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषोए पहेला वर्षा ऋतुमां (वर्षा ऋतुना प्रारंभमां) महा वृष्टिकाय पडते सते-घणो वरसाद वरसते सते एक नानो क्यारो सारी रीते परिकर्मित-तृण घास काढी नांखी साफ कर्यो, करीने तेमां ते पांच शालिअक्षत वाव्या, वावीने बीजी वार त्रीजी वार उखेडी अन्य ठेकाणे रोपवुं कर्युं, करीने तेनी फरती वाडनो परिक्षेप

कर्यो, करीने अनुक्रमे रक्षण करता, गोपवता अने वृद्धि पमाडता रह्या.

मू०—तते णं ते सालीअक्खए अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्डिज्जमाणा साली जाया किण्हा किण्होभासा जाव निउरंबभूया पासादीया दंसणीया, अभिरूवा, पडिरूवा।

अर्थ—त्यारपछी ते शालि अनुक्रमे रक्षण कराता, गोपवाता अने वृद्धि पमाडाता सता शालिरूप थया, ते कृष्ण (श्याम) अने कृष्ण कांतिवाळा विगेरे यावत् निकुरंबभूत—समुदायरूप थइ प्रसन्न करनारा थया, जोवा लायक थया, अभिरूप थया अने प्रतिरूप थया.

मू०—तते णं ते साली पत्तिया वत्तिया (तइया) गब्भिया पसूया आगयगंधा खीराइया बद्धफला पक्का परियागया सल्लइया पत्तइया हरियपव्वकंडा जाया यावि होत्था।

अर्थ—त्यारपछी ते शालि पत्रित—पत्रवाळा थया, वर्तित—व्रीहिनां पांदडां मध्यनी शलाका फरता होवाथी नाळरूपे वृत्त—गोळ होय छे अथवा तेनी शाखा विगेरे सम होवाथी ते वर्तित कहेवाय छे. अथवा त्वचित एटले छालवाळा थया, गर्भित—डोडकीवाळा थया, प्रसूत—पत्रना गर्भमांथी दाणा बहार नीकळ्या, आगतगंध—सुगंधवाळा थया, चीरकित—दूधवाळा थया, बद्धफल—दूधना परिणामे दाणा बंधाय छे तेथी बंधायेला फळवाळा थया, पक्व—ते दाणारूप फळ पक्व थया एटले कठण थया, पर्यायगत—पर्यायने पाम्या एटले सर्वथा तैयार थया, शल्यकित—पांदडां सुकाइ जवाथी शलाकारूप थया,

पत्रकित–झीणां पांदडांवाळा थया, तथा हरितपर्वकांड–तेना नाळ नीलवर्णवाळा थया, एवी रीते ते शालि उत्पन्न थया.

मू०–तते णं ते कोडुंबिया ते सालीए पत्तिए जाव सल्लइए पत्तइए जाणित्ता तिक्खेहिं णवपज्जणएहिं असियएहिं लुणेंति, लुणित्ता करयलमलिते करेंति, करित्ता पुणंति, तत्थ णं चोक्खाणं सूयाणं अखंडाणं अफोडियाणं छड्डछड्डापूयाणं सालीणं मागहए पत्थए जाए ।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषोए ते शालि पत्रवाळा यावत् शलाकावाळा अने झीणां पांदडांवाळा थयेला जाणीने तीक्ष्ण अने नवुं पानुं चडावेला एटले पाणी पायेला दातरडांवडे तेने लण्यां, लणीने (कापीने) तेनुं बे हाथना तळमां मसळवुं कर्युं, करीने (मसळीने) तेने उपण्यां, तेथी ते चोख्खा–निर्मळ, शुचि–पवित्र (उज्वळ), अखंड–आखा, अस्फोटित–फाट्या विनाना अने छडी छडीने, एटले सुपडावडे झाटकी झाटकीने पूत–शुद्ध करेला ते शालि मगध देशमां वपराता एक प्रस्थक प्रमाण थया.

अहीं प्रस्थकनुं माप आ प्रमाणे जाणवुं–" बे असलीनी एक पसली, बे पसलीनी एक सेतिका (शेर), चार सेतिकानो एक कुडव अने चार कुडवनो एक प्रस्थक जाणवो. "

मू०–तते णं ते कोडुंबिया ते साली नवएसु घडएसु पक्खिवंति, पक्खिवित्ता उपलिंपंति, उपलिंपित्ता लंछियमुद्दिते करेंति, करित्ता कोट्ठागारस्स एगदेसंसि ठावेंति, ठावित्ता सारक्खेमाणा

संगोवेमाणा विहरंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषोए ते (अस्थ प्रमाण) शालि नवा घडामां नांख्या, नाखीने तेना मुखपर माटीनो लेप कर्यो, लेप करीने लांछित मुद्रित एटले घडाना मुखने मुद्रावडे लांछित–चिन्हवाळुं कर्युं, करीने ते घडा कोठारना एक भागमां स्थापन कर्या, स्थापन करी तेने रक्षण करता अने गोपवता विचरवा लाग्या–रह्या.

मू०—तते णं ते कोडुंबिया दोच्चम्मि वासारत्तंसि पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि खुड्डागं केयारं सुपरिकम्मियं करेंति, करित्ता ते सालि ववंति, दोच्चं पि तच्चं पि उक्खयणिहए जाव लुणेंति जाव चलणतलमलिए करेंति, करित्ता पुणंति, तत्थ णं सालीणं बहवे कुडए जाए, जाव एगदेसंसि ठावेंति, ठावित्ता सारक्खेमाणा संगोवेमाणा विहरंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषोए बीजी वर्षा ऋतुमां वर्षाऋतुना प्रारंभमां महावृष्टिकाय पडते सते लघु (प्रथमकरतां मोटा) क्याराने सारी रीते परिकर्मित–तृण घास दूर करीने साफ कर्यो, करीने तेमां ते शालि वाव्या. तेने बीजीवार त्रीजीवार उखेडी अन्य स्थाने निक्षेप करी–नांखी यावत् दातरडांवडे लण्या–काप्या, यावत् पगना तळवडे तेनुं मसळवुं कर्युं, करीने पुण्या, तेमां सालिना घणा कुडव थया, यावत् तेने कोठारना एक भागमां स्थापन कर्या, स्थापन करी तेने रक्षण करता अने गोपवता–रह्या.

मू०—तते णं ते कोडुंबिया तच्चंसि वासारत्तंसि महावुट्ठिकायंसि बहवे केदारे सुपरिकम्मिए करेंति, जाव लुणेंति, लुणित्ता संवहंति, संवहित्ता खलयं करेंति, करित्ता मलेंति, जाव बहवे कुंभा जाया ।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषोए त्रीजी वर्षाऋतु आवी त्यारे वर्षाऋतुना प्रारंभमां महा वृष्टिकाळ पडते सते घणा क्याराओने सारी रीते परिकर्मित कर्या, यावत् तेने लण्या—काप्या, लणीने भारा बांधीने वहन कर्या, वहन करी खळुं कर्युं (खळामां नांख्या), खळुं करी तेमां मसळ्या; यावत् घणा कुंभा शालि थया.

मू०—तते णं ते कोडुंबिया साली कोट्ठागारंसि पक्खिवंति, जाव विहरंति । चउत्थे वासारत्ते बहवे कुंभसया जाया ।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषो ते सालिने कोठारमां नांखी यावत् विचरवा लाग्या. पछी चोथुं चोमासुं आव्युं त्यारे यावत् घणा सो कुंभा प्रमाण शालि थया.

मू०—तते णं तस्स धण्णस्स पंचमयंसि संवच्छरंसि परिणममाणंसि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाहने पांचमुं वर्ष परिणमते सते–जते सते मध्य रात्रिने समये आवा प्रकारनो अध्यवसाय यावत् उत्पन्न थयो.

मु०–" एवं खलु मम इओ अतीते पंचमे संवच्छरे चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणट्ठयाए ते पंच सालिअक्खता हत्थे दिन्ना, तं सेयं खलु मम कल्लं जाव जलंते पंच सालिअक्खए परिजाइत्तए, जाव जाणामि ताव काए किहं सारक्खिया वा संगोविया वा संवड्ढिया ? " जाव त्ति कट्टु एवं संपेहेति, संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गं जाव सम्माणित्ता तस्सेव मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ जेट्ठं उज्झियं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—

अर्थ—"आ प्रमाणे निश्चे में आजथी गया पांचमे वर्षे चार वहुओनी परीक्षाने माटे ते पांच शालि अक्षत तेमना हाथमां आप्या हता. तेथी हवे निश्चे मारे काले यावत् सूर्य जाज्वल्यमान थये सते (उगे सते) ते पांच शालि अक्षत मागवा ते श्रेय–कल्याण कारक (योग्य) छे. यावत् हुं जाणुं के प्रथम कइ वहुए केवी रीते ते शालि अक्षतने रक्षण कर्या छे, गोपव्या छे, के वृद्धि पमाड्या छे ? " यावत् ए प्रमाणे तेणे विचार कर्यो, विचार करीने काले (बीजे दिवसे) यावत् सूर्य जाज्वल्यमान थये सते विपुल एवा अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने तैयार करावी मित्र, ज्ञाति विगेरे तथा चार वहु-

ओना कुळगृहना वर्गने आमंत्रण करी (जमाडी) यावत् तेमनुं सन्मान करी ते ज मित्र ज्ञाति विगेरे तथा चार वहुओना कुळगृहना वर्गनी समक्ष मोटी वहु उज्झिकाने बोलावी, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—

मू०—" एवं खलु अहं पुत्ता ! इतो अतीते पंचमंसि संवच्छरंसि इमस्स मित्तणाइ० चउण्ह सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरतो तव हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयामि, जया णं अहं पुत्ता ! एए पंच सालिअक्खए जाएज्जा तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिदिज्जाएसि त्ति कट्टु तं हत्थंसि दलयामि, से नूणं पुणा ! अट्ठे समट्ठे ?" " हंता अत्थि "। " तं णं पुत्ता ! मम ते सालिअक्खए पडिनिज्जाएहि "।

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे हे पुत्री ! में आजथी गया पांचमा वर्ष उपर आ मित्र, ज्ञाति विगेरे अने चार वहुओना कुळगृह वर्गनी समक्ष तारा हाथमां पांच शालि अक्षत आप्या हता, अने हे पुत्रि ! ज्यारे हुं ते पांच शालि अक्षतने मागुं, त्यारे तारे मने ए पांच शालि अक्षत पाछा आपवा एम कह्युं हतुं, तो ते अर्थ (वात) हे पुत्री ! सत्य छे ? " तेणीए कह्युं–" हा जी, सत्य छे " सार्थवाहे कह्युं–" तो हे पुत्री ! ते पांच शालि अक्षत मने पाछा आप. "

मू–तते णं सा उज्झितिया एयमट्ठं धण्णस्स पडिसुणेति, पडिसुणित्ता जेणेव कोट्ठागारं तेणेव

उवागच्छति, उवागच्छित्ता पल्लातो पंच सालिअक्खए गेण्हति, गेण्हित्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता धण्णं सत्थवाहं एवं वदासी—"एए णं ते पंच सालिअक्खए" त्ति कट्टु धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थंसि ते पंच सालिअक्खए दलयति ।

अर्थ—त्यारपछी ते उज्झिकाए धन्य सार्थवाहनी ते वात अंगीकार करी, अंगीकार करीने ज्यां कोठार हतो त्यां गइ, जइने पालामांथी पांच शालि अक्षतने ग्रहण कर्या, ग्रहण करीने ज्यां धन्य सार्थवाह बेठा हता, त्यां आवी, आवीने धन्य सार्थवाहने तेणीए आ प्रमाणे कह्युं—"आ ते पांच शालिना दाणा छे." एम करी (कही) ने धन्य सार्थवाहना हाथमां ते पांच शालिकण आप्या.

मू०—तते णं धण्णे सत्थवाहे उज्झियं सवथसावियं करेति, करित्ता एवं वयासी—"किं णं पुत्ता ! एए चेव पंच सालिअक्खए उदाहु अन्ने ?"।

अर्थ—त्यारपछी धन्य सार्थवाहे उज्झिकाने सोगन आप्या, सोगन आपीने आ प्रमाणे कह्युं—"हे पुत्री ! शुं आ ते ज पांच शालिना दाणा छे के बीजा छे ?"

मू०—तते णं उज्झिया धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी—"एवं खलु तुब्भे तातो ! इओ अतीते

पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्तणाइ० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स जाव विहराहि। तते णं अहं तुब्भं एतमट्ठं पडिसुणेमि, पडिसुणित्ता ते पंच सालिअक्खए गेण्हामि एगंतमवक्कमामि। तते णं मम इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु तायाणं कोट्ठागारंसि० सकम्मसंजुत्ता, तं णो खलु ताओ! ते चेव पंच सालिअक्खए एए णं अन्ने"।

अर्थ—त्यारपछी ते उज्झिकाए धन्य सार्थवाहने आ प्रमाणे कह्युं के—"आ प्रमाणे निश्चे हे तात! आजथी गया पांचमे वर्षे आ मित्र, ज्ञाति विगेरे तथा चार वहुओना कुलगृहना वर्गनी समक्ष पांच दाणा आपीने यावत् रक्षण विगेरे करती विचरजे एम तमे मने कह्युं हतुं. त्यारे में ते तमारी आज्ञानो अंगीकार कर्यो, अंगीकार करीने ते पांच शालिना दाणाने ग्रहण कर्या, ग्रहण करीने हुं एकांतमां गइ, त्यां मने आवा प्रकारनो अध्यवसाय यावत् उत्पन्न थयो के—'आ प्रमाणे निश्चे तातना कोठारमां घणा शालि छे, तेमांथी मागशे त्यारे आपीश.' इत्यादि विचारी ते दाणाने नांखी दइ हुं पोताना कार्यमां तत्पर थइ, तेथी हे तात! ते ज आ शालि अक्षत नथी, आ तो बीजा छे."

मू०—तते णं से धण्णे उज्झियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे उज्झितियं तस्स मित्तनाति० चउण्ह सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ तस्स कुलघरस्स

झारुज्झियं च छाणुज्झियं च कयवरुज्झियं च समुच्छियं च सम्मज्जिअं च पाउवदाइं च ण्हाणोवदाइं च बाहिरपेसणकारिं ठवेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाह उज्झिकानी पासेथी आ अर्थ सांभळीने हृदयमां धारीने तत्काळ क्रोध पाम्यो, यावत् क्रोधवडे धमधमता ते धन्ये ते मित्र, ज्ञाति विगेरे तथा ते चार वहुओना कुलघरना वर्गनी समक्ष ते उज्झिकाने ते (पोताना) कुलगृहनी राख नांखी देनारी, छाण नांखी देनारी (अथवा थापनारी), कचरो काढी नांखनारी, समुच्छिका—प्रातःकाळे घरना आंगणामां जळने छांटनारी, संमार्जिका—घरनी अंदर अने बहार सावरणी लइ वासीदुं वाळनारी, पग धोवानुं पाणी आपनारी, स्नान करवानुं पाणी आपनारी तथा बहारना प्रेष्य कार्यने करनारी एटले दास-दासीना जेवुं कार्य करनारी तरीके तेणीने स्थापन करी.

मू०—एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वतिते पंच य से महव्वयातिं उज्झियाइं भवंति, से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं हीलणिज्जे जाव अणुपरियट्टइस्सइ, जहा सा उज्झिया ।

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे आयुष्मान श्रमणो ! जे अमारा साधु के साध्वी यावत् प्रव्रज्या लइने ते पांच (दाणारूप पांच) महाव्रतोने त्याग करनारा थाय छे, ते आ भवमां ज घणा साधुओ, घणी साध्वीओ, घणा श्रावको अने घणी

घणी श्राविकाओने हीलना करवा लायक थाय छे, यावत् अनंत संसारमां पर्यटन करनारा थाय छे. जेम ते उज्झिका थइ तेम.

मू०—एवं भोगवइया वि। नवरं तस्स कुलघरस्स कंडिंतियं च कोट्टंतियं च पीसंतियं च एवं रुच्चंतियं च रंधंतियं च परिवेसंतियं च परिभायंतियं च अब्भितरियं च पेसणकारिं महाणसिणिं ठवेइ।

अर्थ—एज प्रमाणे भोगवती संबंधी पण प्रश्न उत्तर जाणवा. विशेष ए के—(ते दाणा खाइ गयेली तेथी बीजा लावीने आप्या एटले तेने) पोताना कुलगृहमां खारणीयामां खांडनारी, कूटनारी–तल विगेरेनुं चूर्ण करनारी, पीसनारी—घउं विगेरेने घंटीमां दळनारी, रुंधयंतिका–व्रीही, कोदरां विगेरेने फोतरां रहित करवा माटे भरडनारी, रंधयंतिका–भात विगेरे रांधनारी, पीरसनारी, परिभाजयंतिका—दीवाळी विगेरे पर्वमां स्वजनोने घेर खांड, खाजां विगेरेनी लहेणी आपवा जनारी, घरनी अंदरना कार्यमां प्रेष्य (दास दासी) नुं काम करनारी तथा महानासिकी–रांधवानी क्रिया करनार तरीके स्थापन करी.

मू०—एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं समणो वा समणी वा पंच य से महव्वयाइं फोडियाइं भवंति, से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं जाव हीलणिज्जे, जहा व सा भोगवतिया।

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे आयुष्मान श्रमणो ! जे अमारा साधु के साध्वी छे, जेना पांच महाव्रतो फुटेला होय एटले

रसनाना स्वादमां लंपट थइ महाव्रतोनो विनाश करनारा होय, तो ते आ भवमां ज घणा साधुओ, घणी साध्वीओ, घणा श्रावको अने घणी श्राविकाओने हीलना करवा लायक थाय छे यावत् परलोकमां अनंत संसार भमे छे. जेम ते भोगवती तेम.

मू०—एवं रक्खितिया वि । नवरं जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मंजूसं विहाडेइ, विहाडित्ता रयणकरंडगाओ ते पंच सालिअक्खए गेण्हति, गेण्हित्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंच सालि अक्खए धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थे दलयति ।

अर्थ—ए ज प्रमाणे रक्षिकाना संबंधमां पण प्रश्नोत्तर जाणवा. विशेष ए के—ज्यारे पांच शालिकण माग्या त्यारे ते ज्यां पोतानुं वासगृह हतुं, त्यां गइ, जइने पेटी उघाडी, उघाडीने रत्नना दाभडामांथी ते पांच शालिना दाणा ग्रहण कर्या, ग्रहण करीने ज्यां धन्य सार्थवाह हतो, त्यां आवी, आवीने ते पांच शालि अक्षत धन्य सार्थवाहना हाथमां आप्या.

मु०—तते णं से धण्णे सत्थवाहे रक्खितियं एवं वदासी—“ किं णं पुत्ता ! ते चेव एए पंच सालिअक्खए, उदाहु अन्ने ? ” त्ति । तते णं रक्खितिया धण्णं सत्थवाहं एवं वदासी—“ ते चेव ताया ! एए पंच सालिअक्खया, णो अन्ने ” ।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाहे रक्षिकाने आ प्रमाणे कह्युं के—“ हे पुत्री ! शुं ते ज आ पांच शालि अक्षत छे

के बीजा छे ? ” त्यारे रत्तिकाए धन्य सार्थवाहने आ प्रमाणे कह्युं—“ हे तात ! ते ज आ पांच शालि अत्तत छे, बीजा नथी.

मू–“ कहं णं पुत्ता ! ” । “ एवं खलु ताओ ! तुब्भे इओ पंचमम्मि संवच्छरे जाव भवियव्वं एत्थ कारणेणं ति कट्टु ते पंच सालिअक्खए सुद्धे वत्थे जाव तिसंझं पडिजागरमाणी यावि विहरामि । ततो एतेणं कारणेणं ताओ ! ते चेव ते पंच सालिअक्खए, णो अन्ने ” ।

अर्थ—धन्ये पूछ्युं–“ हे पुत्री ! केवी रीते ते ज आ शालिकण छे ? ” ते बोली—“ ए प्रमाणे निश्चे हे तात ! तमे आजथी पहेलां पांचमे वर्षे मने ते पांच शालि अत्तत आप्या त्यारे में विचार कर्यो के यावत् अहीं आ बाबतमां कांइ पण कारण होवुं जोइए. एम करी (विचारी) ते पांच शालि अत्ततने शुद्ध वस्त्रे बांधी (आभूपणना करंडीआमां मूकी) यावत् त्रिकाळ तेनी सार संभाळ करती सती हुं रहेती हती ते कारणथी हे तात ! ते ज आ पांच शालिअत्तत छे, पण बीजा नथी. ”

मू०–तते णं से धण्णे सत्थवाहे रक्खितियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठ तुट्ठ तस्स कुलघरस्स हिरन्नस्स य कंसदूसविपुलधण जाव सावतेज्जस्स य भंडागारिणिं ठवेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाह रत्तिकानी पासेथी आ अर्थ सांभळी यावत् हृष्ट तुष्ट थयो, पछी तेणे पोताना

कुळगृहना हिरण्यनी, (आभूषणोनी) कांसा विगेरे धातुना वासणोनी, दूष्य–रेशमी वस्त्रोनी, विपुल एवा धान्य, धन, कनक, मुक्ता विगेरे यावत् स्वापतेय (सुवर्णनी) भांडागारिणी (भंडारी) बनावी.

मू०–एवामेव समणाउसो ! जाव पंच य से महव्वयातिं रक्खियातिं भवंति, से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं अच्चणिज्जे जहा जाव सा रक्खिया ।

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे आयुष्मान श्रमणो ! यावत् अमारा साधु साध्वीए जेणे आ पांच महाव्रतोनुं रक्षण कर्युं होय, ते आ भवमां ज घणा साधुओ, घणी साध्वीओ, घणा श्रावको अने घणी श्राविकाओने पूजवा लायक थाय छे; यावत् सिद्धिपदने पामे छे. जेम ते रक्षिका तेम.

मू०–रोहिणिया वि एवं चेव । नवरं " तुब्भे ताओ ! मम सुबहुयं सगडीसागडं दलाहि, जेणं अहं तुब्भं ते पंच शालिअक्खए पडिणिज्जाएमि " ।

अर्थ—रोहिणी माटे पण एम ज जाणवुं. विशेष ए के–धन्य सार्थवाहे ते पांच शालिकण माग्या त्यारे ते बोली के–" हे तात ! तमे मने घणां गाडां, गाडीओ आपो. जेथी हुं तमने ते पांच शालिकण पाछा लावी आपुं. "

मू०–तते णं से धण्णे सत्थवाहे रोहिणिं एवं वदासी–" कहं णं तुमं मम पुत्ता ! ते पंच

सालिअक्खए सगडसागडेणं निज्जाइस्ससि ? ” ।

अर्थ—त्यारे ते धन्य सार्थवाहे रोहिणीने आ प्रमाणे कह्युं के–“ हे पुत्री ! तुं मने ते पांच शालि अक्षतने गाडां, गाडीवडे भरीने केम आपीश ? ”

मू०—तते णं सा रोहिणी धण्णं सत्थवाहं एवं वदासी–“ एवं खलु तातो ! इओ तुब्भे पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्त जाव बहवे कुंभसया जाया, तेणेव कमेणं, एवं खलु ताओ ! तुब्भे ते पंच सालिअक्खए सगडसागडेणं निज्जाएमि ” !

अर्थ—त्यारपछी ते रोहिणीए धन्य सार्थवाहने आ प्रमाणे कह्युं के–“ निश्चे हे तात ! आजथी पांचमे वर्षे तमे मने आ मित्र विगेरेनी समक्ष पांच शालिकण आप्या हता. ते यावत् आजे घणा सेंकडो कुंभा प्रमाण शालि थया छे, विगेरे ते ज पूर्वना क्रमे अहीं कहेवुं. ए प्रमाणे निश्चे हे तात ! तमने ते शालिअक्षत गाडां, गाडीवडे भरीने हुं आपुं छुं. ”

मू०—तते णं से धण्णे सत्थवाहे रोहिणीयाए सुबहुयं सगडसागडं दलयति, तते णं रोहिणी सुबहुं सगडसागडं गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोट्ठागारे विहाडेति, विहाडित्ता पल्ले उब्भिदाति, उब्भिदित्ता सगडीसागडं भरेति, भरित्ता रायगिहं नगरं मज्झं-

मज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाहे रोहिणीने घणां गाडां गाडी आप्यां, त्यारे रोहिणी ते घणां गाडां गाडी लइने ज्यां पोतानुं कुलगृह (पीयर) हतुं, त्यां आवी, आवीने कोठार उघाड्यो, उघाडीने कोठी उघाडी, उघाडीने गाडां गाडी भर्यां, भरीने राजगृह नगरना मध्यभागवडे थइने ज्यां पोतानुं घर हतुं अने ज्यां धन्य सार्थवाह हतो, त्यां आवी.

मू०—तते णं रायगिहे नगरे सिंघाडग जाव बहुजणो अन्नमन्नं एवमातिक्खति—" धन्ने णं देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे, जस्स णं रोहिणिया सुण्हा जीए णं पंच सालिअक्खए सगडसागडिएणं निज्जाएति।

अर्थ—ते वखते राजगृह नगरमां शृंगाटक विगेरे मार्गोमां यावत् घणां लोको परस्पर आ प्रमाणे कहेवा लाग्या—" हे देवानुप्रियो ! आ धन्य सार्थवाह धन्य (पुण्यशाळी) छे के जेने आवी रोहिणी नामनी वहु छे, के जे वहुए पांच शालि अक्षत लइने गाडां गाडी भरीने शालि अक्षत पाछा आप्या."

मू०—तते णं से धण्णे सत्थवाहे ते पंच सालिअक्खए सगडसागडेणं निज्जाएतिते पासति, पासित्ता हट्ठ तुट्ठ पडिच्छति, पडिच्छित्ता तस्सेव मित्तनाति० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स

पुरतो रोहिणीयं सुण्हं तस्स कुलघरस्स बहुसु कज्जेसु य जाव रहस्सेसु य आपुच्छणिज्जं जाव वट्टावितं पमाणभूयं ठावेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाहे ते पांच शालिअक्षतने गाडां–गाडीमां भरेला जोया, जोइने हृष्ट तुष्ट थइ ते शालि ग्रहण कर्या, ग्रहण करीने ते ज मित्र, ज्ञाति विगेरे तथा चार वहुओना कुलगृहना वर्गनी समक्ष रोहिणी नामनी वहुने पोताना कुलगृहना घणां कार्योने विषे यावत् रहस्योने विषे पूछवा लायक यावत् गृहतंत्रने चलावनारी अने प्रमाणभूत (वडेरी) तरीके स्थापन करी.

मू०—एवामेव समणाउसो ! जाव पंच महव्वया संवड्ढिया भवंति, से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं जाव वीतीवइस्सइ जहा व सा रोहिणीया ।

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे आयुष्मान श्रमणो ! यावत् पांच महाव्रतो जेणे वृद्धि पमाड्या होय छे ते आ भवमां ज बहु श्रमण विगेरेने पूज्य थइ यावत् संसारथी मुक्त थाय छे (मोक्ष पामे छे). जेम ते रोहिणी तेम.

मू०—एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति बेमि ॥ ६३ ॥

। सत्तमं नायज्झयणं समत्तं । ७ ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवान महावीरे सातमा ज्ञाताध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे, ते में तमने कह्यो.

समग्र अध्ययननो उपनय आ प्रमाणे—अहीं जेम धन्य सार्थवाह कह्यो, तेम गुरुमहाराज जाणवा. जेम मित्र अने ज्ञातिजन कह्या तेम चतुर्विध श्रमणसंघ जाणवो. जेम चार वहुओ कही तेम चार प्रकारना भव्यप्राणीओ (मनुष्यो) जाणवा. जेम पांच शालिना कण कह्या, तेम पांच महाव्रतो जाणवा. जेम ते यथार्थ नामवाळी उज्झिका दासीनुं काम करवाथी असंख्य दुःखनी खाणरूप थइ. तेम जे कोइ भव्य संघनी समक्ष गुरुए आपेला पांच महाव्रतोनो महामोहथी त्याग करे छे ते आ भवमां ज मनुष्योनुं धिक्कारस्थान बने छे अने परलोकमां दुःखी स्थितिए विविध योनिमां भ्रमण करे छे. (१). जेम बीजी भोगवती यथार्थ नामवाळी होवाथी ते शालिना कण खाइ गइ, तेथी ते पीसवा विगेरेना कार्य करीने अत्यंत दुःखी थइ, तेम जे भव्य महाव्रतोने ग्रहण करी तेनुं मात्र आजीविकाने माटे ज पालन करे छे अने आहारादिकमां निरंतर आसक्त रहे छे तेणे व्रतोनो (आ लोक माटे) उपभोग कर्यो कहेवाय छे, ते मोक्षसाधननी इच्छाथी रहित होय छे. ते साधुवेषने धारण करनार होवाथी जो के यथेच्छ आहारादिकने पामे छे, तो पण आ भवमां ते विद्वानोमां पूज्य थतो नथी अने परभवमां दुःखी ज थाय छे. (२). त्रीजी रक्षिका नामनी यथार्थ नामवाळी वहुए शालिकणनी रक्षा करी, तेथी ते परिवारमां मान्य थइ अने भोगसुखने पामी, ते ज प्रमाणे जे भव्य जीव सम्यक् प्रकारे पांच महाव्रतोने ग्रहण करी लेश पण प्रमाद कर्या विना अतिचार रहित ते व्रतोने पाळे छे, ते पोताना आत्मानुं हित करवामां ज एक रक्त होय छे, ते आ भवमां पण विद्वान जनोमां पूजाय छे, एकांत सुखी थाय छे अने छेवट परभवमां मोक्षना सुखने पण

अर्थ—त्यारपछी ते धारिणी देवी एकदा कदाचित् स्वप्नने विषे सिंहने जोइ जागृत थइ, यावत् महाबळ नामनो पुत्र थयो, ते बाळपणाने मूकी यौवन वयने पामी यावत् भोगने समर्थ थयो.

मू०—तते णं तं महब्बलं अम्मापियरो सरिसियाणं कमलसिरीपामोक्खाणं पंचण्हं रायवरकन्नासयाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेंति । पंच पासायसया पंचसतो दाओ जाव विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते महाबळकुमारने तेना मातापिताए समानरूप वयवाळी कमलश्री विगेरे पांचसो राजकन्याओ साथे एक ज दिवसे पाणिग्रहण कराव्युं. पांचसो प्रासाद विगेरे पांचसो पांचसोनो दायजो आप्यो. यावत् ते स्त्रीओनी साथे महाबल कुमार क्रीडा करतो विचरे छे.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं धम्मघोसा नाम थेरा पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव इंदकुंभे नामं उज्जाणे तेणेव समोसढे संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरंति ।

अर्थ—ते काळे ते समये धर्मघोष नामना स्थविर साधु पांचसो साधुओ साथे परिवर्या सता, अनुक्रमे चालता, एक गामथी बीजे गाम जता, सुखे सुखे विचरता ज्यां इंद्रकुंभ नामनुं उद्यान हतुं, त्यां समवसर्या—पधार्या. त्यां संयम अने तपवडे पोताना आत्माने भावता सता रह्या.

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवान महावीरे सातमा ज्ञाताध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे, ते में तमने कह्यो.

समग्र अध्ययननो उपनय आ प्रमाणे—अहीं जेम धन्य सार्थवाह कह्यो, तेम गुरुमहाराज जाणवा. जेम मित्र अने ज्ञातिजन कह्या तेम चतुर्विध श्रमणसंघ जाणवो. जेम चार वहुओ कही तेम चार प्रकारना भव्यप्राणीओ (मनुष्यो) जाणवा. जेम पांच शालिना कण कह्या, तेम पांच महाव्रतो जाणवा. जेम ते यथार्थ नामवाळी उज्झिका दासीनुं काम करवाथी असंख्य दुःखनी खाणरूप थइ. तेम जे कोइ भव्य संघनी समक्ष गुरुए आपेला पांच महाव्रतोनो महामोहथी त्याग करे छे ते आ भवमां ज मनुष्योनुं धिक्कारस्थान बने छे अने परलोकमां दुःखी स्थितिए विविध योनिमां भ्रमण करे छे. (१). जेम बीजी भोगवती यथार्थ नामवाळी होवाथी ते शालिना कण खाइ गइ, तेथी ते पीसवा विगेरेना कार्य करीने अत्यंत दुःखी थइ, तेम जे भव्य महाव्रतोने ग्रहण करी तेनुं मात्र आजीविकाने माटे ज पालन करे छे अने आहारादिकमां निरंतर आसक्त रहे छे तेणे व्रतोनो (आ लोक माटे) उपभोग कर्यो कहेवाय छे, ते मोक्षसाधननी इच्छाथी रहित होय छे. ते साधुवेषने धारण करनार होवाथी जो के यथेच्छ आहारादिकने पामे छे, तो पण आ भवमां ते विद्वानोमां पूज्य थतो नथी अने परभवमां दुःखी ज थाय छे. (२). त्रीजी रक्षिका नामनी यथार्थ नामवाळी वहुए शालिकणनी रक्षा करी, तेथी ते परिवारमां मान्य थइ अने भोगसुखने पामी, ते ज प्रमाणे जे भव्य जीव सम्यक् प्रकारे पांच महाव्रतोने ग्रहण करी लेश पण प्रमाद कर्या विना अतिचार रहित ते व्रतोने पाळे छे, ते पोताना आत्मानुं हित करवामां ज एक रक्त होय छे, ते आ भवमां पण विद्वान जनोमां पूजाय छे, एकांत सुखी थाय छे अने छेवट परभवमां मोक्षना सुखने पण

पामे छे. (३). जेम चोथी रोहिणी यथार्थ नामवाळी बहु शालिकणोने वावी वृद्धि पमाडी अत्यंत सुखी थइ सर्वस्वनुं स्वामीपणुं पामी, तेम जे भव्यजीव पांच महाव्रतोने ग्रहण करी तेनुं पोतानी मेळे ज सम्यक् प्रकारे पालन करे अने बीजा घणा भव्योने पण हितने माटे महाव्रतो आपे, ते आ भवमां संघप्रधान अने युगप्रधान एवी पदवीने पामे छे, ते गौतम-स्वामीनी जेम पोताना आत्मानुं अने बीजाओनुं पण कल्याण करे छे, ते तीर्थने वृद्धि पमाडे छे, कुतीर्थिकादिकनो आक्षेप (पराभव) करे छे, तेना चरणकमळने विद्वान लोको अने देवो पण सेवे छे अने अनुक्रमे ते सिद्धिने पण पामे छे.

इति सातमुं रोहिणी नामनुं ज्ञाताध्ययन समाप्त. ७.



आठमुं मल्ली नामनुं अध्ययन.

महाव्रतोनी विराधना करवाथी अनर्थ थाय अने आराधना करवाथी अर्थ प्राप्त थाय एम सातमा अध्ययनमां कह्युं. हवे ते महाव्रतोने अल्प पण मायाशल्य वडे दूषित कर्या होय तो तेनुं यथार्थ फळ प्राप्त थतुं नथी एम कहेवा माटे आ आठमा अध्ययनमां मल्लीनाथ स्वामीनुं दृष्टांत आपे छे—

मू०—जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते,

अट्ठमस्स णं भंते ! के अट्ठे पण्णत्ते ?

अर्थ—जंबूस्वामी सुधर्मास्वामीने पूछे छे-" हे भगवान ! जो श्रमण भगवान महावीरस्वामीए सातमा ज्ञाताध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे, तो हे भगवान ! आठमा ज्ञाताध्ययननो कयो अर्थ कह्यो छे ? "

मू०—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं इहेव जंबूद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं निसढस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं सीयोयाए महाणदीए दाहिणेणं सुहावहस्स वक्खारपव्वतस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरच्छिमेणं एत्थ णं सलिलावती नामं विजए पन्नत्ते ।

अर्थ—सुधर्मास्वामी उत्तर आपे छे-आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये आ ज जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे महाविदेह नामना वर्ष (क्षेत्र) मां मेरु पर्वतनी पश्चिम दिशाए, निषध नामना वर्षधर पर्वतनी उत्तर दिशाए, शीतोदा नामनी महानदीनी दक्षिण दिशाए, सुखावह नामना वक्षार पर्वतनी पश्चिम दिशाए, पश्चिम दिशाना लवणसमुद्रनी पूर्व दिशाए, आ ठेकाणे सलिलावती नामे विजय कहेलो छे.

मू०—तत्थ णं सलिलावती विजए वीयसोगा नामं रायहाणी पण्णत्ता नवजोयणविच्छिण्णा

जाव पच्चक्खं देवलोगभूया ।

अर्थ—ते सलिलावती विजयने विषे वीतशोका नामनी राजधानी (नगरी) कहेली छे, ते नव योजन विस्तारवाळी यावत् प्रत्यक्ष देवलोक (स्वर्ग) जेवी छे.

मू०—तीसे णं वीयसोगाए रायहाणीए उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए एत्थ णं इंदकुंभे नामं उज्जाणे होत्था ।

अर्थ—ते वीतशोका नामनी राजधानीनी उत्तर पूर्व (ईशान) दिशाना भागमां ते ठेकाणे इंद्रकुंभ नामनुं उद्यान छे.

मू०—तत्थ णं वीयसोगाए रायहाणीए बले नामं राया होत्था, तस्सेव धारिणीपामोक्खं देविसहस्सं उवरोधे होत्था ।

अर्थ—ते वीतशोका नामनी राजधानीने विषे बल नामे राजा हतो. ते बल राजाने धारिणी विगेरे हजार देवीओ (राणीओ) अंतःपुरने विषे हती.

मू०—तते णं सा धारिणी देवी अन्नया कदाइ सीहं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा जाव महब्बले नामं दारए जाए उम्मुक्क जाव भोगसमत्थे ।

अर्थ—त्यारपछी ते धारिणी देवी एकदा कदाचित् स्वप्नने विषे सिंहने जोइ जागृत थइ, यावत् महाबळ नामनो पुत्र थयो, ते बाळपणाने मूकी यौवन वयने पामी यावत् भोगने समर्थ थयो.

मू०—तते णं तं महब्बलं अम्मापियरो सरिसियाणं कमलसिरीपामोक्खाणं पंचण्हं रायवरकन्नासयाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेंति । पंच पासायसया पंचसतो दाओ जाव विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते महाबळकुमारने तेना मातापिताए समानरूप वयवाळी कमलश्री विगेरे पांचसो राजकन्याओ साथे एक ज दिवसे पाणिग्रहण कराव्युं. पांचसो प्रासाद विगेरे पांचसो पांचसोनो दायजो आप्यो. यावत् ते स्त्रीओनी साथे महाबल कुमार क्रीडा करतो विचरे छे.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं धम्मघोसा नाम थेरा पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव इंदकुंभे नामं उज्जाणे तेणेव समोसढे संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ।

अर्थ—ते काळे ते समये धर्मघोष नामना स्थविर साधु पांचसो साधुओ साथे परिवर्या सता, अनुक्रमे चालता, एक गामथी बीजे गाम जता, सुखे सुखे विचरता ज्यां इंद्रकुंभ नामनुं उद्यान हतुं, त्यां समवसर्या—पधार्या. त्यां संयम अने तपवडे पोताना आत्माने भावता सता रह्या.

मू०—परिसा निग्गया, बलो वि राया निग्गओ, धम्मं सोच्चा णिसम्म जं नवरं महब्बलं कुमारं रज्जे ठावेति, ठावित्ता सयमेव बले राया थेराणं अंतिए पव्वइए एक्कारसअंगविओ बहूणि वासाणि सामण्णपरियायं पाउणित्ता जेणेव चारुपव्वए मासिएणं भत्तेणं अपाणेणं केवलं पाउणित्ता जाव सिद्धे ।

अर्थ—ते स्थविर मुनिने नमवा माटे पर्षदा नीकळी, बळ राजा पण नीकळ्यो, धर्म सांभळी हृदयमां धारी वैराग्य पाम्यो. विशेष ए के महाबळ कुमारने राज्यपर स्थापन कर्यो, स्थापन करीने पोते ज बळ राजाए ते स्थविर मुनिनी पासे आवी प्रव्रज्या ग्रहण करी. अगयार अंगना जाणकार थया. घणा वर्षो सुधी चारित्र पर्याय पाळी ज्यां चारु नामनो पर्वत छे त्यां आवी एक मासना पाणी रहित अनशनवडे केवळज्ञान पामी यावत् सिद्धिपदने पाम्या.

मू०—तते णं सा कमलसिरी अन्नया कयाइ जाव सीहं सुमिणे पासित्ता पडिबुद्धा, जाव बलभद्दो कुमारो जाओ, जुवराया या वि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते कमलश्री एकदा कदाचित् यावत् स्वप्नमां सिंहने जोइने जागृत थइ, यावत् बळभद्र नामनो तेने कुमार थयो, अने ते युवराज पण थयो.

३६

मू०-तस्स णं महब्बलस्स रन्नो इमे छप्पिय बालवयंसगा रायाणो होत्था, तं जहा-अयले १, धरणे २, पूरणे ३, वसु ४, वेसमणे ५, अभिचंदे ६, सहजाया जाव संवड्ढिता, ते णित्थरियव्वे त्ति कट्टु अन्नमन्नस्सेयमट्ठं पडिसुणेंति । सुहंसुहेणं विहरंति ।

अर्थ—ते महाबल राजाने आ छए राजाओ बाळमित्र हता, ते आ प्रमाणे-अचल १, धरण २, पूरण ३, वसु ४, वैश्रमण ५, अने अभिचंद्र ६, तेओ साथे उत्पन्न थया हता (जन्म्या हता.) यावत् साथे वृद्धि पाम्या हता. तेओए "देश परदेश साथे जवुं, सुख दुःख साथे ज भोगववुं अने साथे ज निस्तरवुं एटले संसारमांथी नीकळी आत्माने तारवो." ए प्रमाणे (निर्णय) करीने परस्पर आ अर्थने अंगीकार कर्यो हतो. अने सुखे सुखे रह्या हता.

मू०-ते णं काले णं ते णं समए णं धम्मघोसा थेरा जेणेव इंदकुंभे उज्जाणे तेणेव समोसढा परिसा निग्गया, महब्बलो वि राया निग्गओ, धम्मो कहिओ, महब्बलेणं धम्मं सोच्चा जं नवरं देवाणुप्पिया ! छ प्पिए बालवयंसए आपुच्छामि, बलभद्दं च कुमारं रज्जे ठावेमि, जाव छ प्पिय बालवयंसए आपुच्छति ।

अर्थ—ते काळे ते समये धर्मघोष नामना स्थविर मुनि ज्यां इंद्रकुंभ नामनुं उद्यान हतुं, त्यां समवसर्या. तेमने वांदवा

माटे पर्षदा नीकळी, महाबळ राजा पण नीकळ्यो. तेमनी पासे मुनिए धर्म कह्यो. महाबळ राजा धर्म सांभळी वैराग्य पाम्या. विशेषमां तेणे कह्युं के–" हे देवानुप्रिय ! हुं मारा छ प्रिय बाळमित्रोनी रजा लउं, तथा बलभद्र कुमारने राज्यपर स्थापन करुं. " एम कही तेणे यावत् ते छए बालमित्रोने पूछ्युं.

मू०–तते णं ते छ प्पिय बालवयंसए महब्बलं रायं एवं वयासी–" जति णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे पव्वयह, अम्हं के अन्ने आहारे वा ? जाव पव्वयामो " ।

अर्थ—त्यारे ते छ प्रिय बालमित्रोए महाबळ राजाने आ प्रमाणे कह्युं–" हे देवानुप्रिय ! जो तमे प्रव्रज्या ग्रहण करो छो, तो पछी अमारो कयो बीजो आधार विगेरे छे ? तेथी यावत् अमे पण तमारी साथे प्रव्रज्या ग्रहण करशुं. "

मू०–तते णं से महब्बले राया छ प्पिय बालवयंसए एवं वयासी–" जति णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे मए सद्धिं जाव पव्वयह, तओ णं तुब्भे गच्छह जेट्ठपुत्तं सएहिं सएहिं रज्जेहिं ठावेह, पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा समाणा पाउब्भवह " । तते णं ते छ प्पिय बालवयंसए जाव पाउब्भवंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते महाबळ राजाए छ प्रिय बालमित्रोने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रियो ! जो तमे मारी साथे

यावत् प्रव्रज्या ग्रहण करवा इच्छो छो तो तमे पोताना नगरमां जाओ अने पोतपोताना मोटा पुत्रने पोतपोताना राज्यपर स्थापन करो. तथा हजार पुरुषोए वहन करेली शिबिकापर आरूढ थया सता मारी पासे प्रगट थाओ (आवो)." ते सांभळीने ते छ प्रिय बालमित्रो ते ज प्रमाणे (गया अने पुत्रोने राज्यपर स्थापी शिबिकामां बेसी) यावत् तेनी पासे प्रगट थया.

मू०—तते णं से महब्बले राया छ प्पिय बालवयंसए पाउब्भूते पासति, पासित्ता हट्ठ तुट्ठ कोडुंबियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एवं वदासी—"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! बलभद्दस्स कुमारस्स महया महया रायाभिसेकेणं अभिसिंचेह"। ते वि तहेव जाव बलभद्दं कुमारं अभिसिंचेंति।

अर्थ—त्यारपछी ते महाबल राजाए छ प्रिय बाळमित्रोने पोतानी पासे प्रगट थयेला जोया, जोइने हृष्ट तुष्ट थइ तेणे कौटुंबिक (सेवक) पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—"हे देवानुप्रियो! तमे जाओ, अने (राज्याभिषेकने लगती योग्य तैयारी करीने) बळभद्र कुमारने मोटा मोटा राज्याभिषेकवडे अभिषेक करो." ते सांभळी तेओए ते ज प्रमाणे (कर्युं) यावत् बळभद्र कुमारने अभिषेक कर्यो.

मू०—तते णं से महब्बले राया बलभद्दं कुमारं आपुच्छइ। तओ णं महब्बलपामोक्खा छ प्पिय बालवयंसयाए सद्धिं पुरिससहस्सवाहिणिं दुरूढा वीयसोयाए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं णिगच्छइ, णिगच्छित्ता जेणेव इंदकुंभे उज्जाणे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

ते वि य सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करित्ता जाव पव्वइए, एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमेहिं अप्पाणं भावेमाणा जाव विहरंति।

अर्थ—त्यारपछी ते महाबळ राजाए बळभद्र कुमारनी रजा लीधी. पछी महाबळ विगेरे छ प्रिय बालमित्रोनी साथे हजार पुरुषोए वहन करेली शिबिका पर आरूढ थइ वीतशोका राजधानीना मध्य भागवडे नीकळ्या. नीकळीने ज्यां इंद्रकुंभ नामनुं उद्यान हतुं अने ज्यां स्थविर भगवान हता, त्यां आव्या, आवीने ते सर्वेए पोतानी मेळे ज पंचमुष्टि लोच कर्यो, करीने यावत् प्रव्रजित थया. पछी तेओ अग्यार अंग भणीने घणा चोथ, छठ अने अठम विगेरे तपवडे पोताना आत्माने भावता सता यावत् विचरवा लाग्या—रह्या.

मू–तते णं तेसिं महब्बलपामोक्खाणं सत्तण्हं अणगाराणं अन्नया कयाइ एगयओ सहियाणं इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था–" जं णं अम्हं देवाणुप्पिया! एगं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरति, तं णं अम्हेहिं सव्वेहिं सद्धिं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए" त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता बहूहिं चउत्थ जाव विहरंति।

अर्थ—त्यारपछी ते महाबळ विगेरे सात साधुओ एकदा कदाचित् एक ठेकाणे एकठा मळ्या, ते वखते तेओने पर-

स्पर आवा प्रकारनी कथानो उल्लाप (वातचित) थयो के—" हे देवानुप्रियो ! जे आपणे एक ज तपक्रियाने अंगीकार करीने विचरीए छीए, तो पछी आपणे सर्वेए एकी साथे ज तपक्रिया ग्रहण करीने विचरीए ते सारुं छे. " आ प्रमाणे कही परस्परना आ विचारने सर्वेए अंगीकार कर्यो, अंगीकार करीने घणा चोथभक्त, छठ, अठम विगेरे तपवडे यावत् (एक सरखो तप करता सता) विचरवा लाग्या.

मू०—तते णं से महब्बले अणगारे इमेणं कारणेणं इत्थिणामगोयं कम्मं निव्वत्तेसु—जति णं ते महब्बलवज्जा छ अणगारा चउत्थं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति, ततो से महब्बले अणगारे छट्ठं उवसंपज्जित्ता णं विहरति। जति णं ते महब्बलवज्जा अणगारा छट्ठं उवसंपाज्जित्ता णं विहरंति, ततो से महब्बले अणगारे अट्ठमं उवसंपज्जित्ता णं विहरति। एवं अट्ठमं तो दसमं। अह दसमं तो दुवालसं।

अर्थ—त्यारपछी ते महाबल मुनिए आ (हवे पछी कहेवाशे ते) कारणे करीने स्त्रीनामगोत्र कर्म उपार्जन कर्युं—ज्यारे ते महाबल सिवायना बीजा छ मुनिओ चोथभक्त ग्रहण करीने विचरता हता, त्यारे ते महाबल साधु (तेमने जणाव्या विना) छठ अंगीकार करीने विचरता हता, ज्यारे ते महाबल सिवायना बीजा छ साधु छठ अंगीकार करीने विचरता हता त्यारे ते महाबळ अनगार अठम ग्रहण करीने विचरता हता. ए ज प्रमाणे तेओ अठम ग्रहण करता हता, त्यारे

ते दशमने (चार उपवासने) ग्रहण करता हता, अने ज्यारे तेओ दशमने ग्रहण करता हता, त्यारे ते द्वादशम (पांच उपवास) ग्रहण करता हता. (आ प्रमाणे छ मित्र साधुओथी छुपी रीते वधारे वधारे तप करता हता.)

भावार्थ--स्त्रीनाम एटले स्त्रीनो परिणाम अर्थात् स्त्रीपणुं, जेना उदयथी स्त्रीपणुं एवुं जेनुं गोत्र–नाम होय ते स्त्री-नामगोत्र कहेवाय छे, अथवा स्त्रीने योग्य एवुं नामकर्म अने गोत्र ते स्त्रीनामगोत्र कर्म कहेवाय छे. स्त्रीनामगोत्र कर्म मिथ्यात्व अने अनंतानुबंधीना उदयथी प्राप्त थाय छे (बंधाय छे), तेथी ते कर्म उपार्जन करती वखते ते जीव मिथ्यात्व के सास्वादनने अनुभवतो होय छे, स्त्रीनामगोत्र कर्म बांधवामां मुख्य कारण आ छे.–एक रीतनी प्रतिज्ञा करी बीजी रीते वर्तवुं, ते मायाकपट होवाथी स्त्रीपणानुं कारण छे. आम करवानुं कारण मिथ्या अभिमान संभवे छे. एटले के–हुं नायक छुं अने आ बीजा मारा छ मित्रो तो माराथी नाना होवाथी अनुनायक छे, तेथी जो मारो कांइ पण उत्कर्ष न होय तो नायक अने अनुनायकमां तफावत शो ? " आवी खोटी मान्यताने लीधे माया करीने तेणे स्त्रीनाम गोत्र कर्म उपार्जन कर्युं. (स्त्रीवेद तो मोहनीय कर्मनी प्रकृति छे छतां अहीं तेने गोत्र कर्ममां लीधेल छे ते स्त्री कहेवरावधारूप कर्म समजवुं.)

मू०–इमेहि य णं वीसाएहि य कारणेहिं आसेवियबहुलीकएहिं तित्थयरनामगोयं कम्मं निव्वत्तिंसु, तं जहा—

" अरहंत १ सिद्ध २ पवयण ३ गुरु ४ थेर ५ बहुस्सुए ६ तवस्सीसुं ७ ।
वच्छल्लया य तेसिं, अभिक्ख णाणोवओगे य ८ ॥ १ ॥
दंसण ९ विणए १० आवस्सए ११ य सीलव्वए निरइयारं १२ ।
खणलव १३ तव १४ च्चियाए १५ वेयावच्चे १६ समाही य १७ ॥ २ ॥
अप्पुव्वणाणगहणे १८ सुयभत्ती १९ पवयणे पभावणया २० ।
एएहिं कारणेहिं तित्थयरत्तं लहइ जीओ ॥ ३ ॥ "

अर्थ—तथा वळी आ वीश कारणो (स्थानको—तपस्यादिवडे) एक वार सेववाथी अने वारंवार सेववाथी ते महाबल मुनिए तीर्थंकर नामगोत्र कर्म पण उपार्जन कर्युं. ते वीश स्थानको आ प्रमाणे छे.—

" अरिहंत १, सिद्ध २, प्रवचन—श्रुतज्ञान ३, गुरु—धर्मोपदेशक ४, स्थविर—जाति (जन्म) स्थविर साठ वर्षनी वयवाळा, समवायांगने जाणनारा ते श्रुतस्थविर अने वीश वर्षना चारित्र पर्यायवाळा ते पर्यायस्थविर ए त्रण प्रकारना स्थविर साधु ५, बहुश्रुत—बीजानी अपेक्षाए अधिक श्रुतने जाणनारा ६, तपस्वी—अनशनादिक (उपवासादिक) विचित्र तपवाळा (तप करनारा) अथवा सामान्य साधु ७, आ सातेना वत्सलपणाए करीने एटले भक्ति बहुमानरूप अनुराग अने यथावस्थित गुणनुं कीर्तन करवावडे करीने ७, ज्ञाननो वारंवार उपयोग करवावडे करीने ८, दर्शन—समकित ९,

विनय-ज्ञानादिकनो विनय १०, आवश्यक-छ आवश्यक-अवश्य करवा लायक क्रिया ११, शीलव्रत-शील एटले उत्तर गुण अने व्रत एटले मूळगुण १२ आ चारे अतिचार रहित पाळवावडे करीने, क्षणलव एटले क्षणलवादिक काळने विषे संवेग, भावना अने ध्याननुं सेवन करवावडे १३, तप-उपवासादिक तपवडे १४, त्याग-यतिजनने उचित दान आपवावडे १५, वैयावृत्य-दश प्रकारना वैयावच्चवडे करीने १६, समाधि-गुरु विगेरेनुं कार्य करी देवाथी तेमना चित्तनी स्वस्थता उत्पन्न करवावडे करीने १७, अपूर्व (नवुं) ज्ञान ग्रहण करवावडे १८, श्रुतनी भक्ति करवावडे १९, तथा प्रवचननी प्रभावना करवावडे २०, आटला वीश कारणोए करीने जीव तीर्थंकरपणाने पामे छे. (तीर्थंकर नामकर्म बांधे छे.) अर्थात् आ वीश स्थानकोनुं आराधन करीने ते महाबळ मुनिए तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन कर्युं.

मू०-तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा मासिअं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति, जाव एगराइयं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते महाबळ विगेरे साते साधुओ एक मासनी पहेली भिक्षुप्रतिमा अंगीकार करी विचरवा लाग्या. १. यावत् बारमी एक रात्रिनी भिक्षुप्रतिमा अंगीकार करी विचरवा लाग्या. १२. अहीं यावत् शब्द छे माटे वच्चेनी दश प्रतिमाओ आ प्रमाणे जाणवी.—बीजी बे मासनी २, त्रीजी त्रण मासनी ३, चोथी चार मासनी ४, पांचमी पांच मासनी ५, छठ्ठी छ मासनी ६, सातमी सात मासनी ७, आठमी सात रात्रिदिवसनी ८ नवमी सात रात्रिदिवसनी ९, दशमी सात

रात्रिदिवसनी १०, अने अग्यारमी एक रात्रिदिवसनी ११. (कुल १२ भिक्षुप्रतिमा समजवी.)

मू०-तते णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डागं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति, तं जहा-चउत्थं करेंति, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेंति, पारित्ता छट्ठं करेंति, करित्ता चउत्थ करेंति, करित्ता अट्ठमं करेंति, करित्ता छट्ठं करेंति, करित्ता दसमं करेंति, करित्ता अट्ठमं करेंति, करित्ता दुवालसमं करेंति' करित्ता दसमं करेंति, करित्ता चाउद्दसमं करेंति, करित्ता दुवालसमं करेंति, करित्ता सोलसमं करेंति, करित्ता चोद्दसमं करेंति, करित्ता अट्ठारसमं करेंति, करित्ता सोलसमं करेंति, करित्ता वीसइमं करेंति, करित्ता अट्ठारसमं करेंति, करित्ता वीसइमं करेंति, करित्ता सोलसमं करेंति, करित्ता अट्ठारसमं करेंति, करित्ता चोद्दसमं करेंति, करित्ता सोलसमं करेंति, करित्ता दुवालसमं करेंति, करित्ता चाउद्दसमं करेंति, करित्ता दसमं करेंति, करित्ता दुवालसमं करेंति, करित्ता अट्ठमं करेंति, करित्ता दसमं करेंति, करित्ता छट्ठं करेंति, करित्ता अट्ठमं करेंति, करित्ता चउत्थं करेंति, करित्ता छट्ठं करेंति, करित्ता चउत्थं करेंति। सव्वत्थ सव्व-

कामगुणिएणं पारेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते महाबल विगेरे साते साधुओ क्षुल्लक (लघु) सिंहनिष्क्रीडित एवा नामनुं-सिंहनी क्रीडा जेवुं एटले सिंह चालतो चालतो पाछळ जुए छे, ते ज प्रमाणे प्रथमना तपनुं आवर्तन करी आगळ वधतो तप जेमां कराय ते सिंहनिष्क्रीडित नामना तपकर्मने अंगीकार करी विचरवा लाग्या. ते तप आ प्रमाणे थाय छे.—प्रथम चोथभक्त (उपवास) करे, करीने सर्वकामगुणित[२] पारणुं करे, पारणुं करीने छठ (बे उपवास) करे, करीने चोथभक्त करे, करीने अट्ठम (३) करे, करीने बे उपवास करे, करीने चार उपवास करे, करीने त्रण उपवास करे, करीने पांच उपवास करे, करीने चार उपवास करे, करीने ६ उपवास करे, करीने ५ उपवास करे, करीने ७ उपवास करे, करीने ६ उपवास करे, करीने ८ उपवास करे, करीने ७ उपवास करे, करीने ९ उपवास करे, करीने ८ उपवास करे, करीने ९ उपवास करे, करीने ७ उपवास करे, करीने ८ उपवास करे, करीने ६ उपवास करे, करीने ७ उपवास करे, करीने ५ उपवास करे, करीने ६ उपवास करे, करीने ४ उपवास करे, करीने ५ उपवास करे, करीने ३ उपवास करे, करीने ४ उपवास करे, करीने २ उपवास करे, करीने ३ उपवास करे, करीने १ उपवास करे, करीने २ उपवास करे, करीने १ उपवास करे. बधे ठेकाणे पारणाने दिवसे सर्वकामगुणित पारणुं समजवुं. स्थापना.—

---

२ विगइ आदिक सर्व इच्छित पदार्थो खावा ते.

१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९	८
१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९	

७३
७३
८
१५४–३३ पारणा

मु०—एवं खलु एसा खुड्डागसीहनिक्कीलियस्स तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी छहिं मासेहिं सत्तहि य अहोरत्तेहि य अहासुत्ता जाव आराहिया भवइ ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे क्षुल्लक सिंहनिष्क्रीडित नामना तपकर्मनी पहेली परिवाडी (परिपाटी) छ मास अने सात रात्रिदिवसे सूत्रमां कह्या प्रमाणे यावत् आराधन करेली थाय छे. (तेमां १५४ उपवास ने ३३ पारणा आवे छे.)

मू०—तयाणंतरं दोच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेंति, नवरं विगइवज्जं पारेंति । एवं तच्चावि परिवाडी, नवरं पारणए अलेवाडं पारेंति । एवं चउत्था वि परिवाडी, नवरं पारणए आयंबिलेण पारेंति ।

अर्थ—त्यारपछी बीजी परिपाटीने विषे पण प्रथम एक उपवास करे, विगेरे उपर कह्या प्रमाणे जाणवुं. विशेष ए के विगइ रहित पारणुं करे. ए ज प्रमाणे त्रीजी परिपाटी जाणवी, विशेष ए के पारणाने दिवसे अलेपकृतवडे पारणुं करे. ए ज प्रमाणे चोथी परिपाटी पण जाणवी, विशेष ए के पारणाने दिवसे आंबिलवडे पारणुं करे. (ए चारे परिपाटीमां उप-

वास १५४ ने पारणा ३३ समजवा. एटले दरेक परिपाटी छ मास ने ७ दिवसे थाय.)

मू०—तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डागं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं दोहिं संवच्छरेहिं अट्ठावीसाए अहोरत्तेहिं अहासुत्तं जाव आणाए आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवंते तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

अर्थ—त्यारपछी ते महाबल विगेरे साते मुनिओ क्षुल्लक सिंहनिष्क्रीडित नामना तपकर्मने चारे परिपाटी मळीने बे वर्ष अने अट्ठावीश रात्रिदिवसे सूत्रमां कह्या प्रमाणे यावत् आज्ञावडे आराधन करी ज्यां स्थविर भगवान हता त्यां आव्या, आवीने स्थविर भगवानने वांद्या, नमस्कार कर्या. वांदी नमस्कार करी आ प्रमाणे बोल्या—

मू०—इच्छामो णं भंते! महालयं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं तहेव जहा खुड्डागं, नवरं चोत्तीसइमाओ नियत्तए, एगाए चेव परिवाडीए कालो एगेणं संवच्छरेणं छहिं मासेहिं अट्ठारसेहि य अहोरत्तेहिं समप्पेति। सव्वं पि सीहनिक्कीलियं छहिं वासेहिं दोहि य मासेहिं बारसेहि य अहोरत्तेहिं समप्पेति।

अर्थ—"हे भगवान! अमे महत (मोटुं) सिंहनिष्क्रीडित नामनुं तपकर्म करवा इच्छीए छीए." आ तप क्षुल्ल-

कना जेवो ज जाणवो. तेमां विशेष ए छे के चोत्रीश भक्त एटले १६ उपवास सुधी चडीने पछी पाछुं वळवुं. एक परिपाटीनो काळ एक वर्ष, छ मास अने अढार रात्रिदिवसे समाप्त थाय छे. अने आ मोटो सिंहनिष्क्रीडित तप चारे परिपाटी मळीने छ वर्ष, बे मास अने बार रात्रिदिवसे करीने समाप्त थाय छे. (ते दरेक परिपाटीमां ४९७ उपवास ने ६१ पारणा आवे छे. कुल दिन ५५८ थाय छे. एम चार परिपाटी समजवी.) स्थापना—

१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९	८	१०	९	११	१०	१२	११	१३	१२	१४	१३	१५	१४	१६	१५
१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९	८	१०	९	११	१०	१२	११	१३	१२	१४	१३	१५	१४	१६	

मू०—तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा महालयं सीहनिक्कीलियं अहासुत्तं जाव आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवंते तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता बहूणि चउत्थ जाव विहरंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते महाबल विगेरे सात मुनिओ मोटा सिंहनिष्क्रीडित तपकर्मने सूत्रमां कह्या प्रमाणे यावत् आराधीने ज्यां भगवान स्थविर मुनि हता, त्यां आव्या, आवीने स्थविर भगवानने वांद्या नमस्कार कर्या, वांदी नमस्कार करी

घणा उपवास विगेरे तपवडे यावत् विचरवा लाग्या.

मू०—तते णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा तेणं ओरालेणं सुक्का भुक्खा जहा खंदओ, नवरं थेरे आपुच्छित्ता चारुपव्वयं (वक्खारपव्वयं) दुरूहंति, दुरूहित्ता जाव दोमासियाए संलेहणाए सवीसं भत्तसयं अणसणं चतुरासीतिं वाससयसहस्साति सामण्णपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता चुलसीतिं पुव्वसयसहस्सातिं सव्वाउयं पालइत्ता जयंते विमाणे देवत्ताए उववन्ना ॥ ६४ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते महाबळ विगेरे साते मुनिओ तेवा प्रकारना उदार–प्रधान तपवडे शुष्क–रुधिर मांस रहित थया, तथा रुक्ष–तेज रहित थया. जेम स्कंदक मुनि (भगवतीना बीजा शतकमां कह्या छे ते) अथवा अहीं ज मेघकुमार मुनि कह्या छे तेवा थया. विशेष ए के स्कंदके महावीरस्वामीनी आज्ञा लीधी हती, अहीं आ सात मुनिओए स्थविर मुनिनी आज्ञा लीधी, पछी तेओ चारु नामना पर्वत उपर (अथवा चारु नामना वक्स्कार पर्वत उपर) आरूढ थया. आरूढ थइ यावत् बे मासनी संलेखना करी एटले एक सो वीश भक्तनुं[1] अनशन करी चोराशी लाख वर्ष सुधी चारित्र पर्यायनुं पालन कर्युं, पालन करीने चोराशी लाख पूर्वनुं सर्व आयुष्य पाळीने जयंत नामना त्रीजा अनुत्तर विमानमां देवपणे उत्पन्न थया. ६४

१ एक दिवसना बे भक्त होवाथी बे मासना तेटला भक्त–भोजन थाय छे.

मू०—तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता । तत्थ णं महब्बलवज्जाणं छण्हं देवाणं देसूणाइं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिती, महब्बलस्स देवस्स पडिपुन्नाइं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता ।

अर्थ—ते जयंत विमानमां केटलाक देवोनी बत्रीश सागरोपमनी स्थिति कहेली छे. तेमां महाबळ सीवायना बीजा छ देवोनी देशे ऊन (कांइक ओछी) बत्रीश सागरोपमनी स्थिति कही छे, अने महाबळ देवनी परिपूर्ण बत्रीश सागरोपमनी स्थिति कही छे.

मू०—तते णं ते महब्बलदेववज्जा छ प्पिय देवा जयंताओ देवलोगाओ आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे विसुद्धपितिमातिवंसेसु रायकुलेसु पत्तेयं पत्तेयं कुमारत्ताए पच्चायायासी ।

अर्थ—त्यारपछी ते महाबळ देव सिवायना बीजा छए मित्र देवताओ जयंत देवलोक (त्रीजा अनुत्तर विमान) थकी देव संबंधी आयुष्यना चयवडे, देवलोकमां रहेवारूप स्थितिना चयवडे अने देव संबंधी भवना चयवडे आंतरा रहित (तरत) चय (शरीर) नो त्याग करीने अथवा चवीने आ ज जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे भरत नामना क्षेत्रमां विशुद्ध

मातापिताना वंशवाळा राजकुळमां दरेक जुदा जुदा राजकुमारपणे उत्पन्न थया.

मू०—तं जहा—पडिबुद्धी इक्खागराया १, चंदच्छाए अंगराया २, संखे कासिराया, ३, रुप्पी कुणालाहिवती ४, अदीणसत्तू कुरुराया ५, जितसत्तू पंचालाहिवई ६।

अर्थ—ते आ प्रमाणे—पहेलो मित्र प्रतिबुद्धि नामनो इक्ष्वाकु वंशनो अथवा इक्ष्वाकु देशनो राजा थयो, ते कोशल देश पण कहेवाय छे, तेमां अयोध्या नगरी राजधानी छे. १. बीजो चंद्रछाया नामनो अंगदेशनो राजा थयो, तेमां कांपिल्य एटले चंपा नगरी राजधानी छे २. त्रीजो शंख नामे काशी देशनो राजा थयो, तेमां वाराणसी नगरी राजधानी छे. ३. चोथो रूपी नामे कुणाल देशनो राजा थयो, तेमां श्रावस्ती नगरी राजधानी छे. ४. पांचमो अदीनशत्रु नामे कुरु देशनो राजा थयो, तेमां हस्तिनापुर नगर राजधानी छे. ५. तथा छट्ठो जितशत्रु नामे पंचाल देशनो राजा थयो, तेमां कांपिल्य नगर राजधानी छे.

मू—तते णं से महब्बले देवे तिहिं णाणेहिं समग्गे उच्चट्ठाणट्ठिएसु गहेसु, सोमासु दिसासु वितिमिरासु विसुद्धासु, जइतेसु सउणेसु, पयाहिणाणुकूलंसि भूमिसप्पिंसि मारुतंसि पवायंसि, निप्फन्नसस्समेइणीयंसि कालंसि, पमुइयपक्कीलिएसु जणवएसु, अद्धरत्तकालसमयंसि अस्सिणीण-

क्खत्तेणं जोगमुवागएणं जे से हेमंताणं चउत्थे मासे अट्ठमे पक्खे फग्गुणसुद्धे तस्स णं फग्गुणसुद्धस्स चउत्थिपक्खेणं जयंताओ विमाणाओ बत्तीससागरोवमट्ठितीयाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए रायहाणीए कुंभगस्स रन्नो पभावतीए देवीए कुच्छिंसि आहारवक्कंतीए सरीरवक्कंतीए भववक्कंतीए गब्भत्ताए वक्कंते ।

अर्थ—त्यारपछी ते महाबळ नामना देव त्रण ज्ञाने करीने सहित ज्यारे सर्व ग्रहो उच्च स्थाने रह्या हता, सर्व दिशाओ सौम्य–उत्पात रहित, वितिमिर–तीर्थंकरना गर्भना प्रभावथी अंधकार रहित अने विशुद्ध–धूळ विगेरेना उडवा रहित हती, कागडा विगेरे पक्षीओना शब्दरूप शकुनो विजयकारक हता, प्रदक्षिण–दक्षिण (जमणी) तरफ चालतो, अनुकूळ (शीत, मंद, सुगंधि) अने पृथ्वीपर प्रसरतो वायु वातो हतो, पृथ्वीपर धान्य नीपज्या होय एवो काळ (सुकाळ) वर्ततो हतो, तेथी करीने ज देशना लोको हर्षित थइ क्रीडा करता हता, आवा काळने विषे अर्ध रात्रिने समये अश्विनी नक्षत्रनो योग (चंद्रयोग) हतो त्यारे, जे ते हेमंत ऋतुने मध्ये (शीतकाळना मासने मध्ये) चोथो मास अने आठमुं पखवाडीयुं अर्थात् फाल्गुन मासनो शुक्ल पक्ष हतो त्यारे, वळी ते फाल्गुन शुक्लपक्षनी चोथनी तिथिनो पक्ष एटले पार्श्व (पश्चार्ध–रात्रि-

१—बीजी वाचनामां–'ग्रीष्मऋतुना पहेला मासमां' विगेरे पाठ होवाथी चैत्र शुक्ल चोथनी तिथि गर्भवासनी आवे छे. तेना मतमां वच्चे अधिक मास आववाथी मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशीए जन्मना पूर्ण दिवसो संभवे छे. तत्त्व केवळीगम्य छे.

नो समय) हतो त्यारे बत्रीश सागरोपमनी स्थितिवाळा जयंत नामना विमानथकी आंतरा रहित (तरत) चवीने अथवा चयने-शरीरने तजीने आ ज जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे भरत क्षेत्रमां मिथिला नामनी राजधानीमां कुंभ नामना राजानी पट्टराणी प्रभावती नामनी राणीनी कुक्षिने विषे देव संबंधी आहारनो त्याग करवावडे, देव संबंधी वैक्रिय शरीरनो त्याग करवावडे अने देव संबंधी भवनो (देवगतिनो) त्याग करवावडे अथवा आहारव्युत्क्रांति--अपूर्व आहारने उत्पन्न करवावडे अने मनुष्यने योग्य एवा आहारने ग्रहण करवावडे, ए ज रीते शरीरव्युत्क्रांति-अपूर्व (मनुष्य संबंधी) शरीरने उत्पन्न करवावडे अने भवव्युत्क्रांति-अपूर्व भव (मनुष्य गति) ने उत्पन्न करवावडे गर्भपणाए करीने व्युत्क्रांत-उत्पन्न थया.

मू०—तं रयणिं च णं पभावइ देवी तंसि तारिसगंसि वासभवणंसि सयणिज्जंसि जाव अद्धरत्तकालसमयंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी ओहीरमाणी इमेयारूवे उराले कल्लाणे सिवे धण्णे मंगल्ले सस्सिरीए चउद्दसमहासुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा । तं जहा—" गय १ वसह २ सीह ३ अभिसेय ४ दाम ५ ससि ६ दिणयर ७ झय ८ कुंभ ९ पउमसर १० सागर ११ विमाण (भवण) १२ रयणुच्चय १३ सिहिं च १४ " । तते णं सा पभावती देवी जेणेव कुंभए राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता जाव भत्तारकहणं सुमिणपाढगपुच्छा जाव विहराति ।

अर्थ—ते रात्रिने विषे प्रभावती देवी ते तेवा प्रकारना (प्रथम वखाणेला) वासभुवनमां शयनने विषे यावत् अर्धरात्रिने समये कांइक सुती (उंघती) अने कांइक जागती वारंवार थोडी थोडी निद्रा लेती सती आवा प्रकारना उदार-प्रधान, कल्याणकारी, शिव-उपद्रव रहित, धन्य, मांगलिक अने सश्रीक-शोभावाळा चौद महास्वप्नने जोइ जागृत थइ. ते चौद स्वप्न आ प्रमाणे—"गज १, वृषभ २, सिंह ३, अभिषेक ४, पुष्पमाला ५, चंद्र ६, सूर्य७, ध्वज ८, कुंभ ९, पद्मसरोवर १०, सागर ११, विमान १२, रत्ननो समूह १३ अने निर्धूम अग्नि १४." त्यारपछी ते प्रभावती देवी ज्यां कुंभ राजा हता, त्यां आवे, आवीने यावत् भर्तारने कहे-यावत् कुंभराजाए स्वप्नपाठकने बोलावी पूछयुं, तेणे तेनुं फळ पुत्रजन्मादि कह्युं. यावत् प्रभावती देवी हृष्ट तुष्ट थइ विचरवा लागी.

(नरकमांथी आवे ते तीर्थंकरनी माता बारमा स्वप्ने विमानने बदले भवन जुए छे तेथी मूळमां विमान साथे भवण शब्द मूकेलो छे.)

मू०—तते णं तीसे पभावतीए देवीए तिण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं इमेयारूवे डोहले पाउब्भूए—धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाओ णं जलथलयभासुरप्पभूएणं दसद्धवन्नेणं मल्लेणं अत्थुयपच्चत्थुयंसि सयणिज्जंसि सन्निसन्नाओ सण्णिवन्नाओ य विहरंति। एगं च महं सिरीदामगंडं पाडलमल्लियचंपयअसोगपुन्नाग[नाग]मरुयगदमणगअणोज्जकोज्जयकोरंटपत्तवरपउरं परमसुहफास-

दरिसणिज्जं महया गंधद्धुणिं मुयंतं अग्घायमाणीओ डोहलं विणेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते प्रभावती देवीने त्रण मास बराबर पूर्ण थया त्यारे आवा प्रकारनो दोहलो (मनोरथ) उत्पन्न थयो—" ते माताओने धन्य छे, के जे माताओ जळ अने स्थळमां उत्पन्न थयेलां, देदीप्यमान–विकस्वर, घणां अने पांचे वर्णनां पुष्पोवडे आच्छादन करेला वारंवार आच्छादन करेला शयनने विषे सुखे बेठी सती तथा सुखे सुती सती विचरती होय. तथा वळी पाटलानां पुष्प, मालतीनां पुष्प, चंपानां पुष्प, अशोकनां पुष्प, पुंनागनां पुष्प, मरुयकनां पांदडां, दमणानां पुष्प, अनवद्य–निर्दोष एवा कुब्जक–शतपत्रिकानां पुष्प अने कोरंटनां श्रेष्ठ पांदडांवडे गुंथेला, परम सुखकारक स्पर्शवाळा अने दर्शनीय–जोवा लायक (सुंदर) तथा अत्यंत सुगंधने मूकता एवा एक मोटा श्रीदामकांडने–सुंदर माळाना समूहने (अथवा दंडने) सुंघती सुंघती पोताना दोहदने पूर्ण करती होय, ते धन्य छे.

मू०—तते णं तीसे पभावतीए देवीए इमेयारूवं डोहलं पाउब्भूतं पासित्ता अहासन्निहिया वाणमंतरा देवा खिप्पामेव जलथलय० जाव दसद्धवन्नमल्लं कुंभग्गसो य भारग्गसो य कुंभगस्स रन्नो भवणंसि साहरंति, एगं च णं महं सिरिदामगंडं जाव गंधद्धुणिं मुयंतं उवणेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते प्रभावती देवीने आवा प्रकारनो दोहलो उत्पन्न थयो जोइने (जाणीने) पासे रहेला वाणमंतर (व्यंतर) देवोए तत्काळ जळ अने स्थळमां उत्पन्न थयेला यावत् ते सर्व जातिनां पंचवर्णी पुष्पो घडाना प्रमाणवाळा

अने भारना प्रमाणवाळा (घणा घडा अने घणा भार) पुष्पो कुंभ राजाना महेलमां लावीने मूक्या, तथा घणा तृप्ति करे तेवा सुगंधने मूकता एक मोटा श्रीदामकांडने पण मूक्युं.

मू०—तए णं सा पभावती देवी जलथलय० जाव मल्लेणं डोहलं विणेति । तए णं सा पभावती देवी पसत्थडोहला जाव विहरइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते प्रभावती देवीए जळ अने स्थळमां उत्पन्न थयेला यावत् ते पुष्पोनी माळावडे पोतानो दोहलो पूर्ण कर्यो. त्यारपछी ते प्रभावती देवी प्रशस्त दोहलावाळी थइने यावत् विचरवा लागी.

मू०—तए णं सा पभावती देवी नवण्हं मासाणं अद्धट्ठमाण य रत्तिंदियाणं जे से हेमंताणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे मग्गसिरसुद्धे तस्स णं मग्गसिरसुद्धस्स एक्कारसीए पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अस्सिणीनक्खत्तेणं जोगमुवागएणं उच्चट्ठाणगएसु गहेसु जाव पमुइयपक्कीलिएसु जणवएसु आरोयारोयं एकूणवीसतिमं तित्थयरं पयाया ॥ ६५ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते प्रभावती देवीए नव मास अने साडा सात रात्रि दिवस व्यतीत थया त्यारे, जे ते हेमंत ऋतुना मासोने मध्ये पहेला मासमां अने बीजा पखवाडीयामां एटले मार्गशीर्ष मासना शुक्लपक्षमां, वळी ते मार्गशीर्ष शुक्लपक्षनी

अग्यारशनी तिथिए मध्य रात्रिने समये अश्विनी नक्षत्रनी साथे चंद्रनो योग आव्यो हतो त्यारे, सर्व ग्रहो उच्च स्थाने रह्या हता त्यारे, यावत् सर्व देशना लोको आनंदथी क्रीडा करता हता, तेवे समये आरोग्य (अनाबाधा) वाळी माताए आरोग्य (अनाबाधा) वाळा ओगणीशमा तीर्थंकरने जन्म आप्यो. ६

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं अहोलोगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीओ मयहरीयाओ जहा जंबुद्दीवपन्नत्तीए जम्मणं सव्वं भाणियव्वं, नवरं मिहिलाए नयरीए कुंभरायस्स भवणंसि पभावतीए देवीए अभिलावो संजोएव्वो जाव नंदीसरवरे दीवे महिमा।

अर्थ—ते काळे ते समये अधोलोकमां वसनारी आठ दिक्कुमारिकाओ महत्तरीकाओ साथे आवी विगेरे जेम जंबूद्वीप प्रज्ञप्तिमां जन्मनुं वर्णन आप्युं छे तेम सर्व ते ज प्रमाणे अहीं कहेवुं. विशेष ए के—मिथिला नगरीमां कुंभराजाना महेलमां प्रभावती नामनी देवीनो आलावो कहेवो (नाम कहेवुं), यावत् देवोए जन्माभिषेक करी नंदीश्वर द्वीपे जइ (अष्टान्हिका) महोत्सव कर्यो.

मू०—तया णं कुंभए राया बहूहिं भवणपतिवाणविंतरजोइसियवेमाणियदेवा तित्थयरजम्मणाभिसेयं जायकम्मं जाव नामकरणं जम्हा णं अम्हे इमीए दारियाए माउगब्भंसि वक्कममाणंसि मल्लसयणिज्जंसि डोहले विणीते तं होउ णं णामेणं मल्ली नामं ठवेति, जहा महाबले नाम

जाव परिवड्डिया ।

अर्थ—त्यारपछी कुंभराजाए घणा भवनपति, वाणवंतर, ज्योतिष अने वैमानिक देवोए तीर्थंकरनो जन्माभिषेक कर्या पछी जातकर्म विगेरे बधा संस्कारो कर्या यावत् नामकरण कर्युं के—"जेथी करीने अमारी आ पुत्री माताना गर्भमां अवतरी हती त्यारे माल्य (पुष्प) नी शय्याने विषे सुवानो दोहलो उत्पन्न थयो हतो अने ते पूर्ण पण थयो हतो, तेथी करीने आ पुत्री नामे करीने मल्ली हो." एम कही तेनुं मल्ली नाम स्थापन कर्युं. जेम महाबल नाम स्थापन कर्युं हतुं तेम जाणवुं, यावत् ते मल्ली वृद्धि पामी.

मू०—"[२]सा वड्ढती भगवती, दियलोयचुता अणोवमासिरीया। दासीदासपरिवुडा, परिकिन्ना पीढमद्देहिं॥१॥ असियसिरया सुनयणा, बिंबोट्ठी धवलदंतपंतीया। वरकमलगब्भगोरी, फुल्लुप्पलगंधनीसासा" ॥२॥६६

अर्थ—देवलोकथी चवेली ते भगवती वृद्धि पामी, त्यारे अनुपम लक्ष्मीवाळी थइ एटले तेना रूपनी लक्ष्मी उपमा आपी न शकाय एवी थइ, दासी अने दासथी परिवरेली थइ, पीठमर्दकवडे व्याप्त थइ, तेना मस्तकना केश काळा हता,

१ भगवती सूत्रमां कह्युं छे तेम. २ आ बे गाथाओ आवश्यक निर्युक्तिनी छे. तेमां श्रीऋषभदेव अने श्रीमहावीरनुं वर्णन छे. ते सर्व विशेषणो प्राये अहीं पण मळता होवाथी अहीं पण आ गाथाओ लखी छे. परंतु सर्व विशेषणो मल्लीने सर्वथा घटे छे एम जाणवुं नहीं. ते आगळ पर बतावशे. ३ प्राये स्त्रीओने पीठमर्दक संभवता नथी. तेथी आ विशेषणनो असंभव छे. अथवा तीर्थंकरोनुं चरित्र लोकोत्तर होवाथी असंभव न कहेवो.

तेनां नेत्रो सुंदर हतां, तेना ओष्ठ पाकेला बिंबफळ जेवा रक्त हता, तेना दांतनी श्रेणि श्वेत हती, तेनुं शरीर श्रेष्ठ कमळना गर्भ जेवुं गौर वर्णवाळुं हतुं, अने तेना श्वासोच्छ्वास विकस्वर कमळ जेवा सुगंधी हता." ६६

मू०—तए णं सा मल्ली विदेहवररायकन्ना उम्मुक्कबालभावा जाव रूवेण जोव्वणेण य जाव लावन्नेण य अतीव अतीव उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था।

अर्थ—त्यारपछी विदेह देशना राजानी श्रेष्ठ कन्या ते मल्ली कुमारी बाल्यावस्थाथी मुक्त थइ यावत् रूपे करीने अने यौवने करीने यावत् लावण्यवडे करीने अत्यंत अत्यंत उत्कृष्ट रूपवाळी अने उत्कृष्ट शरीरवाळी थइ.

मू०—तते णं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना देसूणवाससयजाया ते छ प्पिय रायाणो विपुलेणं ओहिणा आभोएमाणी आभोएमाणी विहरति, तं जहा—पडिबुद्धिं जाव जियसत्तुं पंचालाहिवइं।

अर्थ—त्यारपछी विदेह राजनी श्रेष्ठ कन्या ते मल्लीकुमारी कांइक ओछा सो वर्षनी थइ त्यारे ते छए प्रियमित्र

१ कमळनो गर्भ—मध्य भाग सुवर्ण जेवो होय छे अने मल्लीनो वर्ण प्रियंगु जेवो श्याम छे, तेथी आ विशेषण असंभवित छे. अथवा वरकमळ एटले प्रधान मृग, तेनो गर्भ एटले कस्तूरिका, तेना जेवो श्याम वर्ण छे. एवो अर्थ करवो. पाठातरमा वरकमलगब्भ वण्णा—एवो पाठ छे, तेनो पण ए ज अर्थ जाणवो. वाचनांतरमां—वरकमलकोमलंगी—'श्रेष्ठ कमळ जेवा कोमळ अंगवाळी' एवो पाठ छे ते तो संभवित ज छे.

३८

तेनां नेत्रो डुंवर हतां, तेना ओष्ठ पाकेला बिंबफळ जेवा रक्त हता. [illegible]
गर्भ जेवुं गौर वर्णवाळुं हतां. [illegible]

तेनां नेत्रो सुंदर हतां, तेना ओष्ठ पाकेला बिंबफळ जेवा रक्त हता, तेना दांतनी श्रेणि श्वेत हती, तनु शरीर श्रेष्ठ कमळना गर्भ जेवुं गौर वर्णवाळुं हतुं, अने तेना श्वासोच्छ्वास विकस्वर कमळ जेवा सुगंधी हता." ६६

मू०—तए णं सा मल्ली विदेहवररायकन्ना उम्मुक्कबालभावा जाव रूवेण जोव्वणेण य जाव लावन्नेण य अतीव अतीव उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था।

अर्थ—त्यारपछी विदेह देशना राजानी श्रेष्ठ कन्या ते मल्ली कुमारी बाल्यावस्थाथी मुक्त थइ यावत् रूपे करीने अने यौवने करीने यावत् लावण्यवडे करीने अत्यंत अत्यंत उत्कृष्ट रूपवाळी अने उत्कृष्ट शरीरवाळी थइ.

मू०—तते णं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना देसूणवाससयजाया ते छ प्पिय रायाणो विपुलेणं ओहिणा आभोएमाणी आभोएमाणी विहरति, तं जहा—पडिबुद्धिं जाव जियसत्तुं पंचालाहिवइं।

अर्थ—त्यारपछी विदेह राजनी श्रेष्ठ कन्या ते मल्लीकुमारी कांइक ओछा सो वर्षनी थइ त्यारे ते छए प्रियमित्र

१ कमळनो गर्भ—मध्य भाग सुवर्ण जेवो होय छे अने मल्लीनो वर्ण प्रियंगु जेवो श्याम छे, तेथी आ विशेषण असंभवित छे. अथवा वरकमळ एटले प्रधान मृग, तेनो गर्भ एटले कस्तूरिका, तेना जेवो श्याम वर्ण छे. एवो अर्थ करवो. पाठांतरमां वरकमलगब्भ वण्णा—एवो पाठ छे, तेनो पण ए ज अर्थ जाणवो. वाचनांतरमां—वरकमलकोमलंगी—'श्रेष्ठ कमळ जेवा कोमळ अंगवाळी' एवो पाठ छे ते तो संभवित ज छे.

राजाओने पोताना विपुल अवधिज्ञानवडे जोती जोती रही. ते आ प्रमाणे–प्रतिबुद्धि राजाथी लइ यावत् पंचाल देशना राजा जितशत्रुने जाणती हती.

मू०–तते णं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वदासी–"गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! असोगवणियाए एगं महं मोहणघरं करेह अणेगखंभसयसन्निविट्ठं।

अर्थ—त्यारपछी ते मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्याए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं के–" हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ अने अशोकवनमां मोहनगृह[1] बनावो. तेमां अनेक सेंकडो स्तंभो स्थापन करो एटले अनेक स्तंभोवाळुं ते मोहनघर बनावो.

मू०–तस्स णं मोहणघरस्स बहुमज्झदेसभाए छ गब्भघरए करेह। तेसिं णं गब्भघरगाणं बहुमज्झदेसभाए जालघरयं करेह। तस्स णं जालघरयस्स बहुमज्झदेसभाए मणिपेढियं करेह"। ते वि तहेव जाव पच्चप्पिणंति।

अर्थ—तथा ते मोहनगृहना मध्य भागमां छ गर्भगृह[2] करो. ते छए गर्भगृहोनी मध्ये (वच्चे) एक जालगृह[3] बनावो.

१ मोह उत्पन्न करे तेवुं घर. २ वासगृह (ओरडा). ३ पांजरानी जेवुं लोढाना सळीयानुं अने लाकडानुं बनावेलुं घर जेमां रहेली वस्तु बहार रहेला मनुष्य जोइ शके.

ते जालगृहनी वच्चे एक मणिमय पीठिका बनावो." ते सांभळी ते कौटुंबिक पुरुषोए ते प्रमाणे बनावी यावत् तेनी आज्ञा पाछी आपी.

मू०—तते णं मल्ली मणिपेढियाए उवरिं अप्पणो सरिसियं सरित्तयं सरिसव्वयं सरिसलावन्न-जोव्वणगुणोववेयं कणगमइं मत्थयच्छिड्डुं पउमुप्पलप्पिहाणं पडिमं करेति, करित्ता जं विपुलं असणं पाणं खादिमं सादिमं आहारेति, ततो मणुन्नाओ असणपाणखादिमसादिमाओ कल्लाकल्लिं एगमेगं पिंडं गहाय तीसे कणगमतीए मत्थयछिड्डाए जाव पडिमाए मत्थयंसि पक्खिवमाणी पक्खिवमाणी विहराति ।

अर्थ—त्यारपछी ते मल्लीकुमारीए ते मणिपीठिका उपर पोतानी जेवी, पोतानी सदृश त्वचावाळी, पोतानी सदृश वयवाळी अने पोतानी सदृश लावण्य, यौवन अने गुणे करीने सहित एवी एक सुवर्णनी प्रतिमा करावी. ते प्रतिमाना मस्तकपर एक छिद्र राख्युं, अने छिद्रने कमळनुं ढांकणुं कर्युं, तेवी प्रतिमा करीने पछी पोते जे कांइ विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम ए चार प्रकारनो आहार करे छे, ते मनोहर एवा अशन, पान, खादीम अने स्वादिममांथी हमेशां एक एक पिंड (कवल) ग्रहण करीने ते सुवर्णनी प्रतिमाना मस्तकना छिद्रमां यावत् प्रतिमाना मस्तकमां नांखती नांखती विचरवा लागी.

मू०–तते णं तीसे कणगमतीए जाव मत्थयछिड्डाए पडिमाए एगमेगंसि पिंडे पक्खिप्पमाणे पक्खिप्पमाणे पउमुप्पलपिहाणं पिहेइ । ततो गंधे पाउब्भवति, से जहानामए अहिमडेति वा जाव एत्तो अणिट्ठतराए अमणामतराए ॥ ६७ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते सुवर्णमय प्रतिमाना यावत् मस्तक उपर छिद्रवाळी ते प्रतिमाने विषे एक एक पिंड नांखे सते नांखे सते (नांखी नांखीने) ते उपर कमळनुं ढांकणुं ढांकी देती हती. तेथी तेमां दुर्गंध उत्पन्न थतो हतो. ते दुर्गंध जेम कोइ सर्पना मृतकनो होय, अथवा गायना मृतकनो होय, यावत् तेनाथी पण अत्यंत अनिष्ट अने अत्यंत अमनोज्ञ उत्पन्न थयो. ६७.

मू०–ते णं काले णं ते णं समए णं कोसला नाम जणवए होत्था । तत्थ णं सागेए नाम नयरे होत्था । तस्स णं उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थ णं महं एगे णागघरए होत्था दिव्वे सच्चे सच्चोवाए संनिहियपाडिहेरे ।

अर्थ— ते काळे ते समये कोशल नामनो देश हतो. ते कोशल देशमां साकेत नामनुं नगर हतुं. ते साकेत नगरनी उत्तर पूर्व (ईशान) दिशामां एक मोटुं नागगृह–नागनी प्रतिमा युक्त चैत्य हतुं, ते चैत्य दिव्य–प्रधान हतुं, ते नागदेवनुं कहेलुं सत्य पडतुं होवाथी ते सत्य हतुं, सत्यावपात–ते नागदेवनी करेली सेवा सफळ थती हती, अने तेना प्रातिहारिक समीपे हता एटले के ते देवाधिष्ठित हतुं.

मू०—तत्थ णं नगरे पडिबुद्धी नाम इक्खागुराया परिवसति, तस्स पउमावती देवी, सुबुद्धी अमच्चे सामदंड० जाव रज्जधुराचिंतए होत्था ।

अर्थ—ते साकेत नगरमां प्रतिबुद्धि नामनो इक्ष्वाकु वंशनो राजा वसतो हतो. तेने पद्मावती नामनी देवी (पट्टराणी) हती, अने सुबुद्धि नामे अमात्य हतो, ते अमात्य साम, दाम, भेद अने दंड ए चारे नीतिमां कुशळ हतो यावत् राज्यधुरानो चिंतक हतो.

मू०—तते णं पउमावतीए अन्नया कयाइं नागजन्नए यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते पद्मावती देवीने एकदा कदाचित् नागपूजानो उत्सव आव्यो.

मू०—तते णं सा पउमावती नागजन्नमुवट्ठियं जाणित्ता जेणेव पडिबुद्धी राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल० जाव एवं वदासी—"एवं खलु सामी! मम कल्लं नागजन्नए यावि भविस्सति, तं इच्छामि णं सामी! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी नागजन्नयं गमित्तए, तुब्भे वि णं सामी! मम नागजन्नयंसि समोसरह"।

अर्थ—त्यारे ते पद्मावती देवी नागपूजानो उत्सव प्राप्त थयो जाणी ज्यां प्रतिबुद्धि राजा हता, त्यां आवी, आवीने

तेणीए बे हाथ जोडी यावत् आ प्रमाणे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे हे स्वामी ! मारे काले नागपूजा करवानी छे, तेथी हे स्वामी ! तमोए आज्ञा आपी सती हुं नागपूजा करवा जवाने इच्छुं छुं. अने तमे पण हे स्वामी ! मारी नागपूजामां पधारो एम हुं इच्छुं छुं."

मू०—तते णं पडिबुद्धी पउमावतीए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेति ।

अर्थ—त्यारपछी प्रतिबुद्धि राजाए पद्मावती देवीनो ते अर्थ अंगीकार कर्यो.

मू०—तते णं पउमावती पडिबुद्धिणा रन्ना अब्भणुन्नाया हट्ठ तुट्ठा जाव कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दाविता एवं वदासी—" एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम कल्लं नागजण्णए भविस्सति, तं तुब्भे मालागारे सद्दावेह, सद्दाविता एवं वदह—

अर्थ—त्यारपछी ते पद्मावती देवीए आ प्रमाणे प्रतिबुद्धि राजाए आज्ञा आपी त्यारे हृष्ट तुष्ट थइ यावत् कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं के—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! मारे काले नागपूजा करवानी छे, तेथी तमे माळीने बोलावो, बोलावीने आ प्रमाणे कहो.—

मू०—एवं खलु पउमावईए देवीए कल्लं नागजन्नए भविस्सइ, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! जलथलय० दसद्धवन्नं मल्लं णागघरयंसि साहरह, एगं च णं महं सिरिदामगंडं उवणेह । तते णं

जलथलय० दसद्धवन्नेणं मल्लेणं णाणाविहभत्तिसुविरइयं करेह, तंसि भत्तिंसि हंसमियमउरकोंच-सारसचक्कवायमयणसालकोइलकुलोववेयं ईहामिय जाव भत्तिचित्तं महग्घं महरिहं विपुलं पुप्फमंडवं विरएह । तस्स णं बहुमज्झदेसभाए एगं महं सिरिदामगंडं जाव गंधध्धुणिं मुयंतं उल्लोयंसि ओलंबेह, ओलंबित्ता पउमावतिं देविं पडिवालेमाणा पडिवालेमाणा चिट्ठह "। तते णं ते कोडुंबिया जाव चिट्ठंति ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे पद्मावती देवीने काले नागपूजा थवानी छे, (करवानी छे) तेथी हे देवानुप्रियो ! तमे जळमां अने स्थळमां उत्पन्न थयेला यावत् सर्व जातिना पंचवर्णी पुष्पो नागगृहमां लइ जाओ. अने एक मोटुं श्रीदामकांड (शोभित माळानो समूह) लावो (बनावो). त्यारपछी जळमां अने स्थळमां उत्पन्न थयेलां पंचवर्णी पुष्पोवडे विविध प्रकारनी रचनाए करीने तेने सारी रचनावाळुं करो, अने ते रचनामां हंस, मृग, मयूर, क्रौंच, सारस, चक्रवाक, मयण (मेना) अने कोकिल (कोयल) ना समूह सहित तथा ईहामृग, वृषभ, तुरग विगेरेनी यावत् रचनावाळा चित्रो करी मोटा मूल्यवाळा, मोटाने लायक अने विस्तारवाळा एक पुष्पमंडपने रचो. ते मंडपना मध्य भागमां एक मोटा अने सुगंधना समूहने मूकता श्रीदामकांडने उल्लोच उपर लटकावो, लटकावीने पद्मावती देवीनी राह जोता राह जोता रहो." त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषोए ते प्रमाणे कर्युं, अने माळी पण ते प्रमाणे करी यावत् राह जोता रह्या.

मू०–तते णं सा पउमावती देवी कल्लं० कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वदासी–" खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सागेयं नगरं सब्भितरबाहिरियं आसितसम्मज्जितोवलित्तं० " जाव पच्चप्पिणंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते पद्मावती देवीए काले (बीजे दिवसे) प्रातःकाळे कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रियो ! शीघ्रपणे साकेत नगरमां बहार अने अंदर पाणी छांटी, कचरो काढी तथा लींपीने साफ करो. " यावत् ते प्रमाणे करी तेओए तेनी आज्ञा पाछी आपी.

मू०–तते णं सा पउमावती देवी दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वदासी–" खिप्पामेव देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्तं जाव जुत्तामेव उवट्ठवेह "। तते णं ते वि तहेव उवट्ठावेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते पद्मावती देवीए बीजी वार कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रियो ! शीघ्रपणे लघुकरणे करीने युक्त (शीघ्र चालनारा अश्वोवडे युक्त) यावत् रथने जोडीने लावो. " ते सांभळी तेओ पण ते ज प्रमाणे रथ जोडीने लाव्या.

मू०—तते णं सा पउमावती अंतो अंतेउरंसि ण्हाया जाव धम्मियं जाणं दुरूढा ।

अर्थ—त्यारपछी ते पद्मावती देवी अंतःपुरने विषे स्नान करी आभूषणादिक पहेरी यावत् तैयार थइ धार्मिक वाहन (रथ) उपर आरूढ थइ.

मू०—तए णं सा पउमावई नियगपरिवालसंपरिवुडा सागेयं नगरं मज्झंमज्झेणं णिज्जति, णिज्जित्ता जेणेव पुक्खरणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पुक्खरणिं ओगाहइ, ओगाहित्ता जलमज्जणं जाव परमसुइभूया उल्लपडसाडया जातिं तत्थ उप्पलातिं जाव गेण्हति, गेण्हित्ता जेणेव नागघरए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

अर्थ—त्यारपछी ते पद्मावती देवी पोताना परिवार सहित साकेत नगरनी मध्ये थइने नीकळी, नीकळीने ज्यां पुष्करणी (वाव) हती, त्यां आवी, आवीने पुष्करणीमां प्रवेश कर्यो, प्रवेश करी जळमज्जन (स्नान) कर्युं, यावत् अत्यंत पवित्र थइ भीनी साडी सहित त्यां जे कमळ विगेरे हतां ते यावत् ग्रहण कर्यां, ग्रहण करीने ज्यां नागगृह हतुं, त्यां आववाने (जवाने) धार्युं—निश्चय कर्यो, अर्थात् जवा नीकळी.

मू०—तते णं पउमावतीए दासचेडीओ बहूओ पुप्फपडलगहत्थगयाओ धूवकडुच्छुगहत्थग-

याओ पिट्ठतो समणुगच्छंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते पद्मावती देवीनी घणी दासचेटीओ (दासीओ) हाथमां पुष्पनी छाबडीओ लइ तथा धूपनी घडीओ हाथमां राखी तेनी पाछळ चाली.

मू०—तते णं पउमावती सव्विड्ढिए जेणेव नागघरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता नागघरयं अणुपविसति, अणुपविसित्ता लोमहत्थगं जाव धूवं डहति, डहित्ता पडिबुद्धिं रायं पडिवालेमाणी पडिवालेमाणी चिट्ठति ।

अर्थ—त्यारपछी ते पद्मावती देवी सर्व समृद्धि सहित ज्यां नागगृह हतुं, त्यां आवी, आवीने नागगृहमां प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने लोमहस्तक (पुंजणी) लइ प्रतिमाने पुंजी तथा सर्व प्रकारनी पूजा करी यावत् धूप उवेख्यो, धूप उवेखीने प्रतिबुद्धि राजानी राह जोती राह जोती रही.

मू०—तते णं पडिबुद्धी राया ण्हाए हत्थिखंघवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धारिज्जमाणेणं जाव सेयवरचामराहिं महयाहयगयरहजोहमहयाभडगचडकरपहकरेहिं साकेयनगरं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छति, णिग्गच्छित्ता जेणेव नागघरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरु-

हति, पच्चोरुहित्ता आलोए पणामं करेइ, करित्ता पुप्फमंडवं अणुपविसति, अणुपविसित्ता पासति तं एगं महं सिरिदामगंडं ।

अर्थ—त्यारपछी ते प्रतिबुद्धि राजा स्नान करी श्रेष्ठ हस्तीना स्कंधपर आरूढ थया, कोरंटना पुष्प सहित बीजा पुष्पनी माळा जेने वींटेली हती एवुं छत्र तेना मस्तक पर धारण करवामां आव्युं, श्रेष्ठ श्वेत चामरो तेने वींझावा लाग्या, तेनी आगळ घणा मोटा हाथीओ, अश्वो, रथो अने सुभटोना समूह एम चतुरंग सैन्य चाल्युं, ए रीते मोटा परिवारथी परिवरेलो राजा साकेत नगरना मध्यभागे थइने नीकळ्यो, नीकळीने ज्यां नागगृह हतुं, त्यां आव्यो, आवीने हाथीना स्कंधपरथी नीचे उतर्यो, उतरीने प्रतिमाने जोइ के तरत तेणे प्रणाम कर्या, प्रणाम करी पुष्पना मंडपमां प्रवेश कर्यो, प्रवेश करी तेणे ते मोटो श्रीदामगंड जोयो.

मू०—तए णं पडिबुद्धी तं सिरिदामगंडं सुइरं कालं निरिक्खइ, निरिक्खित्ता तंसि सिरिदामगंडंसि जायविम्हए सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी—

अर्थ—त्यारपछी ते प्रतिबुद्धि राजाए ते श्रीदामगंडने चिरकाळ सुधी जोयो, जोइने ते श्रीदामगंडने विषे विस्मय पामी सुबुद्धि अमात्यने आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—" तुमं णं देवाणुप्पिया ! मम दोच्चेणं बहूणि गामागर० जाव संनिवेसाइं आहिंडासि,

बहुणि रायईसर जाव गिहातिं अणुपविससि, तं अत्थि णं तुमे कहिंचि एरिसए सिरिदामगंडे दिट्ठपुव्वे जारिसए णं इमे पउमावतीए देवीए सिरिदामगंडे ?"।

अर्थ—"हे देवानुप्रिय! तुं मारा दूतपणावडे घणा गाम, नगर, आकर विगेरे यावत् नाना गामोमां (अनेक गामोमां) जाय छे, अने घणा राजाओ, इभ्यो विगेरेना यावत् गृहोमां तुं प्रवेश करे छे, तो जेवो आ पद्मावती देवीनो श्रीदामकांड छे, तेवो श्रीदामकांड बीजे कोइ ठेकाणे तें प्रथम जोयेलो छे?"

मू०—तते णं सुबुद्धी पडिबुद्धिं रायं एवं वदासी—"एवं खलु सामी! अहं अन्नया कयाइं तुब्भं दोच्चेणं मिहिलं रायहाणिं गते, तत्थ णं मए कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए संवच्छरपडिलेहणगंसि दिव्वे सिरिदामगंडे दिट्ठपुव्वे। तस्स णं सिरिदामगंडस्स इमे पउमावतीए सिरिदामगंडे सयसहस्सातिमं पि कलं ण अग्घति।

अर्थ—त्यारे ते सुबुद्धि अमात्ये प्रतिबुद्धि राजाने आ प्रमाणे कह्युं—"आ प्रमाणे निश्चे हे स्वामी! एकदा कदाचित् हुं तमारा दूतपणाए करीने (तमारा काम माटे) मिथिला नामनी राजधानीमां गयो हतो. त्यां में कुंभराजानी पुत्री, प्रभावती देवीनी आत्मजा मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्याना संवत्सर प्रतिलेखन (प्रत्युपेक्षण)—जन्म दिवसथी

आरंभीने आटलामुं वर्ष आजे पूर्ण थयुं एम जे दिवसे महोत्सवपूर्वक जणाववामां आवे ते अर्थात् उमरना वर्षनी संख्याना ज्ञानने माटे जे ग्रंथिबंध करवामां आवे छे ते वर्षगांठ अथवा जन्मदिवस कहेवाय छे ते जन्मदिवसना महोत्सवने दिवसे दिव्य (मनोहर) श्रीदामकांड प्रथम जोयेलो हतो, ते श्रीदामकांडनी पासे आ पद्मावती देवीनो श्रीदामकांड लाखमे अंशे पण मूल्यने पामतो नथी–लाखमे भागे पण नथी.

मू०—तते णं पडिबुद्धी राया सुबुद्धिं अमच्चं एवं वदासी–" केरिसिया णं देवाणुप्पिया ! मल्ली विदेहरायवरकन्ना जस्स णं संवच्छरपडिलेहणयंसि सिरिदामगंडस्स पउमावतीए देवीए सिरिदाम-गंडे सयसहस्सतिमं पि कलं न अग्घति ? " ।

अर्थ—त्यारपछी ते प्रतिबुद्धि राजाए सुबुद्धि अमात्यने आ प्रमाणे कह्युं–" हे देवानुप्रिय ! ते मल्ली नामनी विदेह-राजनी श्रेष्ठ कन्या केवी छे के जेना जन्मदिवसना (वर्षगांठना) महोत्सवमां करेला श्रीदामकांडनी पासे पद्मावती देवीनो श्रीदामकांड लाखमा अंशने पण न पामे ? "

मू०—तते णं सुबुद्धी अमच्चे पडिबुद्धिं इक्खागुरायं एवं वदासी–" एवं खलु सामी ! मल्ली विदेहरायवरकन्नगा सुपइट्ठियकुम्मुन्नयचारुचरणा, वन्नओ ।

अर्थ—त्यारे सुबुद्धि अमात्ये प्रतिबुद्धि नामना इक्ष्वाकुवंशना राजाने आ प्रमाणे कह्युं–" आ प्रमाणे निश्चे हे स्वामी !

मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्या सुप्रतिष्ठित कूर्मोन्नत चारुचरणवाळी छे, एटले के तेणीना चरण काचबानी जेवा उंचा अने सारी रीते स्थापन करेला छे. इत्यादि वर्णन जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति विगेरेमां जे प्रमाणे आप्युं छे ते प्रमाणे जाणवुं."

मू०--तते णं पडिबुद्धी राया सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म सिरिदाम-गंडजणितहासे दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वदासी--" गच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिया ! मिहिलं रायहाणिं, तत्थ णं कुंभगस्स रन्नो धूयं पभावतीए देवीए अत्तयं मल्लिं विदेहरायवरकण्णगं मम भारियत्ताए वरेहि, जति वि य णं सा सयं रज्जसुंका "।

अर्थ--त्यारपछी ते प्रतिबुद्धि राजाने सुबुद्धि अमात्यनी पासेथी आ अर्थ (वृत्तांत) सांभळी हृदयमां धारी श्री-दामना कांडनी वातथी हर्ष (अनुराग) उत्पन्न थयो, तेथी तेणे दूतने बोलाव्यो, बोलावीने कह्युं के--" हे देवानुप्रिय ! तुं मिथिला नामनी राजधानीमां जा. अने त्यां कुंभ राजानी पुत्री प्रभावती देवीनी आत्मजा मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्या छे, तेने मारी भार्यापणे तुं मागणी कर. तेमां जो कदाच ते पोते मारा आखा राज्यना मूल्यवाळी होय--मारुं आखुं राज्य मागे तोपण ते कबुल करजे."

मू०--तते णं से दूए पडिबुद्धिणा रन्ना एवं वुत्ते समाणे हट्ठ तुट्ठे पडिसुणेति, पडिसुणित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छाति, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं पडि-

कप्पावेति पडिकप्पावित्ता दुरूढे जाव हयगयमहयाभडचडगरेणं साएयाओ णिग्गच्छति, णिग्गच्छित्ता जेणेव विदेहजणवए जेणेव मिहिला रायहाणी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ ६८ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते दूते प्रतिबुद्धि राजाए आ प्रमाणे कहे सते हृष्ट तुष्ट थइ तेनी आज्ञा अंगीकार करी, अंगीकार करीने ज्यां पोतानुं घर हतुं अने ज्यां चार घंटावाळो अश्वयुक्त रथ हतो, त्यां आव्यो. आवीने चार घंटावाळा अश्वयुक्त रथने तैयार कर्यो, तैयार करी तेनापर आरूढ थयो, यावत् अश्व, गज अने घणा सुभटोना समूह सहित साकेत नगरथी नीकळ्यो, नीकळीने ज्यां विदेह नामनो देश हतो अने ज्यां मिथिला नामनी राजधानी हती, त्यां जवा माटे चाल्यो. ६८

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं अंगा नाम जणवए होत्था । तत्थ णं चंपानामे णयरी होत्था । तत्थ णं चंपाए नयरीए चंदच्छाए अंगराया होत्था ।

अर्थ—ते काळे ते समये अंग नामनो देश हतो. तेमां चंपा नामनी नगरी हती. ते चंपा नगरीमां चंद्रछाय नामे अंगराज हतो.

मू०—तत्थ णं चंपाए नयरीए अरहन्नगपामोक्खा बहवे संजत्ता णावावाणियगा परिवसंति, अड्ढा जाव अपरिभूया ।

---

१ आगळ, पाछळ अने बे पडखे एम चार घंटा होय.   २ अंग देशनो राजा.

अर्थ—ते चंपा नगरीने विषे अर्हन्नक विगेरे घणा सांयात्रिक नौवणिक रहेता हता. तेओ ऋद्धिवाळा अने यावत् अपरिभूत—कोइथी पराभव न पामे तेवा हता.

मू०—तते णं से अरहन्नगे समणोवासए यावि होत्था, अहिगयजीवाजीवे, वन्नओ ।

अर्थ—तेमां पण जे अर्हन्नक हतो ते श्रमणोपासक (श्रावक) पण हतो, तेथी ते जीवाजीवादिक तत्त्वोने जाणतो हतो, तेनुं वर्णन कहेवुं.

मू०—तते णं तेसिं अरहन्नगपामोक्खाणं संजत्ताणावावाणियगाणं अन्नया कयाइ एययओ सहियाणं इमे एयारूवे मिहो कहासंलावे समुप्पजित्था—

अर्थ—त्यारपछी ते अर्हन्नक विगेरे सर्वे सांयात्रिक नौवणिक एकदा कदाचित् एक ठेकाणे भेळा थया, ते वखत तेओने आ आवा प्रकारनो परस्पर कथानो संलाप थयो—वातचीत थइ—

मू०—सेयं खलु अम्हं गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च भंडगं गहाय लवणसमुद्दं पोतवहणेण ओगाहित्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नं एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता गणिमं च धरिमं च मेज्जं

१ परदेश यात्रा—प्रयाण करीने वेपार करनारा. २ वहाण रस्ते जइ वेपार करनारा.

च पारिच्छेज्जं च भंडगं गेण्हंति, गेण्हित्ता सगडिसागडियं च सज्जेंति, सज्जित्ता गणिमस्स च धरि-
मस्स च मेज्जस्स च पारिच्छेज्जस्स च भंडगस्स सगडसागडियं भरेंति, भरित्ता सोहणंसि तिहिकरण-
नक्खत्तमुहुत्तंसि विपुलं असणं पाणं खादिमं सादिमं उवक्खडावेंति मित्तणाइभोअणवेलाए भुंजा-
वेंति जाव आपुच्छंति, आपुच्छित्ता सगडिसागडियं जोयंति, जोइत्ता चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं
णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति—

अर्थ—" आपणे गंणिम[1], धरिम[2], मेय[3] अने परिच्छेद्य[4] ए चार प्रकारनुं भांड ग्रहण करीने वहाणवडे लवणसमुद्रमां प्रवेश करवो श्रेयकारक—योग्य छे. " एम करीने—विचारीने तेमणे परस्पर आ अर्थने अंगीकार कर्यो, अंगीकार करीने गणिम, धरिम, मेय अने परिछेद्य ए चार प्रकारनुं भांड ग्रहण कर्युं, ग्रहण करीने गाडी गाडां सज्ज कर्यां, सज्ज करीने गणिम, धरिम, मेय अने परिच्छेद्य ए चार प्रकारना भांड गाडा गाडीमां भर्यां, भरीने शुभ एवा तिथि, करण, नक्षत्र अने मुहूर्तने विषे विपुल एवा अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने तैयार कराव्या, भोजन वेळाए मित्र, ज्ञाति विगेरेने जमाड्या, यावत् तेमनी रजा लीधी, रजा लइने गाडी गाडां जोड्यां, जोडीने चंपा नगरीना मध्य भागे करीने नीकळ्या, नी-

१ नालीयेर, सोपारी विगेरे गणतरीथी वेचाय ते. २ तोळीने लेवाय देवाय ते घी, तेल विगेरे. ३ जे पाली, पवाला विगेरेवडे मापीने अपाय ते दाणा विगेरे. ४ जे कापीने वेचाय ते वस्त्र, मणि विगेरे.

कळीने ज्यां गंभीर नामनुं पोतपट्टण[1] हतुं त्यां आव्या.

मू०—उवागच्छित्ता सगडिसागडियं मोयंति, मोइत्ता पोयवहणं सज्जेंति, सज्जित्ता गणिमस्स य धरिमस्स य मेज्जस्स य पारिच्छेज्जस्स य चउव्विहस्स भंडगस्स भरेंति, भरित्ता तंडुलाण य समितस्स य तेल्लस्स य गुलस्स य घयस्स य गोरसस्स य उदयस्स य उदयभायणाण य ओसहाण य भेसज्जाण य तणस्स य कट्ठस्स य आवरणाण य पहरणाण य अन्नेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं दव्वाणं पोतवहणं भरेंति, भरित्ता सोहणंसि तिहिकरणनक्खत्तमुहुत्तंसि विपुलं असणं पाणं खादिमं सादिमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावित्ता मित्तणाति० आपुच्छंति, आपुच्छित्ता जेणेव पोतट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति ।

अर्थ—गंभीर नामना पोतपट्टन (बंदर)मां आवीने गाडां गाडी छोड्यां, छोडीने वहाणोने सज्ज कर्यां, सज्ज करीने गणिम, धरिम, मेय अने परिछेद्य ए चार प्रकारना भांड तेमां भर्यां, भरीने वळी तेमां तंडुल, आटो, तेल, गोळ, घी, दहीं, पाणी, पाणीना वासण, औषध[2], भेषज[3], घास, काष्ठ, आवरण (अंगरक्षक वस्त्रादि), प्रहरण (शस्त्र) अने बीजां घणां द्रव्यो

१ वहाण रहेवानुं पाटण—शहेर—बंदर. २ पथ्य आहारादिक. अथवा एक वस्तुरूप ते औषध. ३ घणी वस्तुना संयोगथी बनेलुं ते भेषज.

के जे वहाणने योग्य हतां ते सर्व भर्यां. भरीने शुभ एवा तिथि, करण, नक्षत्र अने मुहूर्तने विषे विपुल एवा अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने तैयार कराव्या, तैयार करावीने मित्र, ज्ञाति विगेरेने भोजन समये जमाडी यावत् तेमनी रजा मागी. रजा लइ ज्यां वहाण रहेवानुं स्थान हतुं त्यां (समुद्र किनारे) आव्या.

मू०—तते णं तेसिं अरहन्नगपामोक्खाणं जाव वाणियगाणं परियणो जाव तारिसेहिं वग्गूहिं अभिणंदंता य अभिसंथुणमाणा य एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते अर्हन्नक विगेरे यावत् ते पोतवाणीयाओनो (समुद्रना वेपारीओनो) परिजन (परिवार) यावत् तेवा प्रकारना मनोहर वचनवडे तेमने आशीर्वाद देतो अने प्रशंसा करतो सतो आ प्रमाणे बोल्यो.—

मू०—" अज्ज ! ताय ! भाय ! माउल ! भाइणेज्ज ! भगवया समुद्देणं अभिरक्खिज्जमाणा अभिरक्खिज्जमाणा चिरं जीवह, भद्दं च भे, पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे नियगं घरं हव्वमागए पासामो " त्ति कट्टु ताहिं सोमाहिं निद्धाहिं दीहाहिं सप्पिवासाहिं पप्पुयाहिं दिट्ठीहिं निरिक्खमाणा मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठंति ।

अर्थ—" हे आर्य (पितामह) ! हे तात ! हे भ्रात ! हे मामा ! हे भाणेज ! पूज्य एवा आ समुद्रे रक्षण कर्या रक्षण कर्या एवा

तमे चिरकाळ जीवो, अने तमारुं भद्र–कल्याण थाओ. फरीथी अर्थ (धन) मेळवी, कार्य करी अनघ अने समग्र एवा तमे शीघ्र पोताने घेर पाछा आवो, तमने क्षेमकुशळ अमे जोइए. " आ प्रमाणे कहीने तेवा प्रकारनी सौम्य–विकार रहित, स्निग्ध––स्नेहवाळी, दीर्घ–दूर सुधी जोवाथी लांबी, पिपासावाळी–जोवाथी अतृप्त अथवा फरीथी जोवानी इच्छावाळी अने प्रप्लुत–अश्रुवडे भीनी थयेली दृष्टिवडे जोता जोता ते स्वजनो एक क्षणवार उभा रह्या.

मू०–तओ समाणिएसु पुप्फबलिकम्मेसु, दिन्नेसु सरसरत्तचंदणदद्दरपंचंगुलितलेसु अणुक्खित्तंसि धूवंसि पूतिएसु समुद्दवाएसु संसारियासु वलयबाहासु ऊसिएसु सिएसु झयग्गेसु पडुप्पवाइएसु तूरेसु जइएसु सव्वसउणेसु गहिएसु रायवरसासणेसु महया उक्किट्ठसीहणाय जाव रवेणं पक्खुभितमहासमुद्दरवभूयंपि व मेइणिं करेमाणा एगदिसिं जाव वाणियगा णावं दुरूढा ।

अर्थ–त्यारपछी ते वहाणोमां पुष्प बलि (पूजा)नुं कर्म समाप्त करे सते, रसवाळा रक्तचंदन (कंकु)ना चपेटा जेवा पांच आंगळीना तळीया (थापा) दीधे सते, धूप उपाडे सते. समुद्रना वायुनी पूजा करे सते, वलयबाहा एटले पावडीओ योग्य स्थाने स्थापन करे सते, श्वेत पताकाओ उंची करे सते, कुशळ पुरुषोए अथवा सुंदर रीते वाजित्रो वगाडे सते, काकना शब्द विगेरे सर्व शकुनो जय आपनारा थये सते तथा राजानुं श्रेष्ठ शासन (जवानी आज्ञानुं पत्र) ग्रहण

१ दोष रहित. २ अन्यून धन अने परिवार सहित.

करे सते मोटा उत्कृष्ट सिंहनाद विगेरेना यावत् शब्दवडे जाणे के क्षोभ पामेला महासमुद्रना शब्दथी शब्दमय थइ होय एवी पृथ्वीने करता एवा ते वणिको एक दिशाए (एक तरफथी) यावत् नाव उपर आरूढ थया.

मू०—ततो पुस्समाणवो वक्कमुदाहु—" हं भो ! सव्वेसिमवि अत्थसिद्धी उवट्ठिताइं कल्लाणाइं पडिहयातिं सव्वपावाइं जुत्तो पूसो विजओ मुहुत्तो अयं देसकालो " ।

अर्थ—त्यारपछी बंदीजने आ प्रमाणे वचन कह्युं—" हे वेपारीओ ! तमने सर्वेने अर्थसिद्धि प्राप्त थाओ, तमोने कल्याण प्राप्त थयां छे, तमारां सर्व पापो (विघ्नो) नाश पाम्यां छे, आ वखते पुष्य नक्षत्र चंद्रवडे युक्त छे, आ वखते विजय नामनुं मुहूर्त पण छे, माटे आ देश अने आ काळ प्रयाणमां श्रेष्ठ छे. "

मू—ततो पुस्समाणएणं वक्के मुदाहिए हट्ठतुट्ठे कुच्छिधारकन्नधारगब्भिजसंजत्ताणावावाणियगा वावारिंसु, तं नावं पुन्नुच्छंगं पुण्णमुहिं बंधणेहिंतो मुंचंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते बंदीजने आ प्रमाणे वचन कहे सते हृष्ट तुष्ट थयेला कुक्षिधार—वहाणनी पडखे रहेनारा पावडी चलावनारा, कर्णधार—निर्यामक (वहाण चलावनार), गर्भज—वहाणनी मध्ये नाना मोटा काम करनार अने ते सांयात्रिक नाववणिको पोतपोताना कार्यमां प्रवर्त्या. पछी जेनो मध्यभाग भांडोवडे पूर्ण छे अने जेनुं मुख (अग्रभाग) मंगळवडे पूर्ण छे अथवा पुण्य एटले मांगलिक छे एवी ते नावाने बांधेला बंधनोथी मुक्त—छूटी करवामां आवी.

मू०—तते णं सा णावा विमुक्कबंधणा पवणबलसमाहया उस्सियसिया विततपक्खा इव गरुडजुवई गंगासलिलतिक्खसोयवेगेहिं संखुब्भमाणी संखुब्भमाणी उम्मीतरंगमालासहस्साइं समतिच्छमाणी समतिच्छमाणी कइवएहिं अहोरत्तेहिं लवणसमुद्दं अणेगातिं जोयणसतातिं ओगाढा ।

अर्थ—त्यारपछी ते नावा (वहाण) बंधनथी मुक्त थइ एटले पवनना जोरथी प्रेराइ-चाली, तेनापर सढ चडावेलो हतो तेथी ते पहोळी करेली पांखोवाळी जाणे गरुडनी स्त्री होय तेवी देखाती हती, गंगाना जळना मोटा प्रवाहना वेगथी क्षोभ पामती क्षोभ पामती (आम तेम प्रेराती—चालती), ऊर्मि अने तरंगोना हजारो समूहोने ओळंगती ओळंगती ते नावा केटलाक रात्रिदिवसोवडे लवणसमुद्रमां अनेक सो योजन दूर चाली गइ.

मू०—तते णं तेसिं अरहन्नगपामोक्खाणं संजत्तानावावाणियगाणं लवणसमुद्दं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढाणं समाणाणं बहूतिं उप्पातियसतातिं पाउब्भूयाइं ।

अर्थ—त्यारपछी ते अर्हन्नक विगेरे सांयात्रिक नावावाणीया लवणसमुद्रमां अनेक सेंकडो योजन गया त्यारे तेमने घणा सेंकडो उत्पात थवा लाग्या.

१ मोटा कल्लोला. २ नाना कल्लोला. ३ आ लवणसमुद्र भरतक्षेत्रनी अंदरनो समजवो. जंबूद्वीपनी जगतीनी बहार गयानुं न समजवुं.

मू०—तं जहा—अकाले गज्जिते अकाले विज्जुते अकाले थणियसद्दे, अभिक्खणं अभिक्खणं आगासे देवताओ नच्चंति, एगं च णं महं पिसायरूवं पासंति ।

अर्थ—ते उत्पातो आ प्रमाणे—अकाले गर्जना थवा लागी, अकाले वीजळी थवा लागी अने अकाळे [1]स्तनितशब्द [2] थवा लाग्यो. वारंवार आकाशमां देवताओ नृत्य करवा लाग्या. छेवट एक मोटुं पिशाचनुं स्वरूप जोवामां आव्युं.

मू०—तालजंघं दिवं गयाहिं बाहाहिं मसिमूसगमहिसकालगं भरियमेहवन्नं लंबोट्ठं निग्गयग्गदंतं निल्लालियजमलजुयलजीहं आऊसियवयणगंडदेसं चीणचिपिटनासियं विगयभुग्गभग्गभुमयं (भमुयं) खज्जोयगदित्तचक्खुरागं उत्तासणगं विसालवच्छं विसालकुच्छिं पलंबकुच्छिं पहसियपयलियपयडियगत्तं पणच्चमाणं अप्फोडंतं अभिवयंतं अभिगज्जंतं बहुसो बहुसो अट्टट्टहासे विणिम्मुयंतं नीलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं आसिं गहाय अभिमुहमावयमाणं पासंति ।

अर्थ—ते पिशाचनी जंघा तालवृक्षनी जेवी लांबी हती, तेना हाथ आकाश सुधी गयेला लांबा हता, तेना शरीरनो वर्ण मेश, उंदर अने महिष (पाडा) ना जेवो श्याम हतो, तेथी तेनो वर्ण जळथी भरेला मेघ जेवो हतो, तेना ओष्ठ लांबा

१ वर्षाऋतु विना. २ उंडो अने मोटो गर्जारव.

हता, तेना आगळना दांत बहार नीकळ्या हता, तेणे पोतानी सरखी बे जिव्हाओ मुखमांथी बहार काढेली हती, तेना बे गाल मुखमां पेसी गया हता, तेनी नासिका नानी अने चीपटी हती, तेनी भृकुटि विकारवाळी (बीहामणी) अने अत्यंत वांकी हती, तेना नेत्रोनो वर्ण खद्योतनी जेवो देदीप्यमान (रातो) हतो, ते (जोनारने) अत्यंत त्रास पमाडे तेवो हतो, तेनुं वक्षःस्थळ विशाळ हतुं, तेनी कुक्षि विशाळ हती, वळी तेनी कुक्षि लांबी पण हती, हसवावडे अने चालवावडे तेना गात्र (अवयवो) शिथिल देखाता हता, ते नृत्य करतो हतो, आकाशने फोडी नांखतो हतो, सन्मुख कुदतो हतो, गर्जना करतो हतो, अने घणा घणा अट्टहासने मूकतो हतो, काळुं कमळ, भेंशनुं शींगडुं, गळीनो रंग अने अळसीना पुष्प जेवा श्याम तथा छुरनी धार जेवा धारवाळा खड्गने ग्रहण करीने ते सन्मुख आवतो हतो. आवा पिशाचने जोयो.

मू०– तते णं ते अरहण्णगवज्जा संजत्ताणावावाणियगा एगं च णं महं तालपिसायं पासंति, तालजंघं दिवं गयाहिं बाहाहिं फुट्टसिरं भमरणिगरवरमासरासिमहिसकालगं भरियमेहवन्नं सुप्पणहं फालसरिसजीहं लंबोट्ठं धवलवट्टअसिलिट्ठतिक्खथिरपीणकुडिलदाढोवगूढवयणं विकोसियधारासिजुयलसमसरिसतणुयचंचलगलंतरसलोलचवलफुरुफुरंतनिल्लालियग्गजीहं अवयच्छियमहल्लविगयबीभच्छलालपगलंतरत्ततालुयं हिंगुलुयसगब्भकंदरबिलं व अंजणगिरिस्स अग्गिजालुग्गिलंतवयणं

१ अस्त्र–सजायो.

आउसियअक्खचम्मउइट्ठगंडदेसं चीणचिपिडवंकभग्गणासं रोसागयधमधमेंतमारुतनिट्ठुरखरफरुसझुसिरं ओभुग्गणासियपुडं घाडुब्भडरइयभीसणमुहं उद्धमुहकन्नसक्कुलियमहंतविगयलोमसंखालगलंबंतचालियकन्नं पिंगलदिप्पंतलोयणं भिउडितडियनिडालं नरसिरमालपरिणद्धचिंधं विचित्तगोणससुबद्धपरिकरं अवहोलंतपुप्फुयायंतसप्पविच्छुयगोधुंदिरनउलसरडविरइयविचित्तवेयच्छमालियागं भोगकूरकण्हसप्पधमधमेंतलंबंतकन्नपूरं मज्जारसियाललइयखंधं दित्तघुघुयंतघूयकयकुंतलसिरं घंटारवेण भीमं भयंकरं कायरजणहिययफोडणं दित्तमट्टट्टहासं विणिम्मुयंतं वसारुहिरपूयमंसमलमालिणपोच्चडतणुं उत्तासणयं विसालवच्छं पेच्छंताभिन्नणहमुहनयणकन्नवरवग्घचित्तकत्तीणिवसणं सरसरुहिरगयचम्मविततऊसवियबाहुजुयलं ताहि य खरफरुसअसिणिद्धअणिट्ठदित्तअसुभअप्पियअकंतवग्गूहि य तज्जयंतं पासंति ।

अर्थ—(अर्हन्नक सिवायना बीजा सांयात्रिकोए शुं कर्युं ? ते देखाडवा माटे उपर कहेला पिशाचना रूपने ज विशेष सहित कहे छे-वधारे वर्णन करे छे.) त्यारपछी ते अर्हन्नक सिवायना बीजा सांयात्रिक नावाना वाणीयाओए एक मोटुं तालवृक्ष जेवडा पिशाचनुं रूप जोयुं, तेनी जंघा तालवृक्ष जेवडी मोटी हती, तेना हाथ आकाश सुधी गयेला लांबा हता,

तेनुं मस्तक स्फुट हतुं एटले उघाडुं होवाथी तेनापरना केशो विखरायेला हता, ते पिशाच भ्रमरना समूह जेवो, श्रेष्ठ माष, (अडद) ना ढगला जेवो अने पाडा जेवो काळो हतो, जळभरेला वादळांना जेवो श्याम हतो, सूपडा जेवा लांबा तेना नख हता, तेनी जिह्वा फळा जेवी हती (एटले के बावन पळनुं लोढानुं फळुं तेने अग्निमां तपाव्युं होय तेवी एटले राती, देदीप्यमान अने लांबी जीभ हती), तेना ओष्ठ लांबा हता, तथा धोळी, गोळ, अश्लिष्ट (छूटी छूटी), तीक्ष्ण, स्थिर (निश्चल), पीन (जाडी) अने कुटिल (वांकी) एवी दाढाओवडे तेनुं मुख व्याप्त हतुं, तेनी बे जिह्वाना अग्रभाग मीयान रहित धारवाळा खड्गयुगलनी अत्यंत तुल्य हता, पातळा हता, चपळ एटले स्थिरता रहित अर्थात् निरंतर गळता एटले लाळ झरता हता, रसलोल एटले भोजनना रसमां लंपट हता, चपळ-चंचळ हता, स्फुरायमाण-कंपता हता, अने मुखमांथी बहार काढेला हता. तेनुं रातुं ताळवुं मुख फाडेलुं होवाथी अवयच्छिय-खुल्लुं देखातुं हतुं, वळी ते ताळवुं मोटुं, विकृत (विकारवाळुं), बीभत्स अने लाळने झरतुं हतुं. जेनी कंदरा (गुफा) ना बिलना गर्भमां (मध्यभागमां) हींगळोक होय एवो जाणे अंजनगिरि होय तेम तेनुं मुख अग्निनी ज्वाळाने मूकतुं हतुं. संकोच पामेला अक्षचर्म (पाणी खेंचवाना कोश) नी जेम तेना गंडस्थळ अपकर्ष पामेला-संकोच पामेला (पातळा) हता, अथवा जेना अक्ष-इंद्रियो, चर्म-शरीरनुं चामडुं, ओष्ठ अने गंडस्थळ संकोच पामेला हता. तेनी नासिका चीन-नानी, चपटी, वांकी अने भग्न जेवी भग्न एटले लोढाना घणथी कुटेली होय तेवी हती, जेना बे शुषिर (नस्कोरा) मांथी क्रोधथी आवेलो घमघमतो वायु (श्वास) निष्ठुर अने अत्यंत कर्कश हतो एवुं तेनुं वक्र नासिकापुट हतुं. तेनुं मुख घातने माटे एटले पुरुषादिकना वधने

माटे उद्भट (विकराळ) रचेलुं होवाथी भीषण (भयंकर) देखातुं हतुं. तेना बे कान चपळ अने लांबा हता, ते काननी शष्कुली (पापडी) उंचा मुखवाळी हती, तेनापर लांबा अने विकारवाळा रुंवाडा हता अने ते कान शंखने लागेला हता. तेनां नेत्र पिंगळ (पीळा)अने चकचकित हता, तेना कपाळ उपर भृकुटि चडावी हती ते वीजळी जेवी लागती हती, ते पिशाचना ध्वजारूप चिन्हनी फरती मनुष्यना मस्तकनी माळा वींटेली हती, विचित्र प्रकारना गोनस जातिना सर्पोवडे तेणे पोतानुं बख्तर बांधेलुं हतुं. तेणे आमतेम डोलता अने फुंफाडा मारता सर्पो, वींछी, गोधा (घो), उंदर, नोळीया अने सरट (काकीडा) ए करीने विचित्र प्रकारनी उत्तरासंग जेवी माळा रची हती. तेणे क्रूर फणावाळा अने धमधमता बे कृष्णसर्पोना लंबमान (लटकता) कर्णपूर (कुंडल) करेला हता. तेणे पोताना बे स्कंधपर बिलाडा अने शियाळ राख्या हता. तेणे पोताना मस्तक उपर देदीप्यमान धूत्कार शब्द करता घुवडनो मुगट बनाव्यो हतो. ते घंटाना शब्दवडे भीम अने भयंकर देखातो हतो. ते कायर जनोनां हृदयने फोडी नांखतो हतो. ते देदीप्यमान अट्टहासने मूकतो हतो. तेनुं शरीर चरबी, रुधिर, परु, मांस अने मळवडे मलिन अने खरडायेलुं हतुं. ते प्राणीओने उत्रास पमाडतो हतो, तेनुं वक्षःस्थळ विशाळ हतुं. जेनां नख, (रुंवाडा), मुख, नेत्र अने कान विगेरे अवयवो अखंड स्पष्ट रीते देखाता हता एवुं श्रेष्ठ व्याघ्रनुं विचित्र वर्णवाळुं चर्म तेणे पहेरेलुं हतुं, तेणे उंचा करेला बे हाथ उपर रस अने रुधिरवाळुं हस्तीनुं चर्म विस्तार्युं हतुं—पहोळुं कर्युं हतुं. तथा वळी ते पिशाच वहाणना लोकोने तेवा प्रकारनी खरपरुष—अत्यंत कठोर, अस्निग्ध—स्नेह रहित, अनिष्ट—

१. नेत्रनी पासेनुं हाडकुं.

इच्छवा लायक नहीं एवी, दीप्त–उपतापनुं कारण होवाथी देदीप्यमान, स्वरूपथी ज अशुभ, अप्रिय–सांभळनारने अप्रीति करनार अने अकांत–खराब स्वर होवाथी अमनोहर एवी वाणीवडे तर्जना–तिरस्कार करतो हतो. आवो पिशाच सर्व लोकोए जोयो.

मू०—तं तालपिसायरूवं एज्जमाणं पासंति, पासित्ता भीया संजायभया अन्नमन्नस्स कायं समतुरंगेमाणा समतुरंगेमाणा बहूणं इंदाण य खंदाण य रुद्दसिववेसमणणागाणं भूयाण य जक्खाण य अज्जकोट्टकिरियाण य बहूणि उवाइयसयाणि ओवातियमाणा ओवातियमाणा चिट्ठंति ।

अर्थ—ते तालपिशाचना रूपने वहाण तरफ आवतुं जोयुं. जोइने ते अर्हन्नक सिवायना सर्व लोको भय पाम्या, अति भय पामेला थया, एक बीजाना शरीरने आश्लेष करवा लाग्या (एक बीजा साथे मळीने बेसी गया), तथा घणा इंद्रोनी, स्कंद (कार्तिकस्वामी)नी, रुद्रनी, शिवनी, वैश्रमण (कुबेर)नी, नागनी, यक्षनी, भूतनी अने आर्या (दुर्गा) देवीनी तथा कोट्टक्रिया (महिषना वाहनवाळी ते ज दुर्गा) देवीनी घणी सेंकडो मानताओ करता करता रह्या. (करवा लाग्या.)

मू०—तए णं से अरहन्नए समणोवासए तं दिव्वं पिसायरूवं एज्जमाणं पासति, पासित्ता अभीते अतत्थे अचलिए असंभंते अणाउले अणुव्विग्गे अभिन्नमुहरागणयणवन्ने अदीणविमणमाण-

से पोयवहणस्स एगदेसंसि वत्थंतेणं भूमिं पमज्जत्ति, पमज्जित्ता ठाणं ठाइ, ठाइत्ता करयलओ एवं वयासी—

अर्थ—(हवे अर्हन्नके शुं कर्युं ? ते कहे छे.—) त्यारपछी ते अर्हन्नक श्रमणोपासके ते दिव्य पिशाचरूपने आवतुं जोयुं, जोइने ते जरा पण भय पाम्यो नहीं, त्रास पाम्यो नहीं, चलायमान थयो नहीं, संभ्रांत थयो नहीं, आकुळ व्याकुळ थयो नहीं, उद्वेग पाम्यो नहीं, तेनो मुखराग के नेत्रनो वर्ण भेद पाम्यो (बदलायो) नहीं, तथा तेनुं मन दीनताने के वैमन्य (खेद) ने पाम्युं नहीं. तेथी तेणे वहाणना एक प्रदेशमां जइ वस्त्रना छेडावडे भूमिने प्रमार्जन कर्युं, प्रमार्जीने ते स्थाने बेठो, बेसीने बे हाथ जोडी आ प्रमाणे बोल्यो.—

मू०—" नमोऽत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं जाव ठाणं संपत्ताणं, जइ णं अहं एत्तो उवसग्गातो मुंचामि तो मे कप्पति पारित्तए, अह णं एत्तो उवसग्गातो ण मुंचामि तो मे तहा पच्चक्खाएयव्वे " त्ति कट्टु सागारं भत्तं पच्चक्खाति ।

अर्थ—" अरिहंत भगवंत यावत् सिद्धिस्थानने पामेला प्रभुने मारो नमस्कार हो " एम (नमुत्थुणंनो सर्व पाठ कह्यो) पछी कह्युं के-" जो हुं आ उपसर्गथी मूकाउं तो मारे आ कायोत्सर्ग पारवो कल्पे, अने जो आ उपसर्गथी न मूकाउं

तो मारे तथा प्रकारनुं पच्चख्खाण ज कल्पे अर्थात् काउसग्ग पारवो न कल्पे. " आ प्रमाणे कही तेणे सागारी अनशनरूप चारे आहारनुं पच्चख्खाण कर्युं.

मू०–ततं णं से पिसायरूवे जेणेव अरहन्नए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहन्नगं एवं वदासी––

अर्थ––त्यारपछी ते पिशाच ज्यां अर्हन्नक श्रमणोपासक हतो, त्यां आव्यो, आवीने तेणे अर्हन्नकने आ प्रमाणे कह्युं–

मू०–" हं भो अरहन्नगा ! अपत्थियपत्थिया ! जाव परिवज्जिया णो खलु कप्पति तव सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणे पोसहोववासातिं चालित्तए वा एवं खोभेत्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा । तं जति णं तुमं सीलव्वयं जाव ण परिच्चयसि तो ते अहं एयं पोतवहणं दोहिं अंगुलियाहिं गेण्हामि, गेण्हित्ता सत्तट्ठतलप्पमाणमेत्तातिं उड्ढं वेहासं उव्विहामि; उव्विहित्ता अंतो जलंसि णिच्छोलेमि, जेणं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे असमाहिपत्ते अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि "।

अर्थ––" अरे ! अप्रार्थितनी (मृत्युनी) प्रार्थना करनार ! यावत् लज्जा, कीर्ति, बुद्धि अने लक्ष्मीथी रहित थयेला !

हे अर्हन्नक ! तारे शीलव्रत-अणुव्रतो, गुणो-गुणव्रतो, विरमण-रागादिकनी विरतिना प्रकारो, प्रत्याख्यान-नवकारशी विगेरे तथा पौषधोपवास-अष्टमी विगेरे पर्वतिथिने विषे उपवासादिक-आ सर्वथी चलाववा माटे एटले जे भांगे व्रतादिक तें लीधां होय तेने अन्य भांगे करवा माटे, अथवा क्षोभ पमाडवा माटे एटले 'आ व्रतादिकने आ प्रमाणे पाळुं के तेनो त्याग करुं ?' एम विचारी क्षोभ पामवा माटे, अथवा देशथी खंडन करवा माटे, अथवा सर्वथी भांगवा माटे, उज्झित करवा माटे एटले देशविरतिनो सर्वथा त्याग करवा माटे, अथवा परित्याग करवा माटे एटले समकितनो पण त्याग करवा माटे कल्पे नहीं एटले तुं ए सर्वने त्याग करवा इच्छतो नथी. परंतु जो तुं ते शीलव्रत विगेरे सर्वने यावत् परित्याग नहीं करे तो हुं तारा आ वहाणने बे आंगळीए ग्रहण करीश (उंचुं उपाडीश), ग्रहण करीने सात आठ ताल प्रमाण उंचे आकाशमां उछाळीश, उछाळीने जळनी अंदर डुबावी दइश, के जेथी तुं आर्तदुर्घट[1] दोहट्टने वश थइ असमाधिने पामी अकाळे ज जीवित रहित थइश. (मरण पामीश). "

मू०—तते णं से अरहन्नते समणोवासए तं देवं मणसा चेव एवं वदासी—" अहं णं देवाणुप्पिया ! अरहन्नए णामं समणोवासए अहिगयजीवाजीवे, नो खलु अहं सक्का केणइ देवेण वा जाव निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभेत्तए वा विपरिणामेत्तए वा, तुमं णं जा सद्धा तं

१ आर्त दुर्घट वशार्त एटले आर्तध्याननो निरोध न थाय एवी परतंत्रतावडे पीडा पामेल.

करेहि" त्ति कट्टु अभीए जाव अभिन्नमुहरागणयणवन्ने अदीणविमणमाणसे निच्चले निप्फंदे तुसिणीए धम्मज्झाणोवगते विहरति।

अर्थ—त्यारपछी ते अर्हन्नक श्रमणोपासके ते देवने मनवडे ज आ प्रमाणे कह्युं—"हे देवानुप्रिय ! हुं अर्हन्नक नामनो श्रमणोपासक जीव अजीव विगेरे तत्त्वने जाणुं छुं. मने निश्चे कोइ पण देवादिक यावत् निर्ग्रंथ प्रवचनथी चलाववा माटे—अन्यथापणुं कराववा माटे, क्षोभ पमाडवा माटे—संशय उत्पन्न कराववा माटे अथवा विपरीत अध्यवसाय उत्पन्न कराववा माटे शक्तिमान नथी. तारी जे श्रद्धा (इच्छा) होय ते तुं खुशीथी कर." आ प्रमाणे कही ते अर्हन्नक भय रहित, यावत् मुखनो रंग अने नेत्रनो वर्ण वदलाया विना ज, दीनता अने वैमनस्य रहित मनवाळो, निश्चळ, निष्पंद (हाथपग विगेरे हलाव्या विना) तूष्णी (मुंगो) अने धर्मध्यानने प्राप्त थइ विचरवा लाग्यो—रह्यो.

मू०—तए णं से दिव्वे पिसायरूवे अरहन्नगं समणोवासगं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वदासी—"हं भो अरहन्नगा !" जाव अदीणविमणमाणसे निच्चले निप्फंदे तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरति।

अर्थ—त्यारपछी ते दिव्य पिशाचे अर्हन्नक श्रमणोपासकने बीजी वार त्रीजी वार आ प्रमाणे कह्युं—"हे अर्हन्नक !" विगेरे पूर्वे कह्या प्रमाणे सर्व कह्युं. यावत् अर्हन्नक पण पूर्वे कहेल छे ते ज प्रमाणे उत्तर आपी दीनता अने वैमनस्य रहित

२ मननो खेद.

मनवाळो, निश्चल, निष्पंद, मौनी अने धर्मध्यानने पामेलो सतो रह्यो.

मू०—तते णं से दिव्वे पिसायरूवे अरहन्नगं धम्मज्झाणोवगयं पासति, पासित्ता बलियतरागं आसुरुत्ते तं पोयवहणं दोहिं अंगुलयाहिं गिण्हति, गिण्हित्ता सत्तट्ठत(ता)लाइं जाव अरहन्नगं एवं वदासी—" हं भो अरहन्नगा ! अपत्थियपत्थिया ! णो खलु कप्पति तव शीलव्वय०" तहेव जाव धम्मज्झाणोवगए विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते दिव्य पिशाचे अर्हन्नकने यावत् धर्मध्यानमां प्राप्त थयेलो जोयो, जोइने बळवत्तर (अति घणो) क्रोध पामी ते वहाणने बे आंगळीओवडे ग्रहण कर्यु (उपाड्युं), ग्रहण करीने सात आठ ताल प्रमाण यावत् आकाशमां उछाळी अर्हन्नकने आ प्रमाणे कह्युं—" रे रे अर्हन्नक ! मृत्युनी इच्छा राखनार ! तारे शीलव्रतादिक मूकवा कल्पता नथी." विगेरे सर्व पूर्ववत् कहेवुं, ते प्रमाणे कह्या छतां यावत् ते अर्हन्नक किंचित् पण चलायमान न थतां धर्मध्यानने पामी विचरवा लाग्यो. (धर्मध्यानमां ज लीन रह्यो.)

मू०—तते णं से पिसायरूवे अरहन्नगं जाहे नो संचाएइ निग्गंथाओ० चालित्तए वा० ताहे उवसंते जाव निव्विन्ने तं पोयवहणं सणियं सणियं उवरिं जलस्स ठवेति, ठवित्ता तं दिव्वं पि-

सायरूवं पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता दिव्वं देवरूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता अंतलिक्खपडिवन्ने सखिंखिणियाइं जाव परिहिते अरहन्नगं समणोवासगं एवं वयासी—

अर्थ—त्यारपछी ते पिशाच ज्यारे अर्हन्नकने निर्ग्रंथ प्रवचनथी चलायमान करवाने यावत् समकितनो त्याग करावावाने शक्तिमान न थयो, त्यारे ते उपशांत थयो यावत् निर्वेद पाम्यो (मनमां खेद पाम्यो). पछी तेणे ते वहाणने धीमे धीमे उतारी जळ उपर स्थापन कर्युं, स्थापन करीने ते दिव्य पिशाचनुं रूप संहर्युं, संहरीने दिव्य देवनुं स्वरूप विकुर्व्युं, विकुर्वीने आकाशमां रही घुघरीओना घमघम शब्द सहित यावत् वस्त्र आभरण धारण करी अर्हन्नक श्रमणोपासकने आ प्रमाणे कहेवा लाग्यो.—

मू०—" हं भो अरहन्नगा ! धन्नोऽसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले, जस्स णं तव निग्गंथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया, एवं खलु देवाणुप्पिया ! सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए बहूणं देवाणं मज्झगए महया सद्देणं आतिक्खति ४–' एवं खलु जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए अरहन्नए समणोवासए अहिगजीवाजीवे, नो खलु सक्का केणइ देवेण वा दाणवेण वा णिग्गंथाओ पावयणाओ

चालित्तए वा जाव विपरिणामेत्तए वा ।

अर्थ—" हे अर्हन्नक ! तुं धन्य छे. हे देवानुप्रिय ! यावत् तारुं जीवित सफळ छे, के जे तारी निर्ग्रंथ प्रवचनने विषे आवा प्रकारनी सेवा लब्ध थयेली प्राप्त थयेली अने सम्यक् प्रकारे सेववामां आवेली छे. केमके आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! देवना राजा शक्र देवेंद्र सौधर्म नामना स्वर्गमां सौधर्मावतंसक नामना विमानमां सुधर्मा नामनी सभाने विषे घणा देवादिकनी मध्ये रहेला हता, तेणे मोटा शब्दवडे कह्युं के–' आज प्रमाणे निश्चे आ ज जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे भारत वर्षने विषे चंपा नामनी नगरीमां अर्हन्नक नामनो श्रमणोपासक जीव अजीव विगेरे तत्त्वने जाणनार छे, तेने खरेखर कोइ पण देव के दानव विगेरे निर्ग्रंथ प्रवचनथी चलायमान करवा यावत् समकितथी भ्रष्ट करवा समर्थ नथी. '

मू०–तते णं अहं देवाणुप्पिया ! सक्कस्स देविंदस्स एयमट्ठं णो सद्दहामि नो रोचयामि । तते णं मम इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–' गच्छामि णं अरहन्नयस्स अंतियं पाउब्भवामि, जाणामि ताव अहं अरहन्नगं किं पियधम्मे ? णो पियधम्मे ? दढधम्मे ? नो दढधम्मे ? सीलव्वयगुणे किं चालेति जाव परिच्चयाति ? णो परिच्चयाति ? त्ति कट्टु एवं संपेहेमि, संपेहित्ता ओहिं पउंजामि, पउंजित्ता देवाणुप्पिया ! ओहिणा आभोएमि, आभोइत्ता उत्तरपुरच्छिमं

दिसीभागं उत्तरवेउव्वियं समुग्घामि, ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव लवणसमुद्दे जेणेव देवाणुप्पिए तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता देवाणुप्पियाणं उवसग्गं करेमि । नो चेव णं देवाणुप्पिया भीया वा तत्था वा, तं जं णं सक्के देविंदे देवराया वदति, सच्चे णं एसमट्ठे, तं दिट्ठे णं देवाणुप्पियाणं इड्ढी जुई जसे बले जाव परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए, तं खामेमि णं देवाणुप्पिया ! खमंतु मरहंतु णं देवाणुप्पिया ! णाइ भुज्जो भुज्जो एवं करणयाए " त्ति कट्टु पंजलिउडे पायवडिए एयमट्ठं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामेइ, खामित्ता अरहन्नयस्स दुवे कुंडलजुयले दलयति, दलइत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव पडिगए ॥ ६९ ॥

अर्थ—त्यारपछी हे देवानुप्रिय ! शक्र देवेंद्रना आ अर्थ उपर मने श्रद्धा आवी नहीं अने मने तेनी कहेली वात रुचि पण नहीं. तेथी मने आवा प्रकारनो अध्यवसाय (विचार) यावत् उत्पन्न थयो के-हुं जाउं अने अर्हन्नकनी पासे प्रगट थाउं. त्यां जइ प्रथम हुं जाणुं (जोउं) के अर्हन्नकने धर्मपर केवी प्रीति छे ? के धर्मपर प्रीति नथी ? ते धर्ममां केवो दृढ छे ? के धर्ममां दृढ नथी ? शीलव्रत अने गुणव्रत विगेरेमां चलायमान थाय तेवो छे ? यावत् समकितथी भ्रष्ट थाय तेवो छे ? के समकितथी भ्रष्ट थाय तेवो नथी ? आ प्रमाणे में विचार कर्यो, विचार करीने अवधिज्ञाननो उपयोग आप्यो,

दिशामां जइ उत्तरवैक्रिय करवा
उपयोग आपीने हे देवानुप्रिय ! अवधिज्ञानवडे में जाण्युं, जाणीने उत्तर पूर्व (ईशान) दिशामां जइ उत्तरवैक्रिय करवा
माटे वैक्रिय समुद्घात कर्यो, पछी ते उत्कृष्ट यावत् शीघ्र गतिए करीने ज्यां लवणसमुद्र हतो अने ज्यां देवानुप्रिय एवो
तुं हतो त्यां हुं आव्यो, आवीने देवानुप्रिय एवा तमने में उपसर्ग कर्या, परंतु देवानुप्रिय एवो तुं भय न पाम्यो अने त्रास
न पाम्यो, तेथी देवना राजा शक्र देवेंद्रे जे कह्युं हतुं ते सर्व अर्थ सत्य थयो. तेथी में जोयुं (जाण्युं) के देवानुप्रिय एवा
तने ऋद्धि–गुणनी समृद्धि, द्युति–अंदरनुं तेज, यश–ख्याति, शारीरिक बळ यावत् पराक्रम ए सर्व लब्ध थया छे, प्राप्त
थया छे अने सारी रीते तेने सेववामां आव्या छे, तेथी हे देवानुप्रिय ! हुं तने खमावुं छुं. तुं पण मने क्षमा कर अने
मारो अपराध सहन कर. हे देवानुप्रिय ! फरी फरी हुं आ प्रमाणे कदापि नहीं करुं." आ प्रमाणे कही बे हाथ जोडी ते
देव तेना (अर्हन्नकना) पगमां पड्यो, अने आ बाबत विनयवडे वारंवार खमाववा लाग्यो. खमावी अर्हन्नकने बे कुंडल
युगल आप्यां. आपीने जे दिशामांथी प्रगट थयो हतो ते दिशाए पाछो गयो. ६९.

मू०–तते णं से अरहन्नए निरुवसग्गमिति कट्टु पडिमं पारेति। तए णं ते अरहन्नगपामोक्खा जाव वाणियगा दक्खिणाणुकुलेणं वाएणं जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयं लंबेति, लंबित्ता सगडिसागडं सज्जेंति, सज्जित्ता तं गणिमं धरिमं मेज्जं पारिच्छेज्जं सगडिसागडं संकामेंति, संकामित्ता सगडिसागडं जोएंति, जोइत्ता जेणेव मिहिला नयरी तेणेव

उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मिहिलाए रायहाणीए बाहिया अग्गुज्जाणंसि सगडिसागडं मोएइ, मोइत्ता मिहिलाए रायहाणीए तं महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायरिहं पाहुडं कुंडलजुयलं च गेण्हंति, गेण्हित्ता मिहिलाए रायहाणीए अणुपविसंति, अणुपविसित्ता जेणेव कुंभए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल जाव कट्टु तं महत्थं दिव्वं कुंडलजुयलं उवणेति, जाव पुरओ ठवेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते अर्हन्नके उपसर्ग रहित थयो एम जाणी पडिमा पारी. (काउसग्ग पार्यो.) त्यारपछी ते अर्हन्नक विगेरे यावत् वाणीया दक्षिण दिशाना अनुकूळ वायुवडे ज्यां गंभीरपोत नामनुं पट्टण हतुं त्यां आव्या-पहोंच्या. आवीने ते वहाणने थोभाव्युं, थोभावी गाडी गाडां सज्ज कर्यां, सज्ज करी ते गणिम, धरिम, मेय अने परिच्छेद्य ए चारे प्रकारनां भांड ते गाडी गाडामां नांख्यां, नांखीने गाडी गाडां जोड्या, जोडीने ज्यां मिथिला नगरी हती त्यां आव्या, आवीने मिथिला राजधानीनी बहार श्रेष्ठ उद्यानने विषे ते गाडी गाडां छोड्या, छोडीने मिथिला राजधानीमां जवा माटे ते मोटा अर्थवाळुं, मोटी किंमतनुं, मोटाने लायक, विपुल अने राजाने योग्य एवुं भेटणुं तथा ते कुंडलयुगल ग्रहण कर्युं, ग्रहण करीने मिथिला राजधानीमां प्रवेश कर्यो, प्रवेश करी ज्यां कुंभ राजा हता त्यां आव्या, आवीने हाथ जोडी यावत् मस्तके अंजलि करी ते मोटा अर्थवाळुं यावत् ते दिव्यकुंडल युगलरूप भेटणुं राजा पासे लइ गया, यावत् तेनी पासे मूक्युं.

मू०—तते णं कुंभए राया तेर्सि संजत्तगाणं जाव पडिच्छइ, पडिच्छित्ता मल्लीं विदेहवररायकन्नं सद्दावेति, सद्दावित्ता तं दिव्वं कुंडलजुयलं मल्लीए विदेहवररायकन्नगाए पिणद्धति, पिणद्धित्ता पडिविसज्जेति।

अर्थ—त्यारपछी ते कुंभ राजाए ते सांयात्रिक वाणीयाओना यावत् भेटणाने अंगीकार कर्युं, अंगीकार करी मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्याने बोलावी, बोलावीने ते दिव्य कुंडलयुगल मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्याने (पोतानी पुत्रीने) पहेराव्युं, पहेरावीने ते मल्ली कुमारीने रजा आपी.

मू०—तते णं से कुंभए राया ते अरहन्नगपामोक्खे जाव वाणियगे विपुलेणं असण० वत्थगंध-मल्लालंकारेणं जाव उस्सुक्कं वियरेति, वियरित्ता रायमग्गमोगाढेइ आवासे वियरति पडिविसज्जेति।

अर्थ—त्यारपछी ते कुंभ राजाए ते अर्हन्नक विगेरे यावत् वाणीयाओने विपुल एवा अशनादिक अने वस्त्र, गंध, पुष्प, तथा अलंकारवडे सत्कार करी यावत् शुल्क (दाण) रहित कर्या—तेमनुं दाण माफ कर्युं. करीने राजमार्गनी मध्ये तेमने मोटो आवास (उतारो) आप्यो, पछी तेमने रजा आपी.

मू०—तते णं अरहन्नगसंजत्तगा जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छंति, उवाग-

च्छित्ता भंडववहरणं करेंति, करित्ता पडिभंडं गेण्हंति, गेण्हित्ता सगडिसागडं भरेंति, जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोतवहणं सज्जेंति, सज्जित्ता भंडं संकामेंति दक्खिणाणु० जेणेव चंपापोयट्ठाणे तेणेव पोयं लंबेंति, लंबित्ता सगडिसागडं सज्जेंति, सज्जित्ता तं गणिमं धरिमं मेज्जं पारिच्छेज्जं सगडीसागडं संकामेंति संकामित्ता जाव महत्थं पाहुडं दिव्वं च कुंडलजुयलं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव चंदच्छाए अंगराया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं महत्थं जाव उवणेंति।

अर्थ—त्यारपछी ते अर्हन्नक विगेरे सांयात्रिक वणिजो ज्यां राजमार्गनी मध्ये मोटो आवास हतो त्यां आव्या, आवीने भांडनो (करियाणानो) वेपार करवा लाग्या, वेपार करीने प्रतिभांड (बीजुं भांड) ग्रहण कर्युं, ग्रहण करी तेना गाडी गाडां भर्यां, अने पछी त्यांथी चाली ज्यां गंभीरपोत नगर (समुद्रने किनारे) हतुं, त्यां आव्या, आवीने वहाण सज्ज कर्युं, सज्ज करीने तेमां सर्व भांड भर्युं, भरीने दक्षिण दिशाना अनुकूळ पवनवडे ज्यां चंपा नगरीनुं पोत स्थान हतुं, त्यां आवी वहाणने थंभाव्युं, थंभावीने गाडी गाडां सज्ज कर्यां, सज्ज करीने ते गणिम, धरिम, मेय अने परिच्छेद्य एम चार

१ वहाण रहेवानो समुद्र किनारो (बंदर)

प्रकारनां भांड भर्यां, भरीने यावत् चंपा नगरीमां आवी मोटुं भेटणुं तथा ते दिव्य कुंडल युगल ग्रहण कर्युं, ग्रहण करी ज्यां चंद्रछाय नामनो अंगराजा हतो, त्यां आव्या, आवीने यावत् ते मोटुं भेटणुं विगेरे तेनी पासे मूक्युं.

मू०— तते णं चंदच्छाए अंगराया तं दिव्वं महत्थं च कुंडलजुयलं पडिच्छति, पडिच्छित्ता ते अरहन्नगपामोक्खे एवं वदासी–" तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामागर० जाव आहिंडह, लवणसमुदं च अभिक्खणं अभिक्खणं पोयवहणेहिं ओगाहेह, तं अत्थियाइं भे केइ कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ? " ।

अर्थ—त्यारपछी ते चंद्रछाय नामना अंगराजाए ते दिव्य अने महा अर्थवाळा कुंडलयुगल विगेरे ग्रहण कर्यां, ग्रहण करीने ते अर्हन्नक विगेरेने आ प्रमाणे कह्युं–" हे देवानुप्रियो ! तमे घणा गाम, आकर विगेरेमां यावत् जाओ छो, तथा वारंवार लवणसमुद्रमां वहाणवडे प्रवेश करो छो, तो तमे कोइ ठेकाणे कांइ पण पहेलुं ज जोयुं होय एवुं आश्चर्य जोयुं छे ? "

मू०—तते णं ते अरहन्नगपामोक्खा चंदच्छायं अंगरायं एवं वदासी–"एवं खलु सामी ! अम्हे इहेव चंपाए नयरीए अरहन्नगपामोक्खा बहवे संजत्तगा णावावाणियगा परिवसामो, तते णं अम्हे

अन्नया कयाइं गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च तहेव अहीणमतिरित्तं जाव कुंभगस्स रन्नो उवणेमो । तते णं से कुंभए मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तं दिव्वं कुंडलजुयलं पिणद्धेति, पिणद्धित्ता पडिविसज्जेति । तं एस णं सामी ! अम्हेहिं कुंभरायभवणंसि मल्ली विदेहरायवरकन्ना अच्छेरए दिट्ठे, तं नो खलु अन्ना का वि तारिसिया देवकन्ना वा जाव जारिसिया णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना ।

अर्थ—त्यारे ते अर्हन्नक विगेरे वणिकोए चंद्रच्छाय नामना अंगराजने आ प्रमाणे कह्युं–"आ प्रमाणे निश्चे हे स्वामी ! अमे अर्हन्नक विगेरे घणा सांयात्रिक वहाणना वेपारी वाणीया आ चंपा नगरीमां ज वसीए छीए. तेथी एकदा कदाचित् अमे गणिम, धरिम, मेय अने परिच्छेद्य ए चार प्रकारना भांड भरीने विगेरे सर्व अन्यूनाधिक ते ज प्रमाणे कहेवुं यावत् कुंभराजा पासे अमे भेटणुं कर्युं. ते वखते ते कुंभ राजाए मल्ली नामनी विदेहराजानी श्रेष्ठ कन्याने ते दिव्य कुंडलयुगल पहेराव्युं. पहेरावीने तेणीने रजा आपी. तो हे स्वामी ! अमे कुंभ राजाना महेलमां मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्या आश्चर्यरूपे जोइ, कारण के ते मल्ली नामनी विदेहराजानी श्रेष्ठ कन्या जेवी सुंदर छे तेवी बीजी देवकन्या, नागकन्या विगेरे कोइ पण नथी.

मू०—तते णं चंदच्छाए ते अरहन्नगपामोक्खे सक्कारेति सम्माणेति, सक्कारित्ता सम्माणित्ता

पडिविसज्जेति । तते णं चंदच्छाए वाणियगजणियहासे दूतं सद्दावेति, जाव जइ वि य णं सा सयं रज्जसुक्का । तते णं ते दूते हट्ठे जाव पहारेत्थ गमणाए ॥ २ ॥ ७० ॥

अर्थ—त्यारपछी ते चंद्रच्छाय राजाए ते अर्हन्नक विगेरे वाणीयाओनो सत्कार कर्यो, सन्मान कर्युं, सत्कार करी सन्मान करी तेमने रजा आपी. त्यारपछी ते वाणीआओना कहेवाथी जेने हर्ष उत्पन्न थयो हतो एवा ते चंद्रच्छाय राजाए पोताना दूतने बोलाव्यो, विगेरे प्रथमनी जेम कहेवुं यावत् " जो कदाच ते कन्या पोते मारा आखा राज्यना मूल्यनी होय तो ते पण कबूल करजे " इत्यादि कहीने मोकल्यो. त्यारे ते दूत हृष्ट तुष्ट थइ यावत् गमन करवा नीकळ्यो. २. ७०.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं कुणाला नाम जणवए होत्था । तत्थ णं सावत्थी नामं णयरी होत्था । तत्थ णं रुप्पी कुणालाहिवई नामं राया होत्था । तस्स णं रुप्पिस्स धुया धारिणीए देवीए अत्तया सुबाहुनामं दारिया होत्था सुकुमाल० रूवेण य जोव्वणेणं लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था । तीसे णं सुबाहुए दारियाए अन्नदा चाउम्मासियमज्जणए जाए यावि होत्था ।

अर्थ—ते काळे ते समये कुणाल नामनो जनपद (देश) हतो, तेमां श्रावस्ति नामनी नगरी हती. ते नगरीमां

कुणाल देशनो अधिपति रुपी नामे राजा हतो. ते रुपी राजानी पुत्री धारिणी नामनी देवी (राणी) थी उत्पन्न थयेली सुबाहु नामनी कन्या हती. तेना हाथ पग सुकोमळ हता, ते रूपवडे, यौवनवडे अने लावण्यवडे उत्कृष्ट (उत्तम) हती, ते उत्कृष्ट शरीरवाळी पण थयेली हती. ते सुबाहु नामनी दारिका (पुत्री)ने एकदा चातुर्मासिकना स्नाननो (जळक्रीडानो) उत्सव आव्यो.

मू०—तते णं से रुप्पी कुणालाहिवई सुबाहुए दारियाए चाउम्मासियमज्जणयं उवट्ठियं जाणति, जाणित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी—

अर्थ—त्यारे ते कुणाल देशना अधिपति रुपी राजाए ते सुबाहु दारिकानो चातुर्मासिक स्नाननो उत्सव प्राप्त थयो जाण्यो, जाणीने कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युंः—

मू०—" एवं खलु देवाणुप्पिया ! सुबाहुए दारियाए कल्लं चाउम्मासियमज्जणए भविस्सति, तं कल्लं तुब्भे णं रायमग्गमोगाढंसि चउक्कंसि (पुप्फमंडवंसि) जलथलयदसद्धवन्नमल्लं साहरेह, जाव सिरिदामगंडे ओलइंति "।

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! काले सुबाहु दारिकाने चातुर्मासिक स्नाननो महोत्सव थवानो छे, तेथी तमे काले राजमार्गने मध्ये एक मोटो पुष्पमंडप करी तेमां जळमां अने स्थळमां उत्पन्न थयेला पांच वर्णवाळा पुष्पो

लावो, यावत् एक श्रीदामकांड (पुष्पनी माळानो समूह-दडो) लटकावो. " ते सांभळी तेओए ते प्रमाणे कर्युं.

मू०-तते णं से रुप्पी कुणालाहिवती सुवन्नगारसेणिं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी--

अर्थ--त्यारपछी ते कुणाल देशना अधिपति रुपी राजाए सुवर्णकारनी (सोनीनी) श्रेणिने बोलावी, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं--

मू०-" खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! रायमग्गमोगाढंसि पुप्फमंडवंसि णाणाविहपंचवन्नेहिं तंदुलेहिं णगरं आलिहह, तस्स बहुमज्झदेसभाए पट्टयं रएह, " रइत्ता जाव पच्चप्पिणंति ।

अर्थ--हे देवानुप्रियो ! शीघ्रपणे राजमार्गनी मध्ये मोटा पुष्पमंडपने विषे विविध प्रकारना पांच वर्णवाळा चोखावडे नगरनो आळेख करो, अने तेना बराबर मध्य भागमां एक पाट (बाजोठ) रचो " ते सांभळी तेओए ते प्रमाणे करी यावत् राजानी आज्ञा पाछी आपी-' अमे आपना हुकम प्रमाणे कर्युं छे ' एम कह्युं.

मू०- तते णं से रुप्पी कुणालाहिवई हत्थिखंधवरगए चाउरंगिणीए सेणाए महया भड० अंतेउरपरियालसंपरिवुडे सुबाहुं दारियं पुरतो कट्टु जेणेव रायमग्गे जेणेव पुप्फमंडवे तेणेव उवागच्छति,

१ आ कोइ जाति विशेष होवी जोइए.

उवागच्छित्ता हत्थिखंधातो पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता पुप्फमंडवं अणुपविसति, अणुपविसित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने ।

अर्थ—त्यारपछी ते कुणाल देशनो स्वामी रुपी राजा हस्तीना श्रेष्ठ स्कंधपर आरूढ थयो, चतुरंगी सेना तथा मोटा सुभटो विगेरे अने अंतःपुरनो परिवार ए सर्ववडे परिवर्यो सतो सुबाहु दारिकाने आगळ करीने ज्यां राजमार्ग हतो अने ज्यां ते पुष्पनो मंडप हतो त्यां आव्यो. आवीने हस्तीना स्कंध उपरथी नीचे उतर्यो, उतरीने पुष्पना मंडपमां प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने श्रेष्ठ सिंहासनपर रह्यो सतो पूर्व दिशा सन्मुख बेठो.

मू०—तते णं ताओ अंतेउरियाओ सुबाहुं दारियं पट्टयंसि दुरुहेंति, दुरुहित्ता सेयपीतएहिं कलसेहिं ण्हाणेंति, ण्हाणित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेंति, करित्ता पिउणो पायं वंदिउं उवणेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते अंतःपुरनी स्त्रीओए ते सुबाहु नामनी दारिकाने ते पाट (बाजोठ) पर बेसाडी, बेसाडीने श्वेत अने पीत (सोनाना ने रुपाना) विगेरे कळशोवडे तेने स्नान कराव्युं, स्नान करावी सर्व अलंकारोवडे विभूषित करी, करीने पिताना (राजाना) चरणने नमवा माटे तेणीने राजा पासे मोकली.

मू०—तते णं सुबाहुदारिया जेणेव रुप्पी राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पायग्गहणं करेति ।

अर्थ—त्यारे ते सुबाहु दारिका ज्यां रुपी राजा हता त्यां आवी, आवीने पिताना पादग्रहण कर्यो—पगमां पडी (नमी).

मू०—तते णं से रुप्पी राया सुबाहुं दारियं अंके निवेसेति, निवेसित्ता सुबाहुए दारियाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जाव विम्हिए वरिसधरं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी—

अर्थ—त्यारे ते रुपी राजाए ते सुबाहु दारिकाने पोताना उत्संग (खोळा) मां बेसाडी, बेसाडीने सुबाहु दारिकाना रूप, यौवन अने लावण्यवडे यावत् विस्मय पामी वर्षधरने बोलाव्यो, बोलावी आ प्रमाणे कह्युं—

मू०—" तुमं णं देवाणुप्पिया ! मम दोच्चेणं बहूणि गामागरनगरगिहाणि अणुपविससि; तं अत्थियाइं ते कस्सइ रन्नो वा ईसरस्स वा कहिंचि एयारिसए मज्जणए दिट्ठपुव्वे जारिसए णं इमीसे सुबाहुदारियाए मज्जणए ? "।

अर्थ—" हे देवानुप्रिय ! तुं मारा दूतपणाए करीने घणा गाम, आकर, नगर अने घरोने विषे प्रवेश करे छे, तो तेवुं छे के कोइ पण राजा अथवा ईश्वर (धनिक) ने घेर जेवो आ सुबाहु दारिकानो स्नाननो महोत्सव करवामां आव्यो छे तेवो स्नाननो उत्सव पूर्वे कोइ पण ठेकाणे तें जोयो होय ? "

मु०—तते णं से वरिसधरे रुप्पिं करयल० एवं वदासी—" एवं खलु सामी ! अहं अन्नया तुब्भे णं दोच्चेणं मिहिलं गए, तत्थ णं मए कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभावतीए देवीए अत्तयाए

मल्लीए विदेहरायकन्नगाए मज्जणए दिट्ठे, तस्स णं मज्जणगस्स इमे सुबाहुए दारियाए मज्जणए सयसहस्सइमं पि कलं न अग्घेति "।

अर्थ—त्यारे ते वर्षधरे बे हाथ जोडी आ प्रमाणे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे हे स्वामी ! हुं एकदा तमारा दूतपणाए करीने मिथिला नगरीमां गयो हतो, त्यां में कुंभ राजानी पुत्री प्रभावती देवी (राणी) नी आत्मजा मल्ली नामनी विदेहराजनी कन्यानो मज्जन (स्नान) महोत्सव जोयो हतो. ते मज्जन महोत्सवनी पासे आ सुबाहु दारिकानो मज्जन उत्सव लाखमें अंशे पण लायक (आवे तेम) नथी. "

मू०—तए णं से रुप्पी राया वरिसधरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म सेसं तहेव मज्जणगजणितहासे दूतं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी—जेणेव मिहिला नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ ३ ॥ ७१ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते रुपी राजा वर्षधरनी पासेथी आ अर्थ (वृत्तांत) सांभळीने हृदयमां धारीने विगेरे बाकीनी हकिकत सर्व तेज प्रमाणे पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवी. यावत् मज्जन उत्सवना वृत्तांतथी जेने हर्ष—कौतुक उत्पन्न थयुं छे एवा राजाए दूतने बोलाव्यो, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं, विगेरे सर्व पूर्ववत् जाणवुं, यावत् ते दूत ज्यां मिथिला नगरी हती

१ पोताथी उत्पन्न थयेली.

त्यां जवा चाल्यो. ३. ७१.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं कासी नाम जणवए होत्था । तत्थ णं वाणारसी नाम नगरी होत्था । तत्थ णं संखे नामं कासीराया होत्था ।

अर्थ—ते काळे ते समये काशी नामनो देश हतो. तेमां वाणारसी नामनी नगरी हती. तेमां शंख नामे काशीराज हतो.

मू०—तते णं तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइं तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधी विसंघाडिए यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी एकदा कदाचित् ते मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्याना ते दिव्य कुंडलयुगलनी संधि तुटी गयेली थइ. (त्रुटी गइ.)

मू०—तते णं से कुंभए राया सुवन्नगारसेणिं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—" तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! इमस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधिं संघाडेह " ।

अर्थ—त्यारपछी ते कुंभ राजाए सुवर्णकार (सोनी) नी श्रेणिने बोलावी, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रियो ! तमे आ दिव्य कुंडलयुगलनी संधिने सांधी लावो."

मू०—तए णं सा सुवन्नगारसेणी एतमट्ठं तहत्ति पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता तं दिव्वं कुंडलजुअलं गेण्हाति, गेण्हित्ता जेणेव सुवन्नगाराभिसियाओ तेणेव उवागच्छाति, उवागच्छित्ता सुवन्नगारभिसियासु णिवेसेति, णिवेसित्ता बहूहिं आएहि य जाव परिणामेमाणा इच्छंति तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधिं घडित्तए, नो चेव णं संचाएंति संघडित्तए।

अर्थ—त्यारपछी ते सुवर्णकारनी श्रेणिए आ अर्थने सांभळी 'तथा'–'तेम हो' एम कही (हुकम) अंगीकार कर्यो. अंगीकार करी ते दिव्य कुंडलयुगलने ग्रहण कर्युं, ग्रहण करीने ज्यां सुवर्णकारनां [1]आसनो (स्थानो) हतां, त्यां आव्या, आवीने सुवर्णकारनां आसनो उपर ते कुंडलयुगल मूक्युं, मूकीने घणा उपायवडे यावत् तेना परिणामन भावने करता सता ते दिव्य कुंडलयुगलनी सांध मेळववा इच्छवा लाग्या, परंतु ते सांध मेळववा शक्तिमान थया नहीं.

मू०—तते णं सा सुवन्नगारसेणी जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छाति, उवागच्छित्ता करयल० वद्धावेत्ता एवं वदासी—" एवं खलु सामी! अज्ज तुब्भे अम्हे सद्दावेह, सद्दावित्ता जाव संधिं संघाडेत्ता एतमाणं पच्चप्पिणाह। तते णं अम्हे तं दिव्वं कुंडलजुयलं गेण्हामो, जेणेव सुवन्नगार-

१ एरण विगेरे ओजारना स्थान.

भिसियाओ जाव नो संचाएमो संघाडित्तए। तते णं अम्हे सामी ! एयस्स दिव्वस्स कुंडलस्स अन्नं सरिसयं कुंडलजुयलं घडेमो "।

अर्थ—त्यारपछी ते सुवर्णकारनी श्रेणि ज्यां कुंभ राजा हता त्यां आवी, आवीने बे हाथ जोडी राजाने जय-विजयना शब्दवडे वधावी तेओए आ प्रमाणे कह्युं-" आ प्रमाणे निश्चे हे स्वामी ! आजे तमे अमने बोलाव्या हता, बोलावीने कह्युं हतुं के ' यावत् आ कुंडलयुगलनी संधि मेळवीने आ मारी आज्ञा पाछी आपो. ' एम तमारी आज्ञाथी अमे ते दिव्य कुंडलयुगल ग्रहण कर्युं हतुं, पछी ज्यां सुवर्णकारनां आसन हतां त्यां अमे गया यावत् अमे (बहु प्रयास कर्या छतां) तेनी संधि मेळववा शक्तिमान थया नहीं. तेथी अमे हे स्वामी ! आ दिव्य कुंडलयुगलने बदले एना जेवुं बीजुं नवुं कुंडलयुगल (आप कहो तो) घडी आपीए-बनावी आपीए. "

मू०-तते णं से कुंभए राया तीसे सुवन्नगारसेणीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते कुंभराजा ते सुवर्णकारनी श्रेणि पासेथी आ अर्थ (वृत्तांत) सांभळीने हृदयमां धारीने तत्काळ रोष पाम्या, अने कपाळमां त्रण वळीया पडे तेवी भृकुटि चडावीने आ प्रमाणे बोल्या.—

मू०-" से के णं तुब्भे कलायाणं भवह ? जे णं तुब्भे इमस्स कुंडलजुयलस्स नो संचाएह

संधिं संघाडेत्तए ?" ते सुवन्नगारे निव्विसए आणवेति ।

अर्थ—"तमे कलादो (सोनीओ) नी मध्ये कया (केवा) सोनी छो ? के जे तमे आ कुंडलयुगलनी संधिने सांधवा माटे समर्थ थया नहीं ?" एम कही ते सुवर्णकारोने राजाए देशनीकालनी आज्ञा करी.

मू०—तते णं ते सुवन्नगारा कुंभेणं रन्ना निव्विसया आणत्ता समाणा जेणेव साति साति गिहाति तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सभंडमत्तोवगरणमायाओ मिहिलाए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं निक्खमंति, निक्खमित्ता विदेहस्स जणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव कासी जणवए जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अग्गुज्जाणंसि सगडीसागडं मोएंति, मोइत्ता महत्थं जाव पाहुडं गेण्हंति, गेण्हित्ता वाणारसीनयरीं मज्झंमज्झेणं जेणेव संखे कासीराया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल० जाव वद्धावेंति, वद्धावित्ता पाहुडं पुरओ ठावेइ, ठावित्ता संखरायं एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते सुवर्णकारो कुंभ राजाए देशनीकालनी आज्ञा आप्या सता ज्यां पोतपोतानां घर हतां, त्यां आव्या, आवीने पोताना भांड, पात्रो, उपकरण विगेरे सामग्री सहित मिथिला राजधानीना मध्य भागे थइने नीकळ्या,

नीकळीने विदेह नामना जनपद (देश) नी मध्ये मध्ये थइने ज्यां काशी नामनो जनपद हतो तथा ज्यां वाणारसी नामनी नगरी हती, त्यां आव्या, आवीने अग्र (उत्तम) उद्यानने विषे गाडी-गाडां छोड्यां, छोडीने मोटा अर्थवाळुं यावत् भेटणुं ग्रहण कर्युं, ग्रहण करीने वाणारसी नगरीना मध्य भागे थइने ज्यां शंख नामना काशीराजा हता त्यां आव्या, आवीने बे हाथ जोडी यावत् जय-विजय शब्दवडे राजाने वधाव्या, वधावीने भेटणुं तेनी पासे मूक्युं, मूकीने तेओए शंख राजाने आ प्रमाणे कह्युं—

मू०—अम्हे णं सामी ! मिहिलातो नयरीओ कुंभएणं रन्ना निव्विसया आणत्ता समाणा इहं हव्वमागता, तं इच्छामो णं सामी ! तुब्भं बाहुच्छायापरिग्गहिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहं सुहेणं परिवसिउं "।

अर्थ—" हे स्वामी ! अमे मिथिला नगरीथी कुंभ नामना राजाए देशनीकालनी आज्ञा आप्या सता शीघ्रपणे अहीं आव्या छीए, तेथी हे स्वामी ! तमे तमारी बाहुछायामां ग्रहण कर्या सता अमे निर्भय, उद्वेग रहित सुखे सुखे अहीं रहेवाने इच्छीए छीए. "

मू०—तते णं संखे कासीराया ते सुवन्नगारे एवं वदासी—" किं णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कुंभएणं रन्ना निव्विसया आणत्ता ? "।

अर्थ—त्यारे ते शंख नामना काशीराजाए ते सुवर्णकारोने आ प्रमाणे कह्युं (पूछ्युं)-" हे देवानुप्रियो ! शा माटे तमने कुंभ राजाए देशनीकालनी आज्ञा करी ? "

मू०—तते णं ते सुवन्नगारा संखं एवं वदासी—" एवं खलु सामी ! कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभावतीए देवीए अत्तयाए मल्लीए कुंडलजुयलस्स संधी विसंघाडिए । तते णं से कुंभए सुवन्नगारसेणिं सद्दावेति, सद्दावित्ता जाव निव्विसया आणत्ता । तं एएणं कारणेणं सामी ! अम्हे कुंभएणं रन्ना निव्विसया आणत्ता " ।

अर्थ—त्यारे ते सुवर्णकारोए शंखराजाने आ प्रमाणे कह्युं-" आ प्रमाणे निश्चे हे स्वामी ! कुंभ राजानी पुत्री प्रभावती देवीनी आत्मजा मल्ली कुमारीना कुंडलयुगलनी संधी तुटी गइ, तेथी ते कुंभ राजाए सुवर्णकारनी श्रेणिने बोलावी, बोलावीने (ते सांधी देवा कह्युं. ते न संधावाथी अमने देशनिकाल कर्या.) ते सर्व पूर्ववत् जाणवुं. यावत् देशनीकालनी आज्ञा आपी. तो हे स्वामी ! आ कारणने लीधे कुंभ राजाए अमने देशनीकालनी आज्ञा करी छे. " ।

मू०—तते णं से संखे सुवन्नगारे एवं वदासी—" केरिसिया णं देवाणुप्पिया ! कुंभगस्स धूया पभावती देवीए अत्तया मल्ली विदेहरायवरकन्ना ? "

अर्थ—ते सांभळी ते शंख राजाए ते सुवर्णकारोने आ प्रमाणे कह्युं (पूछ्युं)—" हे देवानुप्रियो ! कुंभ राजानी पुत्री प्रभावती देवीनी आत्मजा मल्ली नामनी विदेहराजानी श्रेष्ठ कन्या केवी छे ? "

मू०—तते णं ते सुवन्नगारा संखरायं एवं वदासी—" णो खलु सामी ! अन्ना काई तारिसिया देवकन्ना वा गंधव्वकन्ना वा जाव जारिसिया णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना " ।

अर्थ—त्यारे ते सुवर्णकारोए शंख राजाने आ प्रमाणे कह्युं—" निश्चे हे स्वामी ! बीजी कोइ तेवा प्रकारनी देवकन्या के गंधर्वकन्या यावत् नथी, के जेवी विदेह राजानी श्रेष्ठ कन्या मल्ली छे. "

मू०—तते णं से संखे कुंडलजुअलजणितहासे दूतं सद्दावेति जाव तहेव पहारेत्थ गमणाए ॥४॥७२॥

अर्थ—त्यारपछी कुंडलयुगलना वृत्तांतथी जेने हर्ष (कौतुक) उत्पन्न थयो छे एवा ते शंख राजाए दूतने बोलाव्यो. विगेरे यावत् ते ज प्रमाणे पूर्ववत् कहेवुं. यावत् ते दूत गमन करवा तैयार थयो. ४–७२.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं कुरुजणवए होत्था, हत्थिणाउरे नगरे, अदीणसत्तू नामं राया होत्था, जाव विहरति ।

अर्थ—ते काळे ते समये कुरु नामे जनपद–देश हतो. तेमां हस्तिनापुर नामे नगर हतुं. तेमां अदीनशत्रु नामे राजा हतो, यावत् ते सुखे विचरता हता.

मू०—तत्थ णं मिहिलाए कुंभगस्स पुत्ते पभावतीए अत्तए मल्लीए अणुजायए मल्लदिन्नए नाम कुमारे जाव जुवराया यावि होत्था ।

अर्थ—ते मिथिला नगरीमां कुंभ राजानो पुत्र प्रभावती देवीनो आत्मज मल्लीकुमारीनो अनुज (नानो भाइ) मल्लदिन्न नामनो कुमार यावत् युवराज हतो.

मू०—तते णं मल्लदिन्ने कुमारे अन्नया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—"गच्छह णं तुब्भे मम पमदवणंसि एगं महं चित्तसभं करेह अणेग० " जाव पच्चप्पिणंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते मल्लदिन्न कुमारे एकदा कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ, अने मारा प्रमद[1] वनने विषे एक मोटी सभा करो. ते अनेक स्तंभोवडे सहित विगेरे शोभावाळी करो." यावत् तेओए ते प्रमाणे करी तेनी आज्ञा पाछी आपी.

मू०—तते णं से मल्लदिन्ने कुमारे चित्तगरसेणिं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी—" तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! चित्तसभं हावभावविलासबिब्बोयकलिएहिं रूवेहिं चित्तेह, चित्तित्ता जाव

१ घरना उद्यानमां.

पच्चप्पिणह ” ।

अर्थ—त्यारपछी ते मल्लदिन्न कुमारे चितारानी श्रेणिने बोलावी, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—“ हे देवानुप्रियो ! तमे मारी चित्रसभाने हाव, भाव, विलास अने बिब्बोकवाळा रूपो (चित्रो) वडे चितरो. चितरीने यावत् मारी आज्ञा पाछी आपो. (अहीं हाव भाव विगेरे सामान्य रीते स्त्रीनी चेष्टाओ छे, ते आ प्रमाणे—“ हाव एटले मुखनो विकार, भाव एटले चित्तनो विकार, विलास एटले नेत्रनो विकार अने विभ्रम (बिब्बोक) एटले भृकुटिनो विकार अथवा इष्ट अर्थनी प्राप्ति थवाथी अभिमानवडे जे अनादरनी चेष्टा थाय ते बिब्बोक कहेवाय छे.)

मू०—तते णं सा चित्तगरसेणी तह त्ति पडिसुणेति, पडिसुणित्ता जेणेव सयाइं गिहाइं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तूलियाओ वन्नए य गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव चित्तसभा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अणुपविसंति, अणुपविसित्ता भूमिभागे विरंचंति (विहिवंति), विरंचित्ता (विहिवित्ता) भूमिं सज्जंति, सज्जित्ता चित्तसभं हावभाव जाव चित्तेउं पयत्ता यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते चित्रकारनी श्रेणिए ‘ तथा प्रकारे हो ’ एम कही तेनी आज्ञा अंगीकार करी, अंगीकार करीने ज्यां पोतानां घर हतां, त्यां तेओ गया, जइने तूलिका (पींछी) अने वर्ण (जूदी जूदी जातना रंग) ग्रहण कर्या, ग्रहण करीने ज्यां चित्रसभा हती त्यां आव्या, आवीने चित्रसभामां प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने भूमिना विभागोनी वहेंचणी करी,

वहेचीने पोतपोतानी भूमिने सज्ज (चित्रने योग्य तैयार) करी, सज्ज करीने ते चित्रसभाने हाव, भाव विगेरेवाळा चित्रो चितरवा माटे प्रयत्नवाळा थया.

मू०—तते णं एगस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तगरलद्धी लध्धा पत्ता अभिसमन्नागया—जस्स णं दुपयस्स वा चउपयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि पासति तस्स णं देसाणुसारेणं तयाणुरूवं निव्वत्तेति ।

अर्थ—त्यां ते वधा चिताराओनी मध्ये एक चिताराने आवा प्रकारनी चित्रकरलब्धि लब्ध थयेली, प्राप्त थयेली अने वारंवार सेववामां (परिचयमां) आवेली हती के ते जे कोइ द्विपद, चतुष्पद के अपदनो एक अवयव पण जुए तो तेनुं ते अवयवने अनुसारे समग्र सत्य स्वरूप करी (चितरी) शकतो हतो.

मू०—तए णं से चित्तगरदारए मल्लीए जवणियंतरियाए जालंतरेण पायंगुट्ठं पासति ।

अर्थ—तेथी ते चित्रकरना दारके (पुत्रे) एकदा मल्लीकुमारीना पगनो अंगुठो जवनिका (पडदा) नी अंदर जाळीया (छिद्र) मांथी जोयो.

मू०—तते णं तस्स णं चित्तगरस्स इमेयारूवे जाव सेयं खलु ममं मल्लीए वि पायंगुट्ठाणुसारेणं सारिसगं जाव गुणोववेयं रूवं निव्वत्तित्तए, एवं संपेहेति, संपेहित्ता भूमिभागं सज्जेति सज्जित्ता

मल्लीए वि पायंगुट्ठाणुसारेणं जाव निव्वत्तेति ।

अर्थ—त्यारे ते चित्रकरने आवा प्रकारनो यावत् विचार थयो के—"आ मल्ली कुमारीना पण पगना अंगुठाने अनुसारे तेनी सदृश यावत् तेवा ज गुणे करीने सहित एवुं तेनुं आखुं रूप मारे नीपजाववुं (चीतरवुं) ए श्रेयकारक (योग्य) छे." आ प्रमाणे तेणे विचार कर्यो, विचार करीने पोताना भागनो भूमिभाग सज्ज कर्यो, सज्ज करीने मल्लीकुमारीना पादना अंगुठाने अनुसारे यावत् रूप चीतर्युं.

मू०—तते णं सा चित्तगरसेणी चित्तसभं जाव हावभावे चित्तेति, चित्तित्ता जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता जाव एतमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते चित्रकरोनी श्रेणिए चित्रसभाने यावत् हाव भाव विगेरे सहित चीतरी, चीतरीने ज्यां मल्लदिन्न कुमार हतो त्यां आवी, आवीने यावत् तेनी आज्ञा पाछी आपी.

मू०—तए णं मल्लदिन्ने चित्तगरसेणिं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता संमाणित्ता विपुलं जीवियारिहं पीइदाणं दलेइ, दलइत्ता पडिविसज्जेइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते मल्लदिन्न कुमारे ते चित्रकर श्रेणिनो सत्कार कर्यो, सन्मान कर्युं, सत्कार करी सन्मान करी तेमने आजीविकाने लायक एवुं मोटुं प्रीतिदान आप्युं, आपीने तेमने रजा आपी.

मू०—तए णं मल्लदिन्ने कुमारे अन्नया ण्हाए अंतेउरपरियालसंपरिवुडे अम्मधाईए सद्धिं जेणेव चित्तसभा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता चित्तसभं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता हावभावविलासविब्बोयकलियाइं रूवाइं पासमाणे पासमाणे जेणेव मल्लीए विदेहवररायकन्नाए तयाणुरूवे णिव्वत्तिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

अर्थ—त्यारपछी अन्यदा मल्लदिन्न कुमार स्नान करी, विभूषित थइ, अंतःपुर अने परिवार सहित धावमाताने साथे लइ ज्यां चित्रसभा हती, त्यां आव्यो. आवीने तेणे चित्रसभामां प्रवेश कर्यो, प्रवेश करी हाव, भाव, विलास अने बिब्बोक सहित स्त्री विगेरेनां स्वरूपो (चित्रो) जोतो जोतो ज्यां मल्ली नामनी विदेह राजानी श्रेष्ठ कन्यानुं तथाप्रकारनुं रूप (चित्र) बनावेलुं हतुं, त्यां आव्यो.

मू०—तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे मल्लीए विदेहवररायकन्नाए तयाणुरूवं निव्वत्तियं पासति, पासित्ता इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—" एस णं मल्ली विदेहवररायकन्न " त्ति कट्टु लज्जिए वीडिए विअडे सणियं सणियं पच्चोसक्कइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते मल्लदिन्न कुमारे मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्यानुं तथाप्रकारनुं चितरेलुं रूप जोयुं, जोइने

तेने आवा प्रकारनो विचार यावत् उत्पन्न थयो.—" अहो! आ तो मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्या छे." एटले के ते पोते ज उभी छे. एम विचारी ते लज्जा पाम्यो, व्रीडा पाम्यो, व्यर्दित थयो (अर्थात् अत्यंत लज्जा पाम्यो.) तेथी ते धीमे धीमे पाछो फर्यो.

मू०—तए णं मल्लदिन्नं अम्मधाई पच्चोसक्कंतं पासित्ता एवं वदासी—" किं णं तुमं पुत्ता ! लज्जिए वीडिए विअडे सणियं सणियं पच्चोसक्कइ ? "।

अर्थ—त्यारपछी धात्री माताए मल्लदिन्न कुमारने पाछो फरतो जोइ आ प्रमाणे कह्युं—" हे पुत्र ! केम तुं लज्जा पाम्यो, व्रीडा पाम्यो अने व्यर्दित थयो सतो धीमे धीमे पाछो फर्यो ? "

मू०—तते णं से मल्लदिन्ने अम्मधातिं एवं वदासी—" जुत्तं णं अम्मो ! मम जेट्ठाए भगिणीए गुरुदेवयभूयाए लज्जणिज्जाए मम चित्तगरणिव्वत्तियं सभं अणुपविसित्तए ? "।

अर्थ—त्यारे ते मल्लदिन्न कुमारे धात्रीमाताने आ प्रमाणे कह्युं—" हे माता ! मारी मोटी व्हेन के जे गुरु अने देवरूप मानवा योग्य छे तथा जेनाथी मारे लाजवुं जोइए. (ए ज्यां होय त्यां) तेनी पासे मारे चित्रकरनी बनावेली सभामां प्रवेश करवो शुं योग्य छे ? "।

मू०—तए णं अम्मधाई मल्लदिन्नं कुमारं एवं वयासी—" नो खलु पुत्ता ! एस मल्ली, एस णं मल्ली विदेहवररायकन्ना चितगरएणं तयाणुरूवे णिव्वत्तिए " ।

अर्थ—त्यारे ते धात्रीमाताए मल्लदिन्न कुमारने आ प्रमाणे कह्युं—" हे पुत्र ! निश्चे आ मल्ली नथी. परंतु आ मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्या चित्रकारे तथाप्रकारना रूपवाळी नीपजावी छे–चितरेली छे. "

मू०—तते णं मल्लदिन्ने कुमारे अम्मधाईए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते एवं वयासी—" केस णं भो ! चित्तयरए अपत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए? जेणं मम जेट्ठाए भगिणीए गुरुदेवयभूयाए जाव निव्वत्तिए? " त्तिकट्टु तं चित्तगरं वज्झं आणवेइ ।

अर्थ—त्यारे ते मल्लदिन्न कुमार धात्रीमाता पासेथी आ अर्थ सांभळी हृदयमां धारी तत्काळ क्रोध पामी आ प्रमाणे बोल्यो—" अरे ! कयो ते चितारो अप्रार्थित (मृत्यु) नी प्रार्थना करनार यावत् लज्जा, बुद्धि, लक्ष्मी अने कीर्तिथी रहित छे ? के जेणे गुरुदेव समान मारी ज्येष्ठ भगिनीनुं रूप यावत् बनाव्युं–चितर्युं ? ", आ प्रमाणे कही तेणे ते चित्रकारनो वध करवानी आज्ञा आपी.

मू०—तए णं सा चित्तगरस्सेणी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव

उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेइ, वद्धावित्ता एवं वदासी–

अर्थ—त्यारपछी ते चित्रकारोनी श्रेणि आ कथानो (वृत्तांतनो) अर्थ पामीने–जाणीने ज्यां मल्लदिन्न कुमार हतो त्यां आवी. आवीने बे हाथ जोडी यावत् मस्तके अंजलि करी कुमारने वधाव्यो, वधावी आ प्रमाणे तेओ बोल्या—

मू०–" एवं खलु सामी ! तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तकरलद्धी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया–जस्स णं दुपयस्स वा जाव णिव्वत्तेति, तं मा णं सामी ! तुब्भे तं चित्तगरं वज्झं आणवेह, तं तुब्भे णं सामी ! तस्स चित्तगरस्स अन्नं तयाणुरूवं दंडं निव्वत्तेह " ।

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे हे स्वामी ! ते चित्रकारने आवा प्रकारनी चित्रकरनी लब्धि (कळा) लब्ध थयेली, प्राप्त थयेली अने वारंवार सेवनमां (परिचयमां) आवेली छे के ते जे कोइ द्विपद विगेरेनुं किंचित् पण रूप जुए, यावत् तेवुं ते बनावे छे. तेथी हे स्वामी ! तमे ते चितारानो वधनो आदेश न आपो. तमे हे स्वामी ! ते चित्रकारनो बीजो कोइ योग्य दंड करो. "

मू०–तए णं से मल्लदिन्ने तस्स चित्तगरस्स संडासगं छिंदावेइ, निव्विसयं आणवेइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते मल्लदिन्न कुमारे ते चित्रकारना संडासाने छेदाव्यो एटले कपाव्यो अने तेने देशनीकालनी

१ जमणा हाथनो अंगुठो तथा तेनी पासेनी पहेली आगळी, जे बे मळीने चपटी थाय छे, ते संडासक कहेवाय छे.

आज्ञा आपी.

मू०—तए णं से चित्तगरए मल्लदिन्नेणं णिव्विसए आणत्ते समाणे सभंडमत्तोवगरणमायाए मिहिलाओ णयरीओ णिक्खमइ, णिक्खमित्ता विदेहं जणवयं मज्झं मज्झेणं जेणेव हत्थिणाउरे नयरे जेणेव कुरुजणवए जेणेव अदीणसत्तू राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भंडणिक्खेवं करेइ, करित्ता चित्तफलगं सज्जेइ, सज्जित्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नगाए पायंगुट्ठाणुसारेण रूवं णिव्वत्तेइ, णिव्वत्ति त्ता कक्खंतरंसि छुब्भइ, छुब्भइत्ता महत्थं जाव पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता हत्थिणापुरं नयरं मज्झं मज्झेणं जेणेव अदीणसत्तू राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं करयल जाव वद्धावेइ, वद्धावित्ता पाहुडं उवणेति, उवणित्ता "एवं खलु अहं सामी ! मिहिलाओ रायहाणीओ कुंभगस्स रन्नो पुत्तेणं पभावतीए देवीए अत्तएणं मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसए आणत्ते समाणे इह हव्वमागए, तं इच्छामि णं सामी ! तुब्भं बाहुच्छायापरिग्गहिए जाव परिवसित्तए"।

अर्थ—त्यारपछी ते चित्रकार मल्लदिन्न कुमारे देशनीकालनी आज्ञा आपी त्यारे पोताना भांड, पात्र, उपकरण विगेरे सामग्री सहित मिथिला नगरीथी नीकळ्यो. नीकळीने विदेह जनपदना मध्य मध्य भागे थइने ज्यां हस्तिनापुर नगर

हतुं, ज्यां कुरु नामे जनपद हतो अने ज्यां अदीनशत्रु राजा हतो, त्यां आव्यो. आवीने पोतानी भांड विगेरे वस्तुओ मूकी, मूकीने एक चित्रफलक[1] सज्ज कर्युं, सज्ज करीने मल्ली नामनी विदेहराजानी श्रेष्ठ कन्याना पादना अंगुठाने अनुसारे ते मल्लीनुं समग्र रूप चितर्युं, चितरीने ते चित्रफलक पोतानी काखमां नांख्युं–राख्युं, राखीने महा अर्थवाळुं यावत् भेटणुं ग्रहण कर्युं, ग्रहण करीने हस्तिनापुर नामना नगरनी मध्य मध्य भागे करीने ज्यां अदीनशत्रु राजा हता, त्यां आव्यो, आवीने तेने बे हाथ जोडी यावत् वधाव्या, वधावीने तेनी पासे भेटणुं मूक्युं, मूकीने ते चित्रकार आ प्रमाणे बोल्यो—" आ प्रमाणे निश्चे हे स्वामी ! मिथिला नामनी राजधानीमां कुंभराजाना पुत्र प्रभावती देवीना आत्मज मल्लदिन्न नामना कुमारे मने देशनीकालनी आज्ञा आपी, तेथी हुं शीघ्रपणे अहीं आव्यो छुं, तो हे स्वामी ! तमारी बाहुछायाने आश्रित थयो सतो हुं यावत् अहीं रहेवाने इच्छुं छुं. "

मू०—तते णं से अदीणसत्तू राया तं चित्तगरदारयं एवं वदासी–" किं णं तुमं देवाणुप्पिया ! मल्लदिण्णेणं निव्विसए आणत्ते ? " ।

अर्थ—त्यारपछी ते अदीनशत्रु राजाए ते चित्रकर पुत्रने आ प्रमाणे कह्युं–" हे देवानुप्रिय ! शा माटे तने मल्लदिन्न कुमारे देशनीकालनी आज्ञा करी ? "

१ चित्र चितरवानुं पाटीयुं, पट विगेरे.

मू०—तए णं से चित्तयरदारए अदीणसत्तुरायं एवं वदासी—" एवं खलु सामी ! मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाई चित्तगरसेणिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—' तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम चित्तसभं ' तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव मम संडासगं छिंदावेइ, छिंदावित्ता निव्विसयं आणावेइ, तं एवं खलु सामी ! मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसए आणत्ते ।

अर्थ—त्यारपछी ते चित्रकारना पुत्रे अदीनशत्रु राजाने आ प्रमाणे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे हे स्वामी ! मल्लदिन्न नामना कुमारे एकदा कदाचित् चित्रकरनी श्रेणिने बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं.—' हे देवानुप्रियो ! तमे मारी चित्रसभाने चितरो ' विगेरे सर्व पूर्ववत् कहेवुं एटले पूर्वली बधी वात करी यावत् मारो संडासक तेणे छेदाव्यो, छेदावीने मने देशनीकालनी आज्ञा करी. तो आ प्रमाणे निश्चे हे स्वामी ! ते मल्लदिन्न कुमारे मने देशनीकालनी आज्ञा करी छे. "

मू०—तते णं अदीणसत्तू राया तं चित्तगरं एवं वदासी—" से केरिसए णं देवाणुप्पिया ! तुमे मल्लीए तदाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए ? " ।

अर्थ—त्यारपछी ते अदीनशत्रु राजाए ते चित्रकरने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रिय ! तें केवा प्रकारनुं ते मल्ली कुमारीनुं तथाप्रकारनुं रूप चितर्युं हतुं ?

मू०-तते णं से चित्तगरे कक्खंतराओ चित्तफलयं णीणेति, णीणित्ता अदीणसत्तुस्स उवणेइ, उवणित्ता एवं वदासी-" एस णं सामी ! मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवस्स रूवस्स केइ आगारभावपडोयारे निव्वत्तिए, णो खलु सक्का केणइ देवेण वा जाव मल्लीए विदेहरायवरकन्नगाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तित्तए "।

अर्थ—त्यारपछी ते चित्रकर पुत्रे पोतानी काखमांथी ते चित्रफलक बहार काढयुं, बहार काढीने अदीनशत्रु राजानी पासे मूक्युं, मूकीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे स्वामी ! आ में ते मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्याना तथाप्रकारना रूपवाळा स्वरूपने कांइक आकार, भाव अने प्रतिबिंब तरीके नीपजाव्युं-चितर्युं छे. परंतु कोइ देव के दानव विगेरे यावत् मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्यानुं बराबर तेवा प्रकारनुं रूप चितरवाने शक्तिमान नथी. "

मू०-तते णं अदीणसतू राया पडिरूवजणितहासे दूयं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी, तहेव जाव पहारेत्थ गमणाए । ५ ॥ ७२ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते अदीनशत्रु राजाए ते चित्र जोइ हर्ष उत्पन्न थवाथी दूतने बोलाव्यो. बोलावी आ प्रमाणे कह्युं, (मल्ली कुंवरीनी पोताने माटे मागणी करवा मोकल्यो.) विगेरे सर्व पूर्ववत् जाणवुं. यावत् ते दूत जवाने तैयार थयो-चाल्यो. ५-७२

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं पंचाले जणवए कंपिल्ले पुरे नाम नयरे होत्था, तत्थ णं जियसत्तू णामं राया होत्था पंचालाहिवई । तस्स णं जितसत्तुस्स धारिणीपामोक्खं देविसहस्सं ओरोहे होत्था ।

अर्थ—ते काळे ते समये पंचाल नामे जनपद (देश) हतो. तेमां कांपिल्यपुर नामनुं नगर हतुं. ते नगरमां जितशत्रु नामे राजा पंचाल देशनो अधिपति हतो. ते जितशत्रुने धारिणी विगेरे हजार देवीओ (राणीओ) अंतःपुरमां हती.

मू०—तत्थ णं मिहिलाए चोक्खा नामं परिव्वाइया रिउव्वेय जाव परिणिट्ठिया यावि होत्था ।

अर्थ—ते मिथिला नामनी नगरीमां चोक्खा नामनी परिव्राजिका रहेती हती. ते ऋग्वेद विगेरे वेद यावत् षष्टितंत्र विगेरे शास्त्रोमां निपुण हती.

मू०—तते णं सा चोक्खा परिव्वाइया मिहिलाए बहूणं राईसर जाव सत्थवाहपभितीणं पुरतो दाणधम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणी पण्णवेमाणी परूवेमाणी उवदंसेमाणी विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते चोक्खा परिव्राजिका मिथिला नगरीमां घणा राजा, ईश्वर (धनिक), विगेरे यावत् सार्थवाह

विगेरेनी पासे दानधर्मने, शौचधर्मने, अने तीर्थाभिषेकने कहेती, प्रज्ञापना करती, प्ररूपणा करती अने उपदेश आपती सती विचरती हती-रहेती हती.

मू०—तते णं सा चोक्खा परिव्वाइया अन्नया कयाई तिदंडं च कुंडियं च जाव धाउरत्ताओ य गिण्हइ, गिण्हित्ता परिव्वाइगावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पविरलपरिव्वाइया सद्धिं संपरिवुडा मिहिलं रायहाणिं मज्झंमज्झेणं जेणेव कुंभगस्स रन्नो भवणे जेणेव कण्णंतेउरे जेणेव मल्ली विदेहवररायकन्ना तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उदयपरिफासियाए दब्भोवरि पच्चत्थुयाए भिसियाए निसियति, निसिइत्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पुरतो दाणधम्मं च जाव विहरति।

अर्थ—त्यारपछी ते चोक्खा परिव्राजिकाए एकदा कदाचित् त्रिदंडने, कुंडिकाने यावत् धातु (गेरु) वडे रंगेला वस्त्रने ग्रहण कर्यां, ग्रहण करीने परिव्राजिकाना मठमांथी बहार नीकळी, बहार नीकळीने थोडी (केटलीक) परिव्राजिकाओनी साथे परिवरेली सती मिथिला नामनी राजधानीना मध्य मध्य भागे करीने ज्यां कुंभ राजानुं भवन हतुं, ज्यां कन्याओनुं अंतःपुर हतुं, तथा ज्यां मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्या हती, त्यां आवी, आवीने भूमिपर जळना छांटा नांख्या, तेनापर दर्भ पाथर्यो, तेनापर आसन राखी तेपर बेठी, बेसीने मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्या पासे दानधर्म विगेरेनो यावत् उपदेश आपती रही. (आपवा लागी.)

मू०—तते णं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी—"तुब्भे णं चोक्खे ! किंमूलए धम्मे पन्नत्ते ?"।

अर्थ— त्यारपछी ते मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्याए चोख्खा परिव्राजिकाने आ प्रमाणे कह्युं के—"हे चोख्खा ! तमारा धर्मनुं मूळ (कारण) शुं कहेलुं छे ?"

मू०—तते णं सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लिं विदेहरायवरकन्नं एवं वदासी—"अम्हं णं देवाणुप्पिए ! सोयमूलए धम्मे पण्णवेमि, जं णं अम्हं किंचि असुई भवइ तं णं उदएण य मट्टियाए जाव अविग्घेणं सग्गं गच्छामो"।

अर्थ—त्यारपछी ते चोख्खा परिव्राजिकाए मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्याने आ प्रमाणे कह्युं—"हे देवानुप्रिया ! अमारो शौच मूळ धर्म कहेलो छे. एटले के अमारी जे कोइ वस्तु अपवित्र थाय, तेने जळवडे अने माटीवडे शुद्ध करवामां आवे छे, यावत् ते धर्म पाळीने अमे विघ्न रहित स्वर्गे जइए छीए."

मू०—तए णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना चोक्खं परिव्वाइयं एवं वदासी—"चोक्खा ! से जहानामए केई पुरिसे रुहिरकयं वत्थं रुहिरेण चेव धोवेज्जा, अत्थि णं चोक्खा ! तस्स रुहिरकयस्स

वत्थस्स रुहिरेणं धोव्वमाणस्स काई सोही ?" "नो इणट्ठे समट्ठे"।

अर्थ—त्यारपछी ते मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्याए चोक्खा परिव्राजिकाने आ प्रमाणे कह्युं—" जेम कोइ अमुक नामनो पुरुष रुधिरथी खरडायेला वस्त्रने रुधिरवडे ज धोवे, तो हे चोक्खा ! रुधिरथी खरडायेला अने रुधिरथी धोवाता (धोयेला) एवा ते वस्त्रनी कांइ पण शुद्धि थाय खरी ?" त्यारे ते परिव्राजिकाए जवाब आप्यो के—" ए अर्थ समर्थ नथी एटले के शुद्धि थाय नहीं."

मू०—" एवामेव चोक्खा ! तुब्भे णं पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं नत्थि काई सोही; जहा व तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव धोव्वमाणस्स"।

अर्थ—मल्लीए कह्युं—" ए ज प्रमाणे हे चोक्खा ! तमारा धर्ममां प्राणातिपात (जीवहिंसा) विगेरे यावत् मिथ्यादर्शन शल्यवडे (एटले अढार पापस्थानको सेववानो प्रतिबंध न होवाथी) कांइ पण शुद्धि नथी. जेम रुधिरवडे खरडायेला अने रुधिरवडे ज धोयेला ते वस्त्रनी शुद्धि नथी तेम."

मू०—तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए एवं वुत्ता समाणा संकिया कंखिया विइगिच्छिया भेयसमावण्णा जाया यावि होत्था, मल्लीए णो संचाएति किंचिवि पामो-

क्खमाइक्खित्तए तुसिणीया संचिट्ठति ।

अर्थ—त्यारपछी ते चोख्खा परिव्राजिका मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्याए आ प्रमाणे कहे सते पोताना धर्ममां शंका पामी, कांचावाळी थइ–(अन्य धर्मनी इच्छावाळी थइ), विचिकित्सा पामी (फळ प्रत्ये शंकावाळी थइ) अने भेदने पामी (मनमां तर्क वितर्क थवा) एवी थइ. अने मल्ली कुमारीने कांइ पण उत्तर आपवा शक्तिमान न थइ, तेथी ते मौन ज रही.

मू०—तए णं तं चोक्खं मल्लीए बहुओ दासचेडीओ हीलेंति निंदंति खिंसंति गरहंति अप्पेगतिआ हेरुयालंति अप्पेगतिया मुहमक्काडिया करेंति अप्पेगतिआ वग्घाडीओ करेंति अप्पेगतिया तज्जमाणीओ करेंति अप्पेगतिया तालेमाणि(णी)ओ करेंति अप्पेगतिया निच्छुभंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते चोख्खा परिव्राजिकाने मल्ली कुमारीनी घणी दासीओ तेनी जाति विगेरे प्रगट करी हीलना करवा लागी, मनवडे निंदा करवा लागी, खिंसा (वचनवडे निंदा) करवा लागी–एक बीजीनी पासे तेणीना दोष कहेवा लागी, गर्हा करवा लागी–तेणीनी समच ज दोष कहेवा लागी, तथा केटलीक दासीओ तेणीने कोप पमाडवा लागी, केटलीक दासीओ मुख मरडवा लागी, केटलीक दासीओ उपहास (मश्करी) करवा लागी, केटलीक दासीओ आंगळीवडे तर्जना करवा लागी, केटलीक दासीओ ताडना करवा लागी अने केटलीक दासीओए तेणीने गळे पकडी बहार काढी मूकी.

मू०—तए णं सा चोक्खा मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए दासचेडियाहिं जाव गरहिज्जमाणी हीलिज्जमाणी आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणी मल्लीए विदेहरायवरकण्णाए पओसमावज्जाति, भिसियं गेण्हाति, गेण्हित्ता कण्णंतेउराओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता मिहिलाओ निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता परिव्वाइयासंपरिवुडा जेणेव पंचालजणवए जेणेव कंपिल्लपुरे बहूणं राईसर जाव परूवेमाणी विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते चोख्खा नामनी परिव्राजिकाने मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्यानी दासीओए यावत् गर्हा करी हीलना करी त्यारे ते तत्काळ क्रोध पामी यावत् क्रोधवडे धमधमायमान थइ. तेथी मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्या उपर प्रद्वेष पामी. पछी पोतानुं आसन ग्रहण कर्युं, ग्रहण करीने कन्याना अंतःपुरमांथी बहार नीकळी, नीकळीने मिथिलानी बहार नीकळी, नीकळीने पोतानी परिव्राजिकाओ सहित ज्यां पंचाल जनपद (देश) हतो अने ज्यां कांपील्यपुर नगर हतुं त्यां आवी, आवीने घणा राजा, इभ्य विगेरेनी पासे यावत् दानधर्म, शौचधर्म विगेरेनी प्ररूपणा करती रही.

मू०—तए णं से जितसत्तू अन्नदा कदाई अंतेउरपरियाल सद्धिं संपरिवुडे एवं जाव विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु राजा एकदा कदाचित् अंतःपुर अने परिवारनी साथे परिवर्या सता यावत् रहेला छे. (बेठेला छे.)

मू०—तते णं सा चोक्खा परिव्वाइयासंपरिवुडा जेणेव जितसत्तुस्स रण्णो भवणे जेणेव जितसत्तू तेणेव उवागच्छाति, उवागच्छित्ता अणुपविसाति, अणुपविसित्ता जियसत्तुं जएणं विजएणं वद्धावेति।

अर्थ—त्यारपछी ते चोख्खा परिव्राजिकाओवडे परिवरी सती ज्यां जितशत्रु राजानुं भवन हतुं अने ज्यां जितशत्रु राजा हता त्यां आवी, आवीने तेणीए तेमां प्रवेश कर्यो, प्रवेश करी जितशत्रु राजाने जय विजयना शब्दवडे वधाव्या.

मू०—तते णं से जितसत्तू चोक्खं परिव्वाइयं एज्जमाणं पासति, पासित्ता सीहासणाओ अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठित्ता चोक्खं परिव्वाइयं सक्कारेति संमाणेति, सक्कारित्ता संमाणित्ता आसणेणं उवणिमंतेति।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु राजाए चोख्खा नामनी परिव्राजिकाने आवती जोइ. जोइने ते आसनपरथी उभा थया. उभा थइने चोख्खा परिव्राजिकानो सत्कार कर्यो, सन्मान कर्युं. सत्कार करी सन्मान करी आसनवडे निमंत्रण कर्युं—बेसवा माटे आसन आप्युं.

मू०—तते णं सा चोक्खा उदगपरिफासियाए जाव भिसियाए निविसइ, जियसत्तुं रायं रज्जे

य जाव अंतेउरे य कुसलोदंतं पुच्छइ।

अर्थ—त्यारपछी ते चोख्खा परिव्राजिका जळ छांटीने (दर्भ पाथरीने) यावत् पोताना आसनपर बेठी. पछी तेणीए जितशत्रु राजाने तेना राज्यने विषे यावत् अंतःपुरने विषे क्षेमकुशळना समाचार पूछ्या.

मू०—तते णं सा चोक्खा जियसत्तुस्स रन्नो दाणधम्मं च जाव विहरति।

अर्थ—त्यारपछी ते चोख्खा जितशत्रु राजानी पासे दानधर्म विगेरेनी प्ररूपणा करी यावत् (प्ररूपणा करती सती) विचरवा लागी-रही.

मू०—तते णं से जियसत्तू अप्पणो ओरोहंसि जाव विम्हिए चोक्खं परिव्वाइयं एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु राजा पोताना अंतःपुरनी स्त्रीओना सौंदर्यादिकमां यावत् विस्मय पामेला हता, तेथी तेणे चोख्खा नामनी परिव्राजिकाने आ प्रमाणे कह्युं-पूछ्युं—

मु०—" तुमं णं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामागर जाव अडह बहूण य रातीसर गिहातिं अणुपविससि, तं अत्थियाइं ते कस्स वि रन्नो वा जाव एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे जारिसए णं इमे मह उवरोहे ? "।

अर्थ—" हे देवानुप्रिया ! तमे घणा गाम, आकर विगेरेमां यावत् अटन करो छो-विचरो छो तथा घणा राजा, ईश्वर विगेरेना गृहोमां प्रवेश करो छो. तो कोइपण राजा विगेरेनुं यावत् आवा प्रकारनुं अंतःपुर तमे प्रथम जोयुं होय एवुं छे के जेवुं आ मारुं अंतःपुर छे ? "

मू०—तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया जियसत्तुं रायं एवं वयासी—ईसिं अवहासियं करेइ, करित्ता एवं वयासी—" एवं च सरिसए णं तुमं देवाणुप्पिया ! तस्स अगडदद्दुरस्स " ।

अर्थ—त्यारपछी ते चोक्खा परिव्राजिका जितशत्रु राजाने आ प्रमाणे कहेवा लागी—तेमां तेणीए कांइक हास्य कर्युं हास्य करीने ते आ प्रमाणे बोली—" हे देवानुप्रिय ! आ बाबतमां कुवाना देडका सदृश तमे छो. "

मु०—" केस णं देवाणुप्पिए ! से अगडदद्दुरे ! "

अर्थ—जितशत्रु राजाए पूछयुं के—" हे देवानुप्रिया ! ते कुवानो देडको तमे कह्यो ते केवो होय छे ? तेनुं दृष्टांत केवी रीते छे ? "

मू०—" जियसत्तू ! से जहा नामए अगडदद्दुरे सिया, से णं तत्थ जाए तत्थेव वुड्ढे अण्णं अगडं वा तलागं वा दहं वा सरं वा सागरं वा अपासमाणे चेवं मण्णइ—" अयं चेव अगडे वा जाव सागरे वा "

अर्थ—परिव्राजिका बोली—" हे जितशत्रु राजा ! ते यथानामनो एटले अमुक नामनो एक कुवानो देडको हतो. ते देडको ते ज कुवामां उत्पन्न थयो हतो अने तेमां ज वृद्धि पाम्यो हतो. तेथी बीजा कुवाने, तळावने, द्रहने, सरोवरने के समुद्रने तेणे नहीं जोयेला होवाथी ते आ प्रमाणे मानतो हतो के-" आ ज कुवो छे, यावत् समुद्र छे, आ सिवाय बीजुं कांइ नथी. "

मू०—तए णं तं कूवं अण्णे सामुद्दए दद्दुरे हव्वमागए । तए णं से कूवदद्दुरे तं सामुद्ददद्दुरं एवं वदासी-" से केस णं तुमं देवाणुप्पिया ! कत्तो वा इह हव्वमागए ? "

अर्थ—त्यारपछी एकदा ते कुवामां बीजो कोइक समुद्रमां रहेनारो देडको शीघ्रपणे आव्यो. त्यारे ते कुवाना देडकाए ते समुद्रना देडकाने आ प्रमाणे कह्युं-पूछयुं-" हे देवानुप्रिय ! तुं कोण छे ? अने क्यांथी अहीं शीघ्रपणे आव्यो छे ? "

मू०—तए णं से सामुद्दए दद्दुरे तं कूवदद्दुरं एवं वयासी-" एवं खलु देवाणुप्पिया ! अहं सामुद्दए दद्दुरे " ।

अर्थ—त्यारपछी ते समुद्रना देडकाए ते कुवाना देडकाने आ प्रमाणे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! हुं समुद्रनो देडको छुं. "

मू०—तए णं से कूवदद्दुरे तं सामुद्दयं दद्दुरं एवं वयासी-" के महालए णं देवाणुप्पिया !

से समुद्दे ? ”।

अर्थ—त्यारपछी ते कुवाना देडकाए ते समुद्रना देडकाने आ प्रमाणे कह्युं–पूछ्युं–“ हे देवानुप्रिय ! ते समुद्र केवडो मोटो छे ? ”

मू०—तए णं से सामुद्दए दद्दुरे तं कूवदद्दुरं एवं वयासी–“महालए णं देवाणुप्पिया ! समुद्दे।

अर्थ—त्यारपछी ते समुद्रना देडकाए ते कुवाना देडकाने आ प्रमाणे कह्युं–“हे देवानुप्रिय ! ते समुद्र घणो मोटो छे.”

मू०—तए णं से कूवदद्दुरे पाएणं लीहं कड्ढेइ, कड्ढित्ता एवं वयासी–“ ए महालए णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ? ”

अर्थ—त्यारे ते कुवाना देडकाए पोताना पगवडे लीटी–रेखा करी, करीने आ प्रमाणे कह्युं–पूछ्युं–“ हे देवानुप्रिय ! ते समुद्र आटलो मोटो छे ? ”

मू०—“ णो इणट्ठे समट्ठे, महालए णं से समुद्दे ”।

अर्थ—समुद्रना देडकाए उत्तर आप्यो के–“ना, ए अर्थ समर्थ नथी–तें कह्युं तेम नथी, परंतु ते समुद्र तो घणो मोटो छे.”

मू०—तए णं से कूवदद्दुरे पुरच्छिमिल्लाओ तीराओ उप्फिडित्ता णं गच्छइ, गच्छित्ता एवं वयासी—“ ए महालए णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ? ”। “ णो इणट्ठे समट्ठे ”, तहेव ।

अर्थ—त्यारे ते कुवानो देडको पूर्व दिशाना कांठाथी कुदको मारी दूर गयो. दूर जइने आ प्रमाणे बोल्यो—" हे देवानुप्रिय ! ते समुद्र आटलो मोटो छे ? " त्यारे तेणे उत्तर आप्यो के—" ना, ए अर्थ समर्थ नथी–बराबर नथी. " ते ज प्रमाणे (तेथी अधिक कुदी कुदीने कुवाना देडकाए पूछयुं. तेनो जवाब पण ते ज प्रमाणे तेणे आप्यो).

मू०—एवामेव तुमं पि जियसत्तू ! अन्नेसिं बहूणं राईसर जाव सत्थवाहपभिईणं भज्जं वा भगिणीं वा धूयं वा सुण्हं वा अपासमाणे जाणेसि जारिसए मम चेव णं ओरोहे तारिसए णो अण्णस्स, तं एवं खलु जियसत्तू मिहिलाए नयरीए कुंभगस्स धूता पभावतीए अत्तिया मल्ली नामं ति रूवेण य जुव्वणेण जाव नो खलु अण्णा काई देवकन्ना वा जारिसिया मल्ली, विदेह-वररायकण्णाए छिण्णस्स वि पायंगुट्ठगस्स इमे तवोरोहे सयसहस्सतिमं पि कलं न अग्घइ त्ति कट्टु जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ।

अर्थः—ए ज प्रमाणे हे जितशत्रु राजा ! तमे पण बीजा घणा राजाओ, ईश्वर यावत् सार्थवाह विगेरेनी भार्याने, बहेनने, दीकरीने के वधूने जोइ नथी. तेथी तमे जाणो छो के जेवो मारो अवरोध छे तेवो बीजा कोइनो नथी. तो आ

१ पुत्र के नाना भाइ विगेरेनी भार्या.   २ अंतःपुरनी स्त्रीओ.

प्रमाणे निश्चे हे जितशत्रु राजा ! मिथिला नामनी नगरीमां कुंभ राजानी पुत्री प्रभावती राणीनी आँत्मजा मल्ली नामनी छे. ते मल्ली रूपवडे अने यौवन विगेरेवडे जेवा प्रकारनी छे तेवा प्रकारनी बीजी कोइ देवकन्या विगेरे यावत् नथी. ते विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्या मल्लीना छेदेला पण पादना अंगुठाना नखनी पासे आ तमारो अवरोध लाखमा अंशने पण लायक नथी." आ प्रमाणे कहीने ते चोख्खा नामनी परिव्राजिका जे दिशाथी प्रगट थइ हती–आवी हती, ते ज दिशामां पाछी गइ.

मू०—तते णं से जितसत्तू परिव्वाइयाजणितहासे दूयं सद्दावेति, सद्दावित्ता जाव पहारेत्थ गमणाए । ६ ॥ ७४ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु राजाने ते परिव्राजिकाए आ प्रमाणे कही विस्मय उत्पन्न कर्यो, त्यारे ते राजाए पोताना दूतने बोलाव्यो. बोलावीने सर्व पूर्ववत् कहेवुं. यावत् (मल्ली कुंवरीनी मागणी करवा तेने आज्ञा करी.) ते दूत जवाने नीकळयो. (आ प्रमाणे छट्ठा दूतनो अधिकार पूरो थयो. ६.) ७४.

मू०—तते णं तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

३ पोतांथी उत्पन्न थयेली.

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु विगेरे छए राजाओना दूतो ज्यां मिथिला नगरी हती, त्यां जवा माटे नीकळ्या.

मू०—तते णं छप्पि य दूतका जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मिहिलाए अग्गुज्जाणंसि पत्तेयं पत्तेयं खंधावारनिवेसं करेंति, करित्ता मिहिलं रायहाणीं अणुपविसंति, अणुपविसित्ता जेणेव कुंभए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पत्तेयं पत्तेयं करयल० साणं साणं राईणं वयणातिं निवेदेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते छए दूतो ज्यां मिथिला नगरी हती त्यां आव्या, आवीने मिथिला नगरीना अग्र (श्रेष्ठ) उद्यानमां ते प्रत्येके प्रत्येके (दरेके) स्कंधावार (मुकाम) स्थापन कर्यो. स्थापन करीने तेओए मिथिला राजधानीमां प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने ज्यां कुंभ राजा हता त्यां आव्या, आवीने प्रत्येके प्रत्येके (दरेके) बे हाथ जोडी पोतपोताना राजानां वचनो निवेदन कर्यां–कह्यां. (पोतपोताना राजाने माटे मल्ली कुंवरीनी मागणी करी.)

मू०—तते णं से कुंभए राया तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते जाव तिवलियं भिउडिं एवं वयासी—" न देमि णं अहं तुब्भं मल्लीं विदेहरायवरकन्नं " ति कट्टु ते छप्पि दूते असक्कारिय असंमाणिय अवद्दारेणं णिच्छुभावेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कुंभ राजा ते दूतोनी पासेथी आ अर्थने सांभळी तत्काळ क्रोध पाम्या अने यावत् त्रण वळीया पडे तेवी भृकुटी चडावीने आ प्रमाणे बोल्या–" हुं तमोने (तमारा छ राजामांथी एकेने) विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्या मल्लीने नहीं आपुं." एम कही ते छए दूतोने सत्कार कर्या विना अने सन्मान कर्या विना अपद्वार (पाछळना द्वार) वडे काढी मूकाव्या.

मू०—तते णं जितसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया कुंभएणं रन्ना असक्कारिया असम्माणिया अवदारेणं णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगा सगा जाणवया जेणेव सयातिं सयातिं णगराइं जेणेव सगा सगा रायाणो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलपरि० एवं वयासी–

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु विगेरे छए राजाना दूतो कुंभ राजाए सत्कार कर्या विना अने सन्मान कर्या विना अपद्वार (पाछळना द्वार) वडे काढी मूकाया सता ज्यां पोतपोताना देश हता, ज्यां पोतपोतानां नगर हतां, अने ज्यां पोतपोताना राजाओ हता, त्यां आव्या. आवीने बे हाथ जोडी आ प्रमाणे बोल्या.—

मू०—" एवं खलु सामी ! अम्हे जितसत्तूपामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव जेणेव मिहिला जाव अवदारेणं निच्छुभावेति, तं ण देइ णं सामी ! कुंभए राया मल्लीं विदेहवररायकन्नं " साणं साणं राईणं एयमट्ठं निवेदेंति ।

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे हे स्वामी ! अमे जितशत्रु विगेरे छ राजाओना दूतो एकी साथे ज्यां मिथिला नगरी हती त्यां गया, (अमे मल्ली कुंवरीनी मागणी करी. ते न स्वीकारीने) यावत् अमने अपद्वारवडे काढी मूक्या. तेथी हे स्वामी ! कुंभ राजा मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्या तमने आपवा इच्छता नथी. एम कही ते दूतोए पोतपोताना राजाने आ अर्थ निवेदन कर्यो–जणाव्यो.

मू०–तते णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता अण्णमण्णस्स दूयसंपेसणं करेंति, करित्ता एवं वदासी–

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु विगेरे छए राजाओए ते दूतोनी पासेथी आ अर्थ सांभळीने–हृदयमां धारीने तत्काळ रोष पामी एक बीजाने परस्पर दूत मोकलवानुं कर्युं (दूत मोकल्या). दूत मोकलीने आ प्रमाणे कह्युं. (कहेवराव्युं.)

मू०–"एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव जाव निच्छूढा, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं कुंभगस्स जत्तं गेण्हित्तए " त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एतमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता ण्हाया सण्णद्धा हत्थिखंधवरगया सकोरंटमल्लदामा जाव सेयवरचामराहिं० महयाहयगयरहपवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं

सएहिं सएहिं नगरेहिंतो जाव निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता एगयओ मिलायंति, मिलाइत्ता जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! आपणा छए राजाओना दूतो एकी साथे (मिथिलाए गया अने कुंभ राजाए तेनुं अपमान करीने) यावत् काढी मूकाया. तेथी हे देवानुप्रियो ! आपणे कुंभ राजा तरफ यात्रा ग्रहण करवी (कुंभ राजा उपर चडाइ करवी) योग्य छे. " एम कही एक बीजाना आ अर्थने तेओए (छए राजाओए) अंगीकार कर्यो. अंगीकार करी तेओए स्नान कर्युं, (यावत् वस्त्रादि धारण करी) सन्नद्ध थया—बख्तर पहेरी तैयार थया, हस्तीना स्कंधपर आरूढ थया, कोरंट वृक्षना पुष्पनी मालावाळा छत्र धारण कर्या, यावत् श्वेत चामरोवडे वींझावा लाग्या, मोटा अश्व, गज, रथ अने श्रेष्ठ योद्धाओ सहित चतुरंगी सेनाथी परिवर्या सता सर्व ऋद्धिवडे यावत् वाजित्रना शब्दवडे पोत-पोताना नगरोमांथी यावत् नीकळ्या. नीकळीने एक ठेकाणे भेगा थया. भेगा थइने ज्यां मिथिला नगरी हती त्यां जवा माटे नीकळ्या—प्रयाण कर्युं.

मू०—तते णं कुंभए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे बलवाउयं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—" खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हयगय जाव सेण्णं सन्नाहेह " जाव पच्चप्पिणंति ।

अर्थ—त्यारपछी कुंभ राजाए आ कथानो अर्थ पामे (जाणे) सते सैन्यना व्यापारवाळाने एटले पोताना सेनाप-

तिने बोलाव्यो. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रिय ! शीघ्रपणे अश्व, हस्ती, विगेरे यावत् सर्व सैन्य तैयार करो." ते सांभळी सेनापतिए तेम करी यावत् तेनी आज्ञा पाछी आपी.

मू०—तते णं कुंभए राया ण्हाते सणद्धे हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धारिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं महया० मिहिलं रायहाणिं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता विदेहं जणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव देसअंते तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता खंधावारनिवेसं करेति, करित्ता जियसत्तुपामुक्खा छप्पि य रायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिट्ठति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कुंभराजाए स्नान कर्युं, (यावत् वस्त्रादि धारण करी) बख्तर पहेरी तैयार थया, श्रेष्ठ हाथीना स्कंधपर आरूढ थया, कोरंट वृक्षना पुष्पनी माळावाळा छत्रने मस्तकपर धारण कर्युं, श्वेत उत्तम चामरो तेने वींझावा लाग्या. यावत् मोटा चतुरंग सैन्य सहित मिथिला राजधानीना मध्ये थइने नीकळ्या, नीकळीने विदेह देशनी मध्ये थइने ज्यां देशनो अंत (छेडो) हतो, त्यां आव्या. आवीने त्यां सैन्यनो पडाव नांख्यो, पडाव नांखीने जितशत्रु विगेरे छए राजाओनी राह जोता युद्ध माटे सज्ज थइने रह्या.

मू०—तते णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि य रायाणो जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति, उवा-

गच्छित्ता कुंभएणं रन्ना सर्द्धि संपलग्गा यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु विगेरे छए राजाओ ज्यां कुंभराजा हता त्यां आव्या, आवीने कुंभ राजा साथे युद्ध करवा प्रवर्त्या.

मू०—तते णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो कुंभयं रायं हयमहियपवरवीरघाइयनिवडिय-चिंधद्धयप्पडागं किच्छप्पाणोवगयं दिसो दिसिं पडिसेहिंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु विगेरे छए राजाओए कुंभराजाने हण्यो (तेना सैन्यने हण्युं तेथी), तथा मथन कर्यो (तेना मानतुं मथन कर्युं तेथी), तथा तेना श्रेष्ठ योद्धाओनो घात-विनाश कर्यो, तथा तेना चिन्हरूप ध्वजा अने पताका छेदीने पाडी नांखी, तेथी प्राणना कष्टने प्राप्त थयो, अने चारे दिशामां तेनुं सैन्य नाशी गयुं.

मू०—तते णं से कुंभए राया जितसत्तुपामोक्खेहिं छहिं राईहिं हयमहित जाव पडिसेहिए समाणे अत्थामे अबले अवीरिए जाव अधारणिज्जमिति कट्टु सिग्घं तुरियं जाव वेइयं जेणेव मिहिला णयरी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मिहिलं अणुपविसति, अणुपविसित्ता मिहिलाए दुवारातिं पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कुंभ राजा जितशत्रु विगेरे छए राजाओवडे हत (हणायो), मथित (मथन करायो) यावत् जेनुं सैन्य चारे दिशामां नाशी गयुं एवो थयो सतो अस्थाम-सामर्थ्य रहित, बळ रहित, वीर्य-पराक्रम रहित यावत् शत्रुना सैन्यने धारण करवामां असमर्थ थयो, एम जाणी ते शीघ्रपणे, त्वरासहित यावत् घणी उतावळथी ज्यां मिथिला नगरी हती त्यां आव्यो. आवीने मिथिला नगरीमां प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने मिथिला नगरीना द्वार (दरवाजा) बंध कर्या. बंध करीने किल्लानो रोध करवामां सज्ज थइने रह्यो.

मू०—तते णं ते जितसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मिहिलं रायहाणिं णिस्संचारं णिरुच्चारं सव्वतो समंता ओरुंभित्ता णं चिट्ठंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु विगेरे छए राजाओ ज्यां मिथिला नगरी हती त्यां आव्या. आवीने मिथिला राजधानीने मनुष्योना संचार (गमनागमन) रहित करी, तथा निरुच्चार एटले प्राकार उपर थइने पण गमनागमन करी न शके एवी करी, अथवा पुरीषोत्सर्ग करवा माटे पण माणसो गमनागमन करी न शके एवी करी, अने चोतरफ-दिशा विदिशाओमां रुंधीने रह्या.

मू०—तते णं से कुंभए राया मिहिलं रायहाणिं रुद्धं जाणित्ता अब्भंतरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगए तेसिं जितसत्तुपामोक्खाणं छण्हं रातीणं छिद्दाणि य विवराणि य मम्माणि य

अलभमाणे बहूहिं आएहि य उवाएहि य उप्पत्तियाहि य ४ बुद्धीहिं परिणामेमाणे परिणामेमाणे किंचि आयं वा उवायं वा अलभमाणे ओहतमणसंकप्पे जाव झियायति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कुंभराजा मिथिला राजधानीने रुंधेली जाणी आभ्यंतर (अंदरनी–खानगी) उपस्थानशाळा (सभा) मां श्रेष्ठ सिंहासन उपर बेठा. ते जितशत्रु विगेरे छए राजाओना छिद्रोने, विवरोने तथा मर्मने पाम्या नहीं, तेथी घणा आयवडे, घणा उपायवडे तथा औत्पत्तिकी आदि चारे प्रकारनी बुद्धिवडे विचार करता विचार करता सता कांइपण आयने के उपायने पाम्या नहीं, त्यारे तेना मनना संकल्प विकल्प नष्ट थया, यावत् ते आर्तध्यान करवा लाग्या.

मू०—इमं च णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना ण्हाया जाव बहूहिं खुज्जाहिं परिवुडा जेणेव कुंभए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुंभगस्स पायग्गहणं करेति ।

अर्थ—एवा अवसरे मल्ली नामनी विदेहराजानी श्रेष्ठ कन्या स्नान करी यावत् (वस्त्रालंकार धारण करी) घणी कुब्जा दासीओवडे परिवरेली सती ज्यां कुंभ राजा हता त्यां आवी. आवीने कुंभ राजाना पादग्रहण कर्या–पगमां पडी नमस्कार कर्या.

मू०—तते णं कुंभए राया मल्लिं विदेहरायवरकन्नं णो आढाति नो परियाणाइ तुसिणीए संचिट्ठति ।

अर्थ—ते वखते ते कुंभ राजाए ते मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्यानो आदर कर्यो नहीं, तेणीने आवी जाणी

पण नहीं, तेथी ते राजा मौन पणे ज बेसी रह्या.

मू०—तते णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना कुंभगं रायं एवं वयासी—"तुब्भे णं ताओ! अण्णदा ममं एज्जमाणं जाव निवेसेह, किं णं तुब्भं अज्ज ओहतमणसंकप्पे जाव झियायह?"।

अर्थ—त्यारपछी ते मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्याए कुंभराजाने आ प्रमाणे कह्युं—"हे पिता! अन्यदा (बीजी वखते) मने आवेली जोइने तमे यावत् तमारा उत्संगमां मने बेसाडता हता, तो केम आजे तमे मनना संकल्प विकल्प नष्ट थया होय तेम यावत् ध्यान करो छो?" (मने बोलावता पण नथी)

मू०—तते णं कुंभए राया मल्लिं विदेहरायवरकन्नं एवं वदासी—"एवं खलु पुत्ता! तव कज्जे जितसत्तुपामुक्खेहिं छहिं रातीहिं दूया संपेसिया, ते णं मए असक्कारिया जाव निच्छूढा। तते णं ते जितसत्तुपामुक्खा तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा परिकुविया समाणा मिहिलं रायहाणिं निस्संचारं जाव चिट्ठंति। तते णं अहं पुत्ता! तेसिं जितसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं अंतराणि अलभमाणे जाव झियामि"।

अर्थ—त्यारपछी ते कुंभ राजाए मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्याने आ प्रमाणे कह्युं—"आ प्रमाणे निश्चे हे

पुत्री ! तारे माटे जितशत्रु विगेरे छ राजाओए दूत मोकल्या हता, तेमने में सत्कार कर्या विना यावत् काढी मूक्या. त्यारे ते जितशत्रु विगेरे छए राजाओ ते दूतो पासेथी आ अर्थ सांभळीने कोप पाम्या सता मिथिला नामनी राजधानीने यावत् संचार रहित करीने रहेला छे. तेथी करीने हे पुत्री ! ते जितशत्रु विगेरे छए राजाओना आंतराने–छिद्रने (तेमने जीतवाना मार्गने) नहीं पामतो सतो हुं यावत् ध्यान करुं छुं–विचार करुं छुं. ”

मू०–तते णं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना कुंभयं रायं एवं वदासी–“ मा णं तुब्भे ताओ ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह, तुब्भे णं ताओ ! तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं पत्तेयं पत्तेयं रहसियं दूयसंपेसे करेह, एगमेगं एवं वदह–‘ तव देमि मल्लिं विदेहरायवरकन्नं ’ ति कट्टु संझाकालसमयंसि पविरलमणूसंसि निसंतंसि पडिनिसंतंसि पत्तेयं पत्तेयं मिहिलं रायहाणिं अणुप्पवेसेह, अणुप्पवेसित्ता गब्भघरएसु अणुप्पवेसेह, मिहिलाए रायहाणीए दुवाराइं पिधेह, पिधित्ता रोहसज्जे चिट्ठह ” ।

अर्थ—त्यारपछी ते मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्याए कुंभराजाने आ प्रमाणे कह्युं–“ हे पिता ! मनना संकल्प जेना नष्ट थया छे एवा तमे यावत् तेवुं ध्यान न करो. हे पिता ! तमे ते जितशत्रु विगेरे छए राजाओने दरेक

दरेकने गुप्त दूत मोकलवानुं करो-दूतने मोकलो, अने दरेकने आ प्रमाणे कहो के-' तमने हुं मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्या आपुं छुं.' एम कही संध्याकाळने समये कोइ कोइ मनुष्यो मार्गमां जता आवता होय अने पोतपोताना घरमां विश्रांति लेवा बेठा होय ते वखते ते दरेक दरेक राजाने मिथिला राजधानीमां प्रवेश करावो. प्रवेश करावीने गर्भगृहने विषे प्रवेश करावो, पछी मिथिला राजधानीना दरवाजा बंध करावो. बंध करावीने नगरीना रोधमां सज्ज थइने-सावधान थइने रहो."

मू०-तते णं कुंभए राया एवं तं चेव जाव पवेसेति, रोहसज्जे चिट्ठइ ।

अर्थ-त्यारपछी ते कुंभ राजाए ते ज प्रमाणे ते सर्व करी यावत् ते राजाओने प्रवेश कराव्यो, अने पोते नगरीना रोधमां सज्ज थइने रह्या.

मू०-तते णं जितसत्तुपामोक्खा छप्पि य रायाणो कल्लं पाउब्भूया जाव जालंतरेहिं कणगमयं मत्थयछिड्डं पउमुप्पलपिहाणं पडिमं पासति, ' एस णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना ' त्ति कट्टु मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य मुच्छिया गिद्धा जाव अज्झोववण्णा अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणा पेहमाणा चिट्ठंति ।

अर्थ-त्यारपछी ते जितशत्रु विगेरे छए राजाओ काले एटले बीजे दिवसे प्रातःकाळे ज यावत् (तेने जे मकानमां

राख्या छे तेना) जाळीयामांथी ते कनकमय, मस्तकपर छिद्रवाळी अने कमळना ढांकणावाळी मल्लीनी प्रतिमा जोवा लाग्या, अने 'आ ज मल्ली विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्या छे' एम जाणी मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्याना रूप, यौवन अने लावण्यने विषे मूर्छा (मोह) पाम्या, गृद्धिवाळा थया, यावत् विवाहना अध्यवसायवाळा थया सता निमेष रहित (स्थिर) दृष्टिवडे तेणीनी सामे जोता जोता रह्या.

मू०—तते णं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ण्हाया जाव पायच्छित्ता सव्वालंकारविभूसिया बहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ता जेणेव जालघरए जेणेव कणयपडिमा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तीसे कणगपडिमाए मत्थयाओ तं पउमं अवणेति । तते णं गंधे णिद्धावति से जहानामए अहिमडेति वा जाव असुभतराए चेव ।

अर्थ—त्यारपछी ते मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्याए स्नान कर्युं, यावत् प्रायश्चित्त करी सर्व अलंकारोवडे विभूषित थइ घणी कुब्जा दासीओवडे यावत् परिवरेली सती ज्यां ते जालगृह हतुं अने ज्यां ते सुवर्णनी प्रतिमा हती, त्यां आवी. आवीने ते सुवर्ण प्रतिमाना मस्तक उपरथी ते ढांकेलुं कमळ लइ लीधुं, एटले तेमांथी दुर्गंध नीकळ्यो, ते जाणे मरेला सर्पनी जेवो यावत् घणो ज अशुभ दुर्गंध हतो.

मू०—तते णं ते जियसत्तुपामोक्खा तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं सएहिं

उत्तरिज्जएहिं आसातिं पिहेंति, पिहित्ता परम्मुहा चिट्ठंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु विगेरे छए राजाओ ते अशुभ गंधवडे पराभव पाम्या सता पोतपोताना उत्तरीय वस्त्रवडे मुखने (नासिकाने) ढांकवा लाग्या, ढांकीने पराङ्मुख (मुख फेरवीने) रह्या.

मू०—तते णं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ते जितसत्तुपामोक्खे एवं वयासी—" किं णं तुब्भं देवाणुप्पिया ! सएहिं सएहिं उत्तरिज्जेहिं जाव परम्मुहा चिट्ठह ? " ।

अर्थ—त्यारपछी ते मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्याए ते जितशत्रु विगेरे छए राजाने आ प्रमाणे कह्युं के— " हे देवानुप्रियो ! केम तमे पोतपोताना उत्तरीय वस्त्रवडे मुख ढांकीने यावत् पराङ्मुख (मुख फेरवीने) रह्या छो ? "

मू०—तते णं ते जितसत्तुपामोक्खा मल्लिं विदेहरायवरकन्नं एवं वयंति—" एवं खलु देवाणुप्पिए ! अम्हे इमेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं सएहिं जाव चिट्ठामो " ।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु विगेरे छए राजाओए मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्याने आ प्रमाणे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिया ! अमे आ अशुभ गंधवडे पराभव पाम्या सता पोतपोताना यावत् वस्त्रवडे मुख ढांकीने पराङ्मुख रह्या छीए. "

मू०—तते णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना ते जितसत्तुपामोक्खे एवं वयासी—" जइ ताव देवाणुप्पिया ! इमीसे कणगमयाए जाव पडिमाए कल्लाकल्लिं ताओ मणुण्णाओ असणपाणखादिमसादिमाओ एगमेगे पिंडे पक्खिप्पमाणे पक्खिप्पमाणे इमेयारूवे असुभे पोग्गलपरिणामे, इमस्स पुण ओरालियसरीरस्स खेलासवस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कसोणियपूयासवस्स दुरूवऊसासनीसासस्स दुरूवमुत्तपुतियपुरीसपुण्णस्स सडण जाव धम्मस्स केरिसए परिणामे भविस्सति ?। तं मा णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! माणुस्सएसु कामभोगेसु सज्जह रज्जह गिज्झह मुज्झह अज्झोववज्जह "।

अर्थ—त्यारपछी ते मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्याए ते जितशत्रु विगेरे छए राजाओने आ प्रमाणे कह्युं—" प्रथम तो हे देवानुप्रियो ! जो आ सुवर्णनी प्रतिमाने विषे यावत् दररोज ते मनोहर अशन, पान, खादिम अने स्वादिममांथी एक एक पिंड नांखे सते आवा प्रकारनो अशुभ पुद्गलनो परिणाम थयो, तो पछी आ औदारिक शरीर तो खेल (थुंक) ने झरनारुं छे, वमनने झरनारुं छे, पित्तने झरनारुं छे, शुक्र, रुधिर अने पूय (परु) ने झरनारुं छे, विरूप एवा उच्छ्वास निश्वासने मूकनारुं छे, विरूप एवा मूत्र, परु अने विष्टाए करीने पूर्ण (भरेलुं) छे, सडीजवुं (पडी जवुं,

१ खराब.

विध्वंस पामवो) विगेरे यावत् धर्म (स्वभाव) वाळुं छे, आवा शरीरनो परिणाम केवो हशे ? तेथी करीने हे देवानुप्रियो ! तमे मनुष्य संबंधी कामभोगने विषे आसक्त न थाओ, रागी न थाओ, गृद्धिने-प्राप्त थयेला भोगने विषे अतृप्तिने न पामो, मोहने न पामो-एटले तेनो दोष जोया छतां मूढपणाने न पामो, तथा अभ्युपपन्न एटले अप्राप्त भोगोने मेळववा माटे एकाग्रता न राखो-तन्मय न थाओ.

मू०-एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुम्हे अम्हे इमाओ तच्चे भवग्गहणे अवरविदेहवासे सलिलावतिंसि विजए वीयसोगाए रायहाणीए महब्बलपामोक्खा सत्त वि य बालवयंसया रायाणो होत्था, सह जाया जाव पव्वतिता ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! तमे अने अमे (हुं) आ भवनी पहेला त्रीजा भवने विषे पश्चिम महाविदेह क्षेत्रनी सलिलावती नामनी विजयमां वीतशोका नामनी राजधानीमां महाबळ विगेरे साते बाळमित्र राजाओ हता. आपणे साथे ज जन्म्या हता, यावत् साथे ज आपणे दीक्षा ग्रहण करी हती.

मू०-तए णं अहं देवाणुप्पिया ! इमेणं कारणेणं इत्थीनामगोयं कम्मं निव्वत्तेमि-जति णं तुब्भं चोत्थं उवसंपज्जित्ता णं विहरह ततो णं अहं छट्ठं उवसंपज्जित्ता णं विहरामि । सेसं तहेव सव्वं ।

अर्थ—त्यारपछी हे देवानुप्रियो ! आ कारणे करीने (हवे कहुं छुं ते रीते माया करवे करीने) में स्त्रीनामगोत्र कर्म

उपार्जन कर्युं–' ज्यारे तमे उपवास अंगीकार करीने विचरता हता–रहेता हता, त्यारे हुं छठ (बे उपवास) अंगीकार करीने विचरतो हतो. (एम तमाराथी गुप्त रीते वधारे तप करतो हतो) इत्यादि सर्व पूर्ववत् जाणवुं.

मू०–तते णं तुब्भे देवाणुप्पिया! कालमासे कालं किच्चा जयंते विमाणे उववण्णा। तत्थ णं तुब्भे देसूणाइं बत्तीसातिं सागरोवमाइं ठिती ।

अर्थ—त्यारपछी हे देवानुप्रियो! तमे काळधर्मने वखते काळ करीने जयंत नामना अनुत्तर विमानमां उत्पन्न थया. त्यां तमे कांइक ओछा बत्रीश सागरोपमनी स्थितिवाळा थया. (हुं पण त्यां ज उत्पन्न थइ, पण संपूर्ण बत्रीश सागरोपमनी स्थितिवाळी थइ.)

मू०–तते णं तुब्भे ताओ देवलोयाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे जाव साइं साइं रज्जातिं उवसंपज्जित्ता णं विहरह ।

अर्थ—त्यारपछी तमे ते देवलोक थकी अनंतर (तरतज–आयुष्यने चये) चवीने आ ज जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे यावत् उत्पन्न थइ पोतपोताना राज्यने पामी विचरवा लाग्या–रह्या.

मू०–तते णं अहं देवाणुप्पिया! ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं जाव दारियत्ताए पच्चायाया–

" किं थ तयं पम्हुट्ठं जं थ तया भो जयंत पवरम्मि। वुत्था समयनिबद्धं, देवा तं संभरह जातिं ॥१॥"

अर्थ—त्यारपछी हुं हे देवानुप्रियो ! ते देवलोक थकी आयुष्यने क्षये यावत् चवीने अहीं पुत्रीपणे उत्पन्न थइ छुं.—"शुं ते तमे भूली गया ? के जे ते वखते हे देवानुप्रियो ! तमे जयंत नामना श्रेष्ठ–अनुत्तर विमानने विषे वस्या हता ? त्यां देवरूपे रहेला तमे 'आपणे एक बीजाने प्रतिबोध पमाडवो' एम परस्पर संकेत कर्यो हतो, तो ते देव संबंधी जाति (जन्म) ने तमे संभारो."

मू०—तते णं तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं रायाणं मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अंतिए एतमट्ठं सोच्चा णिसम्म सुभेणं परिणामेणं पसत्थेणं अज्झवसाणेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहावूह जाव सण्णिजाइस्सरणे समुप्पन्ने । एयमट्ठं सम्मं अभिसमागच्छंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु विगेरे छए राजाओने मल्ली नामनी विदेहराजनी श्रेष्ठ कन्यानी पासे आ अर्थ सांभळीने मनमां धारीने शुभ परिणामवडे, प्रशस्त अध्यवसायवडे, विशुद्ध लेश्यावडे तेना (जातिस्मरणना) आवरणना कर्मनो क्षयोपशम थवावडे ईहापोह (तर्कवितर्क) करवाथी यावत् संज्ञीपणाना पोताना भव देखी शके तेवुं जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं. तेथी आ (मल्लीए कहेला) अर्थने तेओए सम्यक् प्रकारे अंगीकार कर्यो. (सत्यपणे मान्यो)

मू०—तते णं मल्ली अरहा जितसत्तुपामोक्खे छप्पि रायाणो समुप्पण्णजाइसरणे जाणित्ता

गब्भधराणं दाराइं विहाडावेति।

अर्थ—त्यारपछी ते मल्ली अरिहंते ते जितशत्रु विगेरे छए राजाओने जातिस्मरण उत्पन्न थयुं जाणीने गर्भगृहनां द्वार उघडाव्यां.

मू०—तते णं ते जितसत्तुपामोक्खा जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छंति। तते णं महब्बल-पामोक्खा सत्त वि य (जियसत्तुपामोक्खा छप्पि य) बालवयंसा एगयओ अभिसमन्नागया याविहोत्था।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु विगेरे छए राजाओ ज्यां मल्ली अरिहंत हता त्यां आव्या. अने ते महाबळ विगेरे साते (अथवा जितशत्रु विगेरे छए) बाळमित्रो एक ठेकाणे एकत्र थया—भेगा थया.

मू०—तते णं मल्लीए अरहाते जितसत्तुपामोक्खे छप्पि य रायाणो एवं वदासी—"एवं खलु अहं देवाणुप्पिया! संसारभयउव्विग्गा जाव पव्वयामि, तं तुब्भे णं किं करेह? किं वसह? जाव किं भे हियसामत्थे?"।

अर्थ—त्यारपछी ते मल्ली अरिहंते ते जितशत्रु विगेरे छए राजाओने आ प्रमाणे कह्युं—"निश्चे हे देवानुप्रियो! संसारना भयथी उद्वेग पामेली हुं यावत् दीक्षा ग्रहण करवानी छुं, तो तमे शुं करशो? क्यां रहेशो? यावत् तमारा हृदयनुं सामर्थ्य केवुं छे? एटले तमारा भाव केवा छे?"

मू०—तए णं जितसत्तुपामोक्खा छप्पि य रायाणो मल्लिं अरहं एवं वयासी—" जति णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संसारभयउव्विग्गा जाव पव्वयह, अम्हाणं देवाणुप्पिया ! के अण्णे आलंबणे वा आहारे वा पडिबंधे वा ? जह चेव णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे अम्हे इओ तच्चे भवग्गहणे बहुसु कज्जेसु य मेढी पमाणं जाव धम्मधुरा होत्था, तहा चेव णं देवाणुप्पिया ! इण्हिं पि जाव भविस्सह। अम्हे वि य णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा जाव भीया जम्ममरणाणं देवाणुप्पियाणं सद्धिं मुंडा भवित्ता जाव पव्वयामो "

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु विगेरे छए राजाओए मल्ली अरिहंतने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रिया ! जो तमे संसारना भयथी उद्वेग पामीने यावत् प्रव्रज्या ग्रहण करशो, तो हे देवानुप्रिया ! अमारे बीजुं कयुं आलंबन, आधार के प्रतिबंध छे ? हे देवानुप्रिया ! तमे जेम आ भवथी त्रीजा भव उपर अमारा घणां कार्योने विषे मेढीभूत, प्रमाणभूत यावत् धर्मनी धुरारूप हता, ते ज प्रमाणे हे देवानुप्रिया ! हमणां (आ भवमां) पण यावत् तमे तेवा थाओ. हे देवानुप्रिया ! अमे पण संसारना भयथी उद्वेग पाम्या छीए यावत् जन्म मरणथी भय पाम्या छीए, तेथी देवानुप्रिया एवा तमारी साथे मुंड थइने यावत् प्रव्रज्या ग्रहण करशुं. "

मू०—तते णं मल्ली अरहा ते जितसत्तुपामोक्खे एवं वयासी—"जं णं तुब्भे संसारभउव्विग्गा

जाव मए सद्धिं पव्वयह तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सएहिं सएहिं रज्जेहिं जेट्ठे पुत्ते रज्जे ठावेह, ठावित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूहह, दुरूढा समाणा मम अंतियं पाउब्भवह ।

अर्थ—त्यारपछी ते मल्ली अरिहंते ते जितशत्रु विगेरे छए राजाओने आ प्रमाणे कह्युं–" जो तमे संसारना भयथी उद्वेग पामी यावत् मारी साथे प्रव्रज्या लेवाना हो तो हे देवानुप्रियो ! तमे पोतपोताना राज्यमां जाओ, अने ज्येष्ठ पुत्रने राज्यपर स्थापन करो. स्थापन करीने हजार पुरुषोए वहन करेली शिबिकापर आरूढ थाओ. आरूढ थया सता–आरूढ थइने मारी पासे प्रगट थाओ–आवो. "

मू०—तते णं ते जितसत्तुपामुक्खा मल्लिस्स अरहतो एतमट्ठं पडिसुणेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु विगेरे राजाओए मल्ली अरिहंतना आ अर्थने अंगीकार कर्यो.

मू०—तते णं मल्ली अरहा ते जितसत्तुपामोक्खे गहाय जेणेव कुंभए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुंभगस्स पाएसु पाडेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते मल्ली अरिहंत ते जितशत्रु विगेरे छए राजाओने ग्रहण करी–साथे लइ ज्यां कुंभ राजा हता त्यां गया, जइने तेमने कुंभ राजाना पगमां पाड्या–कुंभ राजाने नमस्कार कराव्यो.

मू०—तते णं कुंभए राया ते जितसत्तुपामोक्खे विपुलेणं असणपाणखादिमसादिमेणं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेति सम्मानेति जाव पडिविसज्जेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कुंभ राजाए ते जितशत्रु विगेरे छए राजाओने अशन, पान, खादिम, स्वादिम, पुष्प, वस्त्र, गंध, माल्य अने अलंकारवडे सत्कार कर्यो, सन्मान कर्युं, यावत् तेमने विदाय कर्या.

मू०—तते णं ते जियसत्तुपामोक्खा कुंभएणं रण्णा विसज्जिया समाणा जेणेव साइं साइं रज्जातिं जेणेव नगराइं तेणेव उवागच्छंति,उवागच्छित्ता सगातिं रज्जातिं उवसंपज्जित्ता विहरंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु विगेरे छए राजाओ कुंभ राजाए विदाय कर्या सता ज्यां पोतपोतानां राज्य हतां, अने ज्यां पोतपोतानां नगर हतां, त्यां आव्या, आवीने पोतपोताना राज्यने भोगवता रह्या–भोगववा लाग्या.

मू०—तते णं मल्ली अरहा 'संवच्छरावसाणे निक्खमिस्सामि' त्ति मणं पहारेति ॥ ७५ ॥

अर्थ—त्यारपछी मल्ली अरिहंते 'एक वर्षने अंते हुं दीक्षा ग्रहण करीश.' एम मनमां धारणा करी. ७५.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं सक्कस्सासणं चलति । तते णं सक्के देविंदे देवराया आसणं चलियं पासति, पासित्ता ओहिं पउंजति, पउंजित्ता मल्लिं अरहं ओहिणा आभोएति आभोइत्ता

इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।

अर्थ—ते काळे ते समये शक्र इंद्रनुं आसन चलायमान थयुं. त्यारे शक्र-देवेंद्र-देवराजे पोतानुं आसन चलायमान थयेल जोयुं, जोइने-जाणीने अवधिज्ञान प्रयुंज्युं. प्रयुंजीने अवधिज्ञानवडे मल्ली अरिहंतने जोया, जोइने इंद्रने आवा प्रकारनो अध्यवसाय यावत् उत्पन्न थयो.

मू०—" एवं खलु जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए रायहाणीए कुंभगस्स रन्नो मल्ली अरहा निक्खमिस्सामि त्ति मणं पहारेति।

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे भरतक्षेत्रने विषे मिथिला नामनी राजधानीने विषे कुंभ नामना राजानी पुत्री मल्ली अरिहंते 'हुं वर्षने अंते प्रव्रज्या ग्रहण करीश.' एम मनमां धार्युं छे."

मू०—तं जीयमेयं तीयपच्चुप्पन्नमणागयाणं सक्काणं देविंदाणं देवरायाणं—अरहंताणं भगवंताणं निक्खममाणाणं इमेयारूवं अत्थसंपयाणं दलित्तए।

अर्थ—तेथी अतीत काळना, वर्तमान समयमां वर्तता अने अनागत—आवता काळमां थनारा सर्व शक्र देवेंद्रो देवराजाओनो आवो आचार छे के—अरिहंत भगवान दीक्षा लेवाना होय त्यारे तेमने आटली अर्थसंपदा[1] (दान देवा माटे) आपवी जोइए.

१ धननी संपत्ति.

मू०—तं जहा—" तिण्णेव य कोडिसया, अट्ठासीतिं च होंति कोडीओ।
असितिं च सयसहस्सा, इंदा दलयंति अरहाणं ॥ १ ॥ "

अर्थ—ते आ प्रमाणे—" त्रण सो करोड, अठ्ठाशी करोड अने ऐंशी लाख एटलुं द्रव्य इंद्रो अरिहंतने आपे छे. १."

मू०—एवं संपेहेति, संपेहित्ता वेसमणं देवं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—"एवं खलु देवाणुप्पिया! जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे जाव असीतिं च सयसहस्साइं दलइत्तए, तं गच्छह णं देवाणुप्पिया! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे कुंभगभवणंसि इमेयारूवं अत्थसंपदाणं साहराहि, साहरित्ता खिप्पामेव मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि"

अर्थ—आ प्रमाणे शक्र इंद्रे विचार कर्यो. विचार करीने तेणे वैश्रवण देवने बोलाव्यो, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—निश्चे हे देवानुप्रिय! जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे भरतक्षेत्रने विषे यावत् (३८८ क्रोडने) ऐंशी लाख देवा जोइए. तेथी करीने हे देवानुप्रिय! तुं जा, अने जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे भरत नामना क्षेत्रमां कुंभ राजाना भवनने विषे आटली द्रव्यनी संपत्ति नांख. नांखीने शीघ्रपणे मारी आ आज्ञा पाछी आप."

मू०—तते णं से वेसमणे देवे सक्केणं देविंदेणं देवरन्ना एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे करयल जाव

पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जंभए देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—" गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवं दीवं भारहं वासं मिहिलं रायहाणिं कुंभगस्स रन्नो भवणंसि तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीयं च कोडीओ असीइं च सयसहस्साइं अयमेयारूवं अत्थसंपयाणं साहरह, साहरित्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह " ।

अर्थ—त्यारपछी ते वैश्रवण देवे शक्र देवेंद्र देवराजे आ प्रमाणे कहे सते हृष्ट तुष्ट थइ बे हाथ जोडी यावत् तेनी आज्ञा अंगीकार करी. अंगीकार करीने तेणे जृंभक देवोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रियो ! तमे जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे भरत नामना क्षेत्रने विषे मिथिला नामनी राजधानीमां जाओ, अने त्यां कुंभ राजाना भवनने विषे त्रण सो करोड अठ्ठाशी करोड अने एंशी लाख आटली द्रव्यसंपत्तिने नांखो, नांखीने मारी आ आज्ञा पाछी आपो."

मू०—तते णं ते जंभगा देवा वेसमणेणं जाव सुणेत्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता जाव उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं विउव्वंति, विउव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव वीइवयमाणा जेणेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुंभगस्स रण्णो भवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कुंभगस्स रन्नो भवणंसि तिन्नि कोडिसया जाव साहरंति, साहरित्ता

जेणेव वेसमणे देवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल जाव पच्चप्पिणंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते जृंभक देवो वैश्रवण देवे कह्युं ते यावत् सांभळीने उत्तर पूर्व (ईशान) दिशामां गया. जइने यावत् उत्तरवैक्रिय रूपो विकुर्व्यां, विकुर्वीने तेवी उत्कृष्ट गतिवडे यावत् जता थका ज्यां जंबूद्वीप नामनो द्वीप हतो, ज्यां भरत क्षेत्र हतुं, ज्यां मिथिला राजधानी हती अने ज्यां कुंभ राजानुं भवन हतुं, त्यां आव्या, आवीने कुंभ राजाना भवनने विषे त्रण सो करोड विगेरे द्रव्य संपत्तिने यावत् नांखी. नांखीने ज्यां वैश्रवण देव हता त्यां आव्या. आवीने बे हाथ जोडी यावत् तेनी आज्ञा पाछी आपी.

मू०—तते णं से वेसमणे देवे जेणेव सक्के देविंदे देवराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव पच्चप्पिणति ।

अर्थ—त्यारपछी ते वैश्रवण देव ज्यां शक्र देवेंद्र देवराज हता त्यां आव्या. आवीने बे हाथ जोडी यावत् तेनी आज्ञा पाछी आपी.

मू०—तते णं मल्ली अरहा कल्लाकल्लिं जाव मागहओ पायरासो त्ति बहूणं सणाहाण य अणाहाण य पंथियाण य पहियाण य करोडियाण य कप्पडियाण य एगमेगं हिरण्णकोडिं अट्ठ य अणूणातिं सयसहस्सातिं इमेयारूवं अत्थसंपदाणं दलयति ।

अर्थ—त्यारपछी मल्ली अरिहंत हंमेशां प्रातःकाळथी आरंभी यावत् मागध देशना प्रातराश (प्रातःकाळना भोजन) समय सुधी एटले बे पहोर सुधी घणा सनाथ–नाथ सहित लोकोने, अनाथ–रंक जनोने, पांथिक–निरंतर मार्गे चालनारा पथिकोने, पथिक–मार्गे चालनाराओने अथवा कोइए कोइ प्रयोजन माटे मोकलेला माणसोने, करोटिक–कपाळ हाथमां लइने भिक्षा मागनाराओने अथवा कोइ ठेकाणे ' कायकोडियाणं ' एवो पाठ छे, त्यां काचकोटिक–भार उपाडीने तेमांथी अमुक भाग मजुरी तरीके लइ निर्वाह करनाराओने, कार्पटिक–कंथा, कोपीन के काषाय वस्त्र धारण करनाराओने अथवा कापटिक–कपटथी भिक्षा मागनाराओने (अथवा एक जातना कापडी–भिक्षुओने) विगेरे सर्वेने एक करोड अने आठ लाख पूरा एटला सुवर्णनी द्रव्य संपत्तिनुं दान आपवा लाग्या.

अहीं बीजी वाचनामां ' एगमेगं हत्थामास ' एवो पाठ छे त्यां हाथवडे लइ शकाय तेटलुं सुवर्ण ते हस्तामर्ष कहेवाय छे, तेथी एक एकने एक एक मुठी सुवर्णनुं दान आपता हता, एवो अर्थ थाय छे. ते बराबर संभवतो नथी. कारण के वरवरिका अने इच्छित दान आपवानुं कह्युं छे, अने तेथी करीने ज हमेशां एक करोड अने आठ लाख सुवर्णनुं दान आप्यानुं जे लख्युं छे ते मात्र इंद्रे आपेला सुवर्णनुं ज प्रमाण छे. ते सिवाय बीजुं पण पोतानुं द्रव्य अने धान्य, वस्त्र विगेरेनुं दान पण पोते आपता हता एम संभवे छे. (मुठीवडे आपवानुं ए कारणथी कह्युं छे के प्रभु तो दरेकने मुठी भरीने आपे छे पण जेना भाग्यमां जेटलुं होय तेटलुं तेने मळे छे, बीजुं देवो संहरी ले छे.)

मू०—तए णं से कुंभए राया मिहिलाए रायहाणीए तत्थ तत्थ तहिं तहिं देसे देसे बहूओ

महाणससालाओ करेति। तत्थ णं बहवे मणुया दिण्णभइभत्तवेयणा विपुलं असणं पाणं खादिमं सादिमं उवक्खडेंति, उवक्खडित्ता जे जहा आगच्छंति तं जहा–पंथिया वा पहिया वा करोडिया वा कप्पडिया वा पासंडत्था वा गिहत्था वा तस्स य तहा आसत्थस्स वीसत्थस्स सुहासणवरगतस्स तं विपुलं असणं पाणं खादिमं सादिमं परिभाएमाणा परिवेसेमाणा विहरंति।

अर्थ—त्यारपछी ते कुंभ राजाए ते मिथिला राजधानीमां तत्र तत्र एटले ते ते अवांतर (अंतर्गत) बीजा परा विगेरे विभागोने विषे, तहिं तहिं एटले ते ते महा मार्गोने विषे अने बीजा घणां स्थानोने विषे, तथा देशे देशे एटले त्रिक, चतुष्क, शृंगाटक विगेरे विभागोने विषे घणी भोजनशाळाओ करावी. तेमां निरंतर भृति (धन) अने भक्त (भोजन) रूप वेतन–मूल्य जेने आपवामां आवतुं हतुं एवा घणा मनुष्यो (कर्मकरो–रसोइया) घणां अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने रांधता हता. पछी त्यां जे लोको जेम जेम आवता जाय, ते आ प्रमाणे–पांथिको (निरंतर मार्गे चालनारा), पथिको (मार्गे चालनारा अथवा खेपीयाओ), करोटिक (कपाळ–खोपरी लइने भिक्षा मागनार), कार्पटिक–कापडी (कंथा, कोपीन, कषाय वस्त्रने धारण करनारा), पाखंडी (साधु, बावा, संन्यासी) अथवा गृहस्थीओ जे जे जेम जेम आवता हता, तेने तेने तेम तेम आश्वासन आपी, विश्राम आपी, श्रेष्ठ सुखासनपर बेसाडी, घणुं अशन, पान, खादिम अने स्वादिम वहेंची आपवामां आवतुं अने पीरसवामां आवतुं, ए रीते (जमाडवामां आवता हता) ते रसोइयाओ ते रीते रहेता–वर्तता हता.

मू०—तते णं मिहिलाए सिंघाडग जाव बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमातिक्खति—" एवं खलु देवाणुप्पिया ! कुंभगस्स रण्णो भवणंसि सव्वकामगुणियं किमिच्छियं विपुलं असणं पाणं खादिमं सादिमं बहूणं समणाण य जाव परिवेसिज्जति " ।

अर्थ—त्यारपछी ते मिथिला राजधानीमां शृंगाटक, त्रिक, चतुष्क विगेरे मार्गोमां यावत् घणा लोको परस्पर आ प्रमाणे कहेवा लाग्या.—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! कुंभ राजाना भवनने विषे सर्वकामगुणित—जेने विषे सर्व प्रकारना रूप, रस, गंध अने स्पर्शवाळा मनवांछित रसना पर्यायो रह्या होय एवुं तथा किमिच्छिय—तमारी शी इच्छा छे ? तमारी शी इच्छा छे ? एम कहीने इच्छानुसार जे देवामां आवे एवुं घणुं अशन, पान, खादिम अने स्वादिम घणा साधु, कापडी विगेरेने यावत् पीरसवामां—आपवामां—जमाडवामां आवे छे—अपाय छे.

मू०—" वरवरिया घोसिज्जति, किमिच्छियं दिज्जए बहुविहीयं ।
सुरअसुरदेवदाणव—नरिंदमहियाण निक्खमणे ॥ १ ॥ "

अर्थ—सुर—वैमानिक देव, असुर—भवनपति देव, देव—ज्योतिषी देव, दानव—व्यंतर देव अने नरेंद्र—चक्रवर्त्ती विगेरे राजाओए पूजेला एवा तीर्थकरोनी दीक्षाने अवसरे वरवरिकानी आघोषणा कराय छे, अने घणा प्रकारनुं किमिच्छित दान अपाय छे. (जे आघोषणामां ' वरदान मागो, वरदान मागो ' एम बोलाय छे ते वरवरिका कहेवाय छे. तथा ' तमारी शी इच्छा

छे ?' एम पूछी तेनी इच्छानुसार अपाय ते किमिच्छित दान कहेवाय छे.)

मू०—तते णं मल्ली अरहा संवच्छरेणं तिन्नि कोडिसया अट्ठासीतिं च होंति कोडीओ असितिं च सयसहस्साइं इमेयारूवं अत्थसंपदाणं दलइत्ता निक्खमामि त्ति मणं पहारेति ॥ ७६ ॥

अर्थ—त्यारपछी मल्ली अरिहंते एक वर्षमां कुल त्रणसो करोड अट्ठाशी करोड अने एंशी लाख एटलुं द्रव्यसंपदानुं दान आपीने 'हुं दीक्षा ग्रहण करुं' एम मनमां धार्युं-विचार्युं. (अहीं पण प्रथम कही गया तेम वर्षीदाननुं आ प्रमाण इंद्रे आपेला द्रव्यनुं जाणवुं. ते सिवाय पोतानुं द्रव्य, धान्य विगेरेनुं पण दान आप्युं छे.)

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं लोगंतिया देवा बंभलोए कप्पे रिट्ठे विमाणपत्थडे सएहिं सएहिं विमाणेहिं सएहिं सएहिं पासायवडिंसएहिं पत्तेयं पत्तेयं चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अन्नेहि य बहूहिं लोगंतिएहिं देवेहिं सद्धिं संपरिवुडा महयाहयनट्टगीयवाइय जाव रवेणं भुंजमाणा विहरंति।

अर्थ—ते काळे ते समये लोकांतिक देवो ब्रह्मलोक नामना पांचमा कल्पने विषे अरिष्ट नामना ते विमानना प्रस्तट (पाथडा) ने विषे पोतपोताना विमानोवडे, पोतपोताना प्रासाद अवतंसक (श्रेष्ठ प्रासाद) वडे, दरेक दरेक चार चार हजार

सामानिक देवोवडे, त्रण त्रण पर्षदाओवडे, सात सात अनिको (सैन्यो) वडे, सात सात अनिकाधिपति (सेनापति) वडे, सोळ सोळ हजार आत्मरत्तक देवोवडे तथा बीजा घणा लोकांतिक देवोनी साथे परिवर्या सता घणा मोटा वगाडेला नाट्य गीतना वाजित्रोना यावत् शब्दवडे विविध भोगने भोगवता सता विचरे छे-रहेला छे.

मू०—तं जहा—" सारस्सय माइच्चा, वण्ही वरुणा य गद्दत्तोया य ।
तुसिया अव्वाबाहा, अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य ॥ १ ॥ "

अर्थ—तेमनां नाम आ प्रमाणे छे-सारस्वत १, आदित्य २, वन्हि ३, वरुण ४, गर्दतोय ५, तुषित ६, अव्याबाध ७, आग्नेय ८ अने रिष्ट ९. (आमांना पहेला आठ कृष्णराजिना अवकाशनी अंदर रहेला आठ विमानोमां रहेला छे, अने छेल्ला रिष्ट नामना देव रिष्ट नामना विमानना प्रस्तट (पाथडा) मां मध्यमां रहेला छे. वळी कोइ ठेकाणे दश लोकांतिक देवो कहेला छे परंतु अहीं तो स्थानांगसूत्रने अनुसारे नव कह्या छे.)

मू०—तते णं तेसिं लोयंतियाणं देवाणं पत्तेयं पत्तेयं आसणाितं चलंति, तहेव जाव "अरहंताणं निक्खममाणाणं संबोहणं करेत्तए त्ति तं गच्छामो णं अम्हे वि मल्लिस्स अरहतो संबोहणं करेमि" त्ति कट्टु एवं संपेहेंति, संपेहित्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसीभायं वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता संखिज्जाइं जोयणाइं एवं जहा जंभगा जाव जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुंभगस्स

रन्नो भवणे जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अंतलिक्खपडिवन्ना सखिंखिणियाइं जाव वत्थातिं पवरपरिहिया करयल ताहिं इट्ठाहिं जाव एवं वयासी–

अर्थ––त्यारपछी ते लोकांतिक देवोना प्रत्येक प्रत्येकनां आसनो चलायमान थयां. ते ज प्रमाणे यावत् (अवधिज्ञानवडे तेमणे जाण्युं के) " दीक्षा लेवाने इच्छता अरिहंतोने संबोध करवानो अमारो आचार छे," माटे अमे पण जइए अने मल्ली नामना अर्हनने बोध करीए (जणावीए)." एम करीने (बोलीने) तेओए विचार कर्यो. विचार करीने उत्तर पूर्व (ईशान) दिशामां जइ वैक्रियसमुद्घातवडे समुद्घात कर्यो. (उत्तरवैक्रिय शरीर कर्युं). समुद्घात करी संख्याता योजन ओळंगी ए प्रमाणे जेम तिर्यग्‌जृंभक देवो आव्या हता तेम कहेवुं. यावत् ज्यां मिथिला नामनी राजधानी हती, ज्यां कुंभ राजानुं भवन हतुं अने ज्यां मल्ली नामना अरिहंत हता, त्यां आव्या. आवीने आकाशमां रह्या सता घुघरीओना शब्द सहित यावत् श्रेष्ठ वस्त्र पहेरी बे हाथ जोडी, यावत् ते इष्ट एवी वाणीवडे आ प्रमाणे बोल्या.

मू०–" बुज्झाहि भगवं ! लोगनाहा ! पवत्तेहि धम्मतित्थं, जीवाणं हियसुहनिस्सेयसकरं भविस्सति " त्ति कट्टु दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयंति, वइत्ता मल्लिं अरहं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूआ तामेव दिसिं पडिगया ।

अर्थ––" हे लोकनाथ ! भगवान ! बोध पामो. धर्मतीर्थ प्रवर्तावो. ते धर्मतीर्थ जीवोने हितकारक, सुखकारक अने

कल्याण (मोक्ष) कारक थशे. " एम कही बीजी वार त्रीजी वार पण ए ज प्रमाणे बोल्या. बोलीने तेओए मल्ली अरिहंतने वंदना करी, नमस्कार कर्या. वंदना करी नमस्कार करी जे दिशाथी प्रगट थया हता—आव्या हता ते ज दिशामां पाछा गया—पोताने स्थाने गया.

मू०—तते णं मल्ली अरहा तेहिं लोगंतिएहिं देवेहिं संबोहिए समाणे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल—" इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाते मुंडे भवित्ता जाव पव्वतित्तए " । " अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि " ।

अर्थ—त्यारपछी ते मल्ली अरिहंत ते लोकांतिक देवोए बोध कर्यो (अवसर जणाव्यो) त्यारे ज्यां पोताना मातापिता हता त्यां आव्या. आवीने बे हाथ जोडी यावत् बोल्या के—" हे मातापिता ! हुं तमारी आज्ञाथी मुंड थइने यावत् प्रव्रज्या ग्रहण करवा इच्छुं छुं." ते सांभळी मातापिता बोल्या के " हे देवानुप्रिया ! जेम सुख उपजे तेम करो. प्रतिबंध—विलंब न करो."

मू०—तते णं कुंभए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—" खिप्पामेव अट्ठसहस्सं सोवण्णियाणं जाव भोमेज्जाणं ति । अण्णं च महत्थं जाव तित्थयराभिसेयं उवट्ठवेह " । जाव उवट्ठवेंति ।

अर्थ--त्यारपछी ते कुंभ राजाए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं-" हे देवानुप्रियो ! शीघ्रपणे एक हजार ने आठ सुवर्णना कलश यावत् एक हजार ने आठ माटीना (कुल आठ जातिना) कलश लावो. वळी बीजुं ए के मोटा अर्थवाळी यावत् तीर्थंकरना अभिषेकनी सर्व सामग्री लावो." ते सांभळी तेमणे यावत् ते प्रमाणे सर्व प्राप्त कर्युं.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं चमरे असुरिंदे जाव अच्चुयपज्जवसाणा आगया ।

अर्थ—ते काळे ते समये चमर नामना असुरना इंद्र विगेरे यावत् अच्युत इंद्र पर्यंत सर्व (६४) इंद्रो त्यां आव्या.

मू०—तते णं सक्के देविंदे देवराया आभिओगिए देवे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—" खिप्पामेव अट्ठसहस्सं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव अण्णं च तं विउलं उवट्ठवेह "। जाव उवट्ठवेंति। ते वि कलसा ते चेव कलसे अणुपविट्ठा ।

अर्थ—त्यारपछी ते शक्र देवेंद्र देवराजे पोताना आभियोगिक देवोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं-" हे देवानुप्रियो ! शीघ्रपणे एक हजार ने आठ सुवर्णना कळशो विगेरे यावत् बीजी पण ते विपुल अभिषेकने लायक सामग्री लावो. " ते सांभळी तेओ पण यावत् सर्व लाव्या. पछी ते देवना कळशो पण ते मनुष्यना ज कळशोमां (देवशक्तिथी) समाइ गया.

मू०—तते णं से सक्के देविंदे देवराया कुंभराया य मल्लिं अरहं सीहासणंसि पुरत्थाभिमुहं

निवेसेइ अट्ठसहस्सेणं सोवण्णियाणं जाव अभिसिंचंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते शक्र देवेंद्र देवराजे अने कुंभ राजाए मल्ली अरिहंतने सिंहासन उपर पूर्व दिशानी सन्मुख बेसाड्या. पछी सुवर्ण विगेरेना एक हजार ने आठ कळशावडे यावत् अभिषेक कर्यो.

मू०—तते णं मल्लीस्स भगवओ अभिसेए वट्टमाणे अप्पेगतिया देवा मिहिलं च सब्भिंतरं बाहिरियं जाव सव्वतो समंता परिधावंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते मल्ली भगवानने अभिषेक थतो हतो त्यारे केटलाक देवो मिथिला नगरीनी अंदर अने बहार यावत् सर्व दिशा विदिशामां हर्षथी आम तेम दोडवा लाग्या–फरवा लाग्या.

मू०—तए णं कुंभए राया दोच्चं पि उत्तरावक्कमणं जाव सव्वालंकारविभूसियं करेति, करित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—"खिप्पामेव मणोरमं सीयं उवट्ठवेह"। ते उवट्ठवेंति।

अर्थ—त्यारपछी कुंभराजाए बीजी वार उत्तर दिशामां जइ यावत् प्रभुने सर्व अलंकारादिकवडे विभूषित कर्या, करीने कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" शीघ्रपणे मनोरमा नामनी शिबिका (तैयार करीने) लावो." तेओ पण ते प्रमाणे लाव्या.

मू०—तते णं सक्के देविंदे देवराया आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वदासी—" खिप्पा-

मेव अणेगखंभं जाव मनोरमं सीयं उवट्ठवेह "। जाव सावि सीया तं चेव सीयं अणुपविट्ठा ।

अर्थ—त्यारपछी ते शक्र देवेंद्र देवराजे पोताना आभियोगिक देवोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं–" शीघ्रपणे: अनेक स्तंभवाळी यावत् मनोरमा नामनी शिबिका बनावीने लावो." त्यारे तेओ पण लाव्या, यावत् ते देवनी शिबिका ते मनुष्यनी शिबिकामां समाइ गइ.

मू०—तते णं मल्ली अरहा सीहासणाओ अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठित्ता जेणेव मणोरमा सीया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मणोरमं सीयं अणुपयाहिणी करेमाणा मणोरमं सीयं दुरूहति, दुरूहित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने ।

अर्थ—त्यारपछी मल्ली अरिहंत सिंहासन उपरथी उभा थया. उभा थइने ज्यां मनोरमा नामनी शिबिका हती त्यां आव्या. आवीने मनोरमा शिबिकाने प्रदक्षिणा करी मनोरमा शिबिकापर आरूढ थया. आरूढ थइ श्रेष्ठ सिंहासन उपर पूर्व दिशानी सन्मुख बेठा.

मू०—तते णं कुंभए राया अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ सद्दावेति. सद्दावित्ता एवं वदासी—"तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिया मल्लिस्स सीयं परिवहह "। जाव परिवहंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कुंभ राजाए अढार श्रेणि प्रश्रेणिने बोलावी. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं–" हे देवानुप्रियो ! तमे स्नान करी यावत् सर्व अलंकारवडे विभूषित थइ मल्लीकुमारीनी शिविकाने वहन करो. त्यारे तेओए ते प्रमाणे करीने यावत् वहन करी–उपाडी.

मू०—तते णं सक्के देविंदे देवराया मणोरमाए दक्खिणिल्लं उवरिल्लं बाहं गेण्हति, ईसाणे उत्तरिल्लं उवरिल्लं बाहं गेण्हति, चमरे दाहिणिल्लं हेट्ठिल्लं, बली उत्तरिल्लं हेट्ठिल्लं। अवसेसा देवा जहारिहं मणोरमं सीयं परिवहंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते शक्र देवेंद्र देवराजे मनोरमा शिबिकानी दक्षिण तरफनी उपली बाहा ग्रहण करी (उपाडी), ईशान इंद्रे उत्तर तरफनी नीचली बाहा ग्रहण करी, चमरेन्द्रे दक्षिण तरफनी उपली बाहा ग्रहण करी, बली इंद्रे दक्षिण तरफनी नीचली बाहा ग्रहण करी, तथा बीजा देवोए यथायोग्य रीते मनोरमा शिबिकाने उपाडी.

मू०—पुव्विं उक्खित्ता माणुस्सेहिं तो हट्ठरोमकूवेहिं। पच्छा वहंति सीयं असुरिंदसुरिंदनागेंदा॥१
चलचवलकुंडलधरा सच्छंदविउव्वियाभरणधारी । देविंददाणविंदा वहंति सीयं जिणिंदस्स ॥२॥'

अर्थ—" जेना रोमकूप हर्षित थया छे (रुंवाडा विकस्वर थया छे) एवा मनुष्योए प्रथम ते शिबिका उपाडी अने त्यारपछी असुरेंद्र, सुरेंद्र अने नागेंद्रे वहन करी–उपाडी (१) चलायमान चपळ कुंडलने धारण करनार तथा पोतानी

इच्छा प्रमाणे विकुर्वेला आभरणोने धारण करनार देवेंद्रोए अने दानवेंद्रोए जिनेंद्रनी शिबिका वहन करी. (२)"

मू०—तते णं मल्लिस्स अरहओ मणोरमं सीयं दुरूढस्स इमे अट्ठट्ठमंगलगा पुरतो अहाणुपुव्वीए, एवं निग्गमो जहा जमालिस्स ।

अर्थ—त्यारपछी ते मल्ली अरिहंत मनोरमा नामनी शिबिकापर आरूढ थया त्यारे तेनी आगळ आठ आठ मंगळ अनुक्रमे चाल्या. ए प्रमाणे भगवतीमां कहेला जमालिना निर्गमनी जेम अहीं पण मल्ली अरिहंतनुं निर्गमन कहेवुं.

मू०—तते णं मल्लिस्स अरहतो निक्खममाणस्स अप्पेगइया देवा मिहिलं नयरिं आसियसंमज्जियं अब्भिंतरवासविहिगाहा जाव परिधावंति ।

अर्थ—त्यारपछी मल्ली अरिहंतना दीक्षा महोत्सवने वखते केटलाक देवो मिथिला नगरीने पुंजी, प्रमार्जी, जळ छांटी अंदर अने बहारनी विधि करीने यावत् आम तेम चोतरफ हर्षथी दोडवा लाग्या. (आ सर्व अधिकार राजप्रश्नीय विगेरेमां छे.)

मू०—तते णं मल्ली अरहा जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुभति, पच्चोरुभित्ता आभरणालंकारं पभावती पडिच्छति ।

अर्थ—त्यारपछी ते मल्ली अरिहंत ज्यां सहस्राम्रवण नामनुं उद्यान हतुं अने ज्यां अशोक नामनुं श्रेष्ठ वृक्ष हतुं त्यां आव्या, आवीने शिबिकापरथी नीचे उतर्या. उतरीने आभरण, अलंकार विगेरे उतार्या, ते प्रभावती राणीए (माताए) ग्रहण कर्या

मू०—तते णं मल्ली अरहा सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति। तते णं सक्के देविंदे देवराया मल्लिस्स केसे पडिच्छति, पडिच्छित्ता खीरोदगसमुद्दे पक्खिवइ।

अर्थ—त्यारपछी ते मल्ली अरिहंते पोते ज पंचमुष्टि लोच कर्यो. त्यारपछी शक्र देवेंद्र देवराजे ते मल्ली स्वामीना केश ग्रहण कर्या, ग्रहण करीने तेने क्षीरसमुद्रमां नांख्या.

मू०—तते णं मल्ली अरहा णमोऽत्थु णं सिद्धाणं ति कट्टु सामाइयचरित्तं पडिवज्जति।

अर्थ—त्यारपछी ते मल्ली अरिहंते 'सिद्धोने नमस्कार हो' एम कही सामायिक चारित्र अंगीकार कर्युं.

मू०—जं समयं च णं मल्ली अरहा चरित्तं पडिवज्जति तं समयं च णं देवाणं माणुसाण य णिग्घोसे तुरियनिणायगीयवातियनिग्घोसे य सक्कस्स वयणसंदेसेणं णिलुक्के यावि होत्था।

अर्थ—जे समये मल्ली अरिहंते चारित्र अंगीकार कर्युं, ते समये देवो अने मनुष्योना निर्घोष (शब्द), तूर्य (वाजित्र)ना निनाद (शब्द), तथा गीत वाजित्रना निर्घोष ए सर्व शब्दो शक्र इंद्रना आदेशना वचनथी बंध थइ गया (बंध कराव्या).

मू०—जं समयं च णं मल्ली अरहा सामातियं चरित्तं पडिवन्ने तं समयं च णं मल्लिस्स अरहतो माणुसधम्माओ उत्तरिए मणपज्जवनाणे समुप्पन्ने ।

अर्थ—जे समये (वखते) मल्ली अरिहंते सामायिक चारित्र अंगीकार कर्युं, ते समये मल्ली अरिहंतने मनुष्यधर्म संबंधी एटले मनुष्य क्षेत्र (अढी द्वीप) संबंधी (मनुष्यक्षेत्रमां रहेला संज्ञी पंचेंद्रिय जीवोना मनोगत भावने जाणनारुं) उत्तम (मोटुं) मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न थयुं.

मू०—मल्ली णं अरहा जे से हेमंताणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे पोससुद्धे तस्स णं पोससुद्धस्स एक्कारसीपक्खे णं पुव्वण्हकालसमयंसि अट्ठमेणं भत्तेणं अपाणएणं अस्सिणीहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागए णं तिहिं इत्थीसएहिं अब्भिंतरियाए परिसाए तिहिं पुरिससएहिं बाहिरियाए परिसाए सद्धिं मुंडे भवित्ता पव्वइए ।

अर्थ—श्री मल्ली अरिहंते जे ते हेमंत ऋतुना बीजा मासमां चोथा पखवाडीयामां एटले पोष मासना शुद्ध पक्षमां वळी ते पोष मासना शुक्लपक्षनी अग्यारशनी तिथिना पक्षमां (अर्ध भागमां) पूर्वाह्ण काळने समये (दिवसना पहेला

१ रात्रनो पक्ष बाद करी दिवसनो पक्ष.

भागमां) पाणी रहित अष्टम भक्तनो तप करी अश्विनी नक्षत्रनी साथे चंद्रनो योग प्राप्त थयो हतो ते वखते त्रण सो अभ्यंतर पर्षदानी स्त्रीओ साथे तथा त्रण सो बाह्य पर्षदाना पुरुषो साथे मुंड थइ प्रव्रज्या अंगीकार करी.

मू०—मल्लिं अरहं इमे अट्ठ णायकुमारा अणुपव्वइंसु । तं जहा—

"णंदे य णंदिमित्ते, सुमित्त बलमित्त भाणुमित्ते य । अमरवति अमरसेणे, महसेणे चेव अट्ठमए ॥१॥"

अर्थ—मल्ली अरिहंतनी पाछळ आ आठ ज्ञात[1] कुमारोए दीक्षा लीधी. ते आठ आ प्रमाणे. "नंद १, नंदीमित्र २, सुमित्र ३, बळमित्र ४, भानुमित्र ५, अमरपति ६, अमरसेन ७, अने आठमो महासेन ८. आ आठ ज्ञात कुमारोए पण दीक्षा लीधी."

मू०—तए णं से भवणवई ४ मल्लिस्स अरहतो निक्खमणमहिमं करेंति, करित्ता जेणेव नंदीसरवरे० अट्ठाहियं करेंति, करित्ता जाव पडिगया ।

अर्थ—त्यारपछी ते भवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिक ए चार निकायना देवोए मल्ली अरिहंतनो दीक्षामहोत्सव कर्यो, करीने ज्यां नंदीश्वर द्वीप हतो त्यां जइ अष्टाह्निका महोत्सव कर्यो, करीने यावत् पोताने स्थाने गया.

मू०—तते णं मल्ली अरहा जं चेव दिवसं पव्वतिए तस्सेव दिवसस्स पच्चावरण्हकालसमयंसि

१. इक्ष्वाकु वंशमां उत्पन्न थयेला, राज्यने लायक थयेला कुमारो.

असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि सुहासणवरगयस्स सुहेणं परिणामेणं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं पसत्थाहिं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणकम्मरयविकरणकरं अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणंते जाव केवलनाणदंसणे समुप्पन्ने ॥ ७७ ॥

अर्थ—त्यारपछी मल्ली अरिहंते जे दिवसे दीक्षा ग्रहण करी ते ज दिवसे एटले पोष शुक्र एकादशीने दिवसे प्रत्यपराह्णकाळ समये एटले दिवसना पाछले भागे श्रेष्ठ अशोक वृक्षनी नीचे पृथ्वीशिलापट्ट उपर श्रेष्ठ सुखासने रहेला (बेठेला) हता ते वखते तेमना शुभ परिणामवडे, प्रशस्त अध्यवसायवडे तथा विशुद्ध अने प्रशस्त एवी लेश्यावडे तदावरण (ज्ञानावरण अने दर्शनावरण) कर्मना रजने नाश करनारा अपूर्वकरण नामना आठमा गुणस्थानने प्राप्त थयेला (क्षपक श्रेणि मांडवाथी बारमे गुणठाणे चार घातीकर्मनो क्षय करनार) ते प्रभुने अनंत, अनुत्तर विगेरे विशेषणवाळुं यावत् केवळज्ञान अने केवळदर्शन उत्पन्न थयुं. (आवश्यक सूत्रमां कह्युं छे के–'तेवीसाए णाणं उप्पन्नं जिणवराण पुव्वण्हे' तथा–मग्गसिरसुद्धएक्कारसीए 'मल्लिस्स अस्सिणीजोगि त्ति'–'त्रेवीश तीर्थंकरोने पूर्वाह्ण काळे एटले दिवसना पूर्व भागे केवळ ज्ञान थयुं छे.' तथा 'मार्गशीर्ष शुक्र एकादशीने दिवसे अश्विनी नक्षत्र साथे चंद्रनो योग सते मल्लीनाथने ज्ञान उत्पन्न थयुं छे.' तथा तेमां ज (अहोरात्र एक दिवस अने एक रात्रि) नो छद्मस्थ पर्याय कहेलो छे. आ बाबतनो अभिप्राय बहुश्रुत जाणी शके.) ७७

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं सव्वदेवाणं आसणातिं चलंति, समोसढा, सुणेंति, अट्ठाहियमहिमा नंदीसरे, जामेव दिसिं पाउब्भूआ तामेव दिसिं पडिगया। कुंभए वि निग्गच्छति।

अर्थ—ते काळे ते समये सर्व देवोनां आसनो चलायमान थयां–कंप्यां. त्यारे तेओ त्यां आव्या समवसरणनी रचना करी, देशना सांभळी, नंदीश्वर द्वीपे जइ अष्टाहिका महोत्सव कर्यो, पछी जे दिशामांथी प्रगट थया हता, ते ज दिशाए (पोतपोताने स्थाने) पाछा गया. कुंभ राजा पण वांदवा नीकळ्या.

मू०—तते णं ते जितसत्तुपामोक्खा छप्पि य रायाणो जेट्ठपुत्ते रज्जे ठावित्ता पुरिससहस्सवाहिणीयाओ दुरूढा सव्विड्ढीए जाव रवेणं जेणेव मल्ली अरहा जाव पज्जुवासंति।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु विगेरे छए राजाओ पोतपोताना ज्येष्ठ पुत्रने राज्यपर स्थापन करी हजार पुरुषोए वहन करेली शिबिकाओ उपर आरूढ थइ सर्व समृद्धिवडे यावत् गीत वाजित्रना शब्दवडे ज्यां मल्ली अरिहंत हता त्यां यावत् आवीने तेमने सेववा लाग्या.

मू०—तते णं मल्ली अरहा तीसे महति महालियाए कुंभगस्स रन्नो तेसिं च जितसत्तुपामुक्खाणं धम्मं कहेति, परिसा जामेव दिसिं पाउब्भूआ तामेव दिसिं पडिगया। कुंभए समणोवासए

जाए, पडिगए, पभावती य समणोवासिया जाता, पडिगया ।

अर्थ—त्यारपछी मल्ली अरिहंते ते मोटी पर्षदाने विषे कुंभ राजाने तथा ते जितशत्रु विगेरे छए राजाओने धर्म कह्यो. पछी ते पर्षदा जे दिशाएथी प्रगट थइ हती ते ज दिशामां पाछी गइ. कुंभ राजा श्रमणोपासक (श्रावक) थया. पछी ते पोताने स्थाने पाछा गया. प्रभावती राणी पण ते ज प्रमाणे आवी प्रभुनी देशना सांभळी श्रमणोपासिका (श्राविका) थइ. पछी ते पोताने स्थाने पाछी गइ.

मू०—तते णं जितसत्तूपामोक्खा छप्पि य रायाणो धम्मं सोच्चा आलित्तए णं भंते ! जाव पव्वइया, चोद्दसपुव्विणो अणंते केवले सिद्धा ।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु विगेरे छए राजाओए धर्म सांभळी—" हे भगवान् ! आ संसार आदीप्त, प्रदीप्त विगेरे विशेषणवाळो भयंकर छे. " इत्यादि कही यावत् दीक्षा ग्रहण करी. तेओ चौद पूर्वी थइ अनंत केवळज्ञान पामी यावत् सिद्ध थया.

मू०—तते णं मल्ली अरहा सहसंबवणाओ निक्खमति, निक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ।

अर्थ—त्यारपछी मल्ली अरिहंत सहस्राम्रवन थकी बहार नीकळ्या. नीकळीने बहार जनपद (देश) मां विचरवा लाग्या.

मू०—मल्लिस्स णं अरहओ भिसग(किंसुय)पामोक्खा अट्ठावीसं गणा अट्ठावीसं गणहरा हो-

त्था । मल्लिस्स णं अरहओ चत्तालीसं समणसाहस्सीओ उक्कोसियाओ, बंधुमतीपामोक्खाओ पणपण्णं अज्जियासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जिया होत्था । मल्लिस्स णं अरहओ सावयाणं एगा सयसाहस्सीओ चुलसीइं च सहस्सा उक्कोसिया सावया होत्था । मल्लिस्स णं अरहओ सावियाणं तिन्नि सयसाहस्सीओ पण्णट्ठिं च सहस्सा संपया होत्था । मल्लिस्स णं अरहओ छस्सया चोद्दसपुव्वीणं, वीससया ओहिनाणीणं, बत्तीसं सया केवलणाणीणं, पणतीसं सया वेउव्वियाणं, अट्ठसया मणपज्जवणाणीणं, चोद्दससया वाईणं, वीसं सया अणुत्तरोववातियाणं (संपया होत्था) ।

अर्थ—मल्ली अरिहंतने भिषक (अथवा किंशुक) विगेरे अठ्ठावीश २८ गण अने अठ्ठावीश २८ गणधरो थया. मल्ली अरिहंतने चाळीश हजार ४०००० साधुओनी उत्कृष्ट संपदा थइ, बंधुमती विगेरे पंचावन हजार ५५००० साध्वीओनी उत्कृष्ट संपदा थइ. मल्ली अरिहंतने एक लाख ने चोराशी हजार १८४००० श्रावकोनी उत्कृष्ट संपदा थइ. मल्ली अरिहंतने त्रण लाख ने पांसठ हजार ३६५००० श्राविकाओनी उत्कृष्ट संपदा थइ. मल्ली अरिहंतने छ सो ६०० चौदपूर्वी साधुओ, वीश सो (बे हजार) २००० अवधिज्ञानी, बत्रीश सो ३२०० केवळज्ञानी, पांत्रीश सो ३५०० वैक्रियलब्धिवाळा, आठ सो ८०० मनःपर्यवज्ञानवाळा, चौद सो १४०० वादी, अने वीश सो २००० अनुत्तर विमान (सर्वार्थसिद्ध विमान) मां जनारा एकावतारी आ प्रमाणे संपदा थइ.

मू०—मल्लिस्स अरहओ दुविहा अंतगडभूमी होत्था, तं जहा—जुयंतकरभूमी परियायंतकरभूमी य। जाव वीसतिमाओ पुरिसजुगाओ जुयंतकरभूमी, दुवासपरियाए अंतमकासी।

अर्थ—मल्ली अरिहंतने (तेना तीर्थमां) बे प्रकारनी अंतकर भूमि थइ. ते आ प्रमाणे—युगांतकर भूमि अने पर्यायांतरकरभूमि. तेमां शिष्य, प्रशिष्य विगेरे वीशमा पुरुषरूप युग सुधी एटले वीशमी पाट सुधी युगांतकरभूमि थइ. एटले वीश पाट सुधी साधुओ मोक्षे गया. (त्यारपछी ते तीर्थमां कोइ जीव मोक्षे गयो नहीं) अने बे वर्षनो पर्याय गये सते एटले मल्लीनाथना केवळज्ञान पाम्या पछी बे वर्ष गया त्यारे युगांतकरभूमि एटले भवना अंतने करनार (मोक्षे जनार) साधु थया. त्यारथी मोक्षमार्ग शरु थयो. ते पहेलां कोइ जीव मोक्षे गयो नथी (कोइ ठेकाणे 'बे मासनो पर्याय' अने कोइ ठेकाणे 'चार मासनो पर्याय गये सते' एवो पण पाठ देखाय छे.)

---

१ संसारना अंतने करनारा अर्थात् मोक्षे जनारा जीवोनी भूमि एटले काळ. २ युग एटले काळनुं मान विशेष, ते युग—काळ क्रमे करीने वर्ते छे तेथी तेना सदृशपणाथी जेओ अनुक्रमे वर्तनारा गुरु, शिष्य, प्रशिष्य विगेरे होय छे, ते पुरुषो पण युग कहेवाय छे, तेओए माप करेली अंतकरभूमि ते युगातकरभूमि कहेवाय छे. ३ पर्याय एटले तीर्थंकरनी केवळीपणानी अवस्था तेने आश्रीने अंतकरभूमि ते पर्यायांतकर भूमि कहेवाय छे.

मू०—मल्ली णं अरहा पणुवीसं धणूणि उड्ढं उच्चत्तेणं, वण्णेणं पियंगुसमे, समचउरंससंठाणे, वज्जरिसभणारायसंघयणे, मज्झदेसे सुहंसुहेणं विहरित्ता जेणेव संमेए पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता संमेयसेलसिहरे पाओवगमणुववण्णे ।

अर्थ—मल्ली अरिहंतनुं शरीर उंचपणे पचीश धनुष उंचुं हतुं, तेनो वर्ण प्रियंगु समान (नील) हतो, तेनुं संस्थान समचतुरस्र हतुं, तेनुं वज्रर्षभनाराच नामनुं संघयण हतुं. आवा ते भगवान मध्यदेशमां सुखे सुखे विचरीने ज्यां संमेत नामनो पर्वत हतो, त्यां आव्या. आवीने संमेत पर्वतना शिखर उपर पादोपगम नामना अनशनने ग्रहण करीने रह्या.

मू०—मल्ली णं एगं वाससतं आगारवासमज्झे पणपण्णं वाससहस्साति वाससयऊणाति केवलिपरियागं पाउणित्ता पणपण्णं वाससहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता जे से गिम्हाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे चित्तसुद्धे तस्स णं चेत्तसुद्धस्स चउत्थीए भरणीए णक्खत्तेणं अद्धरत्तकालसमयंसि पंचहिं अज्जियासएहिं अब्भितरियाए परिसाए पंचहिं अणगारसएहिं बाहिरियाए परिसाए मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं वग्घारियपाणी खीणे वेयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे, एवं परिनिव्वाणमहिमा भाणियव्वा, जहा जंबुद्दीवपण्णत्तीए, नंदीसरे अट्ठाहियाओ, पडिगयाओ ।

अर्थ—मल्ली अरिहंत एक सो वर्ष गृहावासमां रह्या, सो वर्ष न्यून पंचावन हजार वर्ष केवळीपर्याय पाळीने ए रीते कुल पंचावन हजार वर्षनुं सर्व आयुष्य पाळीने जे ते ग्रीष्मऋतुनो पहेलो मास, बीजो पक्ष एटले चैत्र मासनो शुक्लपक्ष. ते चैत्र मासना शुक्ल पक्षनी चोथनी तिथिए भरणी नक्षत्र साथे चंद्रनो योग आवे सते अर्ध रात्रिने समये आभ्यंतर पर्षदानी पांचसो साध्वीओ अने बाह्य पर्षदाना पांचसो साधुओ साथे, जळ रहित मासभक्तवडे—एक मासना अनशनवडे बन्ने हाथ लांबा राखी वेदनीय, आयुष्य, नाम अने गोत्र ए चार अघातिकर्म क्षीण थये सते सिद्ध थया—निर्वाण पाम्या. ए प्रमाणे श्रीजंबूद्वीप प्रज्ञप्तिमां ऋषभस्वामीनो कह्यो छे तेम निर्वाणनो महिमा कहेवो. पछी देवोए नंदीश्वर द्वीपे जइ अष्टाहिका महोत्सव कर्यो. पछी तेओ पोतपोताने स्थाने गया.

अहीं टीकामां लखेला निर्वाण कल्याणकनो महोत्सव संक्षेपथी आ प्रमाणे छे.-जे समये मल्ली अरिहंत केवली समुद्घात करी काळधर्म पाम्या, जन्म—जरा अने मरणना बंधनने छेदी सिद्ध थया, ते समये शक्र इंद्रनुं आसन चलायमान थयुं, तेणे अवधिज्ञाननो उपयोग आपी मल्ली जिनेश्वरनुं निर्वाण जाण्युं. एटले तत्काळ परिवार सहित संमेत पर्वतना शिखरपर आव्या. प्रभुने निर्वाण पामेला जोइ शक्र इंद्रना मनमां खेद थयो, ते आनंद रहित थया अने तेनां नेत्रो अश्रुथी पूर्ण थयां. पछी ते शक्र इंद्र जिनेंद्रना शरीरने त्रण प्रदक्षिणा करी नमस्कार करी बहु दूर नहीं अने बहु नजीक नहीं एम भगवानना शरीरनी पासे तेनी सेवा करता रह्या. ए ज प्रमाणे बीजा सर्व वैमानिक देवेंद्रो, ज्योतिषीना इंद्रो, भुवनपतिना इंद्रो अने व्यंतरना इंद्रो पोतपोताना परिवार सहित आवी ते ज प्रमाणे भगवानना शरीरनी सेवा करता रह्या.

त्यारपछी शक्र इंद्रे पोताना आभियोगिक देवो पासे नंदन वनमांथी गोशीर्षना सुंदर काष्ठ मंगावी त्रण चिताओ रचावी, अने क्षीरसमुद्रनुं जळ मंगाव्युं, ते जळवडे प्रभुना शरीरने स्नान कराव्युं, गोशीर्ष चंदनना रसवडे अनुलेप कर्यो, हंस जेवुं कोमळ वस्त्र तेने ओढाडयुं, तथा सर्व अलंकारोवडे तेने विभूषित कर्युं. बीजा देवोए गणधरोनां अने साधुओनां शरीरने ए प्रमाणे कर्युं.

त्यारपछी शक्र इंद्रे आभियोगिक देवो पासे त्रण शिबिकाओ करावी. तेमां एक शिबिकामां जिनेश्वरना शरीरने स्थापन कर्युं, पछी मोटी ऋद्धिवडे तेने चिताने स्थाने लइ जइ चितामां स्थापन कर्युं. बीजा देवोए गणधरोनां अने बीजा साधुओनां शरीरोने बे शिबिकामां स्थापन करी बे चितामां स्थापन कर्यां. पछी शक्र इंद्रना आदेशथी अग्निकुमार देवोए त्रणे चितामां अग्निकाय विकुर्व्यो अने वायुकुमारोए वायुकाय विकुर्व्यो. बीजा देवोए ते त्रणे चिताओमां काळागरु, कंदुरु, तुरुष्क, धूप, घी अने मध घडे घडे नांख्या. त्यारपछी मांस विगेरे बळी गयां त्यारे मेघकुमार देवोए ते चिताओने क्षीरसमुद्रना जळवडे ओलवी नांखी.

पछी शक्र इंद्रे प्रभुना शरीरनी जमणी बाजुनी उपली दाढा ग्रहण करी, ईशानेंद्रे डाबी बाजुनी उपली दाढा ग्रहण करी, चमरेंद्रे जमणी बाजुनी नीचली दाढा ग्रहण करी अने बलींद्रे डाबी बाजुनी नीचली दाढा ग्रहण करी. बीजा देवोए यथायोग्य अंग तथा उपांगना अस्थि ग्रहण कर्यां. पछी तीर्थंकर विगेरेनी त्रणे चिताने स्थाने मोटा थूभ कर्या तथा निर्वाणनो महोत्सव कर्यो.

त्यारपछी शक्र इंद्रे नंदीश्वरद्वीपे जइ पूर्वदिशाना अंजनगिरि उपर जिनालयने विषे महोत्सव कर्यो, अने तेना चार लोकपाळ देवोए पूर्व अंजनगिरिनी पासे (फरता चोतरफ) रहेला चार दधिमुख नामना पर्वतोपर सिद्धालयने विषे महोत्सव कर्यो. ए ज प्रमाणे ईशानेंद्रे उत्तर दिशाना अंजनगिरि उपर अने तेना लोकपाळ देवोए तेनी चारे बाजुना चार दधिमुख पर्वतो उपर महोत्सव कर्यो. चमरेंद्रे दक्षिण दिशाना अंजनगिरि उपर अने तेना लोकपाळ देवोए तेनी चारबाजुना चार दधिमुख पर्वतो उपर महोत्सव कर्यो. तथा बलींद्रे पश्चिम दिशाना अंजनगिरि उपर अने तेना लोकपाळ देवोए तेनी चारे बाजुना चार दधिमुख पर्वतो उपर महोत्सव कर्यो.

त्यारपछी शक्र इंद्रे पोताना विमानमां जइ सुधर्मा सभामां रहेला माणवकस्तंभ उपर रहेला वृत्त समुद्गको (गोळ दाबडा) ने उतारी तमने सिंहासनपर मूकी तेमां रहेली जिनेश्वरनी दाढाओनुं पूजन कर्युं अने मल्ली जिननी दाढाओ तेमां मूकी. आ रीते सर्व देवोए कर्युं. (दरेक तीर्थंकरना निर्वाण कल्याणके आ प्रमाणे जाणवुं.)

मू०—एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि ॥ ७८ ॥

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवान महावीर स्वामीए आठमा ज्ञाताध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे, ए प्रमाणे में तमने कह्यो. ७८.

जो के अहीं मूळ सूत्रमां दृष्टांत अने दार्ष्टांतिकनी योजना करेली नथी, तो पण जाणी लेवी. अन्यथा ज्ञात (दृष्टांत) पणुं कही शकाय नहीं. ते आ प्रमाणे—

कोइ पण जीव उत्कृष्ट फळने साधनार उत्कृष्ट तप करे, उत्कृष्ट संयम पाळे, तो पण धर्मना विषयवाळी पण अल्प पण माया करी होय तो ते अनर्थने माटे थाय छे. जेम मल्ली स्वामीए महाबळना भवमां तीर्थंकर नाम कर्म बांध्युं तोपण तपने विषे अल्प पण माया करी, तो ते माया स्त्रीपणानुं कारण थइ.

। इति अष्टमं ज्ञाताध्ययनम् । ८ ।

इति प्रथमो विभागः

इति ज्ञाताधर्म कथांग भाषांतरयुक्त प्रथम विभाग ॥

॥ ॐ अर्हं ॥

छट्ठुं श्रीज्ञाताधर्म कथाङ्ग सूत्र.

(द्वितीय विभाग)

प्रथम श्रुतस्कंधना अध्ययन नवथी ओगणीश तथा बीजो श्रुतस्कन्ध संपूर्ण.

मूळ तथा गुजराती भाषान्तर सहित.

गुरुणीजी श्री लाभश्रीजीना उपदेशथी भाषान्तर कर्ता–शास्त्री जेठालाल हरिभाइ.

छपावी प्रसिद्ध करनार–श्री जैन धर्म प्रसारक सभा—भावनगर.

धी आनंद प्रिन्टींग प्रेसमां शा. गुलाबचंद लल्लुभाइए छाप्युं.

वीर सं. २४५६ विक्रम सं १९८६

प्रस्तावना.

आ ग्रंथना प्रथम विभागनी प्रस्तावनामां ग्रंथ संबंधी सर्व हकिकत कहेवामां आवी गइ छे, तेथी जिज्ञासुए ते प्रस्तावना वांची लेवी. उपरांत आ विभागनी अवशेष रहेली हकीकत नीचे प्रमाणे छे.—

नवमुं माकंदी नामनुं अध्ययन. पानुं १ थी २९.

कामभोगने विषे विरति न करनारने दुःखनी प्राप्ति थाय छे अने विरति करनारने सुखनी प्राप्ति थाय छे. आ विषयने दृढ करवा माटे आ माकंदी नामना सार्थवाहनुं ज्ञात—दृष्टांत आप्युं छे. तेमां चंपा नामनी नगरीने विषे माकंदी नामना सार्थवाहने जिनपालित अने जिनरक्षित नामना बे पुत्रो हता. ते बन्ने भाइओ अग्यार वखत समुद्र मार्गे जइ वेपार करी घणुं द्रव्य लइ आव्या हता, छतां लोभने लीधे बारमी वखत वेपार माटे समुद्र मार्गे गया. ते वखते दैवयोगे तेमनुं वहाण समुद्रमां डुबी गयुं, त्यारे ते बन्ने भाइओ पाटीयाने आधारे पासे रहेला रत्नद्वीपे जइ पहोंच्या. ते द्वीपमां ते द्वीपनी स्वामिनी देवी रहेती हती, तेणीए तेमने जोया, एटले देवीए आवीने तेमने कह्युं के—" मारी साथे तमे कामभोग भोगवता सुखे रहो, अन्यथा हुं तमोने मारी नांखीश. " आवा भयना वचन सांभळी तेमणे तेणीनुं वचन स्वीकार्युं अने तेणींनी साथे भोग भोगववा लाग्या. एकदा लवणसमुद्रना सुस्थित देवनी आज्ञाथी ते देवीने लवणसमुद्रमांथी तृणादिक कचरो काढी नांखवा माटे जवानी जरुर पडी, त्यारे तेणीए तेमने कह्युं

के— " हुं पाछो आवुं त्यां सुधी तमारे अहीं सर्वत्र इच्छा प्रमाणे क्रीडा करता रहेवुं, परंतु दक्षिण दिशाना वनखंडमां तमारे जवुं नहीं. केमके त्यां घोर विषवाळो एक सर्प छे, ते तमारो विनाश करशे. " एम कही ते देवी गइ. त्यारपछी ते बन्ने भाइओ देवीना कहेवा प्रमाणे त्यां सर्वत्र क्रीडा करवा लाग्या. एकदा दक्षिण दिशाना वनखंडमां तेमने जवानी इच्छा थइ, तेथी तेओ त्यां गया. त्यारे तेमने अत्यंत दुर्गंध आववा लाग्यो, आगळ जतां तेमणे एक मोटुं वधस्थान जोयुं अने त्यां सेकडो पुरुषोनां हाडकां विगेरे जोयां, तथा शूळी उपर परोवेला एक पुरुषने जोयो. ते जोइ भय पामी तेमणे ते पुरुषने तेनो वृत्तांत पूछयो, त्यारे तेणे कह्युं के— " हुं माकंदी नगरीनो रहीश अश्वनो वेपारी छुं, समुद्र मार्गे वेपार माटे जतां मारुं वहाण भांगवाथी एक पाटीयाने आधारे हुं अहीं आव्यो, अने रत्नद्वीपनी स्वामिनी देवीनी साथे भोग भोगवतो रह्यो. एकदा कांइक अल्प अपराधथी तेणीए मारी आ स्थिति करी छे, अने आ हाडकांनो समूह जे जोवामां आवे छे ते सर्व आ ज रीते तेणीए मारेला मनुष्योनां हाडकां छे. " आ प्रमाणे तेनुं वचन सांभळी ते बन्ने भाइओए भय पामी तेने पूछयुं के—" आ देवीथी छुटवानो कांइपण उपाय छे ? " त्यारे तेणे कह्युं के— " पूर्व दिशाना वनखंडमां अश्वना रूपने धारण करनार सेलक नामनो यक्ष वसे छे, तेनी पूजा करवाथी ते तमोने ते देवीथी छोडावी शकशे. " ते सांभळी ते बन्ने भाइओए ते यक्षनी आराधना करी छुटवानुं माग्युं, त्यारे ते यक्षे तेमने कह्युं के—" हुं मारी पीठपर चडावीने तमोने इच्छित स्थाने पहोंचाडुं, परंतु मार्गमां ते देवी पाछळथी आवीने तमने अनुकूळ अने प्रतिकूळ उपसर्ग करी फसावशे, तोपण तमारे मनथी पण तेणी उपर आसक्त थवुं नहीं, अने जो आसक्त थशो तो हुं तमने मार्गमां ज फेंकी दइश. " आ शरत ते बन्नेए स्वीकारी त्यारे ते बन्नेने पोतानी पीठपर बेसाडी ते यक्ष समुद्रनी उपर आकाशमार्गे चाल्यो. तेवामां ते देवी

पोताने स्थाने आवी तेमने नहीं जोवाथी अवधिज्ञानवडे जता जोइ तेमनी पाछळ आवी अनुकूळ अने प्रतिकूळ घणा उपसर्गो करवा लागी. छेवट जिनरक्षित तेणीना वचनथी फसायो एटले यक्षे तेने पीठपरथी पाडी नांख्यो, तेने देवीए शूळीपर परोवी जीव रहित कर्यो, अने जिनपालित फसायो नहीं, तेथी तेने ते यक्षे चंपानगरीमां पहोंचाड्यो. (अहीं देवीना करेला उपसर्ग बहु विस्तारथी आप्या छे, समुद्रनुं वर्णन तथा वहाण डुबवाना समयनुं वर्णन पण विस्तारथी आप्युं छे, ते वांचवा लायक छे.) छेवट जिनपालित मातपितादिकने मळी सुख भोगवी दीक्षा लइ सद्गति पामी भवांतरे मोक्षगतिने पाम्यो. कामभोगनी विरति करवाथी जिनपालित सुखी थयो अने विरति न करवाथी जिनरक्षित दुःखी थयो, ए आ अध्ययननो सार छे. आनो विशेष उपनय टीकाकारे विस्तारथी बताव्यो छे ते खास वांचवा लायक छे.

दशमुं चंद्र नामनुं अध्ययन. पानुं ३० थी ३२.

प्रमादीने गुणनी हानि तथा अप्रमादीने गुणनी वृद्धि थाय छे, ए बताववा माटे गौतमस्वामीना प्रश्नथी श्री महावीरस्वामीए चंद्रनुं दृष्टांत आप्युं छे. तेमां भगवाने जणाव्युं छे के—" कृष्णपक्षनी प्रतिपदानो चंद्र पूर्णिमाना चंद्रनी अपेक्षाए सर्व प्रकारे हीन छे, तेनी अपेक्षाए बीजनो चंद्र हीन छे, ए क्रमे हीन थतो थतो छेवट अमावास्यानो चंद्र सर्वथा प्रकाश रहित थाय छे, ते ज प्रमाणे प्रमादी साधु क्षमादिक यावत् ब्रह्मचर्यना गुणोवडे हीन थतां थतां छेवट क्षमादिक यावत् ब्रह्मचर्यना गुणथी सर्वथा भ्रष्ट थइ नाश पामे छे. तथा जेम अमावास्यानी अपेक्षाए शुदि पडवानो चंद्र वर्णादिकवडे अधिक थाय छे, तेनी अपेक्षाए बीजनो चंद्र अधिक थाय छे, ए क्रमे अधिक थतो थतो छेवट पूर्णिमाए संपूर्ण थाय छे. ते ज प्रमाणे अप्रमादी साधु क्षमादिक यावत् ब्रह्मच-

थैना गुणवडे अनुक्रमे अधिक थतां थतां छेवट सर्व गुणवडे परिपूर्ण थाय छे अने मोक्षने पामे छे.

अग्यारमुं दावद्रव नामनुं अध्ययन. पानुं २४ थी २८.

धर्मसंबंधी मार्गनी आराधना करनारने सुखनी प्राप्ति अने विराधना करनारने दुःखनी प्राप्ति जणाववा माटे गौतमस्वामीना प्रश्नथी श्री महावीरस्वामीए आराधक अने विराधकनुं स्वरूप कहेतां दावद्रवनुं दृष्टांत आप्युं छे. तेमां भगवान कहे छे के—" समुद्रने किनारे एक द्वीपने विषे दावद्रव नामना घणा वृक्षो अति सुशोभित रहेला छे. हवे ज्यारे ते द्वीपसंबंधी अमुक प्रकारना वायरा वाय छे त्यारे ते वृक्षोमांना घणा वृक्षो सुशोभित ज रहे छे, अने केटलाक वृक्षो जीर्ण जेवा थइ जाय छे; ते ज प्रमाणे साधु के साध्वी प्रव्रज्या लीधा पछी घणा साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकाना दुर्वचनने सहन करे अने अन्यतीर्थिकोना दुर्वचनने सहन न करे तो ते देशविराधक कहेवाय छे. तथा ज्यारे समुद्रसंबंधी अमुक प्रकारना वायरा वाय छे त्यारे घणा वृक्षो जीर्ण जेवां थइ जाय छे अने बहु थोडा वृक्षो सुशोभित रहे छे, ते ज प्रमाणे साधु के साध्वी घणा अन्यतीर्थिकोना अने गृहस्थीओना दुर्वचनने सहन करे अने साधु साध्वी विगेरेना दुर्वचनने सहन न करे ते देशआराधक कहेवाय छे. तथा ज्यारे द्वीपसंबंधी अने समुद्रसंबंधी कोइ पण वायरा वाता नथी त्यारे सर्व वृक्षो जीर्ण थइ जाय छे, ते ज प्रमाणे साधु के साध्वी सर्व अन्यतीर्थिको, गृहस्थो, अने साधुसाध्वी विगेरेना दुर्वचनने सहन न करे तो ते सर्वविराधक कहेवाय छे. तथा ज्यारे द्वीपसबंधी अने समुद्रसंबंधी बन्ने प्रकारना वायराओ अनुकूळ वाय छे त्यारे सर्व वृक्षो सुशोभित रहे छे, ते ज प्रमाणे जे साधु के साध्वी सर्व अन्यतीर्थिको अने स्वतीर्थिकोना दुर्वचनने सहन करे छे ते सर्वआराधक कहेवाय छे. आ दृष्टांतनो उपनय टीकाकारे विस्तारथी बताव्यो छे, ते

वांचवा लायक छे. सार ए छे के—प्रव्रज्या ग्रहण कर्या पछी सर्वथा आराधक थवुं पण विराधक थवुं नहीं.

बारमुं उदकज्ञात नामनुं अध्ययन. पानुं ३९ थी ५२.

स्वभावथी ज मलिन चित्तवाळा भव्य जीवो पण सद्गुरुनी सेवाथी चारित्रना आराधक थइ शके छे, ते उपर जळनुं दृष्टांत आप्युं छे. तेमां चंपानगरीमां जितशत्रु नामना राजाने सुबुद्धि नामनो मंत्री हतो. ते श्रावक हतो तेथी जीवादिक तत्त्वोने जाणनार हतो. ते नगरीनी बहार एक खाइमां अति दुर्गंधी जळ हतुं. हवे एकदा उत्तम भोजन कर्या पछी राजाए ते ते भोजनना वर्ण, गंध, रस, स्पर्श विगेरेनी अति प्रशंसा करी अने तेना परिवारे तेनी अनुमोदना करी, परतु सुबुद्धि मंत्री ते वखते मौन ज रह्यो, तेथी राजाए तेने आग्रहथी पूछ्युं त्यारे ते बोल्यो के—" हे स्वामी ! स्वभावथी ज केटलाक पुद्गलोना वर्ण, गंध विगेरे मनोहर होय छे तथा केटलाकना दुर्गंधवाळा होय छे अने केटलाक पुद्गलोना वर्णादिक प्रयोगने लीधे सारा तथा नरसा थइ शके छे. " आवुं मंत्रीनुं वचन सांभळी राजाए ते वचन सत्य मान्युं नहीं. पछी एकदा राजा पुरनी बहार फरवा गयो, त्यारे ते खाइना जळनी दुर्गंधथी ते पराभव पाम्यो, तेथी ते जळनी तेणे निंदा करी, तेनी सर्व परिवारे अनुमोदना करी. मंत्री मौन रह्यो. पछी राजाना पूछवाथी मंत्रीए प्रथमनी जेवो जवाब आप्यो. ते राजाए सत्य मान्यो नहीं. पछी राजाने तत्त्वनुं ज्ञान कराववा माटे ते मंत्रीए ते ज खाइनुं दुर्गंध जळ नवा माटीना घडामां गळीने नांख्युं, अने प्रयोगना वशथी घणे काळे तेने घणुं ज सुगंधी श्रेष्ठ बनाव्युं, अने पछी राजाना जळरक्षक द्वारा ते जळ राजाने पायुं. ते पीवाथी राजाए आश्चर्य पामी तेनी प्रशंसा करी. पछी जळरक्षकने राजाए पूछ्युं के—" आवुं स्वादिष्ट जळ तुं क्यांथी लाव्यो ? " तेणे जवाब आप्यो के—" मने सुबुद्धि मंत्रीए आप्युं छे. " त्यारे राजाए मंत्रीने पूछ्युं एटले तेणे

कह्युं के–" हे स्वामी ! ते ज खाइनुं ए जळ छे. " एम कही सर्व वृत्तांत तेणे राजाने कह्यो. त्यारे राजाए विश्वास नहीं आववाथी तेना कहेवा प्रमाणे प्रयोग करी खात्री करी, एटले तेणे मंत्री पासे धर्मनुं तत्त्व पूछयुं. मंत्रीए तेने धर्म पमाड्यो. छेवट राजा अने मंत्रीए प्रव्रज्या अंगीकार करी मोक्ष पद प्राप्त कर्युं, विगेरे हकिकत विस्तारथी कही छे. तात्पर्य ए छे के–खाइना जळनी जेम पापी प्राणी पण सद्गुरुना संगथी धार्मिष्ठ थाय छे.

तेरमुं दर्दुर ज्ञात नामनुं अध्ययन. पानुं ५३ थी ६६.

सद्गुरुना संगने अभावे गुणनी हानि थाय छे, ते उपर दर्दुरनुं दृष्टांत आप्युं छे. तेमां एकदा श्रीमहावीरस्वामीनी पासे दर्दुर नामनो देव सूर्याभ देवनी जेम नाट्यविधि करीने गयो. त्यारे गौतम गणधरना पूछवाथी भगवाने कह्युं के—"राजगृह नगरमां नंद नामनो मणीयार हतो. ते अमारो उपदेश सांभळी श्रावक थयो. त्यारपछी तेने साधुनो समागम नहीं थवाथी केटलेक काळे ते मिथ्यात्वीना परिचयथी मिथ्यात्वी थयो. एकदा ग्रीष्म ऋतुमां अठ्ठम तप करीने ते पौषधशाळामां रह्यो हतो, ते वखते तेने घणी तृषा लागी तेथी तेणे विपरीत भावना भावी, छेवट अठ्ठमनुं पारणुं कर्या पछी राजानी रजा लइने तेणे नगरनी बहार वाव, बगीचा, चित्रशाळा, भोजनशाळा, वैदकशाळा अने अलंकार सभा बनावी. तेनो उपयोग सर्व जनो करवा लाग्या अने नंद मणीयारनी यशकीर्ति गावा लाग्या. ते सांभळीने ते अत्यंत खुशी थवा लाग्यो. एकदा ते नंद मणीयारना शरीरमां सोळ रोग उत्पन्न थया. तेनी घणा प्रकारे वैद्योए चिकित्सा करी तोपण ते रोग रहित थयो नहीं, अने छेवट ते आर्तध्यानथी मरीने ते ज पोतानी करावेली वावमां देडकापणे उत्पन्न थयो. त्यां जळनो उपयोग करनारा घणा मनुष्योना मुखथी नंद मणीयारनी यशकीर्ति सांभळी तेने जाति-

स्मरण थयुं. तेथी तेणे मिथ्यात्वनो पश्चात्ताप करी देडकाना भवमां पण श्रावकव्रत पोतानी मेळे ग्रहण कर्युं. त्यारपछी एकदा हे गौतम ! ते राजगृह नगरनी बहार अमारुं समवसरण थयुं. ते वखते वावमां पाणी भरती स्त्रीओना मुखथी अमारुं आगमन सांभळी ते देडको हर्षथी अमने वांदवा माटे वावनी बहार नीकळ्यो. मार्गमां श्रेणिक राजाना अश्वना पग नीचे दबायो, ते वखते ते अत्यंत आराधना करी मरण पामी दर्दुरांक देव थयो छे. त्यांथी चवीने महाविदेह क्षेत्रमां उत्पन्न थइ चारित्र ग्रहण करी मोक्षपदने पामशे. इत्यादि सर्व हकीकत विस्तारथी आपी छे.

चौदमुं तेतलिपुत्र ज्ञात नामनुं अध्ययन. पानुं ७० थी ६४.

धर्मनी सामग्री मळवाथी ज धर्मनी प्राप्ति थाय छे, ते उपर तेतलिपुत्र नामना मंत्रीनुं दृष्टांत आप्युं छे. तेमां तेतलिपुर नगरमां कनकरथ राजा, तेने पद्मावती राणी हती, अने तेतलिपुत्र नामे मंत्री हतो. ते राजनीतिमां निपुण हतो. तेने पोट्टिला नामनी स्त्री हती. हवे ते राजा राज्यादिकमां अत्यंत आसक्त होवाथी तेना जे जे पुत्रो उत्पन्न थता हता ते सर्वने विकळ अंगवाळा करी राज्यने अयोग्य करतो हतो, तेथी पद्मावती राणीना संकेतथी तेणीना एक पुत्रने ते मंत्रीए गुप्त रीते पोताने घेर लइ जइ वृद्धि पमाड्यो अने सर्व कळामां निपुण कर्यो. तेनुं नाम कनकध्वज पाड्युं. हवे एकदा तेतलिपुत्र अमात्यने ते पोतानी पोट्टिला नामनी भार्या अनिष्ट थइ, तेथी ते वैराग्य पामी साध्वीओना परिचयथी श्राविका थइ, अने धर्ममां तत्पर थइ. केटलेक काळे पोट्टिलाए प्रव्रज्या लेवा माटे मंत्रीनी अनुज्ञा मागी, त्यारे तेणे कह्युं के—" तुं चारित्र पाळीने स्वर्गे जाय तो तुं त्यांथी अहीं आवीने जो मने केवळीभाषित धर्म पमाडे तो हुं तने रजा आपुं. " त्यारे ते पोट्टिला तेनुं वचन अंगीकार करी प्रव्रज्या ग्रहण करी, अंते समाधि

मरण करी स्वर्गे गइ. हवे एकदा कनकरथ राजा मरण पाम्यो त्यारे ते गुप्त राखेला कनकध्वज कुमारने प्रगट करी सर्व वृत्तांत जाहेर करवा पूर्वक राज्यपर स्थापन कर्यो. पछी ते कनकध्वज राजा पद्मावती माताना कहेवाथी तेतलिपुत्र अमात्यने पोताना अर्ध आसनपर बेसाडी तेनो अत्यंत आदर करवा लाग्यो. तेथी ते अमात्य भोगमां वधारे आसक्त थयो. तेने पोट्टिल देवे घणी रीते बोध आप्यो, परंतु ते प्रतिबोध पाम्यो नहीं. छेवट पोट्टिल देवे देवशक्तिथी राजाने तेनाथी विमुख कर्यो. ते जाणी भय पामीने तेतलिपुत्र घणे प्रकारे आपघात करवा प्रवर्त्यो. परंतु ते देवे देवशक्तिथी तेने मरवा दीधो नहीं, अने पछी ज्यारे ते थाक्यो त्यारे ते देवे घणी युक्तिथी तेने प्रतिबोध पमाड्यो. त्यारपछी ते मंत्रीने जातिस्मरण उत्पन्न थयुं, अने पूर्वभवनी प्रव्रज्या तेणे जोइ. तेथी तेणे प्रव्रज्या ग्रहण करी. अनुक्रमे केवळज्ञान प्राप्त कर्युं. इत्यादि.

पंदरमुं नंदीफळ नामनुं अध्ययन. पानुं ९५ थी १०३.

श्रीजिनेश्वरना उपदेशथी विषयोनो त्याग अने सत्य अर्थनी प्राप्ति थइ शके छे, ते विना थइ शकती नथी, एम जणाववा माटे नंदीफळनुं दृष्टांत आप्युं छे. तेमां चंपानगरीने विषे धन्य नामनो सार्थवाह हतो, ते अहिच्छत्रा नामनी नगरीमां वेपार करवा जवाने तैयार थयो, तेनी साथे तेना कहेवाथी घणा लोको जवाने तैयार थया, चालती वखते सार्थवाहे सर्व जनोने कह्युं के—" अहींथी जतां मार्गमां एक मोटी अटवी आवे छे, तेमां घणां नंदीवृक्षो पत्र, पुष्प, फळ विगेरेथी शोभता छे, तेना पत्रादिकने कोइ ग्रहण करशे, के तेनी छायामां कोइ विश्रांति लेशे, अर्थात् तेनो कांइ पण उपभोग करशे, तो तेने आरंभमां तो सुख जणाशे, पण परिणामे ते अकाळे ज मरण पामशे. तेथी ते नंदीवृक्षोने छोडीने बीजां वृक्षोना फळादिकनो उपयोग करवो अने तेमनी छा-

यानो ज आश्रय लेवो." आ प्रमाणे कही सर्व सार्थ सहित चालीने ते नंदीवृक्षोना वनमां आवी ते वृक्षोथी थोडे दूर सार्थनो निवेश करी फरीथी पण सर्वने ते ज सूचना आपी. तेथी ते सार्थमांना केटलाक जनोए तेना कहेवा प्रमाणे नंदीवृक्षोथी दूर रही अन्य वृक्षोनो उपभोग कर्यो, तेथी तेओ प्रथम तो सुखी न थया, पण परिणामे अत्यंत सुख पाम्या. ते ज प्रमाणे जे कोइ साधु साध्वी नंदीवृक्षो जेवा पांच इंद्रियोना विषयनो त्याग करे छे, तेओ परिणामे मोक्षसुख पामे छे. अने जेओए ते धन्य सार्थवाहना ते वचननो स्वीकार न करी ते नंदीवृक्षोनो उपभोग कर्यो, तेओ प्रारंभे तो कांइक सुखी थया, पण परिणामे मरण पाम्या. ते ज प्रमाणे जे कोइ साधु साध्वी नंदीवृक्षो जेवा विषयोमां लंपट थाय छे, तेओ संसारमां पर्यटन करे छे. पछी ते धन्य सार्थवाह अहिच्छत्रा नगरीमां जइ मोटो लाभ उपार्जन करी त्यांथी बीजा भांड लइ चंपानगरीमां पाछो आव्यो, अनुक्रमे कामभोगनुं सेवन करी दीक्षा लइ स्वर्गे जइ त्यांथी चवी महाविदेह क्षेत्रमां मनुष्य थइ चारित्र ग्रहण करी मोक्षपद पामशे. इत्यादि. आ कथानो उपनय टीकाकारे ठीक बताव्यो छे.

सोळमुं अपरकंका नामनुं अध्ययन. पानुं १०४ थी १९१.

विषयोनी मात्र इच्छा राखनार पण अनर्थने पामे छे, ते जणाववा माटे आ अपरकंकाना दृष्टांतमां द्रौपदीनी कथा विस्तारथी आपी छे. तेमां ते द्रौपदी पूर्वभवे नागश्री नामनी ब्राह्मणी हती. तेणीए एकदा कोइ धर्मरुचि नामना मुनिने कडवा तुंबडानुं शाक वहोराव्युं हतुं. ते लइने गुरु पासे आवी बतावतां गुरुना कहेवाथी ते शाक प्राणनो नाश करनार छे, एम जाणता छतां प्राणीओनी रक्षा करवाना हेतुथी ते मुनिए ते शाक परठव्युं नहीं, परंतु पोताना शरीरमां ज परठव्युं, अने समाधि मरणवडे सद्गतिने

पाम्या, छेवट ते मोक्षने पामशे. आ हकीकत नागश्रीना पतिना जाणवामां आवी, तेथी तेणे नागश्रीने तर्जना ताडना करवा पूर्वक पोताना घरमांथी काढी मूकी. त्यां ते लोकोनी अत्यंत हीलनाने पामी सोल रोगोथी पीडा पामी मरीने छठ्ठी नरके गइ, त्यांथी मत्स्यना भवमां आवी सातमी नरके गइ, फरीथी मत्स्य थइ फरीथी सातमी नरके गइ, त्यांथी मत्स्य थइ फरीथी छठ्ठी नरके गइ, त्यांथी उरगादिक तिर्यंचोना आंतरावाळा भव करी पांचमीथी यावत् पहेली नरके उत्पन्न थइ. अनुक्रमे बादर पृथ्वी विगेरे सर्व एकेंद्रियोना भवमां लाखो वार उत्पन्न थइने छेवट चंपानगरीमां सागरदत्त सार्थवाहनी सुकुमालिका नामनी पुत्री थइ, ते यौवन वयने पामी त्यारे तेणीने जिनदत्त सार्थवाहनो सागर नामनो पुत्र परण्यो, परंतु तेणीना शरीरनो स्पर्श खड्ग जेवो महा उग्र अने उष्ण लागवाथी सागरे तेणीनो तत्काळ त्याग कर्यो. तेथी दुःख पामेली ते सुकुमालिकाने तेना पिताए कोइ द्रमकने परणावी, तेणे पण तेणीना कठोर स्पर्शने लीधे तेनो त्याग कर्यो. छेवट गोपालिका नामनी साध्वीना संगथी ते सुकुमालिका धर्मनो बोध पामी पितानी आज्ञा लइ ते साध्वीनी शिष्या थइ. पछी ते सुकुमालिका साध्वी छठ्ठ अठ्ठमादिक उत्कृष्ट तप करवा लागी, अने गुरुणीनी आज्ञा नहीं छतां बहार उद्यानमां जइ आतापना लेवा लागी. एकदा ते उद्यानमां तेणीए देवदत्ता नामनी गणिकाने पांच युवान पुरुषो साथे क्रीडा करती जोइ, तेथी तेणीए तेवा प्रकारना भोग मळवानुं नियाणुं कर्युं, अने पछी ते चारित्रमां पण शिथिल थइ. छेवट अर्धमासनी संलेखना करी मरीने ईशान देवलोकमां देवी थइ. त्यांथी चवीने कांपील्य नगरमां द्रुपद राजानी द्रौपदी नामनी पुत्री थइ. ते युवावस्था पामी त्यारे द्रुपद राजाए तेनो स्वयंवर कर्यो. तेमां ते द्रौपदी युधिष्ठिर विगेरे पांचे पांडवोने वरी. एकदा जैनधर्ममां तत्पर होवाथी ते द्रौपदीए नारदनुं सन्मान कर्युं नहीं, तेथी ते नारदनी प्रेरणाथी धातकी खंडने विषे अपरकंका नामनी

नगरीना पद्मनाभ नामना राजाए देवनी सहायथी द्रौपदीने हरण करी पोताना अंतःपुरमां नांखी, परंतु द्रौपदी महासती होवाथी पद्मनाभ राजा तेणीने वश करी शक्यो नहीं. छेवट पांचे पांडवो कृष्णवासुदेवनी सहायथी पद्मनाभ राजानो पराजय करी द्रौपदीने पाछी लइ आव्या. प्रांते पांचे पांडवो प्रव्रज्या ग्रहण करी ते ज भवे सिद्धिपद पाम्या, अने द्रौपदी चारित्र ग्रहण करी ब्रह्मलोकमां देव थइ. त्यांथी महाविदेह क्षेत्रमां उत्पन्न थइ चारित्र ग्रहण करी सिद्ध थशे. आ कथा सुप्रसिद्ध छे, छतां आमां घणो विस्तार छे ते वांचवा लायक छे. अहीं तात्पर्य ए छे के–नागश्रीए मुनिने कडवी तुंबडीनुं शाक वहोराव्युं ते महा अनर्थने माटे थयुं, अने सुकुमालिकाए नियाणुं कर्युं तेथी द्रौपदीना भवमां तेनो मोक्ष थयो नहीं.

सतरमुं अश्वज्ञात नामनुं अध्ययन. पानुं १६२ थी २०८

इंद्रियोने वश न करवाथी अनर्थनी प्राप्ति थाय छे, ते बतावा माटे अश्वनुं दृष्टांत आप्युं छे. तेमां हस्तिशीर्ष नामना नगरने विषे कनककेतु नामे राजा हतो. ते नगरना केटलाक वहाणना वेपारीओ समुद्र मार्गे जतां मार्गमां दिशानी भूल थवाथी कालिक नामना द्वीपे जइ पहोंच्या. त्यां सुवर्ण, रत्न विगेरेनी खाणो हती. तथा त्यां उत्तम जातिना अश्वो हता, परंतु ते अश्वो मनुष्यनो गंध पण सहन करी शकता नहोता. तेथी ते वेपारीओने जोइ घणा दूर नाशी गया. पछी ते वेपारीओ सुवर्ण, रत्न विगेरेना वहाण भरी अनुक्रमे पोताना हस्तिशीर्ष नगरमां आव्या. त्यां तेओए कनककेतु राजाना पूछवाथी ते अश्वोनी आश्चर्यकारक हकीकत कही. ते सांभळी राजाए ते वेपारीओनी साथे ज पोताना सेवकोने ते अश्वो लाववा माटे मोकल्या. ते सेवको पांचे इंद्रियोने सुख उपजावे एवी उत्तम उत्तम वस्तुओ लइने कालिक द्वीपमां गया. त्यां अश्वोना रहेवाना स्थानकोने विषे तेओए ते सर्व वस्तुओ मुकी, अने

पोते गुप्त रीते संताइने रह्या. पछी फरता फरता ते अश्वो त्यां आव्या तेमांथी केटलाक अश्वो ते वस्तुओमां लुब्ध थया नहीं, तेथी तेओ पकडाया नहीं अने सुखी थया. ते ज रीते साधु अने साध्वीओ जेओ पांचे इंद्रियोना विषयोमां लुब्ध थता नथी तेओ मोक्ष सुखने पामे छे. तथा केटलाक अश्वो ते वस्तुओने विषे लुब्ध थया, तेथी तेमने राजाना सेवको पकडीने हस्तिशीर्ष नगरमां लाव्या. त्यां ते अश्वोने अश्वपाळोए विनीत कर्या, ते प्रसंगे तेमणे घणा प्रकारनां दुःख भोगव्यां. ते ज प्रमाणे साधु साध्वी पण जो पांच प्रकारना विषयोमां लुब्ध थाय तो ते घणा प्रकारनां सांसारिक दुःखने पामे छे. आ प्रमाणे दृष्टांत आप्या पछी छेवट पांचे इंद्रियोना विषयो उपर राग करनारा दुःखने पामे छे ए हकीकत जुदी जुदी बबे गाथाओवडे कही छे, अने राग नहीं पामनारा सुखने पामे छे ए हकीकत एक एक गाथा वडे कही छे. पछी एक एक इंद्रियने आश्री उपदेश तरीके एक एक गाथा कही छे, कुल वीशे गाथा अत्यंत मनन करवा लायक छे.

अढारमुं सुंसुमा ज्ञात नामनुं अध्ययन. पानुं २०९ थी २२६

लोभने वश थयेला अनर्थ पामे छे अने तेने वश नहीं थयेला अर्थने—सुखने पामे छे, ते बतावावा माटे सुंसुमानुं दृष्टांत आप्युं छे. तेमां राजगृह नगरने विषे धन्य नामना सार्थवाहने पांच पुत्रो उपर सुंसुमा नामनी एक पुत्री थइ हती. तेणीने बालक्रीडा करावनार चिलात नामनो दासपुत्र हतो, ते बीजा बाळकोने घणे प्रकारे दुःख देतो हतो, ते जाणी धन्य सार्थवाहे तेने काढी मूक्यो, त्यारे ते स्वच्छंदी थइ साते व्यसनमां आसक्त थयो. तेथी नगरना सर्व जनोए तेनाथी चौर्यादिकनी शंका पामी तेनो पराभव कर्यो, त्यारे ते त्यांथी नीकळी सिंहगुफा नामनी चोरपल्लीमां विजय नामना चोरसेनापतिने शरणे गयो, अने तेनो खड्ग धारण करनार थयो.

तेथी ते तेनी पासेथी चोरनी सर्व विद्याओ शीखी पापकार्यमां निपुण थयो. त्यारपछी अमुक वखते ते विजय चोरसेनापति मरण पाम्यो, त्यारे तेने ठेकाणे सर्व चोरोए चिलातने सेनापति नीम्यो. एकदा ते चिलात चोरसेनापतिए पोताना पांचसो चोरोने कह्युं के—" आपणे राजगृह नगरमां जइ त्यां धन्य सार्थवाहनुं घर लुंटीए, तेमां आवेलुं सर्व धन तमारे लेवुं अने तेनी पुत्री सुंसुमाने मारे लेवी. " आ रीते निश्चय करी ते सर्व धन्य सार्थवाहने घेर जइ पुष्कळ धन तथा सुंसुमाने लइ नीकळी गया. तेमनी पाछळ धन्य सार्थवाह पोताना पांचे पुत्रो अने कोटवाळ विगेरे राजसेवकोने साथे लइने गयो. तेमां नगरना आरक्षकोए चोरो पासेथी सर्व धन पाछुं खेची लीधुं, अने तेओ कृतार्थ थइ पाछा वळ्या, परंतु धन्य सार्थवाह तो पांचे पुत्रो सहित सुंसुमाने लेवा माटे चिलातनी पाछळ गयो, तेमने पाछळ आवता जोइ चिलात थाकी गयो, तेथी सुंसुमाने लइ जवा समर्थ थयो नहीं, त्यारे ते खड्ग वडे सुंसुमानुं मस्तक कापी ते मस्तक हाथमां लइने शीघ्रपणे नाठो. आगळ जतां तृषाथी पीडा पामेलो ते मरण पाम्यो. ते ज प्रमाणे जे कोइ साधु साध्वी आ क्षणिक औदारिक शरीरनी पुष्टिने माटे आहारादिक करे छे, ते सर्व साधु साध्वी विगेरेनी निंदाने पात्र थाय छे अने चिलात तस्करनी जेम दुःख पामे छे, तथा दीर्घ संसारमां पर्यटन करे छे.

हवे ते धन्य तथा तेना पुत्रो चिलातनी पाछळ दोडवाथी थाकी जइ क्षुधा तृषाथी पीडा पाम्या. एटले तेओ पाछा वळ्या अने ज्यां सुंसुमानुं शरीर पडयुं हतुं त्यां आव्या. तेने मरेली जोइ अत्यंत शोक करवा लाग्या. पछी धन्य सार्थवाहे अनुक्रमे सर्व पुत्रोने कह्युं के—"आवी क्षुधा तृषाथी पीडाता आपणे राजगृह नगरमां पहोंची शकशुं नहीं, तेथी तमे मने मारीने मांस अने रुधिरथी क्षुधा अने तृषानो विच्छेद करी सुखेथी घेर पहोंची जाओ. " ते वात ते पुत्रोए अंगीकार न करी. छेवट धन्ये कह्युं के—

" त्यारे आ सुंसुमाना शबने आपणे खाइने तथा तेना रुधिरनुं पान करीने स्वस्थ थइ घेर पहोंचीए." आ वात सर्वेए अंगीकार करी ते प्रमाणे कर्युं. पछी स्वस्थ थइ घेर गया. अनुक्रमे सुख भोगवी छेवटे धन्य सार्थवाह दीक्षा ग्रहण करी सद्गति पाम्यो. जेम आ धन्य विगेरेए शरीरनी पुष्टिने माटे सुंसुमाना देहनो आहार कर्यो नहोतो, मात्र राजगृह नगरमां पहोंचवा माटे ज आहार कर्यो हतो, ते ज प्रमाणे साधुसाध्वीए पण शरीरनी पुष्टिने माटे आहार करवो नहीं, मात्र सिद्धिपुरीमां जवा माटे ज आहार करवो, ए आ दृष्टांतनुं तात्पर्य छे. आनो विशेष उपनय टीकाकारे विस्तारथी बताव्यो छे, ते वाचवा योग्य छे.

ओगणीशमुं पुंडरीक नामनुं अध्ययन. पानुं २९७ थी २३८.

चिरकाळ पर्यंत चारित्र पाळीने पाछळथी जो ते मूकी दे तो तेने अनर्थनी प्राप्ति थाय छे अने अल्पकाळ पण चारित्रनुं पालन करे तो तेने अर्थनी प्राप्ति थाय छे, ते जणाववा माटे पुंडरीक अने कंडरीक ए बे भाइओनुं दृष्टांत आप्युं छे. तेमां पुंडरीकिणी नामनी नगरीमां महापद्म राजा हतो, तेने पुंडरीक अने कंडरीक बे पुत्रो हता. एकदा महापद्म राजाए पुंडरीकने राज्य सोंपी तथा कंडरीकने युवराज स्थापी प्रव्रज्या ग्रहण करी. अनुक्रमे महापद्म राजर्षि सिद्ध थया. त्यारपछी एकदा पुंडरीकिणी नगरीना उद्यानमां कोइ स्थविर मुनि पधार्या, तेमनी पासे देशना सांभळीने पुंडरीक राजा श्रावक थयो, अने कंडरीके राजाए निषेध कर्या छतां प्रव्रज्या ग्रहण करी. पछी तेणे अनुक्रमे अग्यार अंगनो अभ्यास कर्यो, परंतु अंतप्रांत आहार करवाथी तेने दाहज्वर प्रगट थयो. पछी ते स्थविर मुनि परिवार सहित विचरतां पुंडरीकिणीमां आव्या. त्यारे पुंडरीक राजाए गुरुनी आज्ञा लइ कंडरीक मुनिने पोतानी यानशाळामां राखी ते मुनिनी चिकित्सा करावी तेने साजा कर्या. केटलेक काळे राजानी रजा लइ स्थविर मुनिए विहार कर्यो, परंतु

कंडरीक मुनिए शिथिल आचारवाळा थवाथी विहार कर्यो नहीं. ते वखते राजाए तेने समजावी विहार कराव्यो. त्यारे केटलोक काळ गुरुनी साथे उग्र विहार करी फरीथी पडवाइ थइने ते कंडरीक मुनि एकला पुंडरीकिणी नगरीमां आव्या. तेने राजाए घणी रीते समजाव्यो, तोपण ते समज्यो नहीं, त्यारे ते पुंडरीक राजाए तेने राज्यपर स्थापन कर्यो अने पोते तेना चारित्रना उपकरण ग्रहण करी गुरुने वांदी चारित्र लइ पछी आहार करवानो अभिग्रह लइ चाल्या. अहीं कंडरीके घणा प्रकारनो अतिमात्र आहार कर्यो तेथी तथा अति जागरण करवाथी आहार परिणम्यो नहीं, तेथी अर्ध रात्रिने समये तेना शरीरमां वेदना थवा लागी अने पित्तज्वर प्रगट थयो, ते पीडाथी दुःख पामी तथा अशुभ ध्यान करी तत्काळ मरण पामी सातमी नरके गयो. ए ज रीते बीजा पण कोइ साधु के साध्वी दीक्षा लीधा पछी फरीथी जे कामभोगमां आसक्त थाय ते कंडरीकनी जेम दुःख पामी दुर्गतिने पामे छे. हवे ते पुंडरीक बे दिवसे गुरुनी पासे पहोंच्या, त्यां तेणे विधिपूर्वक गुरुनी पासे प्रव्रज्या ग्रहण करी, पछी छट्ठने पारणे निर्दोष आहार लावी तेणे पारणुं कर्युं. रात्रे धर्मध्यानमां घणो वखत रह्या. पण अंतप्रांत आहार करवाथी ते आहार तेने परिणम्यो नहीं, तेथी तेने वेदना तथा पित्तज्वर प्रगट थयो. छेवट आलोचन अने प्रतिक्रमण पूर्वक शुभध्यानवडे काळधर्म पामी सर्वार्थसिद्ध विमानमां देवपणे उत्पन्न थया. त्यांथी चवी महाविदेह क्षेत्रमां उत्पन्न थइ चारित्र ग्रहण करी सिद्धिपदने पामशे. ए ज रीते जे साधु साध्वी चारित्र लइने अल्पकाळ पण पालन करे छे तो ते पुंडरीकमुनिनी जेम सद्गतिने पामे छे.

आ रीते प्रथम श्रुतस्कंधना ओगणीश अध्ययनो छे.

अहीं प्रथम श्रुतस्कंध पूर्ण थाय छे.

बीजो श्रुतस्कंध. पानुं २३८ थी २६५

पहेला श्रुतस्कंधमां ज्ञात एटले धर्मकथाना दृष्टांतो आप्या हता एटले के दृष्टांतो आपीने तेना उपनय द्वारा धर्मनो अर्थ बताव्यो हतो, अने आ बीजा श्रुतस्कंधमां तो साक्षात् धर्मकथाओ वडे ज धर्मनो अर्थ कहेलो छे.

आ बीजा श्रुतस्कंधमां दश वर्गो पाडेला छे. तेमां असुरकुमारना इंद्र चमरेंद्रनी अग्रमहिषीओनो पहेलो वर्ग, बलींद्रनी अग्रमहिषीओनो बीजो वर्ग, असुरेंद्र विनाना बीजी नवनिकायना दक्षिण दिशाना भवनपतिना नव इंद्रोनी अग्रमहिषीओनो त्रीजो वर्ग, ते ज नव निकायना उत्तर तरफना नव इंद्रोनी अग्रमहिषीओनो चोथोवर्ग, दक्षिण दिशाना वानमंतर देवोना इंद्रोनी अग्रमहिषीओनो पांचमो वर्ग, उत्तर दिशाना वानमंतर देवोना इंद्रोनी अग्रमहिषीओनो छठ्ठो वर्ग, सूर्यनी अग्रमहिषीओनो सातमो वर्ग, चंद्रनी अग्रमहिषीओनो आठमो वर्ग, शक्रइंद्रनी अग्रमहिषीओनो नवमो वर्ग, अने ईशानेंद्रनी अग्रमहिषीओनो दशमो वर्ग.

वर्ग १ लो—चमरेंद्रने काली, राजी, रजनी, विद्युत अने मेघा ए नामनी पांच महिषीओ छे, तेथी ते नामना पांच अध्ययन पहेला वर्गमां छे. तेमां काली नामना पहेला अध्ययनमां काली नामनी देवी चमरचचा राजधानीमां कालावतंसक नामना भवनमां काल नामना सिंहासनपर सर्व परिवार सहित बेठी हती, तेटलामां तेणे अवधिज्ञानवडे राजगृह नगरमां गुणशील नामना चैत्यमां समवसरेला श्रीमहावीरस्वामीने जोया, तरत ज तेमने वंदना करी सूर्याभ देवनी जेम सर्व परिवार सहित श्रीमहावीरस्वामीनी पासे आवी. पछी सूर्याभनी जेम एकसो आठ कुमार अने एकसो आठ कुमारीओने पोताना हाथमांथी काढीने प्रभुपासे नाट्यविधि करीने ते काळी देवी पोताने स्थाने गइ, त्यारपछी गौतमस्वामीए भगवानने पूछयुं के—" हे भगवान ! आ काळी देवीने आटली

मोटी ऋद्धि शी रीते प्राप्त थइ ? " त्यारे भगवाने तेनो पूर्वभव कह्यो. तेमां काळ नामनो गाथापति, तेनी काळश्री नामनी स्त्री अने तेमनी काळी नामनी पुत्री हती. ते मोटी उम्मरनी थइ त्यांसुधी कुमारी ज हती, तेथी ते वृद्धकुमारी कहेवाती हती. एकदा तेणे श्रीपार्श्वनाथ स्वामी पासे धर्म सांभळी वैराग्य पामी मातापितानी रजा लइ प्रव्रज्या अंगीकार करी. ते सामायिकादिक अग्यार अंगने भणी समितिगुप्तिवाळी थइ. त्यार पछी केटलेक काळे ते शबळ चारित्रवाळी थइ, तेथी ते शरीरना अवयवोने वारंवार धोवा लागी अने सर्व बेसवा सुवानी क्रिया पाणी छांटीने ज करवा लागी। तेनी गुरुणीए तेने घणे प्रकारे समजावीने ते कार्यथी निवारी अने आलोचना लेवा कह्युं छतां ते समजी नहीं. छेवट सर्व साध्वीओए हीलना पूर्वक तेणीनो त्याग कर्यो. तेथी ते जुदा उपाश्रयमां रही शौच करवा लागी. आ रीते तेणीए घणा वर्षो सुधी चारित्र पर्याय पाळ्यो. छेवट ते आचरणनी आलोचना अने प्रतिक्रमण कर्या विना अनशनवडे मरण पामीने आ काळी देवीपणे उत्पन्न थइ छे. तेनी अढी पल्योपमनी स्थिति छे, त्यांथी चवी महाविदेह क्षेत्रमां उत्पन्न थइ सिद्धपदने पामशे.

आ ज प्रमाणे बीजा चार अध्ययनो ते ते देवीना नामनां जाणवां. सर्व हकीकत काळी देवीनी जेम जाणवी. मात्र पूर्व भवमां नगरी, मातपिता विगेरेनां नाम जुदां जुदां छे, ते सर्व संक्षेपथी आप्यां छे.

वर्ग २ जो—शुंभा १, निशुंभा २, रंभा ३, निरंभा ४ अने मदना ५. आ पांच अग्रमहिषीओ बलींद्रनी छे. तेमनां नामनां पांच अध्ययनो काळी देवीनी सदृश ज कह्यां छे. मात्र पूर्वभवना नगरादिक जुदा जुदा छे.

वर्ग ३ जो—आ वर्गमां दक्षिण दिशाना भवनपतिना नव इंद्रोनी ५४ अग्रमहिषीओना चोपन अध्ययन छे. तेमां धरणेंद्रनी

अग्रमहिषीओ इला १, सतेरा २, सौदामिनी ३, इंद्रा ४, धना ५ अने विद्युता ६. आ छना छ अध्ययन. आ प्रमाणे बीजा वेणुदेव विगेरे आठ इंद्रोनी छ छ अग्रमहिषीओनां छ छ अध्ययनो होवाथी कुल चोपन अध्ययनो छे.

वर्ग ४ थो—आ वर्गमां पण उत्तर दिशाना नव इंद्रोनी ५४ अग्रमहिषीओना चोपन अध्ययनो छे. तेमां भूतानंद इंद्रनी अग्रमहिषीओ रुचा १, सुरुचा २, रुचांशा ३, रुचकावती ४, रुचकांता ५ अने रुचप्रभा ६, ए छ छे, तेना छ अध्ययनो छे. ए ज प्रमाणे बीजा आठ इंद्रोनी छ छ अग्रमहिषीओ होवाथी ते ते नामनां छ छ अध्ययनो होवाथी कुल चोपन अध्ययनो जाणवा.

वर्ग ५ मो—दक्षिण दिशाना वानमंतरना आठ इंद्रोनी कमला विगेरे बत्रीश जुदा जुदा नामनी इंद्राणीओनां नामनां बत्रीश अध्ययनो छे. ते बत्रीश देवीनां नामो आपेलां छे.

वर्ग ६ ट्ठो—उत्तर दिशाना वानमंतरना आठ इंद्रोनी ते ज रीते उपर जणावेला नामनी ज बत्रीश अग्रमहिषीओनां नामनां बत्रीश अध्ययनो छे.

वर्ग ७ मो—सूर्यनी अग्रमहिषीओ सूरप्रभा १, आतपा २, अर्चिमाली ३ अने प्रभंकरा ४. आ चारना नामनां चार अध्ययनो छे.

वर्ग ८ मो—चंद्रनी अग्रमहिषीओ चंद्रप्रभा १, दोषीनाभा २, अर्चिमाळी ३ अने प्रभंकरा ४. आ चारना नामनां चार अध्ययनो छे.

वर्ग ९ मो—शक्रइंद्रनी अग्रमहिषीओ पद्मा १, शिवा २, सती ३, अंजू ४, रोहिणी ५, नवमिका ६, अचला ७ अने अप्सरा ८. आ आठ नामना आठ अध्ययन छे.

वर्ग १० मो—ईशानेंद्रनी अग्रमहिषीओ कृष्णा १, कृष्णाराजी २, रामा ३, रामरक्षिता ४, वसु ५, वसुगुप्ता ६, वसुमित्रा ७, अने वसुंधरा ८. आ आठ नामनां आठ अध्ययनो छे.

कुल मळीने असुरकुमारना बे इंद्रनी १०, बाकीना नव निकायना १८ इंद्रोनी १०८, वानव्यंतरना १६ इंद्रोनी ६४, सूर्य चंद्रनी ८ अने शक्रेंद्र तथा ईशानेंद्रनी मळी १६ कुल २०६ इंद्राणीओना २०६ अध्ययनो दश वर्गमां एकंदर छे.

आ रीते बीजा श्रुतस्कंधमां संक्षेपथी धर्मकथाओ कही छे. तेमां काळी देवीना जेवो ज सर्वेनो अधिकार भळामणरूपे छे. तेथी आ बीजो श्रुतस्कंध घणो ज संक्षिप्त छे.

आ ग्रंथ छपाववा विगेरे बाबत विषे सर्व हकीकत प्रथम विभागनी प्रस्तावनामां सविस्तर लखी छे तेथी अहीं पिष्टपेषण करवुं उचित नथी.

इति शम्.

संवत १९८६
कार्तिक शुक्ल पञ्चमी.

श्री जैन धर्म प्रसारक सभा.
भावनगर.

श्री ज्ञाताधर्म कथाङ्ग सूत्रम्–भाग १ जो.

अथ नवमुं माकंदी नामनुं अध्ययन.

आठमा अध्ययनमां मायावाळाने थतो अनर्थ बताव्यो. हवे आ नवमा अध्ययनमां भोगोने विषे विरति न करे तेने अनर्थ अने विरति करे तेने अर्थ प्राप्त थाय छे ते कहेवाय छे. ए प्रमाणे संबंधवाळुं आ अध्ययन शरु थाय छे.

मू०—" जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, नवमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? "।

अर्थ—जंबूस्वामीए सुधर्मास्वामीने पूछयुं के–" हे भगवान ! श्रमण भगवंत यावत् मोक्षने पामेला महावीर स्वामीए आठमा ज्ञाताध्ययननो आ प्रमाणे (उपर कह्या प्रमाणे) अर्थ कह्यो छे, तो हे भगवान ! नवमा अध्ययननो श्रमण भगवान यावत् मोक्षने पामेला महावीरस्वामीए क्यो अर्थ कह्यो छे ? "

१

मू०—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं चंपा नामं नयरी होत्था । तीसे णं चंपाए नयरीए कोणिए नामं राया होत्था ।

अर्थ—सुधर्मास्वामी बोल्या—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये चंपा नामनी नगरी हती, ते चंपा नगरीमां कोणिक नामे राजा हतो.

मू०—तत्थ णं चंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए पुण्णभद्दे नामं चेइए होत्था ।

अर्थ—ते चंपा नगरीनी बहार उत्तर पूर्व (ईशान) दिशामां पूर्णभद्र नामनुं चैत्य हतुं.

मू०—तत्थ णं माकंदी नामं सत्थवाहे परिवसति, अड्ढे । तस्स णं भद्दा नामं भारिया होत्था ।

अर्थ—ते चंपा नगरीमां माकंदी नामनो सार्थवाह रहेतो हतो. यावत् ते आढ्य-ऋद्धिमान हतो. ते सार्थवाहने भद्रा नामनी भार्या हती.

मू०—तीसे णं भद्दाए भारियाए अत्तया दुवे सत्थवाहदारया होत्था । तं जहा—जिणपालिए य जिणरक्खिए य ।

अर्थ—ते भद्रा भार्याने पोताथी उत्पन्न थयेला बे सार्थवाह पुत्रो हता. तेमनां नाम आ प्रमाणे—जिनपालित अने जिनरक्षित.

मू०—तते णं तेसिं मागंदियदारगाणं अण्णया कयाई एगयओ इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—

अर्थ—त्यारपछी ते माकंदीना बन्ने पुत्रो एकदा कदाचित् एकठा मळ्या, ते वखते तेमने परस्पर आवा प्रकारनी वार्तानो आलाप संलाप थयो.—

मू०—" एवं खलु अम्हे लवणसमुद्दं पोयवहणेणं एक्कारस वारा ओगाढा, सव्वत्थ वि य णं लद्धट्ठा कयकज्जा अणहसमग्गा पुणरवि नियघरं हव्वमागया, तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! दुवालसमं पि लवणसमुद्दं पोतवहणेणं ओगाहित्तए " त्ति कट्टु अण्णमण्णस्सेतमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एवं वयासी—

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे आपणे पोतवहन (वहाण) वडे अग्यार वार लवणसमुद्रमां प्रवेश कर्यो छे. ते सर्व वखते आपणे धननी प्राप्ति करी छे, करवा लायक कार्य कर्यां छे, तथा अविघ्नपणे फरीथी पोताने घेर शीघ्रपणे आव्या छीए. तो हजु पण आपणे हे देवानुप्रिय ! बारमी वार पण पोतवहन (वहाण) वडे लवणसमुद्रमां प्रवेश करवो योग्य छे. " आ प्रमाणे विचार करीने ते बन्नेए परस्पर आ अर्थ (विचार) ने अंगीकार कर्यो. अंगीकार करी ज्यां माता पिता हता, त्यां आव्या, आवीने आ प्रमाणे बोल्या.—

मू०—" एवं खलु अम्हे अम्मयाओ ! एक्कारस वारा तं चेव जाव निययं घरं हव्वमागया, तं इच्छामो णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा दुवालसमं लवणसमुद्दं पोयवहणेणं ओगाहित्तए " ।

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे हे माता पिता ! अमे अग्यार वार समुद्रमां प्रवेश करी यावत् पोताने घेर शीघ्र आव्या छीए. तो हे माता पिता ! अमे तमारी अनुज्ञा पाम्या सता बारमी वखत लवण समुद्रमां पोतवहन (वहाण) वडे प्रवेश करवाने इच्छीए छीए. "

मू०—तते णं ते मागंदियदारए अम्मापियरो एवं वदासी—" इमे ते जाया ! अज्जग जाव परिभाएत्तए तं अणुहोह ताव जाया ! विउले माणुस्सए इड्ढीसक्कारसमुदए, किं भे सपच्चवाएणं निरालंबणेणं लवणसमुद्दोत्तारेणं ? एवं खलु पुत्ता ! दुवालसमी जत्ता सोवसग्गा यावि भवति, तं मा णं तुब्भे दुवे पुत्ता ! दुवालसमं पि लवणसमुद्दं जाव ओगाहेह, मा हु तुब्भं सरीरस्स वावत्ती भविस्सति ।

अर्थ—त्यारपछी ते माकंदीपुत्रोने मातापिताए आ प्रमाणे कह्युं—" हे पुत्रो ! आ तमारा आर्यक-बापदादाए

उपार्जन करेलुं यावत् घणुं धन छे, तेने प्रथम तमे हे पुत्रो ! विपुल मनुष्य संबंधी ऋद्धि सत्कारना समुदायवाळा भोगने भोगवो. विघ्नवाळा (कष्टवाळा) अने आलंबन विनाना लवणसमुद्रना उतरवाथी (प्रयाण करवाथी) शुं फळ छे ? ए प्रमाणे निश्चे हे पुत्रो ! बारमी यात्रा कदाच उपसर्ग सहित पण होय छे. तेथी हे पुत्रो ! तमो बन्ने बारमी वखत लवणसमुद्रमां यावत् प्रवेश न करो, अने तेम करवाथी तमारा शरीरनी व्यापत्ति (विनाश–पीडा) न थाओ."

मू०–तते णं मागंदियदारगा अम्मापियरो दोच्चं पि तच्चं पि एवं वदासी–" एवं खलु अम्हे अम्मयाओ ! एक्कारस वारा लवणसमुद्दं ओगाहित्तए " ।

अर्थ—त्यारपछी ते माकंदीना पुत्रोए मातापिताने बीजी वार त्रीजी वार आ प्रमाणे कह्युं–" आ प्रमाणे निश्चे हे मातापिता ! अमे अग्यार वार लवणसमुद्रमां प्रवेश कर्यो. " विगेरे कही बारमी वार पण लवणसमुद्रमां प्रवेश करवानुं कह्युं. (पोतानी तीव्र इच्छा बतावी.)

मू०–तते णं ते मागंदीदारए अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य आघवित्तए वा पन्नवित्तए वा ताहे अकामा चेव एयमट्ठं अणुजाणित्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते माकंदीना पुत्रोने तेमना मातापिता ज्यारे घणी रीते सामान्य कहेवावडे अने विशेष कहेवावडे कहेवा माटे अने समजाववा माटे समर्थ न थया, त्यारे ते मातापिताए इच्छा विना पण तेमना ते अर्थनी अनुज्ञा आपी.

मू०— तते णं ते मागंदियदारगा अम्मापिऊहिं अब्भणुण्णाया समाणा गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च जहा अरहण्णगस्स जाव लवणसमुद्दं बहूइं जोअणसयाइं ओगाढा ॥ ७९ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते माकंदीना पुत्रो मातापिताए अनुज्ञा आप्या सता गणिम, धरिम, मेय अने परिछेद्य एवा चारे प्रकारनां करीयाणां वहाणमां भरी अर्हन्नकनी जेम यावत् लवण समुद्रमां घणा सेंकडो योजन सुधी गया. ७९.

मू०—तते णं तेसिं मागंदियदारगाणं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढाणं समाणाणं अणेगाइं उप्पाइयसयातिं पाउब्भूयातिं ।

अर्थ—त्यारपछी ते माकंदीना बन्ने पुत्रो अनेक सेंकडो योजन लवण समुद्रमां गये सते तेमने अनेक सेंकडो उत्पात उत्पन्न थया.

मू०—तं जहा—अकाले गज्जियं जाव थणियसद्दे कालियवाते तत्थ समुट्ठिए ।

अर्थ—ते आ प्रमाणे—अकाळे गर्जारव थवा लाग्या, यावत् अकाळे स्तनित शब्द[1] थवा लाग्या, तथा प्रतिकूळ प्रचंड वायु वावा लाग्यो.

[1] उंडाणमा गर्जारव थाय ते.

मू०—तते णं सा णावा तेणं कालियवातेणं आहुणिज्जमाणी आहुणिज्जमाणी संचालिज्जमाणी संचालिज्जमाणी संखोभिज्जमाणी संखोभिज्जमाणी सलिलतिक्खवेगेहिं आयट्टिज्जमाणी आयट्टिज्जमाणी कोट्टिमंसि करतलाहते विव तेंदूसए तत्थेव तत्थेव ओवयमाणी य उप्पयमाणी य, उप्पयमाणीविव धरणीयलाओ सिद्धविज्जाविज्जाहरकन्नगा, ओवयमाणीविव गगणतलाओ भट्ठविज्जा विज्जाहरकन्नगा, विपलायमाणीविव महागरुलवेगवित्तासिया भुयगवरकन्नगा, धावमाणीविव महाजणरसियसद्दवित्तत्था ठाणभट्ठा आसकिसोरी, णिगुंजमाणीविव गुरुजणदिट्ठावराहा सुयणकुलकन्नगा, घुम्ममाणीविव वीचीपहारसततालिया, गलियलंबणाविव गगणतलाओ, रोयमाणीविव सलिलगंठिविप्पइरमाणघोरंसुवाएहिं णववहू उवरतभत्तुया, विलवमाणीविव परचक्करायाभिरोहिया परममहब्भयाभिद्दुया महापुरवरी, झायमाणीविव कवडच्छोमप्पओगजुत्ता जोगपरिव्वाइया, णिसासमाणीविव महाकंतारविणिग्गयपरिस्संता परिणयवया अम्मया, सोयमाणीविव तवचरणखीणपरिभोगा चयणकाले देववरवहू, संचुण्णियकट्ठकूवरा, भग्गमेढिमोडियसहस्समाला, सूलाइयवंक-

परिमासा, फलहंतरतडतडेंतफुट्टंतसंधिवियलंतलोहकीलिया सव्वगवियंभिया, परिसडियरज्जुविसरंतसव्वगत्ता, आमगमल्लगभूया, अकयपुण्णजणमणोरहोविव चिंतिज्जमाणगुरुई, हाहाकयकण्णधारनावियवाणियगजणकम्मगारविलविया, णाणाविहरयणपणियसंपुण्णा, बहूहिं पुरिससएहिं रोयमाणेहिं कंदमाणेहिं सोयमाणेहिं तिप्पमाणेहिं विलवमाणेहिं एगं महं अंतोजलगयं गिरिसिहरमासायइत्ता संभग्गकूवतोरणा मोडियझयदंडा वलयसयखंडिया करकरस्स तत्थेव विद्दवं उवगया ।

अर्थ—त्यारपछी ते नावा प्रतिकूळ वायुवडे वारंवार कंपवा लागी, संचाल्यमाना–एक स्थानथी बीजे स्थाने लइ जवावडे वारंवार चलायमान थवा लागी, संक्षोभ्यमाना–नीचे डुबी जवाथी वारंवार क्षोभ पामवा लागी, अथवा तेमां रहेला लोको क्षोभ पामवा लाग्या, जळना तीक्ष्ण वेगवडे वारंवार आक्रम्यमाणा--अथडावा लागी, हस्ततळवडे भूमितळपर पछाडेला दडानी जेम ते ते ठेकाणे नीचे पडवा लागी तथा उंचे उछळवा लागी, जेने विद्या सिद्ध थइ होय एवी विद्याधरनी कन्या पृथ्वीतळ उपरथी उंचे उडे तेम ते नावा उंचे उछळवा लागी, विद्याथी भ्रष्ट थयेली विद्याधरनी कन्या जेम आकाशतळथी नीचे पडे तेम ते नावा उंचेथी नीचे पडवा लागी, मोटा गरुडना वेगथी त्रास पामेली श्रेष्ठ नागनी कन्या जेम भयथी नाशी जाय तेम ते नावा आम तेम नासवा लागी, अश्वशाळारूप पोताना स्थानथी भ्रष्ट थयेली (छूटी पडेली) अश्वनी वछेरी मोटा लोकोना रसित (कोलाहल) ना शब्दथी त्रास पामी आम तेम दोडे तेम ते

नावा श्राम तेम दोडवा लागी. मातपितादिक गुरुजनोए जेनो दुराचाररूपी अपराध जोयो होय एवी सज्जनना कुळनी कन्यानी जेम ते नावा अस्पष्ट गुम गुम शब्द करवा लागी, सैंकडो प्रहारथी ताडना करेली स्त्रीनी जेम तरंगोना सैंकडो प्रहारथी ताडन करेली ते नावा थरथरवा लागी, जेम डींटथी छुटी गयेलुं फळ अवलंबन नहीं होवाथी आकाशथी नीचे पडे तेम ते आलंबन रहित नावा उंचेथी नीचे पडवा लागी, जेनो भर्तार मरी गयो होय एवी नवी परणेली वहु जेम मोटा अश्रुपातथी रुदन करे तेम पाणीथी भींजायेली गांसडीओमांथी झरती जळनी धारारूपी मोटा अश्रुपातवडे ते नावा रुदन करवा लागी. (जाणे रुदन करती होय तेम देखावा लागी.) परचक्रना राजाए (शत्रु राजाए) रुंधेली अने तेथी करीने अत्यंत मोटा भयने पामेली मोटी श्रेष्ठ नगरी (नगरीना जनो) नी जेम ते नावा जाणे विलाप करती होय तेम जणावा लाग्युं. कपटना (वेष बदलाना) मिषवडे करेला प्रयोग (बीजाने छेतरवाना व्यापार) थी युक्त एवी समाधि योगने साधती परिव्राजिका जेम ध्यान करे तेम आ नावा कोइ वखत एक क्षण वार स्थिर रहेवाथी जाणे ध्यान करती होय एवी देखावा लागी. मोटा कांतार (अरण्य) मांथी चालीने नीकळेली अने थाकी गयेली मोटी उम्मरनी माता (पुत्रवाळी स्त्री) जेम मोटा निःश्वास (श्वासोच्छ्वास) मूके तेम ते नावा पण नीचे गमन करवारूप जाणे निःश्वास मूकती होय अथवा तेमां रहेला लोकोना निःश्वासथी नावा पण निःश्वास मूकती होय एम देखावा लागी. तप-

१ नावा (नावाना जनो) पण तरंगादिकथी चोतरफ रुंधायेली होवाथी महा भय पामेली हती. अथवा तेमां रहेला लोको विलाप करता हता, तेना उपचारथी नावा पण विलाप करती होय एम जणातुं हतुं.

श्रण एटले ब्रह्मचर्यादिक तपश्चरणना फळरूप स्वर्गना भोग जेना क्षीण थया होय एवी श्रेष्ठ देववधू (देवी) पोताना च्यवन समये जेम शोक करे तेम ते नावामां रहेला लोको शोक करता होवाथी ते नावा पण जाणे शोक करती होय तेम देखावा लागी. ते नावाना काष्ठ (पाटीया विगेरे) तथा तेनो मुख भाग चूर्ण थइ गयो, तेनी मेंढी[1] भांगी गइ, तेनो माळ[2] सहसा–अकस्मात् भांगी गयो अथवा सहस्र माणसोना आधाररूप माळ भांगी गयो, ते नावा पर्वतना शिखरपर चडी जवाथी जाणे शूळा उपर चडावी होय एवी देखावा लागी. ते नावाने जळनो स्पर्श वांको[3] थवा लाग्यो. एक बीजा साथे जडेला पाटीयाओना आंतरामां तडतड शब्द सहित तेनी सांधो फाटवा लागी. तेनी लोढानी खीलीओ नीकळी गइ, ते नावाना सर्व अवयवो छुटा छुटा थइ गया, तेना पाटीआनी साथे बांधेली दोरीओ सडीने तुटी गइ, तेथी ते नावाना सर्व अवयवो वीखराइ गया, ते नावा काचा सरावलानी[4] जेवी थइ गइ, पुण्य रहित माणसना मनोरथनी जेम ते नावा मोटा विचार करवा लायक थइ पडी एटले के निष्पुण्य माणस 'आ मारो मनोरथ शी रीते पूर्ण थशे ?' एम विचार थवाथी ते मनोरथ दुःसाध्य होवाथी मोटो थइ पडे छे तेम 'आ नावा आ आपत्तिने शी रीते तरी जशे ?' एवो विचार थवाथी ते आपत्तिनो निस्तार दुःसाध्य होवाथी ते नावा संबंधी कल्पना मोटी थइ पडी, ते नावामां रहेला कर्णधारो,[5] नाविको,[6]

१ सर्व पाटीयाना आधाररूप एक मोटुं मुख्य लाकडुं मेढी कहेवाय छे. २ माणसोने बेसवानो उपलो भाग. ३ वहाण वांकुं थवाथी जळ स्पर्श पण वांको कहेवाय छे. ४ जळना स्पर्शवडे क्षणवारमां विलय थइ जाय माटे. ५ खलासीओनो नायक. (केप्टन). ६ नाव चलावनार खलासीओ.

वणिकजन अने नोकरो हाहारव करवा पूर्वक विलाप करवा लाग्या, ते नावा विविध प्रकारना रत्नो अने करीयाणाओवडे भरेली हती, आवी आपत्ति समये घणा सेंकडो मनुष्यो रुदन करवा लाग्या–रोवाना शब्द सहित अश्रु मूकवा लाग्या, शोकथी मोटो आक्रंद करवा लाग्या, शोक करवा लाग्या–मनमां खेद पामवा लाग्या, तिप्यमान–भयथी परसेवो अने लाळने झरवा लाग्या, विलाप करवा लाग्या–आर्त (दुःखी) शब्द करवा लाग्या, ते वखते जळनी अंदर रहेला एक मोटा पर्वतना शिखरने पामीने–शिखर साथे अथडाइने ते नावानो कूपस्तंभ[1] अने तोरण भांगी गया, तेना ध्वजदंड मरडाइने भांगी गया, ते नावाना वळीयाना आकारवाळा सेंकडो कडका थइ गया, तथा कडकड एवा शब्द करवा पूर्वक ते नावा त ज ठेकाणे विलय–विनाश पामी. (डुबी गइ.)

मू०–तते णं तीए णावाए भिज्जमाणीए बहवे पुरिसा विपुलपडियभंडमायाए अंतोजलम्मि णिमज्जावि यावि होत्था ॥ ७९ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते नावा भांगीने बुडी गइ ते वखते तेमां रहेला घणा माणसो, घणां रत्न, भांड अने करीयाणां सहित जळने विषे बुडी गया. ७९.

मू०–तते णं ते मागंदियदारगा छेया दक्खा पत्तट्ठा कुसला मेहावी णिउणसिप्पोवगया बहुसु

१ जेना पर सढ चडाववामा आवे छे ते स्तंभ.

पोतवहणसंपराएसु कयकरणा(णा)लद्धविजया अमूढा अमूढहत्था एगं महं फलगखंडं आसादेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते माकंदीना बन्ने पुत्रो छेक-चतुर, दक्ष—डाह्या, प्राप्तार्थ—अर्थने पामेला, कुशळ, बुद्धिमान, निपुण शिल्पने पामेला, घणा पोतवहनना युद्ध जेवा भयंकर कार्यमां कृतकृत्य (कृतार्थ) थयेला, विजयने पामेला, मूढता रहित अने हस्तकळा (लघुलाघवी कळा) मां अमूढ (चतुर) हता, तेथी तेओए वहाणनुं एक मोटुं पाटीयुं प्राप्त कर्युं. (पकडी लीधुं)

मू० जंसि च णं पदेसंसि से पोयवहणे विवन्ने, तंसि च णं पदेसंसि एगे महं रयणद्दीवे णामं दीवे होत्था, अणेगाइं जोअणाइं आयामविक्खंभेणं अणेगाइं जोअणाइं परिक्खेवेणं णाणादुमसंडमंडिउद्देसे सस्सिरीए पासातीए दंसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ।

अर्थ—जे प्रदेशने विषे ते पोतवहन (वहाण) भांगीने डुबी गयुं, ते प्रदेशने विषे–तेनी नजीकमां एक मोटो रत्नद्वीप नामनो द्वीप हतो. ते अनेक योजन लांबो पहोळो अने अनेक योजननी तेनी परिधि (घेराव) हती, तेना प्रदेशो विविध वृक्षोना वनोथी मंडित–शोभित हता, ते द्वीप लक्ष्मीवाळो, प्रसन्न करनारो, जोवा लायक, मनोहर रूपवाळो अने प्रतिरूप एटले दरेक जोनार प्रत्ये आनंद आपनार हतो.

मू०—तस्स णं बहुमज्झदेसभाए तत्थ णं महं एगे पासायवडेंसए होत्था अब्भुग्गयमूसियए जाव सस्सिरीभूयरूवे पासातीए दंसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ।

अर्थ—ते द्वीपना बहुमध्यदेश भागमां—ते ठेकाणे एक मोटो प्रासादावतंसक (उत्तम प्रासाद) हतो, तेनी उंचाइ प्रगट अने उज्वळ हती, यावत् ते लक्ष्मी सहित, प्रसन्न करनारो, जोवा लायक, मनोहर रूप (देखाव) वाळो अने दरेक जोनारने आनंद आपे तेवो हतो.

मू०—तत्थ णं पासायवडेंसए रयणद्दीवदेवया नामं देवया परिवसति. पावा चंडा रुद्दा खुद्दा साहसिया ।

अर्थ—ते प्रासादावतंसकने विषे रत्नद्वीपदेवता नामनी देवी रहेती हती, ते पापिष्ठ, चंडा—घणी पापणी, रौद्रा—भयंकर, क्षुद्रा—तुच्छ स्वभाववाळी अने साहसिक हती. (आ देवीनां विशेषणो विजय चोरनी जेवां जाणी लेवां.)

मू०—तस्स णं पासायवडिंसयस्स चउद्दिसिं चत्तारि वणसंडा किण्हा किण्होभासा ।

अर्थ—ते प्रासादावतंसकनी चारे दिशाए चार वनखंड हता, ते श्यामवर्णवाळा अने श्यामकांतिवाळा विगेरे वर्णनवाळा हता.

मू०—तते णं ते मागंदियदारगा तेणं फलयखंडेणं उवुज्झमाणा उवुज्झमाणा रयणदीवंतेणं संवूढा यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते माकंदीना पुत्रो ते पाटीयाना खंडवडे वहन करातां वहन करातां (तरता तरता) रत्नद्वीपनी

समीपे आवी पहोंच्या.

मू०—तते णं ते मागंदियदारगा थाहं लभंति, लभित्ता मुहुत्तंतरं आससंति, आससित्ता फलगखंडं विसज्जेंति, विसज्जित्ता रयणद्दीवं उत्तरंति, उत्तरित्ता फलाणं मग्गणगवेसणं करेंति, करित्ता फलातिं गेण्हंति, गेण्हित्ता आहारेंति आहारित्ता णालिएराणं मग्गणगवेसणं करेंति, करित्ता नालिएराइं फोडेंति, फोडित्ता नालिएरतेल्लेणं अण्णमण्णस्स गत्ताइं अब्भंगेंति, अब्भंगित्ता पोक्खरणीतो ओगाहिंति, ओगाहित्ता जलमज्जणं करेंति, करित्ता जाव पच्चुत्तरंति पच्चुत्तरित्ता पुढविसिलापट्टयंसि निसीयंति, निसीतित्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया चंपानयरिं अम्मापिउआपुच्छणं च लवणसमुद्दोत्तारं च कालियवायसमुत्थणं च पोतवहणविवत्तिं च फलयखंडस्स आसायणं च रयणदीवुत्तारं च अणुचिंतेमाणा अणुचिंतेमाणा ओहतमणसंकप्पा जाव झियायेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते माकंदीना बन्ने पुत्रो स्ताघने पाम्या, पामीने मुहूर्त सुधी आश्वासन पाम्या. आश्वासन लइ पाटीयाना खंडने मूकी दीधो. मूकी दइ रत्नद्वीपमां उतर्या. उतरी फळोनुं मार्गण गवेषण (शोध) करवा लाग्या. शोध

१ ताग—थोडुं उंडुं पाणी.

करी फळो ग्रहण कर्यां, ग्रहण करी ते फळो खाधां, खाइ नाळीयेरनुं मार्गण गवेषण कर्युं. करीने नाळीयेर मेळवी ते फोड्यां, फोडीने नाळीयेरना तेलवडे परस्परना शरीरने अभ्यंग कर्युं. अभ्यंग करी वावने विषे अवगाहन कर्युं. अवगाहन करी जळ-मज्जन (स्नान) कर्युं. स्नान करीने वावमांथी बहार नीकळ्या. नीकळीने एक पृथ्वीनी शिलारूप पाट उपर बेठा. बेसीने शांत थया, विसामो लीधो, अने श्रेष्ठ सुखासने बेठा. त्यां बेठा बेठा चंपानगरी, मातापितानी पासे रजा मागवी, लवण समुद्रने उतरवुं, प्रतिकूळ वायुनुं उत्पन्न थवुं, पोतवहन (वहाण) नुं भांगीने डूबी जवुं, पाटीयानो खंड प्राप्त थवो, अने छेवट रत्नद्वीपमां आववुं. आ सर्वनो विचार करता करता मननी चिंतावडे संकल्प विकल्प करता यावत् ध्यान करवा लाग्या. (ते बधो विचार करवा लाग्या.)

मू०—तते णं सा रयणद्दीवदेवया ते मागंदियदारए ओहिणा आभोएति आभोइत्ता असिफलगवग्गहत्था सत्तट्ठतालप्पमाणं उड्ढं वेहासं उप्पयति, उप्पइत्ता ताते उक्किट्ठाए जाव देवगईए वीइवयमाणी वीइवयमाणी जेणेव मागंदियदारए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता आसुरुत्ता मागंदियदारए खरफरुसनिट्ठुरवयणेहिं एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते रत्नद्वीपदेवताए अवधिज्ञानवडे ते माकंदीना पुत्रोने त्यां आवेला जोया. जोइने ढाल अने तरवारवडे व्यग्र (सहित) हाथवाळी ते सात आठ ताल प्रमाण उंचे आकाशमां उडी, उडीने ते उत्कृष्ट विगेरे विशेषण-

वाळी यावत् देवगतिवडे चालती चालती ज्यां ते माकंदीना पुत्रो हता त्यां आवी. आवीने तत्काळ क्रोध पामी ते माकंदीना पुत्रोने घणा आकरा, कठोर अने निष्ठुर वचनवडे आ प्रमाणे कहेवा लागी:—

मू०—हं भो मागंदियदारया ! अप्पत्थियपत्थिया ! जति णं तुब्भे मए सद्धिं विउलातिं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरह तो भे अत्थि जीविअं, अहण्णं तुब्भे मए सद्धिं विउलातिं भोगभोगाइं भुंजमाणा नो विहरह तो भे इमेणं नीलुप्पलगवलगुलिय जाव खुरधारेणं असिणा रत्तगंडमंसुयाइं माउयाहिं उवसोहियाइं तालफलाणीव सीसाइं एगंते एडेमि "।

अर्थ—" हे माकंदीना पुत्रो ! अप्रार्थित (मृत्यु) नी प्रार्थना करनारा ! जो तमे मारी साथे विपुल कामभोगने भोगवता सता रहेशो, तो तमारुं जीवित छे-तमे जीवशो अने जो तमे मारी साथे विपुल कामभोग भोगवता नहीं रहो (भोगवशो नहीं) तो आ काळा कमळ, भेंशना शींगडा अने गळी विगेरेना जेवी काळी यावत् छुरनी धार जेवी तीक्ष्ण तरवारवडे गंडस्थळने तथा दाढी मूछना केशने राता करनार अने माउया एटले उपला ओष्ठना वाळ (मूछ) वडे शोभता अथवा माउया एटले माताए के सखीओए केशविगेरेने समारीने सुशोभित करेला तालवृक्षना फळनी जेवा तमारा मस्तकने छेदीने एकांतमां नांखी दइश. "

मू०—तते णं ते मागंदियदारगा रयणदीवदेवयाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म भीया

संजायभया करयल जाव एवं वयासी।

अर्थ—त्यारपछी ते माकंदीना पुत्रो रत्नद्वीप देवतानी पासेथी आ अर्थ सांभळीने मनमां धारीने भय पाम्या, तेमने भय उत्पन्न थयो, एटले तेमणे बे हाथ जोडी आ प्रमाणे कह्युंः—

मू०—" जं णं देवाणुप्पिया ! वतिस्ससि तस्स आणाउववायवयणनिद्देसे चिट्ठिस्सामो "।

अर्थ—" हे देवानुप्रिया ! जे कांइ पण तमे कहेशो एटले के तारा दासना पण दास थवानुं कहेशो के ' आ अमुकनी तमारे सेवा करवी ' तेनी पण आज्ञा, उपपात-सेवा, वचन-नियम रहित आदेश अने निर्देश-कार्य करवामां अमे तत्पर रहेशुं. " (अर्थात् तमारी पोतानी आज्ञादिक करवामां तो अमे तत्पर होइए तेमां शुं कहेवुं ?)

मू०—तते णं सा रयणद्दीविदेवया ते मागंदियदारए गेण्हाति, गेण्हित्ता जेणेव पासायवडिंसए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असुभपोग्गलावहारं करेति, करित्ता सुभपोग्गलपक्खेवं करेति, करित्ता पच्छा तेहिं सद्धिं विउलातिं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहराति। कल्लाकल्लिं च अमयफलातिं उवणेति ॥ ८० ॥

अर्थ—त्यारपछी ते रत्नद्वीप देवताए ते माकंदीना पुत्रोने ग्रहण कर्या, ग्रहण करीने ज्यां पोतानो प्रासादावतंसक

हतो त्यां आवी. आवीने तेमना शरीरमांथी अशुभ (अशुचि) पुद्गलोनो अपहार कर्यो–दूर कर्या. करीने शुभ पुद्गलोनो प्रक्षेप कर्यो. करीने पछी तेमनी साथे विपुल कामभोग भोगवती रहेवा लागी. अने हमेशां तेमने अमृत जेवां स्वादिष्ट फळो खावा माटे आपवा लागी. ८०.

मू०–तते णं सा रयणद्दीवदेवया सक्कवयणसंदेसेणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा लवणसमुद्दे तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टियव्वे त्ति जं किंचि तत्थ तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा कयवरं वा असुइं पूतियं दुरभिगंधमचोक्खं तं सव्वं आहुणिय आहुणिय तिसत्तखुत्तो एगंते एडेयव्वं ति कट्टु णिउत्ता ।

अर्थ—त्यारपछी एकदा ते रत्नद्वीप देवताने शक्र इंद्रना वचनना संदेशाथी (हुकमथी) सुस्थित नामना लवण समुद्रना अधिपति देवे कह्युं के–" तारे एकवीश वार लवण समुद्रने विषे फेरो फरवानो छे, ते एटला माटे के तेमां जे कांइ तृण, पर्ण. काष्ठ, कचरो, अशुचि (अपवित्र वस्तु), पूति (कोही गयेल वस्तु), दुर्गंधवाळी वस्तु विगेरे जे कांइ अपवित्र वस्तु होय ते सर्व एकवीश वार डोळी डोळीने (हलावी हलावीने–मथन करी करीने) तेमांथी काढी एकांतमां नांखी देवुं." एम कहीने ते देवीने ते कार्यमां नीमी–जोडी दीधी.

मू०–तते णं सा रयणदीवदेवया ते मागंदियदारए एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते रत्नद्वीपदेवताए ते माकंदीना पुत्रोने आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—" एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! सक्कवयणसंदेसेणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा तं चेव जाव णिउत्ता ।

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! शर्केद्रना वचनना संदेशाथी (हुकमथी) सुस्थित नामना लवण समुद्रना अधिपति देवे ते ज प्रमाणे यावत् (उपर जणावेला काम माटे) मने नीमी छे.

मू०—तं जाव अहं देवाणुप्पिया ! लवणसमुद्दे जाव एडेमि ताव तुब्भे इहेव पासायवडिंसए सुहंसुहेणं अभिरममाणा चिट्ठह ।

अर्थ—तेथी करीने हे देवानुप्रियो ! ज्यां सुधी हुं लवण समुद्रमांथी यावत् सर्व कचरो दूर नांखी दउं, ने पाछी अहीं आवुं त्यां सुधी तमे अहीं ज प्रासादावतंसकने विषे सुखे सुखे रमता रहेजो.

मू०—जति णं तुब्भे एयंसि अंतरंसि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे पुरच्छिमिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह ।

अर्थ—जो कदाच तमे तेटला वियोगना समयमां उद्वेग पामो, उत्सुक (मारा माटे उतावळा) थाओ, अथवा तमने कांइ उपद्रव (भय विगेरे) प्राप्त थाय, तो तमे पूर्व दिशा तरफना वनखंडमां जजो.

मू०—तत्थ णं दो ऊऊ सया साहीणा, तं जहा—पाउसे य वासारत्ते य। तत्थ उ—

कंदलसिलिंधदंतो, णिउरवरपुप्फपीवरकरो।
कुडयज्जुणणीवसुरभिदाणो पाउसउऊगयवरो साहीणो ॥ १ ॥

तत्थ य—सुरगोवमणिविचित्तो दद्दुरकुलरसियउज्झररवो।
वरहिणविंदपरिणद्धसिहरो वासारत्तो उऊपव्वतो साहीणो ॥ २ ॥

अर्थ—ते पूर्वदिशाना वनमां बे ऋतुओ सर्वदा स्वाधीन—विद्यमान छे. एटले के ते ते ऋतुओमां उत्पन्न थता अमुक अमुक वनस्पति अने पुष्पो विगेरे सदा विद्यमान होय छे. ते आ प्रमाणे—प्रावृष एटले अषाढ अने श्रावण मासनी ऋतु तथा वर्षारात्र एटले भाद्रपद अने आश्विननी ऋतु. (आ बे ऋतुनुं रूपक अलंकारवडे बे गीतिछंद आपी वर्णन करे छे.) तेमां—

प्रावृष ऋतुरूपी श्रेष्ठ हाथी (ते वनमां सदा) स्वाधीन छे. ते ऋतुरूपी हाथीने कंदल—नवी लताओ अने सिलिंध्र—भूमिफोडारूपी दांत छे अथवा कंदल प्रधान सिलिंध्र वृक्षो के जे प्रावृष ऋतुमां ज पुष्पित थाय छे अने जेनां पुष्पो श्वेत होय छे तेथी पुष्पवाळा ज ते वृक्षोरूपी दांत छे, तेने निउर वृक्षना श्रेष्ठ पुष्पोरूपी जाडी सुंढ छे, कुंटज अर्जुन अने नीपवृक्षोनां पुष्पोरूपी तेने सुगंधी मदवारि छे. आ सर्व वृक्षो प्रावृष ऋतुमां ज पुष्पित थाय छे अने ते आ वनमां सदा पुष्पित रहे छे तेथी ते ऋतुने स्वाधीन कही छे. १.

वळी ते वनमां वर्षाऋतुरूपी पर्वत सदा स्वाधीन–विद्यमान छे. केमके ते इंद्रगोपरूपी पद्मरागादिक मणिओवडे विचित्र वर्णवाळो छे, देडकाओना समूहना शब्दरूपी तेमां निर्झरणानो शब्द थाय छे. तथा तेना शिखरं उपर मयूरोना समूहो विचरे छे. २.

मू०–तत्थ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! बहुसु वावीसु य जाव सरसरपंतियासु बहूसु आलीघरएसु य मालीघरएसु य जाव कुसुमघरएसु य सुहंसुहेणं अभिरममाणा विहरेज्जाह ।

अर्थ—ते पूर्व दिशाना वनमां तमे हे देवानुप्रियो ! घणी वावोने विषे यावत् घणा सरोवरोनी श्रेणिने विषे, घणा लतामंडपोने विषे, घणा वल्लीना मंडपोने विषे, यावत् घणा पुष्प मंडपोने विषे सुखे सुखे रमता रमता रहेजो.

मू०–जति णं तुब्भे एत्थ वि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे उत्तरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह ।

अर्थ—जो तमे त्यां पण उद्वेग पामो, मारा समागम माटे उत्सुक थाओ, अथवा भय पामेला थाओ, तो तमे उत्तर दिशाना वनखंडमां जजो.

---

१ वर्षाऋतुमां उत्पन्न थता राता कीडा, इंद्रनी गाय. २ वनना पक्षे वृक्षना शिखर जाणवा.

मू०—तत्थ णं दो ऊऊ सया साहीणा, तं जहा—सरदो य हेमंतो य ।

तत्थ उ—सणसत्तवण्णकउओ नीलुप्पलपउमनलिणसिंगो ।
सारसचक्कवायरवितघोसो सरयऊऊगोवती साहीणो ॥ १ ॥
तत्थ य—सियकुंदधवलजोण्हो कुसुमितलोद्धवणसंडमंडलतलो ।
तुसारदगधारपीवरकरो हेमंतऊऊससी सया साहीणो ॥ २ ॥

अर्थ—ते उत्तर दिशाना वनखंडमां बे ऋतुओ सदा स्वाधीन—विद्यमान छे. ते आ प्रमाणे—शरद—कार्तिक मार्गशीर्ष अने हेमंत—पोष माघ. तेमां—शरद ऋतुमां—

शरद ऋतुरूपी गोपति—वृषभ सदा स्वाधीन छे, एटले के सण अने सप्तच्छद वृक्षोनां पुष्पोरूपी तेने ककुद (खांध) छे, नीलोत्पल पद्म अने नलिनरूपी तेनां शींगडां छे, तथा सारस अने चक्रवाक पक्षीओना शब्दरूपी तेनो घोष—नाद छे.

तेमां—हेमंत ऋतुमां—हेमंत ऋतुरूपी चंद्र ते वनमां सदा स्वाधीन—विद्यमान छे, एटले के श्वेत कुंदपुष्प जेवी धोळी तेनी ज्योत्स्ना छे, पुष्पवाळा लोध्रना वनखंडरूपी तेनुं मंडलतल (बिंब) छे, तथा तुषारना जळबिंदुनी धारारूपी तेना स्थूळ किरणो छे.

मू०—तत्थ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! वावीसु य जाव विहरेज्जाह ।

अर्थ—ते उत्तरना वनखंडमां हे देवानुप्रियो ! तमे वावो विगेरेने विषे यावत् क्रीडा करजो.

मू०—जति णं तुब्भे तत्थ वि उव्विग्गा वा जाव उस्सुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे अवरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह ।

अर्थ—जो कदाच तमे त्यां (उत्तर वनखंडमां) पण उद्वेग पामो के यावत् मने मळवा माटे उत्सुक थाओ, तो तमे पश्चिम दिशाना वनखंडमां जजो.

मू०—तत्थ णं दो ऊऊ साहीणा, तं जहा—वसंते य गिम्हे य, तत्थ उ—

सहकारचारुहारो किंसुयकण्णियारासोगमउडो ।
ऊसियतिलगबउलायवत्तो वसंतऊऊणरवती साहीणो ॥ १ ॥

तत्थ य—पाडलसिरीससलिलो मलियावासंतियधवलवेलो ।
सीयलसुरभिअनिलमगरचरिओ गिम्हऊऊसागरो साहीणो ॥ २ ॥

अर्थ—ते पश्चिमना वनखंडने विषे बे ऋतुओ सदा स्वाधीन-विद्यमान छे. ते आ प्रमाणे—वसंत-फाल्गुन चैत्र, अने ग्रीष्म—वैशाख जेठ, तेमां वसंत ऋतुमां ते वनने विषे—

वसंत ऋतुरूपी राजा सदा स्वाधीन–विद्यमान छे एटले के ते वसंतरूपी राजाने आंबाना पुष्पोरूपी मनोहर हार छे, किंशुक (खाखरा), कर्णिकार (करेण), अने अशोकनां पुष्पोरूपी तेने मुकुट छे, तथा उंचा तिलक अने वकुलनां पुष्पोरूपी तेने छत्र छे. १.

वळी तेमां–ग्रीष्म ऋतुमां ते वनने विषे–ग्रीष्म ऋतुरूपी सागर सदा स्वाधीन–विद्यमान छे, एटले के तेमां पाटल अने शिरीषनां पुष्पोरूपी जळ रहेलुं छे, मल्लिका अने वासंतिकानां पुष्पोरूपी तेनी उज्वळ–श्वेत वेळा छे तथा तेमां शीतळ अने सुगंधी वायु मगरनुं आचरण करे छे.

मू०–जति णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! तत्थ वि उव्विग्गा उस्सुया भवेज्जाह, तओ तुब्भे जेणेव पासायवडिंसए तेणेव उवागच्छेज्जाह, उवागच्छित्ता ममं पडिवालेमाणा पडिवालेमाणा चिट्ठेज्जाह । मा णं तुब्भे दक्खिणिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह ।

अर्थ—जो कदाच हे देवानुप्रियो ! तमे त्यां पण उद्वेग पामो के मारा समागम माटे उत्सुक थाओ, तो तमारे ज्यां आ प्रासादावतंसक छे त्यां ज पाछा आववुं. आवीने मारी राह जोता राह जोता रहेवुं. परंतु तमो दक्षिण दिशाना वनखंडमां जशो नहीं–तमारे जवुं नहीं. केमके—

मू०–तत्थ णं महं एगे उग्गविसे चंडविसे घोरविसे महाविसे अइकायमहाकाए जहा तेयनि-

सग्गे मसिमहिसामूसाकालए नयणविसरोसपुण्णे अंजणपुंजनियरप्पगासे रत्तच्छे जमलजुयलचंचलचलंतजीहे धरणियलवेणिभूए उक्कडफुडकुडिलजडिलकक्खडवियडफडाडोवकरणदच्छे लोगाहारधम्ममाणधमधमेंतघोसे अणागलियचंडातिव्वरोसे समुहिं तुरियं चवलं धमधमंतदिट्ठीविसे सप्पे य परिवसति । मा णं तुब्भं सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ "।

अर्थ—त्यां एटले ते दक्षिण दिशाना वनखंडमां एक मोटो दृष्टिविष जातिनो सर्प रहे छे. तेनुं विष उग्र एटले दुर्जर छे, तेनुं विष प्रचंड एटले शीघ्रपणे व्यापी जाय तेवुं छे, तेनुं विष घोर छे एटले परंपराए करीने हजार मनुष्योनो घात करे तेवुं छे, तेनुं विष मोटुं छे एटले कोइ जीवनुं शरीर जबूद्वीप जेवडुं होय तेना आखा शरीरमां पण व्यापी जाय एवडुं मोटुं छे, बीजा सर्पोना शरीरने ओळंगी जाय एवी तेनी मोटी काया छे, 'जहा तेय निसग्गे'—बीजां विशेषणो गोशालकना चरित्रमां कह्या छे ते प्रमाणे जाणवां. ते आ प्रमाणे—मेश (काजळ), महिष (पाडो) अने मूषा (सोनुं रुपुं तपाववानुं पात्र विशेष), तेनी जेवो ते सर्प काळो छे, नेत्रना विषवडे अने क्रोधवडे ते भरेलो छे, काजळना ढगलाना समूह जेवो ते प्रकाशे छे, तेनां नेत्रो रातां छे, तेनी साथे रहेली अति चपळ बे जिव्हानुं युगल अति चंचळ छे, ते पृथ्वीतळरूपी स्त्रीना वेणीदंड जेवो देखाय छे, वळी ते सर्प उत्कट—बीजा बळवानवडे पण नाश न करी शकाय तेवो, स्फुट—प्रयत्नथी करेलो

१ ते सर्प काळो लांबो, चकचकीत अने पाछळना भागमां रहेलो छे तेथी वेणीदंड जेवो लागे छे.

होवाथी प्रगट, कुटिल-वक्र, जटिल-सिंहनी जेवी केसरावाळो, कर्कश-कठोर अने विकट-विस्तारवाळो फटाटोप करवामां चतुर छे. लुहारनी भट्ठीमां धमाता लोढानी जेम ते धमधम शब्दने निरंतर करे छे, तेनो अति तीव्र रोष कोइथी निवारी शकाय तेवो नथी, तथा कुतरीना भसवानी जेम शीघ्रता अने चपळताथी ते धमधम शब्द कर्या करे छे. आवा ते दृष्टि-विष सर्पथी तमारा शरीरनो विनाश न थाओ."

मू०—ते मागंदियदारए दोच्चं पि तच्चं पि एवं वदाति, वदित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणाति, समोहणित्ता ताए उक्किट्ठाए लवणसमुद्दं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टेउं पयत्ता यावि होत्था॥८१॥

अर्थ—आ प्रमाणे ते रत्नद्वीपनी अधिष्ठायक देवताए ते माकंदीना पुत्रोने बे वार त्रण वार कह्युं, कहीने उत्तर वैक्रियसमुद्घातवडे तेणे समुद्घात कर्यो—विकुर्वणा करी. समुद्घात करीने ते तेवा प्रकारनी यावत् उत्कृष्ट—उतावळी देव संबंधी गतिए करीने लवण समुद्रने विषे एकवीश वार परिवर्तन करवाने (फरवाने) माटे प्रवृत्त—प्रयत्नवाळी थइ. ८१.

मू०—तए णं ते मागंदीयदारया तओ मुहुत्तंतरस्स पासायवर्डिसए सइं वा रतिं वा धितिं वा अलभमाणा अण्णमण्णं एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते माकंदीना पुत्रो देवीना गया पछी एक मुहूर्तमां ज ते प्रासादावतंसकने विषे स्मृतिने—व्याकुळ

चित्त थवाथी सुखवाळा स्मरणने, रतिने–चित्तनी रमणताने के धृतिने–चित्तनी स्वस्थताने नहीं पामता सता परस्पर आ प्रमाणे बोल्या—

मू०—" एवं खलु देवाणुप्पिया ! रयणद्दीवदेवया अम्हे एवं वदासी–'एवं खलु अहं सक्कवयणसंदेसेणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा जाव वावत्ती भविस्सइ '। तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! पुरच्छिमिल्लं वणसंडं गमित्तए "। अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तत्थ णं वावीसु य जाव अभिरममाणा आलीघरएसु य जाव विहरंति ।

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! रत्नद्वीप देवताए आपणने आ प्रमाणे कह्युं छे के–' आ प्रमाणे निश्चे शक्रेंद्रना वचनना संदेशवडे सुस्थित नामना लवण समुद्रना अधिपति देवे मने आ कार्य सोंप्युं छे त्यांथी मांडीने यावत् दक्षिण दिशाना वनमां जशो तो तमारा शरीरनो विनाश थशे विगेरे. ' तेथी हे देवानुप्रिय ! आपणे पूर्व दिशाना वनखंडमां जवुं उचित छे. " आ प्रमाणे बन्ने भाइओए परस्परना आ विचारने अंगीकार कर्यो. अंगीकार करीने ज्यां पूर्व दिशानुं वनखंड हतुं त्यां आव्या, आवीने ते वनने विषे वाव विगेरेमां यावत् क्रीडा करता सता वल्लीना मंडप विगेरे स्थळोमां यावत् विचरवा लाग्या.

मू०—तते णं ते मागंदियदारगा तत्थ वि सइं वा जाव अलभमाणा जेणेव उत्तरिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तत्थ णं वावीसु य जाव आलीघरएसु य विहरंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते माकंदीना पुत्रो त्यां पण स्मृतिने यावत् शांतिने न पाम्या, त्यारे ज्यां उत्तर दिशानुं वनखंड हतुं त्यां गया. त्यां जइने ते वनमां वाव विगेरेने विषे यावत् क्रीडा करता सता वल्लीना मंडप विगेरेने विषे विचरवा लाग्या.

मू०—तते णं ते मागंदियदारया तत्थ वि सतिं वा जाव अलभमाणा जेणेव पच्चत्थमिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता जाव विहरंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते माकंदीना पुत्रो त्यां पण स्मृतिने यावत् शांतिने न पाम्या त्यारे ज्यां पश्चिम दिशानुं वनखंड हतुं त्यां आव्या. आवीने यावत् विचरवा लाग्या.

मू०—तते णं ते मागंदियदारया तत्थ वि सतिं वा जाव अलभमाणा अण्णमण्णं एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते माकंदीना पुत्रो त्यां पण स्मृतिने यावत् शांतिने न पाम्या त्यारे तेओ परस्पर आ प्रमाणे बोल्या.

मू०—" एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणद्दीवदेवया एवं वयासी—' एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! सक्कस्स वयणसंदेसेणं सुट्ठिएण लवणाहिवइणा जाव मा णं तुब्भं सरीरगस्स वावत्ती

भविस्सति '। तं भवियव्वं एत्थ कारणेणं, तं सेयं खलु अम्हं दक्खिणिल्लं वणसंडं गमित्तए " त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एतमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! आपणने रत्नद्वीप देवताए आ प्रमाणे कह्युं हतुं के–' आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! मने शक्रेंद्रना वचनना संदेशावडे सुस्थित नामना लवण समुद्रना अधिपति देवे यावत् कार्य सोंप्युं छे त्यांथी मांडीने यावत् तमारा शरीरनो विनाश न थाओ. ' एम कह्युं छे तो तेमां कांइ कारण होवुं जोइए. तेथी करीने आपणे दक्षिण दिशाना वनखंडमां पण जवुं श्रेयस्कर–उचित छे. " आ प्रमाणे कहीने तेमणे परस्परना आ अर्थने (विचारने) अंगीकार कर्यो, अंगीकार करीने ज्यां दक्षिण दिशानुं वनखंड हतुं त्यां जवा नीकळ्या.

मू०—तते णं गंधे निद्धाति से जहानामए अहिमडेति वा जाव अणिट्ठतराए चेव ।

अर्थ—ते वखते ते दिशामांथी दुर्गंध नीकळ्यो, ते जाणे के सर्पनुं मडदुं होय तेवो यावत् अत्यंत अनिष्ट दुर्गंध नीकळ्यो.

मू०—तते णं ते मागंदियदारया तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं सएहिं उत्तरिज्जेहिं आसाइं पिहेंति, पिहित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव उवागया ।

अर्थ—त्यारपछी ते माकंदीना पुत्रोए ते अशुभ गंधवडे पराभव पाम्या सता पोतपोताना उत्तरीय वस्त्र (खेस) वडे पोतपोतानां मुख ढांक्यां, ढांकीने ज्यां दक्षिण दिशानुं वनखंड हतुं त्यां ज आव्या.

मू०—तत्थ णं महं एगं आघातणं पासंति, पासित्ता अट्ठियरासिसतसंकुलं भीमदरिसणिज्जं एगं च तत्थ सूलाइतयं पुरिसं कलुणाति विस्सराति कट्ठाति कुव्वमाणं पासंति, पासित्ता भीया जाव संजायभया जेणेव से सूलातियपुरिसे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता तं सूलाइयं पुरिसं एवं वदासी—

अर्थ—ते वखते त्यां तेमणे एक मोटुं वधस्थान जोयुं, जोइने सेंकडो हाडकांना समूहवडे व्याप्त अने भयंकर देखाववाळा ते स्थानमां एक शूळीमां परोवेला पुरुषने कष्टकारक, करुण अने विरस शब्दने करतो जोयो. जोइने ते बन्ने भाइओ भय पाम्या, यावत् तेमने मोटो भय उत्पन्न थयो. पछी तेओ ज्यां ते शूळीमां परोवेलो पुरुष हतो, त्यां आव्या. आवीने तेमणे ते शूळीमां परोवेला पुरुषने आ प्रमाणे कह्युं. (पूछ्युं).

मू०—“ एस णं देवाणुप्पिया ! कस्साघयणे ? तुमं च णं के कओ वा इहं हव्वमागए ? केण वा इमेयारूवं आवतिं पाविए ? । ”

अर्थ—“ हे देवानुप्रिय ! आ वधस्थान कोनुं छे ? तुं कोण छे ? अहीं तुं केम आव्यो हतो ? अने कोणे आवी आपत्ति तने पमाडी छे ? ”

मू०—तते णं से सूलातियपुरिसे मागंदियदारए एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते शूलीपर परोवेला पुरुषे ते माकंदीना पुत्रोने आ प्रमाणे कह्युं—

मू०—"एस णं देवाणुप्पिया ! रयणद्दीवदेवयाए आघयणे, अहण्णं देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ कागंदीए आसवाणियए विपुलं पणियभंडमायाए पोतवहणेणं लवणसमुद्दं ओयाए।

अर्थ—"हे देवानुप्रियो ! आ वधस्थान रत्नद्वीपनी अधिष्ठायक देवतानुं छे. हे देवानुप्रियो ! हुं जंबूद्वीप नामना द्वीपमां रहेला भरतक्षेत्रने विषे काकंदी नामनी नगरीनो रहीश अश्वनो वेपारी छुं. घणा अश्व, भांडोपगरण पोतवहनमां भरी हुं लवणसमुद्रमां चाल्यो.

मू०—तते णं अहं पोयवहणविवत्तीए निब्बुड्डभंडसारे एगं फलगखंडं आसाएमि।

अर्थ—त्यां पोतवहन भांगी जवाथी सर्व प्रधान भांडोपगरण डुबी गया, अने हुं एक काष्ठना पाटीयाना खंडने पाम्यो.

मू०—तते णं अहं उवुज्झमाणे उवुज्झमाणे रयणदीवंतेणं संवूढे।

अर्थ—त्यारपछी हुं तरतो तरतो रत्नद्वीपनी समीपे आवी पहोंच्यो.

मू०—तते णं सा रयणद्दीवदेवया ममं ओहिणा पासइ, पासित्ता ममं गेण्हइ, गेण्हित्ता मए सद्धिं विपुलातिं भोगभोगातिं भुंजमाणी विहरति ।

अर्थ—तेटलामां ते रत्नद्वीपनी देवताए मने अवधिज्ञानवडे जोयो. जोइने तेणीए मने ग्रहण कर्यो. ग्रहण करी मारी साथे विपुल कामभोग भोगवती थकी रहेवा लागी.

मू०—तते णं सा रयणद्दीवदेवया अन्नदा कयाई अहालहुसगंसि अवराहंसि परिकुविया समाणी ममं एतारूवं आवतिं पावेइ । तं ण णज्जइ णं देवाणुप्पिया ! तुम्हं पि इमेसिं सरीरगाणं का मण्णे आवती भविस्सइ ? ”

अर्थ—त्यारपछी ते रत्नद्वीपनी देवताए एकदा कदाचित् कांइक जेवा तेवा नाना अपराधमां ज अत्यंत कोप पामी सती मने आवा प्रकारनी आपत्ति आपी छे. माराथी नथी जाणी शकातुं के हे देवानुप्रियो ! तमारा आ शरीरने पण केवा प्रकारनी आपत्ति प्राप्त थशे ? एम हुं मानुं छुं–एम मारुं धारवुं छे.

मू०—तते णं ते मागंदियदारया तस्स सूलाइयगस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म बलियतरं भीया जाव संजायभया सूलाइतयं पुरिसं एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते माकंदीना पुत्रो ते शूलीपर परोवेला पुरुषनी पासेथी आ अर्थ सांभळी मनमां धारी अत्यंत भय पाम्या, यावत् तेना मनमां भय उत्पन्न थयो, एटले तेमणे शूळीपर परोवेला पुरुषने आ प्रमाणे कह्युं. (पूछ्युं).—

मू०—" कहं णं देवाणुप्पिया ! अम्हे रतणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थिं णित्थरिज्जामो ? "

अर्थ—" हे देवानुप्रिय ! अमे केवी रीते रत्नद्वीपदेवताना हाथमांथी अमारे हाथे-जाते निस्तार पामीए-छुटीए ? " (एवो कोइ उपाय छे ?)

मू०—तते णं से सूलाइयए पुरिसे ते मागंदियदारगे एवं वदासी—

अर्थ—त्यारे ते शूलाप्रोत पुरुषे ते माकंदीना पुत्रोने आ प्रमाणे कह्युं—

मू०—" एस णं देवाणुप्पिया ! पुरच्छिमिल्ले वणसंडे सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे सेलए नामं आसरूवधारी जक्खे परिवसति ।

अर्थ—" हे देवानुप्रियो ! ते आ पूर्वदिशाना वनखंडमां सेलक नामना यक्षनुं यक्षायतन (चैत्य) छे. तेमां अश्वना रूपने धारण करनार सेलक नामनो यक्ष रहे छे.

मू०—तए णं से सेलए जक्खे चोद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु आगयसमए पत्तसमए महया

महया सद्देणं एवं वदति–" कं तारयामि ? कं पालयामि ? "

अर्थ—त्यारपछी ते सेलक नामनो यक्ष चौदश, आठम, अमावास्या अने पूर्णिमाने दिवसे जेनो समय नजीक आव्यो छे अने जेनो समय साक्षात् प्राप्त थयो छे एवो सतो मोटा मोटा शब्दवडे आ प्रमाणे बोले छे के–" हुं कोने तारुं ? अने हुं कोने पाळुं ? "

मू०–तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! पुरच्छिमिल्लं वणसंडं सेलगस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फच्चणियं करेह, करित्ता जण्णुपायवडिया पंजलिउडा विणएणं पज्जुवासमाणा चिट्ठह ।

अर्थ—तो हे देवानुप्रियो ! तमे पूर्व दिशाना वनखंडमां जाओ, अने त्यां सेलक यक्षनी मोटाने लायक एवी पुष्पपूजा करो, करीने जानु तथा पगने नमावी बे हाथ जोडी विनयवडे तेनी सेवा करता सता रहो.

मू०–जाहे णं से सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एवं वदेज्जा–' कं तारयामि ? कं पालयामि ? ' ताहे तुब्भे वदह–' अम्हे तारयाहि, अम्हे पालयाहि. ' सेलए भे जक्खे परं रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थिं णित्थारेज्जा । अण्णहा भे न याणामि इमेसिं सरीरगाणं का मण्णे आवई भविस्सइ ? " ॥ ८२ ॥

अर्थ—ज्यारे ते सेलक यक्ष जेनो समय नजीक आव्यो छे अने जेनो समय साचात् प्राप्त थयो छे एवो सतो आ प्रमाणे मोटेथी बोले के–'कोने तारुं? अने कोने पाळुं?' त्यारे तमारे कहेवुं के–'अमने तारो अने अमने पाळो.' ते वखते तमने ते सेलक यक्ष अत्यंतपणे ते रत्नद्वीप देवताना हाथमांथी पोताने हाथे–जाते निस्तार पमाडशे–छुटा करशे. अन्यथा–ए सिवाय बीजी रीते तो हुं नथी जाणतो के आ तमारा शरीरने कइ आपत्ति प्राप्त थशे? एम हुं मानुं छुं."

मू०–तते णं ते मागंदियदारगा तस्स सूलाइयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म सिग्घं चंडं चवलं तुरियं चेइयं जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोक्खरिणिं गाहंति, गाहित्ता जलमज्जणं करेंति, करित्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता आलोए पणामं करेंति, करित्ता महरिहं पुप्फच्चणियं करेंति, करित्ता जण्णुपायवडिया सुस्सूसमाणा णमंसमाणा पज्जुवासंति।

अर्थ—त्यारपछी ते माकंदीना पुत्रो ते शूलिपर परोवेला पुरुषनी पासे आ अर्थ सांभळी मनमां धारी शीघ्र, रौद्र, चपळ अने त्वरित गतिवडे ज्यां पूर्व दिशानुं वनखंड हतुं अने ज्यां पुष्करणी (वाव) हती, त्यां आव्या, आवीने पुष्करणीमां प्रवेश कर्यो, प्रवेश करी जळमज्जन कर्युं–जळमां डुबकी मारी स्नान कर्युं. करीने जे त्यां उत्पल–कमळ विगेरे हतां ते यावत् ग्रहण कर्यां. ग्रहण करी ज्यां सेलक नामना यक्षनुं यक्षायतन (चैत्य) हतुं, त्यां आव्या. आवीने ते यक्षने जोयो

के तरत तेने प्रणाम कर्या. करीने महापुरुषने योग्य पुष्पपूजा करी. करीने जानु तथा पगने पाडी—नीचा नमावी ते यक्षनी सेवा करता अने तेने नमस्कार करता सता पर्युपासना करवा लाग्या—पासे बेठा.

मू०—तते णं से सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एवं वदासी—" कं तारयामि ? कं पालयामि ? " ।

अर्थ—त्यारपछी ते सेलक नामनो यक्ष तेनो समय नजीक आव्यो अने समय साक्षात् प्राप्त थयो त्यारे आ प्रमाणे बोल्यो के—" कोने तारुं ? अने कोने पाळुं ? "

मू०—तते णं ते मागंदियदारया उट्ठाए उट्ठेंति करयल एवं वयासी—" अम्हे तारयाहि, अम्हे पालयाहि " ।

अर्थ—त्यारपछी ते माकंदीना पुत्रो उभा थया, उभा थइने अने बे हाथ जोडीने आ प्रमाणे बोल्या—" अमने तारो, अमने पाळो. "

मू०—तए णं से सेलए जक्खे ते मागंदियदारए एवं वयासी—" एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुब्भं मए सद्धिं लवणसमुद्देणं मज्झंमज्झेणं वीइवयमाणेणं सा रयणदीवदेवया पावा चंडा रुद्दा

खुद्दा साहसिया बहूहिं खरएहि य मउएहि य अणुलोमेहि य पडिलोमेहि य सिंगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहि य उवसग्गं करेहिति ।

अर्थ—त्यारपछी ते सेलक नामना यक्षे ते माकंदीना पुत्रोने आ प्रमाणे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! तमे मारी साथे लवण समुद्रना मध्य मध्य भागमां आवशो त्यारे ते पापणी, प्रचंड, रौद्र (भयंकर), क्षुद्र (तुच्छ) अने साहसिक एवी रत्नद्वीपदेवता तमोने घणा कठोर, मृदु (कोमळ), अनुकूळ, प्रतिकूळ, शृंगारयुक्त अने करुणाजनक उपसर्गोवडे उपसर्ग करशे.

मू०—तं जति णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! रयणद्दीवदेवयाए एतमट्ठं आढाह वा परियाणह वा अवएक्खह वा तो भे अहं पिट्ठातो विधुणामि ।

अर्थ—ते वखते जो तमे हे देवानुप्रियो ! रत्नद्वीपनी देवताना आ अर्थनो आदर करशो, जाणशो—अंगीकार करशो, अथवा अपेक्षा करशो—इच्छा करशो, तो हुं तमने मारी पीठपरथी नीचे नांखी दइश.

मू०—अह णं तुब्भे रयणद्दीवदेवयाए एतमट्ठं णो आढाह णो परियाणह णो अवक्खेह; तो भे रयणद्दीवदेवयाहत्थातो साहत्थिं णित्थारेमि " ।

४

अर्थ—अने जो तमे ते रत्नद्वीपदेवताना आ अर्थनो आदर नहीं करो. जाणशो नहीं–अंगीकार नहीं करो अने तेनी अपेक्षा–इच्छा नहीं करो तो तमने हुं रत्नद्वीपदेवताना हाथथी पोताने हाथे ज निस्तार पमाडीश–छुटा करीश (तमारे स्थाने पहोंचाडीश)."

मू०—तए णं ते मागंदियदारया सेलगं जक्खं एवं वदासी—" जं णं देवाणुप्पिया ! वइस्संति तस्स णं उववायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामो "।

अर्थ—त्यारपछी ते माकंदीना पुत्रोए ते सेलक यक्षने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रिय ! तमे जे कहेशो, तेनी उपपात–सेवा, वचन–आदेश अने निर्देशने विषे अमे रहेशुं." (अर्थात् तमे कहेशो तेम करशुं अने तमारा सेवकना पण सेवक थशुं.)

मू०—तते णं से सेलए जक्खे उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमति, अवक्कमित्ता वेउव्विय-समुग्घाएणं समोहणाति, समोहणित्ता संखेज्जातिं जोयणाइं दंडं निस्सरइ दोच्चं पि तच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणाति, समोहणित्ता एगं महं आसरूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता ते मागंदिय-दारए एवं वदासी—" हं भो मागंदियदारया ! आरुह णं देवाणुप्पिया ! मम पिट्ठंसि "।

अर्थ—त्यारपछी ते सेलक यक्ष उत्तरपूर्व (ईशान) दिशाना भाग (प्रदेश) मां गयो. जइने वैक्रिय समुद्घातवडे समुद्घात कर्यो. समुद्घात करी संख्याता योजननो दंड कर्यो. बीजी वार त्रीजी वार पण वैक्रिय समुद्घातवडे समुद्घात कर्यो. समुद्घात करी एक मोटुं अश्वनुं रूप विकुर्व्युं. विकुर्वीने ते माकंदीपुत्रोने आ प्रमाणे कह्युं—" हे माकंदीपुत्रो ! हे देवानुप्रियो ! मारी पीठपर चडी जाओ. "

मू०—तते णं ते मागंदियदारए हट्ठ तुट्ठ सेलगस्स जक्खस्स पणामं करेंति, करित्ता सेलगस्स पिट्ठिं दुरूढा ।

अर्थ—त्यारपछी ते माकंदीपुत्रोए हृष्ट तुष्ट थइ सेलक नामना यक्षने प्रणाम कर्या. प्रणाम करी ते सेलकनी पीठ उपर चडी गया.

मू०—तते णं से सेलए ते मागंदियदारगे दुरूढे जाणित्ता सत्तट्ठतालप्पमाणमेत्तातिं उड्ढं वेहासं उप्पयति, उप्पइत्ता य ताए उक्किट्ठाए तुरियाए देवयाए दिव्वगईए लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव चंपा नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥८३॥

अर्थ—त्यारपछी ते अश्वरूपधारी सेलक यक्ष पोतानी उपर ते माकंदीपुत्रोने चड्या जाणी सात आठ ताल प्रमाण उंचे आकाशमां उड्यो. उडीने तेवा प्रकारनी उत्कृष्ट, शीघ्रतावाळी, देव संबंधी दीव्य गतिवडे लवण समुद्रना मध्य मध्य भाग-

वडे ज्यां जंबूद्वीप नामनो द्वीप हतो, ज्यां भरतक्षेत्र हतुं, अने ज्यां चंपा नामनी नगरी हती, त्यां जवाने चाल्यो. ८२.

मू०—तते णं सा रयणद्दीवदेवया लवणसमुद्दं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टति, जं तत्थ तणं वा जाव एडेति, एडित्ता जेणेव पासायवडेंसए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता ते मागंदियदारगा पासायवडिंसए अपासमाणी जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे जाव सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेति, करित्ता तेसिं मागंदियदारगाणं कच्छइ सुतिं वा अलभमाणी जेणेव उत्तरिल्ले वणसंडे, एवं चेव पच्चत्थिमिल्ले वि जाव अपासमाणी ओहिं पउंजति, पउंजित्ता ते मागंदियदारए सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीइवयमाणे वीइवयमाणे पासति, पासित्ता आसुरुत्ता असिखेडगं गेण्हति, गेण्हित्ता सत्तट्ठ जाव उप्पयति, उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए जेणेव मागंदियदारगा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते रत्नद्वीपनी देवता लवण समुद्रनी फरता एकवीश वार फेरा फरी तेमां जे कांइ तृण विगेरे हतुं ते सर्व यावत् दूर कर्युं. दूर करीने ज्यां पोतानो प्रासादावतंसक हतो, त्यां आवी. आवीने ते माकंदीपुत्रोने ते प्रासादावतंसकमां जोया नहीं, तेथी ते पूर्वदिशाना वनखंडमां गइ, त्यां सर्वत्र चोतरफ तेमनुं मार्गण—गवेषण कर्युं. करीने ते

माकंदीपुत्रोनी क्यांइ पण स्मृति-शोध विगेरे यावत् नहीं मळवाथी ज्यां उत्तर दिशानुं वनखंड हतुं त्यां आवी. यावत् छेवट पश्चिम दिशाना वनखंडमां आवी, यावत् त्यां पण तेमने जोया नहीं, त्यारे तेणीए अवधिज्ञाननो उपयोग कर्यो. उपयोग करी ते माकंदीना पुत्रोने सेलक यक्षनी साथे लवण समुद्रने विषे मध्य मध्य भागवडे जता जता जोया. जोइने तत्काळ क्रोध पामेली देवीए ढाल तरवार ग्रहण करी. ग्रहण करीने सात आठ ताल प्रमाण यावत् उंचे उडी. उंचे उडीने ज्यां ते माकंदीना पुत्रो हता, त्यां आवी. आवीने आ प्रमाणे बोली.—

मू०—" हं भो मागंदियदारगा ! अपत्थियपत्थिया ! किं णं तुब्भे जाणह ममं विप्पजहाय सेलएणं जक्खेणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतीवयमाणा ? तं एवमवि गए जइ णं तुब्भे ममं अवयक्खह तो भे अत्थि जीवियं, अहण्णं णावयक्खह तो भे इमेण नीलुप्पलगवल जाव एडेमि "।

अर्थ—अरे माकंदीना पुत्रो ! अप्रार्थ्य (मृत्यु) नी प्रार्थना करनारा ! तमे शुं जाणो छो के मारो त्याग करीने सेलक यक्षनी साथे लवण समुद्रनी मध्ये मध्ये थइने तमे जता रहो छो ? तो आटलुं गया छतां पण जो तमे मारी अपेक्षा राखता हो तो तमारुं जीवित छे-जीवित रहेशे, अने जो मारी अपेक्षा राखता न हो तो आ नील कमळ अने भेंशना शींगडा जेवा काळा खड्गवडे यावत् तमारो विनाश करीश."

मू०—तते णं ते मागंदियदारया रयणद्दीवदेवयाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म अभीया

अतत्था अणुव्विग्गा अक्खुभिया असंभंता रयणद्दीवदेवयाए एयमट्ठं नो आढंति नो परियाणंति णो अवयक्खंति, अणाढायमाणा अपरियाणमाणा अणवयक्खमाणा सेलएण जक्खेण सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतिवयंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते माकंदीना पुत्रो रत्नद्वीपनी देवतानी पासेथी आ अर्थ सांभळीने मनमां धारीने भय पाम्या नहीं, त्रास पाम्या नहीं, उद्वेग पाम्या नहीं, क्षोभ पाम्या नहीं तेमज संभ्रांत थया नहीं. तेथी ते रत्नद्वीप देवताना ते अर्थनो तेमणे आदर कर्यो नहीं, जाण्यो नहीं—अंगीकार कर्यो नहीं अने अपेक्षा करी नहीं. आदर नहीं करता, अंगीकार नहीं करता अने अपेक्षा नहीं राखता सता सेलक यक्षनी साथे लवण समुद्रनी मध्ये मध्ये जवा लाग्या.

मू०—तते णं सा रयणद्दीवदेवया ते मागंदिया जाहे नो संचाएति बहूहिं पडिलोमेहि य उवसग्गेहि य चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा लोभित्तए वा ताहे महुरेहि सिंगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहि य उवसग्गेउं पयत्ता यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते रत्नद्वीपनी देवता ते माकंदीपुत्रोने ज्यारे घणा प्रतिकूळ उपसर्गोवडे चलायमान करवा, क्षोभ पमाडवा, विपरीत परिणाम पमाडवा के लोभ पमाडवाने शक्तिमान थइ नहीं, त्यारे ते देवी मधुरतावाळा, शृंगाररसवाळा अने करुणा उपजावे तेवा अनुकूळ उपसर्गोवडे उपसर्ग करवा प्रयत्नवाळी थइ.

मू०—" हं भो मागंदियदारगा ! जति णं तुब्भेहिं देवाणुप्पिया ! मए सद्धिं हसियाणि य रमियाणि य ललियाणि य कीलियाणि य हिंडियाणि य मोहियाणि य ताहे णं तुब्भे सव्वातिं अगणेमाणा ममं विप्पजहाय सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीइवयह ? "।

अर्थ—ते आ प्रमाणे—" हे माकंदीना पुत्रो ! हे देवानुप्रियो ! तमे मारी साथे जे हास्य कर्यां छे, पासादिकनी रमत रम्या छो, ललित—मनवांछित क्रीडा करी छे, क्रीडित—हींचके हींचकवुं विगेरे क्रीडा करी छे, हिंडित—उद्यानादिकमां फर्या छो, अने मैथुन क्रीडा करी छे, ते सर्वने गणकार्या विना तमे मने छोडीने सेलक यक्षनी साथे लवणसमुद्रनी मध्ये मध्ये जाओ छो ? "

मू०—तते णं सा रयणदीवदेवया जिणरक्खियस्स मणं ओहिणा आभोएति, आभोएत्ता एवं वदासी—" णिच्चं पि य णं अहं जिणपालियस्स अणिट्ठा ५, निच्चं मम जिणपालिए अणिट्ठे ५, निच्चं पि य णं अहं जिणरक्खियस्स इट्ठा ५, निच्चं पि य णं ममं जिणरक्खिए इट्ठे ५। जति णं ममं जिणपालिए रोयमाणीं कंदमाणीं सोयमाणीं तिप्पमाणीं विलवमाणीं णावयक्खति, किं णं तुमं जिणरक्खिया ! ममं रोयमाणिं जाव णावयक्खसि ? "।

अर्थ—त्यारपछी ते रत्नद्वीपनी देवताए जिनरक्षितनुं मन अवधिज्ञानवडे (कांइक शिथिल) जाण्युं. जाणीने आ प्रमाणे बोली—" हुं निरंतर जिनपालितने अनिष्ट विगेरे हती, अने मने पण जिनपालित नित्य अनिष्ट विगेरे हतो, पण जिनरक्षितने तो हुं नित्य इष्ट विगेरे हती, अने मने पण जिनरक्षित नित्य इष्ट विगेरे हतो. तेथी करीने जो कदाच जिनपालित रोती, आक्रंद करती, शोक करती, अनुताप करती अने विलाप करती एवी मारी अपेक्षा न करे, तो शुं हे जिनरक्षित ! तुं पण रोती एवी मने नथी जाणतो यावत् नथी अपेक्षा करतो ? "

मू०—तते णं—सा पवररयणदीवस्स देवया ओहिणा उ जिणरक्खियस्स मणं ।
नाऊण वधनिमित्तं उवरि मागंदियदारगाणं दोण्हंपि ॥ १ ॥

अर्थ—त्यारपछी—ते श्रेष्ठ रत्नद्वीपनी देवता अवधिज्ञानवडे जिनरक्षितनुं मन जाणीने बन्ने माकंदीना पुत्रो उपर तेमना वधने निमित्ते आ प्रमाणे कपटथी बोली (एम आगळ त्रीजी गाथा साथे संबंध करवो.) १.

मू०—दोसकलिया सललियं णाणाविहचुण्णवासमीसियं दिव्वं ।
घाणमणनिव्वुइकरं सव्वोउयसुरभिकुसुमवुट्ठिं पमुंचमाणी ॥ २ ॥

अर्थ—द्वेषवडे युक्त ते देवी लीला सहित (पूर्वक) विविध प्रकारना चूर्णवासथी मिश्रित, दिव्य (मनोहर), नासिका अने चित्तने सुख उपजावनार अने सर्व ऋतु संबंधी सुगंधी पुष्पोनी वृष्टि करती बोली. २.

मू०—णाणामणिकणगरयणघंटियखिंखिणिणेउरमेहलभूसणरवेणं ।
दिसाओ विदिसाओ पूरयंती वयणमिणं बेति सा सकलुसा ॥ ३ ॥

अर्थ—विविध प्रकारना मणि, सुवर्ण अने रत्ननी घंटाओ, घुघरीओ, नूपुर (झांझर), मेखला (कंदोरो) ए सर्व आभूषणोना शब्दवडे सर्व दिशाओ अने विदिशाओने पूर्ण करती ते पापयुक्त देवी आ प्रमाणे वचन बोली—

मू०—होल वसुल गोल णाह दइत पिय रमण कंत सामिय णिग्घिण णित्थक्क। छिण्ण णिक्किव
अकयण्णुय सिढिलभाव निल्लज्ज लुक्ख अकलुण जिणरक्खिय मज्झं हिययरक्खगा ॥ ४ ॥

अर्थ—हे होल ! वसुल ! गोल ! तथा हे नाथ (योग[१]-क्षेम[२] करनार) ! हे दयित (वहालां) ! हे प्रिय (प्रेम करनार) ! हे रमण (भर्तार) ! हे कांत (मनोहर) ! हे स्वामी (अधिपति) ! हे निर्घृण (स्नेहवाळी अने वियोगवडे दुःखी थयेली मारो त्याग करवाथी निर्दय) ! हे नित्थक्क (प्रीतिवाळी एवी मारो अकस्मात् त्याग करवाथी अवसरने नहीं जाणनार) ! हे स्त्यान (मारा अत्यंत अनुकूळ चरित्रथी पण तारुं हृदय आर्द्र न थयुं माटे हे कठण हृदयवाळा) ! हे निष्कृप (मारा दुःखनो प्रतिकार नहीं करवाथी हे कृपा रहित) ! हे अकृतज्ञ (मारा उपकारने नहीं जाणनार) ! हे

१ आ पहेलाना त्रण संबोधन सामान्य रीते पुरुष विगेरेने कहेवामां आवे छे. तेनो अर्थ स्तुति अने निंदागर्भित छे. आ शब्दो जूदा जूदा देशने आश्रीने बोलवामां आवे छे. २ अप्राप्त वस्तुनी प्राप्ति करवी ते योग अने प्राप्त थयेली वस्तुनुं रक्षण करवुं ते क्षेम कहेवाय छे.

शिथिलभाव (मने अकस्मात् मूकी देवाथी हे शिथिल मनवाळा) ! हे निर्लज्ज (अंगीकार करेली मारो त्याग करवाथी हे लज्जा रहित) ! हे रुक्ष (स्नेहनुं कार्य नहीं करवाथी हे लूखा) ! हे अकरुण (दया रहित) ! हे जिनरक्षित ! हे मारा हृदयना रक्षक (वियोगना दुःखथी फाटी जता हृदयने फरीथी स्वीकार करी रक्षण करनार) ! ४.

मू०—ण हु जुज्जसि एक्कियं अणाहं अबंधवं तुज्झ चलणओवायकारियं उज्झिउमहण्णं । गुणसंकर ! अहं तुमे विहूणा ण समत्था वि जीविउं खणं पि ॥ ५ ॥

अर्थ—नाथ रहित, बांधव रहित, तारा चरणनी सेवा करनारी अने अधन्य एवी मने एकलीने तुं त्याग करवा योग्य नथी. हे गुणना समुदाय ! तारा विना हुं क्षणवार पण जीववाने समर्थ नथी. ५.

मू०—इमस्स उ अणेगझसमगरविविधसावयसयाउलघरस्स । रयणागरस्स मज्झे अप्पाणं वहेमि तुज्झ पुरओ एहि णियत्ताहि जइ सि कुविओ खमाहि एक्कावराहं मे ॥ ६ ॥

अर्थ—अनेक झष-मत्स्य, मगर अने विविध श्वापद (क्षुद्र जळचर प्राणी) ना सेंकडाओवडे व्याप्त थयेला घररूप

१ आवा स्थळोमां ज्यां ज्यां एकज अर्थवाळा अनेक शब्दो लखेला होय छतां ते पुनरुक्त दोषवाळा नथी. केमके—" वक्ता हर्षभयादिभिराक्षिप्तमनाः स्तुवंस्तथा निन्दन् । यत्पदमसकृद्ब्रूयात्तत्पुनरुक्तं न दोषाय ॥ १ ॥ "—हर्ष, भय विगेरेवडे मनमां व्याकुळ थयेला वक्ता स्तुति के निंदा करतां जे शब्द वारंवार बोले ते पुनरुक्त छतां दोषवान नथी.

अथवा झषादिकना सेंकडाओना कुळगृहरूप आ रत्नाकर (समुद्र) नी मध्ये हुं तारी समक्ष मारा आत्मानो वध करुं छुं. (जो तेम थवा न देवुं होय तो) चाल. पाछो वळ. जो कदाच तुं मारापर कुपित थयो हो तो मारा एक अपराधने क्षमा कर. ६.

मू०—तुज्झ य विगयघणविमलससिमंडलगारसस्सिरीयं सारयनवकमलकुमुदकुवलयविमलदलनिकरसरिसनिभं । नयणं (निभनयणं ।) वयणं पिवासागयाए सद्धा मे पेच्छिउं जे अवलोएहि ता इओ ममं णाह जा ते पेच्छामि वयणकमलं ॥ ७ ॥

अर्थ—वळी तारुं मुख मेघ रहित निर्मळ चंद्रमंडळना जेवा आकारवाळुं अने लक्ष्मी (शोभा) वाळुं छे. तथा तारां नेत्रो शरद ऋतुना ताजा विकस्वर कमळ,[1] कुमुद[2] अने कुवलयना[3] निर्मळ पत्रना समूह जेवा निभ—अत्यंत शोभतां छे. आवा नेत्रवाळा तारा मुखना दर्शनरूपी जळनी पिपासाथी हुं अहीं आवी छुं, मारो अभिलाष तारा मुखने जोवानो छे. तेथी हे नाथ ! तुं आ तरफ मारी सामुं अवलोकन कर, के जेथी तारुं मुखकमळ हुं जोइ लउं. ७.

मू०—एवं सप्पणयसरलमहुरातिं पुणो पुणो कलुणाइं । वयणातिं जंपमाणी सा पावा मग्गओ समण्णेइ पावहियया ॥ ८ ॥

---

१ सूर्यविकासी. २ चंद्रविकासी. ३ नीलोत्पल—काळुं कमळ.

अर्थ—आ प्रमाणे जाणे प्रेमवाळां होय तेवां, सरल–सुखेथी अर्थ जाणी शकाय तेवां, मधुर–भाषावडे कोमळ अने करुणा उत्पन्न करे तेवां वचनोने वारंवार बोलती ते पापकर्मने करनारी अने पापी हृदयवाळी देवता मार्गमां तेमनी पाछळ चालवा लागी. ८.

मू०—तते णं से जिणरक्खिए चलमणे तेणेव भूसणरवेणं कण्णसुहमणोहरेणं तेहि य सप्पणयसरलमहुरभणिएहिं संजायविउणराए रयणदीवस्स देवयाए तीसे सुंदरथणजहणवयणकरचरणनयणलावन्नरूवजोव्वणसिरिं च दिव्वं सरभसउवगूहियाइं जातिं विब्बोयविलसियाणि य विहसियसकडक्खदिट्ठिनिस्ससियमलियउवललियठियगमणपणयखिज्जियपासादियाणि य सरमाणे रागमोहियमई अवसे कम्मवसगए अवयक्खति मग्गतो सविलियं ।

अर्थ—त्यारपछी ते पूर्वे वर्णवेला कर्णने सुखकारक अने मनोहर एवा भूषणना शब्दवडे तथा ते ज पूर्वे वर्णवेला प्रेमवाळा, सरल अने मधुर भाषितवडे ते जिनरक्षितनुं मन चलायमान थयुं, अने प्रथम करतां बमणो राग तेनापर उत्पन्न थयो. तथा ते रत्नद्वीपनी देवताना सुंदर एवा स्तन, जघन, मुख, हाथ, पग अने नेत्रना लावण्यनी, रूपनी (शरीरना सुंदरपणानी) अने यौवननी दीव्य (देव संबंधी) लक्ष्मी (शोभा) ने स्मरण करतो तथा तेणीना जे सरभस (हर्ष सहित) पूर्वे करेला आलिंगनोने, बिब्बोय (चेष्टा)ने, विलसित (नेत्र विकार) ने, विहसित–अर्धहास्य, कटाक्षवाळी

दृष्टिओ, निःश्वसित-कामक्रीडाथी उत्पन्न थयेला निःश्वासो, मलित-स्त्रीना इच्छित अंगनुं मर्दन, (पाठांतरे मणित-मैथुन-क्रीडाना शब्द,) उपललित-विशेष प्रकारनी क्रीडा, स्थित-पोताना भवनमां उत्संग के आसनादिकने विषे बेसवुं ते, गमन-हंसनी जेवी गतिवडे चालवुं ते, प्रणयखेदित-प्रेमनो कोप अने प्रसादित-कोपने दूर करी प्रसन्न करवुं ते, आ सर्वनुं स्मरण करता ते जिनरचितनी मति रागथी मोहित थइ, तेथी ते पराधीन थयो, कर्मने आधीन थयो; अने व्रीडा-लज्जा सहित पाछळ मार्गमां तेणीनी सन्मुख जोवा लाग्यो.

मू०-तते णं जिणरक्खियं समुप्पन्नकलुणभावं मच्चुगलत्थल्लणोल्लियमइं अवयक्खंतं तहेव जक्खे य सेलए जाणिऊण सणियं सणियं उव्विहति नियगपिट्ठाहि विगयसत्थं (ड्ढे)।

अर्थ—त्यारपछी ते जिनरचितने ते देवीउपर करुणाभाव उत्पन्न थयो, तेथी मृत्यु एटले यमराजरूपी राक्षसे तेने गळे हाथ दइ तेनी मति-बुद्धि फेरवी नांखी अर्थात् यमराजनी नगरी तरफ जवानी तेनी मति थइ, एटले तेणे ते देवीनी सन्मुख जोयुं, ते वृत्तांत सेलक यक्षे अवधिज्ञानवडे जाणीने धीमे धीमे पोताना पृष्ठ उपरथी विगतस्वास्थ्य-स्वस्थता रहित एवा तेने उंचो (नीचो) फेंकी दीधो. (विगतश्रद्ध एवो पाठांतर होय तो श्रद्धा रहित थयेला यक्षे तेने उंचो फेंकी दीधो. एवो अर्थ करवो. (अर्थात् यक्षनुं विशेषण करवुं.)

मू०-तते णं सा रयणदीवदेवया निस्संसा कलुणं जिणरक्खियं सकलुसा सेलगपिट्ठाहि उवयंतं

५

दास ! मओसि त्ति जंपमाणी अप्पत्तं सागरसलिलं गेण्हिय बाहाहिं आरसंतं उड्ढं उव्विहाति । अंबरतले ओवयमाणं च मंडलग्गेण पडिच्छित्ता नीलुप्पलगवलअयसिप्पगासेण असिवरेणं खंडाखंडिं करेति, करित्ता तत्थ विलवमाणं तस्स य सरसवहियस्स घेत्तूण अंगमंगातिं सरुहिराइं उक्खित्तबलिं चउद्दिसिं करेति सा पंजली पहिट्ठा ॥ ८४ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते निर्दय अने पापवाळी रत्नद्वीपनी देवताए दयाजनक एवा जिनरक्षितने सेलकना पृष्ठ उपरथी उतरतो (पडतो) जोइ 'हे दास ! तुं मर्यो' एम बोलीने समुद्रना जळने पहोंच्या पहेलां ज तेने बे हाथवडे पकडी लइ बूमो पाडता एवा तेने उंचे फेंक्यो—उछाळ्यो, अने पछी आकाशतळथी नीचे उतरता—पडता एवा तेने खड्गना अग्र भागवडे ग्रहण करी—परोवी विलाप करता एवा तेना काळा कमळ, भेंशना शींगडा अने अतसीना पुष्प जेवा श्याम श्रेष्ठ खड्गवडे टुकडे टुकडा करी नांख्या, टुकडा करीने सरसवधित—रससहित एटले अभिमानना रससहित हणेला एवा तेना रुधिरथी व्याप्त थयेला अंगोपांगने ग्रहण करी तेवडे बे हाथनी अंजळी करी हर्षित थयेली ते देवीए उत्क्षिप्तबलि—देवताने उद्देशीने आकाशमां नांखेला बळिदाननी जेम चारे दिशामां बळिदान नांख्युं— चारे दिशाओने बळिदान आप्युं. ८४.

मू०—एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अंतिए पव्वतिए समाणे

पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसायति पत्थयति पीहेति अभिलसति, से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं जाव संसारं अणुपरियट्टिस्सति, जहा वा से जिणरक्खिए ।

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे आयुष्मान श्रमणो ! जे अमारा निर्ग्रंथ के निर्ग्रंथीनी पासे प्रव्रज्या ग्रहण करीने पछी फरीथी मनुष्य संबंधी कामभोगोनो आश्रय करे, प्रार्थना करे–ऋद्धिवाळा पासे याचना करे, स्पृहा करे–आ लक्ष्मीवान प्रार्थना कर्या विना ज मने कामभोग आपे तो ठीक थाय एवी मनमां इच्छा करे, तथा अभिलाष करे–जोयेला अने नहीं जोयेला शब्दादिक विषयना भोगनी इच्छा करे, ते मनुष्य आ भवमां ज घणा साधुओ, घणी साध्वीओ, घणा श्रावको अने घणी श्राविकाओने निंदवा लायक थाय छे यावत् अनंत संसारमां परिभ्रमण करे छे. जेम आ जिनरक्षिते दुःख अनुभव्युं अने संसार परिभ्रमण कर्युं तेम.

मू०—छलिओ अवयक्खंतो, निरावयक्खो गओ अविग्घेणं ।
तम्हा पवयणसारे, निरावयक्खेण भवियव्वं ॥ १ ॥

अर्थ—पाछळ जोनारो जिनरक्षित छळायो–अनर्थ पाम्यो, अने निरपेक्ष–पाछळ नहीं जोनार जिनपालित विघ्नरहित–क्षेमकुशळपणे पोताने स्थाने प्राप्त थयो (पहोंच्यो). तेथी करीने प्रवचनसार (चारित्र) ने विषे एटले चारित्र जेणे ग्रहण

कर्युं होय तेणे निरपेक्ष थवुं एटले त्याग करेला भोगने विषे फरीथी इच्छा करवी नहीं. १.

मू०—भोगे अवयक्खंता, पडंति संसारसायरे घोरे ।
भोगेहिं निरवयक्खा, तरंति संसारकंतारं ॥ २ ॥ ८५ ॥

अर्थ—चारित्र ग्रहण करीने पण जेओ भोगनी इच्छा करे छे तेओ जिनरक्षितनी जेम महाघोर संसाररूपी सागरमां पडे छे—डूबे छे, अने जेओ भोगनी आकांक्षा राखता नथी तेओ जिनपालितनी जेम संसाररूपी अरण्यने तरी जाय छे—ओळंगी जाय छे. २.—८५.

मू०—तते णं सा रयणद्दीवदेवया जेणेव जिणपालिए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता बहूहिं अणुलोमेहि य पडिलोमेहि य खरमहुरसिंगारेहिं कलुणेहि य उवसग्गेहि य जाहे नो संचाएइ चालित्तए वा खोभित्तए वा विप्परिणामित्तए वा, ताहे संता तंता परितंता निव्विण्णा समाणा जामेव दिसिं पाउब्भूता तामेव दिसं पडिगया ।

अर्थ—त्यारपछी ते रत्नद्वीपनी देवता ज्यां जिनपालित हतो त्यां आवी, आवीने घणा अनुकूळ, प्रतिकूळ, कठण, मधुर, शृंगारवाळा तथा करुणावाळा उपसर्गोवडे ज्यारे तेने चलायमान करवा, क्षोभ पमाडवा के मनमां विपरीत परिणाम

करवा शक्तिमान न थइ, त्यारे ते श्रांता–मनमां थाकी गइ, तांता–शरीरे ग्लानि (खेद) पामी, परितांता–सर्वथा खेद पामी, अने निर्विण्णा–निर्वेद (अतिशय खेद) पामी सती जे दिशामांथी प्रगट थइ हती, तेज दिशामां पाछी गइ.

मू०–तते णं से सेलए जक्खे जिणपालिएण सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतीवयाति, वीतीवइत्ता जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता चंपाए नयरीए अग्गुज्जाणंसि जिणपालियं पिट्ठातो ओयारेति, ओयारित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते सेलक यक्ष जिनपालितनी साथे लवणसमुद्रना मध्य मध्य भागे चाल्यो, चालीने ज्यां चंपा नगरी हती त्यां आव्यो. आवीने चंपा नगरीनी बहार श्रेष्ठ उद्यानमां आवी जिनपालितने पोतानी पीठ उपरथी उतार्यो. उतारीने आ प्रमाणे बोल्यो.—

मू०–" एस णं देवाणुप्पिया ! चंपानयरी दीसति " त्ति कट्टु जिणपालियं आपुच्छति आपुच्छित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ ८६ ॥

अर्थ—" हे देवानुप्रिय ! जो, आ चंपानगरी देखाय छे. " एम कही तेणे जिनपालितना रजा लीधी. रजा लइ जे दिशामांथी प्रगट थयो हतो, ते ज दिशामां पाछो गयो. ८६.

मू०—तते णं जिणपालिए चंपं अणुपविसाति अणुपविसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अम्मापिऊणं रोयमाणे जाव विलवमाणे जिणरक्खियवावत्तिं निवेदेति।

अर्थ—त्यारपछी ते जिनपालिते चंपानगरीमां प्रवेश कर्यो. प्रवेश करी ज्यां पोतानुं घर हतुं अने ज्यां पोताना माता पिता हता त्यां आव्यो. आवीने माता पिता पासे रोतां रोतां यावत् विलाप करतां करतां तेणे जिनरक्षितना मरणनो वृत्तांत निवेदन कर्यो.

मू०—तते णं जिणपालिए अम्मापियरो मित्तणाति जाव परियणेणं सद्धिं रोयमाणातिं बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेति, करित्ता कालेणं विगतसोया जाया।

अर्थ—त्यारपछी जिनपालिते अने तेना मातापिताए मित्र, ज्ञाति, स्वजन विगेरे यावत् परिवारनी साथे रोतां रोतां घणां लौकिक मरणनां कार्य कर्यां. करीने अनुक्रमे केटलेक काळे शोक रहित थया.

मू०—तते णं जिणपालियं अन्नया कयाइ सुहासणवरगतं अम्मापियरो एवं वदासी—"कहं णं पुत्ता! जिणरक्खिए कालगए?"।

अर्थ—त्यारपछी एकदा कदाचित सुखासनपर बेठेला जिनपालितने तेना मातापिताए आ प्रमाणे कह्युं–पूछ्युं.—" हे पुत्र ! जिनरक्षित केवी रीते काळधर्म (मरण) पाम्यो ? "

मू०—तते णं से जिणपालिए अम्मापिऊणं लवणसमुद्दोत्तारं च कालियवायसमुत्थणं (च) पोतवहणविवत्तिं च फलहखंडआसातणं च रयणदीवुत्तारं च रयणदीवदेवयागिहं च भोगविभूइं च रयणदीवदेवया जप्पाहणं च सूलाइयपुरिसदरिसणं च सेलगजक्खआरुहणं च रयणदीवदेवयाउवसग्गं च जिणरक्खियविवत्तिं च लवणसमुद्दउत्तरणं च चंपागमणं च सेलगजक्खआपुच्छणं च जहाभूयमवितहमसंदिद्धं परिकहेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते जिनपालिते पोताना माता पिता पासे पोते बन्ने भाइओ लवण समुद्रमां चाल्या, प्रतिकूळ वायु उत्पन्न थयो, पोतवहन (वहाण) भांग्युं, काष्ठना पाटीयानो खंड (बंनेने) प्राप्त थयो, रत्नद्वीपमां उतर्या, रत्नद्वीपनी देवता लइ जवाथी तेने घेर गया, तेणीनी साथे कामभोगनो वैभव भोगव्यो, रत्नद्वीपनी देवता लवण समुद्र साफ करवा गइ, शूळामां परोवेला पुरुषने जोयो, सेलक यक्ष उपर आरूढ थया, रत्नद्वीपनी देवताए उपसर्ग कर्या, तेमां जिनरक्षित चलित थवाथी तेनुं मरण थयुं, हुं सेलक यक्ष साथे लवण समुद्र उतर्यो, अने चंपानगरीए आव्यो, सेलक यक्षे मारी रजा मागी, ने ते गयो. विगेरे सर्व वृत्तांत जेवो बन्यो हतो तेवो साचेसाचो संदेह विना कही आप्यो.

मू०—तते णं जिणपालिए जाव अप्पसोगे जाव विपुलातिं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति ॥८७॥

अर्थ—त्यारपछी जिनपालित विगेरे सर्वे यावत् अल्प शोकवाळा—शोक रहित थइ यावत् विपुल कामभोगने भोगवता सता विचरवा लाग्या—रह्या. ८७

मू० ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीरे जाव जेणेव चंपानगरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव समोसढे। परिसा णिग्गया, कूणिओ वि राया निग्गओ। जिणपालिए धम्मं सोच्चा पव्वइए। एक्कारसअंगविऊ मासिएणं भत्तेणं जाव सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववन्ने दोसागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, जाव महाविदेहे सिज्झिहिति।

अर्थ—ते काळे ते समये श्रमण भगवान महावीरस्वामी यावत् ज्यां चंपानगरी हती अने ज्यां पूर्णभद्र चैत्य हतुं त्यां समवसर्या. तेमने वांदवा माटे पर्षदा नीकळी, कूणिक राजा पण नीकळ्यो. जिनपालिते धर्म सांभळी प्रव्रज्या अंगीकार करी. अनुक्रमे अग्यार अंग भणीने एक मासना अनशनवडे यावत् काळधर्म पामी सौधर्म कल्पमां देवपणे उत्पन्न थयो. त्यां बे सागरोपमनी तेनी स्थिति कही छे. त्यांथी चवी यावत् महाविदेह क्षेत्रमां सिद्धि पामशे.

मू०—एवामेव समणाउसो! जाव माणुस्सए कामभोगे णो पुणरवि आसाति, से णं जाव

वीतिवातिस्साति, जहा वा से जिणपालिए ।

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे आयुष्मान श्रमणो ! जे मनुष्य यावत् मनुष्य संबंधी कामभोगने फरीथी (मूकया पछी–दीक्षा लीधा पछी) इच्छता नथी, ते जिनपालितनी जेम यावत् संसारसमुद्रने ओळंगे छे–सिद्धि पदने पामे छे.

मू०–एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं नवमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि ॥ ८ ॥

। नवमं अज्झयणं समत्तं । ९ ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवान महावीर स्वामीए नवमा ज्ञाताध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे. ते प्रमाणे हुं तमने कहुं छुं.

अहीं आ ज्ञात (दृष्टांत) नो विशेष उपनय टीकाकारो आ प्रमाणे करे छे.—

जह रयणदीवदेवी, तह एत्थं अविरई महापावा । जह लाहत्थी वणिया, तह सुहकामा इहं जीवा ॥ १ ॥

अर्थ—जेम रत्नद्वीपनी देवता कही तेम अहीं (संसारमां) महा पापवाळी अविरति जाणवी. जेम लाभना अर्थी बे वाणीया कह्या तेम अहीं (संसारमां) सुखना कामी सर्व जीवो (बे प्रकारना) जाणवा. १.

जह तेहिं भीएहिं, दिट्ठो आघायमंडले पुरिसो । संसारदुक्खभीया, पासंति तहेव धम्मकहं ॥ २ ॥

अर्थ—जेम भय पामेला ते माकंदीपुत्रोए शूळीपर चडावेलो पुरुष जोयो, तेम संसारना दुःखथी भय पामेला जीवो धर्मकथकने (गुरुने) जुए. २.

जह तेण तेसि कहिया, देवी दुक्खाण कारणं घोरं । तत्तो चिय नित्थारो, सेलगजक्खाओ नन्नत्तो ॥ ३ ॥

अर्थ—जेम ते पुरुषे तेमने घोर दुःखनुं कारण देवी छे एम कह्युं, अने तेथी करीने सेलक यक्षथी ज निस्तार छे, बीजा कोइथी नथी, एम पण कह्युं. ३.

तह धम्मकही भव्वाण, साहए दिट्ठ अविरइसहावो । सयलदुहहेउभूओ, विसया विरयंति जीवाणं ॥४॥

अर्थ—ते ज प्रमाणे अहीं संसारमां पण धर्मकथक (गुरु) भव्य प्राणीओने सकल दुःखना कारणभूत पोते जोयेलो अविरतिनो स्वभाव कहे छे–बतावे छे अने जीवोने विषयोथी विराम पमाडे छे–पाछा फेरवे छे. ४.

सत्ताणं दुहत्ताणं, सरणं चरणं जिणिंदपन्नत्तं । आणंदरूवनिव्वाण–साहणं तह य देसेइ ॥ ५ ॥

अर्थ—तेमज वळी दुःखथी पीडाता प्राणीओने जिनेश्वरे कहेलुं एक चारित्र ज शरणरूप छे, अने आनंदरूप मोक्षने साधनारुं पण छे. एम गुरु देखाडे छे. ५.

जह तेसिं तरियव्वो, रुद्दसमुद्दो तहेव संसारो । जह तेसि सगिहगमणं, निव्वाणगमो तहा एत्थं ॥ ६ ॥

अर्थ—जेम ते वाणीयाओने भयंकर समुद्र तरवानो हतो, तेम अहीं संसार तरवानो छे, जेम तेमने पोताने घेर जवानुं हतुं, तेम अहीं मोक्षनगरमां जवानुं छे. ६.

जह सेलगपिट्ठाओ, भट्ठो देवीइ मोहियमईओ । सावयसहस्सपउरम्मि, सायरे पाविओ निहणं ॥ ७ ॥

जेम देवथी जिनरक्षितनी मति मोहित थइ एटले ते सेलक यक्षनी पीठपरथी पड्यो अने हजारो जळचर प्राणीओथी व्याप्त एवा सागरमां मरण पाम्यो. ७.

तह अविरईइ नडिओ, चरणचुओ दुक्खसावयाइण्णे । निवडइ अपारसंसार–सायरे दारुणसरूवे ॥ ८ ॥

अर्थ—तेम अविरतिए नचाव्यो–मोह पमाड्यो एवो जीव चारित्रथी भ्रष्ट थइ दुःखरूपी श्वापदोथी व्याप्त अने भयंकर स्वभाववाळा अपार संसारसागरमां पडे छे–भ्रमण करे छे. ८.

जह देवीए अक्खोहो, पत्तो सट्ठाण जीवियसुहाइं । तह चरणट्ठिओ साहू, अक्खोहो जाइ निव्वाणं ॥९॥

अर्थ—जेम जिनपालित देवीथी क्षोभ न पाम्यो अने तेथी ते पोताने स्थाने (घेर) जइ जीवित अने सुखने पाम्यो, तेम चरणमां स्थिर रहेलो साधु क्षोभ पाम्या विना मोक्षपदने पामे छे. ९.

इति नवम अध्ययन. ९.

अथ दशमुं चन्द्र नामनुं अध्ययन.

नवमा अध्ययनमां अविरतिने वश थयेला प्राणीने अनर्थनी प्राप्ति तथा अविरतिने वश नहीं थयेला प्राणीने अर्थ (सुख) नी प्राप्ति कही. हवे आ दशमा अध्ययनमां प्रमादीने गुणनी हानि थाय छे तथा अप्रमादीने गुणनी वृद्धि थाय छे, ए वात कहेवामां आवशे. तेनुं प्रथम सूत्र आ प्रमाणे.—

मू०—जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं णवमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दसमस्स णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ।

अर्थ—जंबूस्वामी सुधर्मास्वामीने पूछे छे के—हे भगवान् ! जो श्रमण भगवंत महावीरस्वामीए नवमा ज्ञात अध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे, तो दशमा ज्ञात अध्ययननो श्रमण भगवान महावीरे कयो अर्थ कह्यो छे ?

मू०—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे णामं नगरे होत्था, तत्थ णं रायगिहे णयरे सेणिए णामं राया होत्था । तस्स णं रायगिहस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थ णं गुणसेलए णामं चेइए होत्था ।

अर्थ—सुधर्मास्वामी उत्तर आपे छे.—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये राजगृह नामनुं नगर हतुं. ते

राजगृह नगरमां श्रेणिक नामे राजा हता. ते राजगृह नगरनी बहार उत्तर पूर्व (ईशान) दिशामां गुणशील नामनुं चैत्य (उद्यान) हतुं.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहं सुहेणं विहरमाणे जेणेव गुणसेलए चेइए तेणेव समोसढे । परिसा निग्गया । सेणिओ वि राया निग्गओ । धम्मं सोच्चा परिसा पडिगया ।

अर्थ—ते काळे ते समये श्रमण भगवान महावीरस्वामी पूर्वानुपूर्वीए (अनुक्रमे) विचरता एक गामथी बीजे गाम जता सुखे सुखे विहार करता ज्यां गुणशील नामनुं चैत्य हतुं त्यां समवसर्या. तेमने वांदवा माटे नगरमांथी पर्षदा नीकळी, श्रेणिक राजा पण नीकळ्या. धर्म सांभळी पर्षदा पाछी गइ.

मू०—तए णं गोयमसामी समणं भगवं महावीरं एवं वयासी—" कहं णं भंते ! जीवा वड्ढंति वा हायंति वा ? " ।

अर्थ—त्यारपछी गौतमस्वामीए श्रमण भगवान महावीरस्वामीने आ प्रमाणे कह्युं (पूछ्युं)—" हे भगवान ! जीवो केवी रीते वृद्धि पामे छे अने केवी रीते हानि पामे छे ? " जीवो द्रव्यथी अनंता छे अने दरेक जीव प्रदेशथी असंख्यात प्रदेशवाळा छे, तेथी तेमां कांइ वधघट थइ शकती नथी. तेथी करीने गुणोवडे केवी रीते वृद्धि पामे छे ? अने

गुणोवडे ज शी रीते हानि पामे छे १ ए प्रमाणे आ प्रश्ननुं रहस्य छे.

मू०—गोयमा ! से जहाणामए बहुलपक्खस्स पडिवयाचंदे पुण्णिमाचंदं पणिहाय हीणो (णे) वण्णेणं हीणे सोम्मयाए हीणे निद्धयाए हीणे कंतीए, एवं दित्तीए जुत्तीए छायाए पभाए ओयाए लेस्साए मंडलेणं, तयाणंतरं च णं बीयाचंदे पाडिवयं चंदं पणिहाय हीणतराए वण्णेणं जाव मंडलेणं, तयाणंतरं च णं ततियाचंदे बितियाचंदं पणिहाय हीणतराए वण्णेणं जाव मंडलेणं, एवं खलु एएणं कमेणं परिहायमाणे परिहायमाणे जाव अमावस्साचंदे चाउद्दसिचंदं पणिहाय नट्ठे वण्णेणं जाव नट्ठे मंडलेणं ।

अर्थ—भगवान महावीरस्वामी उत्तर आपे छे.—हे गौतम ! जेम कृष्णपक्षनी प्रतिपदानो चंद्र पूर्णिमाना चंद्रनी अपेक्षाए वर्णवडे—शुक्ल वर्णवडे हीन छे, सौम्यतावडे—सुखेथी जोवा लायकपणावडे हीन छे, स्निग्ध (अरूक्ष) एटले चीकाश—चकचकाटपणावडे हीन छे, कांतिवडे—मनोहरपणावडे हीन छे, ए ज प्रमाणे दीप्ति (वस्तुनो प्रकाश करी दीपवुं), युक्ति (आकाशनो संयोग), (छाया प्रतिबिंब अथवा शोभा), प्रभा (उदय वखते थती कांतिनी स्फुरणा), ओजस (दाहनी शांति

१ जरा पण खंडित थयेला चंद्रने पूर्णचंद्रनी अपेक्षाए आकाशनो संयोग ओछो होय छे.

करवी ए विगेरे पोतानुं कार्य करवानी शक्ति), लेश्या (किरणरूप लेश्या) अने मंडल (गोळ आकारपणुं), आ सर्व-वडे हीन होय छे. त्यारपछी ते ज कृष्णपक्षनी द्वितीयानो चंद्र प्रतिपदाना चंद्रनी अपेक्षाए वर्णवडे हीन होय छे यावत् मंडळवडे हीन होय छे. त्यारपछी तृतीयानो चंद्र द्वितीयाना चंद्रनी अपेक्षाए वर्णवडे हीन यावत् मंडळवडे हीन होय छे. आ प्रमाणे निश्चे आ ज क्रमे करीने ते कृष्णपक्षनो चंद्र वर्णादिक वडे हीन थतो थतो यावत् अमावास्यानो चंद्र कृष्ण चतुर्दशीना चंद्रनी अपेक्षाए वर्णादिकवडे सर्वथा नष्ट थाय छे, यावत् मंडळवडे नष्ट थाय छे अर्थात् सर्वथा प्रकारे वर्णादिकनो नाश थाय छे.

मू०—एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वइए समाणे हीणे खंतीए एवं मुत्तीए गुत्तीए अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं सच्चेणं तवेणं चियाए अकिंचणयाए बंभचेर-वासेणं, तयाणंतरं च णं हीणे हीणतराए खंतीए जाव हीणतराए बंभचेरवासेणं, एवं खलु एएणं कमेणं परिहायमाणे परिहायमाणे णट्ठे खंतीए जाव णट्ठे बंभचेरवासेणं ।

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे आयुष्मान श्रमण ! जे अमारा साधु के साध्वी यावत् प्रव्राजित थया सता क्षांतिगुणवडे हीन थाय, ए ज प्रमाणे मुक्ति (निर्लोभता) वडे, आर्जववडे, मार्दववडे, लाघववडे, सत्यवडे, तपवडे, त्यागवडे, अकिंचनपणा-वडे अने ब्रह्मचर्यवडे—आ दश गुणवडे हीन थाय छे. त्यारपछी क्षांतिवडे हीन, अति हीन थाय छे. यावत् ब्रह्मचर्यवडे

हीन अतिहीन थाय छे, ए प्रमाणे निश्चे आ क्रमवडे गुणनी हानि पामता पामता छेवट क्षांतिवडे सर्वथा नष्ट थाय छे यावत् ब्रह्मचर्यवडे सर्वथा नष्ट थाय छे. अहीं कुशीलना संगथी, सद्गुरुनी आज्ञामां नहीं रहेवाथी, प्रतिदिन प्रमादनुं सेवन करवाथी अने तेवा प्रकारना चारित्रावरण कर्मना उदयथी क्षांति विगेरे गुणोनी हानि थाय छे, अने तेनाथी विपरीत वर्तता ते ते गुणोनी वृद्धि थाय छे, एम जाणवुं. आ प्रमाणे गुणथी हीन थता जीवोने इच्छित एवा निर्वाण सुखनी प्राप्ति थती नथी.

मू०—से जहा वा सुक्कपक्खस्स पाडिवयाचंदे अमावासाए चंदं पणिहाय अहिए वण्णेणं जाव अहिए मंडलेणं, तयाणंतरं च णं बिइयाचंदे पडिवयाचंदं पणिहाय अहिययराए वण्णेणं जाव अहिययराए मंडलेणं। एवं खलु एएणं कमेणं परिवुड्ढेमाणे परिवुड्ढेमाणे जाव पुण्णिमाचंदे चाउद्दसिं चंदं पणिहाय पडिपुण्णे वण्णेणं जाव पडिपुण्णे मंडलेणं ।

अर्थ—जेम शुक्लपक्षनी प्रतिपदानो चंद्र अमावास्याना चंद्रनी अपेक्षाए वर्णवडे अधिक होय छे, यावत् मंडलवडे अधिक होय छे, त्यारपछी शुक्ल द्वितीयानो चंद्र शुक्लप्रतिपदाना चंद्रनी अपेक्षाए वर्णवडे वधारे अधिक होय छे, यावत् मंडलवडे वधारे अधिक होय छे. ए प्रमाणे निश्चे आ अनुक्रमे करीने वृद्धि पामतो वृद्धि पामतो यावत् पूर्णिमानो चंद्र शुक्ल चतुर्दशीना चंद्रनी अपेक्षाए वर्णवडे परिपूर्ण थाय छे, यावत् मंडलवडे परिपूर्ण थाय छे.

मू०—एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वतिए समाणे अहिए खंतीए जाव बंभचेरवासेणं, तया-

णंतरं च णं अहिययराए खंतीए जाव बंभचेरवासेणं। एवं खलु एएणं कमेणं परिवड्ढेमाणे परिवड्ढेमाणे जाव पडिपुन्ने बंभचेरवासेणं, एवं खलु जीवा वड्ढंति वा हायंति वा।

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे आयुष्मान श्रमण! अमारा साधु साध्वी यावत् प्रव्रजित थया सता क्षांतिवडे अधिक थाय छे, यावत् ब्रह्मचर्यवडे अधिक थाय छे, त्यारपछी क्षांतिवडे वधारे वधारे अधिक थाय छे, यावत् ब्रह्मचर्यवडे वधारे वधारे अधिक थाय छे. आ प्रमाणे निश्चे आ अनुक्रमवडे वृद्धि पामता पामता यावत् ब्रह्मचर्यवडे परिपूर्ण थाय छे, आ प्रमाणे निश्चे जीवो वृद्धि पामे छे अने हानि पामे छे. अहीं पण हानिना कारणथी उलटापणे समजवुं, एटले के–सुशीलना संगथी, सद्गुरुनी सेवा करवाथी, प्रतिदिन अप्रमादी रहेवाथी अने तेवा प्रकारना चारित्रावरण कर्मना क्षयोपशमथी क्षांति आदिक गुणो वृद्धि पामे छे अने गुणनी वृद्धि थतां थतां छेवट परिपूर्ण गुणवान थइ वांछित अर्थ (मोक्ष) ने प्राप्त करे छे.

मू०–एवं खलु जंबू! समणेणं भगवता महावीरेणं दसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते त्ति बेमि ॥ ८९ ॥

। दसमं णायज्झयणं समत्तं । १०

अर्थ—ए प्रमाणे निश्चे हे जंबू! श्रमण भगवान महावीर स्वामीए दशमा ज्ञाताध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे. ते प्रमाणे में तमने कह्यो.

आ दशमा अध्ययननो विशेष उपनय आ प्रमाणे.

जह चंदो तह साहू, राहुवरोहो जहा तह पमाओ। वण्णाई गुणगणो जह, तहा खमाई समणधम्मो ॥ १ ॥

जेम चंद्र कह्यो, तेम अहीं साधु जाणवा. जेम चंद्रने नित्य राहुनो उपरोध–आवरण थाय छे, तेम अहीं प्रमादनो उपरोध जाणवो. जेम चंद्रना वर्णादिक गुणो तेम अहीं साधुना क्षमादिक श्रमणधर्मरूपी गुणो जाणवा. १.

पुण्णो वि पइदिणं जह, हायंतो सव्वहा ससी नस्से। तह पुण्णचरित्तो वि हु, कुसीलसंसग्गिमाईहिं ॥ २ ॥

जेम चंद्र पूर्ण छतां पण प्रतिदिन हानि पामतो पामतो छेवट सर्वथा क्षय पामे छे, तेम साधु चारित्रगुणवडे पूर्ण छतां पण कुशील विगेरेना संगथी छेवट सर्वथा चारित्र भ्रष्ट थइ नष्ट थाय छे. २.

जणियपमाओ साहू, हायंतो पइदिणं खमाईहिं। जायइ नट्ठचरित्तो, तत्तो दुक्खाइं पावेइ ॥ ३ ॥

प्रमादमां पडेलो साधु प्रतिदिन क्षमादिक गुणोवडे हानि पामतो पामतो छेवट पोताना चारित्रनो सर्वथा नाश करे छे, अने तेथी करीने ते अत्यंत दुःख पामे छे. ३.

हीणगुणो वि हु होउं, सुहगुरुजोगाइजणियसंवेगो। पुण्णसरूवो जायइ, विवड्ढमाणो ससहरो व्व ॥४॥

साधु प्रथम हीन गुणवाळो होय तो पण ते शुभ गुरुना संयोग विगेरेवडे उत्कट संवेगने उत्पन्न करी शुक्लपक्षना चंद्रनी जेम प्रतिदिन वृद्धि पामतो पामतो संपूर्ण चारित्रीना स्वरूपवाळो थाय छे. ४.

इति दशम अध्ययन. १०

अथ अग्यारमुं दावद्रव नामनुं अध्ययन.

प्रमादीने गुणनी हानि थाय छे अने अप्रमादीने गुणनी वृद्धि थाय छे, एम उपरना अध्ययनमां कह्युं. हवे मार्गनी आराधना करनारने अर्थनी प्राप्ति थाय छे अने मार्गनी विराधना करनारने अनर्थनी प्राप्ति थाय छे, ए आ अध्ययनमां कहेवाय छे. ते संबंधी आ प्रथम सूत्र छे.—

मू०—जति णं भंते ! दसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, एक्कारसस्स णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ।

अर्थ—जंबूस्वामी सुधर्मास्वामीने पूछे छे-हे भगवान ! जो श्रमण भगवान महावीरस्वामीए दशमा ज्ञाताध्ययनना आ (उपर कह्या प्रमाणे) अर्थ कह्यो छे, तो हे भगवान ! अग्यारमा ज्ञाताध्ययननो श्रमण भगवान महावीरस्वामीए क्यो अर्थ कह्यो छे ?

मू०—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे णामं णयरे होत्था । तत्थ णं रायगिहे णयरे सेणिए णामं राया होत्था । तस्स णं रायगिहस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे

दिसीभाए एत्थ णं गुणसेलिए णामं चेइए होत्था ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये राजगृह नामनुं नगर हतुं. ते राजगृह नगरमां श्रेणिक नामे राजा हता. ते राजगृह नगरनी बहार उत्तर-पूर्व (ईशान) दिशामां गुणशील नामे चैत्य (उद्यान) हतुं.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव गुण-सेलए णामं चेइए तेणेव समोसढे । राया निग्गओ, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया ।

अर्थ—ते काळे ते समये श्रमण भगवान महावीर स्वामी पूर्वानुपूर्वीए—अनुक्रमे एक गामथी बीजे गाम विचरता यावत् ज्यां गुणशील नामनुं चैत्य हतुं त्यां समवसर्या. राजा श्रेणिक भगवानने वांदवा नीकळ्या, पर्षदा पण नीकळी. भगवाने धर्म कह्यो. पर्षदा सर्व धर्म सांभळी पाछी गइ.

मू०—तए णं गोयमे समणं भगवं महावीरं एवं वदासी—“ कहं णं भंते ! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवंति ? ”।

अर्थ—त्यारपछी गौतमस्वामीए श्रमण भगवान महावीरने आ प्रमाणे कह्युं (पूछ्युं)—“ हे भगवान ! जीवो केवी रीते आराधक के विराधक थाय छे ? ”

मू०—गोयमा ! से जहाणामए एगंसि समुद्दकूलंसि दावद्दवा नामं रुक्खा पण्णत्ता—किण्हा जाव निउरुंबभूया पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियगरेरिज्जमाणा सिरीए अतीव उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठंति।

अर्थ—भगवान महावीर स्वामी उत्तर आपे छे—हे गौतम ! जेम समुद्रने कांठे दावद्रव नामना वृक्षो कहेला छे, ते कृष्ण वर्णवाळा यावत् निकुरंब (गुच्छा) रूप छे, पर्णवाळा, पुष्पवाळा, फळवाळा, हरित (लीला) वर्णवडे मनोहर अने लक्ष्मी (शोभा) ए करीने अत्यंत शोभता शोभता रहेला छे.

मू०—जया णं दीविच्चगा ईसिंपुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति, तदा णं बहवे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठंति। अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा जुन्ना झोडा परिसडियपंडुपत्तपुप्फफला सुक्करुक्खओ विव मिलायमाणा चिट्ठंति।

अर्थ—पछी ज्यारे द्वीप संबंधी ईषत्पुरोवात एटले कांइक स्नेहवाळा अथवा पूर्वदिशा संबंधी वायु, पथ्यवात एटले वनस्पतिने सामान्य रीते हितकारक वायु अथवा पश्चात् वात एटले पाछळना वायु, मंद एटले धीमे धीमे वाता वायु तथा महावात एटले प्रचंड वायु वाय छे त्यारे ते घणा दावद्रव नामना वृक्षो पर्णवाळा यावत् रहेला छे, तेमांथी केटलाक दाव-

द्रव नामना वृक्षो जीर्ण जेवा थइ जाय छे, झोड एटले तेना पर्णादिक सडी जाय छे, तेथी करीने ते वृक्षो पडी गयेलां पीळां पांदडां, पुष्प अने फळवाळा थइ जाय छे, अने तेथी करीने शुष्क वृक्षनी जेम म्लानि पाम्या सता म्लानि पाम्या सता (करमाया सता) रहे छे.

मू०—एवामेव समणाउसो ! जे अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वतिते समाणे बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं सम्मं सहति जाव अहियासेति बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं नो सम्मं सहति जाव नो अहियासेति एस णं मए पुरिसे देसविराहए पण्णत्ते समणाउसो ! ।

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे आयुष्मान श्रमणो ! जे अमारा साधु के साध्वी प्रव्रजित थया पछी घणा साधु, घणी साध्वी, घणा श्रावक अने घणी श्राविकाना प्रतिकूळ वचनने सम्यक् प्रकारे निर्भयपणे सहन करे यावत् विशेषे करीने निश्चयपणे सहन करे, अने घणा अन्य तीर्थिकोना तथा घणा गृहस्थोना दुर्वचनने सम्यक् प्रकारे सहन न करे यावत् विशेषे करीने सहन न करे, तो तेवा पुरुषने हे आयुष्मान श्रमणो ! में देशविराधक कह्या छे.

मू०—जया णं सामुद्दगा ईसिंपुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाता वायंति तदा णं बहवे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा मिलायमाणा चिट्ठंति । अप्पेगइया दावद्दवा

रुक्खा पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठंति ।

अर्थ—ज्यारे समुद्र संबंधी ईषत् पुरोवात एटले कांइक स्नेहवाळा अथवा पूर्व दिशा संबंधी वायु, पथ्यवात एटले सामान्य रीते वनस्पतिने हितकारक वायु अथवा पश्चात् वात एटले पाछळना वायु, मंद एटले धीमे धीमे वाता वायु तथा महावात प्रचंड वायु वाय छे, त्यारे घणा दावद्रव नामना वृक्षो जीर्ण जेवा थइ जाय छे, झाड एटले तेनां पांदडां सडी जाय छे, यावत् म्लानि पाम्या (करमाइ गया) सता रहे छे. तथा केटलाएक दावद्रव नामना वृक्षो पांदडांवाळा, पुष्पोवाळा यावत् शोभता सता शोभता सता रहे छे.

मू०—एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वतिए समाणे बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं सम्मं सहति, बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं नो सम्मं सहति, एस णं मए पुरिसे देसाराहए पण्णत्ते समणाउसो ! ।

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे आयुष्मान श्रमणो ! जे अमारा साधु के साध्वी प्रव्रज्या लीधा पछी घणा अन्यतीर्थिकोना अने घणा गृहस्थोना वचनने सम्यक् प्रकारे सहन करे, अने घणा साधुओ, घणी साध्वीओ, घणा श्रावको तथा घणी श्राविकाओनां वचनने सम्यक् प्रकारे सहन न करे, तो हे आयुष्मान श्रमणो ! ते पुरुषने में देशआराधक कह्या छे.

मू०—जया णं नो दीविच्चगा णो सामुद्दगा ईसिंपुरेवाया पच्छावाया जाव महावाया वायंति,

तते णं सव्वे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा मिलायमाणा चिट्ठंति ।

अर्थ—ज्यारे द्वीप संबंधी अने समुद्र संबंधी एक पण ईषत् पुरोवात, पथ्य के पश्चात् वात, यावत् महावायु वातो नथी, त्यारे सर्व दावद्रव नामना वृक्षो जीर्ण जेवा थइ जाय छे, तेनां पांदडां सडी जाय छे, यावत् म्लानि पाम्या सता म्लानि पाम्या सता रहे छे.

मू०एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वतिए समाणे बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं बहूणं अन्नउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं नो सम्मं सहाति, एस णं मए पुरिसे सव्वविराहए पण्णत्ते समणाउसो ! ।

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे आयुष्मान श्रमणो ! जे अमारा साधु के साध्वी प्रव्रज्या लइने घणा साधु, घणी साध्वी, घणा श्रावक, घणी श्राविका, घणा अन्य तीर्थिको अने घणा अन्य तीर्थिकोना गृहस्थोना दुर्वचनने सम्यक् प्रकारे सहन न करे, तो हे आयुष्मान् श्रमणो ! ते पुरुषने में सर्वविराधक कह्या छे.

मू०—जया णं दीविच्चगा वि सामुद्दगा वि ईसिंपुरेवाया पच्छावाया जाव वायंति, तदा णं सव्वे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठंति ।

अर्थ—ज्यारे द्वीप संबंधी अने समुद्र [illegible]

सर्वे दावद्रव नामना वृक्षो पत्रवाळा पुष्पवाळा यावत् शोभता शोभता रहे छे.

मू०—एवामेव समणाउसो ! जे अम्हं पव्वतिए समाणे बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं बहूणं अन्नउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं सम्मं सहति, एस णं मए पुरिसे सव्वाराहए पण्णत्ते समणाउसो ! । एवं खलु गोयमा ! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवंति ।

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे आयुष्मान श्रमणो ! जे अमारा साधु के साध्वी प्रव्रज्या लइने घणा साधुओ, घणी साध्वीओ, घणा श्रावको, घणी श्राविकाओ, घणा अन्य तीर्थिको अने घणा अन्य तीर्थिकना गृहस्थोना दुर्वचनने सम्यक् प्रकारे सहन करे, तो हे आयुष्मान श्रमणो ! ते पुरुषने में सर्व आराधक कह्यो छे. ए प्रमाणे निश्चे हे गौतम ! जीवो आराधक अने विराधक थाय छे.

मू०—एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेण एक्कारसमस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि ॥१०॥

एक्कारसमं नायज्झयणं समत्तं. ११.

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवान महावीर स्वामीए अग्यारमा ज्ञाताध्ययननो आ प्रमाणे अर्थ कह्यो छे, ते में तमने कह्यो.

७

चारे विकल्पनी विशेष भावना—जेम दावद्रव नामना वृक्षनो समूह स्वभावथी ज द्वीपना वायुवडे घणा विभागमां पोतानी संपदानी समृद्धिने अनुभवे छे अने थोडा विभागमां असमृद्धिने अनुभवे छे १, तथा समुद्रना वायु वाय त्यारे घणा विभागमां असमृद्धिने अने थोडा विभागमां समृद्धिने अनुभवे छे २, तथा बन्ने वायुनो अभाव होय त्यारे सर्वथा प्रकारे असमृद्धिने ज अनुभवे छे ३, तथा बन्ने वायु वाता होय त्यारे सर्वथा समृद्धिने ज अनुभवे छे ४. ते ज प्रमाणे साधु पण कुतीर्थिक अने तेना गृहस्थोना दुर्वचनने सहन न करे तो क्षांति छे प्रधान जेमां एवा ज्ञानादिक मोक्षमार्गनी देशथी विराधना थइ कहेवाय, अने बहुमान करवा लायक साधु विगेरेना दुर्वचनने सहन करे तेथी घणा देशे आराधना करी कहेवाय १, तथा साधु विगेरेना दुर्वचनने सहन न करे अने कुतीर्थिओना दुर्वचन सहन करे तो घणा देशे विराधना अने थोडा देशे आराधना करी कहेवाय २, तथा बन्नेना दुर्वचनने सहन न करे तो सर्वथा विराधना करी कहेवाय ३, तथा बन्नेना दुर्वचनने सहन करे तो सर्वथा आराधना करी कहेवाय. ४.

अहीं विशेष घटना आ प्रमाणे करवी.—

जह दावद्दवतरुवण-मेवं साहू जहेव दीविच्चा । वाया तह समणाइय-सपक्खवयणाइं दुसहाइं ॥ १ ॥

जेम दावद्रव नामना वृक्षोनुं वन कह्युं, तेम साधु समजवा, जेम द्वीपना वायु कह्या; तेम साध्वादिक स्वपक्षनां दुःसह वचनो जाणवा. १.

जह सामुद्दयवाया, तहऽण्णतित्थाइकडुयवयणाइं । कुसुमाइसंपया जह, सिवमग्गाराहणा तह उ ॥ २ ॥

जेम समुद्रना वायु कह्या, तेम अन्य तीर्थिकादिनां दुर्वचनो जाणवां, जेम पुष्पादिकनी संपदा कही, तेम मोक्षमार्गनी आराधना जाणवी. २

जह कुसुमाइविणासो, सिवमग्गविराहणा तहा नेया। जह दीववाउजोगे बहु इड्डी ईसि य अणिड्डी ॥ ३ ॥

जेम पुष्पादिकनी समृद्धिनो विनाश कह्यो, तेम मोक्षमार्गनी विराधना जाणवी. जेम द्वीपना वायुना योगे घणी समृद्धि अने थोडी असमृद्धि कही. ३.

तह साहम्मियवयणाण सहमाणाराहणा भवे बहुया। इयराणमसहणे पुण, सिवमग्गविराहणा थोवा ॥४॥

तेम साधर्मिकनां वचनोने सहन करवाथी मोक्षमार्गनी घणी आराधना थाय, अने अन्य तीर्थिकादिकनां दुर्वचनो नहीं सहन करवाथी मोक्षमार्गनी अल्प विराधना थाय तेम जाणवुं. ४.

जह जलहिवाउजोगे, थेविड्डी बहुयरा यऽणिड्डी य। तह परपक्खक्खमणे, आराहणमीसि बहु य यरं ॥५॥

जेम समुद्रना वायुनो योग थवाथी पुष्पादिकनी थोडी समृद्धि थाय अने घणी असमृद्धि थाय छे, तेम परपक्ष (कुतीर्थिकादिक) नां दुर्वचनो सहन करवाथी आराधना थोडी अने इतर एटले विराधना घणी थाय छे. ५.

जह उभयवाउविरहे, सव्वा तरुसंपया विणट्ठ त्ति। अनिमित्तोभयमच्छर--रूवे विराहणा तह य ॥ ६ ॥

जेम बन्ने वायुने अभावे सर्व वृक्षोनी पुष्पादिक समृद्धि विनाश पामे छे, तेम निमित्त (कारण) विना स्वपक्ष अने

परपक्ष ए बन्नेनां दुर्वचन नहीं सहन करवारूप मत्सर धारण करवाथी सर्वथा मोक्षमार्गनी विराधना थाय छे. ६.

जह उभयवाउजोगे, सव्वसमिद्धी वणस्स संजाया । तह उभयवयणसहणे, सिवमग्गाराहणा वुत्ता ॥७॥

जेम द्वीप अने समुद्र बन्नेना वायुनो योग थवाथी वननी सर्व समृद्धि थाय छे, तेम स्वपक्ष अने परपक्ष ए बन्नेनां दुर्वचनो सहन करवाथी मोक्षमार्गनी आराधना कहेली छे. ७.

ता पुन्नसमणधम्मा-राहणचित्तो सया महासत्तो । सव्वेण वि कीरंतं, सहेज्ज सव्वं पि पडिकूलं ॥ ८ ॥

ते कारण माटे संपूर्ण श्रमण (साधु) धर्मनी आराधनामां ज निरंतर जेनुं चित्त रह्युं होय एवा महा सत्त्ववान साधुए स्वपर सर्व पक्षवाळा जे कांइ प्रतिकूळ वचन कहे ते सर्व सहन करवुं. ८.

इति अग्यारमुं ज्ञाताध्ययन संपूर्ण. ११

अथ बारमुं उदकज्ञात नामनुं अध्ययन.

पूर्व अध्ययनमां चारित्रधर्मनी आराधना अने विराधना कही. हवे स्वभावथी मलिन चित्तवाळा भव्यजीवोने पण सद्गुरुनी सेवाथी चारित्रनी आराधना थाय छे ते कहेवा माटे उदक (पाणी) नुं दृष्टांत आपे छे.—

मू०—जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं एक्कारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, बारसमस्स णं नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते।

अर्थ—जंबूस्वामी सुधर्मास्वामीने पूछे छे.—जो हे भगवान ! श्रमण भगवान यावत् सिद्धिपदने पामेला महावीर स्वामीए अग्यारमा ज्ञात अध्ययननो आ (उपर कह्या) प्रमाणे अर्थ कह्यो छे, तो बारमा ज्ञाताध्ययननो कयो अर्थ कह्यो छे ?

मू०—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं चंपा णामं णयरी होत्था। पुण्णभद्दे चेइए। तीसे णं चंपाए णयरीए जियसत्तू णामं राया होत्था। तस्स णं जितसत्तुस्स रण्णो धारिणी नामं देवी होत्था अहीणा जाव सुरूवा। तस्स णं जितसत्तुस्स रन्नो पुत्ते धारिणीए अत्तए अदीणसत्तू णामं कुमारे जुवराया वि होत्था। सुबुद्धी अमच्चे जाव रज्जधुराचिंतए समणोवासए अहि-

गयजीवाजीवे ।

अर्थ—सुधर्मा स्वामी उत्तर आपे छे—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू! ते काळे ते समये चंपा नामनी नगरी हती. ते नगरीनी वहार पूर्णभद्र नामनुं चैत्य हतुं. ते चंपानगरीमां जितशत्रु नामे राजा हतो. ते जितशत्रु राजाने धारिणी नामनी राणी हती, ते संपूर्ण पंचेंद्रियवाळी यावत् सारा रूपवाळी हती. ते जितशत्रु राजानो पुत्र धारिणीनो आत्मज अदीनशत्रु नामनो कुमार युवराज हतो. ते राजाने सुबुद्धि नामनो अमात्य हतो. ते यावत् राज्यधुरानो चिंतक श्रमणोपासक (श्रावक) अने जीवाजीवादिक पदार्थोने जाणनार हतो.

मू०-तीसे णं चंपाए एयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमेणं एगे फरिहोदए यावि होत्था, मेयवसामंसरुहिरपूयपडलपोच्चडे मयगकलेवरसंछण्णे अमणुण्णे वण्णेणं जाव फासेणं । से जहानामए अहिमडेति वा गोमडेति वा जाव मयकुहियविणट्ठकिमिणवावण्णदुरभिगंधे किमिजालाउले संसत्ते असुइविगयबीभत्थदरिसणिज्जे, भवेयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे, एत्तो अणिट्ठतराए चेव जाव गंधेणं पण्णत्ते ॥ ९१ ॥

अर्थ—ते चंपा नगरीनी वहार उत्तरपूर्व (ईशान) दिशामां एक खाइमां पाणी हतुं. ते मेद–चरबी, वसा–नसो,

मांस, रुधिर अने परुना समूहवडे व्याप्त हतुं, मडदांनां कलेवरोथी ढंकायेलुं हतुं, वर्णवडे यावत् स्पर्शवडे अमनोज्ञ–असुंदर हतुं, जेम कोइ सर्पनुं मडदुं होय, अथवा गायनुं मडदुं होय, यावत् मरेलुं, कोही गयेलुं, विनष्ट–सोजा विगेरेवडे फूली जवाथी विकार पामेलुं, कीडावडे व्याप्त थयेलुं, व्यापन्न–जनावरोए खाधेलुं एवुं मडदुं होय तेना जेवुं दुरभिगंधवाळुं हतुं, करमीयाना (पूराना) समूहथी व्याप्त हतुं, संसक्त–जीवाकुळ हतुं, अशुचि–अपवित्र हतुं, विगत–कागडा कूतरादिक जीवना खावाथी बीभत्स–बीहामणुं छे दर्शन जेनुं एवुं हतुं. शुं आ उपर कहेला स्वरूपवाळुं हतुं? ना, ए अर्थ समर्थ–योग्य नथी, पण तेथी घणुं ज वधारे दुर्गंधि अने अत्यंत अनिष्ट हतुं एम कहेलुं छे. ६१.

मू०–तते णं से जितसत्तू राया अण्णदा कदाइ ण्हाए कयबलिकम्मे जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे बहूहिं राईसर जाव सत्थवाहपभितिहिं सद्धिं भोयणवेलाए सुहासणवरगए विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं जाव विहरति, जिमितभुत्तुत्तराए जाव सुईभूए तंसि विपुलंसि असण जाव जायविम्हए ते बहवे ईसर जाव पभितीए एवं वयासी—

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु राजा एकदा कदाचित् स्नान करी, बलिकर्म (पूजा) करी, यावत् थोडा अने मोटी किंमतवाळा आभूषणोवडे शरीरने अलंकृत करी घणा राजा, ईश्वर, यावत् सार्थवाह विगेरेनी साथे भोजन समये श्रेष्ठ सुखासनपर बेसी विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने जमतो सतो यावत् विचरतो हतो–जमतो हतो. ते जमी

रह्या पछी यावत् हाथ मुख धोवावडे पवित्र थइ ते विपुल अशनादिकने विषे-तेनाथी यावत् विस्मय पामी ते घणा राजा, ईश्वर, यावत् सार्थवाह विगेरेने आ प्रमाणे कहेवा लाग्यो.—

मू०—" अहो णं देवाणुप्पिया ! इमे मणुण्णे असणं पाणं खाइमं साइमं वण्णेणं उववेए जाव फासेणं उववेते अस्सायणिज्जे विस्सायणिज्जे पीणणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे बिंहणिज्जे सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे "।

अर्थ—अहो देवानुप्रियो ! आ मनोज्ञ-मनोहर अशन, पान, खादिम अने स्वादिम सारा वर्णवडे सहित छे यावत् सारा स्पर्शवडे सहित छे (आ अशनादिकना वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श अति उत्तम छे), वळी शेरडी विगेरेनी जेम आस्वाद करवा लायक छे, खारेक विगेरेनी जेम विस्वाद करवा लायक छे, प्रीणनीय एटले पुष्टिकारक छे, दीपनीय एटले अंगोपांगना बळने दीपावनार छे, दर्पणीय-दर्पने उत्पन्न करनार छे, मदनीय-कामदेवना मदने उत्पन्न करनार छे, बृंहणीय एटले बळ विगेरेने वृद्धि पमाडनार छे, तेथी सर्व इंद्रियो अने गात्रने आनंद उत्पन्न करनार छे."

मू०—तते णं ते बहवे ईसर जाव पभिइओ जितसत्तुं एवं वदासी—" तहेव णं सामी ! जं णं तुब्भे वदह, अहो णं इमे मणुण्णे असणं पाणं खादिमं सादिमं वण्णेणं उववेए जाव पल्हायणिज्जे "।

अर्थ—त्यारपछी (ते सांभळीने) घणा राजाओ यावत् सार्थवाह विगेरेए जितशत्रु राजाने आ प्रमाणे कह्युं—" हे

स्वामी ! जेम तमे कहो छो, ते तेम ज छे. अहो ! आ मनोज्ञ अशन, पान, खादिम अने स्वादिम श्रेष्ठ वर्णवडे युक्त छे यावत् सर्व इंद्रिय अने गात्रने आल्हाद करनार छे. ते सत्य छे."

मू०—तते णं जितसत्तू सुबुद्धिं अमच्चं एवं वदासी—" अहो ! णं सुबुद्धी ! इमे मणुण्णे असणं पाणं खादिमं सादिमं जाव पल्हायणिज्जे ।

अर्थ—त्यारपछी जितशत्रु राजाए सुबुद्धि अमात्यने आ प्रमाणे कह्युं—" अहो सुबुद्धि ! आ मनोज्ञ अशन, पान, खादिम अने स्वादिम श्रेष्ठ वर्णादिकवडे युक्त छे यावत् सर्व इंद्रियो अने गात्रने आल्हादकारक छे."

मू०—तए णं सुबुद्धी जितसत्तुस्सेयमट्ठं नो आढाइ जाव तुसिणीए संचिट्ठति ।

अर्थ—त्यारे ते सुबुद्धि अमात्ये जितशत्रु राजाना आ अर्थनो आदर कर्यो नहीं, यावत् तूष्णीं-मौन धारण करीने रह्यो.

मू०—तते णं जितसत्तुणा सुबुद्धी दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे जितसत्तुं रायं एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी जितशत्रु राजाए सुबुद्धि अमात्यने बीजी वार त्रीजी वार आ प्रमाणे कहे सते-कह्युं त्यारे सुबुद्धिए जितशत्रु राजाने आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—" नो खलु सामी ! अहं एयंसि मणुण्णंसि असणपाणखादिमसादिमंसि केइ विम्हए ।

एवं खलु सामी ! सुब्भिसद्दा वि पुग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति, दुब्भिसद्दा वि पोग्गला सुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति । सुरूवा वि पोग्गला दुरूवत्ताए परिणमंति, दुरूवा वि पोग्गला सुरूवत्ताए परिणमंति । सुब्भिगंधा वि पोग्गला दुब्भिगंधत्ताए परिणमंति, दुब्भिगंधा वि पोग्गला सुब्भिगंधत्ताए परिणमंति । सुरसा वि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमंति, दुरसा वि पोग्गला सुरसत्ताए परिणमंति । सुहफासा वि पोग्गला दुहफासत्ताए परिणमंति, दुहफासा वि पोग्गला सुहफासत्ताए परिणमंति । पओगवीससापरिणया वि य णं सामी ! पोग्गला पण्णत्ता " ।

अर्थ—" हे स्वामी ! हुं आ मनोज्ञ अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने विषे कांइ पण आश्चर्य पामतो नथी. केमके आ प्रमाणे निश्चे हे स्वामी ! सुरभि (उत्तम-श्रेष्ठ) शब्दवाळा पुद्गळो पण दुरभि (अशुभ) शब्दपणाए करीने परिणमे छे अने दुरभि शब्दवाळा पुद्गलो पण सुरभि शब्दपणाए करीने परिणमे छे. सारा रूपवाळा पुद्गळो पण खराब रूपपणे परिणमे छे अने खराब रूपवाळा पुद्गळो सारा रूपपणे परिणमे छे. सुगंधवाळा पुद्गलो पण दुर्गंधपणाए परिणमे छे अने दुर्गंधवाळा पुद्गलो पण सुगंधपणाए परिणमे छे. सरस पुद्गलो पण नीरसपणाए करीने परिणमे छे अने नीरस पुद्गलो पण सरसपणाए करीने परिणमे छे. शुभ स्पर्शवाळा पुद्गलो पण अशुभ स्पर्शपणे परिणमे छे अने अशुभ स्पर्शवाळा पुद्गलो पण शुभ स्पर्शपणे परिणमे छे. हे स्वामी ! सर्व पुद्गलो प्रयोग अने विश्रसाए करीने परिणाम पामनारा

कह्या छे, एटले के प्रयोगवडे–जीवना व्यापार (उद्यम) वडे पण पुद्गलो सारा नरसा परिणामने पामे छे अने विश्रसा-वडे एटले जीवना व्यापार विना स्वाभाविकपणे पण सारा नरसा परिणामने पामे छे, अर्थात् सारा होय ते नरसा थाय छे अने नरसा होय ते सारा पण थाय छे.

मू०–तते णं से जितसत्तू सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमातिक्खमाणस्स एयमट्ठं नो आढाति नो परियाणई तुसिणीए संचिट्ठइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु राजाए सुबुद्धि अमात्यना आ कहेला वचननो आदर कर्यो नहीं (सत्य मान्युं नहीं), जाण्युं नहीं अने मुंगो रह्यो.

मू०–तए णं से जितसत्तू अण्णदा कदाई ण्हाए आसखंधवरगते महया भडचडगरहआसवाहणियाए निज्जायमाणे तस्स फरिहोदगस्स अदूरसामंतेणं वीतीवयइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु राजा एकदा कदाचित् स्नान करी विभूषित थइ अश्वरूपी श्रेष्ठ स्कंध (पुद्गलोना समूह) उपर अथवा स्कंधनी पासेनो पीठनो भाग पण स्कंध कहेवाय छे तेथी श्रेष्ठ अश्वना स्कंध (पीठ) उपर आरूढ थइ मोटा (घणा) भट, सुभट विगेरे घोडेस्वारो सहित नगरीमांथी नीकळी ते खाइना पाणीनी नजीक थइने नीकळ्यो.

मू०–तते णं जितसत्तू राया तस्स फरिहोदगस्स असुभेणं गंधेणं अभिभूते समाणे सएणं

उत्तरिज्जगेणं आसगं पिहेइ, एगंतं अवक्कमति, ते बहवे ईसर जाव पभितिओ एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु राजाए ते खाइनां पाणीना अशुभ गंधवडे पराभव पामवाथी पोताना उत्तरीय वस्त्र (खेस) वडे पोतानुं मुख ढांकी दीधुं, ते एकांतमां तेनाथी दूर चाल्यो अने ते घणा ईश्वर, राजा यावत् सार्थवाह विगेरेने आ प्रमाणे कहेवा लाग्यो.—

मू०—" अहो णं देवाणुप्पिया ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं गंधेणं रसेणं फासेणं । से जहानामए अहिमडेति वा जाव अमणामतराए चेव " ।

अर्थ—अहो देवानुप्रियो ! आ खाइनुं पाणी वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शवडे अमनोज्ञ-अत्यंत अशुभ छे. जेम सर्पनुं मडदुं होय यावत् तेनाथी पण अत्यंत अमनोज्ञ-अशुभ ज छे. "

मू०—तए णं ते बहवे राईसरपभिइ जाव एवं वदासी—" तहेव णं तं सामी ! जं णं तुब्भे एवं वयह, अहो णं इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं गंधेणं रसेणं फासेणं से जहाणामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव " ।

अर्थ—त्यारपछी ते घणा राजा, ईश्वर विगेरे यावत् सार्थवाह विगेरे आ प्रमाणे बोल्या—" हे स्वामी ! जे तमे आ प्रमाणे कहो छो ते तेम ज छे, के अहो आ खाइनुं पाणी वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शवडे अमनोज्ञ छे. ते जेम सर्प विगेरेना

मडदानी जेवुं अशुभ छे यावत् तेनाथी पण अत्यंत अमनोज्ञ छे."

मू०—तए णं से जितसत्तू सुबुद्धिं अमच्चं एवं वदासी—" अहो णं सुबुद्धी ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव " ।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु राजाए सुबुद्धि अमात्यने आ प्रमाणे कह्युं के—" अहो ! सुबुद्धि ! आ खाइनुं पाणी वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शवडे अमनोज्ञ—अशुभ छे, ते जेम सर्पनुं मडदुं होय यावत् तेनाथी पण अत्यंत अमनोज्ञ—अशुभ छे."

मू०—तए णं सुबुद्धी अमच्चे जाव तुसिणीए संचिट्ठइ ।

अर्थ—त्यारे ते सुबुद्धि अमात्य यावत् मुंगो रह्यो.

मू०—तए णं से जियसत्तू राया सुबुद्धिं अमच्चं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—" अहो णं " तं चेव ।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु राजाए सुबुद्धि अमात्यने बीजी वार त्रीजी वार आ प्रमाणे कह्युं—"अहो ! सुबुद्धि !" इत्यादि पूर्ववत् कहेवुं.

मू०—तए णं से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तुणा रन्ना दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे एवं वदासी ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुबुद्धि अमात्यने जितशत्रु राजाए बीजी वार त्रीजी वार आ प्रमाणे कह्युं त्यारे तेणे राजाने आ प्रमाणे कह्युं.—

मू—" नो खलु सामी ! अम्हं एयंसि फरिहोदगंसि केइ विम्हए । एवं खलु सामी ! सुब्भि सद्दा वि पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति, तं चेव जाव पओगवीससापरिणया वि य णं सामी ! पोग्गला पण्णत्ता "।

अर्थ—" निश्चे हे स्वामी ! मने आ खाइना पाणीने विषे (सारी नरसी बाबतमां) कांइ पण विस्मय थतो नथी केमके आ प्रमाणे निश्चे हे स्वामी ! शुभ शब्दना पुद्गलो पण अशुभ शब्दपणाए करीने परिणमे छे. विगेरे सर्व उपर कह्या प्रमाणे कहेवुं. यावत् हे स्वामी ! सर्व पुद्गलो प्रयोग अने विश्रसाए करीने परिणाम पामनारा कह्या छे. "

मू०—तते णं जितसत्तू राया सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी—" मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अप्पाणं च परं च तदुभयं च बहूहि य असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेण य वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहराहि "।

अर्थ—त्यारपछी जितशत्रु राजाए सुबुद्धि अमात्यने आ प्रमाणे कह्युं.—" हे देवानुप्रिय ! तुं पोताना आत्माने, बीजाने अने स्वपर बन्नेने घणी असत् वस्तुनी के असत् वस्तुधर्मनी उद्भावनावडे—प्रगट करवावडे (कहेवावडे) अने

मिथ्या अभिनिवेशवडे एटले खोटा अभिमानवडे (कदाग्रहवडे) विविध प्रकारे ग्रहण करावतो (भमावतो) तथा व्यु-त्पादन करतो—अल्प बुद्धिवाळाने मोटी बुद्धिवाळा करतो (पोतानो मत सारो छे एम अंगीकार करावतो) न विचर—न रहे. "

मू०—तते णं सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पजित्था—" अहो णं जितसत्तु संते तच्चे तहिए अवितहे सब्भूते जिणपण्णत्ते भावे णो उवलभति, तं सेयं खलु मम जितसत्तुस्स रण्णो संताणं तच्चाणं तहियाणं अवितहाणं सब्भूताणं जिणपण्णत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं उवाइणावेत्तए "।

अर्थ—त्यारपछी ते सुबुद्धिने आवा प्रकारनो अध्यवसाय—विचार यावत् उत्पन्न थयो.—" अहो ! आ जितशत्रु राजा सत्—छता (विद्यमान), तत्त्वरूप, ए ज कारणथी तथ्य एटले सत्य, अवितथ—असत्य नहीं एवा अने सद्भूत—विद्यमान स्वरूपवाळा जिनेश्वरे कहेला भावोने—पदार्थोने अंगीकार करता नथी. तेथी मारे ते जितशत्रु राजाने सत्—छता, तत्त्वरूप, सत्य, अवितथ अने सद्भूत जिनभाषित पदार्थो समजावीने आ अर्थ (पुद्गलोना जूदा जूदा परिणाम) ने अंगीकार कराववो, ए श्रेय—कल्याणकारक छे. "

मू०—एवं संपेहेइ, संपेहित्ता पच्चातिएहिं पुरिसेहिं सद्धिं अंतरावणाओ नवए घडयपडए पगे-

ण्हति, पगेण्हित्ता संझाकालसमयंसि पविरलमणुस्संसि णिसंतपडिनिसंतंसि जेणेव फरिहोदए तेणेव उवागए, उवागइत्ता तं फरिहोदगं गेण्हावेति, गेण्हावित्ता नवएसु घडएसु गालावेति, गालावित्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेति, पक्खिवावित्ता लंछियमुद्दिते करावेति, करावित्ता सत्तरत्तं परिवसावेति, परिवसावित्ता दोच्चं पि नवएसु घडएसु गालावेति, गालावित्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेति, पक्खिवावित्ता सज्जक्खारं पक्खिवावेति, पक्खिवावित्ता लंछियमुद्दिते कारवेति, कारवित्ता सत्तरत्तं परिवसावेति, परिवसावित्ता तच्चं पि नवएसु घडएसु जाव संवसावेति ।

अर्थ—आ प्रमाणे (सुबुद्धि प्रधाने) विचार कर्यो, विचार करीने विश्वासु पुरुषो साथे खाइना जळना मार्गनी वच्चे रहेली कुंभारनी दुकानेथी नवा (कोरा) घडाना समूह ग्रहण कर्या, ग्रहण करीने जे वखते विरल विरल मनुष्यो चालता होय अने जे वखते मनुष्यो विश्रामने माटे पाछा वळीने पोतपोताना घर तरफ जता होय तेवा संध्याकाळने समये ज्यां ते खाइनुं पाणी हतुं त्यां आव्यो, आवीने ते पुरुषो पासे ते खाइनुं पाणी ग्रहण कराव्युं, ग्रहण करावीने ते नवा घडाओमां गळाव्युं, गळावीने नवा घडाओमां नंखाव्युं, नंखावीने ते घडाओने लांछित मुद्रित कराव्या एटले घडाना मुख बांधी उपर रेखा करावी (सील मार्या), करावीने सात रात्रि दिवस राखी मूक्या, राखीने बीजी वार नवा घडामां ते ज पाणी गळाव्युं, गळावीने नवा घडामां नंखाव्युं, नंखावीने तेमां ताजी राख नंखावी, नंखावीने लांछित मुद्रित कराव्या,

करावीने सात रात्रिदिवस राखी मूक्या, राखीने त्रीजी वार ते ज प्रमाणे नवा घडामां गळावी राख नांखीने यावत् राखी मूक्या.

मू०—एवं खलु एएणं उवाएणं अंतरा गलावेमाणे अंतरा पक्खिवावेमाणे अंतरा य विपरिवसावेमाणे विपरिवसावेमाणे सत्तसत्तरातिंदिया विपरिवसावेति ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे आ उपायवडे वच्चे वच्चे गळावतो, वच्चे वच्चे नवा घडामां नंखावतो, अने वच्चे वच्चे राखी मूकावतो राखी मूकावतो सात सात रात्रि दिवस राखी मूकावतो हतो.

मू०—तते णं से फरिहोदए सत्तमसत्तयंसि परिणममाणंसि उदगरयणे जाए यावि होत्था अच्छे पत्थे जच्चे तणुए फलिहवण्णाभे वण्णेणं उववेते गंधेणं उववेते रसेणं उववेते फासेणं उववेते आसायणिज्जे जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे ।

अर्थ—त्यारपछी ते खाइनुं पाणी सात सप्ताह पर्यंत परिणाम पामतुं पामतुं रत्नरूप थयुं, अच्छ—स्वच्छ थयुं, पथ्य—आरोग्यकारक थयुं, जात्य—जातिवंत (प्रधान) थयुं, तनुक—हलकुं (जारक) थयुं, स्फटिक मणिनी जेवुं उज्वळ वर्णवाळुं थयुं, शुभ वर्णवडे युक्त, शुभ गंधवडे युक्त, शुभ रसवडे युक्त, शुभ स्पर्शवडे युक्त आस्वादन करवा लायक, यावत् सर्व इंद्रियो अने गात्रने आह्लाद करनारुं थयुं.

मू०—तते णं सुबुद्धी अमच्चे जेणेव से उदगरयणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयलंसि आसादेति, आसादित्ता तं उदगरयणं वण्णेणं उववेयं गंधेणं उववेयं रसेणं उववेयं फासेणं उववेयं आसायणिज्जे जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्जं जाणित्ता हट्ठतुट्ठे बहूहिं उदगसंभारणिज्जेहिं दव्वेहिं संभारेति, संभारित्ता जितसत्तुस्स रण्णो पाणियघरियं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—"तुमं च णं देवाणुप्पिया ! इमं उदगरयणं गेण्हाहि, गेण्हित्ता जितसत्तुस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेज्जासि" ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुबुद्धि अमात्य ज्यां ते रत्न जेवुं उत्तम जळ हतुं त्यां आव्यो. आवीने हस्ततळमां लइ तेनो आस्वाद कर्यो, आस्वाद करीने ते जळरत्न शुभ वर्णवडे युक्त, शुभ गंधवडे युक्त, शुभ रसवडे युक्त, शुभ स्पर्शवडे युक्त, आस्वाद करवा लायक, यावत् सर्व इंद्रियो अने गात्रोने आल्हादकारक जाणीने हृष्ट तुष्ट थइ सुगंधी वाळो, मुस्ता विगेरे घणां जळने सुगंध करवानां द्रव्योवडे तेने मिश्र (सुगंधी) कर्युं, मिश्र करीने जितशत्रु राजाना जळरक्षक पुरुषने बोलाव्यो, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं.—"हे देवानुप्रिय ! तुं आ उत्तम जळने ग्रहण कर, ग्रहण करीने जितशत्रु राजाने भोजनवेळाए आपजे."

मू०—तते णं से पाणियघरिए सुबुद्धियस्स एतमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता तं उदगरयणं गिण्हाति गिण्हित्ता, जितसत्तुस्स रन्नो भोयणवेलाए उवट्ठवेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते पाणीना रक्षके सुबुद्धि अमात्यनो आ अर्थ अंगीकार कर्यो, अंगीकार करी ते रत्न जेवुं श्रेष्ठ जळ ग्रहण कर्युं, ग्रहण करीने जितशत्रु राजाने भोजन समये आप्युं–तेनी पासे मूक्युं.

मू०—तते णं से जितसत्तू राया तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणे जाव विहरइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु राजा ते विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने आस्वादन करता (खाता) सता विचरता हता–रह्या हता.

मू०—जिमियभुत्तुत्तरायायावि य णं जाव परमसुइभूए तंसि उदगरयणे जायविम्हए ते बहवे राईसरं जाव एवं वयासी–" अहो णं देवाणुप्पिया ! इमे उदगरयणे अच्छे जाव सव्विंदियगाय-पल्हायणिज्जे । "

अर्थ—अनुक्रमे जमीने भोजन करी रह्या पछी यावत् अत्यंत शुचि–पवित्र थइ ते जळरत्ननुं पान करी राजाने विस्मय उत्पन्न थयो, एटले तेणे घणा राजा, ईश्वर विगेरेने यावत् आ प्रमाणे कह्युं–" अहो ! देवानुप्रियो ! आ उदकरत्न स्वच्छ छे यावत् सर्व इंद्रियो अने गात्रोने आल्हाद उपजावनार छे."

मू०—तते णं बहवे राईसर जाव एवं वदासी—" तहेव णं सामी ! जं णं तुब्भे वदह जाव एवं चेव पल्हायणिज्जे "।

अर्थ—त्यारपछी ते घणा राजा, ईश्वर विगेरे यावत् आ प्रमाणे बोल्या—" ते ज प्रमाणे हे स्वामी ! जेम तमे कहो छो ते तेम ज छे, यावत् आल्हाद उत्पन्न करनार छे. "

मू०—तते णं जितसत्तू राया पाणियघरियं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—" एस णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ आसादिते ? "।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु राजाए जळरक्षकने बोलाव्यो, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रिय ! आ उदकरत्न क्यांथी प्राप्त कर्युं ? "

मू०—तते णं से पाणियघरिए जितसत्तुं एवं वदासी—" एस णं सामी ! मए उदगरयणे सुबुद्धिस्स अंतियाओ आसादिते "।

अर्थ—त्यारपछी ते जळपालके जितशत्रु राजाने आ प्रमाणे कह्युं—" हे स्वामी ! में आ जळरत्न सुबुद्धि अमात्यनी पासेथी प्राप्त कर्युं छे. "

मू०—तते णं जितसत्तू राया सुबुद्धिं अमच्चं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—" अहो ! णं सुबुद्धी ! केणं कारणेणं अहं तव अणिट्ठे ५ ? जेणं तुमं मम कल्लाकल्लिं भोयणवेलाए इमं उदगरयणं न उवट्ठवेसि ? तए णं तुमे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ उवलद्धे ? "।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु राजाए ते सुबुद्धि अमात्यने बोलाव्यो, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" अहो सुबुद्धि ! कया कारणे हुं तने अनिष्ट छुं ? के जेथी तें मने हमेशां भोजननी वेळाए आवुं जळरत्न न आप्युं ? हे देवानुप्रिय ! तें आ जळरत्न क्यांथी प्राप्त कर्युं ? "

मू०—तते णं सुबुद्धी जितसत्तुं एवं वदासी—" एस णं सामी ! से फरिहोदए "।

अर्थ—त्यारपछी ते सुबुद्धि अमात्ये जितशत्रु राजाने आ प्रमाणे कह्युं—" हे स्वामी ! आ जळ ते खाइनुं छे."

मू०—तते णं से जितसत्तू सुबुद्धिं एवं वदासी—" केणं कारणेणं सुबुद्धी ! एस से फरिहोदए ? "

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु राजाए सुबुद्धि अमात्यने आ प्रमाणे कह्युं—(पूछयुं) " हे सुबुद्धि ! कया कारणे करीने आ जळ ते खाइनुं छे ? "

मू०—तते णं सुबुद्धी जितसत्तुं एवं वदासी—" एवं खलु सामी ! तुम्हे तया मम एवमातिक्ख-

माणस्स ४ एतमट्ठं नो सद्दहह, तते णं मम इमेयारूवे अब्भत्थिते ६,—अहो णं जितसत्तू संते जाव भावे नो सद्दहति नो पत्तियति नो रोएति तं सेयं खलु ममं जियसत्तुस्स रन्नो संताणं जाव सब्भूताणं जिणपन्नत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एतमट्ठं उवाइणावेत्तए, एवं संपेहेमि, संपेहित्ता तं चेव जाव पाणियघरियं सद्दावेमि सद्दावित्ता एवं वदामि—' तुमं णं देवाणुप्पिया ! उदगरतणं जितसत्तुस्स रन्नो भोयणवेलाए उवणेहि '। तं एएणं कारणेणं सामी ! एस से फरिहोदए " ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुबुद्धि अमात्ये जितशत्रु राजाने आ प्रमाणे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे हे स्वामी ! ते वखते (खाइना जळना वर्णन वखते) में तमने आ प्रमाणे—पुद्गलोनो परिणाम कह्यो हतो, ते वखते तमे ते अर्थनी श्रद्धा करी नहोती, त्यारे मारा मनमां आवा प्रकारनो अध्यवसाय (विचार) यावत् उत्पन्न थयो के—' अहो ! आ जितशत्रु राजा छता विगेरे यावत् भावो (पदार्थो) ने सद्दहता नथी, प्रतीति करता नथी, अने रुचि धरावता नथी, तेथी मारे जितशत्रु राजाने छता (विद्यमान) यावत् सद्भूत सत्य स्वरूपवाळा जिनप्ररूपित भावो समजावीने आ पुद्गलनो परिणामरूप अर्थ अंगीकार कराववो ए श्रेय—कल्याणकारक छे.' ए प्रमाणे में विचार कर्यो, विचार करीने ते ज प्रमाणे में ते खाइना जळनी उपर कह्या प्रमाणे सुंदरता करी. पछी जळना रक्षकने बोलाव्यो, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—' हे देवानुप्रिय ! तुं आ श्रेष्ठ जळ जितशत्रु राजाने भोजननी वेळाए आपजे. ' तेथी हे स्वामी ! आ कारणे करीने आ जळ ते खाइनुं छे. "

मू०—तते णं जितसत्तू राया सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमातिक्खमाणस्स ४ एतमट्ठं नो सद्दहति नो पत्तियति नो रोएइ, असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोयमाणे अब्भिंतरट्ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—" गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! अंतरावणाओ नवघडए पडए य गेण्हह जाव उदगसंहारणिज्जेहिं दव्वेहिं संभारेह "। ते वि तहेव संभारेंति, संभारित्ता जितसत्तुस्स उवणेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु राजाए आ प्रमाणे कहेता सुबुद्धि अमात्यना आ अर्थ उपर श्रद्धा न करी, प्रतीति न करी, अने रुचि न करी, श्रद्धा नहीं करता, प्रतीति नहीं करता अने रुचि नहीं करता एवा ते राजाए पोतानी अभ्यंतर सभाना पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ अने ते खाइना जळना मार्गमां रहेली कुंभारनी दुकानेथी नवा (कोरा) घडा लावो, यावत् जळने सुगंधी करनार सुगंधीवाळो, मुस्ता विगेरे सुवासित द्रव्योथी मिश्र करो. " त्यारे तेओए पण ते ज प्रमाणे ते जळने सात सात दिवसे गळी नवा नवा घडामां नांखी विगेरे क्रिया करी सुवासित द्रव्योथी मिश्र कर्युं. मिश्र करी जितशत्रु राजाने आप्युं.

मू०—तते णं जितसत्तू राया तं उदगरयणं करयलंसि आसाएति आसातणिज्जं जाव सव्वि-

दियगायपल्हायणिज्जं जाणित्ता–सुबुद्धिं अमच्चं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी–"सुबुद्धी ! एए णं तुमे संता तच्चा जाव सब्भूआ भावा कतो उवलद्धा ?"।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु राजाए ते श्रेष्ठ जळ करतलने विषे लइ आस्वादन कर्यु–चाख्युं, त्यारे ते आस्वाद करवा लायक यावत् सर्व इंद्रियो अने गात्रोने आल्हाद करनार जाणीने सुबुद्धि अमात्यने बोलाव्यो, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं–"हे सुबुद्धि ! तें आ छता (विद्यमान), तथ्य (हितकारक), यावत् सद्भूत–सत्य स्वरूपवाळा भावो (पदार्थो) क्यांथी जाण्या ?"

मू०–तते णं सुबुद्धी जितसत्तुं एवं वदासी–"एए णं सामी ! मए संता जाव भावा जिणवयणातो उवलद्धा"।

अर्थ—त्यारे ते सुबुद्धी अमात्ये जितशत्रु राजाने आ प्रमाणे कह्युं–"हे स्वामी ! में आ छता (विद्यमान) यावत् भावो (पदार्थो) जिनेश्वरना वचनथी जाण्या छे."

मू०–तते णं जितसत्तू सुबुद्धिं एवं वदासी–"तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तव अंतिए जिणवयणं निसामेत्तए" ॥

अर्थ—त्यारे जितशत्रु राजाए सुबुद्धि अमात्यने आ प्रमाणे कह्युं–" तो हे देवानुप्रिय ! हुं तारी पासे जिनेश्वरना वचन सांभळवा इच्छुं छुं. "

मू०—तते णं सुबुद्धी जितसत्तुस्स विचित्तं केवलिपन्नत्तं चाउज्जामं धम्मं परिकहेइ, तमाइक्खति जहा जीवा बज्झंति जाव पंच अणुव्वयातिं ।

अर्थ—त्यारपछी सुबुद्धि अमात्ये जितशत्रु राजाने विचित्र प्रकारे (घणा हेतु दृष्टांत सहित) केवलीप्ररूपित चार (पांच) महाव्रतरूप धर्म कह्यो. तथा जीवो जे प्रकारे कर्मबंध करे छे विगेरे यावत् पांच अणुव्रत सुधी सर्व कह्युं.

मू०—तते णं जितसत्तू सुबुद्धिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठ सुबुद्धिं अमच्चं एवं वदासी–" सद्दहामि णं देवाणुप्पिया ! निग्गंथं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वयह, तं इच्छामि णं तव अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्त सिक्खावइयं जाव उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए "। अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह "।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु राजाए सुबुद्धि अमात्यनी पासेथी धर्म सांभळी हृदयमां धारी हृष्ट तुष्ट थइ सुबुद्धि अमात्यने आ प्रमाणे कह्युं–" हे देवानुप्रिय ! हुं निर्ग्रंथ प्रवचननी श्रद्धा करुं छुं, यावत् जेम तुं कहे छे, ते तेम ज छे तेथी

हुं तारी पासे पांच अणुव्रत अने सात शिक्षाव्रतने यावत् ग्रहण करी विचरवाने इच्छुं छुं." (त्यारे सुबुद्धिए कह्युं-) हे देवानुप्रिय ! जेम सुख उपजे तेम करो, प्रतिबंध न करो."

मू०—तए णं से जितसत्तू राया सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव दुवालसविहं सावयधम्मं पडिवज्जइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु राजाए सुबुद्धि अमात्यनी पासे पांच अणुव्रत यावत् बार प्रकारना श्रावक धर्मने अंगीकार कर्यो.

मू०—तते णं जितसत्तू समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहराति ।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु राजा श्रमणोपासक (श्रावक) थयो, तेणे जीवाजीवादिकनुं स्वरूप जाण्युं, यावत् साधु साध्वीने अन्नादिकनो प्रतिलाभ आपतो विचरवा लाग्यो–रहेवा लाग्यो.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं थेरा जेणेव चंपा णयरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव समोसढे, जियसत्तू राया सुबुद्धी य निग्गच्छाति । सुबुद्धी धम्मं सोच्चा जं णवरं जियसत्तुं आपुच्छामि जाव पव्वयामि । अहासुहं देवाणुप्पिया ! ।

अर्थ—ते काळे ते समये कोइ स्थविर साधु ज्यां चंपानगरी हती अने ज्यां पूर्णभद्र चैत्य हतुं, त्यां समवसर्या—पधार्या. तेमने वंदना करवा माटे जितशत्रु राजा तथा सुबुद्धि अमात्य विगेरे नीकळ्या. सुबुद्धि धर्म सांभळी प्रतिबोध पाम्यो. विशेषमां तेणे स्थविरमुनिने कह्युं के—" हुं जितशत्रु राजाने पूछुं, तेनी आज्ञा लउं, अने पछी यावत् प्रव्रज्या ग्रहण करुं." गुरुए कह्युं—" हे देवानुप्रिय ! जेम सुख उपजे तेम करो."

मू०—तते णं सुबुद्धी अमच्चे जेणेव जितसत्तू राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता एवं वदासी—" एवं खलु सामी ! मए थेराणं अंतिए धम्मे निसंते, सेऽवि य धम्मे इच्छियपडिच्छिए ३, तए णं अहं सामी ! संसारभउव्विग्गे भीए जाव इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे जाव पव्वइत्तए "।

अर्थ—त्यारपछी ते सुबुद्धि अमात्य ज्यां जितशत्रु राजा हता त्यां आव्या, आवीने तेणे जितशत्रु राजाने आ प्रमाणे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे हे स्वामी ! में स्थविर भगवंतनी पासे धर्म सांभळ्यो छे. वळी ते धर्म में इच्छयो छे, अंगीकार कर्यो छे. तेथी हे स्वामी ! हुं संसारना भयथी उद्वेग पाम्यो छुं, भय पाम्यो छुं, यावत् तमो आज्ञा आपो तो हुं यावत् प्रव्रज्या लेवाने इच्छुं छुं.

मू०—तए णं जितसत्तू राया सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी—" अच्छासु ताव देवाणुप्पिया !

कतिवयातिं वासाइं उरालातिं जाव भुंजमाणा ततो पच्छा एगयओ थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वइस्सामो " ।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु राजाए ते सुबुद्धि अमात्यने आ प्रमाणे कह्युं–" हे देवानुप्रिय ! हाल केटलांक वर्ष उदार भोग भोगवतो यावत् रहे. त्यारपछी आपणे बन्ने एकठा (साथे) स्थविर साधुनी पासे मुंड थइने यावत् प्रव्रज्या ग्रहण करशुं. "

मू०—तते णं सुबुद्धी अमच्चे जितसत्तुस्स रन्नो एयमट्ठं पडिसुणेति ।

अर्थ—त्यारपछी सुबुद्धि अमात्ये जितशत्रु राजाना आ अर्थने अंगीकार कर्यो.

मू०—तते णं तस्स जितसत्तुस्स रन्नो सुबुद्धिणा सद्धिं विपुलाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं पच्चणुब्भवमाणस्स दुवालस वासाइं वीतिक्कंताइं ।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु राजाने सुबुद्धि अमात्यनी साथे विपुल एवा मनुष्य संबंधी कामभोगनो अनुभव करतां बार वर्ष व्यतीत थया.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं थेरागमणं, तते णं जितसत्तू धम्मं सोच्चा एवं जं नवरं

देवाणुप्पिया ! सुबुद्धिं आमंतेमि, जेट्ठपुत्तं रज्जे ठवेमि, तए णं तुब्भं जाव पव्वयामि। अहासुहं देवाणुप्पिया ! ।

अर्थ—ते काळे ते समये पाछा स्थविर भगवंत त्यां पधार्या. त्यारपछी जितशत्रु राजा धर्म सांभळी ए ज प्रमाणे प्रतिबोध पाम्या. विशेषमां तेणे गुरुने कह्युं के—" हे देवानुप्रिय ! सुबुद्धि अमात्यने आमंत्रण करुं. मोटा पुत्रने राज्यपर स्थापन करुं. त्यारपछी आपनी पासे आवीने यावत् प्रव्रज्या ग्रहण करुं. " गुरुए कह्युं—" हे देवानुप्रिय ! जेम सुख उपजे तेम करो. "

मू०—तते णं जितसत्तू राया जेणेव सए गिहे (तेणेव) उवागच्छति, उवागच्छित्ता सुबुद्धिं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी—" एवं खलु मए थेराणं जाव पव्वज्जामि, तुमं णं किं करेसि ? " ।

अर्थ—त्यारपछी जितशत्रु राजा ज्यां पोतानुं घर हतुं त्यां आव्या, आवीने तेणे सुबुद्धि अमात्यने बोलाव्यो, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे में स्थविर भगवंतनी पासे धर्म सांभळ्यो छे, यावत् हुं प्रव्रज्या लेवाने इच्छुं छुं, तो हे सुबुद्धि ! तुं शुं करीश ? तारी शी इच्छा छे ? "

मू०—तते णं सुबुद्धी जितसत्तुं एवं वयासी—" जाव के अन्ने आहारे वा जाव पव्वयामि " ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुबुद्धि अमात्ये जितशत्रु राजाने आ प्रमाणे कह्युं—" यावत् मारे तमारा विना बीजो कोण

आधार छे ? यावत् हुं पण तमारी साथे दीक्षा लइश. ”

मू०—तं जति णं देवाणुप्पिया ! जाव पव्वयह, गच्छह णं देवाणुप्पिया ! जेट्ठपुत्तं च कुडुंबे ठावेहि, ठावित्ता सीयं दुरुहित्ता णं ममं अंतिए सीया जाव पाउब्भवेति ।

अर्थ—राजाए कह्युं–“ तो हे देवानुप्रिय ! जो तारे प्रव्रज्या लेवी होय तो हे देवानुप्रिय ! तुं जा. मोटा पुत्रने कुडुंबमां स्थापन कर, स्थापन करीने शिबिकापर आरूढ थइ मारी समीपे प्रगट था–आव. ”

मू०—तते णं सुबुद्धी अमच्चे सीया जाव पाउब्भवइ ।

अर्थ—त्यारपछी सुबुद्धि अमात्य शिबिकापर आरुढ थइ यावत् प्रगट थयो–आव्यो.

मू०—तते णं जितसत्तू कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी–“ गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! अदीणसत्तुस्स कुमारस्स रायाभिसेयं उवट्ठवेह” जाव अभिसिंचंति, जाव पव्वातिए ।

अर्थ—त्यारपछी जितशत्रु राजाए कौडुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं–“ हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ अने अदीनशत्रु कुमार माटे राज्याभिषेकनी सामग्री लावो. ” तेओए ते प्रमाणे कर्युं, यावत् ते कुमारनो अभिषेक कर्यो. पछी यावत् जितशत्रु राजाए स्थविर पासे आवी सुबुद्धि मंत्री सहित दीक्षा ग्रहण करी.

मू०—तते णं जितसत्तू एक्कारस अंगाइं अहिज्जाति, बहूणि वासाणि परियाओ पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए सिद्धे ।

अर्थ—त्यारपछी ते जितशत्रु राजर्षिए अग्यार अंगनो अभ्यास कर्यो. पछी घणा वर्षोनो दीक्षा पर्याय पाळी एक मासनी संलेखना (अनशन) वडे सिद्धिपद प्राप्त कर्युं.

मू०—तते णं सुबुद्धी एक्कारस अंगाइं अहिज्जाति, बहूणि वासाणि परियाओ पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए सिद्धे ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुबुद्धि साधुए पण अग्यार अंगनो अभ्यास कर्यो तथा घणा वर्षनो दीक्षापर्याय पाळीने एक मासनी संलेखनावडे सिद्धिपद प्राप्त कर्युं.

मू०—एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं बारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति बेमि ॥ ९२ ॥

॥ बारसमं नायज्झयणं समत्तं ॥ १२ ॥

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवंत महावीर स्वामीए बारमा ज्ञाताध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे. ते प्रमाणे में तमने कह्यो. ९२.

आ बारमा ज्ञाताध्ययनमां मूळ सूत्रने विषे आनो उपनय बताव्यो नथी, तो पण तेनो उपनय आ प्रमाणे जाणवो—

मिच्छत्तमोहियमणा, पावपसत्ता वि पाणिणो विगुणा। फरिहोदगं व गुणिणो, हवंति वरगुरुपसायाओ ॥१॥

मिथ्यात्ववडे जेनुं मन मूढ थयुं होय, जेओ पापकार्यमां ज आसक्त होय, अने जेओ गुण रहित होय, तेवा प्राणीओ पण खाइना जळनी जेम श्रेष्ठ गुरुना प्रसादथी गुणवाळा थाय छे. ॥ १ ॥

इति बारमुं ज्ञाताध्ययन समाप्त १२.



तेरमुं दर्दुर नामनुं ज्ञाताध्ययन १३.

सद्गुरुना संसर्गथी गुणनी प्राप्ति थाय छे, एम पूर्व अध्ययनमां कह्युं. हवे सद्गुरुना संसर्गने अभावे गुणनी हानि थाय छे ते आ तेरमा अध्ययनमां कहेवाय छे. तेनुं आ प्रथम सूत्र—

मू०—" जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं बारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तेरसमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? "।

अर्थ—जंबूस्वामी सुधर्मास्वामीने पूछे छे-" हे भगवान ! जो श्रमण भगवंत यावत् मोक्षपदने पामेला महावीर स्वामीए बारमा ज्ञाताध्ययननो आ अर्थ कह्यो, तो हे भगवान ! मोक्षने पामेला भगवान महावीर स्वामीए तेरमा ज्ञाताध्ययननो कयो अर्थ कह्यो छे ? "

मू०—" एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे णामं णयरे होत्था । तत्थ णं रायगिहे णयरे सेणिए णामं राया होत्था । तस्स णं रायगिहस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसी· भाए एत्थ णं गुणसिलए नामं चेइए होत्था ।

अर्थ—सुधर्मा स्वामी उत्तर आपे छे.–आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये राजगृह नामनुं नगर हतुं. ते राजगृह नगरमां श्रेणिक नामे राजा हता. ते राजगृह नगरनी बहार उत्तर पूर्व (ईशान) दिशाए गुणशील नामनुं चैत्य (उद्यान) हतुं.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीरे चउद्सहिं समणसाहस्सीहिं जाव सद्धिं पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव रायगिहे णयरे जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव समोसढे, अहापडिरूवं उवग्गहं गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । परिसा निग्गया ।

अर्थ—ते काळे ते समये श्रमण भगवान महावीर स्वामी चौद हजार साधु विगेरेनी यावत् साथे अनुक्रमे चालता एक गामथी बीजे गाम ओळंगता सुखे सुखे विचरता ज्यां राजगृह नगर हतुं, अने ज्यां गुणशील चैत्य हतुं, त्यां समवसर्या. यथायोग्य–साधुने रहेवा लायक अवग्रहने ग्रहण करीने (याचीने) संयम अने तपवडे आत्माने भावता विचरवा लाग्या (रह्या), तेमने वांदवा पर्षदा आवीने (देशना सांभळी) पाछी गइ.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं सोहम्मे कप्पे दद्दुरवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए दद्दुरंसि सीहासणंसि दद्दुरे देवे चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं अग्गमहिसीहिं तिहिं परिसाहिं

एवं जहा सुरियाभो जाव दिव्वातिं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ, इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विपुलेणं ओहिणा आभोएमाणे आभोएमाणे जाव नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगते जहा सुरियाभे।

अर्थ—ते काळे ते समये सौधर्मकल्प (पहेला देवलोक) ने विषे दर्दुरावतंसक नामना विमानमां सुधर्मा नामनी सभामां दर्दुर नामना सिंहासन उपर दर्दुर नामनो देव चार हजार सामानिक देवो, चार अग्र महिषीओ, त्रण पर्षदा विगेरे परिवार सहित सूर्याभ देवनी जेम यावत् दिव्य भोगोने भोगवतो विचरतो हतो-रहेलो हतो. ते वखते आ केवल एटले संपूर्ण कल्प एटले पोताना कार्य करवामां समर्थ एवां जंबूद्वीप नामना द्वीपने पोताना विपुल (मोटा) अवधिज्ञानवडे जोतो जोतो राजगृह नगरना गुणशील नामना चैत्यमां विराजमान श्रीमहावीर स्वामीने जोइ सूर्याभ देवनी जेम भगवान पासे परिवार सहित आवी नाट्यविधि देखाडीने ते देव पाछो गयो.

मू०—भंतेति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—" अहो णं भंते ! दद्दुरे देवे महिड्ढिए ६ दद्दुरस्स णं भंते ! देवस्स सा दिव्वा देविड्ढी २ कहिं गया ? कहिं अणुपविट्ठा ? "

अर्थ—हे भगवान ! एम कहीने भगवान गौतम स्वामीए श्रमण भगवान महावीरने वंदना करी, नमस्कार कर्या. वांदी नमस्कार करी आ प्रमाणे कह्युं (पूछ्युं)—" अहो भगवान ! ते दर्दुर देव मोटी समृद्धिवाळो विगेरे विशेषणवाळो

छे, तो हे भगवान ! ते दर्दुर देवनी विकुर्वेली ते दिव्य समृद्धि क्यां गइ ? अने क्यां समाइ गइ ?"

मू०—" गोयमा ! सरीरं गया, सरीरं अणुपविट्ठा कूडागारदिट्ठंतो "।

अर्थ—भगवान उत्तर आपे छे—" हे गौतम ! ते दिव्य समृद्धि तेना शरीरमां गइ अने तेना शरीरमां ज पेठी (समाणी). ते विषे कूडागारनुं दृष्टांत छे एटले के—एक कूटाकार[1] शाळा हती. ते बहारथी गुप्त—ढांकेली हती, अंदर छाण विगेरेवडे लींपेली हती, तेनी बहार फरतो किल्लो हतो, तेना द्वारनां बारणां ढांकेलां—ढांकी शकाय तेवां हतां अथवा केटलांक बारणां ढांकेलां अने केटलांक उघाडेलां हतां. तेमां वायुनो पण प्रवेश थतो नहोतो, तेम ज वायुना प्रवेश रहित छतां गंभीर- विशाल हती. ते कूटाकार शाळानी समीपे मोटो जनसमूह रहेतो हतो. तेओए एकदा दूरथी मेघनुं वादळुं, वरसादनुं वादळुं अथवा मोटो वायरो नजीक आवतो दीठो. ते जोइ ते सर्व जनो ते कूटाकारशाळामां पेसीने रह्या अने निर्भय थया. ते ज प्रमाणे हे गौतम ! ते देवनी समृद्धि तेना ज शरीरमां पेसी गइ.

मू०—" दद्दुरेणं भंते ! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी ३ किण्णा लद्धा जाव अभिसमन्नागया ? "।

अर्थ—गौतम स्वामीए पूछयुं के—" हे भगवान ! दर्दुर नामना देवे ते दिव्य देवऋद्धि शी रीते प्राप्त करी यावत् शी रीते चोतरफथी संपूर्ण प्राप्त करी ? "

१. शिखरना आकारवाळुं घर.

मू०—" एवं खलु गोयमा ! इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नामं नयरे होत्था, गुणसिलए चेइए, तस्स णं रायगिहस्स सेणिए नामं राया होत्था । तत्थ णं रायगिहे णंदे णामं मणियारसेट्ठी परिवसति, अड्ढे दित्ते जाव अपरिभूए ।

अर्थ—महावीर स्वामी उत्तर आपे छे.—" आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम ! आ ज जंबूद्वीप नामना द्वीपमां भरत क्षेत्रमां राजगृह नामनुं नगर छे. ते नगरनी बहार गुणशील नामनुं चैत्य छे. ते राजगृह नगरमां श्रेणिक नामे राजा छे. ते राजगृह नगरने विषे नंद नामनो मणिकार (मणियार) श्रेष्ठी वसतो हतो. ते आढ्य, दीप्त (कांतिवान्) यावत् कोइथी पराभव न पामे एवो हतो.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं अहं गोयमा ! समोसढे, परिसा निग्गया, सेणिए वि राया निग्गए ।

अर्थ—ते काळे ते समये हे गौतम ! राजगृह नगरनी बहार गुणशील नामना चैत्य (उद्यान) मां अमारुं समवसरण थयुं. पर्षदा वांदवा नीकळी, श्रेणिक राजा पण नीकळ्या.

मू०—तते णं से नंदे मणियारसेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए पायचारेणं जाव

पज्जुवासति, णंदे धम्मं सोच्चा समणोवासए जाते।

अर्थ—त्यारपछी ते नंद मणिकार श्रेष्ठी आ कथावडे अर्थने-अमारा आगमनने जाणी स्नान करी विभूषित थइ पगे चालतो आवी यावत् अमारी सेवा करवा लाग्यो. पछी ते नंद मणिकार धर्म सांभळीने श्रावक थयो.

मू०—तते णं अहं रायगिहाओ पडिनिक्खंते बहिया जणवयविहारं विहरामि।

अर्थ—त्यारपछी अमे राजगृह नगरमांथी नीकळी बहार जनपदमां विहार कर्यो.

मू०—तते णं से णंदे मणियारसेट्ठी अन्नया कदाइ असाहुदंसणेण य अपज्जुवासणाए य अणणुसासणाए य असुस्सूसणाए य सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं परिहायमाणेहिं मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं परिवड्ढमाणेहिं मिच्छत्तं विप्पडिवन्ने जाए यावि होत्था।

अर्थ—त्यारपछी ते नंद मणिकार श्रेष्ठी अन्यदा कदाचित् साधुना दर्शन नहीं थवाथी, साधुनी पर्युपासना (सेवा) नहीं थवाथी, साधुनो उपदेश नहीं मळवाथी, वीतरागना वचन नहीं सांभळवानी इच्छाथी समकितना पर्याय (परिणाम) अत्यंत हानि पामवाथी अने मिथ्यात्वना पर्याय अत्यंत वृद्धि पामवाथी मिथ्यात्वने अंगीकार करनार थयो—मिथ्यात्वने पाम्यो.

मू०—तते णं णंदे मणियारसेट्ठी अन्नदा गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूलंसि मासंसि अट्ठमभत्तं

परिगेण्हति; परिगेण्हित्ता पोसह सालाए जाव विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी तें नंद मणिकारश्रेष्ठीए एकदा ग्रीष्मकाळने समये ज्येष्ठ मासने विषे अष्ठम भक्त (त्रण उपवास) ग्रहण कर्या, ग्रहण करीने पौषधशाळामां यावत् विचरवा लाग्यो-रह्यो.

मू०—तते णं णंदस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि तण्हाए छुहाए य अभिभूतस्स समाणस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—" धन्ना णं ते जाव ईसरपभितओ जेसिं णं रायगिहस्स बहिया बहूओ वावीतो पोक्खरणीओ जाव सरसरपंतियाओ जत्थ णं बहुजणो ण्हाति य पियति य पाणियं च संवहति ।

अर्थ—त्यारपछी ते नंद श्रेष्ठी जळरहित अष्ठम भक्त (त्रण उपवास) पूरा थवा आव्या त्यारे (त्रीजा दिवसनी रात्रीए) तृषा अने क्षुधावडे पराभव पाम्यो, ते वखते तेने आवा प्रकारनो अध्यवसाय (विचार) यावत् उत्पन्न थयो,— " ते यावत् ईश्वर विगेरे धन्य छे के जेओए राजगृह नगरनी बहार घणी वावो, पुष्करिणीओ यावत् सरोवरनी पंक्तिओ करावी (खोदावी) होय तेमां घणा माणसो स्नान करे, पाणी पीए अने पाणी भरीने लइ जाय.

मू०—तं सेयं खलु ममं कल्लं पाउप्पभाए सेणियं रायं आपुच्छित्ता रायगिहस्स नयरस्स

बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए वेभारपव्वयस्स अदूरसामंते वत्थुपाढगरोइतंसि भूमिभागंसि जाव णंदं पोक्खरणिं खणावेत्तए " त्ति कट्टु एवं संपेहेति ।

अर्थ—तेथी करीने मारे काले प्रभाते श्रेणिक राजानी रजा लइ राजगृह नगरनी बहार उत्तरपूर्व (ईशान) दिशाना भागमां वैभार गिरिनी समीपे वास्तु शास्त्रना पाठक (सलाट विगेरे शिल्पीओ) ने रुचे-पसंद पडे एवा भूमिभागमां यावत् नंदा नामनी पुष्करणी (वाव) खोदाववी, ए श्रेयस्कर छे-कल्याणकारक छे. " आ प्रमाणे करीने-कहीने ए प्रमाणे विचार कर्यो.

मू०—एवं संपेहित्ता कल्लं पाउप्पभाए जाव पोसहं पारेति, पारित्ता ण्हाते कयबलिकम्मे मित्तणाइ जाव संपरिवुडे महत्थ जाव पाहुडं रायारिहं गेण्हति, गेण्हित्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता जाव पाहुडं उवट्ठवेति, उवट्ठवित्ता एवं वदासी—

अर्थ—आ प्रमाणे विचार करीने काले (बीजे दिवसे) प्रभाते यावत् पौषधने पार्यो, पारीने स्नान कर्युं, बलिकर्म (देवपूजन) कर्युं, मित्र ज्ञाति विगेरेवडे यावत् परिवर्यो थको मोटा अर्थ (किंमत) वाळुं अने राजाने योग्य एवुं यावत् प्राभृत (भेटणुं) ग्रहण कर्युं, ग्रहण करीने ज्यां श्रेणिक राजा हता, त्यां आव्यो, आवीने यावत् प्राभृत तेनी पासे मूक्युं. मूकीने आ प्रमाणे बोल्यो.—

मू०—" इच्छामि णं सामी ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे रायगिहस्स बहिया जाव खणावेत्तए "। " अहासुहं देवाणुप्पिया ! "।

अर्थ-—" हे स्वामी ! तमारी अनुज्ञा पाम्यो सतो हुं राजगृह नगरनी बहार यावत् नंदा पुष्करणी खोदाववाने इच्छुं छुं. " (त्यारे राजाए कह्युं–) " हे देवानुप्रिय ! जेम सुख उपजे तेम कर–तारी इच्छा प्रमाणे कर. "

मू०—तते णं णंदे सेणिएणं रन्ना अब्भणुण्णाते समाणे हट्ठ तुट्ठ रायगिहं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता वत्थुपाढयरोइयंसि भूमिभागंसि णंदं पोक्खरणिं खणाविउं पयत्ते यावि होत्था।

अर्थ—त्यारपछी ते नंद मणियार श्रेणिक राजाए अनुज्ञा आपे सते हृष्ट तुष्ट थइ राजगृहनी मध्ये थइने नीकळ्यो, नीकळीने वास्तु शास्त्रना पाठको (सलाट विगेरे शिल्पीओ) ए पसंद करेला भूमिभागने विषे नंदा नामनी पुष्करणी खोदाववा उद्यमवान थयो–खोदाववानुं शरु कर्युं.

मू०—तते णं सा णंदा पोक्खरणी अणुपुव्वेणं खणमाणा खणमाणा पोक्खरणी जाया यावि होत्था चाउक्कोणा समतीरा अणुपुव्वसुजायवप्पसीयलजला संछण्णपत्तबिसमुणाला बहुप्पलपउमकुमुदनलिण(णि)सुभगसोगंधियपुंडरीयमहापुंडरीयसयपत्तसहस्सपत्तपफुल्लकेसरोववेया परिहत्थभमं-

तमत्तछप्पयअणेगसउणगणमिहुणवियरियसद्दुन्नइयमहुरसरनाइया पासाईया दरिसणीया अभिरूवा पडिरूवा ।

अर्थ—त्यारपछी ते नंदा पुष्करणी अनुक्रमे खोदाती खोदाती चोखंडी अने समान कांठावाळी परिपूर्ण पुष्करणी थइ. अनुक्रमे तेनी फरतो वप्र-किल्लो थयो, तेनुं जळ शीतळ थयुं, पांदडां, बिसतंतु अने मृणालथी तेनुं जळ ढंकाइ गयुं, ते वाव घणा उत्पल जातिना कमळ, पद्म (सूर्यविकासी कमळ), कुमुद (चंद्रविकासी कमळ), नलिनी (कमलिनी), सुभग जातिना कमळ, सौगंधिक जातिना कमळ, पुंडरीक (श्वेत कमळ), महापुंडरीक, शतपत्र (सो पांखडीवाळा कमळ), सहस्रपत्र (हजार पांखडीवाळा कमळ) ए सर्व प्रफुल्लित-खीलेला कमळोनी केसरावडे युक्त-सहित थइ, सुगंधने माटे परिभ्रमण करता मदोन्मत्त षट्पद (भमरा) अने अनेक पक्षीओना समूहना मिथुनोए विस्तारेला शब्दवडे उन्नत (उंचा) थयेला मधुर स्वरवडे ते वाव नाद करवा लागी, वळी ते वाव प्रासादिका (प्रसन्न करनारी), दर्शन करवा लायक, (जोवा लायक) अभिरूप अने प्रतिरूप थइ.

मू०—तते णं से णंदे मणियारसेट्ठी णंदाए पोक्खरणीए चउद्दिसिं चत्तारि वणसंडे रोवावेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते नंद मणियार श्रेष्ठीए ते नंदा पुष्करणीनी चारे दिशामां चार वनखंड ववराव्या-कराव्या.

मू०—तए णं ते वणसंडा अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा य संवड्ढियमाणा य

से वणसंडा जाया किण्हा जाव निकुरुंबभूया पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते चारे वनखंडो अनुक्रमे सारी रीते रक्षण (रखोपुं) करवामां आव्या, सारी रीते गोपववामां आव्या एटले तेना फरती वाड करवामां आवी तथा सारी रीते वृद्धि पमाडवामां आव्या, तेथी ते वनखंडो कृष्णवर्णवाळा थया यावत् निकुरंब (गुच्छा) रूप थया, पांदडावाळा थया अने पुष्पवाळा थया सता यावत् शोभाने पामता शोभाने पामता रह्या.

मू०—तते णं नंदे मणियारसेट्ठी पुरच्छिमिल्ले वणसंडे एगं महं चित्तसभं करावेति अणेगखंभसयसंनिविट्ठं पासादीयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं । तत्थ णं बहूणि किण्हाणि य जाव सुक्किलाणि य कट्ठकम्माणि य पोत्थकम्माणि य चित्तकम्माणि य लिप्पकम्माणि य गंथिमवेढिमपूरिमसंघातिम० उवदंसिज्जमाणाइं उवदंसिज्जमाणाइं चिट्ठंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते नंद मणियार श्रेष्ठीए पूर्व दिशाना वनखंडमां एक मोटी चित्रसभा करावी. ते अनेक सेंकडो स्तंभोथी शोभती थइ. प्रासादिक, दर्शनीय, अभिरूप अने प्रतिरूप बनी. ते चित्रसभामां घणा कृष्णवर्णवाळा यावत् शुक्लवर्णवाळा काष्ठकर्म—लाकडानी पुतळी विगेरे, पुस्तकर्म—वस्त्रना पडदा विगेरे, चित्रकर्म, लेप्यकर्म—माटीनां पुतळां विगेरे, माळानी जेम सूत्रवडे गुंथेला (गुंथित) कर्म, पुष्पनी माळाना दडानी जेम वेष्टित कर्म, सुवर्णादिकनी प्रतिमानी जेम पूरण कर्म

अने रथादिकनी जेम संघात-समूहना कर्म विगेरे मनोहर कराव्यां. तेने जोनार मनुष्यो एक बीजाने ते ते कर्मो देखाडता देखाडता वर्णन करता हता. एवी ते चित्र सभा रहेली हती.

मू०-तत्थ णं बहूणि आसणाणि य सयणाणि य अत्थुयपच्चत्थुयाइं चिट्ठंति । तत्थ णं बहवे नडा य णट्टा य जाव दिन्नभइभत्तवेयणा तालायरकम्मं करेमाणा विहरंति, रायगिहविणिग्गओ य जत्थ बहू जणो तेसु पुव्वन्नत्थेसु आसणसयणेसु संनिसन्नो य संतुयट्टो य सुणमाणो य पेच्छमाणो य सोहेमाणो य सुहंसुहेणं विहरइ ।

अर्थ—ते चित्रसभामां घणां आसनो-बेठको अने शयनो-सुवाय तेवां आसनो निरंतर पाथरेलां रहेतां हतां. ते चित्रसभामां घणा नाटक करनारा अने नृत्य करनारा यावत् हंमेशनुं भोजन करवा माटे पैसा आपीने राखेला हता, तेओ तालाचर (नाटक विशेष) नुं कर्म करता सता रहेला हता. तेथी राजगृह नगरमांथी बहार फरवा माटे नीकळेला घणा लोको ते सभामां आवी ते प्रथमथी पाथरी राखेला आसन अने शयनोने विषे बेठा बेठा तथा सुता सुता कथा वार्ताने सांभळता अने नाटकादिकने जोता अत्यंत शोभाने (आनंदने) पामता सुखे सुखे रहेता हता.

मू०-तते णं णंदे मणियारसेट्ठी दाहिणिल्ले वणसंडे एगं महं महाणससालं करावेति अणेगखंभ० जाव पडिरूवं ।

अर्थ—त्यारपछी ते नंद मणियार श्रेष्ठीए दक्षिण दिशाना वनखंडमां एक मोटी भोजनशाळा अनेक सेंकडो स्तंभवाळी यावत् प्रतिरूप–मनोहर करावी.

मू०—तत्थ णं बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडेंति बहूणं समणमाहणअतिहीकिवणवणीमगाणं परिभाएमाणा परिभाएमाणा विहरंति ।

अर्थ—ते भोजनशाळामां घणा पुरुषोने पगार आपीने राखेला हता, तेओ विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम ए चारे प्रकारना आहारने पकावता हता. अने त्यां घणा श्रमण, ब्राह्मण, अतिथि, कृपण अने वनीपकोने ते अशनादिक आपता आपता विचरता हता–रह्या हता.

मू०—तते णं णंदे मणियारसेट्ठी पच्चत्थिमिले वणसंडे एगं महं तेगिच्छियसालं करेति अणेगखंभसय० जाव पडिरूवं ।

अर्थ—त्यारपछी ते नंद मणियार श्रेष्ठीए पश्चिम दिशाना वनखंडमां एक मोटी चिकित्सा (औषध) शाला अनेक सेंकडो स्तंभवाळी यावत् प्रतिरूप–मनोहर बनावी.

---

१ 'दत्तभृतिभक्तवेतनाः'—भरणपोषण अने भोजन माटे जेने पगार अपाय छे एवा.

मू०- तत्थ णं बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य कुसला य कुसलपुत्ता य दिन्नभइभत्तवेयणा बहूणं वाहियाणं गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य तेइच्छं करेमाणा विहरंति।

अर्थ—ते चिकित्साशाळाने विषे घणा वैद्यो (वैदकशास्त्रने भणेला), वैद्यना पुत्रो, ज्ञायको (पोते शास्त्रनो अभ्यास कर्यो न होय परंतु शास्त्र जाणनारनी प्रवृत्ति जोवाथी रोगनुं स्वरूप ओळखीने चिकित्सा जाणनार होय तेवा–अनुभवी), ज्ञायकना पुत्रो, कुशल (पोताना तर्कथी ज चिकित्साने जाणनारा) तथा कुशळना पुत्रोने पगार आपीने राखेला हता, तेओ घणा व्याधिवाळा (शोकादिकवडे चित्तमां पीडा पामेला अथवा कुष्ठादिक स्थिर व्याधिवाळा), ग्लान (अशक्त), रोगी (ज्वरादिक रोगवाळा) तथा शरीरे दुर्बळ थयेला, ए सर्वनी चिकित्सा करता विचरता हता–रहेला हता.

मू०—अण्णे य एत्थ बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा तेसिं बहूणं वाहियाण य रोगियाण य गिलाणाण य दुब्बलाण य ओसहभेसज्जभत्तपाणेणं पडियारकम्मं करेमाणा विहरंति ।

अर्थ—तथा ते चिकित्साशाळामां, बीजा पण घणा पुरुषोने भृति (भरण पोषण) अने भोजनने माटे पगार आपीने राखवामां आव्या हता, तेओ ते घणा व्याधिवाळाओना, रोगीना, ग्लानना, अने दुर्बलोना औषध, भैषज, भक्त

१ एक वस्तुनुं बनावेलुं औषध अने घणी वस्तु मेळवीने बनावेलुं भैषज. अथवा एक के अनेक वस्तुनुं बनावेलुं औषध अने भैषज एटले पथ्य.

(भोजन) अने पाणी आपवावडे सेवा चाकरीना कर्मने करता रह्या हता.

मू०—तते णं णंदे मणियारसेट्ठी उत्तरिल्ले वणसंडे एगं महं अलंकारियसभं करेति अणेगखंभसत० जाव पडिरूवं ।

अर्थ—त्यारपछी ते नंद मणियार श्रेष्ठीए उत्तर दिशाना वनखंडने विषे एक मोटी अलंकार सभा (नापितनी—हजामनी शाळा) अनेक सेंकडो स्तंभवाळी यावत् प्रतिरूप—मनोहर करावी.

मू०—तत्थ णं बहवे अलंकारियपुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा बहूणं समणाण य अणाहाण य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य अलंकारियकम्मं करेमाणा करेमाणा विहरंति ।

अर्थ—ते अलंकार सभामां घणा अलंकारिक[1] पुरुषोने भृति अने भोजन माटे पगार आपीने राखेला हता, तेओ घणा श्रमणो, अनाथो, ग्लान, रोगी अने दुर्बल विगेरे मनुष्योनुं अलंकार (शरीरनी शोभा) करवानुं कर्म करता करता विचरता हता—रहेला हता.

मू०—तते णं तीए णंदाए पोक्खरणीए बहवे सणाहा य अणाहा य पंथिया य पहिया य करो-

---

१ शरीरनी शोभा करनार। एटले नापित—हजाम विगेरे

डिया य कारिया य तणाहारा य पत्तहारा य कट्ठहारा य अप्पेगतिया ण्हायंति, अप्पेगतिया पाणियं पियंति, अप्पेगतिया पाणियं संवहंति, अप्पेगतिया विसज्जितसेयजल्लमलपरिस्समनिद्दखुप्पिवासा सुहंसुहेणं विहरंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते नंदा पुष्करणीने विषे घणा सनाथ, अनाथ, पथिक, कासदीया, करोटिका (कावड उपाडनारा), कारीगरो, तृणना भारावाळा, पर्णना भारावाळा, काष्ठना भारावाळा विगेरे घणा लोको आवता हता, तेमां केटलाक स्नान करता हता, केटलाक पाणी पीता हता, केटलाक पाणी भरीने लइ जता हता, तथा केटलाक स्वेद (परसेवो), जल्ल[1], मल[2], परिश्रम, निद्रा, क्षुधा अने तृषाने दूर करी सुखे सुखे रहेता हता.

मू०—रायगिहविणिग्गओ वि जत्थ बहुजणो, किं ते ? जलरमणविविहमज्जणकयलिलयाघरयकुसुमसत्थरयअणेगसउणगणरुयरिभितसंकुलेसु सुहंसुहेणं अभिरममाणो अभिरममाणो विहरति ।

अर्थ—ते नंदा पुष्करणीने विषे राजगृह नगरमांथी नीकळेला घणा माणसो पण शुं करता हता ? ते कहे छे.—जळक्रीडा, विविध प्रकारना मज्जन (स्नान) केळ तथा लताना गृहो (मंडपो), पुष्पना संथारा (शयन) अने अनेक पक्षीओना समूहना मनोहर शब्द, ए सर्ववडे सहित नंदा पुष्करणी अने चारे वनखंडने विषे क्रीडा करता करता विचरता हता—रहेता हता.

१ प्रवाही मेल, २ कठण थयेलो मेल.

मू०—तते णं णंदाए पोक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो य पीयमाणो य पाणियं च संवहमाणो य अन्नमन्नं एवं वदासी—" धण्णे णं देवाणुप्पिया ! णंदे मणियारसेट्ठी कयत्थे जाव जम्मजीवीयफले जस्स णं इमेयारूवा णंदा पोक्खरणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा, जस्स णं पुरत्थिमिल्ले तं चेव सव्वं चउसु वि वणसंडेसु जाव रायगिहाविणिग्गओ जत्थ बहुजणो आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्नो य संतुयट्टो य पेच्छमाणो य साहेमाणो य सुहंसुहेणं विहरति, तं धन्ने कयत्थे कयपुन्ने, कया णं लोया ! सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले नंदस्स मणियारस्स " ।

अर्थ—त्यारपछी ते नंदा पुष्करणीने विषे घणा माणसो स्नान करता हता, पाणी पीता हता अने पाणी भरीने लइ जता हता, ते सर्वे परस्पर आ प्रमाणे बोलता हता—" हे देवानुप्रियो ! आ नंद मणियार श्रेष्ठी धन्य छे, कृतार्थ छे, यावत् तेना जन्म अने जीवित सफळ छे, के जेनी आवा प्रकारनी चार खूणावाळी यावत् प्रतिरूप–मनोहर नंदा पुष्करणी छे, जेने पूर्व दिशामां अने ए ज प्रमाणे चारे दिशामां वनखंड छे, ते सर्वमां यावत् राजगृहमांथी नीकळीने घणा लोको आसनो पर बेसे छे, शयनोने विषे सुवे छे, नाट्यादिकने जुए छे, ए रीते कहेता सता सुखे सुखे विचरे छे–रहे छे. तेथी ते नंद मणियार श्रेष्ठी धन्य छे, कृतार्थ छे, कृतपुण्य छे. हे लोको ! नंद मणियार श्रेष्ठीनो मनुष्य भव सुलब्ध छे, अने तेनां जन्म तथा जीवित सफल छे."

मू०—तते णं रायगिहे संघाडग जाव बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमातिक्खति धण्णे णं देवाणुप्पिया ! णंदे मणियारे सो चेव गमओ जाव सुहंसुहेणं विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी राजगृह नगरमां पण शृंगाटक विगेरे मार्गमां घणा लोको परस्पर आ प्रमाणे कहेता हता.—" हे देवानुप्रियो ! आ नंद मणियार धन्य छे. " विगेरे सर्व पूर्ववत् आलावो कहेवो. यावत् सुखे सुखे विचरे छे.

मू०—तते णं से णंदे मणियारे बहुजणस्स अंतिए एतमट्ठं सोच्चा हट्ठ तुट्ठ धाराहयकलंबगं पिव समूससियरोमकूवे परं सायासोक्खमणुभवमाणे विहरति ॥ ९३ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते नंद मणियार घणा माणसोनी पासेथी आ अर्थ (वृत्तांत) सांभळीने हृष्ट तुष्ट थयो, मेघनी धाराथी हणायेला कदंब वृक्षनी जेम तेना शरीरमां रोमांच विकस्वर थया, अने सातवेदनीयना उदयथी परम (उत्कृष्ट) सुखने अनुभवतो सतो विचरवा लाग्यो—रह्यो. ९३.

मू०—तते णं तस्स नंदस्स मणियारसेट्ठिस्स अन्नया कयाई सरीरगंसि सोलस रोयायंका पाउब्भूया । तं जहा—

" सासे १ कासे २ जरे ३ दाहे ४, कुच्छिसूले ५ भगंदरे ६ ।

अरिसा ७ अजीरए ८ दिट्ठि ९, मुद्धसूले १० अगारए ११ ॥ १ ॥
अच्छिवेयणा १२ कन्नवेयणा १३ कंडू १४ दउदरे १५ कोढे १६ ।"

अर्थ—त्यारपछी एकदा कदाचित् ते नंद मणियार श्रेष्ठीना शरीरमां सोळ रोगातंको प्रगट थया. ते आ प्रमाणे.—"श्वास १. कास २, ज्वर ३, दाह ४, कुक्षिशूल ५, भगंदर ६, हरस, ७, अजीर्ण ८, नेत्रशूल २, मस्तक शूल १०, अकारक-भोजनपर द्वेष (अरुचि) ११, नेत्रवेदना १२, कर्णवेदना १३, कंडू (खरज) १४, जलोदर १५ अने कोढ १६.

मू०—तते णं से णंदे मणियारसेट्ठी सोलसहिं रोगायंकेहिं अभिभूते समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते नंद मणियार श्रेष्ठी सोळ रोगातंकवडे पराभव पाम्यो, एटले तेणे कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—" गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! रायगिहे नयरे सिंघाडग जाव महापहपहेसु महया सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वदासी—" एवं खलु देवाणुप्पिया ! णंदस्स मणियारसेट्ठि-

१ रोग एटले ज्वरादिक, अने आतंक एटले शूलादिक.

स्स सरीरगंसि सोलस रोयायंका पाउब्भूता, तं जहा–" सासे जाव कोढे "। तं जो णं इच्छाति देवाणुप्पिया ! वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणुओ वा जाणुअपुत्तो वा कुसलो वा कुसलपुत्तो वा नंदस्स मणियारस्स तेसिं च णं सोलसण्हं रोयायंकाणं एगमवि रोयायंकं उवसामेत्तए, तस्स णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारे विउलं अत्थसंपदाणं दलयति त्ति कट्टु दोच्चं पि तच्चं पि घोसणं घोसेह, घोसित्ता जाव पच्चप्पिणह "। ते वि तहेव पच्चप्पिणंति।

अर्थ—हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ. राजगृह नगरमां शृंगाटक विगेरे यावत् नाना मोटा दरेक मार्गने विषे मोटा शब्दवडे उद्घोषणा करता करता आ प्रमाणे कहो के—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! नंद मणियार श्रेष्ठीना शरीरने विषे सोळ रोगातंको प्रगट थया छे ते आ प्रमाणे—' श्वास यावत् कोढ ' तेथी करीने हे देवानुप्रियो ! जे कोइ वैद्य, वैद्यपुत्र, ज्ञायक, ज्ञायकपुत्र, कुशळ के कुशळपुत्र नंद मणियारना ते सोळ रोगातंकमांथी एक पण रोगातंकने उपशम करवा (दूर करवा) इच्छे-उपशमावे, ते (वैद्यादिक) ने हे देवानुप्रियो ! आ नंद मणियार श्रेष्ठी विपुल धनसंपत्ति आपे छे. " आ प्रमाणे बीजी वार त्रीजीवार उद्घोषणा करो, उद्घोषणा करीने यावत् मारी आज्ञा पाछी आपो. " ते सांभळी ते कौटुंबिक पुरुषोए ते ज प्रमाणे करीने तेनी आज्ञा पाछी आपी.

मू०—तते णं रायगिहे नयरे इमेयारूवं घोसणं सोच्चा णिसम्म बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य

जाव कुसलपुत्ता य सत्थकोसहत्थगया य कोसगपायहत्थगया य सिलियाहत्थगया य गुलियाहत्थगया य ओसहभेसज्जहत्थगया य सएहिं सएहिं गेहेहिंतो निक्खमंति, निक्खमित्ता रायगिहं मज्झंमज्झेणं जेणेव णंदस्स मणियारसेट्ठिस्स गिहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता णंदस्स मणियारसेट्ठिस्स सरीरं पासंति, तेसिं रोयायंकाणं णियाणं पुच्छंति, णंदस्स मणियारसेट्ठिस्स बहूहिं उव्वलणेहि य उव्वट्टणेहि य सिणेहपाणेहि य वमणेहि य विरेयणेहि य सेयणेहि य अवदहणेहि य अवण्हाणेहि य अणुवासणेहि य वत्थिकम्मेहि य निरूहेहि य सिरावेहेहि य तच्छणाहि य सिरावेढेहि य तप्पणाहि य पुढ(ट)वाएहि य छल्लीहि य वल्लीहि य मूलेहि य कंदेहि य पत्तेहि य पुप्फेहि य फलेहि य बीएहि य सिलियाहि य गुलियाहि य ओसहेहि य भेसज्जेहि य इच्छंति तेसिं सोलसण्हं रोयायंकाणं एगमवि रोयायंकं उवसामित्तए । नो चेव णं संचाएंति उवसामेत्तए !

अर्थ—त्यारपछी राजगृह नगरमां आवा प्रकारनी आघोषणा सांभळी हृदयमां धारी घणा वैद्यो, वैद्यपुत्रो, यावत्

कुशलपुत्रोए हाथमां शस्त्रकोश (शस्त्रनी पेटी) लीधो, कोशकनुं पात्र हाथमां लीधुं, शिलिका हाथमां लीधी, गोळीओ हाथमां लीधी, तथा औषध अने भैषज हाथमां लीधुं. आ रीते तेओ पोतपोताना घरमांथी नीकळ्या. नीकळीने राजगृह नगरना मध्य भागे करीने ज्यां नंद मणियार श्रेष्ठीनुं घर हतुं, त्यां आव्या, आवीने नंद मणियार श्रेष्ठीना शरीरने जोयुं, अने ते नंद मणियार श्रेष्ठीने ते रोगातंक थवानुं कारण पूछ्युं. पछी घणा उद्वलनवडे, उद्वर्तनवडे, स्नेहपानवडे (औषधथी पकावेला घी तेल विगेरेवडे), वमनवडे, विरेचनवडे, स्वेदनवडे, अवदहनवडे (डांभ आपवावडे), अपस्नानवडे (चीकाश दूर करनारी वस्तुथी मिश्र करेला जळना स्नानवडे), अनुवासनावडे (चर्मना यंत्रना प्रयोगवडे गुदामार्गे उदरमां तेल विगेरे नांखवावडे), बस्तिकर्मवडे (चर्म वींटवाना प्रयोगवडे मस्तक विगेरे अवयवोमां घी, तेल विगेरेनो प्रवेश करवावडे अथवा गुदा विगेरेमां वाट मूकवी तेवडे), निरुहवडे (अनुवासनानी जेम चर्मयंत्रना प्रयोगथी गुदामार्गे उदरमां कोइ पण पदार्थ विशेष नांखवावडे), शिरोवेधवडे (नाडी–नसो वींधवावडे एटले रुधिरनो प्रवेश के नीकाल

१ क्षुर, नेरणी विगेरे शस्त्रनुं भाजन. २ शिलिका एटले करीयाता विगेरेनी पादडी–घास अथवा शस्त्र तीक्ष्ण करवानो पथ्थर.

३ उद्वलन एटले शरीर उपरनो अमुक प्रकारनो लेप, के जे पीठीनी जेम शरीरे चोपडाय अने ते लेप शरीरना मेलने हाथे घसवाथी दूर करे छे. ४ उद्वर्तन एटले उद्वलननी जेवो ज लेप. ५ सात प्रकारना धान्यनी पोटली विगेरेना नाहवडे शरीरमांथी परसेवो काढवो तेवडे.

करावववावडे), तच्छणवडे (क्षुर विगेरेवडे चामडी कापवी तेवडे), प्रच्छणवडे (जराक चामडी कापवावडे), [1]शिरोबस्तिवडे (मस्तकपर बांधेला चर्म उपर पकावेला तेल विगेरे सिंचवावडे), तर्पणवडे (अमुक स्नेहद्रव्य चोळवावडे), पुटपाकवडे (अग्निमां पकावेला औषधवडे), रोहिणी विगेरेनी छालवडे, गडूची विगेरेनी वल्ली (वेला) वडे, मूळवडे, कंदवडे, पत्रवडे, पुष्पवडे, फळवडे, बीजवडे, शिलिका जातिना तृणवडे, गोळीओवडे, [2]औषधोवडे अने भेषजोवडे ते सोळ रोगातंकमांथी एकेक रोगातंकने शमाववा-दूर करवा माटे तेओए इच्छा करी (प्रयास कर्यो), परंतु तेओ एक पण रोगातंकने शमाववा शक्तिमान थया नहीं.

मू०—तते णं ते बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य कुसला य कुसलपुत्ता य जाहे नो संचाएंति तेसिं सोलसण्हं रोगाणं एगमवि रोगायंकं उवसामेत्तए ताहे संता तंता जाव पडिगया ।

अर्थ—त्यारपछी ते घणा वैद्यो, वैद्यपुत्रो, ज्ञायको, ज्ञायकपुत्रो, कुशलो तथा कुशलपुत्रो ज्यारे ते सोळ रोगातंकमां-

१ प्रथम बस्तिकर्म कह्युं छे ते सामान्य छे, अने अनुवासना, निरुह तथा शिरोबस्ति ए त्रणे तेना ज भेद छे एटले विशेष प्रकारना बस्तिकर्म छे.

२ एक औषधिनुं बनेलुं औषध अने अनेक औषधिनुं बनेलुं भेषज कहेवाय छे.

थी एक पण रोगातंकने शमाववा शक्तिमान न थया, त्यारे तेओ श्रांत थया–थाकी गया, तांत थया–खेद पाम्या, यावत् पोतपोताने घेर पाछा गया.

मू०—तते णं णंदे तेहिं सोलसेहिं रोयायंकेहिं अभिभूते समाणे नंदापोक्खरणीए मुच्छिए ४ तिरिक्खजोणिएहिं निबद्धाउते बद्धपएसिए अट्टदुहट्टवसट्टे कालमासे कालं किच्चा नंदाए पोक्खरणीए दद्दुरीए कुच्छिंसि दद्दुरत्ताए उववन्ने ।

अर्थ—त्यारपछी ते नंद मणियार श्रेष्ठी ते सोळे रोगातंकवडे पराभव पाम्यो सतो नंदा पुष्करणीमां मूर्छा पाम्यो एटले तेनापर बहु ज मोहित थयो. तेथी तेणे तिर्यंचयोनिने विषे उपजवा योग्य प्रकृति, स्थिति अने अनुभागबंधनी अपेक्षायुक्त आयुषनो बंध कर्यो, अने प्रदेशबंधनी अपेक्षाए पण आयुपना दळ मेळव्या–तेनो बंध कर्यो. पछी आहट्टदोहट्टने वश थयेलो ते काळने (मरणने) समये काळ करीने ते ज नंदा पुष्करणीमां देडकीनी कुक्षिमां देडकापणे उत्पन्न थयो.

मु०—तए णं णंदे दद्दुरे गब्भाओ विणिम्मुक्के समाणे उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते नंदाए पोक्खरणीए अभिरममाणे अभिरममाणे विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते नंद नामनो देडको गर्भथी बहार नीकळ्यो सतो–जन्म्यो सतो अनुक्रमे बाळभाव (बाल्यावस्था) थी मुक्त थयो, तेने ज्ञान परिणाम पाम्युं, (जोवा मात्रथी ज शीखी जाय एवो थयो) अने ते युवावस्थाने पाम्यो, त्यारे ते

नंदा पुष्करणीने विषे रमतो रमतो विचरवा लाग्यो–रह्यो.

मू०–तते णं णंदाए पोक्खरणीए बहू जणो ण्हायमाणो अ पियमाणो य पाणियं संवहमाणो य अन्नमन्नस्स एवं आतिक्खति–" धन्ने णं देवाणुप्पिया ! णंदे मणियारे जस्स णं इमेयारूवा णंदा पुक्खरणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा, जस्स णं पुरत्थिमिल्ले वणसंडे चित्तसभा अणेगखंभ० तहेव चत्तारि सहाओ जाव जम्मजीवियफले " ।

अर्थ—त्यारपछी ते नंदा पुष्करणीमां घणा माणसो स्नान करता, पाणी पीता अने पाणीने लइ जता सता परस्पर आ प्रमाणे कहेता हता.–" हे देवानुप्रियो ! नंद मणियारने धन्यवाद छे के जेणे आवी चार खूणावाळी यावत् प्रतिरूप एटले शोभती आवा प्रकारनी नंदा पुष्करणी करावी छे. तथा जेणे पूर्वदिशामां वनखंड करावी तेमां अनेक सेंकडो स्तंभो-वडे शोभती चित्रसभा करावी छे, ते ज प्रमाणे चारे सभाओ कहेवी. यावत् तेनुं जन्म अने जीवित सफळ छे. "

मू०–तते णं तस्स दद्दुरस्स तं अभिक्खणं अभिक्खणं बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जेत्था–"से कहिं मन्ने मए इमेयारूवे सद्दे णिसंतपुव्वे", त्ति कट्टु सुभेणं परिणामेणं जाव जाइसरणे समुप्पन्ने, पुव्वजातिं सम्मं समागच्छति ।

अर्थ—त्यारपछी ते देडकाने ते वारंवार घणा जनोनी पासेथी आ अर्थ सांभळीने अने मनमां धारीने आवा प्रकारनो अध्यवसाय (विचार) यावत् उत्पन्न थयो—" हुं मानुं (धारुं-तर्क करुं) छुं के में आवा प्रकारना शब्द पूर्वे क्यां सांभळ्या छे ? " आ प्रमाणे विचार करतां शुभ परिणामवडे तेने यावत् जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं. पूर्वजन्म तेने सम्यक् प्रकारे सांभर्यो.

मू०—तते णं तस्स दद्दुरस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जेत्था—" एवं खलु अहं इहेव रायगिहे नगरे णंदे णामं मणियारे अड्ढे ।

अर्थ—त्यारपछी ते दर्दुरने आवा प्रकारनो अध्यवसाय-विचार यावत् उत्पन्न थयो.—" आ प्रमाणे निश्चे हुं आ ज राजगृह नगरमां नंद नामनो मणियार धनवान हतो.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीरे समोसढे, तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइए सत्त सिक्खावइए जाव पडिपन्ने ।

अर्थ—ते काळे ते समये (एकदा) श्रमण भगवंत महावीरस्वामी समवसर्या. त्यां ते श्रमण भगवंत महावीर स्वामीनी पासे में पांच अणुव्रत अने सात शिक्षाव्रत यावत् अंगीकार कर्या हता.

मू०—तए णं अहं अन्नया कयाई असाहुदंसणेण य जाव मिच्छत्तं विप्पडिवन्ने ।

अर्थ—त्यारपछी हुं एकदा कदाचित् साधुना दर्शनने अभावे यावत् मिथ्यात्वन पाम्यो.

मू०—तए णं अहं अन्नया कयाई गिम्हे कालसमयंसि जाव उपसंपज्जित्ता णं विहरामि । एवं जहेव चिंता आपुच्छणा नंदा पुक्खरणी वणसंडा सहाओ तं चेव सव्वं जाव नंदाए पुक्खरणीए दद्दुरत्ताए उववन्ने ।

अर्थ—त्यारपछी हुं एकदा कदाचित् ग्रीष्म काळने विषे यावत् अठम तप करी पौषध लइ विचरतो हतो, ते वखते मने तेवा प्रकारनो (पाप कराववानो) विचार थयो, पछी श्रेणिक राजानी रजा लीधी, नंदा पुष्करणी करावी, चार दिशामां चार वनखंड कर्या. ते दरेकमां सभाओ करी, विगेरे पूर्ववत् सर्व कहेवुं, यावत् छेवट हुं नंदा पुष्करणीमां दर्दुरपणे उत्पन्न थयो.

मू०—तं अहो ! णं अहं अहन्ने अपुन्ने अकयपुन्ने निग्गंथाओ पावयणाओ नट्ठे भट्ठे परिब्भट्ठे, तं सेयं खलु ममं सयमेव पुव्वपडिवन्नातिं पंचाणुव्वयातिं सत्त सिक्खावयाइं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ।”

अर्थ—तेथी अहो ! हुं अधन्य छुं, पुण्यहीन छुं, में पुण्य कर्युं नथी, आवो हुं निर्ग्रंथ प्रवचनथी नष्ट थयो, भ्रष्ट थयो अने अत्यंत भ्रष्ट थयो. तेथी करीने हवे मारे मारी जाते ज पूर्वे अंगीकार करेला पांच अणुव्रतो अने सात शिक्षाव्रतो फरीथी ग्रहण करीने विचरवुं श्रेय—कल्याण कारक छे. ”

मू०—एवं संपेहेति, संपेहित्ता पुव्वपडिवन्नाइं पंचाणुव्वयाइं सत्त सिक्खावयाइं आरुहेति, आरुहित्ता इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हाति—" कप्पइ मे जावजीवं छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तए। छट्ठस्स वि य णं पारणगंसि कप्पइ मे णंदाए पोक्खरणीए परिपेरंतेसु फासुएणं ण्हाणोदएणं उम्मद्दणो(णाइं)लोलियाहि य वित्तिं कप्पेमाणस्स विहरित्तए "। इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हाति, जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरति।

अर्थ—आ प्रमाणे तेणे विचार कर्यो, विचार करीने पूर्वे अंगीकार करेलां पांच अणुव्रतो अने सात शिक्षाव्रतो अंगीकार कर्या, अंगीकार करीने आवा प्रकारनो अभिग्रह धारण कर्यो–" आजथी मारे जावज्जीव सुधी आंतरा रहित (निरंतर) छठ्ठ छठनी तपस्यावडे आत्माने भावता सता विचरवुं कल्पे. तथा छठना पारणाने विषे पण मारे नंदा पुष्करणीमां पर्यंतना भागमां प्रासुक (अचित्त) थयेला स्नानना जळवडे तथा मनुष्योए उन्मर्दनादिकवडे उतारेला मेलवडे आजीविकाने करी विचरवुं कल्पे. " आवा प्रकारनो तेणे अभिग्रह ग्रहण कर्यो. ग्रहण करी जावज्जीव सुधी छठ छठवडे यावत् विचरवा लाग्यो.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं अहं गोयमा ! गुणसिलए चइऐ समोसढे, परिसा णि-

ग्गया, तए णं णंदाए पुक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो य पियमाणो य पाणियं संवहमाणो य अन्नमन्नं एवमातिक्खति—जाव समणे भगवं महावीरे इहेव गुणासिलए चेइए समोसढे, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामो जाव पज्जुवासामो एयं मे इहभवे परभवे य हियाए जाव अणुगामियत्ताए भविस्सइ ।

अर्थ—ते काळे ते समये हे गौतम ! अमे गुणशील नामना चैत्यमां समवसर्या. ते वखते अमने वांदवा माटे नगरमांथी पर्षदा नीकळी. ते वखते नंदा पुष्करणीने विषे स्नान करता, जळ पान करता अने पाणी भरीने लइ जता घणा लोको परस्पर आ प्रमाणे कहेवा लाग्या.—'यावत् श्रमण भगवान महावीरस्वामी अहीं गुणशील नामना चैत्यमां समवसर्या छे. तेथी हे देवानुप्रियो ! आपणे त्यां जइए, श्रमण भगवंत महावीरने वांदीए, यावत् तेमनी पर्युपासना (सेवा) करीए, तेम करवाथी आपणने आ भवमां अने परभवमां हितने माटे, सुखने माटे यावत् आवता भवमां अनुगामीपणाने माटे थशे.'

मू०—तए णं तस्स दद्दुरस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—"एवं खलु समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे, तं गच्छामि णं वंदामि" जाव एवं संपेहेति संपेहित्ता णंदाओ पुक्खरणीओ सणियं सणियं उत्तरइ, उत्तरित्ता जेणेव राय-

मग्गे तेणेव उवागच्छाति, उवागच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव दद्दुरगईए वीतिवयमाणे जेणेव ममं अंतिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

अर्थ—त्यारपछी घणा माणसोनी पासे आ अमारा आगमननो अर्थ (हकीकत) सांभळीने हृदयमां धारीने ते दर्दुरने आवा प्रकारनो अध्यवसाय (विचार) यावत् उत्पन्न थयो.—" आ प्रमाणे निश्चे श्रमण भगवान महावीर स्वामी यावत् अहीं समवसर्या छे, तेथी हुं तेमनी पासे जाउं, अने तेमने वंदनादिक करुं. " यावत् आ प्रमाणे तेणे विचार कर्यो. विचार करीने नंदा पुष्करणीथी धीमे धीमे बहार नीकळ्यो, नीकळीने ज्यां राजमार्ग हतो त्यां आव्यो, आवीने ते तेवा प्रकारनी उत्कृष्ट विगेरे विशेषणवाळी यावत् दर्दुरनी गतिवडे चालतो चालतो ज्यां मारो समीप भाग हतो, त्यां आववाने चाल्यो.

मू०—इमं च णं सेणिए राया भंभसारे ण्हाए कयकोउय जाव सव्वालंकारविभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं सेयवरचामराहि य हयगयरह० महया भडचडगर० चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे मम पायवंदते हव्वमागच्छाति ।

अर्थ—आ तरफ भंभसार[1] श्रेणिक राजा पण स्नान करी, कौतुक मंगळ करी, यावत् सर्व अलंकारवडे विभूषित थइ,

१ श्रेणिक राजानुं बीजुं नाम छे.

श्रेष्ठ हस्तीस्कंध उपर आरूढ थइ, कोरंट वृक्षना पुष्पनी माळावाळा छत्रवडे अने श्वेत चामरोवडे शोभता अश्व, हाथी, रथ अने मोटा सुभटोना समूहरूप चतुरंगी सेनानी साथे परिवरेला सता मारा पादने वंदन करवा माटे शीघ्र आवता हता.

मू०—तते णं से दद्दुरे सेणियस्स रन्नो एगेणं आसकिसोरएणं वामपाएणं अक्कंते समाणे अंतनिग्घातिए कते यावि होत्था।

अर्थ—तेवामां ते दर्दुर श्रेणिक राजाना एक अश्वकिशोरना डाबा पगवडे आक्रांत (दबायो) सतो जेना आंतरडा बहार नीकळी गया छे एवो करायेलो ते थयो. एटले के पगवडे दबावाथी तेना आंतरडा बहार नीकळी गया.

मू०—तते णं से दद्दुरे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसकारपरक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु एगंतमवक्कमति करयलपरिग्गहियं तिखुत्तो सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—

अर्थ—त्यारपछी ते दर्दुर शक्ति रहित, बळ रहित, वीर्य (उद्यम) रहित तथा पुरुषकार अने पराक्रम रहित थयो, तेथी ' जीवितव्यने धारण करवुं अशक्य छे ' एम धारी ते एकांत स्थळमां गयो. पछी बे हाथ एकठा करी त्रणवार मस्तकपर आवर्तन करी (फेरवी) मस्तके अंजलि जोडी आ प्रमाणे बोल्यो.—

मू०—" नमोऽत्थु णं अरुहंताणं भगवंताणं जाव संपत्ताणं, नमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ

महावीरस्स मम धम्मायरियस्स जाव संपाविउकामस्स पुव्विं पि य णं मए समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए थूलए पाणातिवाए पच्चक्खाए जाव थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए, तं इयाणिं पि तस्सेव अंतिए सव्वं पाणातिवायं पच्चक्खामि जाव सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि, जावजीवं सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं पच्चक्खामि, जावजीवं जं पि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं जाव मा फुसंतु एयंपि णं चरिमेहिं ऊसासेहिं वोसिरामि " त्ति कट्टु ।

अर्थ—अरुहंत–जेने संसारमां फरी उत्पन्न थवुं नथी एवा, भगवंत–ज्ञानादिक ऐश्वर्यवाळा, यावत् मोक्षगतिने पामेला सर्व तीर्थंकरोने मारो नमस्कार हो. मारा धर्माचार्य यावत् मोक्षगति पामवाने इच्छता एवा श्री महावीर स्वामीने मारो नमस्कार हो. पहेलां (पूर्व भवमां) पण में श्रमण भगवंत महावीरनी पासे स्थूल प्राणातिपातनुं पच्चख्खाण कर्युं हतुं. यावत् स्थूल परिग्रहनुं पच्चख्खाण कर्युं हतुं. तो हमणा पण तेमनी ज पासे (तेमनी साक्षीए) हुं जावज्जीव सर्व प्राणातिपातनुं पच्चख्खाण करुं छुं, यावत् सर्व परिग्रहनुं पच्चख्खाण करुं छुं. जावज्जीव सर्व अशन, पान, खादिम अने स्वादिम ए चारे प्रकारना आहारनुं पच्चख्खाण करुं छुं. वळी जे आ मारुं शरीर इष्ट छे, कांत छे. यावत् तेने रोगादिक स्पर्श न करो एवुं इच्छेलुं छे, तेवा शरीरने पण हुं छेल्ला श्वासोच्छ्वासे वोसिरावुं छुं–तजुं छुं." आ प्रमाणे कहीने तेणे सर्व प्रकारना पच्चख्खाण कर्या. (त्याग कर्यो.)

अहीं जावज्जीव सर्व प्राणातिपात विगेरेना पच्चक्खाण कर्यां एम कह्युं छे, परंतु तिर्यंचोने देशविरतिनो ज संभव छे. ते विषे कह्युं छे के—

तिरियाणं चारित्तं, निवारियं अह य तो पुणो तेसिं । सुव्वइ बहुयाणं पि हु, महव्वयारोहणं समए ॥ १ ॥
न महव्वयसब्भावे वि, चरणपरिणामसंभवो तेसिं । न बहुगुणाणं पि जओ, केवलसंभूइपरिणामो ॥२॥"

" तिर्यंचोने माटे सर्वविरतिरूप चारित्रनो निषेध करेलो छे, तोपण तेमांना घणाओने महाव्रतनुं आरोपण आगममां सांभळवामां आवे छे. (ते उपरथी एम जणाय छे के—) महाव्रतनो सद्भाव (आरोपण) भले हो, परंतु तेमने चारित्रना परिणामनो संभव नथी. कारण के तेओ घणा गुणवाळा होय तोपण तेमने केवळज्ञान उत्पन्न थाय तेवो परिणाम तो नथी ज. (कोइ पण तिर्यंचने केवळज्ञान उत्पन्न थयुं नथी अने थवानुं पण नथी. तेथी महाव्रतनुं आरोपण कर्या छतां पण ते सर्वविरतिरूप चारित्र कही शकाय नहीं. एवो आ गाथाओनो तात्पर्यार्थ जणाय छे.)

मू०—तए णं से दद्दुरे कालमासे कालं किच्चा जाव सोहम्मे कप्पे दद्दुरवडिंसए विमाणे उववायसभाए दद्दुरदेवत्ताए उववन्ने । एवं खलु गोयमा ! दद्दुरेणं सा दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता जाव अभिसमन्नागया ।

अर्थ—त्यारपछी ते दर्दुर काळ समये काळ करीने यावत् सौधर्म कल्पमां (देवलोकमां) दर्दुरावतंसक नामना विमा-

नमां उपपात सभाने विषे दर्दुर देवपणे उत्पन्न थयो. आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम! दर्दुर देवे तेवी दिव्य देवर्द्धि मेळवी छे, पामी छे, यावत् संपूर्ण प्राप्त करी छे."

मू०—" दद्दुरस्स णं भंते! देवस्स केवतिकालं ठिई पण्णत्ता?"

अर्थ—गौतम स्वामीए पूछयुं के—" हे भगवान! ते दर्दुर देवनी केटलो काळ स्थिति ते देवलोकमां कही छे?"

मू०—" गोयमा! चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पन्नत्ता। से णं दद्दुरे देवे आउक्खएणं भवक्खएणं ठिईक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति जाव अंतं करिहिति"।

अर्थ—भगवान उत्तर आपे छे.—" हे गौतम! तेनी चार पल्योपमनी स्थिति कही छे. त्यारपछी ते दर्दुरदेव आयुष्यना क्षयवडे, भवना क्षयवडे अने स्थितिना क्षयवडे तरत ज त्यांथी चवीने महाविदेह क्षेत्रमां उत्पन्न थइ चारित्र लइ सिद्ध थशे, बुद्ध थशे, यावत् संसारनो अंत करशे."

मू०—" एवं खलु समणेणं भगवया महावीरेणं तेरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि ॥ ९५ ॥

। तेरसमं नायज्झयणं समत्तं । १३ ।

अर्थ—सुधर्मा स्वामी जंबू स्वामीने कहे छे के—" हे जंबू ! आ प्रमाणे निश्चे श्रमण भगवंत महावीर स्वामीए तेरमा ज्ञात अध्ययननो आ प्रमाणे अर्थ कह्यो छे. ते में तमने कह्यो. ९५.

आ अध्ययननो उपनय सूत्रमां कह्यो नथी. तोपण आ प्रमाणे जाणवो.

" संपन्नगुणो वि जओ, सुसाहुसंसग्गिवज्जिओ पायं । पावइ गुणपरिहाणिं, दद्दुरजीवो व्व मणियारो ।१। "

" समकितादिक गुणने पाम्या छतां पण प्राणी जो सुसाधुना संगथी रहित थाय तो ते प्राये करीने दर्दुरना जीव मणियार श्रेष्ठीनी जेम गुणनी हानिने पामे छे. १. " अथवा—

" तित्थयरवंदणत्थं, चलिओ भावेण पावए सग्गं । जह दद्दुरदेवेणं, पत्तं वेमाणियसुरत्तं ॥ २ ॥ "

" जे प्राणी तीर्थंकरने वांदवा माटे भावथी मात्र चाल्यो होय तोपण ते स्वर्गने पामे छे, जेमके दर्दुर देवे वैमानिक देवपणुं प्राप्त कर्युं. (प्रथमनो उपनय प्रकृतने लागु छे अने बीजो उपनय लागु नथी, परंतु ते रीते पण थइ शके छे एम जाणवुं.)

इति तेरमुं ज्ञात अध्ययन समाप्त. १३.

अथ चौदमुं तेतलिपुत्र नामनुं ज्ञाताध्ययन.

सामग्रीने अभावे छता गुणोनी पण हानि थाय छे एम तेरमा अध्ययनमां कह्युं. हवे तथाप्रकारनी सामग्री सते गुणनी संपदा प्राप्त थाय छे, ए वात आ अध्ययनमां कहे छे. तेनुं आ प्रथम सूत्र—

मू०—" जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं तेरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चोद्दसमस्स णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? "।

अर्थ—जंबू स्वामी सुधर्मा स्वामीने पूछे छे—" हे भगवान् ! जो श्रमण भगवंत महावीर स्वामीए तेरमा ज्ञात अध्ययननो आ (उपर प्रमाणे) अर्थ कह्यो छे, तो हे भगवान ! चौदमा ज्ञात अध्ययननो श्रमण भगवंत महावीर स्वामीए कयो अर्थ कह्यो छे ? "

मू०—" एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं तेयलिपुरे णामं णयरे होत्था । तत्थ णं तेयलिपुरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थ णं पमयवणे णामं उज्जाणे होत्था ।

अर्थ—सुधर्मा स्वामी जवाब आपे छे.—" आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये तेतलिपुर नामनुं नगर हतुं. ते तेतलिपुर नगरनी बहार उत्तरपूर्व (ईशान) दिशामां प्रमदवन नामनुं उद्यान हतुं.

मू०—तत्थ णं तेयलिपुरे णयरे कणगरहे णामं राया होत्था। तस्स णं कणगरहस्स रण्णो पउमावई णामं देवी होत्था। तस्स णं कणगरहस्स रण्णो तेयलिपुत्ते णामं अमच्चे होत्था सामदामभेयदंडे।

अर्थ—ते तेतलिपुर नगरमां कनकरथ नामनो राजा हतो. ते कनकरथ राजाने पद्मावती नामनी देवी (राणी) हती. ते कनकरथ राजाने तेतलिपुत्र नामे अमात्य हतो. ते साम, दाम, भेद अने दंड ए चारे प्रकारनी नीतिमां निपुण हतो.

मू०—तत्थ णं तेयलिपुरे कलादे नामं मूसियारदारए[1] होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए। तस्स णं भद्दा नामं भारिया होत्था। तस्स णं कलायस्स मूसियारदारयस्स धूया भद्दाए अत्तया पोट्टिला नामं दारिया होत्था रूवेण य जोव्वणेण य लावन्नेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा।

अर्थ—ते तेतलिपुर नगरमां मूषिकारदारक नामनो एक कलाद (सोनी) हतो, ते धनाढ्य यावत् बीजाथी पराभव न पामे तेवो हतो. तेने भद्रा नामनी भार्या हती. ते मूषिकारदारक नामना कलादनी पुत्री भद्रानी आत्मजा (कुक्षिथी उत्पन्न थयेली) पोट्टिला नामनी दारिका (छोकरी) हती. ते रूपवडे, यौवनवडे अने लावण्यवडे सर्वोत्कृष्ठ अने उत्कृष्ट शरीरवाळी हती.

१ मूषिकारनो पुत्र. तेना बापनुं नाम मूषिकार हतुं.

मू०—तते णं पोट्टिला दारिया अन्नदा कदाइ ण्हाता सव्वालंकारविभूसिया चेडियाचक्कवाल-संपरिवुडा उप्पिं पासायवरगया आगासतलगंसि कणगमएणं तिंदूसएणं कीलमाणी कीलमाणी विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी एकदा कदाचित् ते पोट्टिला दारिका स्नान करी सर्व अलंकारोवडे विभूषित थइ दासीओना समूह-वडे परिवरी सती प्रासाद (महेल) ना उपरना माळ उपर चढीने अगाशीनी भूमिने विषे सुवर्णना दडावडे क्रीडा करती क्रीडा करती रही हती.

मू०—इमं च णं तेयलिपुत्ते अमच्चे ण्हाए आसखंधवरगए महया भडचडगरआसवाहणियाए णिज्जायमाणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीतिवयति ।

अर्थ—तेवा समये तेतलिपुत्र अमात्य स्नान करी उत्तम अश्वना स्कंधपर आरूढ थइ मोटा सुभटना समूह सहित अश्ववाहनिकाए नीकळ्यो सतो ते मूषिकारदारक नामना कलादना घर पासे थइने जतो हतो.

मू०—तते णं से तेयलिपुत्ते मूसियारदारगगिहस्स अदूरसामंतेणं वीतीवयमाणे वीतीवयमाणे पोट्टिलं दारियं उप्पिं पासायवरगयं आगासतलगंसि कणगतिंदूसएणं कीलमाणीं पासति, पासित्ता

पोट्टिलाए दारियाए रूवे य जोव्वणे य लावन्ने य जाव अज्झोववन्ने कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी–" एस णं देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया किंनामधेज्जा ?" ।

अर्थ—तेवामां ते तेतलिपुत्रे मूषिकारदारकना घरनी समीपे थइने जतां जतां पोट्टिला दारिकाने श्रेष्ठ प्रासादनी उपली भूमिपर रहेली अगाशीमां सुवर्णना कंदुक (दडा) वडे क्रीडा करती जोइ. जोइने पोट्टिला दारिकाना रूप, यौवन अने लावण्यने विषे यावत् रागवंत थइने कौटुंबिक (सेवक) पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं (पूछ्युं)— " हे देवानुप्रियो ! आ कोनी पुत्री छे ? अने तेनुं नाम शुं छे ? ".

मू०—तते णं कोडुंबियपुरिसे तेयलिपुत्तं एवं वदासी–" एस णं सामी ! कलायस्स मूसियारदारयस्स धूता भद्दाए अत्तया पोट्टिला नामं दारिया रूवेण य जोव्वणेण य लावन्नेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा " ।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषोए तेतलिपुत्र अमात्यने आ प्रमाणे कह्युं–" हे स्वामी ! आ मूषिकारदारक नामना कलादनी पुत्री भद्रानी आत्मजा पोट्टिला नामनी दारिका रूप, यौवन अने लावण्यवडे उत्कृष्ट अने उत्कृष्ट शरीरवाळी छे. "

मू०—तते णं से तेयलिपुत्ते आसवाहणियाओ पडिनियत्ते समाणे अब्भिंतरट्ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेति सद्दावित्ता एवं वदासी—" गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कलादस्स मूसियारदारयस्स धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं मम भारियत्ताए वरेह "।

अर्थ—त्यारपछी ते तेतलिपुत्र अश्ववाहनिकाथी पाछो आव्यो त्यारे तेणे आभ्यंतर सभाना (खानगी) पुरुषोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं–" हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ अने मूषिकारदारक नामना कलादनी पुत्री भद्रानी आत्मजा पोट्टिला नामनी दारिकानी मारी भार्या तरिके मागणी करो. "

मू०—तते णं ते अब्भिंतरठाणिज्जा पुरिसा तेतलिणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठ तुट्ठ जाव करयल० तह त्ति जेणेव कलायस्स मूसियारदारयस्स गिहे तेणेव उवागया ।

अर्थ—त्यारपछी ते आभ्यंतर सभाना पुरुषोने तेतलिपुत्रे आ प्रमाणे कह्युं त्यारे तेओ हृष्ट तुष्ट थइ बे हाथ जोडी मस्तके अंजलि करी 'तह त्ति' तेम ज हो (बहु सारुं) एम कही ज्यां मूषिकारदारक नामना कलादनुं घर हतुं त्यां आव्या.

मू०—तते णं से कलाए मूसियारदारते पुरिसे एज्जमाणे पासाति, पासित्ता हट्ठ तुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपदातिं अणुगच्छति, अणुगच्छित्ता आसणेणं उवणिमंतेति, उवणि-

मंतित्ता आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एवं वदासी-" संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणपओयणं ? "।

अर्थ—त्यारपछी ते मूषिकारदारक नामना कलादे ते पुरुषोने आवता जोया. जोइने ते हृष्ट तुष्ट थइ आसनपरथी उभो थयो. उभो थइ सात आठ पगलां सन्मुख गयो. सन्मुख जइ आसनोपर बेसवा निमंत्रण कर्युं. निमंत्रण करी तेमने आसनपर बेसाड्या. पछी तेओ स्वस्थ थया, विश्रांति पाम्या त्यारे तेमने कलादे आ प्रमाणे कह्युं-" हे देवानुप्रियो ! आज्ञा आपो-कहो के अहीं आववानुं शुं प्रयोजन छे ? "

मू०—तते णं ते अब्भितरट्ठाणिज्जा पुरिसा कलायस्स मूसियारदारयस्स एवं वयासी-" अम्हे णं देवाणुप्पिया ! तव धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं तेयलिपुत्तस्स भारियत्ताए वरेमो, तं जति णं जाणसि देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो ता दिज्जउ णं पोट्टिला दारिया तेयलिपुत्तस्स, ता भण देवाणुप्पिया ! किं दलामो सुक्कं ? "।

अर्थ—त्यारपछी ते आभ्यंतर सभाना पुरुषोए मूषिकारदारक नामना कलादने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रिय ! अमे तमारी पुत्री, भद्रानी आत्मजा पोट्टिला नामनी दारिकाने तेतलिपुत्रनी भार्या तरीके मागणी करीए छीए. तो जो

हे देवानुप्रिय! आ संबंध युक्त छे, प्राप्त करवा लायक छे अने श्लाघा करवा लायक छे एम तमे जाणता हो, तथा आ संयोग सदृश छे एम जाणता (मानता) हो, तो तमे तमारी पोट्टिला दारिका तेतलिपुत्रने आपो. अने हे देवानुप्रिय! तमे कहो के तमने ते बदल अमे शुं शुल्क (धन) आपीए ? ”

मू०—ततेणं कलाए मूसियारदारए ते अब्भिंतरट्ठाणिज्जे पुरिसे एवं वदासी—“ एस चेव णं देवाणुप्पिया ! मम सुक्के जं णं तेतलिपुत्ते मम दारियानिमित्तेणं अणुग्गहं करोति ”। ते ठाणिज्जे पुरिसे विपुलेणं असणपाणखाइमसादिमेणं पुप्फवत्थ जाव मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता संमाणित्ता पडिविसज्जेइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते कलाद मूषिकारदारके ते आभ्यंतर पुरुषोने आ प्रमाणे कह्युं—“ हे देवानुप्रियो! ए ज मारे शुल्क (धन) छे के तेतलिपुत्र अमात्य मारी पुत्री परणवाना निमित्ते करीने मारापर अनुग्रह करे छे. ” आ प्रमाणे कही ते कलादे ते आभ्यंतर सभाना पुरुषोनो विपुल एवा अशन, पान, खादिम, स्वादिम, पुष्प, वस्त्र विगेरे यावत् माल्य (पुष्पनी माळा) अने अलंकारवडे सत्कार कर्यो, सन्मान कर्युं. सत्कार करी सन्मान करी तेमने विदाय कर्या.

मू०—तए णं कलायस्स मूसियारदारयस्स गिहाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेयलिपुत्तं एयमट्ठं निवेयंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते आभ्यंतर पुरुषो ते कलाद मूषिकारदारकना घरथी नीकळ्या. नीकळीने ज्यां तेतलिपुत्र अमात्य हतो, त्यां आव्या. आवीने तेतलिपुत्रने ते सर्व अर्थ (वृत्तांत) निवेदन कर्यो— कह्यो.

मू०—तते णं कलादे मूसियारदारए अन्नया कयाइं सोहणंसि तिहिनक्खत्तमुहुत्तंसि पोट्टिलं दारियं ण्हायं सव्वालंकारविभूसियं सीयं दुरूहइ, दुरूहित्ता मित्तणाइसंपरिवुडे सातो गिहातो पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता सव्विड्डीए तेयलिपुरं मज्झंमज्झेणं जेणेव तेतलिस्स गिहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोट्टिलं दारियं तेतलिपुत्तस्स सयमेव भारियत्ताए दलयति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कलाद मूषिकारदारके एकदा कदाचित् शुभ तिथि, नक्षत्र अने मुहूर्तने विषे पोट्टिला दारिकाने स्नान करावी, सर्व अलंकारवडे विभूषित करी शिबिकामां बेसाडी. बेसाडीने मित्र, ज्ञाति अने परिवार सहित पोताना घरमांथी नीकळ्यो. नीकळीने सर्व समृद्धिवडे तेतलिपुर नगरना मध्य मध्य मार्गे थइने ज्यां तेतलिपुत्र अमात्यनुं घर हतुं त्यां आव्यो. आवीने तेतलिपुत्र अमात्यने पोट्टिला दारिका पोते ज भार्यापणे आपी (अर्पण करी).

मू०—तते णं तेतलिपुत्ते पोट्टिलं दारियं भारियत्ताए उवणीयं पासति, पासित्ता पोट्टिलाए सद्धिं पट्टयं दुरूहति, दुरूहित्ता सेतापीतएहिं कलसेहिं अप्पाणं मज्जावेति, मज्जावित्ता अग्गिहोमं

करेति, करित्ता पोट्टिलाए भारियाए मित्तणाति जाव परिजणं विपुलेणं असणपाणखातिमसातिमेणं पुप्फ जाव पडिविसज्जेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते तेतलिपुत्र अमात्ये पोट्टिला दारिकाने पोतानी भार्यापणे आवेली जोइ, जोइने पोट्टिलानी साथे ते पट्टक (पाट–बाजोट) उपर बेठो. बेशीने श्वेत पीत कळशोवडे पोते स्नान कर्युं. स्नान करीने अग्निमां होम कर्यो. करीने पोट्टिला भार्याना मित्र, ज्ञाति विगेरे यावत् परिवारने विपुल एवा अशन, पान, खादिम, स्वादिम, पुष्प, वस्त्र अने अलंकारवडे सन्मान सत्कार करी यावत् विदाय कर्या.

मू०—तते णं से तेतलिपुत्ते पोट्टिलाए भारियाए अणुरत्ते अविरत्ते उरालाइं जाव विहरति ॥९६॥

अर्थ—त्यारपछी ते तेतलिपुत्र अमात्य ते पोट्टिला भार्याने विषे अनुराग (प्रीति) वाळो अने अविरक्त (आसक्त) थइ तेनी साथे यावत् उदार भोग भोगववा लाग्यो. ९६.

मू०—तते णं से कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य अंतेउरे य मुच्छिते ४ जाते २ पुत्ते वियंगेति, अप्पेगइयाणं हत्थंगुलियाओ छिंदाति, अप्पेगइयाणं हत्थंगुट्ठए छिंदाति, एवं पायंगुलियाओ पायंगुट्ठए वि कन्नसक्कुलीए वि नासापुडाइं फालेति अंगमंगाति वियंगे(ते)ति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कनकरथ राजा राज्यने विषे, राष्ट्र (देश)ने विषे, बल (सैन्य)ने विषे, वाहनने विषे, कोशने विषे कोष्ठागारने विषे तथा अंतःपुरने विषे अति मूर्छा (आसक्ति)वाळो थयो. तेथी ते तेने जे जे पुत्र उत्पन्न थाय, तेने विकलांग करवा लाग्यो. तेमां केटलाकनी हाथनी आंगळीओ छेदी, केटलाकना हाथनो अंगुष्ठ छेद्यो, ए ज प्रमाणे कोइना पादनी आंगळीओ, कोइना पादनो अंगुष्ठ, कोइनी कर्णशष्कुलि (काननी पापडी–बुट्टी) अने कोइनुं नासिकापुट काप्युं. ए प्रमाणे सर्वना अंगोपांग विकळ कर्या (अथवा काप्या). (राज्यने अयोग्य बनाव्या.)

मू०—तते णं तीसे पउमावतीए देवीए अन्नया पुव्वरत्तावरत्तकालंसि अयमेयारूवे अब्भत्थिए समुप्पज्जित्था४—" एवं खलु कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियंगेति जाव अंगमंगाइं वियंगे (ते)ति, तं जति अहं दारयं पयायामि, सेयं खलु ममं तं दारगं कणगरहस्स रहस्सियं चेव सारक्खमाणीए संगोवेमाणीए विहरित्तए " त्ति कट्टु एवं संपेहेति, संपेहित्ता तेयलिपुत्तं अमच्चं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते (कनकरथ राजानी राणी) पद्मावती देवीने एकदा मध्यरात्रिने समये आवा प्रकारनो अध्यवसाय (विचार) यावत् उत्पन्न थयो.—" आ प्रमाणे निश्चे कनकरथ राजा राज्य विगेरेमां आसक्त थइ यावत् पुत्रोने विकल अंगवाळा करे छे, यावत् अंगोपांगने विकल करे छे (अथवा कापे छे). तो जो मारे पुत्र उत्पन्न थाय तो मारे ते पुत्रने

कनकरथ राजाथी गुप्तरीते रक्षण करी, गोपवीने विचरवुं श्रेय-कल्याणकारक छे." एम करीने ते प्रमाणे तेणीए विचार कर्यो. विचार करीने तेतलिपुत्र अमात्यने बोलाव्यो. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—" एवं खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियंगे(ते)ति, तं जति णं अहं देवाणुप्पिया ! दारगं पयायामि, तते णं तुमं कणगरहस्स रहस्सियं चेव अणुपुव्वेणं सारक्खमाणे संगोवेमाणे संवड्ढेहि, तते णं से दारए उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुप्पत्ते तव य मम य भिक्खाभायणे भविस्सति " ।

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! कनकरथ राजा राज्यादिकने विषे आसक्त थइ यावत् पुत्रोने विकलांग करे छे (अथवा अंगोपांग कापे छे). तेथी जो कदाच हुं हे देवानुप्रिय ! पुत्रने जन्म आपुं, तो तारे कनकरथ राजाथी गुप्तपणे अनुक्रमे तेनुं संरक्षण करी गोपवीने वृद्धि पमाडवो. तेम करवाथी ते पुत्र बाल्यावस्थाथी मुक्त थइ यौवन वयने पामशे त्यारे ते तारे अने मारे भिक्षानुं भाजन (पात्र)रूप थशे एटले के ते आपणुं पालन पोषण करशे. "

मू०—तते णं से तेतलिपुत्ते अमच्चे पउमावतीए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता पडिगए ।

अर्थ—त्यारपछी ते तेतलिपुत्र अमात्ये ते पद्मावती देवीना ते अर्थने अंगीकार कर्यो. अंगीकार करीने ते पाछो पोताने घेर गयो.

मू०—तते णं पउमावती य देवी पोट्टिला य अमच्ची सममेव गब्भं गेण्हंति, सममेव गब्भं परिवहंति, सममेव गब्भं परिवड्ढंति। तते णं सा पउमावती देवी नवण्हं मासाणं जाव पियदंसणं सुरूवं दारगं पयाया।

अर्थ—त्यारपछी ते पद्मावती देवी अने ते पोट्टिला नामनी अमात्यनी भार्या ए बन्नेए साथे ज गर्भ ग्रहण (धारण) कर्यो, साथे ज गर्भने वहन करवा लागी अने साथे ज गर्भने वृद्धि पमाडवा लागी. त्यारपछी अनुक्रमे नव मास पूर्ण थया त्यारे ते पद्मावती देवीए यावत् प्रिय दर्शनवाळा अने सारा रूपवाळा पुत्रने जन्म आप्यो.

मू०—जं रयणिं च णं पउमावती देवी दारयं पयाया तं रयणिं च णं पोट्टिला वि अमच्ची नवण्हं मासाणं विणिहायमावन्नं दारियं पयाया।

अर्थ—जे रात्रिए पद्मावती देवीए पुत्रनो प्रसव कर्यो, ते ज रात्रिए पोट्टिला नामनी अमात्यनी भार्याए नव मास पूर्ण थये मरेली पुत्रीने जन्म आप्यो.

मू०—तते णं सा पउमावती देवी अम्मधाइं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—"गच्छह णं तुमे अम्मो! तेयलिपुत्तगिहे तेयलिपुत्तं रहस्सिययं चेव सद्दावेह"।

अर्थ—त्यारपछी ते पद्मावती देवीए पोतानी धात्रीमाताने बोलावी. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे माता ! तमे तेतलिपुत्रने घेर जाओ. अने तेतलिपुत्रने गुप्तपणे बोलावी लावो. "

मू०—तते णं सा अम्मधाई तह त्ति पडिसुणेति, पडिसुणित्ता अंतेउरस्स अवद्दारेणं निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव तेयलिस्स गिहे जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वदासी—" एवं खलु देवाणुप्पिया ! पउमावती देवी सद्दावेति " ।

अर्थ—त्यारपछी ते धात्र्य माताए ' तह त्ति ' (तेम हो-बहु सारुं) एम कही तेनुं वचन अंगीकार कर्युं अंगीकार करीने अंतःपुरना पाछला द्वारथी बहार नीकळी. नीकळीने ज्यां तेतलिपुत्रनुं घर हतुं अने ज्यां तेतलिपुत्र हतो, त्यां आवी. आवीने बे हाथ जोडी यावत् आ प्रमाणे बोली—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! तमने पद्मावती देवी बोलावे छे."

मू०—तते णं तेयलिपुत्ते अम्मधातीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठ अम्मधातीए सद्धिं सातो गिहातो निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता अंतेउरस्स अवद्दारेणं रहस्सियं चेव अणुपविसति, अणुपविसित्ता जेणेव पउमावती देवी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल एवं वदासी—संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! जं मए कायव्वं " ।

अर्थ—त्यारपछी ते तेतलिपुत्र अमात्य धाव्य मातानी पासेथी आ अर्थ सांभळीने हृदयमां धारीने हृष्ट तुष्ट थइ धात्री मातानी साथे पोताना घरथी नीकळ्यो. नीकळीने अंतःपुरना पाछला द्वारवडे गुप्त रीते प्रवेश कर्यो. प्रवेश करीने ज्यां पद्मावती देवी हती, त्यां आव्यो. आवीने बे हाथ जोडी आ प्रमाणे बोल्यो.—" हे देवानुप्रिया! मारे जे करवानुं होय ते आज्ञा आपो."

मू०—तते णं पउमावती देवी तेयलिपुत्तं एवं वदासी—" एवं खलु कणगरहे राया जाव वियंगे (ते) ति, अहं च णं देवाणुप्पिया! दारगं पयाया, तं तुमं णं देवाणुप्पिया! तं दारगं गेण्हाहि जाव तव मम य भिक्खाभायणे भविस्सति" ति कट्टु तेयलिपुत्तस्स हत्थे दलयति।

अर्थ—त्यारपछी ते पद्मावती देवीए ते तेतलिपुत्रने आ प्रमाणे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे कनकरथ राजा यावत् पुत्रोना अंगोपांगने विकळ करे छे. (अथवा कापे छे), अने में हे देवानुप्रिय! पुत्र प्रसव्यो छे. तेथी तमे हे देवानुप्रिय! आ पुत्रने ग्रहण करो, यावत् ते तमारा अने मारा भिक्षानुं भाजनरूप थशे (आधाररूप थशे)" एम कही तेतलिपुत्रना हाथमां ते पुत्र आप्यो.

मू०—तते णं तेतलिपुत्ते पउमावतीए हत्थातो दारगं गेण्हति, गेण्हित्ता उत्तरिज्जेणं पिहेति, पिहित्ता अंतेउरस्स रहस्सियं अवदारेणं निगच्छति, निगच्छित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव पोट्टिला

भारिया तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता पोट्टिलं एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते तेतलिपुत्र अमात्ये पद्मावती देवीना हाथमांथी ते पुत्रने ग्रहण कर्यो. ग्रहण करीने तेने उत्तरीय वस्त्रवडे ढांक्यो. ढांकीने गुप्त रीते अंतःपुरनी पाछळना द्वारवडे नीकळ्यो. नीकळीने ज्यां पोतानुं घर हतुं अने ज्यां पोट्टिला भार्या हती, त्यां आव्यो, आवीने तेणे पोट्टिला भार्याने आ प्रमाणे कह्युं—

मू०—" एवं खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियंगेति अयं च णं दारए कणगरहस्स पुत्ते पउमावतीए अत्तए, तेणं तुमं देवाणुप्पिया ! इमं दारगं कणगरहस्स रहस्सियं चेव अणुपुव्वेणं सारक्खाहि य संगोवेहि य संवड्ढेहि य । तते णं एस दारए उम्मुक्कबालभावे तव य मम य पउमावतीए य आहारे भविस्सति " त्ति कट्टु पोट्टिलाए पासे णिक्खिवति, पोट्टिलाओ पासाओ तं विणिहायमावन्नियं दारियं गेण्हति, गेण्हित्ता उत्तरिज्जेणं पिहेति, पिहित्ता अंतेउरस्स अवद्दारेणं अणुपविसति, अणुपविसित्ता जेणेव पउमावती देवी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पउमावतीए देवीए पासे ठावेति, ठावित्ता जाव पडिनिग्गते ।

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिया ! कनकरथ राजा राज्यादिकमां आसक्त थवाथी यावत् पुत्रोने विकल अंग-

वाळा करे छे. अने आ बालक कनकरथ राजानो पुत्र छे अने पद्मावती देवीनो आत्मज (कुक्षिथी उत्पन्न थयेलो) छे. तेथी तुं हे देवानुप्रिया ! आ पुत्रने कनकरथ राजाथी छानो ज अनुक्रमे रक्षण कर, गुप्त रीते राख अने वृद्धि पमाड. तेम करवाथी आ बाळक बाल्यावस्थाथी मुक्त थशे त्यारे तारो, मारो अने पद्मावती देवीनो आधारभूत थशे. " आ प्रमाणे कही पोट्टिलानी पासे ते बाळक मूक्यो. अने पोट्टिलानी पासेथी ते मरेली जन्मेली पुत्रीने ग्रहण करी. ग्रहण करीने तेने उत्तरीय वस्त्रवडे ढांकी. ढांकीने अंतःपुरनी पाछळना द्वारवडे अंदर प्रवेश कर्यो. प्रवेश करीने ज्यां पद्मावती देवी हती, त्यां आव्यो. आवीने पद्मावती देवीनी पासे ते मृत बाळाने स्थापन करी. स्थापन करीने यावत् पाछो नीकळी पोताने घेर गयो.

मू०—तते णं तीसे पउमावतीए अंगपडियारियाओ पउमावइं देविं विणिहायमावन्नियं च दारियं पयायं पासंति, पासित्ता जेणेव कणगरहे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वदासी—" एवं खलु सामी ! पउमावती देवी मइल्लियं दारियं पयाया "।

अर्थ—त्यारपछी ते पद्मावती देवीनी अंगपरिचारिका (दासीओ) ए पद्मावती देवीने मरेली पुत्री प्रसवेली जोइ. जोइने ज्यां कनकरथ राजा हतो, त्यां आवी. आवीने बे हाथ जोडी यावत् आ प्रमाणे बोली—" आ प्रमाणे निश्चे हे स्वामी ! पद्मावती देवीए मरेली पुत्रीने प्रसवी छे. "

मू०—तते णं कणगरहे राया तीसे मइल्लियाए दारियाए नीहरणं करेति बहूणि लोइयाइं मय-

किच्चाइं करेति, कालेणं विगयसोए जाते ।

अर्थ—त्यारपछी कनकरथ राजाए ते मरेली दारिकानुं नीहरण[1] कर्युं. घणां लौकिक मृतकार्य कर्यां अने केटलेक काळे राजा शोकरहित थयो.

मू०—तते णं से तेतलिपुत्ते कल्लं कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—“ खिप्पामेव चारगसोधनं जाव ठितिपडियं जम्हा णं अम्हं एस दारए कणगरहस्स रज्जे जाए, तं होउ णं दारए नामेणं कणगज्झए जाव अलं भोगसमत्थे जाते ॥ ९७ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते तेतलिपुत्रे काले (बीजे दिवसे) कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—“ हे देवानुप्रियो ! शीघ्रपणे चारकशोधन (जेलखानामांथी केदीजनोनो मोक्ष) करो, यावत् दश दिवसनी स्थितिपतिका (जन्मोत्सव) करो. जे कारण माटे अमारो आ पुत्र कनकरथ राजाना राज्यमां थयो छे, तेथी करीने आ पुत्रनुं नाम कनकध्वज हो.” (ते ज प्रमाणे सर्व कर्युं.) पछी अनुक्रमे ते पुत्र यावत् सर्व कळाओ शीखी युवावस्था पामी भोग समर्थ थयो. ९७

मू०—तते णं सा पोट्टिला अन्नया कयाई तेतलिपुत्तस्स अणिट्ठा जाया यावि होत्था, णेच्छइ

१ स्मशानमां लइ जवानुं कार्य.

य तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए नामगोत्तमवि सवणयाए, किं पुण दरिसणं वा परिभोगं वा ?

अर्थ—त्यारपछी अन्यदा कदाचित् ते पोट्टिला तेतलिपुत्रने अनिष्ट थइ. तेथी तेतलिपुत्र ते पोट्टिलानुं नामगोत्र पण सांभळवाने इच्छतो नहोतो. तो पछी दर्शनने के भोगने तो क्यांथी इच्छे ?

मू०—तते णं तीसे पोट्टिलाए अन्नया कयाई पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था—" एवं खलु अहं तेतलिस्स पुव्विं इट्ठा आसि, इयाणिं अणिट्ठा जाया, नेच्छइ य तेयलिपुत्ते मम नामं जाव परिभोगं वा. " ओहयमणसंकप्पा जाव झियायाति ।

अर्थ—त्यारपछी ते पोट्टिलाने एकदा कदाचित् मध्य रात्रिने समये आवा प्रकारनो यावत् विचार उत्पन्न थयो.— " आ प्रमाणे निश्चे हुं तेतलिपुत्रने प्रथम (आज सुधी) इष्ट हती, हमणा अनिष्ट थइ छुं. तेथी तेतलिपुत्र मारुं नाम सांभळ्वाने पण इच्छता नथी, तो यावत् परिभोगने तो क्यांथी इच्छे ? " आ प्रमाणे हणायो छे—नाश पाम्यो छे मननो विचार जेनो (अर्थात् शून्य चित्तवाळी) एवी ते पोट्टिला यावत् विचार करवा लागी.

मू०—तए णं तेतलिपुत्ते पोट्टिलं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणं पासति, पासित्ता एवं वदासी—" मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पा, तुमं णं मम महाणसंसि विपुलं असणं

पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेहि; उवक्खडावित्ता बहूणं समणमाहण जाव वणीमगाणं देयमाणी य देवावेमाणी य विहराहि।"

अर्थ—त्यारपछी ते तेतलिपुत्रे हणाइ गयो छे मननो संकल्प जेनो एवी पोट्टिलाने यावत् ध्यान (विचार) करती जोइ. जोइने आ प्रमाणे कह्युं–" हे देवानुप्रिया ! तुं हणायेला मनना संकल्पवाळी थइ सती ध्यान न कर. परंतु तुं मारी भोजनशाळामां विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने तैयार कराव. तैयार करावीने घणा श्रमण, माहण, यावत् वनीपक (भिखारी) ने दान देती तथा बीजा पासे दान अपावती सती विचर–रहे."

मू०—तते णं सा पोट्टिला तेयलिपुत्तेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ तुट्ठ तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता कल्लाकल्लं महाणसंसि विपुलं असणं पाणं खातिमं सातिमं जाव दवावेमाणी विहराति ॥ ९८ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते पोट्टिला तेतलिपुत्रे आ प्रमाणे कही सती हृष्ट तुष्ट थइ, तेथी तेणीए तेतलिपुत्रनो आ अर्थ अंगीकार कर्यो. अंगीकार करी हमेशां भोजनशाळामां विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने तैयार करावी यावत् दान आपती तेमज बीजा पासे दान अपावती विचरवा लागी–रही. ९८

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं सुव्वयाओ नामं अज्जाओ ईरियासमिताओ जाव गुत्त-

वंभयारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विं जेणामेव तेयलिपुरे नयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हंति, ओगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणीओ विहरंति ।

अर्थ—ते काळे ते समये सुव्रता नामनी आर्या ईर्यासमितिवाळी यावत् गुप्त ब्रह्मचारिणी, बहुश्रुत, बहु परिवारवाळी, अनुक्रमे विहार करती ज्यां तेतलिपुर नगर हतुं, त्यां आवी. आवीने यथायोग्य अवग्रह (उपाश्रय) ने ग्रहण कर्यो. ग्रहण करीने संयमवडे अने तपवडे आत्माने भावती सती रही.

मू०—तते णं तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संघाडए पढमाए पोरसीए सज्झायं करेति जाव अडमाणीओ तेतलिस्स गिहं अणुपविट्ठाओ ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुव्रता आर्यानो एक संघाटक (बे साध्वीओ) पहेली पोरसीए स्वाध्याय करी यावत् भिक्षाने माटे अटन करतो तेतलिपुत्रना घरमां पेठो—बे साध्वीओ गोचरीने माटे तेने घेर आवी.

मू०—तते णं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासति, पासित्ता हट्ठ तुट्ठ आसणाओ अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठित्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता विपुलं असणं पाणं खातिमं साति-

मं पडिलाभेति, पडिलाभित्ता एवं वदासी–

अर्थ—त्यारपछी ते पोट्टिलाए ते बे आर्याओने आवती जोइ. जोइने हृष्ट तुष्ट थइ आसनपरथी उभी थइ. उभी थइने तेमने वंदना करी नमस्कार कर्या. वंदना नमस्कार करी विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम ए सर्व आहार वहोराव्यो (आप्यो), वहोरावीने आ प्रमाणे बोली.–

मू०–"एवं खलु अहं अज्जाओ ! तेयलिपुत्तस्स पुव्विं इट्ठा ५ आसि, इयाणिं अणिट्ठा ५ जाव दंसणं वा परिभोगं वा, तं तुब्भे णं अज्जातो सिक्खियाओ बहुनायाओ बहुपढियाओ बहूणि गामागर जाव आहिंडह, राईसर जाव गिहाणि अणुपविसह, तं अत्थि याइं भे अज्जाओ ! केइ कहंचि चुन्नजोए वा मंतजोगे वा कम्मणजोए वा हियउड्डावणे वा काउड्डावणे वा आभिओगिए वा वसीकरणे वा कोउयकम्मे वा भूइकम्मे वा मूले कंदे छल्ली वल्ली सिलिया वा गुलिया वा ओसहे वा भेसज्जे वा उवलद्धपुव्वे जेणाहं तेयलिपुत्तस्स पुणरवि इट्ठा भवेज्जामि "।

अर्थ—"आ प्रमाणे निश्चे हे आर्याओ ! हुं तेतलिपुत्रने पहेलां इष्ट हती, हमणां अनिष्ट थइ छुं. यावत् दर्शन अथवा परिभोगने तो क्यांथी पाछुं ? तो तमे आर्याओ भणेली, घणुं जाणनारी अने घणुं शीखेली छो, वळी ग्राम, आकर, नगर

विगेरेमां यावत् विचरो छो. घणा राजा, ईश्वर विगेरेना यावत् गृहने विषे प्रवेश करो छो, तेथी हे आर्याओ ! तमारी पासे कांइ चूर्णयोग—स्तंभनादिक करनार द्रव्यनो योग, मंत्रनो योग, कुष्ठादिक रोगने करनारो कार्मण योग, मनोहरपणानो हेतुरूप काम्य योग, हृदयोड्डापन—चित्तने आकर्षण करनार, कायोड्डापन—कायाने आकर्षण करनार, अभियोग—पराभव करनार, वशीकरण—वश करनार, कौतुककर्म—सौभाग्य करनार स्नानादिक, भूतिकर्म—मंत्रित करेली भस्मनुं कर्म, अथवा मूळ, कंद, छाल, वेलडी, शिलिका—तृणविशेष, गुलिका—गोळी, औषध अथवा भैषज प्रथमथी प्राप्त करेलुं जाणेलुं छे ? के जेथी करीने हुं तेतलिपुत्रने फरीथी पण इष्ट थाउं ? "

मू०—तते णं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए एवं वुत्ताओ समाणीओ दोवि कन्ने ठाइंति, ठाइत्ता पोट्टिलं एवं वदासी—" अम्हे णं देवाणुप्पिया ! समणीओ निग्गंथीओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ, नो खलु कप्पइ अम्हं एयप्पयारं कन्नेहि वि णिसामेत्तए, किमंग पुण उवदिसित्तए वा आयरित्तए वा ?। अम्हे णं तव देवाणुप्पिया ! विचित्तं केवलिपन्नत्तं धम्मं पडिकहिज्जामो "।

अर्थ—त्यारपछी ते आर्याओने पोट्टिलाए आ प्रमाणे कह्युं त्यारे ते बन्नेए पोताना कान ढांकी दीधा, ढांकीने पोट्टिलाने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रिया ! अमे साध्वीओ निर्ग्रंथ—परिग्रह रहित यावत् गुप्त ब्रह्मचारिणीओ छीए. तेथी अमारे आवा प्रकारनुं वचन कर्णवडे सांभळवुं पण न कल्पे, तो पछी उपदेश देवाने के आचरवाने तो क्यांथी ज कल्पे ?

परंतु अमे तो हे देवानुप्रिया ! तमने विचित्र प्रकारनो केवलि प्ररूपित धर्म सारी रीते कही शकीए छीए. ”

मू०—तते णं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एवं वदासी—“ इच्छामि णं अज्जाओ ! तुम्हं अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामित्तए ” ।

अर्थ—त्यारपछी ते पोट्टिलाए ते आर्याओने आ प्रमाणे कह्युं—“ हे आर्याओ ! हुं तमारी पासे केवलिप्ररूपित धर्म सांभळवाने इच्छुं छुं. ”

मू०—तते णं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए विचित्तं धम्मं परिकहेंति ।

अर्थ—त्यारे ते आर्याओए पोट्टिलाने विचित्र प्रकारनो (अनेक प्रकारनो) धर्म कह्यो.

मू०—तते णं सा पोट्टिला धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठ एवं वदासी—“ सद्दहामि णं अज्जाओ ! निग्गंथं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वयह, इच्छामि णं अहं तुब्भं अंतिए पंचाणुव्वयाइं जाव धम्मं पडिवज्जित्तए ” । अहासुहं ।

अर्थ—त्यारपछी ते पोट्टिला धर्म सांभळीने हृदयमां धारीने हृष्ट तुष्ट थइ सती आ प्रमाणे बोली—“ हे आर्याओ ! हुं निर्ग्रंथ प्रवचननी श्रद्धा करुं छुं; यावत् तमे जे कहो छो ते तेम ज छे. तेथी हुं तमारी पासे पांच अणुव्रतोने यावत् (श्रावक) धर्मने अंगीकार करवा इच्छुं छुं. ” त्यारे साध्वीओए कह्युं—“ जेम सुख उपजे तेम करो. ”

मू०—तए णं सा पोट्टिला तासिं अज्जाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव धम्मं पडिवज्जइ, ताओ अज्जाओ वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता पडिविसज्जेति।

अर्थ—त्यारपछी ते पोट्टिलाए ते आर्याओनी पासे पांच अणुव्रत विगेरे यावत् श्रावक धर्म अंगीकार कर्यो. पछी ते आर्याओने वंदना करी, नमस्कार कर्या. वंदना नमस्कार करी तेमने विदाय कर्या.

मू०—तए णं सा पोट्टिला समणोवासिया जाया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ ॥ ९९ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते पोट्टिला श्रमणोपासिका (श्राविका) थइ, यावत् साधुसाध्वीने प्रतिलाभ आपती सती विचरवा लागी-रही. ९९

मू०—तते णं तीसे पोट्टिलाए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणी अयमेयारूवे अब्भत्थिते जाव समुप्पज्जित्था—" एवं खलु अहं तेतलिपुत्तस्स पुव्विं इट्ठा ५ आसि, इयाणिं अणिट्ठा ५ जाव परिभोगं वा, तं सेयं खलु मम सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए पव्वतित्तए " ! एवं संपेहेति।

अर्थ—त्यारपछी ते पोट्टिला एकदा कदाचित् मध्यरात्रिने समये कुडुंबनी सार संभाळ बाबत चिंतवन करती जागती

हती, ते वखते तेणीने आवा प्रकारनो विचार उत्पन्न थयो.–" आ प्रमाणे निश्चे प्रथम हुं तेतलिपुत्रने इष्ट हती. हमणां अनिष्ट थइ छुं, यावत् दर्शन के परिभोगनुं तो कहेवुं ज शुं ? तेथी मारे सुव्रता आर्यानी पासे दीक्षा ग्रहण करवी ते श्रेयस्कर–कल्याणकारक छे." ए प्रमाणे तेणीए विचार कर्यो.

मू०–संपेहित्ता कल्लं पाउप्पभाए जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयलपरि एवं वयासी–" एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव अब्भणुन्नाया पव्वइत्तए "।

अर्थ–आ प्रमाणे विचार करीने काले (बीजे दिवसे) प्रभातकाळे ज्यां तेतलिपुत्र हतो, त्यां आवी. आवीने बे हाथ जोडी आ प्रमाणे बोली–" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! में सुव्रता आर्यानी पासे धर्म सांभळ्यो छे, हृदयमां धार्यो छे, यावत् हवे तमारी आज्ञावडे दीक्षा लेवाने इच्छुं छुं."

मू०–तते णं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वदासी–" एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए ! मुंडा पव्वइया समाणी कालमासे कालं किच्चा अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जिहिसि, तं जति णं तुमं देवाणुप्पिए ! ममं ताओ देवलोयाओ आगम्म केवलिपन्नत्ते धम्मे बोहिहि, तो हं विसज्जेमि, अह णं

तुमं ममं ण संबोहेसि तो ते ण विसज्जेमि " ।

अर्थ—त्यारपछी ते तेतलिपुत्रे पोट्टिलाने आ प्रमाणे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिया ! तुं मुंडित थइ प्रव्रज्या लइ काळने समये काळ करी कोइपण देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थाय, अने जो तुं हे देवानुप्रिया ! मने ते देवलोकथी आवीने केवलीप्ररूपित धर्मनो बोध करे, तो हुं तने दीक्षा लेवा रजा आपुं, अने जो तुं मने प्रतिबोध न करे तो हुं तने रजा आपतो नथी. "

मू०—तते णं सा पोट्टिला तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेति ।

अर्थ—त्यारे ते पोट्टिलाए तेतलिपुत्रनो आ अर्थ स्वीकार्यो—अंगीकार कर्यो.

मू०—तते णं तेयलिपुत्ते विपुलं असणं पाणं खातिमं सातिमं उवक्खडावेति, उवक्खडावित्ता मित्तणाति जाव आमंतेइ, आमंतित्ता जाव संमाणेइ, संमाणित्ता पोट्टिलं ण्हायं जाव पुरिससहस्सवाहणीयं सीयं दुरूहित्ता मित्तणाति जाव परिवुडे सव्विड्ढिए जाव रवेणं तेतलिपुरस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं उवस्सए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता पोट्टिलं पुरतो कट्टु जेणेव सुव्वया अज्जा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता

नमंसित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते तेतलिपुत्रे विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम तैयार कराव्युं. तैयार करावीने मित्र, ज्ञाति विगेरेने यावत् आमंत्रण कर्युं. आमंत्रण करीने यावत् तेमनुं सन्मान कर्युं. सन्मान करीने पोट्टिलाने स्नान कराव्युं, यावत् हजार पुरुषोए वहन करवा लायक शिबिकापर आरूढ करावी मित्र, ज्ञाति विगेरेवडे यावत् परिवरेलो अमात्य सर्व ऋद्धिवडे यावत् वाजीत्रना शब्दवडे तेतलिपुर नगरनी मध्ये मध्ये थइने ज्यां सुव्रता आर्यानो उपाश्रय हतो, त्यां आव्यो. आवीने पोट्टिलाने शिबिकापरथी नीचे उतारी, उतारीने पोट्टिलाने आगळ करी ज्यां सुव्रता आर्या हती, त्यां आव्यो. आवीने सुव्रता आर्याने वंदना करी, नमस्कार कर्या. वंदना नमस्कार करीने आ प्रमाणे बोल्यो.—

मू०—"एवं खलु देवाणुप्पिए ! मम पोट्टिला भारिया इट्ठा, एस णं संसारभउव्विग्गा जाव पव्वतित्तए, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिए ! सिस्सिणिभिक्खं दलयामि"। "अहासुहं, मा पडिबंधं करेह"।

अर्थ—"आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिया ! आ मारी पोट्टिला भार्या मने इष्ट छे. परंतु ते संसारना भयथी उद्वेग पामी छे यावत् प्रव्रज्या लेवाने इच्छे छे, तेथी हे देवानुप्रिया ! तमे तेने अंगीकार करो. हुं तमने शिष्यारूप भिक्षा आपुं छुं." आर्याए कह्युं—"जेम सुख उपजे तेम करो. प्रतिबंध—विलंब न करो."

मू०—तते णं सा पोट्टिला सुव्वयाहिं अज्जाहिं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ तुट्ठ उत्तरपुरच्छिमे दि-

सिभाए सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयति, ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करित्ता जेणेव सुव्वयाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते पोट्टिला सुव्रता नामनी गुरुणीए आ प्रमाणे कह्युं त्यारे हृष्ट तुष्ट थइ उत्तरपूर्व (ईशान) दिशामां जइ पोतानी मेळे आभरण, माळा, अलंकार विगेरेने शरीरपरथी उतार्या, उतारीने पोते ज पांच मुठीवडे केशनो लोच कर्यो, करीने ज्यां सुव्रता आर्या हती त्यां आवी. आवीने तेमने वंदना करी नमस्कार कर्या. वंदना नमस्कार करी बे हाथ जोडी आ प्रमाणे बोली.—

मू०—" आलित्ते णं भंते! लोए " एवं जहा देवाणंदा, जाव एक्कारस अंगाइं बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाइं आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ना ॥१००॥

अर्थ—" हे भगवती (पूज्य) ! आ लोक (संसार) कर्ममळथी लींपायेल छे. " इत्यादिक भगवती सूत्रमां देवानंदा ब्राह्मणीना दीक्षा समयनो आलावो कहेल छे ते प्रमाणे अहीं जाणवो. यावत् पोट्टिला दीक्षा लइ अग्यार अंग भणी

घणा वर्ष सुधी चारित्र पर्यायनुं पालन कर्युं. पालन करीने एक मासनी संलेखनावडे पोताना आत्माने (देहने) क्षीण करी साठ भक्त (त्रीश दिवस) ना अनशनवडे पापकर्मनी आलोचना तथा प्रतिक्रमण करी समाधिपूर्वक काळ समये काळ करी कोइक देवलोकमां देवतापणे उत्पन्न थइ. १००

मू०—तते णं से कणगरहे राया अन्नया कयाई कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते कनकरथ राजा एकदा कदाचित् काळधर्मवडे सहित थयो—मरण पाम्यो.

मू०—तते णं राईसर जाव णीहरणं करेंति, करित्ता अन्नमन्नं एवं वदासी—" एवं खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियंगित्था, अम्हे णं देवाणुप्पिया ! रायाहीणा रायाहिट्ठिया रायाहीणकज्जा, अयं च णं तेतली अमच्चे कणगरहस्स रण्णो सव्वट्ठाणेसु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए दिन्नवियारे सव्वकज्जवट्टावए यावि होत्था, तं सेयं खलु अम्हं तेतलिपुत्तं अमच्चं कुमारं जातित्तए " त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एतमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेयलिपुत्तं एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी राजा, ईश्वर विगेरे सर्व जनोए तेनुं नीहरण (मृतकर्म) कर्युं. करीने तेओ परस्पर आ प्रमाणे

कहेवा लाग्या.—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! कनकरथ राजा राज्य विगेरेमां गृद्ध होवाथी तेणे यावत् पुत्रोने विकल अंगवाळा कर्या छे. आपणे तो हे देवानुप्रियो ! राजाने आधीन छीए, राजाना अधिष्ठित (ताबे रहेनारा) छीए अने राजाने आधीन रहीने कार्य करनारा छीए. अने आ तेतलि अमात्य कनकरथ राजाना सर्व स्थानोमां अने सर्व भूमिकामां प्रतीति (विश्वास) ने पामेलो छे, ते ज सर्व विचारवाळो छे अने सर्व कार्यने प्रवर्तावनार छे. तेथी आपणे तेतलिपुत्र अमात्यनी पासे कुमारनी याचना करवी श्रेयस्कर छे." आ प्रमाणे विचार करीने परस्परना आ अर्थने ते सर्वेए अंगीकार कर्यो. अंगीकार करी ज्यां तेतलिपुत्र अमात्य हतो, त्यां आव्या. आवीने तेतलिपुत्र अमात्यने तेमणे आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—" एवं खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य जाव वियंगेइ, अम्हे य णं देवाणुप्पिया ! रायाहीणा जाव रायाहीणकज्जा, तुमं च णं देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रन्नो सव्वट्ठाणेसु जाव रज्जधुराचिंतए, तं जइ णं देवाणुप्पिया ! अत्थि केइ कुमारे रायलक्खणसंपन्ने अभिसेयारिहे, तं णं तुमं अम्हं दलाहि, जा णं अम्हे महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचामो "।

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! कनकरथ राजा राज्यमां, राष्ट्रमां विगेरेमां आसक्त हतो तेथी तेणे यावत् बधा पुत्रोने विकलांग कर्या छे. अने अमे तो हे देवानुप्रिय ! राजाने आधीन छीए, यावत् राजाने आधीन रहीने कार्य

करनारा छीए. वळी तमे हे देवानुप्रिय ! कनकरथ राजाना सर्व स्थानोमां यावत् राज्यधुराना चिंतक छो. तेथी जो हे देवानुप्रिय ! कोइपण तेनो कुमार राजाना सर्व लक्षणथी युक्त अने अभिषेक करवाने योग्य होय, तो ते अमने आपो. जेथी अमे मोटा मोटा राज्याभिषेकवडे तेनो अभिषेक करीए. ”

मू०—तए णं तेतलिपुत्ते तेसिं ईसर एतमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता कणगज्झयं कुमारं ण्हायं जाव सस्सिरीयं करेइ, करित्ता तेसिं ईसर जाव उवणेति, उवणित्ता एवं वदासी—

अर्थ— त्यारपछी तेतलिपुत्र अमात्ये ते ईश्वर, मंडलिक राजा विगेरेनो आ अर्थ सांभळ्यो, सांभळीने कनकध्वज कुमारने स्नान करावी यावत् विभूषित कर्यो, करीने ते ईश्वर विगेरेनी पासे प्राप्त कर्यो (बोलाव्यो), प्राप्त करीने (बोलावीने) तेओने आ प्रमाणे कह्युं—

मू०—“ एस णं देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रन्नो पुत्ते पउमावतीए देवीए अत्तए कणगज्झए नामं कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसंपन्ने मए कणगरहस्स रन्नो रहस्सियं संवड्ढिए, एयं णं तुब्भे महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचह, सव्वं च तेसिं (से) उट्ठाणपरियावणियं परिकहेइ।

अर्थ—“ हे देवानुप्रियो ! आ कनकरथ राजानो पुत्र पद्मावती देवीनो आत्मज कनकध्वज नामनो कुमार अभिषेकने लायक अने राजाना सर्व लक्षणे करीने सहित छे, आने में कनकरथ राजाथी छानो राखी वृद्धि पमाड्यो छे. आने

लइ जइने तमे मोटा मोटा राज्याभिषेकवडे अभिषेक करो." आ प्रमाणे कही तेतलिपुत्रे तेनी उत्पत्ति (जन्म) अने परियापनिक (स्थिति–पालन) विगेरेनो सर्व वृत्तांत तेमनी पासे कह्यो.

मू०–तते णं ते ईसर कणगज्झयं कुमारं महया महया अभिसिंचंति ।

अर्थ––त्यारपछी ते ईश्वर विगेरेए कनकध्वज कुमारने मोटा मोटा राज्याभिषेकवडे अभिषेक कर्यो.

मू०–तते णं से कणगज्झए कुमारे राया जाए महया हिमवंतमलय वण्णओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ ।

अर्थ––त्यारपछी ते कनकध्वज कुमार राजा थयो, महा हिमवंत अने मलय जेवो ए सर्व वर्णन अहीं कहेवुं, यावत् राज्यनुं पालन करतो विचरवा लाग्यो.

मू०–तते णं सा पउमावती देवी कणगज्झयं रायं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वदासी–" एस णं पुत्ता ! तव रज्जे जाव अंतेउरे य तुमं च तेतलिपुत्तस्स पहावेणं, तं तुमं णं तेतलिपुत्तं अमच्चं आढाहि परिजाणाहि सक्कारेहि संमाणेहि इंतं अब्भुट्ठेहि ठियं पज्जुवासाहि वच्चंतं पडिसंसाहेहि अद्धासणेणं उवणिमंतेहि भोगं च से अणुवड्ढेहि ।

अर्थ—त्यारपछी ते पद्मावती देवीए कनकध्वज राजाने बोलाव्यो, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे पुत्र ! आ तारुं राज्य, राष्ट्र विगेरे, यावत् तारुं अंतःपुर अने तुं पोते पण तेतलिपुत्रना प्रभावथी ज छो. तेथी तुं तेतलिपुत्र अमात्यनो आदर करजे, घणुं करी जाणजे (हितकारक जाणजे), सत्कार करजे, सन्मान करजे, आवता तेने जोइने उभो थजे, आवीने उभा रहे त्यारे तेनी सेवा करजे, जाय त्यारे तेनी पाछळ जजे अथवा बोले त्यारे तेना वचननी प्रशंसा करजे, तेने पोताना अर्ध आसनपर बेसाडजे, अने तेना भोगनी वृद्धि करजे. "

मू०—तते णं से कणगज्झए पउमावतीए देवीए तह त्ति पडिसुणेति, जाव भोगं च से वड्ढेति ॥ १०१ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते कनकध्वज राजाए पद्मावती देवीनुं वचन ' तह त्ति ' कही अंगीकार कर्युं, यावत् तेतलिपुत्रना भोगनी (पगारनी) वृद्धि करी आपी.

मू०—तते णं से पोट्टिले देवे तेतलिपुत्तं अभिक्खणं अभिक्खणं केवलिपन्नत्ते धम्मे संबोहेति, नो चेव णं से तेतलिपुत्ते संबुज्झति ।

अर्थ—त्यारपछी ते पोट्टिल देवे तेतलिपुत्रने वारंवार केवलीभाषित धर्मनो प्रतिबोध कर्यो. परंतु ते तेतलिपुत्र प्रति-

१ पगार अथवा भोगोपभोगनी वस्तु जे राज्य तरफथी अमात्य पद तरिके मळती होय तेनी.

बोध पाम्यो ज नहीं.

मू०—तते णं तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पाज्जित्था—" एवं खलु कणगज्झए राया तेतलिपुत्तं आढाति जाव भोगं च संवड्ढेति, तते णं से तेतली अभिक्खणं आभिक्खणं संबोहिज्जमाणे वि धम्मे नो संबुज्झति, तं सेयं खलु कणगज्झयं तेतलिपुत्तातो विप्परिणामेत्तए " त्ति कट्टु एवं संपेहेति, संपेहित्ता कणगज्झयं तेतलिपुत्तातो विप्परिणामेइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते पोट्टिल देवने आवा प्रकारनो अध्यवसाय (विचार) यावत् उत्पन्न थयो.—" आ प्रमाणे निश्चे कनकध्वज राजा तेतलिपुत्रनो आदर करे छे यावत् भोगने वधारे आपे छे. तेथी ते तेतलिपुत्र वारंवार बोध पमाड्या छतां पण प्रतिबोध पामतो नथी. तेथी करीने मारे कनकध्वज राजाने तेतलिपुत्र उपर विपरीत परिणामवाळो (विमुख) करवो ते श्रेयस्कर छे. " आ प्रमाणे ते देवे विचार कर्यो. विचार करीने कनकध्वज राजाने तेतलिपुत्रथी विपरीत परिणामवाळो (विमुख) कर्यो.

मू०—तते णं तेतलिपुत्ते कल्लं ण्हाते जाव पायच्छित्ते आसखंधवरगए बहूहिं पुरिसेहिं संपरिवुडे सातो गिहातो निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

अर्थ—त्यारपछी ते तेतलिपुत्र अमात्य काले (बीजे दिवसे प्रातःकाळे) स्नान करी यावत् प्रायश्चित्त[1] करी अश्वनी पीठपर आरूढ थइ घणा पुरुषोथी परिवरेलो थइ पोताना घरथकी नीकळ्यो. नीकळीने ज्यां कनकध्वज राजा हतो ते तरफ जवा चाल्यो.

मू०—तते णं तेतलिपुत्तं अमच्चं से जहा बहवे राईसरतलवर जाव पभियओ पासंति, ते तहेव आढायंति परिजाणंति अब्भुट्ठेंति, अब्भुट्ठित्ता अंजलिपरिग्गहं करेंति, करित्ता इट्ठाहिं कंताहिं जाव वग्गूहिं आलवेमाणा य संलवेमाणा य पुरतो य पिट्ठतो य पासतो य मग्गतो य समणुगच्छंति।

अर्थ—त्यारपछी ते तेतलिपुत्र अमात्यने मार्गमां जे जे घणा राजाओ, ईश्वरो, तलवरो विगेरे यावत् जुए छे, ते सर्वे ते ज प्रकारे—हंमेशनी रीते तेनो आदर करता हता, तेने हितकारक जाणता हता, उभा थता हता, उभा थइने बे हाथ जोडता हता, बे हाथ जोडी इष्ट, कांत विगेरे यावत् सुंदर वाणीवडे तेने बोलावता हता, वारंवार बोलावता हता, तथा तेनी आगळ, पाछळ, पडखे मार्गमां तेनी पाछळ तेने अनुसरीने चालता हता.

मू०—तते णं से तेतलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए तेणेव उवागच्छति।

अर्थ—त्यारपछी ते तेतलिपुत्र ज्यां कनकध्वज राजा हता त्यां आव्यो.

---

१ अशुभना नाश माटे मेश, जुवारा, धो विगेरे ग्रहण करी.

मू०—तते णं कणगज्झए तेतलिपुत्तं एज्जमाणं पासति, पासित्ता नो आढाति नो परियाणाति नो अब्भुट्ठेति, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे अणाब्भुट्ठायमाणे परंमुहे संचिट्ठति ।

अर्थ—ते वखते कनकध्वज राजाए तेतलिपुत्रने आवेलो जोयो. जोइने तेनो आदर कर्यो नहीं, तेने हितकारक जाण्यो नहीं अने तेनी सन्मुख उभो थयो नहीं. अनादर करतो, नहीं जाणतो अने नहीं उभो थतो पराङ्मुख (विमुख) रह्यो.

मू०—तते णं तेतलिपुत्ते कणगज्झयस्स रन्नो अंजलिं करेइ, तते णं से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुसिणीए परंमुहे संचिट्ठति ।

अर्थ—त्यारे तेतलिपुत्र अमात्ये कनकध्वज राजाने अंजलि करी—बे हाथ जोड्या. तो पण ते कनकध्वज राजाए तेनो आदर कर्यो नहीं, अने ते मौन धारण करी विमुख ज रह्यो.

मू०—तते णं तेतलिपुत्ते कणगज्झयं विप्परिणयं जाणित्ता भीते जाव संजातभए एवं वदासी—“ रुट्ठे णं मम कणगज्झए राया, हीणे णं मम कणगज्झए राया, अवज्झाए णं कणगज्झए राया, तं ण नज्जइ णं मम केणइ कुमारेण मारेहि ” त्ति कट्टु भीते तत्थे य जाव सणियं सणियं पच्चोसक्केति. पच्चोसक्कित्ता तमेव आसखंधं दुरूहेति, दुरूहिता तेतलिपुरं मज्झंमज्झेणं जेणेव

सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

अर्थ—त्यारपछी ते तेतलि अमात्य कनकध्वज राजाने विपरीत परिणामवाळो थयो जाणी भय पाम्यो, यावत् तेने भय उत्पन्न थयो. पछी तेणे मनमां आ प्रमाणे कह्युं-विचार्युं—"कनकध्वज राजा मारापर रुष्टमान थयो छे, कनकध्वज राजा मारापर हीन (अधम) थयो छे अने कनकध्वज राजा मारापर अपध्यान (दुष्ट ध्यान) वाळो थयो छे. तेथी जाणी शकातुं नथी के ते राजा क्रोधने लीधे मने केवा खराब मारवडे मारशे ? (मरण पमाडशे)" आ प्रमाणे विचार करी ते भय पाम्यो, त्रास पाम्यो, यावत् धीमे धीमे पाछो फरी ते ज अश्वना स्कंध (पीठ) पर चड्यो. चडीने तेतलिपुर नगरना मध्यमध्य भागे थइने ज्यां पोतानुं घर हतुं त्यां जवा नीकळ्यो.

मू०— तते णं तेयलिपुत्तं से जहा ईसर जाव पासंति ते तहा नो आढायंति, नो परियाणंति, नो अब्भुट्ठेंति, नो अंजलिपरिग्गहियं करेंति, इट्ठाहिं जाव णो संलवंति, नो पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य मग्गतो य समणुगच्छंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते तेतलिपुत्रने ते ईश्वर विगेरे जेम जुए छे, तेम तेओए प्रथमनी जेम तेनो आदर कर्यो नहीं, तेने जाण्यो नहीं, तेनी सन्मुख उभा थया नहीं, तेने बे हाथ जोड्या नहीं, यावत् इष्ट विगेरे वाणीवडे तेने बोलाव्यो नहीं. आगळ, पाछळ, पडखे मार्गमां कोइपण तेनी पाछळ चाल्या नहीं.

मु०— तते णं तेतलिपुत्ते जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छाति। जा वि य से बाहिरिया परिसा भवति, तं जहा—दासेति वा पेसेति वा भाइल्लएति वा, सा वि य णं नो आढाइ नो परियाणाइ नो अब्भुट्ठेति।

अर्थ—त्यारपछी ते तेतलिपुत्र ज्यां पोतानुं घर हतुं त्यां आव्यो. ते वखते जे तेनी बहारनी पर्षदा हती, ते आ प्रमाणे—दास (घरनुं काम करनारा), प्रेष्य (बहार जवा आववानुं काम करनारा) तथा भाणेज विगेरे, तेओए पण तेनो आदर न कर्यो, जाण्यो नहीं अने सन्मुख उभा थया नहीं.

मू०—जा वि य से अब्भिंतरिया परिसा भवति, तं जहा—पियाइ वा माताति वा जाव सुण्हाति वा सा वि य णं नो आढाति, नो परियाणाति, नो अब्भुट्ठेति।

अर्थ—तथा वळी जे तेनी आभ्यंतर पर्षदा हती ते आ प्रमाणे—पिता, माता यावत् स्नुषा (पुत्रनी वहु) विगेरे तेओए पण तेनो आदर कर्यो नहीं, तेने जाण्यो नहीं अने तेनी सन्मुख उभा थया नहीं.

मू०—तते णं से तेतलिपुत्ते जेणेव वासघरे जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छाति, उवागच्छित्ता सयणिज्जंसि णिसीयति, णिसीइत्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते तेतलिपुत्र ज्यां पोतानुं वासगृह हतुं अने ज्यां पोतानी शय्या हती, त्यां आव्यो, आवीने शय्यामां बेठो. बेसीने मनमां आ प्रमाणे कहेवा लाग्यो (विचार करवा लाग्यो).

मू०—" एवं खलु अहं सयातो गिहातो निग्गच्छामि तं चेव जाव अब्भितरिया परिसा नो आढाति नो परियाणाति नो अब्भुट्ठेति, तं सेयं खलु मम अप्पाणं जीवियातो ववरोवित्तए " त्ति कट्टु एवं संपेहेति, संपेहित्ता तालउडं विसं आसगंसि पक्खिवति, से य विसे णो संकमति ।

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे हुं मारा घरथी अश्वपर आरूढ थइ नीकळ्यो अने राजानी पासे गयो. त्यां राजाए आदर सत्कार कर्यो नहीं यावत् आभ्यंतर पर्षदाए पण मारो आदर कर्यो नहीं, मने जाण्यो नहीं अने मारी सन्मुख उभा थया नहीं, तेथी मारे पोताना जीवितनो त्याग करवो ए श्रेयस्कर छे. " आ प्रमाणे तेणे विचार कर्यो, विचार करीने तालपुट नामनुं विष लइ पोताना मुखमां नाख्युं. परंतु ते विष शरीरमां संक्रम्युं नहीं—तेनुं कांइ पण झेर चड्युं नहीं.

मू०—तते णं से तेतलिपुत्ते नीलुप्पल जाव असिं खंधे ओहरति, तत्थ वि य से धारा ओपल्ला ।

अर्थ—त्यारपछी ते तेतलिपुत्रे काळा कमळ जेवा श्याम यावत् असि (खड्ग) ने पोताना स्कंधपर वहन कर्यो—प्रहार कर्यो, तोपण तेनी धारा खंडित थइ, तेने कांइ पण थयुं नहीं.

मू०—तते णं से तेतलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पासगं

गीवाए बंधति, बंधित्ता रुक्खं दुरूहति, दुरूहित्ता पासं रुक्खे बंधाति बंधित्ता अप्पाणं मुयति, तत्थ वि य से रज्जू छिन्ना ।

अर्थ—त्यारपछी ते तेतलिपुत्र ज्यां अशोकवनिका (अशोकवाडी) हती, त्यां आव्यो. आवीने ग्रीवामां पाश बांध्यो. बांधीने वृक्षपर चड्यो, चडीने पाशने वृक्षपर बांध्यो, बांधीने पोताना शरीरने मूक्युं—लटकाव्युं. त्यां पण तेनी दोरी तुटी गइ.

मू०—तते णं से तेतलिपुत्ते महतिमहालयं सिलं गीवाए बंधति, बंधित्ता अत्थाहमतारमपोरिसियंसि उदगंसि अप्पाणं मुयति, तत्थ वि से थाहे जाते ।

अर्थ—त्यारपछी ते तेतलिपुत्रे एक मोटी शिला पोताने कंठे बांधी, बांधीने जेनो ताग नथी, जे कोइथी तरी शकाय तेम नथी अने जेनुं पुरुषप्रमाण[1] थइ शके तेम नथी एवा उंडा जळमां पोताना शरीरने मूक्युं. त्यां पण ते जळ तागवाळुं (छीछरु) थइ गयुं.

मू०—तते णं से तेतलिपुत्ते सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकायं पक्खिवति, पक्खिवित्ता अप्पाणं मुयति, तत्थ वि य से अगणिकाए विज्झाए ।

१ केटला माथोडा पाणी छे ते जाणी शकाय नहीं.

अर्थ—त्यारपछी ते तेतलिपुत्रे सुकां घासना समूहने विषे अग्निकाय नांख्यो, नांखीने तेमां पोताना शरीरने मूक्युं. त्यां पण ते अग्निकाय बुझाइ गयो.

मू०—तते णं से तेतलिपुत्ते एवं वदासी—" सद्धेयं खलु भो समणा वयंति, सद्धेयं खलु भो माहणा वयंति, सद्धेयं खलु भो समणा माहणा वयंति, अहं एगो असद्धेयं वयामि, एवं खलु अहं सह पुत्तेहिं अपुत्ते को मे दं सद्दहिस्सति? सह मित्तेहिं अमित्ते को मे दं सद्दहिस्सति? एवं अत्थेणं दारेणं दासेहिं परिजणेणं। एवं खलु तेयलिपुत्ते णं अमच्चे कणगज्झएणं रन्ना अवज्झाएणं समाणेणं तेयलिपुत्ते तालपुडगे विसे आसगंसि पक्खित्ते, से वि य णो संकमति, को मे यं सद्दहिस्सति? तेतलिपुत्ते नीलुप्पल जाव खंधंसि ओहरिए, तत्थ वि य से धारा ओपल्ला, को मे दं सद्दहिस्सति? तेतलिपुत्तस्स पासगं गीवाए बंधेत्ता जाव रज्जू छिन्ना, को मे दं सद्दहिस्सति? तेतलिपुत्ते महासिलयं जाव बंधित्ता अत्थाह जाव उदगंसि अप्पा मुक्के, तत्थ वि य णं थाहे जाए, को मे दं सद्दहिस्सति? तेतलिपुत्ते सुक्कंसि तणकूडे अग्गी विज्झाए, को मे दं सद्दहिस्सति? ओहतमणसंकप्पे जाव झियाइ।

अर्थ—त्यारपछी ते तेतलिपुत्र मनमां आ प्रमाणे बोल्यो (विचारवा लाग्यो)–" श्रमणो श्रद्धा करी शकाय तेवुं वचन बोले छे, माहणो श्रद्धा करी शकाय तेवुं वचन बोले छे, श्रमणो अने माहणो श्रद्धा करी शकाय तेवुं वचन बोले छे. (एटले के तेओ पुण्य, पाप, स्वर्ग, नरक विगेरे अतींद्रिय पदार्थोने कहे छे, तेनो कोइ पण प्रमाणथी के युक्तिथी बाध थइ शकतो नथी. तेथी तेमनुं वचन मानी शकाय तेवुं तेओ कहे छे.) मात्र हुं एकलो ज न श्रद्धा करी शकाय एवुं वचन कहुं छुं. केमके आ प्रमाणे निश्चे हुं पुत्रो सहित छतां अपुत्र छुं आवा मारा वचन उपर कोण श्रद्धा करशे ? मित्रो सहित छतां हुं मित्र विनानो छुं आवा मारा वचन उपर कोण श्रद्धा करशे ? ए ज प्रमाणे धन, स्त्री, दास अने परिवार सहित छतां पण हुं धन, स्त्री, दास अने परिवार रहित छुं एवा मारा वचन उपर कोण श्रद्धा करशे ? आ प्रमाणे निश्चे तेतलिपुत्र अमात्य उपर कनकध्वज राजाए दुष्ट चिंतव्युं छे. तेथी तेतलिपुत्रे पोताना मुखमां तालपुट विष नांख्युं. परंतु तेणे कांइ पण असर करी नहीं. आवा मारा वचनपर कोण श्रद्धा करशे ? तेतलिपुत्रे पोतानी ग्रीवा उपर नील कमळ जेवो यावत् श्याम तीक्ष्ण खड्ग वहन कर्यो, त्यां पण तेनी धारा कुंठित थइ गइ. आवा मारा वचन उपर कोण श्रद्धा करशे ? तेतलिपुत्रे गळे पाश बांधी शरीरने लटकाव्युं यावत् ते पाशनी दोरी तुटी गइ. आवा मारा वचन उपर कोण श्रद्धा करशे ? तेतलिपुत्रे गळे मोटी शिला बांधी यावत् उंडा पाणीमां पडतुं मूक्युं. त्यां पण ते जळ छीछरुं थइ गयुं. आवा मारा वचन उपर कोण श्रद्धा करशे ? तेतलिपुत्र शुष्क तृणना समूहमां अग्नि मूकी तेमां यावत् पड्यो त्यां पण ते अग्नि बुझाइ गयो. आवा मारा वचन उपर कोण श्रद्धा करशे ? " आ प्रमाणे मनना संकल्प जेना हणाइ गया छे एवो ते तेतलिपुत्र यावत्

ध्यान करतो हतो-विचार करतो हतो.

मू०-तते णं से पोट्टिले देवे पोट्टिलारूवं विउव्वति, विउव्वित्ता तेतलिपुत्तस्स अदूरसामंते ठिच्चा एवं वदासी-" हं भो तेतलिपुत्ता ! पुरतो पवाए पिट्ठओ हत्थिभयं दुहओ अचक्खुफासे मज्झे सराणि वरिसयंति, गामे पलित्ते रन्ने झियाति, रन्ने पलित्ते गामे झियाति, आउसो ! तेतलिपुत्ता ! कओ वयामो ? "।

अर्थ-त्यारपछी ते पोट्टिल देवे पोट्टिलानुं रूप विकर्व्युं. विकुर्वीने तेतलिपुत्रनी घणे दूर के घणे समीप नहीं एवे ठेकाणे रहीने आ प्रमाणे बोल्यो-" अरे तेतलिपुत्र ! आगळ प्रपात-गर्ता (खाडो) छे, पाछळ हस्तीनो भय छे, बन्ने पडखे चक्षुनो स्पर्श न थाय एवुं अंधारुं छे, मध्य भागे (ज्यां रह्या छीए त्यां) बाणनी वृष्टि थाय छे, तेथी चोतरफ भय छे. तथा वळी गाममां अग्नि लागी छे अने अरण्य धगधगे छे (एटले तेनो थयेलो अग्नि हजु शांत थयो नथी. अथवा जाणे ध्यान करतुं होय तेम ध्यान करे छे एटले अग्नि शांत न थवाथी हजु जागृत छे). अथवा अरण्य बळे छे अने गाम धगधगे छे. (उपर प्रमाणे). तो हे आयुष्मन् तेतलिपुत्र ! अमारे (आपणे) क्यां जवुं ? अर्थात् आवी रीतना भयमां जे कोइ पण होय तेणे क्यां जवुं योग्य छे ? ते कहो. " एम प्रश्न कर्यो.

मू०-तते णं से तेतलिपुत्ते पोट्टिलं देवं एवं वयासी-" भीयस्स खलु भो ! पव्वज्जा सरणं,

उक्कंठियस्स सदेसगमणं, छुहियस्स अन्नं, तिसियस्स पाणं, आउरस्स भेसज्जं, माइयस्स रहस्सं, अभिजुत्तस्स पच्चयकरणं, अद्धाणपरिसंतस्स वाहणगमणं, तरिउकामस्स पवहणं(ण)किच्चं परं अभिओजितुकामस्स सहायकिच्चं, खंतस्स दंतस्स जितिंदियस्स एत्तो एगमवि ण भवति ।

अर्थ—त्यारपछी ते तेतलिपुत्रे पोट्टिल देवने उत्तरमां आ प्रमाणे कह्युं–" अरे देव ! एवी रीते सर्वत्र भय पामेलाने प्रव्रज्या ज शरणभूत छे. जेम उत्कंठावाळा–उत्सुक थयेला पुरुषने स्वदेश गमन शरणभूत छे, जेम भूख्याने अन्न, तरश्याने पाणी, व्याधिवाळाने औषध, मायावीने गुप्तपणुं, अभियुक्त (जेनो दोष जणायो होय ते) ने विश्वास उपजाववो, मार्गमां थाकेलाने वाहनपर चडवुं, नद्यादिक तरवानी इच्छावाळाने प्लवन (तरवा) ना कृत्यवाळुं (वहाण) तथा शत्रुने पराभव करवानी इच्छावाळाने सहायनुं कार्य (मित्रादिकनी सहाय) जेम शरणभूत छे तेम. " हवे भय पामेलाने प्रव्रज्यानुं शरण कह्युं ते शी रीते ? ते उपर कहे छे–" क्रोधनो निग्रह करनार क्षमावाळाने, इंद्रियो तथा नोइंद्रियनुं दमन करनारने अने जितेंद्रिय (विषयोने विषे रागादिक न करनार) ने आमांनो एक पण भय नथी. एटले के जेणे प्रव्रज्या ग्रहण करी होय तेने सामायिक (समभाव) नो परिणाम होय छे, तेथी तेने शरीरादिक उपर आसक्ति होती नथी, अने तेथी तेने मरणादिकनो भय होतो नथी.

आ प्रमाणे भय पामेलाने प्रव्रज्या ज श्रेयस्कर छे एम ते देवे अमात्यने पोताना ज मुखे अंगीकार करावी पछी शुं कह्युं ? ते कहे छे.—

मू०—तते णं से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्तं अमच्चं एवं वदासी—सुट्ठु णं तुमं तेतलिपुत्ता! एयमट्ठं आयाणिहि त्ति कट्टु दोच्चं पि एवं वयइ, वइत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥१०२॥

अर्थ—त्यारपछी ते पोट्टिल देवे तेतलिपुत्र अमात्यने आ प्रमाणे कह्युं—" हे तेतलिपुत्र! तमे सारुं कहो छो, एटले के भय पामेलाने प्रव्रज्या शरणभूत छे एम जो तमे मानो छो तो ते बराबर छे. हमणां तमे पण भयथी पराभव पामेला छो तेथी आ अर्थने तमे बराबर सारी रीते जाणो—एटले अनुष्ठान द्वाराए करीने जाणो अर्थात् दीक्षा ग्रहण करो." ए प्रमाणे करीने—कहीने बीजी वार पण ए ज प्रमाणे कह्युं. कहीने ते देव जे दिशामांथी आव्यो हतो, ते ज दिशाए पाछो गयो—स्वस्थाने गयो. १०२.

मू०—तते णं तस्स तेयलिपुत्तस्स सुभेणं परिणामेणं जाइसरणे समुप्पन्ने ।

अर्थ—त्यारपछी ते तेतलिपुत्रने शुभ परिणामवडे जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं.

मू०—तते णं तस्स तेयलिपुत्तस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिते जाव समुप्पन्ने—" एवं खलु अहं इहेव जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे पोक्खलावतीविजये पोंडरीगिणीते रायहाणीए महापउमे नामं राया होत्था । तते णं अहं थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव चोद्दस पुव्वातिं अहिज्जित्ता बहूणि

वासाणि सामन्नपरियाए पाउणित्ता मासिआए संलेहणाए महासुक्के कप्पे देवे उववन्ने।

अर्थ—त्यारपछी ते तेतलिपुत्रने आवा प्रकारनो अध्यवसाय (विचार) यावत् उत्पन्न थयो. (स्मरण थयुं.)—" आ प्रमाणे निश्चे हुं आ ज जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे, महाविदेह क्षेत्रने विषे, पुष्कलावती नामनी विजयने विषे, पुंडरीकिणी नामनी राजधानीने विषे, महापद्म नामनो राजा हतो. त्यारपछी (ते भवमां) हुं स्थविरोनी पासे मुंड थइने (दीक्षा ग्रहण करीने) चौद पूर्व भणीने घणा वर्षो चारित्रपर्याय पाळीने एक मासनी संलेखना (अनशन) वडे महाशुक्र नामना देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थयो हतो.

मू०—तते णं अहं ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं इहेव तेयलिपुरे तेयलिस्स अमच्चस्स भद्दाए भारियाए दारगत्ताए पच्चायाते।

अर्थ—त्यारपछी हुं ते देवलोकथी आयुष्यनो क्षय थये अहीं ज तेतलिपुर नामना नगरमां तेतलि नामना अमात्यनी भद्रा नामनी भार्याना पुत्रपणे उत्पन्न थयो.

मू०—तं सेयं खलु मम पुव्वदिट्ठाइं महव्वयाइं सयमेव उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए"। एवं संपेहेति, संपेहित्ता सयमेव महव्वयाइं आरुहेति, आरुहित्ता जेणेव पमयवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि सुहनिसन्नस्स अणुचिंतेमाणस्स

पुव्वाहीयातिं सामाइयमातियाइं चोद्दस पुव्वाइं सयमेव अभिसमन्नागयाइं ।

अर्थ—तेथी मारे पूर्वे अंगीकार करेला महाव्रतो पोते ज अंगीकार करीने विचरवुं श्रेयस्कर छे. ” आ प्रमाणे तेणे विचार कर्यो. विचार करीने तेणे पोते ज महाव्रतो अंगीकार कर्या. अंगीकार करीने ज्यां प्रमदवन उद्यान हतुं त्यां गयो. जइने श्रेष्ठ अशोक वृक्षनी नीचे पृथ्वीशिलापट्ट उपर सुखे करीने बेठा अने अनुचिंतन (विचारणा) करता तेणे पूर्वे भणेला सामायिकादिक चौद पूर्व पोतानी मेळे जाणी लीधा. (स्मरणमां आव्या.)

मू०—तते णं तस्स तेयलिपुत्तस्स अणगारस्स सुभेणं परिणामेणं जाव तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं कम्मरयविकरणकरं अपुव्वकरणं पविट्ठस्स केवलवरणाणदंसणे समुप्पन्ने ॥ १०२ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते तेतलिपुत्र अनगारे शुभ परिणाम वडे यावत् ज्ञानावरणीय अने दर्शनावरणीय कर्मना क्षयोपशमवडे कर्मरजनो नाश–क्षय करनार अपूर्वकरणमां प्रवेश कर्यो (क्षपकश्रेणि मांडी अने चार घातिकर्मोनो क्षय कर्यो–एटले) श्रेष्ठ केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न थयां. १०२.

मू०—तए णं तेतलिपुरे नगरे अहासंनिहिएहिं वाणमंतरेहिं देवेहिं देवीहि य देवदुंदुभीओ समाहयाओ, दसद्धवन्ने कुसुमे निवाइए , दिव्वे गीयगंधव्वनिनाए कए यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी तेतलिपुर नगरनी पासे रहेला वानमंतर देवोए तथा देवीओए देवदुंदुभि वगाडया, पंच वर्णवाळा

पुष्पोनी वृष्टि करी अने दिव्य गीत गंधर्वनो निनाद कर्यो. (केवळज्ञान संबंधी उत्सव कर्यो.)

मू०—तते णं से कणगज्झए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे एवं वदासी—" एवं खलु तेतलिं मए अवज्झाते मुंडे भवित्ता पव्वातिते, तं गच्छामि णं तेयलिपुत्तं अणगारं वंदामि नमंसामि, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामेमि. " एवं संपेहेति, संपेहित्ता ण्हाए चाउरंगिणीए सेणाए जेणेव पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छाति, उवागच्छित्ता तेतलिपुत्तं अणगारं वंदति नमंसाति, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं च विणएणं भुज्जो भुज्जो खामेइ, नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते कनकध्वज राजाए आ कथानो अर्थ प्राप्त करे सते (आ हकीकत सांभळीने) आ प्रमाणे कह्युं (विचार्युं.)—" आ प्रमाणे निश्चे तेतलिपुत्रनो में अनादर कर्यो, तेथी तेणे मुंड थइने प्रव्रज्या लीधी. तेथी हुं ते तेतलिपुत्र अनगार पासे जाउं, अने तेने वंदना करुं, नमस्कार करुं. वंदना नमस्कार करीने आ में करेला अनादरने—अपराधने विनयवडे वारंवार खमावुं—क्षमा मागुं. " आ प्रमाणे तेणे विचार कर्यो. विचार करीने तेणे स्नान कर्युं, सर्व अलंकारो धारण कर्या अने चतुरंग सेना सहित ज्यां प्रमदवन उद्यान हतुं, तथा ज्यां तेतलिपुत्र अनगार हता त्यां आव्यो. आवीने

तेतलिपुत्र अनगारने वंदना करी, नमस्कार कर्या. वंदना नमस्कार करी पोताना ते अर्थ (अपराध) ने वारंवार खमाव्यो. पछी तेमनी समीपे बेसी यावत् तेमनी सेवा करवा लाग्यो.

मू०—तते णं से तेयलिपुत्ते अणगारे कणगज्झयस्स रन्नो तीसे य महइमहालियाए धम्मं परिकहेइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते तेतलिपुत्र अनगारे कनकध्वज नामना राजाने तेवा प्रकारना मोटा विस्तारथी धर्म कह्यो. (धर्मदेशना आपी.)

मू०—तते णं से कणगज्झए राया तेतलिपुत्तस्स केवलिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं सावगधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता समणोवासए जाते जाव अहिगयजीवाजीवे ।

अर्थ—त्यारपछी ते कनकध्वज राजाए तेतलिपुत्र केवलीनी पासे धर्मने सांभळी हृदयमां धारी पांच अणुव्रत अने सात शिक्षाव्रतरूप श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो. अंगीकार करीने ते श्रमणोपासक (श्रावक) थयो, यावत् जीवाजीवादिकनो जाणकार थयो.

मू०—तते णं तेतलिपुत्ते केवली बहूणि वासाणि केवलिपरियागं पाउणित्ता जाव सिद्धे ।

अर्थ—त्यारपछी ते तेतालिपुत्र केवळी घणा वर्षो सुधी केवळी पर्यायने पाळी यावत् सिद्धिपदने पाम्या.

मू०—एवं खलु जंबू ! भगवया समणेणं महावीरेणं चोद्दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति बेमि ॥ १०४ ॥

॥ चउदसमं अज्झयणं समत्तं ॥ १४ ॥

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! भगवान श्रमण महावीर स्वामीए चौदमा ज्ञाताध्ययननो आ प्रमाणे अर्थ कह्यो छे, ते में तमने कह्यो. १०४.

अहीं मूळ सूत्रमां उपनय कह्यो नथी तोपण आ प्रमाणे जाणवो.

"जाव न दुक्खं पत्ता, माणब्भंसं च पाणिणो पायं। ताव न धम्मं गेण्हंति, भावओ तेयलिसुउ व्व ॥१॥"

ज्यांसुधी प्राणीओ दुःखने के मानभ्रंश (अपमान) ने पाम्या न होय, (अर्थात् पामता नथी) त्यांसुधी तेतलिपुत्रनी जेम भावथी धर्म ग्रहण करी शकता नथी. १.

इति चौदमुं ज्ञानाध्ययन. १४.



पंदरमुं नंदीफळ नामनुं अध्ययन. १५.

दुःख के अपमानथी विषयनो त्याग करी शकाय छे एम चौदमा अध्ययनमां कह्युं. हवे जिनेश्वरना उपदेशथी विषयनो त्याग थइ शके छे, अने तेथी ज सत्य अर्थनी प्राप्ति थाय छे, तथा जिनोपदेश विना सत्य अर्थनी प्राप्ति थती नथी. ए वात आ पंदरमा अध्ययनमां कहेवामां आवशे.

मू०—" जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं चोद्दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, पन्नरसमस्स णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? "।

अर्थ—जंबुस्वामी सुधर्मास्वामीने पूछे छे.—" हे भगवान् ! जो श्रमण भगवंत महावीर स्वामीए चौदमा ज्ञात अध्ययननो आ-उपर कह्या प्रमाणे अर्थ कह्यो छे, तो श्रमण भगवंत महावीरे पंदरमा ज्ञाताध्ययननो कयो अर्थ कह्यो छे ? "

मू०—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं चंपा णामं नयरी होत्था । पुन्नभद्दे नामं चेइए । जितसत्तू नामं राया होत्था ।

अर्थ—सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने उत्तर आपे छे.—" आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये चंपा नामनी नगरी हती. पूर्णभद्र नामनुं चैत्य हतुं. त्यां जितशत्रु नामे राजा हतो.

मू०—तत्थ णं चंपाए नयरीए धन्ने णामं सत्थवाहे होत्था, अड्ढे जाव अपरिभूए ।

अर्थ—ते चंपा नगरीमां धन्य नामे सार्थवाह हतो, ते धनाढ्य यावत् पराभव न पामे तेवो हतो.

मू०—तीसे णं चंपाए नयरीए उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए अहिच्छत्ता नाम नयरी होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धा, वन्नओ ।

अर्थ—ते चंपा नगरीनी उत्तरपूर्व (ईशान) दिशाना भागमां अहिच्छत्रा नामनी नगरी हती. ते ऋद्धिवडे निश्चळ अने समृद्धिवाळी हती. तेनुं वर्णन कहेवुं.

मू०— तत्थ णं अहिच्छत्ताए नयरीए कणगकेऊ नामं राया होत्था, महया वन्नओ ।

अर्थ—ते अहिच्छत्रा नामनी नगरीमां कनककेतु नामे राजा हतो. ते महा हिमवंत विगेरे जेवो हतो. तेनुं वर्णन कहेवुं.

मू०—तस्स धण्णस्स सत्थवाहस्स अन्नदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अब्भ-

त्थिते चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—

अर्थ—ते धन्य सार्थवाहने एकदा कदाचित् मध्य रात्रिने समये आवा प्रकारनो अध्यवसाय, चिंतित (मनमां रहेलो), प्रार्थित (मनमां चाहेलो), मनोगत (मनमां ज गुप्त रहेलो) संकल्प (विचार) उत्पन्न थयो.—

मू०—" सेयं खलु मम विपुलं पणियभंडमायाए अहिच्छत्तं नगरं वाणिज्जाए गमित्तए, " एवं संपेहेति, संपेहित्ता गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च चउव्विहं भंडं गेण्हइ, गेण्हित्ता सगडीसागडं सज्जेइ, सज्जित्ता सगडीसागडं भरेति, भरित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—

अर्थ—" मारे विपुल एवुं घी, तेल, गोळ विगेरे प्रणीत करीयाणुं मात्र लइने अहिच्छत्रा नगरीमां वेपार करवा जवुं श्रेयस्कर छे. " आ प्रमाणे तेणे विचार कर्यो. विचार करीने नाळीयेर, सोपारी विगेरे गणतरी करीने वेचाय लेवाय ते गणिम १, तोलावडे तोळीने लेवाय देवाय ते धरिम २, पाली विगेरेवडे मान करीने अपाय लेवाय ते मेय ३ अने कापीने अथवा परीक्षा करीने अपाय लेवाय ते पारिच्छेद्य ४ आ चार प्रकारना भांड (करीयाणां) ग्रहण कर्यां. ग्रहण करीने गाडी, गाडांनो समूह तैयार कर्यो. तैयार करीने गाडी, गाडां भर्यां. भरीने तेणे कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं.

मू०—" गच्छह गं तुब्भे देवाणुप्पिया ! चंपाए नयरीए सिंघाडग जाव पहेसुं एवं खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विपुले पणिय इच्छाति अहिच्छत्तं नगरं वाणिज्जाए गमित्तते । तं जो णं देवाणुप्पिया ! चरए वा चीरिए वा चम्मखंडिए वा भिच्छुंडे वा पंडुरगे वा गोतमे वा गोवतीते वा गिहिधम्मे वा गिहिधम्मचिंतए वा अविरुद्धविरुद्धवुड्ढसावगरत्तपडनिग्गंथप्पभितिपासंडत्थे वा गिहत्थे वा तस्स णं धण्णेणं सद्धिं अहिच्छत्तं नगरिं गच्छइ, तस्स णं धण्णे अच्छत्तगस्स छत्तगं दलाइ, अणुवाहणस्स उवाहणाउ दलयइ, अकुंडियस्स कुंडियं दलयइ, अपत्थयणस्स पत्थयणं दलयइ, अपक्खेवगस्स पक्खेवं दलयइ, अंतरा वि य से पडियस्स वा भग्गलुग्गसाहेज्जं दलयति, सुहंसुहेण य णं अहिच्छत्तं संपावेतित्ति कट्टु दोच्चं पि तच्चं पि घोसेह, घोसित्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह " ।

अर्थ—" हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ अने चंपानगरीना शृंगाटक विगेरे यावत् सर्व मार्गोने विषे कहो (उद्घोषणा करो) के–आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! धन्य नामनो सार्थवाह विपुल घी, तेल विगेरे प्रणीत करीयाणां लइने अहिच्छत्रा नामनी नगरीमां वेपार करवा जवाने इच्छे छे. तेथी हे देवानुप्रियो ! जे कोइ चरक–ए मतनो भिक्षाचर,

चीरिक–शेरीमां पडेला चींथराने धारण करनार, चर्मखंडक–चर्मखंडने पहेरनार, भिक्षांड–बौद्धमतनो भिक्षुक, पांडुराग–शिव मतनो भिक्षाचर, गौतम–नानी अक्षमाळाने अवयवोमां धारण करी विचित्र प्रकारे पगने वाळता शीखवेला बळदवडे आजीविका करनार, गोव्रतिक–गाय खाय त्यारे पोते खाय, पीए त्यारे पोते पीए, सुवे त्यारे पोते सुवे, चाले त्यारे पोते चाले इत्यादि सर्व क्रिया गाय करे ते ज प्रमाणे पोते करे एवा व्रतवाळो, गृहीधर्मा–गृहस्थ धर्मने श्रेष्ठ माननार; गृहीधर्मनुं चिंतवन करनार–तेमनी धर्मसंहिताने जाणनार, अविरुद्ध–विनयवान, विरुद्ध–अक्रियावादी, वृद्ध–तापस, श्रावक–ब्राह्मण (अथवा वृद्धश्रावक एक पद राखी अर्थ पण ब्राह्मण करवो), रक्तपट–परिव्राजक, निर्ग्रंथ–साधु विगेरे कपिलादिक पाखंड धर्मवाळो, अथवा गृहस्थ जे कोइ होय अने तेने धन्य सार्थवाहनी साथे अहिच्छत्रा नगरीमां जवुं होय, तेने धन्य साथे लइ जशे. तेमां जेने छत्र नहीं होय तेने धन्य सार्थवाह छत्र आपशे, पगरखां नहीं होय तेने पगरखां आपशे, कुंडिक–कमंडलु नहीं होय तेने कुंडिक आपशे (अर्थात् पात्र नहीं होय तेने पात्र आपशे), पथ्यदन–भातुं नहीं होय तेने पथ्यदन आपशे, प्रक्षेप[1] नहीं होय तेने प्रक्षेप आपशे अथवा जे वाहनथी पडी जशे अथवा जे रोगमां पड्यो हशे, वाहनथी के स्खलनाथी ते भग्न थयो हशे तथा रुग्ण–जीर्णताने पामेलो हशे ते सर्वने सहाय आपशे. अने सुखे सुखे तेने अहिच्छत्रा नगरीए पहोंचाडशे. " आ प्रमाणे हे देवानुप्रियो ! तमे बीजी वार त्रीजी वार आघोषणा करो. करीने मारी आज्ञा पाछी सोंपो. "

१ अर्धे मार्गे जतां भातुं खुटी जाय तो ते लेवा माटे जे धन ते प्रक्षेप कहेवाय छे.

मू०—तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव एवं वदासी—" हंदि ! सुणंतु भगवंतो चंपानगरी वत्थव्वा बहवे चरगा य. " जाव पच्चप्पिणंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषोए यावत् आ प्रमाणे कह्युं—" हे सर्वे चंपा नगरीमां वसनारा घणा चरक विगेरे पूज्य भिक्षुको विगेरे ! तमे सर्वे सांभळो. " एम कही सर्व ते प्रकारे बे त्रण चार आघोषणा करी तेनी आज्ञा पाछी आपी.

मू०—तते णं से कोडुंबियघोसणं सुच्चा चंपाए णयरीए बहवे चरगा य जाव गिहत्था य जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिकनी आघोषणा सांभळीने चंपा नगरीमां रहेनारा घणा चरक मतवाळा विगेरे यावत् गृहस्थीओ ज्यां धन्य सार्थवाह हतो त्यां आव्या.

मू०—तते णं धण्णे तेसिं चरगाण य जाव गिहत्थाण य अच्छत्तगस्स छत्तं दलयइ, जाव पत्थयणं दलाति, " गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! चंपाए नयरीए बहिया अग्गुज्जाणंसि ममं पडिवालेमाणा चिट्ठह " ।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाहे ते चरक विगेरेने यावत् गृहस्थीओनी मध्ये जेने छत्र नहोता तेने छत्र आप्यां, यावत् भातां विनाना हता तेने भातां आप्यां. पछी ते सर्वेने कह्युं के—" हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ अने चंपानगरीनी बहार प्रधान (श्रेष्ठ) उद्यानमां मारी राह जोता रहो. "

मू०—तते णं चरगा य जाव गिहत्था य धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा जाव चिट्ठंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते चरकमतवाळा विगेरे यावत् गृहस्थीओ धन्य सार्थवाहे आ प्रमाणे कह्या सता यावत् उद्यानमां राह जोता रह्या.

मू०—तते णं धण्णे सत्थवाहे सोहणंसि तिहिकरणनक्खत्तंसि विपुलं असणं पाणं खातिमं सातिमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तनाई आमंतेति, आमंतित्ता भोयणं भोयावेइ, भोयावित्ता आपुच्छति, आपुच्छित्ता सगडीसागडं जोयावेति, जोयावित्ता चंपानगरीओ निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता णाइविप्पगिट्ठेहिं अद्धाणेहिं वसमाणे वसमाणे सुहेहिं वसहिपायरासेहिं अंगं जणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव देसग्गं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सगडीसागडं मोयावेति, मोयावित्ता सत्थणिवेसं करेति, करित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाहे शुभ तिथि, करण अने नक्षत्रने विषे विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम तैयार कराव्युं. तैयार करावी मित्र, ज्ञाति विगेरेने आमंत्रण कर्युं. आमंत्रण करीने तेमने भोजन कराव्युं. भोजन करावीने तेमनी पासे प्रयाणनी रजा लीधी. रजा लइने गाडी, गाडां जोडाव्यां. जोडावीने चंपा नगरीथी बहार नीकळ्यो. बहार नीकळी अत्यंत दूर दूर नहीं एवा मार्गने विषे वसता वसता सुखदायक वसति (रहेठाण) अने प्रातराश (प्रातःकाळना भोजन) वडे अंगदेशनी मध्ये मध्ये थइने ज्यां देशनो छेडो हतो त्यां आव्यो. आवीने गाडी, गाडां छोडाव्यां. छोडावीने सार्थनो निवेश कर्यो. करीने कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—'तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम सत्थनिवेसंसि महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वदह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! इमीसे आगामियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए अडवीए बहुमज्झदेसभाए बहवे णंदिफला नामं रुक्खा पन्नत्ता किण्हा जाव पत्तिया पुप्फिया फलिया हरिया रेरिज्जमाणा सिरीए अईव अईव उवसोभेमाणा चिट्ठंति, मणुण्णा वन्नेणं जाव मणुण्णा फासेणं मणुण्णा छायाए, तं जो णं देवाणुप्पिया ! तेसिं नंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणि वा कंदाणि वा तयाणि वा पत्ताणि वा पुप्फाणि वा फलाणि वा बीयाणि वा हरियाणि वा आहारेति छायाए वा

वीसमाति, तस्स णं आवाए भद्दए भवति, ततो पच्छा परिणममाणा परिणममाणा अकाले चेव जीवियातो ववरोवेंति, तं मा णं देवाणुप्पिया! केइ तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि वा जाव छायाए वा वीसमउ । मा णं सेऽवि अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जिस्सति । तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव हरियाणि य आहारेथ, छायासु वीसमह, त्ति घोसणं घोसेह "। जाव पच्चप्पिणंति ।

अर्थ—" हे देवानुप्रियो ! तमे मारा सार्थना निवेश (पडाव) नी अंदर मोटा मोटा शब्दवडे आघोषणा करता करता आ प्रमाणे बोलो के—आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! हवे जे अटवी आववानी छे ते घणा वृक्षोथी ढंकायेली अने घणी लांबी–मोटी छे. ते अटवीना मध्य भागमां नंदीफल नामना वृक्षो छे. ते कृष्ण वर्णवाळा यावत् पत्रवाळा, पुष्पवाळा, फळवाळा, हरित (लीला) अने अतिशय शोभता छे, लक्ष्मीए करीने अत्यंत अत्यंत शोभता रहेला छे, ते वर्णवडे मनोहर छे, यावत् स्पर्शवडे मनोहर छे (वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शवडे मनोहर छे), तथा छायावडे मनोहर छे. तेथी हे देवानुप्रियो ! जे कोइ मनुष्य ते नंदीफळ वृक्षोना मूळने, कंदने, छालने, पत्रने, पुष्पने, फळने, बीजने के हरित (तृण) ने खाशे, अथवा तेनी छायामां पण बेसशे, ते पुरुषने आरंभमां तो सारुं लागशे, परंतु त्यारपछी तेनो परिणाम थतां अकाळे ज ते जीवितथी जूदो पडशे (मरण पामशे). तेथी हे देवानुप्रियो ! तमे कोइ पण ते नंदीफळ वृक्षना मूळ विगेरेने

खाशो नहीं, यावत् तेनी छायामां विश्रांति लेशो नहीं के जेथी तमे अकाळे जीवितथी छूटा न पडो (मरण न पामो). बीजा वृक्षोना मूळने यावत् हरित (तृण)ने खाजो अने तेमनी छायामां विश्रांति लेजो. आ प्रमाणे आघोषणा करो, अने मारी आज्ञा पाछी आपो. " ते सांभळी ते कौटुंबिक पुरुषोए ते प्रमाणे करी तेनी आज्ञा पाछी आपी.

मू०–तते णं धण्णे सत्थवाहे सगडीसागडं जोएति, जोइत्ता जेणेव नंदिफला रुक्खा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफलाणं अदूरसामंते सत्थणिवेसं करेति, करित्ता दोच्चं पि तच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी––

अर्थ––त्यारपछी ते धन्य सार्थवाहे गाडी, गाडां जोडाव्यां. जोडावीने ज्यां नंदीफळ वृक्षो हता त्यां आव्या. आवीने ते नंदीफळ वृक्षोनी समीपे सार्थनिवेश कर्यो, करीने बीजी वार त्रीजी वार कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०–" तुब्भे णं देवाणुप्पिया! मम सत्थनिवेसंसि महता सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वयह–एए णं देवाणुप्पिया ! ते णंदिफला किण्हा जाव मणुन्ना छायाए, तं जो णं देवाणुप्पिया ! एएसिं णंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणि वा कंदाणि वा पुप्फाणि वा तयाणि वा पत्ताणि

वा फलाणि वा जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेंति, तं मा णं तुब्भे जाव दूरं दूरेणं परिहरमाणा वीसमह, मा णं अकाले जीवितातो ववरोविस्संति, अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव वीसमह त्ति कट्टु घोसणं. " पच्चप्पिणंति ।

अर्थ—" हे देवानुप्रियो ! तमे मारा सार्थनिवेशने विषे मोटा शब्दवडे आघोषणा करता करता आ प्रमाणे कहो—हे देवानुप्रियो ! आ ते नंदीफळ नामना वृक्षो छे, ते कृष्ण वर्णवाळा यावत् छायावडे मनोहर छे. तेथी हे देवानुप्रियो ! आ नंदीफळ नामना वृक्षोनां मूळ, कंद, पुष्प, छाल, पत्र अने फळने जे कोइ खाशे ते यावत् अकाळे ज जीवितथी जूदो पडशे. तेथी तमे तेनी पासे जशो नहीं, ते वृक्षोने दूर दूरथी तजीने विश्रांति लेजो. के जेथी तमे अकाळे जीवितथी जूदा न पडो. अने बीजा वृक्षोनां मूळ विगेरेने खाजो तथा तेनी छायामां विश्रांति लेजो. आ रीते आघोषणा करी मारी आज्ञा पाछी सोंपो. " ते सांभळी ते कौटुंबिक पुरुषोए पण ते प्रमाणे करी तेनी आज्ञा पाछी सोंपी.

मू०—तत्थ णं अत्थेगइया पुरिसा धन्नस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सद्दहंति, जाव रोयंति, एयमट्ठं सद्दहमाणा तेसिं नंदिफलाणं दूरं दूरेणं परिहरमाणा परिहरमाणा अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव वीसमंति, तेसि णं आवाए नो भद्दए भवति, ततो पच्छा परिणममाणा परिणममाणा सुहरूवत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति ।

अर्थ—तेमां केटलाक पुरुषोए धन्य सार्थवाहना आ अर्थ उपर श्रद्धा करी, यावत् रुचि करी. आ अर्थनी श्रद्धा करता सता ते नंदीफळ वृक्षोने दूर दूर त्याग करता त्याग करता सता बीजा वृक्षोनां मूळ विगेरेने खाता यावत् तेनी छायामां विश्रांति लेता रहेवा लाग्या. तेथी ते पुरुषोने प्रारंभमां भद्र (सुख) थयुं नहीं, परंतु त्यारपछी तेनो जेम जेम परिणाम थतो गयो तेम तेम सुखरूपपणे वारंवार परिणाम थवा लाग्यो.

मू०—एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पंचसु कामगुणेसु नो सज्जेति नो रज्जेति, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं समणीणं सावयाणं सावियाणं अच्चणिज्जे, परलोए नो आगच्छति जाव वीतीवातिस्सति ।

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे आयुष्मंत श्रमणो ! जे अमारा निर्ग्रंथ के निर्ग्रंथी यावत् पांचे इंद्रियोना कामभोगने विषे आसक्त न थाय अने रागी न थाय, तो ते आ भवमां ज घणा साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकाओने पूजवा लायक थाय छे, अने परलोकमां दुर्गतिनां दुःखने पामता नथी यावत् परंपराए मोक्षने पामे छे.

मू०—तत्थ णं जे से अप्पेगतिया पुरिसा धण्णस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति जाव नो रोयंति, धन्नस्स एतमट्ठं असद्दहमाणा जेणेव ते नंदिफला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफ-

लाणं मूलाणि य जाव वीसमंति, तेसि णं आवाए भद्दए भवति, ततो पच्छा परिणममाणा जाव ववरोवेंति ।

अर्थ—तेमां जे केटलाक पुरुषोए धन्य सार्थवाहना आ अर्थ उपर श्रद्धा न करी यावत् रुचि न करी, धन्य सार्थवाहना आ अर्थनी नहीं श्रद्धा करता सता ज्यां ते नंदीफळ वृक्षो हता त्यां आव्या. आवीने ते नंदीफळ वृक्षोनां मूळ विगेरेने खाधा तथा तेनी छायामां विश्रांति करी, तेओने प्रारंभमां तो भद्र (सुख) थयुं, परंतु त्यारपछी तेनो परिणाम थता यावत् जीवितथी जूदा पड्या (मरण पाम्या).

मू०—एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वतिए पंचसु कामगुणेसु सज्जेति जाव अणुपरियट्टिस्सति जहा व ते पुरिसा ।

अर्थ—एज प्रमाणे हे आयुष्मंत श्रमणो ! जे अमारा साधु के साध्वी प्रव्रज्या लइने पांच इंद्रियोना कामभोगने विषे आसक्त थाय छे ते आ पुरुषोनी जेम यावत् चतुर्गति संसारमां पर्यटन करे छे.

मू०—तते णं से धण्णे सगडीसागडं जोयावेति, जोयावित्ता जेणेव अहिच्छत्ता नगरी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अहिच्छत्ताए णयरीए बहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेसं करेति, करित्ता

सगडीसागडं मोयावेइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाहे गाडी, गाडां जोडाव्यां, जोडावीने ज्यां अहिच्छत्रा नगरी हती त्यां आव्यो. आवीने अहिच्छत्रा नगरीनी बहार श्रेष्ठ उद्यानमां सार्थनो निवेश कर्यो. करीने गाडी, गाडां छोडाव्यां.

मू०—तए णं से धण्णे सत्थवाहे महत्थं रायरिहं पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता बहुपुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे अहिच्छत्तं नयरं मज्झंमज्झेणं अणुप्पविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेइ, वद्धावित्ता तं महत्थं पाहुडं उवणेइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाहे मोटा अर्थवाळुं यावत् राजाने योग्य एवुं प्राभृत ग्रहण कर्युं. ग्रहण करीने घणा पुरुषोनी साथे परिवर्या सता अहिच्छत्रा नगरीनी मध्य मध्य मार्गे करीने प्रवेश कर्यो. प्रवेश करीने ज्यां कनककेतु राजा हतो, त्यां आव्यो. आवीने बे हाथ जोडी यावत् राजाने वधाव्यो. वधावीने ते मोटा मूल्यवाळुं यावत् राजाने लायक एवुं प्राभृत (भेटणुं) तेनी समीपे मूक्युं.

मू०—तए णं से कणगकेऊ राया हट्ठ तुट्ठ धण्णस्स सत्थवाहस्स तं महत्थं जाव पडिच्छइ, पडिच्छित्ता धण्णं सत्थवाहं सक्कारेइ, संमाणेइ, सक्कारित्ता संमाणित्ता उस्सुक्कं वियरति, वियरित्ता

पडित्रिसज्जेइ, भंडविणिमयं करेइ, करित्ता पडिभंडं गेण्हति, गेण्हित्ता सुहंसुहेणं जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मित्तनातिअभिसमन्नागते विपुलाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कनककेतु राजाए हृष्ट तुष्ट थइ ते धन्य सार्थवाहनुं ते महा मूल्यवाळुं यावत् प्राभृत ग्रहण कर्युं. ग्रहण करीने धन्य सार्थवाहनो सत्कार कर्यो, सन्मान कर्युं, सत्कार सन्मान करी तेने शुल्क रहित कर्यो—तेनुं दाण माफ कर्युं. माफ करी तेने विदाय कर्यो—रजा आपी. पछी तेणे करीयाणानुं वेचाण विगेरे कर्युं. करीने ते बदल बीजुं करीयाणुं ग्रहण कर्युं. ग्रहण करीने सुखे सुखे ज्यां चंपानगरी हती, त्यां आव्यो. आवीने मित्र, ज्ञाति विगेरेने मळी विपुल मनुष्य संबंधी भोगोने भोगवतो विचरवा लाग्यो—रह्यो.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं थेरागमणं । धण्णे सत्थवाहे विणिग्गए, धम्मं सोच्चा जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेत्ता पव्वइए, एक्कारस सामातियाइं अंगातिं अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि सामन्न-परियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिभत्ताइं अणसणाइं छिदित्ता अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने । से णं देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झि-

हिति, जाव अंतं काहीति ।

अर्थ—ते काळे ते समये धर्मघोष नामना स्थविर साधु त्यां पधार्या. तेमने वांदवा धन्य सार्थवाह नीकळ्यो. धर्म सांभळी ज्येष्ठ पुत्रने कुटुंबने विषे स्थापन करी पोते प्रव्रज्या ग्रहण करी. अनुक्रमे सामायिक विगेरे अग्यार अंग भणी घणा वर्षो चारित्र पर्याय पाळी एक मासनी संलेखना वडे साठ भक्त अनशन पाळी कोइ एक देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थयो. ते देव ते देवलोकथकी आयुष्यने क्षये चवी महाविदेह क्षेत्रमां सिद्धिपदने पामशे. यावत् संसारनो अंत करशे.

मू०—एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं पन्नरसस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि ॥ १०५ ॥

पन्नरसमं नायज्झयणं समत्तं । १५

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवंत महावीरस्वामीए पंदरमा ज्ञाताध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे, ते में तमने कह्यो.—

आ अध्ययननो उपनय मूळ सूत्रमां संक्षेपथी बताव्यो छे. तो पण विस्तारथी टीकामां आ प्रमाणे कह्यो छे.—

" चंपा इव मणुयगती, धणो व्व भयवं जिणो दएक्करसो। अहिच्छत्तानयरिसमं, इह निव्वाणं मुणेयव्वं " १

" चंपा नगरी जेवी मनुष्य गति जाणवी, धन्य सार्थवाहने ठेकाणे दयाना ज एक रसवाळा जिनेश्वर भगवान जाणवा,

अहिच्छत्रा नगरीने बदले अहीं मोक्ष जाणवो. १.

" घोसणया इव तित्थंकरस्स सिवमग्गदेसणमहग्घं । चरगाइणो व्व इत्थं, सिवसुहकामा जिया बहवे" २

" घोषणानी जेवी तीर्थंकरनी पाप रहित मोक्षमार्गनी देशना जाणवी. चरकादिकनी जेवा अहीं मोक्षसुखनी इच्छावाळा घणा जीवो जाणवा. " २.

" नंदिफलाइ व्व इहं सिवपहपडिवण्णगाण विसया उ । तब्भक्खणाओ मरणं, जह तह विसएहिं संसारो"

" नंदीफळ नामना वृक्षोनी जेम मोक्षमार्गमां प्रवर्तेलाने अहीं विषयो जाणवा. जेम ते फळना भक्षणथी मरण कह्युं, तेम अहीं विषय भोगववाथी संसार थाय (वृद्धि पामे) एम जाणवुं." ३.

" तव्वज्जणेण जह इट्ठपुरगमो विसयवज्जणेण तहा । परमानंदनिबंधण-सिवपुरगमणं मुणेयव्वं " ॥ ४ ॥

" ते नंदीफळ वृक्षोनो त्याग करवाथी जेम सुखे करीने इच्छित पुरनी प्राप्ति थाय छे, तेम विषयो वर्जवाथी परम आनंदना कारणभूत शिवपुर (मोक्षनगर)नी प्राप्ति थाय छे एम जाणवुं. " ४.

इति पंदरमुं ज्ञाताध्ययन समाप्त. १५

सोळमुं अपरकंका नामनुं ज्ञाताध्ययन १६.

विषयोने विषे जे आसक्ति राखे छे तेने अनर्थनी प्राप्ति थाय छे. एम पंदरमा अध्ययनमां कह्युं. हवे जे विषयोनी इच्छा राखे छे तेने पण अनर्थनी प्राप्ति थाय छे. ते बाबत आ सोळमा अध्ययनमां कहे छे. तेनुं आ प्रथम सूत्र—

मू०—" जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सोलमस्स णं भंते ! णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? "

अर्थ—जंबूस्वामी सुधर्मास्वामीने पूछे छे—" हे भगवान् ! जो श्रमण भगवान महावीरस्वामीए पंदरमा ज्ञाताध्ययननो आ (उपर कह्या प्रमाणे) अर्थ कह्यो छे, तो हे भगवान ! श्रमण भगवान महावीरस्वामीए सोळमा अध्ययननो कयो अर्थ कह्यो छे ? "

मू०—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं चंपा णामं णयरी होत्था । तीसे णं चंपाए णयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए सुभूमिभागे णामं उज्जाणे होत्था ।

अर्थ—सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने उत्तर आपे छे—" आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये चंपा नामनी

नगरी हती. ते चंपा नगरीनी बहार उत्तर पूर्व (ईशान) दिशाना भागमां सुभूमिभाग नामनुं उद्यान हतुं.

मू०—तत्थ णं चंपाए नयरीए तओ माहणा भातरो परिवसंति । तं जहा—सोमे सोमदत्ते सोमभूती अड्ढा जाव रिउव्वेद जाव सुपरिनिट्ठिया ।

अर्थ—ते चंपा नगरीने विषे त्रण ब्राह्मण भाइओ रहेता हता. तेनां नाम आ प्रमाणे—सोम १, सोमदत्त २ अने सोमभूति ३. तेओ धनाढ्य हता, यावत् यजुर्वेद विगेरे चारे वेदना जाणकार यावत् बीजां सर्व शास्त्रोमां सारा प्रवीण हता.

मू०—तेसि णं माहणाणं तओ भारियातो होत्था, तं जहा—नागसिरी भूयसिरी जक्खसिरी सुकुमाल जाव तेसि णं माहणाणं इट्ठाओ, विपुले माणुस्सए जाव विहरंति ।

अर्थ—ते त्रणे ब्राह्मणोने त्रण भार्याओ हती. ते आ प्रमाणे—नागश्री, भूतश्री अने यक्षश्री. तेओ सुकोमळ हाथ पगवाळी यावत् ते ब्राह्मणोने अत्यंत इष्ट हती, अने विपुल मनुष्य संबंधी कामभोगने भोगवती विचरती हती—रही हती.

मू०—तते णं तेसिं माहणाणं अन्नया कयाई एगयओ समुवागयाणं जाव इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—" एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमे विपुले धणे जाव सावतेज्जे अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तुं पकामं परिभाएउं, तं सेयं खलु

अम्हं देवाणुप्पिया! अन्नमन्नस्स गिहेसु कल्लाकल्लिं विपुलं असणं पाणं खातिमं सातिमं उवक्खडेउं उवक्खडेउं परिभुंजमाणाणं विहरित्तए ।

अर्थ—त्यारपछी ते ब्राह्मणो एकदा कदाचित् एकठा मळ्या, ते वखते तेमने आ प्रमाणे परस्पर कथासंलाप थयो—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! आपणे घणुं विपुल धन छे यावत् स्वापतेय–सुवर्ण विगेरे घणुं छे, वळी सात कुळ (पेढी) सुधी घणुं आपीए, घणुं भोगवीए, घणुं वहेंचीए तेटलुं छे. तो आपणे हे देवानुप्रियो ! एक बीजाने घेर वारा प्रमाणे हमेशां विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम ए चार प्रकारनो श्रेष्ठ आहार तैयार करावी करावीने एक ज ठेकाणे सौए साथे भोजन करी विचरवुं श्रेयस्कर छे. "

मू०—अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, कल्लाकल्लिं अन्नमन्नस्स गिहेसु विपुलं असणं पाणं खातिमं सातिमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावित्ता परिभुंजमाणा विहरंति ।

अर्थ—एक बीजाना आ अर्थने तेओए अंगीकार कर्यो. पछी हमेशां एक बीजाने घेर विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने तैयार करावता हता. तैयार करावीने भोजन करता सता तेओ विचरवा लाग्या.

मू०—तते णं तीसे नागसिरीए माहणीए अन्नदा भोयणवारए जाते यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी कोइ एक दिवसे ते नागश्री ब्राह्मणीने घेर भोजन करवानो वारो उत्पन्न थयेलो हतो. (आव्यो हतो)

मू०—तते णं सा नागसिरी विपुलं असणं पाणं खातिमं सातिमं उवक्खडेति, उवक्खडित्ता एगं महं सालतियं तित्तालाउअं बहुसंभारसंजुत्तं णेहावगाढं उवक्खडावेति एगं बिंदुयं करयलंसि आसाइए तं खारं कडुयं अखज्जं अभोज्जं विसब्भूयं जाणित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते नागश्रीए विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम तैयार कर्या. तैयार करीने एक मोटुं शरद ऋतु संबंधी अथवा सार (रस)वडे व्याप्त (कडवुं) तुंबडुं तज, एलायची विगेरे घणा मसाला सहित अने स्नेह (तेल) वडे व्याप्त करी तैयार कर्युं, तेमांथी ते शाकनुं एक बिंदु पोताना हस्ततळमां लइ तेनो आस्वाद कर्यो (चाख्युं). त्यारे तेने खारुं, कडवुं, अखाद्य (नहीं खावा लायक), अभोज्य (भोजनने अयोग्य) तथा विषरूप थयेलुं जाणीने ते आ प्रमाणे बोली.—

मू०—"धिरत्थु णं मम नागसिरीए अहन्नाए अपुन्नाए दूभगाए दूभगसत्ताए दूभगणिंबोलियाए, जीए णं मए सालइए बहुसंभारसंभिए नेहावगाढे उवक्खडिए सुबहुदब्वक्खएणं, नेहक्खए य कए।

अर्थ—"मने नागश्रीने धिक्कार छे, हुं अधन्य छुं, अपुण्य छुं, दुर्भाग्यवाळी छुं, दुर्भग सत्त्ववाळी छुं, अने दुर्भग लींबोळीना फळ जेवी अनादर करवा लायक छुं, के जे में शरद ऋतु संबंधी अथवा सार (रस) वडे युक्त, घणा तज,

एलायची विगेरे मसालाथी भरेलुं अने स्नेह (तेल) वडे व्याप्त एवुं कडवा तुंबडानुं शाक घणा द्रव्यना व्ययवडे तैयार कर्युं अने घणा स्नेह (तेल) नो क्षय कर्यो.

मू०—तं जति णं ममं जाउयाओ जाणिस्संति, तो णं मम खिंसिस्संति, तं जाव ताव ममं जाउयाओ ण जाणंति ताव मम सेयं एयं सालतियं तित्तालाउ बहुसंभारनेहकयं एगंते गोवेत्तए, अन्नं सालइयं महुरालाउयं जाव नेहावगाढं उवक्खडेत्तए " ।

अर्थ—तो जो मारी देराणीओ आ वृत्तांत जाणशे तो तेओ मारी खिंसा (निंदा) करशे. तेथी जेटलामां मारी देराणीओ आ वातने जाणती नथी, तेटलामां मारे शरद ऋतु संबंधी अथवा सार (रस) वडे व्याप्त तथा घणा स्नेह (तेल) अने संभार (मसाला) थी करेलुं आ कडवुं तुंबडुं (शाक) एकांतमां गोपववुं श्रेयस्कर छे. अने बीजुं शरद ऋतु संबंधी अथवा सारयुक्त मधुर तुंबडुं यावत् घणा स्नेह (तेल) अने संभारथी व्याप्त करी तैयार करवुं श्रेयस्कर छे."

मू०—एवं संपेहेति, संपेहित्ता तं सालतियं जाव गोवेइ, अन्नं सालतियं महुरालाउयं उवक्खडेइ ।

अर्थ—आ प्रमाणे तेणीए विचार कर्यो. विचार करीने ते शरद ऋतु संबंधी अथवा सार युक्त कडवा तुंबडानुं शाक यावत् गोपवी दीधुं. अने बीजुं शरद ऋतु संबंधी अथवा सारयुक्त मधुर तुंबडानुं शाक तैयार कर्युं.

मू०—तेसिं माहणाणं ण्हायाणं जाव सुहासणवरगयाणं तं विपुलं असणं पाणं खातिमं सातिमं परिवेसेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते ब्राह्मण भाइओ स्नान कर्या यावत् श्रेष्ठ सुखासन उपर बेठा, त्यारे तेमने तेणीए ते विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम ए चार प्रकारनुं भोजन पीरश्युं.

मू०—तते णं ते माहणा जिमितभुत्तुत्तरागया समाणा आयंता चोक्खा परमसुईभूया सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते ब्राह्मणो जमी भोजन करी रह्या सता आचमन लइ चोख्खा थइ अत्यंत शुचि (पवित्र) थया सता पोतपोताना कार्यमां प्रवृत्त थया.

मू०—तते णं ताओ माहणीओ ण्हायाओ जाव विभूसियाओ तं विपुलं असणं पाणं खातिमं सातिमं आहारेंति, आहारित्ता जेणेव सयाइं सयाइं गेहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सककम्मसंपउत्तातो जायातो ॥ १०६ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते ब्राह्मणीओ (देराणीओ) स्नान करी यावत् विभूषित थइ अने पछी ते विपुल अशन, पान,

खादिम अने स्वादिम ए चारे प्रकारना आहारने खावा लागी. आहार करीने ज्यां पोतपोतानां घर हतां त्यां गइ. जइने पोतपोताना कार्यमां संप्रवृत्त–प्रयत्नवाळी थइ. १०६.

मू०–ते णं काले णं ते णं समए णं धम्मघोसा नाम थेरा जाव बहुपरिवारा जेणेव चंपा णामं णयरी जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं जाव विहरंति। परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ। परिसा पडिगया।

अर्थ—ते काळे ते समये धर्मघोष नामना स्थविर मुनि यावत् बहु परिवार सहित विहारना क्रमे ज्यां चंपा नामनी नगरी हती अने ज्यां सुभूमिभाग नामनुं उद्यान हतुं त्यां आव्या. आवीने साधुने रहेवा योग्य अवग्रह याचीने यावत् रह्या. तेमने वांदवा माटे नगरीमांथी पर्षदा बहार नीकळी. स्थविर मुनिए धर्म कह्यो. ते सांभळी पर्षदा पाछी पोताने स्थाने गइ.

मू०–तए णं तेसिं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे ओराले जाव तेउलेस्से मासं मासेणं खममाणे विहरति।

अर्थ—त्यारपछी ते धर्मघोष स्थविरना शिष्य धर्मरुचि नामना साधु प्रधान यावत् तेजोलेश्यावाळा मासमासना तप करता सता विचरता हता–रह्या हता.

मू०—तते णं से धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, करित्ता बीयाए पोरिसीए एवं जहा गोयमसामी तहेव उग्गाहेति, उग्गाहित्ता तहेव धम्मघोसं थेरं आपुच्छइ जाव चंपाए नयरीए उच्चनीयमज्झिमकुलाइं जाव अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे।

अर्थ—त्यारपछी ते धर्मरुचि साधुए मासक्षपणना पारणाने दिवसे पहेली पोरसीए स्वाध्याय कर्यो. करीने बीजी पोरसीए ध्यान कर्युं. विगेरे गौतमस्वामीनी जेम सर्व करी पात्रां पडिलेही पात्रां ग्रहण कर्यां. ग्रहण करी धर्मघोष स्थविरनी आज्ञा लीधी, यावत् चंपा नगरीने विषे उच्च, नीच अने मध्यम कुळोने विषे यावत् अटन करता करता ज्यां ते नागश्री ब्राह्मणीनुं घर हतुं त्यां प्रवेश कर्यो.

मू०—तते णं सा नागसिरी माहणी धम्मरुइं एज्जमाणं पासति, पासित्ता तस्स सालइयस्स तित्तकडुयस्स बहुसंभारसंजुत्तं णेहावगाढं निसिरणट्ठयाए हट्ठ तुट्ठा उट्ठेति, उट्ठित्ता जेणेव भत्त-घरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तं सालतियं तित्तकडुयं च बहुनेहं धम्मरुइस्स अणगारस्स पडिग्गहंसि सव्वमेव निसिरइ।

अर्थ—त्यारपछी ते नागश्री ब्राह्मणीए धर्मरुचिने आवता जोया. जोइने ते शरदऋतु संबंधी अथवा सारयुक्त, घणा मसालाथी युक्त अने स्नेहवाळुं अति कडवा तुंबडानुं शाक आपी देवा माटे हृष्ट तुष्ट थइ उभी थइ. उभी थइने ज्यां भोजनगृह (रसोडुं) हतुं त्यां आवी. आवीने ते शरद ऋतु संबंधी अथवा सारयुक्त बहु स्नेहवाळुं अत्यंत कडवा तुंबडानुं शाक धर्मरुचि साधुना पात्रमां सर्व नांखी दीधुं.

मू०—तते णं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमिति कट्टु णागसिरीए माहणीए गिहातो पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता चंपाए नगरीए मज्झंमज्झेणं पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता धम्मघोसस्स अदूरसामंते इरियावहियं पडिक्कमियं अन्नपाणं पडिलेहेइ, [अन्नपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता] अन्नपाणं करयलंसि पडिदंसेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते धर्मरुचि साधु पर्याप्त (जोइए तेटलो) आहार प्राप्त थयो एम जाणी नागश्री ब्राह्मणीना घरमांथी बहार नीकळ्या. नीकळीने चंपा नगरीनी मध्ये मध्ये थइने बहार नीकळ्या. नीकळीने ज्यां सुभूमिभाग नामनुं उद्यान हतुं त्यां आव्या. आवीने धर्मघोष स्थविरनी समीपे आवी इरियावही पडिकमी अन्नपानने पडीलेह्यां. पछी अन्नपान हाथमां राखी गुरुने देखाड्यां.

मू०—तते णं ते धम्मघोसा थेरा तस्स सालइतस्स नेहावगाढस्स गंधेणं अभिभूया समाणा

ततो सालइयातो नेहावगाढाओ एगं बिंदुगं गहाय करयलंसि आसादेति तित्तगं खारं कडुयं अखज्जं अभोज्जं विसभूयं जाणित्ता धम्मरुइं अणगारं एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते धर्मघोष स्थविर ते शरद ऋतु संबंधी अथवा सारयुक्त अने स्नेह सहित एवा शाकना गंधवडे पराभव पाम्या सता ते शरद ऋतु संबंधी अथवा सारयुक्त अने स्नेह सहित एवा शाकमांथी हस्ततलमां एक बिंदु ग्रहण करी तेने चाखवा लाग्या. त्यारे ते कडवुं, खारुं, तीखुं, खाइ न शकाय तेवुं, भोजनने अयोग्य अने विषरूप थयेलुं जाणी गुरुए धर्मरुचि साधुने आ प्रमाणे कह्युं—

मू०—" जति णं तुमं देवाणुप्पिया ! एयं सालइयं जाव नेहावगाढं आहारेसि तो णं तुमं अकाले चेव जीवितातो ववरोविज्जासि, तं मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! इमं सालतियं जाव आहारेसि, मा णं तुमं अकाले चेव जीविताओ ववरोविज्जासि ।

अर्थ—जो तुं हे देवानुप्रिय ! आ शरद ऋतु संबंधी अथवा सारयुक्त यावत् स्नेहवडे व्याप्त एवा शाकनो आहार करीश तो तुं अकाळे ज जीवितथी जूदो पडीश. तेथी हे देवानुप्रिय ! तुं आ शरद ऋतु संबंधी यावत् शाकनो आहार न कर अने तुं अकाळे ज जीवितथी जूदो न पड—मरण न पाम.

मू०—तं गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया ! इमं सालतियं एगंतमणावाए अच्चित्ते थंडिले परिट्ठवेहि,

परिट्ठवित्ता अन्नं फासुयं एसणिज्जं असणं पाणं खातिमं सातिमं पडिगाहेत्ता आहारं आहारेहि "।

अर्थ—तेथी करीने हे देवानुप्रिय ! तुं जा अने आ शरद् ऋतु संबंधी अथवा सार (रस) युक्त शाकने एकांते कोइनुं आगमन न होय एवा अचित्त थंडिलमां परठवी दे. परठवीने बीजुं प्रासुक अने एषणीय अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने ग्रहण करी आहार कर."

मू०—तते णं से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसेणं थेरेणं एवं वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स थेरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता सुभूमिभागउज्जाणाओ अदूरसामंते थंडिल्लं पडिलेहेति, पडिलेहित्ता ततो सालइयातो एगं बिंदुगं गहेइ, गहित्ता थंडिलंसि निसिरति।

अर्थ—त्यारपछी ते धर्मरुचि साधु धर्मघोष स्थविरे आ प्रमाणे कह्या सता धर्मघोष स्थविरनी पासेथी नीकळ्या. नीकळीने सुभूमिभाग नामना उद्यानथी घणे दूर के घणुं समीप नहीं एवा स्थाने जइ स्थंडिलनी पडिलेहणा करी. पडिलेहीने ते शारदिक (शरद ऋतु संबंधी) अथवा सारयुक्त शाकमांथी एक बिंदु ग्रहण कर्युं. ग्रहण करीने ते स्थंडिलमां मूक्युं.

मू०—तते णं तस्स सालतियस्स तित्तकडुयस्स बहुनेहावगाढस्स गंधेणं बहूणि पिपीलिगासहस्साणि पाउब्भूयाइं जा जहा य णं पिपीलिगा आहारेति सा तहा अकाले चेव जीवितातो

ववरोविज्जाति ।

अर्थ—त्यारे ते शारदिक अथवा सारयुक्त कडवा, तीखा अने घणा स्नेहयुक्त ते शाकना गंधवडे घणी हजारो कीडीओ प्रगट थइ. तेमां जे कीडीए जेम तेनो आहार कर्यो तेम ज ते कीडी तत्काळ अकाळे ज जीवितथी रहित थइ गइ.

मू०—तते णं तस्स धम्मरुइस्स अणगारस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पाजित्था—"जइ ताव इमस्स सालतियस्स जाव एगंमि बिंदुगंमि पक्खित्तंमि अणेगातिं पिपीलिकासहस्साइं ववरोविज्जंति, तं जति णं अहं एयं सालइयं थंडिल्लंसि सव्वं निसिरामि, तते णं बहूणं पाणाणं भूआणं जीवाणं सत्ताणं वहकरणं भविस्सति ।

अर्थ—त्यारपछी ते धर्मरुचि अनगारने आवा प्रकारनो अध्यवसाय (विचार) यावत् उत्पन्न थयो.—" जो प्रथम आ शारदिक शाकनो यावत् एक बिंदु ज नांखे सते अनेक हजार कीडीओ मरण पामी छे, तो जो हुं शारदिक शाकने थंडिलमां सर्व नांखीश तो घणा प्राणो (द्वींद्रियादिक) नो, घणा भूत (वनस्पतिनो) नो, घणा जीव (पंचेंद्रिय) नो अने घणा सत्त्व (पृथ्वीकायादिक) नो वध करनार थशे.

मू०—तं सेयं खलु ममेयं सालइयं जाव गाढं सयमेव आहारेत्तए, मम चेव एएणं सरीरेणं

णिज्जाउ " त्ति कट्टु एवं संपेहेति, संपेहित्ता मुहपोत्तियं पडिलेहेति, पडिलेहित्ता ससीसोवरियं कायं पमज्जेति, पमज्जित्ता तं सालइयं तित्तकडुयं बहुनेहावगाढं बिलमिव पन्नगभूतेणं अप्पाणेणं सव्वं सरीरकोट्ठंसि पक्खिवति ।

अर्थ--तेथी करीने आ शारदिक यावत् स्नेहयुक्त शाकनो मारे पोते ज आहार करवो श्रेयस्कर-योग्य छे. मारा आ शरीरवडे ज आ शाक निर्जरा पामो-झरी जाओ. " ए प्रमाणे तेणे विचार कर्यो. विचार करीने मुखवस्त्रिकानी पडिलेहण करी. पडिलेहण करीने पोताना मस्तकनी उपरना शरीरनुं प्रमार्जन कर्युं. प्रमार्जना करीने (पुंजीने) ते शरद ऋतु संबंधी अथवा सार (रस) युक्त, तीखुं, कडवुं अने घणा स्नेह (तेल) वडे युक्त एवुं ते सर्व शाक बिलमां सर्पनी जेम पोते ज पोताना शरीरना कोठामां नांख्युं. (जेम सर्प बिलमां पोताना शरीरने प्रवेश करावे छे, ते वखते ते बिलना पार्श्व भागनो पण स्पर्श करतो नथी, तेम मुनिए जठरमां ते शाकनो प्रवेश कराव्यो ते वखते मुखना पार्श्वभागनो पण स्पर्श कराव्या विना ज सीधुं जठरमां नांखी दीधुं.)

मू०-तते णं तस्स धम्मरुइस्स तं सालइयं जाव नेहावगाढं आहारियस्स समाणस्स मुहुत्तंतरेणं परिणममाणंसि सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूता उज्जला जाव दुरहियासा ।

अर्थ—त्यारपछी ते धर्मरुचि साधुए ते शरद् ऋतु संबंधी यावत् स्नेहयुक्त ते शाकनो आहार कर्यो के तरत ज एक

मुहूर्तमां ते शाक आखा शरीरमां परिणम्युं-व्यापी गयुं. तेथी तेना शरीरमां उज्वळ-उत्कट यावत् दुःखे सहन थाय तेवी वेदना उत्पन्न थइ.

मू०—तते णं से धम्मरुची अणगारे अथामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु आयारभंडगं एगंते ठवेइ, ठवित्ता थंडिल्लं पडिलेहेति, पडिलेहित्ता दब्भसंथारगं संथारेइ, संथारित्ता दब्भसंथारगं दुरूहति, दुरूहित्ता पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसन्ने करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—

अर्थ—त्यारपछी ते धर्मरुचि साधु स्थाम (उठवा बेसवानी शक्ति) रहित थया, अबळ-बळ रहित थया, अवीर्य-पराक्रम रहित थया, पुरुषार्थना पराक्रम रहित थया. तेथी हवे आयुष्य धारण करी शकाय तेम नथी एम धारीने तेणे आचारना भांड-पात्रां एकांतमां स्थापन कर्या. स्थापन करीने थंडिलनी पडिलेहणा करी, पडिलेहणा करीने त्यां दर्भनो संथारो पाथर्यो. पाथरीने ते दर्भना संथारा उपर बेठा. बेसीने पूर्व दिशा तरफ मुख राखी पर्यंक आसने बेसी बे हाथने एकठा राखी मस्तकपर आवर्त करी (फेरवी) अंजलि जोडी आ प्रमाणे बोल्या.—

मू०—नमोऽत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, णमोऽत्थु णं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्माय-

रियाणं धम्मोवएसगाणं, पुव्विं पि णं मए धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए सव्वे पाणातिवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव परिग्गहे, इयाणिं पि णं अहं तेसिं चेव भगवंताणं अंतियं सव्वं पाणातिवायं पच्चक्खामि जाव परिग्गहं पच्चक्खामि जावजीवाए, जहा खंदओ जाव चरिमेहिं उस्सासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए।

अर्थ—सर्व अरिहंतो यावत् सिद्धिगतिने पामेला भगवंतोने नमस्कार हो. मारा धर्माचार्य अने धर्मोपदेशने आपनारा धर्मघोष नामना स्थविरने नमस्कार हो. प्रथम पण में धर्मघोष नामना स्थविरनी पासे जावजीव सुधी सर्व प्राणातिपातनुं प्रत्याख्यान कर्युं हतुं यावत् सर्व परिग्रहनुं प्रत्याख्यान कर्युं हतुं. हमणा पण हुं ते ज भगवंतनी पासे जावजीव सुधी सर्व प्राणातिपातनुं प्रत्याख्यान करुं छुं यावत् सर्व परिग्रहनुं प्रत्याख्यान करुं छुं. जेम स्कंदक मुनिए कर्युं तेम जाणवुं. यावत् छेल्ला श्वासोच्छ्वासे आ मारा शरीरने पण वोसरावुं छुं—तजुं छुं. आ प्रमाणे कही आलोचना तथा प्रतिक्रमण करता अने समाधिने पाम्या सता ते धर्मरुचि अनगार काळधर्म (मरण) ने पाम्या.

मू०—तते णं ते धम्मघोसा थेरा धम्मरुइं अणगारं चिरं गयं जाणित्ता समणे निग्गंथे सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वदासी—" एवं खलु देवाणुप्पिया ! धम्मरुइस्स अणगारस्स मासखमणपार-

णगंसि सालइयस्स जाव गाढस्स णिसिरणट्ठयाए बहिया निग्गते चिराति, तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेह "।

अर्थ—त्यारपछी ते धर्मघोष नामना स्थविरे धर्मरुचि अनगारने चिरकाळथी गयेला जाणी बीजा श्रमण निर्ग्रंथो (साधुओ)ने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं–" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! धर्मरुचि अनगार मासखमणना पारणाने विषे प्राप्त थयेलुं शरद ऋतु संबंधी यावत् स्नेहवडे व्याप्त एवुं कडवा तुंबडानुं शाक परठववा माटे बहार गया छे तेने घणो वखत गयो छे. तेथी हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ, अने ते धर्मरुचि अनगारनुं चोतरफ मार्गणा गवेषणा करो–शोध करो."

मू०—तते णं ते समणा निग्गंथा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता धम्मघोसाणं थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेमाणा जेणेव थंडिल्लं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवविप्पजढं पासंति, पासित्ता हा हा अहो ! अकज्जमिति कट्टु धम्मरुइस्स अणगारस्स परिनिव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं करेंति, करित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स आयारभंडगं गेण्हंति,

गेण्हित्ता जेणेव धम्मघोसा थेरा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता गमणागमणं पडिक्कमंति, पडिक्कमित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते श्रमण निर्ग्रंथो (साधुओ) ए गुरुनुं वचन यावत् अंगीकार कर्युं. अंगीकार करी धर्मघोष नामना स्थविरनी पासेथी बहार नीकळ्या. नीकळीने धर्मरुचि अनगारनी चोतरफ मार्गणा–गवेषणा करता सता ज्यां ते थंडिलभूमि हती त्यां आव्या. आवीने धर्मरुचि अनगारना शरीरने प्राण रहित, चेष्टा रहित अने जीव रहित जोयुं. जोइने 'हा! हा! अहो! आ अयोग्य कार्य थयुं.' एम कही धर्मरुचि अनगारना काळधर्म (मरण काळ) ना निमित्ते कायोत्सर्ग कर्यो. करीने धर्मरुचि अनगारना आचारभंडक एटले पात्राने ग्रहण कर्यां. ग्रहण करीने ज्यां धर्मघोष नामना स्थविर हता त्यां आव्या. आवीने गमनागमननुं प्रतिक्रमण कर्युं. प्रतिक्रमण करीने आ प्रमाणे बोल्या—

मू०—एवं खलु अम्हे तुब्भं अंतियाओ पडिनिक्खमामो, पडिनिक्खमित्ता सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स परिपेरंतेणं धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वं जाव करेमाणे जेणेव थंडिल्ले तेणेव उवागच्छामो, उवागच्छित्ता जाव इहं हव्वमागया, तं कालगए णं भंते! धम्मरुई अणगारे, इमे से आयारभंडए।

---

१ खेद बतावनार अव्यय छे.

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे हे भगवान ! अमे तमारी पासेथी नीकळ्या हता. नीकळीने सुभूमिभाग नामना उद्याननी चोतरफ धर्मरुचि अनगारनी यावत् सर्व प्रकारे शोध करता करता ज्यां थंडिल हतुं त्यां गया. जइने यावत् अहीं शीघ्रपणे पाछा आव्या छीए. हे भगवान ! ते धर्मरुचि अनगार काळधर्मने पाम्या छे. अमे तेनी सर्व क्रिया करी छे. आ तेना आचारभांड–पात्रां छे. (ए प्रमाणे सर्व वृत्तांत कही तेनां पात्रां विगेरे उपकरण गुरु पासे मूक्यां.)

मू०—तते णं ते धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओगं गच्छंति, गच्छित्ता समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वदासी—" एवं खलु अज्जो ! मम अंतेवासी धम्मरुची नाम अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए मासंमासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं जाव नागसिरीए माहणीए गिहे अणुपविट्ठे, तए णं सा नागसिरी माहणी जाव निसिरइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते धर्मघोष नामना स्थविरे पूर्वमां उपयोग आप्यो. आपीने श्रमण निर्ग्रंथ (साधुओ) ने तथा साध्वीओने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे हे आर्यो ! मारो शिष्य धर्मरुचि नामनो साधु प्रकृतिथी भद्रक यावत् विनयवान हतो, अने निरंतर मासखमणनो तप करतो हतो, यावत् ते नागश्री ब्राह्मणीने घेर पारणा माटे गयो हतो. त्यां यावत् ते नाग ी ब्राह्मणीए तेना पात्रमां कडवी तुंबडीनुं सर्व शाक नांख्युं.

मू०—तए णं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमिति कट्टु जाव कालं अणवकंखेमाणे विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते धर्मरुचि अनगार पोताने जोइए तेटलो आहार पर्याप्त थयो, एम जाणी यावत् काळने नहीं वांछतो सतो विचरवा लाग्यो.

मू०—से णं धम्मरुई अणगारे बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता आलोइअपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं सोहम्म जाव सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववन्ने ।

अर्थ—ते धर्मरुचि अनगार घणा वर्षो चारित्रपर्यायने पाळी आलोचना अने प्रतिक्रमण करी समाधिपूर्वक काळसमये काळ करीने उंचे सौधर्म देवलोकने ओळंगी यावत् सर्वार्थसिद्ध नामना महाविमानमां देवपणे उत्पन्न थयो छे.

मू०—तत्थ णं अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता । तत्थ धम्मरुइस्स वि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता । से णं धम्मरुई देवे ताओ देवलोगाओ जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति ॥ १०७ ॥

अर्थ—ते सर्वार्थसिद्ध विमानने विषे जघन्य रहित अने उत्कृष्ट रहित अर्थात् एक सरखी ज तेत्रीश सागरोपमनी स्थिति कहेली छे. तेमां धर्मरुचि देवनी पण तेत्रीश सागरोपमनी स्थिति कहेली छे. ते धर्मरुचि देव ते देवलोकथी चवीने यावत् महाविदेहक्षेत्रमां उत्पन्न थइ चारित्र लइ सिद्धिपद पामशे. १०७

मू०—तं धिरत्थु णं अज्जो ! णागसिरीए माहणीए अधन्नाए अपुन्नाए जाव णिंबोलियाए, जाए णं तहारूवे साहू धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि सालइएणं जाव गाढेणं अकाले चेव जीवितातो ववरोविए " ।

अर्थ—तो हे आर्यो! नागश्री ब्राह्मणीने धिक्कार छे. ते अधन्य, अपुण्य यावत् लींबोळी जेवी कडुक छे. केमके तेणीए तेवा प्रकारना साधु धर्मरुचि नामना अनगारने मासक्षपणना पारणामां शरद ऋतु संबंधी यावत् स्नेहथी व्याप्त एवा कडवा तुंबडाना शाकवडे तेने अकाळे ज जीवित रहित कर्यो." (माटे तमे चंपानगरीना त्रिक चत्वरमां जइने ए प्रमाणे कहो.)

मू०—तते णं ते समणा निग्गंथा धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए एतमट्ठं सोच्चा णिसम्म चंपाए सिंघाडगतिग जाव बहुजणस्स एवमातिक्खंति—" धिरत्थु णं देवाणुप्पिया! नागसिरीए माहणीए जाव णिंबोलियाए, जाए णं तहारूवे साहू साहुरूवे सालतिएणं जीवियाओ ववरोवेइ " ।

अर्थ—त्यारपछी ते श्रमण निर्ग्रंथो (साधुओ) धर्मघोष नामना स्थविरनी पासे आ अर्थ (वृत्तांत) सांभळी हृदयमां धारी चंपा नगरीना शृंगाटक, त्रिक विगेरे मार्गोमां जइ यावत् घणा माणसोनी पासे आ प्रमाणे कहेवा लाग्या.—" हे देवानुप्रियो ! नागश्री ब्राह्मणी यावत् लींबोळी जेवी कडुक छे, तेणीने धिक्कार छे के जेणीए तेवा प्रकारना सारा स्वरूप-

वाळा (मासक्षपणनी तपस्या करनारा) धर्मरुचि नामना साधुने शरद ऋतु संबंधी यावत् कडवा तुंबडाना शाकवडे जीवित रहित कर्या.

मू०—तए णं तेसिं समणाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमातिक्खति, एवं भासति—“ धिरत्थु णं नागसिरीए माहणीए जाव जीवियाओ ववरोविते ” ।

अर्थ—त्यारपछी ते साधुओनी पासे ते अर्थ (वृत्तांत) सांभळी हृदयमां धारी घणा माणसो अन्योन्य आ प्रमाणे कहेवा लाग्या, अने आ प्रमाणे बोलवा लाग्या.—“नागश्री ब्राह्मणीने धिक्कार छे, यावत् तेणीए साधुने जीवित रहित कर्या छे.”

मू०—तते णं ते माहणा चंपाए नयरीए बहुजणस्स अंतिए एतमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी माहणी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता णागसिरीं माहणीं एवं वयासी—

अर्थ—त्यारपछी ते ब्राह्मणो भाइओ चंपानगरीने विषे घणा माणसोनी पासेथी आ अर्थने सांभळी हृदयमां धारी तत्काळ क्रोध पाम्या यावत् क्रोधथी धगधगायमान थया. अने ज्यां नागश्री ब्राह्मणी हती त्यां आव्या, आवीने नागश्री ब्राह्मणीने आ प्रमाणे कहेवा लाग्या.

मू०—“ हं भो णागसिरी ! अपत्थियपत्थिए दुरंतपंतलक्खणे हीणपुण्णचाउद्दसे धिरत्थु णं

तव अधन्नाए अपुन्नाए जाव णिंबोलियाते, जाए णं तुमे तहारूवे साहू साहुरूवे मासखमणपारणगंसि सालतिएणं जाव ववरोविते " । उच्चावएहिं अक्कोसणाहिं अक्कोसंति, उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसेंति, उच्चावयाहिं णिब्भत्थणाहिं णिब्भत्थंति, उच्चावयाहिं णिच्छोडणाहिं निच्छोडेंतिं, तज्जेंति तालेंति, तज्जेत्ता तालेत्ता सयातो गिहातो निच्छुभंति ।

अर्थ—" अरे ! नागश्री ! अप्रार्थितनी (मरणनी) प्रार्थना करनारी ! दुष्ट अने अशुभ लक्षणवाळी ! हीन कृष्ण चतुर्दशीमां जन्मेली ! अधन्य अपुण्य यावत् लींबोळी जेवी तने धिकार छे, के जे तें तेवा प्रकारना सारा रूपवाळा साधुने मासक्षपणना पारणामां शरद ऋतु संबंधी यावत् कडवा तुंबडाना शाकवडे जीवित रहित कर्या. " एम कही तेणीनो उच्च नीच (अयोग्य) आक्रोशना[1] वचनवडे आक्रोश कर्यो (गाळो दीधी), उच्च नीच (अयोग्य) उद्धंसनना[2] वचनवडे तेणीनी तर्जना करी, उच्च नीच (अयोग्य) निर्भर्त्सनाना[3] वचनवडे तेणीनी निर्भर्त्सना करी, तथा उच्च नीच (अयोग्य) निश्छोटनना[4] वचनोवडे तेणीने तरछोडी नांखी, ' हे पापणी ! (आ पापनुं फळ) तुं हवे जाणीश." इत्यादि वचनोवडे तेणीनी तर्जना करी, तथा चपेटावडे तेणीने ताडना करी, आ प्रमाणे तर्जना ताडना करीने तेणीने पोताना घरमांथी काढी मूकी.

१ ' तुं मरीजा ' इत्यादि. २ ' तुं दुष्कुलीन छे विगेरे. ३ ' अमारा घरमांथी नीकळ ' विगेरे. ४ ' अमारा वस्त्र, आभरण विगेरे मूकी दे. ' इत्यादि

मू०—तते णं सा नागसिरी सयातो गिहातो निच्छूढा समाणी चंपाए नगरीए सिंघाडगतियचउक्कचच्चरचउम्मुह बहुजणेणं हीलिज्जमाणी खिंसिज्जमाणी निंदिज्जमाणी गरहिज्जमाणी तज्जिज्जमाणी पव्वहिज्जमाणी धिक्कारिज्जमाणी थुक्कारिज्जमाणी कत्थइ ठाणं वा निलयं वा अलभमाणी अलभमाणी दंडीखंडनिवसना खंडमल्लयखंडघडगहत्थगया फुट्टहडाहडसीसा मच्छियाचडगरेणं अन्निज्जमाणमग्गा गेहं गेहेणं देहं बलियाए वित्तिं कप्पेमाणी विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते नागश्रीने पोताना घरमांथी बहार काढवामां आवी त्यारे चंपा नगरीना शृंगाटक[1], त्रिक[2] चतुष्क[3], चत्वर (चौटुं) अने चतुर्मुख (देवकुळ) विगेरेमां रहेला घणा जनोए तेणीनी जाति प्रगट करवादिक वडे हीलना करी, परोक्षमां निंदा करवावडे कुत्सा करी, मनवडे निंदा करी, तेणीनी प्रत्यक्ष ज गर्हा करी, आंगळीवडे तर्जना करी, दंडादिकना ताडनवडे प्रकृष्ट व्यथा पमाडी, कठोर शब्दवडे धिक्कारी काढी, तथा कठोर शब्दवडे ते लोको थू थू करवा लाग्या. तेथी ते कोइपण ठेकाणे, स्थानने के निलय (निवास)ने नहीं पामती नहीं पामती, डांडीया[4] करेला जीर्ण (जूना) वस्त्रने पहेरनारी, भोजनने माटे शरावलानो खंड अने पाणी माटे घडानो खंड हाथमां धारण करती, मस्तकपर

१ शींगोडाना आकारवाळो मार्ग. २ त्रण रस्ता भेगा थाय तेवो मार्ग. ३ चार रस्ता भेगा थाय तेवो मार्ग. ४ बे ककडाने सांधवा ते.

अत्यंत विखरायेला केशसमूहने धारण करती, जेणीनी पाछळ मक्षिकानो समूह फरतो हतो एवी ते नागश्री घेर घेर (दरेक घेर) देहबलिवडे आजीविकाने करती विचरवा लागी.

मू०—तते णं तीसे नागसिरीए माहणीए तब्भवंसि चेव सोलस रोयायंका पाउब्भूया, तं जहा—सासे कासे जोणिसूले जाव कोढे ।

अर्थ—त्यारपछी ते नागश्री ब्राह्मणीने ते ज भवमां सोळ रोगातंक उत्पन्न थया. ते आ प्रमाणे.—श्वास, कास, योनिशूळ यावत् कोढ.

मू०—तए णं सा नागसिरी माहणी सोलसहिं रोयायंकेहिं अभिभूता समाणी अट्टदुहट्टवसट्टा कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमठितीएसु नरएसु नेरइयत्ताते उववन्ना ।

अर्थ—त्यारपछी ते नागश्री ब्राह्मणी सोळ रोगातंकवडे पराभव पामी आर्तध्यान वडे अत्यंत दुःखने वश थइ काळमासे काळ (मरण) करी छठी पृथ्वीमां उत्कृष्ट बावीश सागरोपमनी स्थितिवाळा नारकीओमां नारकीपणे उत्पन्न थइ.

१ फुट्ट—विकीर्णकेशं, हडाहडं—अत्यर्थं, शीर्षं यस्याः. २ लोको पोतपोताना घरना उंबर उपर बळि मूके छे ते.

मू०—सा णं तओऽणंतरं[सि]उव्वट्टित्ता मच्छेसु उववन्ना, तत्थ णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा अहे सत्तमीए पुढवीए उक्कोसाए तित्तीससागरोवमठितीएसु नेरइएसु उववन्ना ।

अर्थ—त्यारपछी ते नागश्री त्यांथी अनंतर उद्धरीने (नीकळीने) मत्स्यमां उत्पन्न थइ. त्यां शस्त्रवडे वध करवा लायक थइ, तेथी (वध पामी तेथी) थता दाहनी उत्पत्तिवडे काळसमये काळ करी नीचे सातमी पृथ्वीमां उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमनी स्थितिवाळा नारकीओमां उत्पन्न थइ.

मू०—सा णं ततोऽणंतरं उव्वट्टित्ता दोच्चं पि मच्छेसु उववज्जति, तत्थ वि य णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए दोच्चं पि अहे सत्तमीए पुढवीए उक्कोसं तेत्तीससागरोवमठितीएसु नेरइएसु उववज्जति ।

अर्थ—त्यारपछी ते नागश्री त्यांथी उद्धरीने (नीकळीने) बीजीवार पण मत्स्यमां उत्पन्न थइ. त्यां पण शस्त्रवडे वध करवा लायक थइ अने दाहनी उत्पत्तिवडे मरण पामी, बीजीवार पण नीचे सातमी पृथ्वीमां तेत्रीश सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थितिवाळा नारकीओमां नारकीपणे उत्पन्न थइ.

मू०—सा णं तओहिंतो जाव उव्वट्टित्ता तच्चं पि मच्छेसु उववन्ना, तत्थ वि य णं सत्थवज्झा

जाव कालं किच्चा दोच्चं पि छट्टीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमठितीएसु नरएसु उववन्ना ।

अर्थ—त्यांथी ते यावत् उद्धरीने त्रीजी वार पण मत्स्यने विषे उत्पन्न थइ. त्यां पण शस्त्रवडे वध करवा लायक थइ. यावत् काळ करी (मरण पामी) बीजी वार पण छट्ठी पृथ्वीमां बावीश सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थितिवाळा नारकीओने मध्ये नारकीपणे उत्पन्न थइ.

मू०—तओऽणंतरं उव्वट्टित्ता उरएसु एवं जहा गोसाले तहा नेयव्वं जाव रयणप्पभाए सत्तसु उववन्ना । ततो उव्वट्टित्ता जाव इमाइं खहयरविहाणाइं जाव अदुत्तरं च णं खरबायरपुढविकाइयत्ताते तेसु अणेगसतसहस्स खुत्तो ॥ १०८ ॥

अर्थ—त्यांथी अनंतर उद्धरीने (नीकळीने) उरग (सर्प)ने विषे उत्पन्न थइ. ए प्रमाणे जेम गोशालकने माटे कह्युं छे तेम सर्व जाणवुं. यावत् रत्नप्रभा विगेरे साते पृथ्वीमां उत्पन्न थइ. त्यांथी उद्धरीने यावत् आ खचर (पक्षी) नी जाति छे तेमां उत्पन्न थइ. त्यारपछी अनंतर खर (कठिन) बादर पृथ्वीकायपणे उत्पन्न थइ. तेमां अनेक लाखो वार उत्पन्न थइ. (ए रीते सर्व एकेंद्रियादिकमां अनेकवार उत्पन्न थइ.) १०८.

मू०—सा णं तओऽणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि दारियत्ताए पच्चायाया ।

अर्थ—त्यांथी अनंतर उद्धरीने ते नागश्री आ ज जंबूद्वीप नामना द्वीपना भरतक्षेत्रमां चंपा नामनी नगरीमां सागरदत्त नामना सार्थवाहनी भद्रा नामनी भार्यानी कुक्षिने विषे पुत्रीपणे उत्पन्न थइ.

मू०—तते णं सा भद्दा सत्थवाही णवण्हं मासाणं दारियं पायाया सुकुमालकोमलियं गयतालुयसमाणं ।

अर्थ—त्यारपछी ते भद्रा सार्थवाहीए नव मास पूर्ण थया त्यारे हाथीना ताळवा जेवी अत्यंत सुकुमाळ पुत्रीने प्रसवी.

मू०—तीसे दारियाए निव्वत्ते बारसाहियाए अम्मापियरो इमं एतारूवं गोन्नं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति—" जम्हा णं अम्हं एसा दारिया सुकुमाला गयतालुयसमाणा तं होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जे सुकुमालिया " ।

अर्थ—ते पुत्रीना बार दिवस निवृत्त थया त्यारे मातापिताए तेणीनुं आ आवा प्रकारनुं गौण (गुणवाळुं) अने गुणथी बनेलुं नाम कर्युं (पाडयुं).—" जेथी करीने अमारी आ पुत्री हाथीना ताळवा जेवी अत्यंत कोमळ छे, तेथी अमारी आ पुत्रीनुं नाम सुकुमालिका हो. "

मू०—तते णं तीसे दारियाए अम्मापितरो नामधेज्जं करेंति सुमालिय त्ति ।

अर्थ— त्यारपछी मातापिताए ते पुत्रीनुं सुकुमालिका नाम कर्यु-पाड्युं.

मू०—तए णं सा सूमालिया दारिया पंचधाईपरिग्गहिया तं जहा—खीरधाईए (मज्जणधाई य मंडणधाई य अंकधाई य कीलावणधाई य) जाव गिरिकंदरमल्लीणा इव चंपकलया निव्वाए निव्वाघायंसि जाव परिवड्ढइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुकुमालिका पुत्रीने पांच धात्रीए ग्रहण करी-पांच धात्रीओ तेनुं पालन-पोषण करवा लागी. ते पांच धात्रीओ आ प्रमाणे.—क्षीरधात्री (धवरावनारी) १, मज्जनधात्री (स्नान करावनारी) २, मंडनधात्री (अलंकार पहेरावनारी) ३, अंकधात्री (खोळामां बेसाडनारी) ४ अने क्रीडाधात्री (क्रीडा करावनारी) ५. यावत् पर्वतनी गुफामां रहेली चंपकलता जेम वायु रहित प्रदेशमां रहेवाथी व्याघात (उपद्रव) रहितपणे वृद्धि पामे छे तेम यावत् वृद्धि पामवा लागी.

मू०—तते णं सा सूमालिया दारिया उम्मुक्कबालभावा जाव रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाता यावि होत्था ॥ १०९ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते सुकुमालिका पुत्री बाल्यावस्थाथी मुक्त थइ सती रूपवडे, यौवनवडे अने लावण्यवडे उत्कृष्ट अने उत्कृष्ट शरीरवाळी पण थइ. १०९.

मू०—तत्थ णं चंपाए नयरीए जिणदत्ते नाम सत्थवाहे अड्डे, तस्स णं जिणदत्तस्स भद्दा भारिया सूमाला इट्ठा जाव माणुस्सए कामभोए पच्चणुब्भवमाणा विहरति ।

अर्थ—ते चंपा नामनी नगरीमां जिनदत्त नामे आढ्य-ऋद्धिवाळो सार्थवाह हतो, ते जिनदत्त सार्थवाहने भद्रा नामनी भार्या हती. ते अत्यंत कोमळ, पतिने इष्ट-वहाली यावत् मनुष्य संबंधी कामभोगने अनुभवती विचरती हती-रही हती.

मू०—तस्स णं जिणदत्तस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सागरए नामं दारए सुकुमाले जाव सुरूवे ।

अर्थ—ते जिनदत्त सार्थवाहनो पुत्र भद्रा नामनी भार्यानो आत्मज[1] सागर नामे पुत्र हतो. ते सुकुमाळ यावत् सुरूप हतो.

मू०—तते णं से जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नदा कदाई सातो गिहातो पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता सागरदत्तस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीतीवयइ, इमं च णं सूमालिया दारिया ण्हाया

१ पोताथी उत्पन्न थयेलो.

चेडियासंघपरिवुडा उप्पिं आगासतलगंसि कणगतेंदूसएणं कीलमाणी कीलमाणी विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते जिनदत्त सार्थवाह एकदा कदाचित् पोताना घरथकी बहार नीकळ्यो. नीकळीने सागरदत्तना घरनी समीपे थइने जतो हतो. एवा अवसरे ते सुकुमालिका नामनी कन्या स्नान करी अलंकार पहेरी दासीओना समूहथी परिवरी महेलनी उपर अगाशीनी भूमिने विषे सुवर्णना दडावडे क्रीडा करती करती विचरती हती—रहेली हती.

मू०—तते णं से जिणदत्ते सत्थवाहे सूमालियं दारियं पासति, पासित्ता सूमालियाए दारियाए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य जायविम्हए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—" एस णं देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया ? किं वा णामधेज्जं से ? " ।

अर्थ—त्यारपछी ते जिनदत्त सार्थवाहे ते सुकुमालिका कन्याने जोइ. जोइने सुकुमालिका कन्याना रूप, यौवन अने लावण्यने विषे विस्मय पामी कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं (पूछ्युं)—" हे देवानुप्रियो ! आ कोनी पुत्री छे ? तेणीनुं नाम शुं छे ? "

मू०—तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ तुट्ठ करयल जाव एवं वयासी—" एस णं देवाणुप्पिया ! सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया सूमा-

लिया नाम दारिया सुकुमालपाणिपाया जाव उक्किट्ठा "।

अर्थ—त्यारे ते कौटुंबिक पुरुषो जिनदत्त सार्थवाहे आ प्रमाणे कह्या सता हृष्ट तुष्ट थइ यावत् बे हाथ जोडी आ प्रमाणे बोल्या—" हे देवानुप्रिय ! आ सागरदत्त सार्थवाहनी पुत्री भद्रा नामनी भार्यानी आत्मजा सुकुमालिका नामनी कन्या छे. तेणीना हाथ पग विगेरे अत्यंत कोमळ छे यावत् ते उत्कृष्ट-उत्तम छे."

मू०–तते णं से जिणदत्ते सत्थवाहे तेसिं कोडुंबियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता ण्हाए जाव मित्तनाइपरिवुडे चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते जिनदत्त सार्थवाह ते कौटुंबिक पुरुषो पासेथी आ अर्थ (वृत्तांत) सांभळीने ज्यां पोतानुं घर हतुं त्यां आव्यो. आवीने स्नान कर्युं, यावत् मित्र, ज्ञाति विगेरे सहित चंपा नगरीना मध्य मध्य भागे करीने ज्यां सागरदत्त सार्थवाहनुं घर हतुं त्यां आव्यो.

मू०–तए णं सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्तं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ, एज्जमाणं पासइत्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता आसणेणं उवणिमंतेति, उवणिमंतित्ता आसत्थं वीसत्थं सुहासण-

वरगयं एवं वयासी–" भण देवाणुप्पिया ! किमागमणपओयणं ? " ।

अर्थ—त्यारपछी सागरदत्त सार्थवाहे जिनदत्त सार्थवाहने आवतो जोयो. आवतो जोइने ते आसनपरथी उभो थयो. उभो थइने तेने आसनपर बेसवा आमंत्रण कर्युं. आमंत्रण करीने–आसनपर बेसाडीने चोतरफथी स्वस्थ थयेला विश्वस्त–विश्वासवाळा थयेला अने श्रेष्ठ आसनपर बेठेला तेने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रिय ! तमारे अहीं आववानुं शुं प्रयोजन छे ? ते कहो. "

मू०–तते णं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी–" एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! तव धूयं भद्दाए अत्तियं सूमालियं सागरस्स भारियत्ताए वरेमि । जति णं जाणह देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो, ता दिज्जउ णं सूमालिया सागरस्स । तते णं देवाणुप्पिया ! किं दलयामो सुंकं सूमालियाए ? " ।

अर्थ—त्यारपछी ते जिनदत्त सार्थवाहे सागरदत्त सार्थवाहने आ प्रमाणे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! हुं तमारी पुत्री भद्रानी आत्मजा सुकुमालिकाने मारा पुत्र सागरनी भार्यापणे वरुं छुं—याचुं छुं (मागणी करुं छुं). जो हे देवानुप्रिय ! आ बाबत युक्त होय, पात्ररूप होय, श्लाघा करवा लायक होय अथवा सदृश संयोग तमे मानता हो तो

मारा पुत्र सागरने सुकुमालिका आपो. अने जो तमने इष्ट होय तो हे देवानुप्रिय ! सुकुमालिकानुं शुं शुंल्क[1] आपीए ? (तेने माटे शुं शुं खर्च करीए ?) "

मू०—तए णं से सागरदत्ते तं जिणदत्तं एवं वयासी—" एवं खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा जाव किमंग पुण पासणयाए ? तं नो खलु अहं इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओगं । तं जति णं देवाणुप्पिया ! सागरदारए मम घरजामाउए भवति, तो णं अहं सागरस्स दारगस्स सूमालियं दलयामि ।

अर्थ—त्यारपछी ते सागरदत्ते ते जिनदत्तने आ प्रमाणे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! मारे सुकुमालिका पुत्री एक ज छे—एक ज उत्पन्न थयेली छे, इष्ट छे, यावत् तेनुं नाम श्रवण करतां अमने आनंद थाय छे. तो पछी दर्शनथी आनंद थाय तेमां शुं कहेवुं ? तेथी हुं एक क्षणवार पण सुकुमालिकानो वियोग इच्छतो नथी. तो हे देवानुप्रिय ! जो तमारो सागरपुत्र मारे त्यां घरजमाइ तरीके रहे, तो हुं तमारा सागरपुत्रने मारी सुकुमालिका पुत्री आपुं. "

मू०—तते णं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव सए

१—वस्त्रालंकार तरीके अपाता पैसा.

गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदारगं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते जिनदत्त सार्थवाह, सागरदत्त सार्थवाहे आ प्रमाणे कह्युं. त्यारे ज्यां पोतानुं घर हतुं त्यां आव्यो. आवीने तेणे सागर पुत्रने बोलाव्यो. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—"एवं खलु पुत्ता ! सागरदत्ते सत्थवाहे मम एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया इट्ठा, तं चेव, तं जति णं सागरदारए मम घरजामाउए भवइ ता दलयामि"।

अर्थ—"आ प्रमाणे निश्चे हे पुत्र ! सागरदत्त सार्थवाहे मने आ प्रमाणे कह्युं के—आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! सुकुमालिका पुत्री मने इष्ट छे. विगेरे सर्व पूर्ववत् कहेवुं. तेथी जो सागर पुत्र मारो घरजमाइ थाय तो हुं आपुं."

मू०—तते णं से सागरए दारए जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठति।

अर्थ—त्यारपछी ते सागरपुत्र, जिनदत्त सार्थवाहे आ प्रमाणे कह्युं त्यारे मुंगो रह्यो. (एटले एने ए वात कबुल छे एम समजायुं).

मू०—तते णं जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नदा कदाइ सोहणंसि तिहिकरणे विउलं असणं पाणं खातिमं सातिमं उवक्खडावेति, उवक्खडावित्ता मित्तणाई आमंतेइ, जाव संमाणित्ता सागरं दारयं

ण्हायं जाव सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करित्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहावेति, दुरूहावित्ता मित्तणाइ जाव संपरिवुडे सव्विड्ढीए सातो गिहाओ निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता चंपानयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता सागरगं दारगं सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स उवणेति ।

अर्थ—त्यारपछी जिनदत्त सार्थवाहे एकदा कदाचित् शुभ तिथि अने करणने विषे विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने तैयार कराव्यां. तैयार करावीने मित्र, ज्ञाति विगेरेने आमंत्रण कर्युं, यावत् ते सर्वनुं (जमाडवा विगेरेवडे) सन्मान कर्युं. पछी सागर पुत्रने स्नान करावी यावत् सर्व अलंकारोवडे विभूषित कर्यो. करीने हजार पुरुषो उपाडी शके तेवी शिबिका उपर आरूढ कर्यो, आरूढ करी मित्र, ज्ञाति विगेरे सहित सर्व समृद्धिवडे पोताना घरथी नीकळ्यो. नीकळीने चंपानगरीना मध्य मध्य भागे करीने ज्यां सागरदत्तनुं घर हतुं त्यां आव्यो, आवीने तेने शिबिकाथी नीचे उतार्यो, उतारीने सागर पुत्रने सागरदत्त सार्थवाहनी पासे लइ गयो.

मू०—तते णं सागरदत्ते सत्थवाहे विपुलं असणं पाणं खातिमं सातिमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता जाव संमाणेत्ता सागरगं दारगं सूमालियाए दारियाए सद्धिं पट्टयं दुरूहावेइ,

दुरुहावित्ता सेयापीतएहिं कलसेहिं मज्जावेति, मज्जावित्ता होमं करावेति, करावित्ता सागरं दारयं सूमालियाए दारियाए पाणिं गेण्हाविंति ॥ ११० ॥

अर्थ—त्यारपछी सागरदत्त सार्थवाहे विपुल अशन, पान, खादिम, स्वादिमने तैयार कराव्यां. तैयार करावीने यावत् तेमनुं सर्व प्रकारे सन्मान कर्युं. पछी सागर पुत्रने सुकुमालिका पुत्रीनी साथे पाटला (बाजोट) पर बेसाड्यो. बेसाडीने श्वेत (रुपाना) पीत (सुवर्णना) कळशोवडे स्नान कराव्युं. स्नान करावीने अग्निमां होम कराव्यो. करावीने सागरपुत्रने सुकुमालिका पुत्रीनी साथे पाणिग्रहण कराव्युं. ११०

मू०—तते णं सागरदारए सूमालियाए दारियाए इमं एयारूवं पाणिफासं पडिसंवेदेति से जहानामए असिपत्ते इवा जाव मुम्मुरे इवा इतो अणिट्ठतराए चेव पाणिफासं पडिसंवेदेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते सागर पुत्र सुकुमालिका पुत्रीना आ आवा प्रकारना हस्तना स्पर्शने वेदवा-अनुभव करवा लाग्यो, के जेम कोइ असिपत्र (खड्ग) होय अथवा यावत् मुर्मुरनो अग्नि होय, तेनाथी पण अत्यंत अनिष्ट हस्तना स्पर्शने वेदवा-अनुभववा लाग्यो.

मू०—तते णं से सागरए अकामए अवसव्वसे तं मुहुत्तमित्तं संचिट्ठइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते सागर इच्छा रहित पराधीनपणे तेवा स्पर्शने अनुभवतो एक मुहूर्त मात्र बेसी रह्यो.

मू०—तते णं से सागरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स दारगस्स अम्मापियरो मित्तणाइ विउलं असणं पाणं खातिमं सातिमं पुप्फ वत्थ जाव संमाणेत्ता पडिविसज्जेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते सागरदत्त सार्थवाहे सागरपुत्रना मातापिताने तथा मित्र, ज्ञाति विगेरेने विपुल अशन, पान, खादिम, स्वादिम, पुष्प, वस्त्र विगेरेवडे यावत् सन्मान करी विसर्जन कर्या—विदाय कर्या.

तते णं सागरए दारए सूमालियाए सद्धिं जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिगंसि निवज्जइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते सागरपुत्र सुकुमालिकानी साथे ज्यां वासगृह (सुवानुं घर) हतुं त्यां आव्यो, आवीने सुकुमालिका दारिकानी साथे तळाइमां (शय्यामां) सुतो.

मू०—तते णं से सागरए दारए सूमालियाए दारियाए इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेति, से जहानामए असिपत्ते इवा जाव अमणामयरागं चेव अंगफासं पच्चणुब्भवमाणे विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते सागरपुत्रे सुकुमालिका दारिकाना आ आवा प्रकारना अंगना स्पर्शने वेद्यो—अनुभव्यो के जे स्पर्श जाणे के असिपत्र (खड्ग) नो होय इत्यादि यावत् अत्यंत कष्टकारक एवा तेणीना अंगना स्पर्शने अनुभवतो सतो रह्यो.

मू०—तते णं से सागरए दारए अंगफासं असहमाणे अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठति।

अर्थ—त्यारपछी ते सागरपुत्र तेवा तेणीना अंगस्पर्शने नहीं सहन करता छतां पराधीनपणे एक मुहूर्तमात्र तो त्यां रह्यो.

मू०—तते णं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए दारियाए पासाओ उट्ठेति, उट्ठेतित्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सयणीयंसि निवज्जइ।

अर्थ—त्यारपछी ते सागरपुत्र सुकुमालिका दारिकाने सुखे सुतेली जाणीने सुकुमालिका दारिकानी पासेथी उभो थयो, उभो थइने ज्यां पोतानुं शयनीय हतुं त्यां आव्यो. आवीने ते पोतानी शय्यामां सुइ गयो.

मू०—तते णं सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी पतिंवया पइमणुरत्ता पतिं पासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्ठेति, उट्ठित्ता जेणेव से सयणिज्जे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुकुमालिका दारिका तरत ज मुहूर्त पछी जागी सती पतिव्रता अने पतिने विषे ज रक्त एवी

१ 'अपस्ववशः' गयुं छे पोतानुं वशपणुं जेने. एवो संस्कार करवो.

ते पतिने पोतानी पासे नहीं जोती सती शय्यामांथी उभी थइ, उभी थइने ज्यां ते (पति) नी शय्या हती, त्यां आवी आवीने सागरनी पासे सुइ गइ ।

तते णं से सागरदारए सूमालियाए दारियाए दुच्चं पि इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेति, जाव अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठति ।

अर्थ—ते वखते पण ते सागरपुत्रे सुकुमालिका दारिकानो बीजी वार पण आ आवा प्रकारनो शरीरनो स्पर्श अनुभव्यो यावत् इच्छा विना ज पराधीनपणे एक मुहूर्तमात्र रह्यो.

मू०—तते णं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सयणिज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठित्ता वासघरस्स दारं विहाडेति, विहाडित्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ १११ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते सागरपुत्र सुकुमालिका दारिकाने सुखे सुतेली जाणी शय्यामांथी उठ्यो, उठीने वासगृह (शयनगृह) नुं द्वार उघाड्युं, उघाडीने मारवानी शाळा(कसाइखाना)थी अथवा मरणथी अथवा मारनार पुरुषथी मुक्त थयेला कागडानी जेम एकदम जे दिशामांथी प्रगट थयो हतो—आव्यो हतो, ते ज दिशामां पाछो गयो. १११.

मू०—तते णं सूमालिया दारिया ततो मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पतिंवया जाव अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्ठेति, सागरस्स दारगस्स सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेमाणी करेमाणी वासघरस्स दारं विहाडियं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—'गए से सागरे' त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ।

अर्थ—त्यारपछी सुकुमालिका दारिका त्यां पण एक मुहूर्त्त पछी जागी सती पतिव्रता एवी ते यावत् तेने (पतिने) नहीं जोती सती शय्यामांथी उठी, उठीने सागरपुत्रनी सर्व दिशा विदिशाने विषे मार्गण गवेषण (शोध खोळ) करती करती तेणीए वासगृहनुं द्वार उघाडेलुं जोयुं. जोइने ते आ प्रमाणे बोली—'ते सागर गयो' एम कहीने हणाइ गयो छे मननो संकल्प जेनो एवी ते यावत् ध्यान (विचार) करवा लागी.

मू०—तते णं सा भद्दा सत्थवाही कल्लं पाउप्पभाए दासचेडियं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—"गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिए! वहुवरस्स मुहसोहणियं उवणेहि!"

अर्थ—त्यारपछी ते भद्रा नामनी सार्थवाहीए काले (बीजे दिवसे) सूर्यनी प्रभा प्रगट थइ त्यारे (प्रातःकाळे) दासचेटी (दासी) ने बोलावी. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—"हे देवानुप्रिया! तुं जा. अने वहु—वरने माटे मुख धोवानुं पाणी लइ जा—तेमने आप."

मू०—तते णं सा दासचेडी भद्दाए एवं वुत्ता समाणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणेति, मुहधोवणियं

गेण्हति, गेण्हित्ता जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं जाव झियायमाणिं पासति, पासित्ता एवं वयासी–" किं णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओहयमणसंकप्पा झियाहिसि ?"

अर्थ—त्यारपछी ते दासचेटी (दासी) भद्राए आ प्रमाणे कही सती–कह्युं त्यारे तेणीए आ अर्थने 'तहत्ति' बहु सारुं, एम कही अंगीकार कर्यो अने मुख धोवानुं जळ ग्रहण कर्युं. ग्रहण करीने ज्यां वासगृह हतुं त्यां ते आवी. आवीने सुकुमालिका दारिकाने यावत् ध्यान करती (विचारमां पडी गयेली) जोइ. जोइने तेणीए आ प्रमाणे कह्युं–" हे देवानुप्रिया ! जेना मननो संकल्प हणायो छे एवी तुं शुं ध्यान (विचार) करे छे ?

मू०–तते णं सा सूमालिया दारिया तं दासचेडीयं एवं वदासी–" एवं खलु देवाणुप्पिए ! सागरए दारए मम सुहपसुत्तं जाणित्ता मम पासाओ उट्ठेति, उट्ठित्ता वासघरदुवारं अवगुंडति, जाव पडिगए, ततो अहं मुहुत्तंतरस्स जाव विहाडियं पासामि, गए णं से सागरए त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायामि ।"

अर्थ—त्यारे ते सुकुमालिका दारिकाए ते दासचेटिकाने आ प्रमाणे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिया ! सागर दारक मने सुखे सुतेली जाणीने मारा पडखामांथी उठ्यो. उठीने तेणे वासगृहनुं द्वार उघाड्युं, यावत् ते पाछो गयो. त्यारपछी एक मुहूर्त्त पछी जागीने में यावत् वासगृहनुं द्वार उघाडेलुं जोयुं. तेथी ते सागर गयो एम जाणीने हणा-

येला मनना संकल्पवाळी हुं यावत् ध्यान (विचार) करुं छुं ”

मू०—तते णं सा दासचेडी सूमालियाए दारियाए एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरदत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेएइ !

अर्थ—त्यारपछी ते दासचेटी सुकुमालिका दारिका पासेथी आ अर्थ (वृत्तांत) सांभळीने ज्यां सागरदत्त सार्थवाह हतो, त्यां आवी. आवीने तेणीए सागरदत्तने ते अर्थ (वृत्तांत) जणाव्यो—कह्यो.

मू०—तते णं से सागरदत्ते दासचेडीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जेणेव जिणदत्तसत्थवाहगिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जिणदत्तं सत्थवाहं एवं वदासी—“ किं णं देवाणुप्पिया! एवं जुत्तं वा पत्तं वा कुलाणुरूवं वा कुलसरिसं वा? जं णं सागरदारए सूमालियं दारियं अदिट्ठदोसं पइवयं (दोसवडियं) विप्पजहाय इहमागतो ” बहूहिं खिज्जणयाहि य रूंटणियाहि य उवालभति !

अर्थ—ते वखते ते सागरदत्त सार्थवाह दासचेटीनी पासेथी आ अर्थ सांभळीने हृदयमां धारीने तत्काळ क्रोध पाम्यो अने ज्यां जिनदत्त सार्थवाहनुं घर हतुं, त्यां आव्यो. आवीने तेणे जिनदत्त सार्थवाहने आ प्रमाणे कह्युं—“ हे देवानुप्रिय !

शुं आ योग्य छे ? प्राप्त छे ? वेपारनी जेम कुळने योग्य छे ? के रत्नना वेपारनी जेम कुळने सदृश छे ? के जेथी सागर पुत्र सुकुमालिका दारिका के जेनो दोष जोवामां आव्यो नथी अने जे पतिव्रता छे (जेने दोषमां पडेली जोइ नथी) तेने तजीने अहीं आव्यो छे ?" एम कही घणी खेदयुक्त क्रियाए करीने तथा रुदननी क्रियाए करीने तेने (अथवा कर्मने) तेणे उपालंभ–ठपको आप्यो.

मू०–तए णं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरे दारए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सागरयं दारयं एवं वदासी–"दुट्ठु णं पुत्ता ! तुमे कयं सागरदत्तस्स गिहाओ इहं हव्वमागते, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता ! एवमवि गते सागरदत्तस्स गिहे"।

अर्थ—ते वखते जिनदत्त सार्थवाह सागरदत्त सार्थवाह पासेथी आ अर्थ (वृत्तांत) सांभळी ज्यां सागरपुत्र हतो, त्यां आव्यो. आवीने तेणे सागरपुत्रने आ प्रमाणे कह्युं–"हे पुत्र ! तें आ घणुं खोटुं कर्युं के तुं सागरदत्तना घरथकी अहीं तत्काळ आवतो रह्यो. तो आ प्रमाणे थया छतां पण हे पुत्र ! तुं हजी पण सागरदत्तने घेर जल्दी जा."

मू०–तते णं से सागरए जिणदत्तं एवं वदासी–"अवि यातिं अहं ताओ ! गिरिपडणं वा तरुपडणं वा मरुप्पवायं वा जलप्पवेसं वा जलणप्पवेसं वा विसभक्खणं वा वेहाणसं वा सत्थोवाडणं वा गिद्धपिट्ठं वा पव्वज्जं वा विदेसगमणं वा अब्भुवगच्छिज्जामि, नो खलु अहं सागरदत्तस्स गिहं गच्छिज्जा"।

अर्थ—त्यारे ते सागरपुत्रे पोताना पिता जिनदत्तने आ प्रमाणे कह्युं-"हे पिता ! जो के हुं निश्चे गिरिपतनने[1] अंगीकार करुं, वृक्षपतनने, मरु (निर्जल प्रदेश) ना प्रपातने, जळप्रवेशने, अग्निप्रवेशने, विषभक्षणने, वैहानसने, शस्त्रना विदारणने, गृध्रपृष्ठने[2], दीक्षाने अथवा परदेश गमनने हुं अंगीकार करुं; परंतु निश्चे हुं सागरदत्तने घेर नहीं जाउं."

मू०—तते णं से सागरदत्ते सत्थवाहे कुड्डंतरिए सागरस्स एयमट्ठं निसामेति, निसामित्ता लज्जिए विलेपविट्ठे जिणदत्तस्स गिहातो पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सुकुमालियं दारियं सद्दावेइ, सद्दावित्ता अंके निवेसेइ, निवेसित्ता एवं वदासी—

अर्थ—ते वखते ते सागरदत्त सार्थवाहे भींतने आंतरे रहेलो होवाथी सागरपुत्रनो आ अर्थ (वृत्तांत) सांभळ्यो. सांभळीने (जाणे के मने कांइ भूमि मार्ग आपे तो) हुं विलमां (भूमिमां) प्रवेश करी जाउं एम लज्जा पाम्यो सतो जिनदत्त सार्थवाहना घरमांथी नीकळ्यो. नीकळीने ज्यां पोतानुं घर हतुं, त्यां आव्यो. आवीने तेणे सुकुमालिका दारिकाने बोलावी. बोलावीने पोताना खोळामां बेसाडी. बेसाडीने आ प्रमाणे कह्युं.

मू०—" किं णं तव पुत्ता ! सागरएणं दारएणं मुक्का ? अहं णं तुमं तस्स दाहामि जस्स णं

---

१ पर्वतपरथी पडवुं ते. ए प्रमाणे सर्वत्र जाणवुं. २ पोताना शरीरने स्मशान के जंगलमां छुटुं मुकी देवुं. तेथी भूतादिक के पशुओ तेने खाइ जाय. ३ हाथी विगेरेना मडदामां पेसीने गीध विगेरे पासे पोताना शरीरने भक्षण कराववुं ते.

तुमं इट्ठा जाव मणामा भविस्ससि " त्ति सूमालियं दारियं ताहिं इट्ठाहिं वग्गूहिं समासासेइ, समासासित्ता पडिविसज्जेइ ।

अर्थ—" हे पुत्री ! सागरपुत्रे तारो केम त्याग कर्यो (तारो त्याग कर्यो तेमां शुं थइ गयुं) ? हवे हुं तने तेवा पुरुषने आपीश के जेने तुं इष्ट यावत् मनने गमती थइश. " आ प्रमाणे तेणे सुकुमालिका दारिकाने तेवी इष्ट वाणीवडे आश्वासन आप्युं. आश्वासन आपीने विसर्जन करी (रजा आपी).

मू०—तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे अन्नया उप्पिं आगासतलगंसि सुहनिसण्णे रायमग्गं आलोएमाणे आलोएमाणे चिट्ठति ।

अर्थ—त्यारपछी ते सागरदत्त सार्थवाह एकदा पोताना प्रासाद उपर अगाशीतळने विषे सुखे बेठो सतो राजमार्गने जोतो जोतो रहेलो हतो.

मू०—तते णं से सागरदत्ते एगं महं दमगपुरिसं पासइ दंडिखंडनिवसणं खंडगमल्लगघडग-हत्थगयं मच्छियासहस्सेहिं जाव अन्निज्जमाणमग्गं ।

अर्थ—ते वखते ते सागरदत्ते मार्गमां एक मोटो द्रमकपुरुष (भीखारी) जोयो. तेणे सांधेला ककडानुं वस्त्र पहेर्युं हतुं, तेना हाथमां सरावलानो खंड तथा पाणीनो घडो हतो, यावत् हजारो मक्षिकाओ तेना मार्गने अनुसरती हती.

मू०—तते णं से सागरदत्ते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—" तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! एयं दमगपुरिसं विउलेणं असणपाणखादिमसादिमेणं पलोभेह, पलोभित्ता गिहं अणुप्पवेसेह, अणुप्पवेसित्ता खंडगमल्लगं खंडघडगं च से एगंते पाडेह, पाडित्ता अलंकारियकम्मं कारेह, कारित्ता ण्हायं कयबलिकम्मं जाव सव्वालंकारविभूसियं करेह, करित्ता मणुण्णं असणं पाणं खातिमं सातिमं भोयावेह, भोयावित्ता मम अंतियं उवणेह " ।

अर्थ—त्यारपछी ते सागरदत्त सार्थवाहे कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रियो ! तमे आ द्रमक (भीखारी) पुरुषने विपुल एवा अशन, पान, खादिम अने स्वादिमवडे लोभ पमाडो. लोभ पमाडीने आपणा घरमां प्रवेश करावो. प्रवेश करावीने तेनो सरावलानो खंड तथा घडानो खंड एकांते नांखी दो. नांखी दइने तेने अलंकार (शोभा)नुं[1] कर्म करावो. करावीने तेने स्नान करावी बलिकर्म (पूजा) करावी यावत् सर्व वस्त्र अने अलंकारवडे विभूषित करो. करीने मनोहर अशन, पान, खादिम अने स्वादिमनुं भोजन करावो. भोजन करावीने मारी पासे लावो."

१ हजामत विगेरे.

मू०—तए णं कोडुंबियपुरिसा जाव पाडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव से दमगपुरिसे उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं दमगं असणं पाणं खातिमं सातिमं उवप्पलोभेंति, उवप्पलोभित्ता सयं गिहं अणुप्पवेसिंति, अणुप्पवेसित्ता तं खंडगमल्लगं खंडगघडगं च तस्स दमगपुरिसस्स एगंते एडेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषोए तेनी आज्ञा यावत् अंगीकार करी. अंगीकार करीने ज्यां ते द्रमक पुरुष हतो, त्यां आव्या, आवीने ते द्रमक पुरुषने अशन, पान, खादिम अने स्वादिमवडे लोभ पमाड्यो. लोभ पमाडीने तेने पोताना घरमां प्रवेश कराव्यो. प्रवेश करावीने ते द्रमक पुरुषनी पासे ते सरावळाना खंडने तथा घडाना खंडने एकांते त्याग कराववा लाग्या.

मू०— तते णं से दमगे तं खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि य एगंते एडिज्जमाणंसि महया महया सद्देणं आरसति ।

अर्थ—त्यारे ते द्रमक ते सरावळानो खंड तथा घडानो खंड एकांतमां दूर कराते सते मोटा मोटा शब्दवडे पोकार करवा लाग्यो.

मू०—तए णं से सागरदत्ते तस्स दमगपुरिसस्स तं महया महया आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी—" किं णं देवाणुप्पिया ! एस दमगपुरिसे महया महया

सद्देणं आरसति ? ” ।

अर्थ—त्यारपछी ते सागरदत्त सार्थवाहे ते द्रमक पुरुषना ते मोटा मोटा आरसित शब्दने सांभळी हृदयमां धारी कौटुंबिक पुरुषोने आ प्रमाणे कह्युं—“ हे देवानुप्रियो ! आ द्रमक पुरुष मोटा मोटा शब्दवडे केम आरडे छे–पोकार करे छे ? ”

मू०–तते णं ते कोडुंबियपुरिसा एवं वदासी—“ एस णं सामी ! तंसि खंडमल्लगंसि खंड-घडगंसि एगंते एडिज्जमाणंसि महया महया सद्देणं आरसइ ” ।

अर्थ—ते वखते ते कौटुंबिक पुरुषो आ प्रमाणे बोल्या के—“ हे स्वामी ! आ द्रमक पोताना ते सरावळाना खंडने अने घडाना खंडने एकांतमां मूकावते सते मोटा मोटा शब्दवडे आरडे छे. ”

मू०–तते णं से सागरदत्ते सत्थवाहे ते कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी—“ मा णं तुब्भे देवा-णुप्पिया ! एयस्स दमगस्स तं खंडं जाव एडेह, पासे ठवेह, जहा णं पत्तियं भवति ” ते वि तहेव ठविंति ।

१ आरडवाना—पोकारना.

अर्थ—त्यारपछी ते सागरदत्त सार्थवाहे ते कौटुंबिक पुरुषोने आ प्रमाणे कह्युं.—"हे देवानुप्रियो! तमे ते द्रमकना ते खंडने यावत् त्याग न करावो. तेनी पासे ज स्थापन करो (राखो), के जेथी तेने प्रतीति थाय (विश्वास थाय)." ते सांभळी तेओए पण ते ज प्रमाणे स्थापन कर्युं.

मू०—तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तस्स दमगस्स अलंकारियकम्मं करेंति, करित्ता सयपागसहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भंगेंति, अब्भंगिए समाणे सुरभिगंधुव्वट्टणेणं गायं उव्वट्टेंति, उव्वट्टित्ता उसिणोदगगंधोदएणं सीतोदगेणं ण्हाणेंति, ण्हाणित्ता पम्हलसुकुमालगंधकासाईए गायाइं लूहेंति, लूहित्ता हंसलक्खणं पट्टसाडगं परिहेंति, परिहित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेंति, करित्ता विउलं असणं पाणं खातिमं सातिमं भोयावेंति, भोयावित्ता सागरदत्तस्स उवणेंति।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषोए ते द्रमकनुं अलंकारकर्म[1] कराव्युं. करावीने शतपाक[2] अने सहस्रपाक तेलवडे अभ्यंगन कर्युं. अभ्यंगन करीने सुवासित गंधद्रव्यना उद्वर्तन वडे (पीठीवडे) गात्र (शरीर) नुं उद्वर्तन कर्युं. उद्वर्तन करीने उष्णोदक, गंधोदक अने शीतोदकवडे तेने स्नान कराव्युं. स्नान करावीने सूक्ष्म (बारीक) अने सुकोमळ गंध-

१ हजामत विगेरे. २ सो सोनामहोर अथवा सो औषधोथी बनावेलुं तेल. एज प्रमाणे सहस्रपाकनुं पण जाणवुं.

काषाय वस्त्रवडे तेनुं शरीर लूछ्युं, लूछीने हंसलक्षण-हंसना चित्रवाळु जेवुं उज्वळ बारीक पट्टशाटक वस्त्र पहेराव्युं. पहेरावीने सर्व वेष अने अलंकारोवडे तेने विभूषित कर्यो. करीने विपुल एवा अशन, पान, खादिम अने स्वादिमनुं भोजन कराव्युं. भोजन करावीने सागरदत्त सार्थवाहनी पासे तेने लइ गया.

मू०—तए णं सागरदत्ते सूमालियं दारियं ण्हायं जाव सव्वालंकारविभूसियं करित्ता तं दमगपुरिसं एवं वदासी—" एस णं देवाणुप्पिया ! मम धूया इट्ठा, एयं णं अहं तव भारियत्ताए दलामि, भद्दियाए भद्दतो भविज्जासि ।

अर्थ—त्यारपछी सागरदत्त सार्थवाहे सुकुमालिका दारिकाने स्नान करावी यावत् सर्व अलंकारवडे विभूषित करीने द्रमक पुरुषने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रिय ! आ मारी पुत्री मने इष्ट छे. आने हुं तारी भार्यापणे तने आपुं छुं. आ कल्याणवाळीनो तुं कल्याणकारक थजे. "

मू०—तते णं से दमगपुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं वासघरं अणुपविसति, सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिगंसि निवज्जइ ।

अर्थ—त्यारे ते द्रमक पुरुषे सागरदत्तनो आ अर्थ अंगीकार कर्यो. अंगीकार करीने सुकुमालिका दारिकानी साथे वासगृहमां (शयनगृहमां) गयो अने सुकुमालिका दारिकानी साथे एक शय्यामां सुतो.

मू०—तते णं से दमगपुरिसे सूमालियाए इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेति, सेसं जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठित्ता वासघराओ निग्गच्छाति, निग्गच्छित्ता खंड-मल्लगं खंडघडं च गहाय मारामुक्के विव काए जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए।

अर्थ—त्यारपछी ते द्रमक पुरुषे सुकुमालिका दारिकाना आ आवा प्रकारना अंगस्पर्शने अनुभव्यो. शेष सर्व सागर पुत्रनी जेम कहेवुं, यावत् ते द्रमक शय्यामांथी उठ्यो. उठीने वासगृहनी बहार नीकळ्यो. नीकळीने सरावळाना खंडने तथा घडाना खंडने ग्रहण करी मारवानी शाळा (कसाइखाना) थी अथवा मरणथी अथवा मारनार पुरुषथी मुक्त थयेला कागडानी जेम जे दिशामांथी प्रगट थयो (आव्यो) हतो, ते दिशामां चाल्यो गयो.

मू०—तते णं सा सूमालिया जाव 'गए णं से दमगपुरिसे त्ति' कट्टु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायति ॥ ११२ ॥

अर्थ—त्यारपछी क्षणांतरे जागेली ते सुकुमालिका यावत् 'ते द्रमक पुरुष गयो.' एम कही (जाणी) हणायेला मनना संकल्पवाळी सती यावत् ध्यान (विचार) करवा लागी. ११२.

मू०—तते णं सा भद्दा कल्लं पाउप्पभाए दासचेडिं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी, जाव

सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेदेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते भद्रा सार्थवाहीए काले (बीजे दिवसे) सूर्योदय थयो त्यारे दासचेटीने बोलावी. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं. इत्यादि यावत् सागरदत्त सार्थवाहने ते अर्थ (वृत्तांत) निवेदन कर्यो.

मू०—तते णं से सागरदत्ते तहेव संभंते समाणे जेणेव वासहरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं अंके निवेसेति, निवेसित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारे ते सागरदत्त सार्थवाह ते ज प्रमाणे संभ्रांत थयो सतो ज्यां वासगृह हतुं, त्यां आव्यो. आवीने सुकुमालिका दारिकाने खोळामां बेसाडी. बेसाडीने आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—" अहो णं तुमं पुत्ता ! पुरापोराणाणं जाव पच्चणुब्भवमाणी विहरसि, तं मा णं तुमं पुत्ता ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि, तुमं णं पुत्ता ! मम महाणसंसि विपुलं असणं पाणं खातिमं सातिमं जहा पुट्टिला जाव परिभाएमाणी विहराहि " ।

अर्थ—अहो पुत्री ! तुं पूर्वभवना आचरण करेला यावत् पापकर्मना फळने अनुभवती रहेली छे. तेथी हे पुत्री ! तुं हणायेला मनना संकल्पवाळी सती यावत् दुष्ट ध्यान (विचार) न कर. वळी हे पुत्री ! तुं मारा रसोडामां विपुल एवं

अशन, पान, खादिम अने स्वादिम हमेशां तैयार थाय छे. तेने पोडिलानी जेम श्रमण, साधु विगेरेने आपती सती (दान देती सती) रहे.

मू०—तते णं सा सूमालिया दारिया एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता महाणसंसि विपुलं असणं पाणं खातिमं सातिमं जाव दलमाणी विहरइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुकुमालिका दारिकाए ते अर्थ अंगीकार कर्यो. अंगीकार करीने रसोडाने विषे विपुल एवा अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने यावत् श्रमण, साधु विगेरेने देती सती रहेवा लागी.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एवं जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ तहेव समोसढाओ तहेव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे, तहेव जाव सूमालिया पडिलाभित्ता एवं वदासी—

अर्थ—ते काळे ते समये गोपालिका नामनी बहुश्रुत आर्या एज प्रमाणे जेम तेतलिज्ञात नामना अध्ययनने विषे सुव्रता साध्वीनो अधिकार कह्यो हतो ते ज प्रमाणे समवसरी, ते ज प्रमाणे तेना संघाटके यावत् सुकुमालिकाने घेर प्रवेश

१ बे साध्वीओ

कर्यो, अने ते ज प्रमाणे यावत् सुकुमालिकाए तेमने प्रतिलाभ आपीने (भात पाणी वहोरावीने) आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—" एवं खलु अज्जाओ ! अहं सागरस्स अणिट्ठा जाव अमणामा, नेच्छइ णं सागरए मम नामं वा जाव परिभोगं वा, जस्स जस्स वि य णं दिज्जामि तस्स तस्स वि य णं अणिट्ठा जाव अमणामा भवामि, तुब्भे य णं अज्जाओ ! बहुनायाओ एवं जहा पुट्टिला जाव उवलद्धे जे यां अहं सागरस्स दारगस्स इट्ठा कंता जाव भवेज्जामि "।

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे हे आर्याओ ! हुं सागरने अनिष्ट छुं यावत् तेना मनने हुं गमती नथी. तेथी सागर मारा नामने पण इच्छतो नथी, यावत् परिभोगने तो क्यांथी ज इच्छे ? त्यारपछी मने जेने जेने देवामां आवी, तेने तेने पण हुं अनिष्ट थइ यावत् तेना मनने पण अणगमती थइ छुं. तो हे आर्याओ ! तमे घणा ज्ञानवाळां छो, ए प्रमाणे जेम पोट्टीलाए कह्युं हतुं तेम सर्व कहेवुं, यावत् तमे मंत्रतंत्रादिकना आम्नायने पामेला छो तेथी तमे एवो उपाय कहो के जेथी हुं सागर दारकने इष्ट, कांत यावत् थाउं. "

मू०—अज्जाओ तहेव भणंति, तहेव साविया जाया, तहेव चिंता, तहेव सागरदत्तं सत्थवाहं आपुच्छति, जाव गोवालियाणं अंतिए पव्वइया ।

अर्थ—त्यारे ते आर्याओए कह्युं के—" हे देवानुप्रिया ! आवी वात पण अमारे सांभळवी कल्पे नहीं, तो पछी ते संबंधी उपदेश देवो तो क्यांथी ज कल्पे. " विगेरे कही तेणीने ते ज प्रमाणे केवलीभाषित धर्म कह्यो. ते ज प्रमाणे ते श्राविका थइ, ते ज प्रमाणे तेणीए चिंता करी, अने ते ज प्रमाणे तेणीए पोताना पिता सागरदत्त सार्थवाहनी रजा लीधी. यावत् गोपालिका गुरुणींनी पासे तेणीए दीक्षा ग्रहण करी. ए सर्व हकीकत पोट्टिलाना अधिकार प्रमाणे जाणवी.

मू०—तते णं सा सूमालिया अज्जा जाया ईरियासमिया जाव बंभयारिणी बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम जाव विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुकुमालिका आर्या थइ. ईर्यासमितिने पाळती यावत् ब्रह्मचर्यने धारण करती घणा उपवास, छठ अने अट्ठम विगेरे तप करती सती यावत् विचरवा लागी—रही.

मू०—तते णं सा सूमालिया अज्जा अन्नया कयाइ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—" इच्छामि णं अज्जाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी चंपाओ बाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं सूराभिमुही आयावेमाणी विहरित्तए ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुकुमालिका आर्या एकदा कदाचित् ज्यां गोपालिका आर्या (गुरुणी) हतां, त्यां आवी. आवीने तेमने वंदना करी, नमस्कार कर्या. वांदी नमस्कार करी आ प्रमाणे कह्युं–"हे आर्या (गुरुणी)! हुं तमारी आज्ञा पामी सती चंपा नगरीनी बहार सुभूमिभाग नामना उद्याननी बहु दूर नहीं तेम ज बहु नजीक नहीं एवा समीप भागने विषे छठ छठ्ठना निरंतर तपवडे सूर्यनी सन्मुख आतापना लेती सती विचरवाने इच्छुं छुं."

मू०—तते णं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं एवं वदासी–"अम्हे णं अज्जे! समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ, नो खलु अम्हं कप्पति बाहिया गामस्स जाव सण्णिवेसस्स वा छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरित्तए, कप्पति णं अम्हं अंतो उवस्सयस्स वतिपरिक्खित्तस्स संघाडिबद्धियाए णं समतलपतियाए आयावित्तए"।

अर्थ—त्यारे ते गोपालिका आर्या (गुरुणी) ए सुकुमालिका आर्याने आ प्रमाणे कह्युं–"हे आर्या! आपणे साध्वीओ निर्ग्रंथ (बाह्य आभ्यंतर परिग्रह रहित) छीए, ईर्यासमितिवाळी छीए, यावत् गुप्त ब्रह्मचारिणी छीए. तेथी आपणने गामनी बहार यावत् संनिवेशनी बहार छठ छठनो निरंतर तप करी यावत् विचरवुं कल्पे नहीं. परंतु फरती वृति (वाड) के वंडी विगेरे वडे सहित एवा उपाश्रयनी अंदर ज संघाडी (वस्त्र) वडे कायाने ढांकीने अथवा साध्वीओना परिवारनी साथे रहीने पृथ्वीपर पगना तळीया सरखा राखीने आतापना लेवी कल्पे छे."

मू०-तते णं सा सूमालिया गोवालियाए अज्जाए एयमट्ठं नो सद्दहति, नो पत्तियइ, नो रोएति, एयमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं जाव विहराति ॥ ११२ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते सुकुमालिकाने ते गोपालिका आर्या (गुरुणी) ना आ अर्थ (वात) उपर श्रद्धा थइ नहीं, प्रतीति थइ नहीं-विश्वास आव्यो नहीं, अने रुचि पण थइ नहीं. आ अर्थ (वात) उपर श्रद्धा नहीं करती, प्रतीति नहीं करती अने रुचि नहीं करती ते सुकुमालिका सुभूमिभाग नामना उद्याननी अति समीपे नहीं अने अति दूर नहीं एवा नजीक भागमां निरंतर छठ छठनो तप करती सती (अने आतापना लेती सती) विचरवा लागी. ११२.

मू०-तत्थ णं चंपाए नयरिए ललिया नाम गोट्ठी परिवसातिनरवइदिण्णवि(प)यारा अम्मापिइनिययनिप्पिवासा वेसविहारकयनिकेया नाणाविहअविणयप्पहाणा अड्ढा जाव अपरिभूया ।

अर्थ—ते चंपा नगरीमां ललिता (क्रीडामां ज रहेनारी) नामनी एक गोष्ठी (टोळी) वसती हती. तेने राजाए इच्छा प्रमाणे विचरवानी अनुज्ञा (छुट) आपी हती, ते टोळी माता, पिता, स्वजन विगेरेनी अपेक्षा रहित हती-तेमनी

१ पुरुषोनो समूह.

आज्ञा मानती नहोती, ते वेश्याना घरमां निवास करनारी हती, ते विविध प्रकारनो अविनय करवामां तत्पर हती (उद्धत हती), तथा आढय–धनवान हती, यावत् कोइथी पराभव न पामे तेवी हती–तेनो कोइ पराभव करी शकतुं नहीं.

मू०—तत्थ णं चंपाए नयरीए देवदत्ता नामं गणिया होत्था सुकुमाला जहा अंडणाए ।

अर्थ—ते चंपा नगरीने विषे एक देवदत्ता नामनी गणिका (वेश्या) हती. ते अति सुकोमळ हती, जेम अंडक नामना ज्ञात अध्ययनमां वेश्यानुं वर्णन कर्युं छे, तेवुं अहीं जाणवुं.

मू०—तते णं तीसे ललियाए गोट्ठीए अन्नया पंच गोट्ठिल्लगपुरिसा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते ललिता नामनी गोष्ठीमांथी एकदा पांच गोष्ठीक पुरुषो देवदत्ता गणिकानी साथे सुभूमिभाग नामना उद्याननी लक्ष्मी (शोभा) नो अनुभव करता सता विचरवा लाग्या.

मू०—तत्थ णं एगे गोट्ठिल्लगपुरिसे देवदत्तं गणियं उच्छंगे धरति, एगे पिट्ठओ आयवत्तं धरेइ, एगे पुप्फपूरयं रएइ, एगे पाए रएइ, एगे चामरुक्खेवं करेइ ।

अर्थ—तेमां एक गोष्ठिक पुरुषे देवदत्ता गणिकाने पोताना खोळामां बेसाडी, एक पुरुषे पाछळ रही तेनापर छत्र

धारण कर्युं, एक पुरुषे तेणीना मस्तकपर पुष्पनो शेखर रच्यो, एक पुरुष तेणीना पादने अळतावडे रंगवा लाग्यो तथा एक पुरुष तेणीने चामर वींझवा लाग्यो.

मू०—तते णं सा सूमालिया अज्जा देवदत्तं गणियं तेहिं पंचहिं गोट्ठिल्लपुरिसेहिं सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणिं पासति, पासित्ता इमेयारूवे संकप्पे समुप्पज्जित्था—

अर्थ—ते वखते ते सुकुमालिका साध्वीए देवदत्ता गणिकाने ते पांच गोष्ठिक पुरुषोनी साथे उदार मनुष्य संबंधी कामभोगने भोगवती जोइ. जोइने तेणीने आवा प्रकारनो संकल्प यावत् उत्पन्न थयो—

मू०—" अहो ! णं इमा इत्थिया पुरा पोराणाणं कम्माणं जाव विहरइ, तं जति णं केइ इमस्स सुचरियस्स तवनियमबंभचेरवासस्स कल्लाणे फलवित्तिविसेसे अत्थि, तो णं अहमवि आगमिस्सेणं भवग्गहणेणं इमेयारूवाइं उरालाइं जाव विहरिज्जामि " त्ति कट्टु नियाणं करेति, करित्ता आयावणभूमिओ पच्चोरुहति ॥ ११४ ॥

अर्थ—" अहो ! आ स्त्री पूर्वे आचरेला शुभ कर्मना फळने अनुभवती विचरे छे. तो जो में सारी रीते आचरण करातां आ तप, नियम अने ब्रह्मचर्यनो कांइपण कल्याणकारक फळवृत्तिनो विशेष होय, तो हुं पण आगामी (आवता) भवने

विषे आवा प्रकारना उदार कामभोगने भोगवती यावत् विचरुं." आ प्रमाणे कहीने तेणीए नियाणुं कर्युं. करीने आतापनानी भूमिकाथी ते पाछी फरी. ११४

मू०—तते णं सा सूमालिया अज्जा सरीरबउसा जाया यावि होत्था, अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवेइ, पाए धोवेइ, सीसं धोवेइ, मुहं धोवेइ, थणंतराइं धोवेइ, कक्खंतराइं धोवेइ, गोज्झंतराइं धोवेइ, जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएति, तत्थ वि य णं पुव्वामेव उदएणं अब्भुक्खइत्ता ततो पच्छा ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएति।

अर्थ—त्यारपछी ते सुकुमालिका आर्या (साध्वी) शरीरबकुशा[1] थइ. तेथी ते वारंवार हाथ धोवा लागी, पग धोवा लागी, मस्तक धोवा लागी, मुख धोवा लागी, स्तनांतर (छाती) धोवा लागी, कक्षांतर (काखली–बगल) धोवा लागी, गुह्यांतर (गुप्त भाग) धोवा लागी. तथा जे ठेकाणे स्थान (उभा रहेवानुं अथवा कायोत्सर्गनुं) शय्या (सुवानुं) के नैषेधिकी (स्वाध्याय विगेरे) करती हती, त्यां सर्वत्र प्रथम जळवडे पृथ्वीने छांटी (शुद्ध करी) त्यारपछी त्यां स्थानने शय्याने के नैषेधिकीने करती हती. (अर्थात् बेसती हती, सुती हती के स्वाध्याय करती हती).

१—शरीरनी शोभा करवी ते शरीरबकुश चारित्र अने उपकरणनी शोभा करवी ते उपकरणबकुश नामनुं चारित्र. एम बकुश चारित्र बे प्रकारनुं छे.

मू०—तते णं तातो गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं एवं वदासी—" एवं खलु देवाणुप्पिए! अज्जे! अम्हे समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव बंभचेरधारिणीओ, नो खलु कप्पति अम्हं सरीरबाउसियाए होत्तए, तुमं च णं अज्जे! सरीरबाउसिया अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवसि जाव चेदेसि, तं तुमं णं देवाणुप्पिए! तस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पडिवज्जाहि "।

अर्थ—त्यारपछी ते गोपालिका आर्या (गुरुणी)ए सुकुमालिका आर्याने आ प्रमाणे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिया! आर्या! आपणे साध्वीओ निर्ग्रंथ (बाह्य आभ्यंतर परिग्रह रहित) छीए, ईर्यासमितिवाळी छीए, यावत् ब्रह्मचर्यने धारण करनारी छीए. तेथी आपणे शरीरबकुशा थवुं कल्पे नहीं. अने हे आर्या! तुं तो शरीरबकुशा थइने वारंवार हाथ धोवे छे, यावत् पाणी छांटीने स्थानादिक करे छे. तेथी हे देवानुप्रिया! तुं ते बकुशचारित्ररूप स्थाननी आलोचना कर, यावत् प्रायश्चित्तने अंगीकार कर. "

मू०—तते णं सूमालिया गोवालियाणं अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाइ, नो परिजाणति, अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी विहरति।

अर्थ—त्यारे सुकुमालिका साध्वीए ते गोपालिका आर्याना आ अर्थ उपर आदर कर्यो नहीं,तेने जाएयो (सांभळ्यो पण) नहीं. आदर नहीं करती अने नहीं जाणती सती विचरवा लागी.

मू०—तए णं ताओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं अभिक्खणं अभिक्खणं अभिहीलंति जाव परिभवंति, अभिक्खणं अभिक्खणं एयमट्ठं निवारेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते आर्याओ सुकुमालिका आर्यानी वारंवार हीलना करवा लागी, यावत् पराभव करवा लागी. तथा वारंवार आ अर्थ (अयोग्य आचार) ने निवारवा लागी.

मू०—तते णं तीसे सूमालियाए समणीहिं निग्गंथीहिं हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—

अर्थ—त्यारे श्रमणी निर्ग्रंथीओए आ प्रमाणे हीलना कराती यावत् निवारण कराती ते सुकुमालिकाने आवो अध्यवसाय (विचार) यावत् उत्पन्न थयो.—

मू०—" जया णं अहं अगारवासमज्झे वसामि, तया णं अहं अप्पवसा, जया णं अहं मुंडे भवित्ता पव्वइया, तया णं अहं परवसा, पुव्विं च णं ममं समणीओ आढायंति, इयाणिं नो

आढंति, तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभाए गोवालियाणं अंतियाओ पडिनिक्खमित्ता पाडिएक्कं
उवस्सगं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए " त्ति कट्टु एवं संपेहेति, संपेहित्ता कल्लं पाउप्पभाए गोवा-
लियाणं अज्जाणं अंतियाओ पडिनिक्खमति. पडिनिक्खमित्ता पाडिएक्कं उवस्सगं उवसंपज्जित्ता
णं विहरति ।

अर्थ—" ज्यारे हुं गृहस्थावासने विषे वसती हती, त्यारे हुं पोताने वश–स्वतंत्र हती अने ज्यारे हुं मुंड थइने प्रव्रजित थइ, त्यारे हुं परवश थइ. पहेलां आ सर्व साध्वीओ मारो आदर करती हती, हमणां आदर करती नथी. तेथी हवे मारे काले प्रातःकाळे आ गोपालिका आर्यानी पासेथी नीकळीने जूदा उपाश्रयने अंगीकार करी विचरवुं (रहेवुं) श्रेयस्कर छे." आ प्रमाणे तेणीए विचार कर्यो, विचार करीने काले (बीजे दिवसे) प्रातःकाळे गोपालिका आर्यानी पासेथी नीकळी गइ, नीकळीने जूदो उपाश्रय अंगीकार करीने विचरवा लागी (रही).

मू०–तते णं सा सूमालिया अज्जा अणोहट्टिया अनिवारिया सच्छंदमई अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवेइ जाव चेएति, तत्थ वि य णं पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला कुसीलविहारी संसत्ता संसत्तविहारी बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणति, अद्धमा-

सियाए संलेहणाए तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा ईसाणे कप्पे अण्णयरंसि विमाणंसि देवगणियत्ताए उववण्णा, तत्थेगतियाणं देवीणं नव पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, तत्थ णं सूमालियाए देवीए नव पलिओवमाइं ठिती पन्नत्ता ॥ ११५ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते सुकुमालिका हाथ पकडीने अकार्यथी अटकावनार कोइ नहीं होवाथी अने तुं आवुं कार्य न कर एम वचनवडे पण कोइ निवारण करनार नहीं होवाथी स्वेच्छाचारी थइने वारंवार हाथ धोवा लागी, यावत् पाणी छांटीने स्थानादिक करवा लागी. तेमां पण ते पासत्था थइ एटले के ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी पासे रहेनारी, पण तेने यथार्थ पाळे नहीं एवी थइ, तथा पासत्थाना विहारवाळी एटले पासत्थाओ जेवी रीते रहे तेवी रीते रहेनारी थइ. तथा ओसन्ना (अवसन्ना) एटले ज्ञान, दर्शन अने चारित्रना क्रियाअनुष्ठानने विषे आळसु थवाथी सीदाता चारित्रवाळी थइ, अने ओसन्नविहारवाळी थइ, तथा कुशीला एटले अनाचार सेवनारी थइ, अने कुशीलियाना विहारवाळी थइ. तथा संसक्ता एटले कोइवार संवेगीना गुणना संबंधथी अने कोइवार पासत्थादिकना दोषना संबंधथी मिश्र थइ, तेथी ऋद्धिगारव, रसगारव अने सातागारवमां लीन थइ, अने संसक्तविहारवाळी थइ. आ रीते घणा वर्षो चारित्र पर्यायने पाळी छेवट अर्ध मासनी संलेखना (अनशन) करी ते अयोग्य आचरणना स्थाननी आलोचना तथा प्रतिक्रमण कर्या विना ज काळ (मृत्यु) समये काळ करीने (मरीने) ईशानकल्प नामना बीजा देवलोकमां कोइक विमानमां देवनी गणिकापणे

(अपरिगृहीता देवीपणे) उत्पन्न थइ. त्यां केटलीक देवीओनी नव पल्योपमनी स्थिति (आयुष्य) कहेली छे. (होय छे) ते प्रमाणे ते सुकुमालिका देवीनी पण नव पल्योपमनी स्थिति कहेली छे. अर्थात् नवपल्योपमनी स्थितिवाळी थइ. ११५.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नामं नगरे होत्था । वन्नओ ।

अर्थ—ते काळे ते समये आ ज जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे भरतक्षेत्रने विषे पंचालदेशने विषे कांपील्यपुर नामनुं नगर हतुं. तेनुं वर्णन कहेवुं.

मू०—तत्थ णं दुवए नामं राया होत्था, वन्नओ । तस्स णं चुलणी देवी, धट्ठज्जुण्णे कुमारे जुवराया ।

अर्थ—त्यां (कांपील्य नगरमां) द्रुपद नामे राजा हतो. तेनुं वर्णन कहेवुं. ते राजाने चुलणी नामनी देवी—पट्टराणी हती, तथा तेमने धृष्टद्युम्न नामनो कुमार युवराज हतो.

मू०—तए णं सा सूमालिया देवी ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं जाव चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नयरे दुपयस्स रण्णो चुलणीए देवीए कुच्छिं-

सि दारियत्ताए पच्चायाया, तते णं सा चुलणी देवी नवण्हं मासाणं जाव दारियं पयाया ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुकुमालिका देवी ते देवलोकथी आयुष्यना क्षये यावत् चवीने आ ज जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे भरतक्षेत्रने विषे पंचाल देशमां कांपील्यपुर नामना नगरमां द्रुपद राजानी चुलणी नामनी देवीनी कुक्षिने विषे पुत्रीपणे उत्पन्न थइ. त्यारपछी ते चुलणी देवीए नव मास पूर्ण थये यावत् पुत्रीने जन्म आप्यो.

मू–तते णं तीसे दारियाए निव्वत्तबारसाहियाए इमं एयारूवं नामधेज्जं जम्हा णं एसा दारिया दुवयस्स रण्णो धूया चुलणीए देवीए अत्तया तं होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधिज्जे दोवई, तए णं तीसे अम्मापियरो इमं एयारूवं गुण्णं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करिंति दोवती ।

अर्थ—त्यारपछी बार दिवस व्यतीत थया त्यारे ते दारिका (पुत्री)नुं आ आवा प्रकारनुं नाम कर्युं, के जेथी करीने आ दारिका द्रुपद राजानी पुत्री अने चुलणी देवीनी आत्मजा[1] छे, तेथी करीने अमारी आ दारिकानुं नाम द्रौपदी हो. त्यारपछी तेणीना मातापिताए आ आवा प्रकारनुं गौण (गुणवाळुं) अने गुणथी बनेलुं द्रौपदी एवुं नाम पाडयुं.

मू०–तते णं सा दोवई दारिया पंचधाइपरिग्गहिया जाव गिरिकंदरमल्लीण इव चंपगलया

१ पोताथी उत्पन्न थयेली.

निवायनिव्वाघायंसि सुहंसुहेणं परिवड्ढइ।

अर्थ—त्यारपछी ते द्रौपदी दारिका पांच धात्रीए ग्रहण करी थकी यावत् पर्वतनी गुफामां रहेली चंपकलतानी जेम वायु विगेरेना व्याघात रहित सुखे सुखे करीने वृद्धि पामवा लागी.

मू०—तते णं सा दोवई रायवरकन्ना उम्मुक्कबालभावा जाव उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था।

अर्थ—त्यारपछी ते द्रौपदी नामनी श्रेष्ठ राजकन्या बाळपणाथी मुक्त थइ यावत् उत्कृष्ट शरीरवाळी पण थइ.

मू०—तते णं तं दोवतिं रायवरकन्नं अण्णया कयाई अंतेउरियाओ ण्हायं जाव विभूसियं करेंति, करित्ता दुवयस्स रण्णो पायवंदिउं पेसंति।

अर्थ—त्यारपछी ते द्रौपदी नामनी श्रेष्ठ राजकन्याने एकदा कदाचित् अंतःपुरनी राणीओए स्नान कराव्युं, यावत् विभूषित करी, करीने द्रुपद राजाना पादने वंदन करवा मोकली.

मू०—तते णं सा दोवती रायवरकन्ना जेणेव दुवए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दुवयस्स रण्णो पायग्गहणं करेति।

अर्थ—त्यारे ते द्रोपदी नामनी श्रेष्ठ राजकन्या ज्यां द्रुपद राजा हता, त्यां आवी. आवीने द्रुपद राजाना पादग्रहण कर्या—पगे लागी.

मू०—तए णं से दुवए राया दोवतिं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता दोवईए रायवरकन्नाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवइं रायवरकन्नं एवं वदासी—

अर्थ—त्यारे ते द्रुपद राजाए ते द्रौपदी दारिकाने पोताना खोळामां बेसाडी, बेसाडीने द्रौपदी नामनी श्रेष्ठ राजकन्याना रूप, यौवन अने लावण्यवडे विस्मय पामी द्रौपदी नामनी श्रेष्ट राजकन्याने आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—" जस्स णं अहं पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि, तत्थ णं तुमं सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि, तते णं ममं जावजीवाए हिययडाहे भविस्सइ, तं णं अहं तव पुत्ता ! अज्जयाए सयंवरं विरयामि, अज्जयाए णं तुमं दिण्णं सयंवरा जे णं तुमं सयमेव रायं वा जुवरायं वा वरेहिसि, से णं तव भत्तारे भविस्सइ " त्ति कट्टु ताहिं इट्ठाहिं जाव आसासेइ, आसासित्ता पडिविसज्जेइ ॥ ११६ ॥

अर्थ—" हे पुत्री ! हुं पोते ज तने कोइ राजाने के युवराजने भार्यापणे आपुं, तो तुं त्यां सुखी थाय के दुःखी थाय, तेथी मने जावजीव (जीवन पर्यंत) हृदयनो दाह थाय. तेथी करीने हे पुत्री ! आजथी आरंभीने हुं तारो स्वयंवर रचुं, आजथी तने में स्वयंवरमां आपी छे, तेथी तुं तारी जाते जे कोइ राजाने के युवराजने वरीश, ते तारो भर्ता

थशे." आ प्रमाणे कही तेवी इष्ट वाणीवडे यावत् ते पुत्रीने आश्वासन आप्युं, आश्वासन आपीने तेणीने विदाय करी–रजा आपी. ॥ ११६ ॥

मू०–तते णं से दुवए राया दूयं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी–गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! बारवइं नयरिं, तत्थ णं तुमं कण्हं वासुदेवं समुद्दविजयपामोक्खे दस दसारे बलदेवपामुक्खे पंच महावीरे उग्गसेणपामोक्खे सोलस रायसहस्से पज्जुण्णपामुक्खाओ अध्धुट्ठाओ कुमारकोडीओ संबपामोक्खाओ सट्ठिं दुद्दंतसाहस्सीओ वीरसेणपामुक्खाओ इक्कवीसं वीरपुरिससाहस्सीओ महसेणपामोक्खाओ छप्पन्नं बलवगसाहस्सीओ अन्ने य बहवे राईसरतलवरमाडंबियकोडुंबियइब्भसिट्ठिसेणावइसत्थवाहपभिइओ करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं अंजलिं मत्थए कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेहि, वद्धावित्ता एवं वयाहि–

अर्थ—त्यारपछी ते द्रुपद राजाए दूतने बोलाव्यो. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं.—"हे देवानुप्रिय ! तुं द्वारवती (द्वारका) नगरीमां जा. त्यां तुं कृष्ण वासुदेवने, समुद्रविजय विगेरे दश दशारने, बळदेव विगेरे पांच मोटा वीरोने, उग्रसेन विगेरे सोळ हजार राजाओने, प्रद्युम्न विगेरे साडा त्रण करोड कुमारोने, सांब विगेरे साठ हजार दुर्दान्त (उद्धत–

बळवान) कुमारोने, वीरसेन विगेरे एकवीश हजार वीर पुरुषोने, महासेन विगेरे छप्पन हजार बळवान वर्गने तथा बीजा घणा राजा, ईश्वर, तलवर, माडंबिक, कौटुंबिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति अने सार्थवाह विगेरेने बे हाथ जोडी दशे नखो साथे राखी मस्तकपर फेरवी मस्तकपर अंजळी करी जय अने विजयना शब्दवडे वधावजे. वधावीने आ प्रमाणे कहेजे.

मू०—एवं खलु देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए चुलणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुणकुमारस्स भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सइ, तं णं तुब्भे देवाणुप्पिया! दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह ।”

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! कांपील्यपुर नगरमां द्रुपद राजानी पुत्री, चुलणी देवीनी आत्मजा अने धृष्टद्युम्न कुमारनी बहेन द्रौपदी नामनी श्रेष्ठ राजकन्यानो स्वयंवर थवानो छे. तेथी हे देवानुप्रियो ! तमे सर्वे द्रुपद राजा उपर अनुग्रह (कृपा) करीने काळनो विलंब कर्या विना ज (योग्य काळे) कांपील्यपुर नगरने विषे समवसरो—पधारो.”

मू०—तए णं से दूए करयल जाव कट्टु दुवयस्स रण्णो एयमट्ठं विणएणं पडिसुणोति, पडिसुणित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वदासी—“ खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह.” जाव उवट्ठवेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते दूते बे हाथ जोडी यावत् मस्तकपर अंजलि करी द्रुपद राजाना आ अर्थ (आदेश)ने अंगीकार कर्यो. अंगीकार करीने ज्यां पोतानुं घर हतुं, त्यां आव्यो. आवीने कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रियो ! चार घंटावाळा अश्वरथने जोडीने (रथने विषे अश्वोने जोडीने) शीघ्रपणे लावो. " त्यारे तेओ ते प्रमाणे अश्वरथने यावत् लाव्या.

मू०—तए णं से दूए ण्हाते जाव अलंकारविभूसियसरीरे चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव गहियाऽऽउहपहरणेहिं सद्धिं संपरिवुडे कंपिल्लपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता पंचालजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरट्ठाजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव बारवती नगरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बारवइं नगरिं मज्झंमज्झेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पायचारविहारचारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता कण्हं वासुदेवं समुद्दविजयपामुक्खे य दस दसारे जाव बलवगसाह-

इत्थीओ करयल तं चेव जाव समोसरह ।

अर्थ—त्यारपछी ते दूते स्नान कर्युं, यावत् शरीरने अलंकारवडे विभूषित कर्युं. पछी चार घंटावाळा अश्वरथपर आरूढ थइने बख्तर पहेरीने तैयार थयेला यावत् जेमणे आयुध अने प्रहरण (शस्त्र) ग्रहण कर्या छे एवा घणा पुरुषोनी साथे परिवर्यो सतो कांपील्यपुरना मध्यभागवडे नीकळ्यो. नीकळीने पांचाल देशना मध्यभागे करीने ज्यां पोताना देशनो प्रांतभाग हतो त्यां आव्यो. आवीने सौराष्ट्र देशना मध्यभागे करीने ज्यां द्वारवती नगरी हती त्यां आव्यो. आवीने द्वारवती नगरीना मध्यभागे करीने नगरीमां प्रवेश कर्यो. प्रवेश करीने ज्यां कृष्ण वासुदेवनी बहारनी सभा हती त्यां आव्यो. आवीने चार घंटावाळा अश्वरथने स्थापन कर्यो. स्थापन करीने रथपरथी नीचे उतर्यो. उतरीने मनुष्योना समूह सहित पगे चालीने ज्यां कृष्ण वासुदेव हता त्यां आव्यो. आवीने कृष्ण वासुदेवने, समुद्रविजय विगेरे दश दशारने, यावत् महासेन विगेरे छप्पन हजार बळवान वर्गने बे हाथ जोडी मस्तके अंजलि करी यावत् पधारो, त्यां सुधी सर्व कह्युं तेनो सर्व पाठ उपर प्रमाणे जाणवो.

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियए तं दूयं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते कृष्ण वासुदेवे ते दूतनी पासे आ अर्थ (वृत्तांत) सांभळी हृदयमां धारी हृष्ट तुष्ट यावत् हृदयमां

आनंद पामी ते दूतनो सत्कार कर्यो, सन्मान कर्युं, सत्कार करी सन्मान करी तेने विदाय कर्यो–रजा आपी.

मू०–तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वदासी–" गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाइयं भेरिं तालेहि ।

अर्थ—त्यारपछी ते कृष्ण वासुदेवे कौटुंबिक पुरुषने बोलाव्यो. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं के–" हे देवानुप्रिय ! तुं जा अने सुधर्मा सभामां रहेल सामुदानिक भेरीने वगाड. "

मू०–तए णं से कोडुंबियपुरिसे करयल जाव कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाइया भेरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सामुदाइयं भेरिं महया महया सद्देणं तालेइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषे बे हाथ जोडी यावत् कृष्ण वासुदेवनो आ अर्थ (आदेश) अंगीकार कर्यो. अंगीकार करी ज्यां सुधर्मा सभामां सामुदानिक नामनी भेरी हती त्यां आव्यो, आवीने सामुदानिक भेरीने मोटा मोटा शब्दवडे वगाडी.

मू०–तते णं ताए सामुदाइयाए भेरीए तालियाए समाणीए समुद्दविजयपामोक्खा दस

दसारा जाव महसेणपामोक्खाओ छप्पन्नं बलवगसाहस्सीओ ण्हाया जाव विभूसिया जहाविभव-इड्डिसक्कारसमुदएणं अप्पेगइया जाव पायविहारचारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल जाव कण्हं वासुदेवं जएणं विजएणं वद्धावेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते सामुदानिक भेरी वगाडे सते समुद्रविजय विगेरे दश दशार राजाओ यावत् महासेन विगेरे छप्पन हजार बळवानना वर्ग स्नान कर्या, यावत् पोताना वैभव, समृद्धि अने सत्कारना समुदायने अनुसारे विभूषित थया. तेमां केटलाक अश्व, रथ विगेरेपर आरूढ थया. यावत् केटलाक पगे चालता ज्यां कृष्ण वासुदेव हता त्यां आव्या. आवीने तेओए बे हाथ जोडी यावत् कृष्ण वासुदेवने जय अने विजयना शब्दवडे वधाव्या.

मू०—तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी—" खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह हयगय " जाव पच्चप्पिणंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कृष्ण वासुदेवे कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रियो ! अभिषेक करेला (पट्टाभिषेक करेला) हस्तीरत्नने तैयार करी अहीं लावो. तथा बीजा हस्ती, अश्व, रथ अने पत्ति ए चतुरंगी सेना पण सज करी मारी आज्ञा पाछी आपो. " ते सांभळी तेओए ते प्रमाणे करी तेनी आज्ञा पाछी सोंपी.

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समुत्तजा-

लाकुलाभिरामे जाव अंजणगिरिकूडसंनिभं गयवइं नरवई दुरूढे ।

अर्थ—त्यारपछी ते कृष्ण वासुदेव ज्यां मज्जनगृह हतुं त्यां आव्या. आवीने मुक्ताफळना समूहवडे मनोहर एवा ते मज्जनगृहने विषे स्नान करी, सर्व अलंकारवडे विभूषित थइ, भोजन करी, यावत् अंजनगिरिना शिखर जेवा (उंचा अने श्याम) हस्तीरत्नपर ते कृष्णराजा आरूढ थया.

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामुक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव अणंगसेणापामुक्खेहिं अणेगाहिं गणियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं बारवइनयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता सुरट्ठाजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंचालजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

अर्थ—त्यारपछी ते कृष्ण वासुदेव समुद्रविजय विगेरे दश दशारोनी साथे यावत् अनंगसेना विगेरे अनेक हजार गणिकाओनी साथे परिवरेला सता सर्व समृद्धिए करीने यावत् वाजित्रना शब्दे करीने द्वारवती नगरीना मध्य भागे थइने नीकळ्या. नीकळीने सौराष्ट्र देशना मध्य भागे करीने ज्यां पोताना देशनो प्रांत (छेडो) हतो त्यां आव्या. आवीने पंचाल देशना मध्य भागे करीने ज्यां कांपील्य नगर हतुं त्यां शीघ्र जवाने तैयार थया.

१ स्नान करवानु घर.

मू०—तए णं से दुवए राया दोच्चं दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—" गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरं नगरं, तत्थ णं तुमं पंडुरायं सपुत्तयं जुहिट्ठिल्लं भीमसेणं अज्जुणं नउलं सहदेवं दुज्जोहणं भाइसयसमग्गं गंगेयं विदुरं दोणं जयद्दहं सउणीं कीवं आसत्थामं करयल जाव कट्टु तहेव समोसरह "।

अर्थ—त्यारपछी ते द्रुपद राजाए (पहेला दूतने कृष्ण वासुदेव पासे मोकल्या पछी तरत ज) बीजा दूतने बोलाव्यो, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रिय ! तुं हस्तिनापुर नगरमां जा. त्यां तुं पुत्र सहित पंडु नामना राजाने, तेना पुत्र युधिष्ठिरने, भीमसेनने, अर्जुनने, नकुलने अने सहदेवने तथा सो भाइओ सहित दुर्योधनने, गांगेयने, विदुरने, द्रोणाचार्यने, जयद्रथने, शकुनिने, क्लीव (कर्ण) ने अने अश्वत्थामाने ए सर्वने बे हाथ जोडी यावत् मस्तकपर अंजलि करी ते ज प्रमाणे कहेजे के यावत् योग्य समये स्वयंवरमां पधारो. "

मू०—तए णं से दूए एवं वयासी, जहा वासुदेवे, नवरं भेरी नत्थि, जाव जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

अर्थ—त्यारपछी ते दूते ए ज प्रमाणे जइने कह्युं. त्यारे जेम वासुदेवे कर्युं तेम तेमणे (पांडु राजाए) कर्युं. विशेष

ए के अहीं भेरी नथी. (तेथी बीजी रीते सौने खबर आपी सौने लइ) यावत् ज्यां कांपील्यपुर नगर हतुं, त्यां जवा माटे तैयार थया.

मू०—एएणेव कमेणं तच्चं दूयं चंपानयरिं, तत्थ णं तुमं कण्हं अंगरायं सेल्लं नंदिरायं करयल तहेव जाव समोसरह ।

अर्थ—ए ज क्रमे करीने त्रीजा दूतने चंपा नगरीमां मोकल्यो अने कह्युं के त्यां तुं अंगराज कृष्णने, सेल्लक राजाने अने नंदि राजाने बे हाथ जोडी ते ज प्रमाणे कहेजे. तेणे पण ते ज प्रमाणे जइ कह्युं. यावत् स्वयंवरमां पधारो.

मू०—चउत्थं दूयं सुत्तिमइं नयरिं, तत्थ णं तुमं सिसुपालं दमघोससुयं पंचभाइसयसंपरिवुडं करयल तहेव जाव समोसरह ।

अर्थ—चोथा दूतने शुक्तिमती नगरीए मोकल्यो अने कह्युं के 'त्यां तुं दमघोषना पुत्र अने पांच सो भाइओथी परिवरेला शिशुपाल राजाने बे हाथ जोडी ते ज प्रमाणे कहेजे.' तेणे पण ते ज प्रमाणे जइ कह्युं यावत् स्वयंवरमां पधारो.

मू०—पंचमगं दूयं हत्थिसीसनगरं, तत्थ णं तुमं दमदंतं नाम रायं करयल तहेव जाव समोसरह ।

अर्थ—पांचमा दूतने हस्तिशीर्ष नगरमां मोकल्यो अने कह्युं के 'त्यां तुं दमदंत नामना राजाने बे हाथ जोडी ते प्रमाणे

कहेजे.' तेणे पण ते ज प्रमाणे जइने कह्युं यावत् स्वयंवरमां पधारो.

मू—छट्ठं दूयं महुरं नयरिं, तत्थ णं तुमं धरं रायं करयल जाव समोसरह ।

अर्थ—छठा दूतने मथुरानगरी मोकल्यो अने कह्युं के 'त्यां तुं धर नामना राजाने बे हाथ जोडी ते प्रमाणे कहेजे.' तेणे पण जइने ते प्रमाणे कह्युं, यावत् स्वयंवरमां पधारो.

मू०—सत्तमं दूयं रायगिहं नगरं, तत्थ णं तुमं सहदेवं जरासिंधुसुयं करयल तहेव जाव समोसरह ।

अर्थ—सातमा दूतने राजगृह नगरमां मोकल्यो अने कह्युं के 'त्यां तुं जरासंधना पुत्र सहदेव राजाने बे हाथ जोडी ते प्रमाणे कहेजे.' तेणे पण जइने ते प्रमाणे कह्युं. यावत् स्वयंवरमां पधारो.

मू०—अट्ठमं दूयं कोडिण्णं नयरं, तत्थ णं तुमं रुप्पिं भेसगसुयं करयल तहेव जाव समोसरह ।

अर्थ—आठमा दूतने कौंडिन्य नगरमां मोकल्यो अने कह्युं के 'त्यां तुं भीष्मकना पुत्र रुप्पी राजाने बे हाथ जोडी ते प्रमाणे कहेजे.' तेणे पण जइने ते प्रमाणे कह्युं. यावत् स्वयंवरमां पधारो.

मू०—नवमं दूयं विराडनयरं, तत्थ णं तुमं कियगं भाउसयसमग्गं करयल तहेव जाव समोसरह ।

अर्थ—नवमा दूतने विराटनगरमां मोकल्यो अने कह्युं के 'त्यां तुं सो भाइओए करीने सहित कीचक राजाने बे हाथ जोडी ते प्रमाणे कहेजे.' तेणे पण जइने ते प्रमाणे कह्युं. यावत् स्वयंवरमां पधारो.

मू०—दसमं दूयं अवसेसेसु य गामागरनगरेसु अणेगाइं रायसहस्साइं जाव समोसरह ।

अर्थ—दशमा दूतने बाकीना गाम, आकर अने नगर विगेरेमां मोकल्यो. अने कह्युं के 'त्यां अनेक हजार राजाओने ते प्रमाणे कहेजे.' यावत् स्वयंवरमां पधारो.

मू०—तए णं से दूए तहेव निग्गच्छइ, जेणेव गामागर जाव समोसरह ।

अर्थ—त्यारे ते दूत ते ज प्रमाणे नीकळ्यो, अने ज्यां गाम, आकर, नगर विगेरे हता त्यां जइ सर्व राजाओने ते प्रमाणे कह्युं. यावत् स्वयंवरमां पधारो.

मू०—तए णं ताइं अणेगाइं रायसहस्साइं तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठ तं दूयं सक्कारेंति संमाणेंति, सक्कारित्ता संमाणित्ता पडिविसज्जिंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते अनेक हजार राजाओए ते दूतनी पासेथी आ अर्थ (वृत्तांत) सांभळी हृदयमां धारी हृष्ट तुष्ट थइ ते दूतनो सत्कार कर्यो, सन्मान कर्युं, सत्कार करी सन्मान करी तेने विदाय कर्यो.

मू०—तए णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा पत्तेयं पत्तेयं ण्हाया संनद्धहत्थिखंधवर-

गया हयगयरह महया भडचडगररहपहकर सएहिं सएहिं नगरेहिंतो अभिनिग्गच्छंति, अभिनिग्गच्छित्ता जेणेव पंचाले जणवए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ ११७ ॥

अर्थ - त्यारपछी ते वासुदेव विगेरे घणा हजार राजाओए दरेके दरेके स्नान कर्युं, सज्ज करेला श्रेष्ठ हस्तीना स्कंधपर आरूढ थया, अश्व, हाथी, रथ तथा मोटा मुख्य सुभट अने पायदळना समूह सहित पोतपोताना नगरमांथी नीकळ्या. नीकळीने ज्यां पांचाळ देश हतो, त्यां जवाने नीकळ्या. ११७.

मू०—तए णं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—“ गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे बहिया गंगाए महानदीए अदूरसामंते एगं महं सयंवरमंडवं करेह अणेगखंभसयसन्निविट्ठं लीलट्ठियसालभंजिआगं ” जाव पच्चप्पिणंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते द्रुपद राजाए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं-“ हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ अने कांपील्य नगरनी बहार गंगा महानदीनी अति दूर के नजीक नहीं एवा समीप भागने विषे एक मोटो स्वयंवर मंडप करो, तेने अनेक सेंकडो स्तंभोथी सहित करो अने तेमां क्रीडानी शालभंजिका (पुतळीओ) स्थापन करो. करीने मारी आज्ञा पाछी आपो. ” त्यारे तेओए ते प्रमाणे करी यावत् तेनी आज्ञा पाछी आपी.

मू०—तए णं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—“ खिप्पामेव भो

देवाणुप्पिया ! वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे करेह"। ते वि करित्ता पच्चप्पिणंति।

अर्थ—त्यारपछी ते द्रुपद राजाए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रियो ! वासुदेव विगेरे घणा हजार राजाओने माटे शीघ्रपणे आवासो तैयार करो. " त्यारे तेओए पण ते प्रमाणे करी तेनी आज्ञा पाछी आपी.

मू०—तए णं दुवए राया वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आगमं जाणेत्ता पत्तेयं पत्तेयं हत्थिखंध जाव परिवुडे अग्घं च पज्जं च गहाय सव्विड्ढीए कंपिल्लपुराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताइं वासुदेवपामुक्खाइं अग्घेण य पज्जेण य सक्कारेति सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं पत्तेयं पत्तेयं आवासे वियरति।

अर्थ—त्यारपछी ते द्रुपद राजा वासुदेव विगेरे घणा हजार राजाओनुं आगमन जाणी ते दरेक दरेक राजाओ हस्तीना स्कंधपर आरूढ थयेला यावत् सुभटोना परिवारथी परिवरेला छे एम जाणी तेमने माटे अर्घ्य[1] अने पाद्य[2] ग्रहण

१ पुष्पादिक पूजानी सामग्री २ पग धोवानुं पाणी

करी सर्व समृद्धि सहित कांपील्य नगरमांथी बहार नीकळ्यो. नीकळीने ज्यां ते वासुदेव विगेरे घणा हजार राजाओ हता त्यां आव्यो. आवीने ते वासुदेव विगेरेनो अर्घ्यवडे तथा पाद्यवडे सत्कार कर्यो, सन्मान कर्युं. सत्कार करी सन्मान करी ते वासुदेव विगेरे दरेक दरेक राजाने जूदा जूदा आवासो आप्या.

मू०—तते णं ते वासुदेवपामोक्खा जेणेव सया सया आवासा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाहिंतो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता पत्तेयं खंधावारनिवेसं करेंति, करित्ता सए सए आवासे अणुपविसंति, अणुपविसित्ता सएसु सएसु आवासेसु आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्ना य संतुयट्टा य बहूहिं गंधव्वेहि य नाडएहि य उवगिज्जमाणा य उवणच्चिज्जमाणा य विहरंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते वासुदेव विगेरे राजाओ ज्यां पोतपोताना आवासो हता, त्यां आव्या. आवीने हस्तीना स्कंध उपरथी नीचे उतर्या. उतरीने ते दरेक राजाए पोताना स्कंधावारने स्थापन कर्या (छावणी नांखी). स्थापन करीने पोतपोताना आवासने विषे प्रवेश कर्यो. प्रवेश करीने पोतपोताना आवासमां रहेला आसनो उपर बेठा बेठा अने शयनोने विषे सुता सुता घणा गंधर्वो पासे गायन गवरावता अने नटो पासे नाटक करावता विचरवा लाग्या—रह्या.

मू०—तते णं से दुवए राया कंपिल्लपुरं नगरं अणुपविसति, अणुपविसित्ता विउलं असणं पाणं खादिमं सादिमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते द्रुपद राजाए कांपील्यपुर नगरमां प्रवेश कर्यो. प्रवेश करीने विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम ए चार प्रकारनो आहार तैयार कराव्यो. तैयार करावीने कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं.

मू०—" गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विउलं असणं पाणं खातिमं सातिमं सुरं च मज्जं च मंसं च सीधुं च पसण्णं च सुबहुपुप्फवत्थगंधमल्लालंकारं च वासुदेवपामोक्खाणं रायसहस्साणं आवासेसु साहरह "। ते वि साहरंति।

अर्थ—" हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ अने विपुल अशन, पान, खादिम, स्वादिम, सुरा[1], मद्य, मांस, सीधु अने प्रसन्ना तथा घणां पुष्प, वस्त्र, गंध, माल्य (माळा) अने अलंकार ए सर्व वस्तु वासुदेव विगेरे हजारो राजाओना आवासोमां लइ जाओ. " ते सांभळी तेओ पण ते ज प्रमाणे सर्व वस्तु लइ गया अने सर्व आवासोमां आपी.

मू०—तते णं ते वासुदेवपामुक्खा तं विपुलं असणं पाणं खातिमं सातिमं जाव पसन्नं च आसाएमाणा आसाएमाणा विहरंति, जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा आयंता जाव सुहासणवरगया बहूहिं गंधव्वेहिं जाव विहरंति।

अर्थ—त्यारपछी ते वासुदेव विगेरे सर्व राजाओ ते विपुल अशन, पान, खादिम, स्वादिम यावत् प्रसन्नाने आ-

१ सुरा, मद्य, सीधु अने प्रसन्ना ए सर्वे मदिराना भेदो छे.

स्वाद करता आस्वाद करता विचरवा लाग्या. भोजन करी रह्या पछी आचमन लइ यावत् सुखासनपर बेठा अने घणा गंधर्वो पासे संगीत करावता यावत् विचरवा लाग्या—रह्या.

मू०—तते णं से दुवए राया पुव्वावरण्हकालसमयंसि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वदासी—" गच्छह णं तुमे देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे संघाडग जाव पहे वासुदेवपामुक्खाण य रायसहस्साणं आवासेसु हत्थिखंधवरगया महया महया सद्देणं जाव उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वदह—' एवं खलु देवाणुप्पिया ! कल्लं पाउप्पभाए दुवयस्स रण्णो धूयाए चुलणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुणस्स भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सइ, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! दुवयं रायाणं अणुगिण्हेमाणा ण्हाया जाव विभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरंट० सेयवरचामर० हयगयरह० महया भडचरगरेणं जाव परिक्खित्ता जेणेव सयंवरामंडवे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता पत्तेयं नामंकेसु आसणेसु निसीयह, निसीइत्ता दोवइं रायकण्णं पडिवालेमाणा पडिवालेमाणा चिट्ठह', घोसणं घोसेह, मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह "। तए णं ते कोडुंबिया तहेव जाव पच्चप्पिणंति ।

अर्थ—त्यारपछी द्रुपद राजाए दिवसना पाछला पहोर (सायंकाळ) ने समये कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं–" हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ. अने कांपील्यपुर नगरना शृंगाटक विगेरे मार्गमां तथा वासुदेव विगेरे हजारो राजाओना आवासोमां श्रेष्ठ हस्तीना स्कंधपर आरूढ थइने मोटा मोटा शब्दवडे यावत् उद्घोषणा करता करता आ प्रमाणे बोलो.–' आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! काले प्रातःकाळने विषे द्रुपद राजानी पुत्री, चुलणी देवीनी आत्मजा अने धृष्टद्युम्ननी बहेन द्रौपदी नामनी श्रेष्ठ राजकन्यानो स्वयंवर थवानो छे. तेथी तमे हे देवानुप्रियो ! द्रुपद राजा उपर अनुग्रह (कृपा) करी, स्नान करी, यावत् विभूषित थइ, श्रेष्ठ हस्तीना स्कंधपर आरूढ थइ, कोरंटवृक्षनी पुष्पमाळा सहित छत्रने धारण करी, उत्तम श्वेत चामरोवडे वींझाता सता, घोडा, हाथी, रथ विगेरे सहित, मोटा सुभटोवडे यावत् परिवर्या सता ज्यां स्वयंवर मंडप छे त्यां आवजो. आवीने दरेकना नामथी अंकित करेलां आसनोपर बेसजो. बेसीने द्रौपदी राजकन्यानी राह जोता जोता रहेजो.' आ प्रमाणे आघोषणा करो. आघोषणा करीने मारी आ आज्ञा पाछी आपो." त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषोए ते ज प्रमाणे यावत् तेनी आज्ञा पाछी आपी.

तए णं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वदासी–" गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सयंवरमंडपं आसियसंमज्जिओवलित्तं सुगंधवरगंधियं पंचवण्णपुप्फपुंजोवयारकलियं कालागरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्क जाव गंधवट्टिभूयं मंचाइमंचकलियं करेह, करित्ता वासुदेवपामुक्खाणं

बहूणं रायसहस्साणं पत्तेयं पत्तेयं नामंकाइं आसणाइं अत्थुय(सेयवत्थु)पच्चत्थुयाइं रएह, रयइत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह"। ते वि जाव पच्चप्पिणंति।

अर्थ—त्यारपछी ते द्रुपद राजाए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—"हे देवानुप्रियो! तमे जाओ अने स्वयंवर मंडपमां पाणी छांटो, तेने संमार्जन करो, लींपणथी लींपो, श्रेष्ठ सुगंधी द्रव्यथी सुगंधित करो, पांच वर्णना पुष्पोना समूहथी व्याप्त करो, कालागरु, श्रेष्ठ कंदुक (चीडा), तुरुष्क (शिलाजित) विगेरे धूपवडे यावत् गंधनी वर्ती (वाट) जेवुं करो, तथा मांचा अने तेना उपर मांचाए सहित करो. करीने वासुदेव विगेरे घणा हजारो राजाओना प्रत्येक प्रत्येकना नामथी अंकित श्वेत वस्त्रथी आच्छादित करेला आसनो रचो-करो, रचीने आ मारी आज्ञा पाछी सोंपो." ते सांभळी तेओए पण ते ज प्रमाणे करी यावत् तेनी आज्ञा पाछी सोंपी.

मू०—तते णं ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा कल्लं पाउप्पभाए ण्हाया जाव विभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरंट सेयवरचामराहिं हयगय जाव परिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं जेणेव सयंवरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अणुपविसंति, अणुपविसित्ता पत्तेयं पत्तेयं नामंकेसु निसीयंति, दोवइं रायवरकण्णं पडिवालेमाणा चिट्ठंति।

अर्थ—त्यारपछी ते वासुदेव विगेरे घणा हजार राजाओ काले (बीजे दिवसे) प्रभात प्रकाशित थइ त्यारे (सूर्यो-
दय समये) स्नान कर्या, यावत् सर्व अलंकारोवडे विभूषित थया, श्रेष्ठ हस्तीना स्कंधपर आरूढ थया, कोरंटवृक्षना पुष्पनी
माळावडे व्याप्त एवा छत्रने मस्तकपर धारण कर्या, श्रेष्ठ श्वेत चामरोवडे वींझावा लाग्या, अश्व गज विगेरेवडे यावत् परि-
वर्या सता सर्व समृद्धि सहित यावत् वाजित्रना रववडे ज्यां स्वयंवरमंडप हतो त्यां आव्या. आवीने स्वयंवरमंडपमां
प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने प्रत्येक राजाओनां नामथी अंकित करेला आसनो उपर बेठा, अने द्रौपदी नामनी श्रेष्ठ राज-
कन्यानी राह जोता जोता रह्या.

मू—तए णं से दुवए राया कल्लं ण्हाए जाव विभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरंट० हयगय० कंपिल्लपुरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव सयंवरामंडवे जेणेव वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं करयल० वद्धावेत्ता कण्हस्स वासुदेवस्स सेयवरचामरं गहाय उववीयमाणे चिट्ठति ॥ ११८ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते द्रुपद राजा काले (बीजे दिवसे प्रातःकाळे) स्नान करी यावत् सर्व अलंकारोवडे विभूषित थया, श्रेष्ठ हस्तीना स्कंधपर आरूढ थया, कोरंट वृक्षना पुष्पनी माळावडे सहित एवा छत्रने मस्तकपर धारण कर्युं, श्वेत चामरोथी वींझावा लाग्या, अश्व गज विगेरे सहित तथा मोटा योधाओ विगेरे परिवार सहित कांपील्यपुरनी मध्ये मध्ये थइने नीकळ्या.

नीकळीने ज्यां स्वयंवर मंडप हतो, तथा ज्यां वासुदेव विगेरे घणा हजार राजाओ हता त्यां आव्या. आवीने ते वासुदेव विगेरे राजाओने जयविजय शब्दवडे बे हाथ जोडी वधावी कृष्ण वासुदेवने श्वेत चामर ग्रहण करी वींझता वींझता रह्या. ११८.

मू०—तए णं सा दोवई रायवरकन्ना जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव जिणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जिणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जिणपडिमाणं आलोए पणामं करेइ, करित्ता लोमहत्थयं परामुसइ, एवं जहा सूरियाभो जिणपडिमाओ अच्चेइ, अच्चित्ता तहेव भाणियव्वं जाव धूवं डहइ, डहित्ता वामं जाणुं अंचेति दाहिणं जाणुं धरणियलंसि णिवेसेति, णिवेसित्ता तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि नमेइ, नमइत्ता ईसिं पच्चुण्णमति, करयल जाव कट्टु एवं वयासी—" नमोऽत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जाव संपत्ताणं " वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जिणघराओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव अंतेउरे तेणेव उवागच्छइ ॥ ११९ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते द्रौपदी श्रेष्ठ राजकन्या ज्यां स्नान करवानुं गृह हतुं, त्यां आवी. आवीने तेणीए स्नान कर्युं, बलि-

कर्म (गृहदेवतानुं पूजन) कर्युं, मसीतिलकादिक कौतुक, दूर्वादिक मंगळ अने अशुभना नाशरूप प्रायश्चित्त कर्युं, निर्मळ, राजद्वारमां प्रवेश करतां शोभे तेवां अने मांगलिक उत्तम वस्त्रो पहेर्यां. पछी स्नानगृहमांथी बहार नीकळी. नीकळीने ज्यां जिनेश्वरनुं गृह-चैत्य हतुं त्यां आवी. आवीने जिनेश्वरना गृह (चैत्य) ने विषे प्रवेश कर्यो. प्रवेश करीने जिनेश्वरनी प्रतिमानुं दर्शन थतां प्रणाम कर्या. प्रणाम करी लोमहस्तक (मोरपीछी) ने ग्रहण कर्युं. पछी तेवडे प्रतिमाने प्रमार्जी सूरियाभ देवनी जेम जिनप्रतिमानी पूजा करी. पूजा करीने ते ज प्रमाणे (सूरियाभनी जेम) यावत् धूपनुं दहन कर्युं. धूप उखेवीने डाबा ढींचणने उंचो राख्यो, जमणा ढींचणने पृथ्वीतळपर स्थापन कर्यो. स्थापन करीने त्रण वार मस्तकने पृथ्वीतळ उपर नमाव्युं. नमावीने कांइक मस्तकने उंचुं कर्युं. करीने बे हाथ जोडी यावत् मस्तकपर अंजलि करी आ प्रमाणे बोली.—" अरिहंत भगवान यावत् सिद्धिपदने पामेला जिनेश्वरने नमस्कार थाओ. " इत्यादि कही वंदना करी, नमस्कार कर्या, वंदना नमस्कार करी जिनेश्वरना गृहनी बहार नीकळी, नीकळीने ज्यां अंतःपुर हतुं त्यां आवी. ११९.

मू०—तते णं तं दोवइं रायवरकन्नं अंतेउरियाओ सव्वालंकारविभूसियं करेंति, किं ते ? वरपायपत्तणेउरा जाव चेडियाचक्कवालमयहरगविंदपरिक्खित्ता अंतेउराओ पडिणिक्खमति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता किड्डावियाए लेहियाए सद्धिं चाउग्घंटं आसरहं दुरूहति ।

अर्थ—त्यारपछी ते द्रौपदी श्रेष्ठ राजकन्याने अंतःपुरनी स्त्रीओए सर्व अलंकारोवडे विभूषित करी. ते केवी रीते ? पगमां श्रेष्ठ नूपुर पहेराव्यां, एम सर्व आभूषणो पहेराव्यां. यावत् दासीओना समूहथी परिवरी अंतःपुरनी बहार नीकळी. नीकळीने ज्यां बहारनी उपस्थानशाळा (सभा) हती अने ज्यां चार घंटावाळो अश्वयुक्त रथ हतो त्यां आवी, आवीने क्रीडा करावनारी धात्री अने लेखिका (लखनारी) दासीनी साथे ते चार घंटावाळा अश्वयुक्त रथने विषे आरूढ थइ.

मू०—तते णं से धट्ठज्जुणे कुमारे दोवतीए कण्णाए सारत्थं करेति ।

अर्थ—ते वखते तेना भाइ धृष्टद्युम्नकुमारे ते द्रौपदी कन्यानुं सारथिकृत्य कर्युं.

मू०—तते णं सा दोवती रायवरकण्णा कंपिल्लपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सयंवरमंडवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता रहं ठवेति, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता किड्डावियाए लेहियाए य सद्धिं सयंवरमंडवं अणुपविसति करयल तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायवरसहस्साणं पणामं करेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते द्रौपदी श्रेष्ठ राजकन्या कांपील्यपुर नगरनी मध्ये थइने ज्यां स्वयंवर मंडप हतो त्यां आवी, आवीने रथने स्थापन कर्यो, स्थापन करीने रथ उपरथी नीचे उतरी, उतरीने क्रीडा करावनारी धात्री अने लेखिका (लखनारी) दासीनी साथे स्वयंवर मंडपमां प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने बे हाथ जोडी ते वासुदेव विगेरे घणा हजार राजा-

ओने प्रणाम कर्यो.

मू०—तते णं सा दोवती रायवरकन्ना एगं महं सिरिदामगंडं, किं ते ? पाडलमल्लियचंपय जाव सत्तच्छयाईहिं गंधद्धणिं मुयंतं परमसुहफासं दरिसणिज्जं गिण्हति ।

अर्थ—त्यारपछी ते द्रौपदी नामनी श्रेष्ठ राजकन्याए एक मोटो श्रीदामगंड ग्रहण कर्यो. ते केवो छे ? पाटला, मल्लि, चंपक विगेरे यावत् सप्तपर्ण विगेरे वृक्षोना पुष्पोनो गुंथेलो, गंधनी धुणीने मूकतो, अत्यंत सुखस्पर्शवाळो अने ए ज कारणथी जोवा लायक (सुंदर) हतो.

मू०—तते णं सा किड्डाविया जाव सुरूवा जाव वामहत्थेणं चिल्लगं दप्पणं गहेऊण सललियं दप्पणसंकंतबिंबसंदंसिए य से दाहिणेणं हत्थेणं दरिसिए पवररायसीहे फुडविसयविसुद्धरिभिय-गंभीरमहुरभणिया सा तेसिं सव्वेसिं पत्थिवाणं अम्मापिऊणं वंससत्तसामत्थगोत्तविक्कंतिकंतिबहु-विहआगममाहप्परूवजोव्वणगुणलावण्णकुलसीलजाणिया कित्तणं करेइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते क्रीडा करावनारी यावत् सुंदर रूपवाळी धात्रीए यावत् डावे हाथे देदीप्यमान (उज्वळ) दर्पण (आरिसा)ने ग्रहण करी क्रीडा सहित दर्पणमां जे जे राजाओनां प्रतिबिंब पडता हता. ते प्रतिबिंबोवडे देखाता—जणाता

१ पुष्पनी माळानो दडो.

ते श्रेष्ठ सिंह जेवा राजाओने पोताना जमणा हाथवडे द्रौपदीने देखाडती हती. तथा स्फुट-अर्थथी प्रगट, विशद-निर्मळ अक्षरोवाळुं, विशुद्ध-शब्द तथा अर्थना दोषरहित, रिभित-स्वरनी घोलना सहित, मेघनी गर्जना जेवुं गंभीर अने मधुर-कर्णने सुखकारक एवुं वचन बोलती ते धात्री ते सर्व राजाओना मातापिताने, वंशने, सत्त्वने-आपत्तिने विषे आकुळताने नहीं करनार तथा कार्यना निश्चयने करनार एवा सत्त्वने, सामर्थ्यने-शारीरिक बळने, गौतमादिक गोत्रने, विक्रमने, कांतिने (अथवा पाठांतरे कीर्त्तिने), घणा प्रकारना शास्त्रना ज्ञानने, माहात्म्यने, रूपने, यौवनने, गुणने, लावण्यने, कुळने अने शीळने जाणनारी होवाथी तेमनुं कीर्तन (वर्णन) करवा लागी.

मू०-पढमं ताव वण्हिपुंगवाणं दसदसारवीरपुरिसाणं तेलोक्कबलवगाणं सत्तुसयसहस्समाणावमद्दगाणं भवसिद्धिपवरपुंडरीयाणं चिल्लगाणं बलवीरियरूवजोव्वणगुणलावन्नकित्तिया कित्तणं करेइ, ततो पुणो उग्गसेणमाईणं जायवाणं, भणति य-" सोहग्गरूवकलिए वरेहि वरपुरिसगंधहत्थीणं जो हु ते होइ हिययदइओ "।

अर्थ-तेमां प्रथम वृष्णि (यादवो) मां प्रधान (मुख्य) समुद्रविजयादिक दश दशारो अथवा दशारना श्रेष्ठ वीर पुरुषो (पुत्रो) के जेओ त्रण लोकमां बळवान हता, लाखो शत्रुओना माननुं मर्दन करनारा हता, भविष्यमां सिद्धिपदने पामनारा जीवोने विषे श्रेष्ठ पुंडरीक (कमळ) सरखा हता, तथा जेओ तेजवडे देदीप्यमान हता, तेओना शारीरिक बळने,

आत्मवीर्यने, रूपने–शरीरना सौंदर्यने, यौवनने, गुणोने अने लावण्यने कीर्तन करनारी ते क्रीडाधात्रीए ते सर्वनुं कीर्तन (वर्णन) कर्युं. त्यारपछी वळी उग्रसेन विगेरे यादवोनुं कीर्तन कर्युं, अने कह्युं के–" आ यादवो सौभाग्य अने रूपे करीने युक्त छे, तथा श्रेष्ठ पुरुषोना मध्ये गंधहस्ती समान छे, तेमना मध्ये जे कोइ तारा हृदयने दयित (प्रिय) होय तेने तुं वर."

मू०–तते णं सा दोवई रायवरकन्नगा बहूणं रायवरसहस्साणं मज्झंमज्झेणं समतिच्छमाणी समतिच्छमाणी पुव्वकयनियाणेणं चोइज्जमाणी चोइज्जमाणी जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता ते पंच पंडवे तेणं दसद्धवण्णेणं कुसुमदामेणं आवेढियपरिवेढियं करेति, करित्ता एवं वयासी–" एए णं मए पंच पंडवा वरिया । "

अर्थ— त्यारपछी ते द्रौपदी नामनी श्रेष्ठ राजकन्या घणा हजार श्रेष्ठ राजाओनी मध्ये थइने तेमने ओळंगती ओळंगती पूर्वे करेला नियाणावडे प्रेरणा कराती करातो ज्यां पांच पांडवो हता, त्यां आवी. आवीने ते पांच पांडवोने ते पांच वर्णवाळा पुष्पनी माळावडे (पोतानी पासेना श्रीदामगंडवडे) चोतरफथी वींटी दीधा. वींटीने आ प्रमाणे बोली–" आ पांचे पांडवो में वर्या. "

(द्रौपदीए तो एक युधिष्ठिरने ज वरमाळा आरोपी पण ते दैवयोगथी पांचरूपे पांचे पांडवना कंठमां पडी, तेथी पांच पांडवने वरी–एम कहेवामां आव्युं. आ प्रमाणे चरित्रादिकमां कहेल छे).

मू०—तते णं तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं बहूणि रायसहस्साणि महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वयंति—“ सुवरियं खलु भो ! दोवइए रायवरकन्नाए ” त्ति कट्टु सयंवरमंडवाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सया सया आवासा तेणेव उवागच्छंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते वासुदेव विगेरे घणा हजार राजाओ मोटा मोटा शब्दवडे आघोषणा करता करता आ प्रमाणे बोल्या—“ अहो ! द्रौपदी नामनी श्रेष्ठ राजकन्या सारुं वरी. ” आ प्रमाणे करी (कही) स्वयंवर मंडपनी बहार नीकळ्या, नीकळीने ज्यां पोतपोताना आवास हता त्यां आव्या.

मू०—तते णं धट्ठज्जुण्णे कुमारे पंच पंडवे दोवतिं रायवरकण्णं चाउग्घंटं आसरहं दुरूहति, दुरूहित्ता कंपिल्लपुरं मज्झंमज्झेणं जाव सयं भवणं अणुपविसति ।

अर्थ—त्यारपछी ते धृष्टद्युम्न कुमार ते पांच पांडवोने अने द्रौपदी नामनी श्रेष्ठ राजकन्याने चार घंटावाळा अश्वयुक्त रथमां आरूढ कर्या. आरूढ करीने (बेसाडीने) कांपील्यपुर नगरना मध्यभागे थइने यावत् पोताना भुवनमां प्रवेश कर्यो.

मू०—तते णं दुवए राया पंच पंडवे दोवइं रायवरकण्णं पट्टयं दुरूहेति, दुरूहित्ता सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेति, मज्जावित्ता अग्गिहोमं कारवेति, पंचण्हं पंडवाणं दोवतीए य पाणिग्गहणं करावेइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते द्रुपद राजाए पांचे पांडवोने तथा द्रौपदी नामनी श्रेष्ठ राजकन्याने पाट (बाजोठ) उपर बेसाड्या. बेसाडीने श्वेत अने पीत कळशोवडे तेमने स्नान कराव्युं. स्नान करावीने अग्निने विषे होम कराव्यो. पछी ते पांचे पांडवोने द्रौपदी साथे पाणिग्रहण कराव्युं.

मू—तते णं से दुवए राया दोवतीए रायवरकण्णयाए इमं एयारूवं पीतिदाणं दलयती, तं जहा—अट्ठ हिरण्णकोडीओ जाव अट्ठ पेसणकारीओ दासचेडीओ, अण्णं च विपुलं धणकणग जाव दलयति।

अर्थ—त्यारपछी ते द्रुपद राजाए द्रौपदी नामनी श्रेष्ठ राजकन्याने आ आवा प्रकारनुं प्रीतिदान आप्युं. ते आ प्रमाणे—" आठ करोड हिरण्य विगेरे यावत् आठ प्रेषणकारी (मोकलवानुं काम करनारी) दास चेटीओ, तथा बीजुं विपुल धन, कनक विगेरे यावत् आप्युं.

मू०—तते णं से दुवए राया ताइं वासुदेवपामोक्खाइं विपुलेणं असणपाणखातिमसातिमेणं वत्थगंध जाव पडिविसज्जेति ॥ १२० ॥

अर्थ—त्यारपछी ते द्रुपद राजाए ते वासुदेव विगेरे घणा हजार राजाओने विपुल अशन, पान, खादिम, स्वादिम तथा वस्त्र, गंध, माल्य अने अलंकारादिकवडे सत्कार करी यावत् तेमने विदाय कर्या. १२०.

मू०—तते णं से पंडू राया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं करयल जाव एवं वदासी—" एवं खलु देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे पंचण्हं पंडवाणं दोवतीए य देवीए कल्लाणकरे भविस्सइ, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ममं अणुगिण्हमाणा अकालपरिहीणं समोसरह "।

अर्थ—त्यारपछी ते पंडु राजाए ते वासुदेव विगेरे घणा हजार राजाओने बे हाथ जोडी यावत् आ प्रमाणे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! हस्तिनापुर नगरमां पांच पांडवो अने द्रौपदी देवीनो कल्याणकारक महोत्सव (मंगळनी क्रिया) थशे. तेथी तमो सर्वे हे देवानुप्रियो ! मारापर अनुग्रह (कृपा) करीने विलंब कर्या विना योग्य अवसरे पधारजो.

मू०—तते णं वासुदेवपामोक्खा पत्तेयं पत्तेयं जाव पहारेत्थ गमणाए।

अर्थ—त्यारपछी ते वासुदेव विगेरे प्रत्येक प्रत्येक सर्व राजाओ यावत् जवाने माटे तैयार थया.

मू०—तते णं से पंडुराया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—" गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे पंचण्हं पंडवाणं पंच पासायवडिंसए कारेह अब्भुग्गयमूसिय वण्णओ जाव पडिरूवे।

अर्थ—त्यारपछी ते पंडु राजाए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रियो ! तमे

जाओ, अने हस्तिनापुर नगरमां पांच पांडवोने माटे पांच श्रेष्ठ प्रासाद करावो, ते प्रासादो घणा उंचा सात भूमिना करावो विगेरे वर्णन कहेवुं यावत् मनोहर करावो.

मू०—तते णं ते कोडुंबियपुरिसा पडिसुर्णेति जाव करावेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषोए ते वात अंगीकार करी अने यावत् ते प्रमाणे जइ प्रासादो कराव्या.

मू०—तते णं से पंडुए पंचहिं पंडवेहिं दोवईए देवीए सर्द्धि हयगयसंपरिवुडे कंपिल्लपुराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए ।

अर्थ—त्यारपछी ते पंडु राजा पांच पांडवो अने द्रौपदी देवी सहित अश्व, हस्ति विगेरे सैन्यथी परिवरीने कांपील्यपुर नगरथी नीकळ्या, नीकळीने ज्यां हस्तिनापुर नगर हतुं त्यां आव्या.

मू०—तते णं से पंडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं आगमणं जाणित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वदासी—" गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरस्स नयरस्स बहिया वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे कारेह अणेगखंभसय " तहेव जाव पच्चप्पिणंति।

अर्थ—त्यारपछी ते पंडु राजाए ते वासुदेव विगेरे घणा हजार राजाओनुं आगमन जाणीने कौटुंबिक पुरुषोने बोला-

व्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं.—" हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ. अने हस्तिनापुर नगरनी बहार वासुदेव विगेरे घणा राजाओने माटे अनेक सेंकडो स्तंभ विगेरेथी विभूषित एवा आवासो करावो. " ते ज प्रमाणे तेओए अंगीकार करी यावत् तेनी आज्ञा पाछी सोंपी.

मू०—तते णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा जेणेव हत्थिणाउरे नयरे तेणेव उवागच्छंति।

अर्थ—त्यारपछी ते वासुदेव विगेरे घणा हजार राजाओ ज्यां हस्तिनापुर नगर हतुं त्यां आव्या.

मू०—तते णं से पंडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं आगमणं जाणित्ता हट्ठ तुट्ठे ण्हाए कय-बलिकम्मे जहा दुपए जाव जहारिहं आवासे दलयति।

अर्थ—त्यारपछी ते पंडु राजाए ते वासुदेव विगेरेनुं आगमन जाणी हृष्ट तुष्ट थइ स्नान करी बलिकर्म (गृहदेवतानुं पूजन) करी द्रुपद राजानी जेम तेमनी सन्मुख जइ तेमने यथायोग्य आवासो आप्या.

मू०—तते णं ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा जेणेव सयाइं सयाइं आवासाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तहेव जाव विहरंति।

अर्थ—त्यारपछी ते वासुदेव विगेरे घणा हजार राजाओ ज्यां पोतपोताना आवासो हता, त्यां आव्या. आवीने ते ज प्रमाणे (प्रथम कह्यां प्रमाणे संगीत सांभळता अने नाटकादि जोता) यावत् विचरवा लाग्या–रह्या.

मू०—तते णं से पंडुराया हत्थिणाउरं नयरं अणुपविसति, अणुपविसित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—" तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! विउलं असणं पाणं खातिमं सातिमं " तहेव जाव उवणेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते पंडु राजाए हस्तिनापुर नगरमां प्रवेश कर्यो. प्रवेश करीने कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रियो ! तमे विपुल अशन, पान, खादिम स्वादिम विगेरे तैयार करावो. " विगेरे ते ज प्रमाणे (प्रथम प्रमाणे) कहेवुं. यावत् तेओ अशनादिक तैयार करावीने लाव्या.

मू०—तते णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे राया ण्हाया कयबलिकम्मा तं विपुलं असणं पाणं खातिमं सातिमं तहेव जाव विहरंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते वासुदेव विगेरे घणा राजाओ स्नान करी बलिकर्म (गृहदेवतानुं पूजन) करी ते विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम विगेरेनो ते ज प्रमाणे (प्रथम कह्या प्रमाणे) आहार करता विचरवा लाग्या—रह्या.

मू०—तते णं से पंडुराया पंच पंडवे दोवतिं च देविं पट्टयं दुरूहेति, दुरूहित्ता सीयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेंति, ण्हावित्ता कल्लाणकारं करेति, करित्ता ते वासुदेवपामोक्खे बहवे रायसहस्से

विपुलेणं असणपाणखातिमसातिमेणं पुप्फवत्थेणं सक्कारेति सम्माणेति, सक्कारित्ता सम्माणित्ता जाव पडिविसज्जेति, तते णं ताइं वासुदेवपामोक्खाइं बहूहिं जाव पडिगयाति ॥ १२१ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते पंडु राजाए पांच पांडवो अने द्रौपदी देवीने पाट (बाजोठ) उपर बेसाड्या. बेसाडीने श्वेत अने पीत कळशोवडे स्नान कराव्युं. स्नान करावीने कल्याणनी (मंगळनी) क्रिया करी, करीने ते वासुदेव विगेरे घणा हजार राजाओनो विपुल अशन, पान, खादिम, स्वादिम पुष्प, वस्त्र, अलंकार विगेरेवडे सत्कार कर्यो, सन्मान कर्युं. सत्कार सन्मान करी यावत् तेमने विदाय कर्या. त्यारे ते वासुदेव विगेरे घणा हजार राजाओ यावत् त्यांथी नीकळी पोतपोताना नगरमां गया. १२१.

मू०—तते णं ते पंच पंडवा दोवतीए देवीए सद्धिं अंतो अंतेउरपरियाल सद्धिं कल्लाकल्लिं वारंवारेणं ओरालातिं भोगभोगाइं जाव विहराति ।

अर्थ—त्यारपछी ते पांच पांडवो द्रौपदी देवीनी साथे अंतःपुरना परिवार सहित एक एक दिवसना वारा प्रमाणे उदार कामभोग भोगवता यावत् विचरवा लाग्या.

मू०—तते णं से पंडुराया अन्नया कयाई पंचहिं पंडवेहिं कोंतीए देवीए दोवतीए देवीए य

सद्धिं अंतो अंतेउरपरियाल सद्धिं संपरिवुडे सीहासणवरगए यावि विहरति ।

अर्थ--त्यारपछी ते पंडु राजा एकदा कदाचित् पांच पांडवो, कुंतीदेवी अने द्रौपदी देवीनी साथे तथा अंतःपुरनी अंदरना परिवारनी साथे परिवर्या सता श्रेष्ठ सिंहासन उपर रह्या सता विचरता हता.

मू०-इमं च णं कच्छुल्लणारए दंसणेणं अइभद्दए विणीए अंतो अंतो य कलुसहियए मज्झत्थोवत्थिए य अल्लीणसोमपियदंसणे सुरूवे अमइलसगलपरिहिए कालमियचम्मउत्तरासंगरइयवत्थे दण्डकमण्डलुहत्थे जडामउडदित्तसिरए जन्नोवइयगणेत्तियमुंजमेहलवागलधरे हत्थकयकच्छभीए पियगंधव्वे धरणिगोयरप्पहाणे संचरणावरणओवयणउप्पयणिलेसणीसु य संकामणिअभिओगपण्णत्तिगमणीथंभणीसु य बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे इट्ठे रामस्स य केसवस्स य पज्जुन्नपईवसंबअनिरुद्धणिसढउम्मुयसारणगयसुमुहदुम्मुहातीण जायवाणं अध्धुट्ठाण कुमारकोडीणं हिययदइए संथवए कलहजुद्धकोलाहलप्पिए भंडणाभिलासी बहुसु य समरेसु य संपराएसु य दंसणरए समंतओ कलहं सदक्खिणं अणुगवेसमाणे असमाहिकरे दसारवरवीरपुरिसतिलोक्कबलवगाणं आमंतेऊण तं भगवतीं ए(प)क्कमणिं गगणगमणदच्छं उप्पइओ गगणमभिलंघयंतो

गामागरनगरखेडकब्बडमडंबदोणमुहपट्टणसंवाहसहस्समंडियं थिमियमेइणीतलं वसुहं ओलोइंतो रम्मं हत्थिणाउरं उवागए पंडुरायभवणंसि अइवेगेण समोवइए ।

अर्थ--तेवामां कच्छुल्ल नामना नारद त्यां आव्या. ते देखवामां अत्यंत भद्रक अने विनीत (विनयवान) लागता हता, पण अंदरथी तेनुं हृदय कलुषित (मलिन) हतुं. व्रत[1] ग्रहण करेलुं होवाथी ते मध्यस्थपणाने (समताने) पामेला हता, आश्रित जनोने तेनुं दर्शन प्रिय लागतुं हतुं, तेनुं रूप मनोहर हतुं, अमलिन (उज्वळ) सेकल[2]-अखंड वल्कल वस्त्र तेणे पहेर्युं हतुं, तेणे काळुं मृगचर्म उत्तरासंग तरीके वक्षःस्थळमां धारण कर्युं हतुं, तेना हाथमां दंड अने कमंडलु हता, जटारूपी मुकुटवडे तेनुं मस्तक देदीप्यमान (शोभतुं) हतुं, तेणे यज्ञोपवीत, गणेत्रिका--रुद्राक्षनी माळानां आभरणो, मुंज जातिना तृणनी कटिमेखला अने वल्कल वस्त्रने धारण कर्यां हतां, तेना हाथमां कच्छपी नामनी वीणा हती, ते गंधर्व (संगीत) मां प्रीतिवाळा हता, आकाशमां गमन करवानी शक्ति होवाथी ते पृथ्वीपर घणुं अल्प गमन करता हता, संचरणी (चालवानी), आवरणी (ढांकवानी), अवतरणी (नीचे उतरवानी), उत्पतनी (उंचे उडवानी), श्लेषणी (चोंटी जवानी), संक्रामणी (बीजाना शरीरमां प्रवेश करवानी), अभियोगिनी (सुवर्ण, चांदी विगेरे बनाववानी), प्रज्ञप्ति (परोक्ष वृत्तांत जणावनारी), गमनी (दुर्गम स्थाने पण जइ शकाय तेवी) अने स्तंभिनी (थंभावी देवानी) आवी

१ ब्रह्मचर्य व्रत एक ज ग्रहण कर्युं हतुं. २ अथवा शकल एटले वस्त्रनो खंड

आवी घणी विद्याधरोनी विद्याओमां ते प्रवीण होवाथी तेनी कीर्ति प्रसिद्ध हती, ते बळरामने तथा वासुदेवने इष्ट (प्रिय) हता. प्रद्युम्न, प्रदीप, सांब, अनिरुद्ध, निषध, उन्मुख, सारण, गजसुकुमाल, सुमुख अने दुर्मुख विगेरे यादवोना साडा त्रण करोड कुमारोना हृदयने प्रिय हता तथा तेमने प्रशंसा करवा लायक हता. कलह (वाणीनुं युद्ध), युद्ध (शस्त्रनुं युद्ध) अने घणा लोकोनो कोलाहल थाय ते तेने प्रिय हतो, भांडनी जेवुं वचन बोलवाना ते अभिलाषी हता, घणा समरोने अने संपेरायने जोवामां रसिक हता, चोतरफथी कलहने दक्षिणा सहित (दान आपीने पण) शोधता हता, अर्थात् कोइ पण प्रकारे परस्पर कलह करावता हता, कलह कराववाथी बीजाओने असमाधि करावता हता. आवा प्रकारना ते नारद त्रण लोकने विषे बळवान एवा श्रेष्ठ दशारवंशना वीर पुरुषोने आमंत्रण करी (तेमनी साथे वातचित करी) ते भगवती (पूज्य) प्राकाम्य नामनी विद्या के जे आकाशमां गमन करवामां निपुण हती तेनुं स्मरण करी उडी आकाशने उल्लंघन करता सता हजारो गाम, आकर (खाण), नगर, खेट (पर्वत वच्चेना गाम), कर्बट, मडंब, द्रोणमुख, पट्टण अने संवाधनवडे शोभित अने भरपूर देशोथी व्याप्त एवी पृथ्वीने जोता जोता हस्तिनापुरमां आव्या अने अत्यंत वेगथी पंडु राजाना महेलमां उतर्या.

मू०—तते णं से पंडुराया कच्छुल्लनारयं एज्जमाणं पासति, पासित्ता पंचहिं पंडवेहिं कुंतीए य

१ एक जातनुं युद्ध. २ एक जातनुं युद्ध.

देवीए सद्धिं आसणातो अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठित्ता कच्छुल्लनारयं सत्तट्ठपयाइं पच्चुग्गच्छइ, पच्चुग्गच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति, करित्ता वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता महरिहेणं आसणेणं उवणिमंतेति ।

अर्थ—ते वखते ते पंडु राजाए कच्छुल्ल नामना नारदने आवता जोया, जोइने पांच पांडवो तथा कुंतीदेवी सहित ते पंडु राजा आसनपरथी उभा थया. उभा थइने ते कच्छुल्ल नारदनी सन्मुख सात आठ पगलां गया, सन्मुख जइने त्रण वार दक्षिण बाजुथी आरंभीने दक्षिण बाजु सुधी (प्रदक्षिणा) करी, प्रदक्षिणा करीने वंदना करी, नमस्कार कर्या, वंदना नमस्कार करी महापुरुषने लायक अथवा मोटा मूल्यवाळा आसनवडे निमंत्रण कर्युं—आसनपर बेसवानी विनंति करी.

मू०—तते णं से कच्छुल्लनारए उदगपरिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए णिसीयति, णिसीयइत्ता पंडुरायं रज्जे जाव अंतेउरे य कुसलोदंतं पुच्छइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते कच्छुल्ल नारद जळना बिंदु छांटीने तेना पर दर्भ पाथर्या अने तेनापर पोतानुं आसन पाथरी ते पर बेठा. बेशीने पांडु राजाने तेना राज्यने विषे यावत् अंतःपुरने विषे कुशळ समाचार पूछया.

मू०—तते णं से पंडुराया कोंती देवी पंच य पंडवा कच्छुल्लणारयं आढंति जाव पज्जुवासंति ।

अर्थ—त्यारे ते पांडु राजा, कुंती देवी अने पांच पांडवोए ते कच्छुल्ल नारदनो आदर सत्कार कर्यो, यावत् तेनी पर्युपासना (सेवा) करवा लाग्या.

मू०—तए णं सा दोवई देवी कच्छुल्लनारयं अस्संजयं अविरयं अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मं ति कट्टु नो आढाति नो परियाणाति नो अब्भुट्ठेति नो पज्जुवासति ॥ १२२ ॥

अर्थ—ते वखते ते द्रौपदी देवीए ते कच्छुल्ल नारद संयम रहित छे, विरति रहित छे, तथा पूर्वे करेला पापकर्मनो निंदादिकवडे प्रतिषेध कर्यो नथी अने हवे पछी पापकर्म हुं नहीं करुं एम भावी प्राणातिपातादिक पापकर्मनुं पच्चक्खाण पण कर्युं नथी, अथवा ज्ञानावरणादिक पाप (सात) कर्मने अंतःसागरोपमकोटाकोटिनी स्थितिवाळा करी समकित पामीने हण्या नथी, अने सर्वविरतिना लाभवडे अंतःसागरोपमकोटाकोटिमांथी संख्याता सागरोपम न्यून करवावडे पच्चक्खाण कर्या नथी, एम जाणीने तेनो आदर कर्यो नहीं, तेने आव्या जाण्या नहीं, तेनी सन्मुख उभी थइ नहीं अने तेनी सेवा करवा लागी नहीं. १२२.

मू०—तते णं तस्स कच्छुल्लणारयस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—“ अहो णं दोवती देवी रूवेणं जाव लावण्णेण य पंचहिं पंडवेहिं अणुबद्धा समाणी ममं णो आढाति जाव नो पज्जुवासइ, तं सेयं खलु मम दोवतीए देवीए विप्पियं करित्तए ” त्ति

कट्टु एवं संपेहेति, संपेहित्ता पंडुयरायं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता उप्पयणिं विज्जं आवाहेति, आवाहित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव विज्जाहरगईए लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं पुरत्थाभिमुहे वीइवातिउं पयत्ते यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते कच्छुल्ल नारदने आवा स्वरूपवाळो अध्यवसाय, चिंतित (विचार), प्रार्थित (इच्छित), मनोगत (मनमां रहेलो) संकल्प उत्पन्न थयो के—" अहो ! आ द्रौपदी देवी पोताना रूपवडे यावत् लावण्यवडे पांच पांडवो रूपी पतिवडे गर्विष्ठ थयेली छे तेथी मारो आदर करती नथी यावत् मारी सेवा करती नथी. तेथी करीने आ द्रौपदी देवीनुं कांइक अप्रिय करवुं ए मारे श्रेयस्कर—कल्याणकारक छे. " आ प्रमाणे तेणे विचार कर्यो. विचार करीने तेणे पांडु राजानी रजा लीधी. रजा लइने उडवानी विद्यानुं स्मरण कर्युं. स्मरण करी तेवा प्रकारनी उत्कृष्ट यावत् विद्याधरनी जेवी गतिए करीने लवणसमुद्रना मध्य भागे थइने पूर्व दिशानी सन्मुख चालवा माटे प्रयत्नवाळा थया.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्धदाहिणड्ढभरहवासे अमरकंका नाम रायहाणी होत्था ।

अर्थ—ते काळे ते समये धातकीखंड नामना द्वीपने विषे पूर्व दिशाना मध्ये दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र छे. तेमां अमरकंका नामनी राजधानी हती.

मू०—तते णं अमरकंकाए रायहाणीए पउमणाभे णामं राया होत्था महया हिमवंत वण्णओ ।

अर्थ—ते अमरकंका नामनी राजधानीमां पद्मनाभ नामे राजा हतो. ते मोटा हिमवंत पर्वतनी जेवा सारवाळो हतो. विगेरे पूर्वनी जेम वर्णन करवुं.

मू०—तस्स णं पउमनाभस्स रन्नो सत्त देवीसयातिं ओरोहे होत्था, तस्स णं पउमनाभस्स रन्नो सुनाभे नामं पुत्ते जुवराया यावि होत्था ।

अर्थ—ते पद्मनाभ राजाना अंतःपुरमां पोतानी सातसो देवी (राणीओ) हती. ते पद्मनाभ राजाने सुनाभ नामे पुत्र युवराज पण हतो.

मू०—तते णं से पउमणाभे राया अंतोअंतेउरंसि ओरोह संपरिवुडे सिंहासणवरगए विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी (एकदा) ते पद्मनाभ राजा अंतःपुरने विषे पोतानी राणीओनी साथे श्रेष्ठ सिंहासनपर बेठो हतो.

मू०—तए णं से कच्छुल्लणारए जेणेव अमरकंका रायहाणी जेणेव पउमनाहस्स भवणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पउमनाभस्स रन्नो भवणंसि झत्तिं वेगेणं समोवइए ।

अर्थ—तेवामां ते कच्छुल्ल नारद ज्यां अमरकंका राजधानी हती अने ज्यां पद्मनाभ राजानुं भवन हतुं, त्यां आव्या.

आवीने पद्मनाभ राजाना भवनने विषे शीघ्रपणे वेगथी उतर्या.

मू०—तते णं से पउमनाभे राया कच्छुल्लं नारयं एज्जमाणं पासति, पासित्ता आसणातो अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठित्ता अग्घेणं जाव आसणेणं उवणिमंतेति ।

अर्थ—ते वखते ते पद्मनाभ राजाए कच्छुल्ल नारदने आवता जोया. जोइने ते आसनपरथी उभो थयो. उभा थइने तेणे अर्घ्यवडे तेनी पूजा करी अने आसनपर बेसवा निमंत्रण कर्युं—बेसवा आसन आप्युं.

मू०—तए णं से कच्छुल्लनारए उदयपरिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाते भिसियाए निसीयइ जाव कुसलोदंतं आपुच्छइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते कच्छुल्ल नारद जळना बिंदुओवडे पृथ्वीने छांटीने तेना पर दर्भ पाथरी तेनापर पोतानुं आसन पाथरी तेपर बेठा, अने यावत् कुशळ वार्ता पूछी.

मू०—तते णं से पउमनाभे राया णियगओरोहे जायविम्हए कच्छुल्लणारयं एवं वदासी—"तुब्भं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामाणि जाव गेहातिं अणुपविससि, तं अत्थि याइं ते कहिंचि देवाणुप्पिया ! एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे जारिसए णं मम ओरोहे ?"।

अर्थ—त्यारे ते पद्मनाभ राजाए पोतानी राणीओमां विस्मय पामवाथी कच्छुल्ल नारदने आ प्रमाणे कह्युं—पूछ्युं—
" हे देवानुप्रिय ! तमे घणा गामोमां यावत् घणा घरोमां प्रवेश करो छो, तो हे देवानुप्रिय ! जेवो मारो आ अवरोध
(स्त्रीवर्ग) छे तेवो अवरोध तमे प्रथम कोइ पण ठेकाणे जोयो छे ? "

मू०—तते णं से कच्छुल्लनारए पउमनाभेणं रन्ना एवं वुत्ते समाणे ईसिं विहसियं करेइ, करित्ता
एवं वदासी—" सरिसे णं तुमं पउमणाभा ! तस्स अगडदद्दुरस्स ", " के णं देवाणुप्पिया ! से
अगडदद्दुरे ? " एवं जहा मल्लिणाए, एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणा-
उरे दुपयस्स रण्णो धूया चुलणीए देवीए अत्तया पंडुस्स सुण्हा पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवती
देवी रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा । दोवईए णं देवीए छिन्नस्स वि पायंगुट्ठयस्स अयं तव ओरोहे
सतिमं पि कलं ण अग्घति त्ति कट्टु पउमणाभं आपुच्छति, आपुच्छित्ता जाव पडिगए ।

अर्थ—त्यारे ते कच्छुल्ल नारदे पद्मनाभ राजाए आ प्रमाणे कहे सते कांइक हास्य कर्युं, करीने आ प्रमाणे कह्युं—
" हे पद्मनाभ राजा ! तुं ते कुवाना देडका जेवो छे. " (राजाए पूछ्युं—) " हे देवानुप्रिय ! ते कुवानो देडको केवो
छे ? " ए प्रमाणे जेम मल्लीना अध्ययनमां कह्युं छे तेम अहीं सर्व कहेवुं. फरीथी नारदे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवा-

नुप्रिय ! जंबूद्वीप नामना द्वीपमां भरतक्षेत्रने विषे हस्तिनापुर नामना नगरमां द्रुपद राजानी पुत्री चुलणी नामनी देवी (राणी) नी आत्मजा[1] पांडुराजानी स्नुषा (पुत्रवधू) अने पांच पांडवोनी भार्या द्रौपदी नामनी देवी (राणी) रूपवडे यावत् लावण्यवडे उत्कृष्ट शरीरवाळी छे. ते द्रौपदी देवीना छेदेला पगना एक अंगुठाना सोमा अंशने पण आ तारो अवरोध (स्त्रीवर्ग) लायक नथी. " आ प्रमाणे कही नारदे पद्मनाभ राजानी रजा लीधी, रजा लइ ज्यांथी आव्या हता त्यां पाछा गया.

मू०—तते णं से पउमनाभे राया कच्छुल्लनारयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म दोवतीए देवीए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य मुच्छिए ४ (गढिए लुद्धे अज्झोववन्ने) जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोसहसालं जाव पुव्वसंगतियं देवं एवं वयासी—" एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे नयरे जाव उक्किट्ठसरीरा, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! दोवतीं देवीं इहमाणियं । "

अर्थ—त्यारपछी ते पद्मनाभ राजा कच्छुल्ल नारदनी पासेथी आ अर्थ (वृत्तांत) सांभळी हृदयमां धारी द्रौपदी देवीना रूपने विषे, यौवनने विषे अने लावण्यने विषे मूर्छित थयो (मोह पाम्यो), गृद्धिवाळो थयो, लुब्ध थयो अने आग्र-

१ पोताथी उत्पन्न थयेली.

हवाळो थयो. तेथी ते ज्यां पौषधशाळा हती त्यां आव्यो. आवीने पौषधशाळाने पुंजी प्रमार्जी पूर्व संगतिक (पूर्वना मित्र) देवनुं मनमां ध्यान करी अट्ठम तप करी बेठो, यावत् ते पूर्वसंगतिक देव आव्यो. तेने ते राजाए आ प्रमाणे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे भरतक्षेत्रमां हस्तिनापुर नगरमां द्रौपदी देवी यावत् उत्कृष्ट शरीरवाळी छे. तो हे देवानुप्रिय ! ते द्रौपदी देवीने अहीं लावेली जोवाने हुं इच्छुं छुं-तमे मने लावी आपो एम हुं इच्छुं छुं."

मू०—तते णं पुव्वसंगतिए देवे पउमनाभं एवं वदासी-" नो खलु देवाणुप्पिया ! एयं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा जं णं दोवती देवी पंच पंडवे मोत्तूण अन्नेणं पुरिसेणं सद्धिं ओरालाइं जाव विहरिस्सति, तहावि य णं अहं तव पियट्ठतयाए दोवतिं देविं इहं हव्वमाणेमि " त्ति कट्टु पउमणाभं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं जेणेव हत्थिणाउरे णयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

अर्थ—त्यारे ते पूर्व संगतिक देवे पद्मनाभ राजाने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रिय ! एवुं कदापि थयुं नथी, थतुं नथी अने थशे पण नहीं के द्रौपदी देवी पांच पांडवोने मूकीने बीजा कोइ पण पुरुषनी साथे उदार कामभोग भोगवती यावत् विचरे, तोपण हुं तारुं प्रिय करवाने माटे द्रौपदी देवीने अहीं शीघ्र लावुं छुं. " एम कही तेणे पद्मनाभनी रजा लीधी. रजा लइने तेवा प्रकारनी उत्कृष्ट गतिवडे यावत् लवण समुद्रना मध्य भागवडे थइने ज्यां हस्तिनापुर नगर हतुं

त्यां जवाने तैयार थयो—जवा नीकळ्यो.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं हत्थिणाउरे जुहिट्ठिल्ले राया दोवतीए देवीए सद्धिं आगासतलंसि सुहपसुत्ते यावि होत्था ।

अर्थ—ते काळे ते समये हस्तिनापुर नगरने विषे युधिष्ठिर राजा द्रौपदी देवीनी साथे महेलनी उपर आकाशतल (अगाशी) ने विषे सुखे सुता हता.

मू०—तए णं से पुव्वसंगतिए देवे जेणेव जुहिट्ठिल्ले राया जेणेव दोवती देवी तेणेव उवागच्छाति, उवागच्छित्ता दोवतीए देवीए ओसोवणियं दलयइ, दलइत्ता दोवतिं देविं गिण्हइ, गिण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव अमरकंका जेणेव पउमणाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छाति, उवागच्छित्ता पउमणाभस्स भवणंसि असोगवणियाए दोवतिं देविं ठावेइ, ठावित्ता ओसोवणिं अवहरति, अवहरित्ता जेणेव पउमणाभे तेणेव उवागच्छाति, उवागच्छित्ता एवं वदासी—

अर्थ—ते वखते ते पूर्व संगतिक देव ज्यां युधिष्ठिर राजा हता अने ज्यां द्रौपदी देवी हती, त्यां आव्यो. आवीने द्रौपदी देवीने अवस्वापिनी निद्रा आपी, आपीने द्रौपदी देवीने ग्रहण करी, ग्रहण करीने तेवा प्रकारनी उत्कृष्ट गतिवडे

यावत् ज्यां अमरकंका राजधानी हती अने ज्यां पद्मनाभ राजानुं भवन हतुं त्यां आव्यो. आवीने पद्मनाभना भवननी पासे अशोकवनने विषे द्रौपदी देवीने स्थापन करी, स्थापन करीने अवस्वापिनी विद्याने संहरी लीधी, संहरीने ज्यां पद्मनाभ राजा हतो, त्यां आव्यो. आवीने तेणे आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—" एस णं देवाणुप्पिया ! मए हत्थिणाउराओ दोवती देवी इह हव्वमाणीया तव असोगवणियाए चिट्ठति, अतो परं तुमं जाणासि " त्ति कट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ।

अर्थ—" हे देवानुप्रिय ! हुं हस्तिनापुर नगरमांथी द्रौपदी देवीने अहीं शीघ्रपणे लाव्यो छुं. ते तारी अशोकवाटिकाने विषे रहेली छे. हवे पछी तुं जाणो. (एटले के हवे आ बाबतमां तने जे जे मुश्केली आवे तेमां हुं कांइ पण मदद आपीश नहीं.) " एम कहीने ते देव जे दिशाथी प्रगट थयो हतो, ते दिशामां पाछो गयो.

मू०—तते णं सा दोवई देवी ततो मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी तं भवणं असोगवणियं च अपच्चभिजाणमाणी एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते द्रौपदी देवी ते ठेकाणे एक अंतर्मुहूर्तमां जागी सती ते भवनने तथा ते अशोक वाटिकाने ओळखती नहोती, तेथी ते (मनमां) आ प्रमाणे बोली—

मू०—" नो खलु अम्हं एसे सए भवणे, णो खलु एसा अम्हं सगा असोगवणिया, तं ण

णज्जति णं अहं केणई देवेण वा दाणवेण वा किंपुरिसेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा अन्नस्स रण्णो असोगवणियं साहरिय " त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायति ।

अर्थ—" निश्चे आ अमारुं भवन नथी, अने आ अमारी पोतानी अशोक वाटिका नथी. तेथी हुं नथी जाणती के मने कोइ देव, दानव, किंपुरुष, किन्नर, महोरग (नागकुमार) के गंधर्व आ कोइ अन्य राजानी अशोकवाटिकामां संहरीने लाव्यो छे. " आ प्रमाणे विचार करतां तेना मननो विचार हणाइ गयो—चाल्यो नहीं, यावत् ते ध्यान करवा लागी—विचारमां गरक थइ.

मू०—तते णं से पउमणाभे राया ण्हाए जाव सव्वालंकारविभूसिए अंतेउरपरियालसंपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जेणेव दोवती देवी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता दोवतीं देवीं ओहय-मणसंकप्पं जाव झियायमाणीं पासति, पासित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते पद्मनाभ राजा स्नान करी यावत् सर्व अलंकारवडे विभूषित थइ अंतःपुरना परिवार सहित ज्यां अशोकवाटिका हती अने ज्यां द्रौपदी देवी हती त्यां आव्यो. आवीने द्रौपदी देवीने हणायेला मनना संकल्पवाळी यावत् ध्यान करती जोइ. जोइने आ प्रमाणे बोल्यो.—

मू०—" किं णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि ? एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए ! मम पुव्वसंगतिएणं देवेणं जंबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणापुराओ नयराओ जुहिट्ठिल्लस्स रण्णो भवणाओ साहरिया, तं मा णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि, तुमं मए सद्धिं विपुलाइं भोगभोगाइं जाव विहराहि "।

अर्थ—" हे देवानुप्रिया ! हणायेला मनना संकल्पवाळी तुं शुं ध्यान करे छे ? आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिया ! में तने पूर्वसंगतिक देवनी पासे जंबूद्वीप नामना द्वीपथी भरतक्षेत्रथी हस्तिनापुर नगरथी युधिष्ठिर राजाना भवनमांथी हरण करावी छे. तेथी हे देवानुप्रिया ! तुं हणायेला मनना संकल्पवाळी थइने यावत् ध्यान न कर. अने तुं मारी साथे विपुल कामभोग यावत् भोगव. "

मू०—तते णं सा दोवती देवी पउमणाभं एवं वदासी—" एवं खलु देवाणुप्पिया ! जबुंद्दीवे दीवे भारहे वासे बारवतिए णयरीए कण्हे णामं वासुदेवे मम प्पियभाउए परिवसति, तं जति णं से छण्हं मासाणं ममं कूवं नो हव्वमागच्छइ तते णं अहं देवाणुप्पिया ! जं तुमं वदसि तस्स आणाओवायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामि ।

अर्थ—त्यारे ते द्रौपदी देवीए पद्मनाभ राजाने आ प्रमाणे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे भरतक्षेत्रमां द्वारका नगरीमां कृष्ण नामना वासुदेव मारा प्रिय(स्वामी)ना भ्राता रहे छे. तेथी जो ते छ मास सुधी मारी वहारे (शोधने माटे) शीघ्रपणे अहीं नहीं आवे, तो हुं हे देवानुप्रिय ! जे तमे कहेशो तेनी आज्ञा, उपाय, वचन अने निर्देशने विषे हुं रहीश-जेम तमे कहेशो तेम हुं वर्तीश. "

मू०—तते णं से पउमे राया दोवतीए एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता दोवतिं देविं कण्णंतेउरे ठवेति।

अर्थ—त्यारपछी ते पद्मनाभ राजाए द्रौपदी देवीनो आ अर्थ अंगीकार कर्यो. अंगीकार करीने द्रौपदीने कन्याओना अंतःपुरमां राखी.

मू०—तते णं सा दोवती देवी छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं आयंबिलपरिग्गाहिएणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणी विहरति ॥ १२३ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते द्रौपदी देवी निरंतर छट्ठ छट्ठनो तप अने पारणे आंबिल करवुं. एवा तपकर्मवडे पोताना आत्माने भावती विचरवा लागी. (रही). १२३.

मू०—तते णं से जुहुट्ठिल्ले राया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धे समाणे दोवतिं देविं पासे अपास-

माणे सयणिज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठित्ता दोवतीए देवीए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ, करित्ता दोवतीए देवीए कत्थइ सुइं वा खुइं वा पवत्तिं वा अलभमाणे जेणेव पंडुराया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पंडुरायं एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी आ तरफ ते युधिष्ठिर राजा ते वखते एक अंतर्मुहूर्ते जाग्या सता द्रौपदी देवीने पोतानी पासे नहीं जोवाथी शय्यामांथी उभा थया, उभा थइने द्रौपदी देवीनी चोतरफ सर्वत्र मार्गणा गवेपणा (शोधखोळ) करी. करीने कोइ पण ठेकाणे द्रौपदी देवीनी श्रुति (शब्द), क्षुति (छींक विगेरे) के प्रवृत्ति (खबर अंतर) कांइ पण नहीं पामवाथी ज्यां पांडु राजा हता त्यां आव्या. आवीने पांडु राजाने आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—" एवं खलु ताओ ! ममं आगासतलगंसि पसुत्तस्स पासातो दोवति देवी ण णज्जति केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा णीया वा अवक्खित्ता वा ? इच्छामि णं ताओ ! दोवतीए देवीए सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं कयं । "

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे हे पिता ! हुं आकाशतळ (अगाशी) ने विषे सुतो हतो ते वखते हुं नथी जाणतो के मारी पासेथी द्रौपदी देवीने कोइ देव, दानव, किन्नर, महोरग (नागकुमार) के कोइ गंधर्व हरी गयो, के लइ गयो, के

खेंची गयो ? तो हे पिता ! द्रौपदी देवीनी चोतरफ सर्वत्र मार्गणा गवेषणा (खोळशोध) करवाने हुं इच्छुं छुं. "

मू०—तते णं से पंडुराया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वदासी—" गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे सिंघाडग-तियचउक्कचच्चरमहापहपहेसु महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वदह— ' एवं खलु देवाणुप्पिया ! जुहिट्ठिल्लस्स रण्णो आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासातो दोवती देवी ण णज्जति केणइ देवेण वा दाणवेण वा किंपुरिसेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा नीया वा अवक्खित्ता वा ? तं जो णं देवाणुप्पिया ! दोवतीए देवीए सुतिं वा खुतिं वा पवित्तिं वा परिकहेति, तस्स णं पंडुराया विउलं अत्थसंपयाणं दाणं दलयाति ' त्ति कट्टु घोसणं घोसावेह, घोसावित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह " । तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति ।

अर्थ— त्यारपछी ते पांडु राजाए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रिया ! तमो जाओ अने हस्तिनापुर नगरमां शृंगाटक[1], त्रिक, चतुष्क, चत्वर, महापथ (मोटा मार्ग) अने पथ (नाना मार्ग) विगेरे

१ शींगोडाना आकारवाळो मार्ग

दरेक ठेकाणे मोटा मोटा शब्दवडे आघोषणा करता करता आ प्रमाणे कहो के–'आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो (लोको)! युधिष्ठिर राजा महेलनी अगाशीमां सुखे सुता हता ते वखते तेनी पासेथी नथी जणायुं (कोण जाणे) के द्रौपदी देवीने कोइ देव, दानव, किंपुरुष, किन्नर, महोरग (नागकुमार) के गंधर्व हरी गयो, के लइ गयो, के खेंची गयो ? तो हे देवानुप्रियो (लोको) ! जे कोइ द्रौपदी देवीनी श्रुति (शब्द), क्षुति (छींक विगेरे) के प्रवृत्ति (खबर अंतर) कहेशे, ते मनुष्यने पांडु राजा विपुल (मोटुं) द्रव्यसंपदानुं दान (इनाम) आपशे.' आ प्रमाणे आघोषणा करो. आघोषणा करीने आ मारी आज्ञा पाछी आपो." त्यारे ते कौटुंबिक पुरुषोए ते प्रमाणे करी यावत् तेनी आज्ञा पाछी आपी.

मू०—तते णं से पंडू राया दोवतीए देवीए कत्थाति सुइं वा जाव अलभमाणे कोंतीं देवीं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी–" गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिए ! बारवतिं णयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं णिवेदेहि । कण्हे णं परं वासुदेवे दोवतीए देवीए मग्गणगवेसणं करेज्जा, अन्नहा न नज्जइ दोवतीए देवीए सुतीं वा खुतीं वा पवित्तीं वा उवलभेज्जा " ।

अर्थ—त्यारपछी ते पांडु राजाए द्रौपदी देवीनी कोइ पण ठेकाणे श्रुति (शब्द) विगेरे यावत् नहीं मळवाथी कुंती देवीने बोलावी. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं–" हे देवानुप्रिया ! तुं जा अने द्वारका नगरीमां कृष्ण वासुदेवने आ अर्थ (वृत्तांत) निवेदन कर. अने कृष्ण वासुदेव पोते द्रौपदी देवीनुं मार्गण गवेषण करे, अन्यथा (नहीं तो) नथी जणातुं

के द्रोपदी देवीनी श्रुति (शब्द) क्षुति (छींक विगेरे) के प्रवृत्ति (खबर अंतर) आपणने प्राप्त थाय. ”

मू०—तते णं सा कोंती देवी पंडुरण्णा एवं वुत्ता समाणी जाव पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा हत्थिखंधवरगया हत्थिणाउरं नयरं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता कुरुजणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव सुरट्ठजणवए जेणेव बारवती णयरी जेणेव अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छाति, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते कुंती देवी पांडु राजाए आ प्रमाणे कही सती यावत् तेना वचनने अंगीकार कर्युं. अंगीकार करीने स्नान करी बलिकर्म (गृहदेवतानुं पूजन) करी श्रेष्ठ हस्तीना स्कंधपर आरूढ थइ हस्तिनापुर नगरनी मध्ये थइने बहार नीकळी. नीकळीने कुरुदेशना मध्यभागे थइने ज्यां सौराष्ट्र देश हतो अने ज्यां द्वारका नगरी हती तथा ज्यां ते नगरीनी बहार श्रेष्ठ उद्यान हतुं त्यां आवी. आवीने हस्तीना स्कंधपरथी नीचे उतरी. उतरीने कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—“ गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! जेणेव बारवई णयरी, बारवतिं णयरिं अणुपविसह, अणुपविसित्ता कण्हं वासुदेवं करयल एवं वयह—‘ एवं खलु सामी ! तुब्भं पिउच्छा कोंती देवी

हत्थिणाउराओ नयराओ इह हव्वमागया तुब्भं दंसणं कंखति "।

अर्थ—" हे देवानुप्रियो ! ज्यां द्वारका नगरी छे त्यां तमे जाओ, द्वारका नगरीमां प्रवेश करो, प्रवेश करीने कृष्ण वासुदेवने बे हाथ जोडी आ प्रमाणे कहो के—" हे स्वामी ! आ प्रमाणे निश्चे तमारा पितानी ब्हेन (फइ) कुंतीदेवी हस्तिनापुर नगरथी अहीं शीघ्र आवी छे. अने तमारा दर्शननी इच्छा राखे छे."

मू०—तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव कहेंति ।

अर्थ—त्यारे ते कौटुंबिक पुरुषोए यावत् जइने ते प्रमाणे कह्युं.

मू०—तते णं कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए सोच्चा णिसम्म हत्थिखंधवरगए हयगय बारवतीए य मज्झंमज्झेणं जेणेव कोंती देवी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता हत्थिखंधातो पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता कोंतीए देवीए पायग्गहणं करेंति, करित्ता कोंतीए देवीए सद्धिं हत्थिखंधं दुरूहति, दुरूहित्ता बारवतीए णयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सयं गिहं अणुपविसति ।

अर्थ—त्यारपछी कृष्ण वासुदेव कौटुंबिक पुरुषोनी पासे आ समाचार सांभळी हृदयमां भारी श्रेष्ठ हाथीना स्कंधपर

आरूढ थइ घोडा, हाथी विगेरे सैन्य सहित यावत् द्वारका नगरीना मध्यभागे थइने ज्यां कुंतीदेवी हती, त्यां आव्या. आवीने हस्तीना स्कंधपरथी नीचे उतर्या, उतरीने कुंती देवीना पगने ग्रहण कर्या (नमस्कार कर्या), करीने कुंतीदेवीनी साथे हस्तीना स्कंधपर आरूढ थया, आरूढ थइने द्वारका नगरीना मध्यभागे थइने ज्यां पोतानुं घर हतुं त्यां आव्या, आवीने पोते घरमां प्रवेश कर्यो.

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे कोंतीं देवीं ण्हायं कयबलिकम्मं जिमियभुत्तुत्तरागयं जाव सुहासणवरगयं एवं वदासी—" संदिसउ णं पिउच्छा ! किमागमणपओयणं ? ।

अर्थ—त्यारपछी कुंती देवीए स्नान कर्युं, बलिकर्म (गृहदेवतानुं पूजन) कर्युं, जमीने भोजन कर्या पछी यावत् श्रेष्ठ सुखासनपर बेठी. त्यारे तेने ते कृष्ण वासुदेवे आ प्रमाणे कह्युं (पूछ्युं)—" हे पितृभगिनी (फइ) ! तमारे अहीं आववानुं शुं प्रयोजन छे ? ते कहो. "

मू०—तते णं सा कोंती देवी कण्हं वासुदेवं एवं वदासी—" एवं खलु पुत्ता ! हत्थिणाउरे णयरे जुहिट्ठिल्लस्स आगासतले सुहपसुत्तस्स दोवती देवी पासाओ ण णज्जति केणइ अवहिया जाव अवक्खित्ता वा, तं इच्छामि णं पुत्ता ! दोवतीए देवीए मग्गणगवेसणं कयं " ।

अर्थ—त्यारे ते कुंतीदेवीए कृष्ण वासुदेवने आ प्रमाणे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे हे पुत्र ! हस्तिनापुर नगरमां युधि-

ष्ठिर पोताना महेलनी अगाशीमां सुखे सुता हता, ते वखते तेनी पासेथी कोइ न जाणे तेम द्रौपदी देवीने कोइए हरण करी यावत् खेंची लीधी. तो हे पुत्र ! द्रौपदी देवीनुं मार्गणगवेषण तमे करो एम हुं इच्छुं छुं. "

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे कोंतिं पिउच्छिं एवं वयासी—" जं णवरं पिउच्छा ! दोवतीए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव लभामि तो णं अहं पायालाओ वा भवणाओ वा अद्धभरहाओ वा समंतओ दोवतिं साहत्थिं उवणेमि " त्ति कट्टु कोंतीं पिउत्थिं सक्कारेति सम्माणेति जाव पडिविसज्जेति।

अर्थ—त्यारपछी ते कृष्ण वासुदेवे पितृभगिनी (फइ) ने आ प्रमाणे कह्युं " विशेष ए के हे पितृभगिनी (फइ) ! जो हुं द्रौपदी देवीनी कोइ पण ठेकाणे श्रुति (शब्द) ने यावत् पामुं, तो हुं पातालथी, भवनमांथी के अर्ध भरतमांथी चोतरफथी मारे पोताने हाथे शोधी लावीश. " आ प्रमाणे कहीने कुंती नामनी पितृभगिनी (फइ) नो सत्कार कर्यो, सन्मान कर्युं, यावत् तेने विदाय करी.

मू०—तते णं सा कोंती देवी कण्हेणं वासुदेवेणं पडिविसज्जिया समाणी जामेव दिसिं पाउब्भूआ तामेव दिसिं पडिगया ।

अर्थ—त्यारपछी ते कुंती देवी कृष्ण वासुदेवे रजा आपी सती जे दिशामांथी प्रगट थइ हती—आवी हती, ते दिशामां पाछी गइ.

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वदासी—" गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! बारवतिं नयरिं " एवं जहा पंडू तहा घोसणं घोसावेति जाव पच्चप्पिणंति, पंडुस्स जहा।

अर्थ—त्यारपछी ते कृष्ण वासुदेवे कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रियो ! तमे द्वारिका नगरीमां जाओ. " ए प्रमाणे जेम पांडु राजाए तेम ते वासुदेवे आघोषणा करावी. यावत् तेओए तेनी आज्ञा पाछी आपी. ए सर्व पांडु राजानी जेम जाणवुं.

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे अन्नया अंतोअंतेउरगए ओरोहे जाव विहरति। इमं च णं कच्छुल्लए जाव समोवइए जाव णिसीइत्ता कण्हं वासुदेवं कुसलोदंतं पुच्छइ।

अर्थ—त्यारपछी ते कृष्ण वासुदेव एकदा अंतःपुरने विषे रह्या सता पोताना अवरोध (राणीओ) नी साथे विचरवा लाग्या-रह्या हता. तेवामां ते कच्छुल्ल नामना नारद यावत् त्यां उतर्या. यावत् आसनपर बेसीने कृष्ण वासुदेवने कुशळ समाचार पूछया.

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लं णारयं एवं वदासी—" तुमं णं देवाणुप्पिया ! बहूणि

गामागर जाव अणुपविसासि, तं अत्थि याइं ते कहिं वि दोवतीए देवीए सुती वा जाव उवलद्धा ?"

अर्थ—त्यारे ते कृष्ण वासुदेवे कच्छुल्ल नारदने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रिय ! तमे घणा गाम, आकर विगेरेमां यावत् प्रवेश करो छो, तेथी कोइ पण ठेकाणे द्रोपदी देवीनी श्रुति (शब्द) विगेरे कांइ यावत् जाणवामां छे ?"

मू०—तते णं से कच्छुल्ले णारए कण्णं वासुदेवं एवं वदासी—" एवं खलु देवाणुप्पिया ! अन्नया धायतीसंडे दीवे पुरत्थिमद्धं दाहिणड्ढभरहवासं अवरकंकारायहाणिं गए, तत्थ णं मए पउमनाभस्स रन्नो भवणंसि दोवती देवी जारिसिया दिट्ठपुव्वा याचि होत्था "।

अर्थ—त्यारे ते कच्छुल्ल नारदे कृष्णवासुदेवने आ प्रमाणे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! एकदा धातकीखंड द्वीपमां पूर्व दिशाने मध्ये दक्षिणार्ध भरतक्षेत्रने विषे अमरकंका नामनी राजधानीमां हुं गयो हतो, त्यां पद्मनाभ नामना राजाना महेलने विषे में पूर्वे जेवी जोइ हती तेवी द्रौपदी देवी हती.

मू०—तते णं कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लं णारयं एवं वदासी—" तुब्भं चेव णं देवाणुप्पिया ! एवं पुव्वकम्मं "।

अर्थ—त्यारे ते कृष्ण वासुदेवे कच्छुल्ल नारदने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रिय ! आ कार्य तमारुं ज प्रथमनुं करेलुं जणाय छे."

मू०—तते णं से कच्छुल्लनारए कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे उप्पयणिं विज्जं आवाहेति, आवाहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।

अर्थ—त्यारपछी ते कच्छुल्ल नारदने कृष्ण वासुदेवे आ प्रमाणे कह्युं, त्यारे तेणे उत्पतनी (उडवानी) विद्यानुं स्मरण कर्युं, स्मरण करीने जे दिशामांथी प्रगट थया हता (आव्या हता) ते दिशामां पाछा गया.

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वदासी—"गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! हत्थिणाउरं पंडुस्स रन्नो एयमट्ठं निवेदेहि—एवं खलु देवाणुप्पिया धायइसंडे दीवे पुरच्छिमद्धे अवरकंकाए रायहाणीए पउमणाभभवणंसि दोवतीए देवीए पउत्ती उवलद्धा। तं गच्छंतु पंच पंडवा चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा पुरच्छिमवेयालीए ममं पडिवालेमाणा चिट्ठंतु।

अर्थ—त्यारपछी ते कृष्ण वासुदेवे दूतने बोलाव्यो, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—"हे देवानुप्रिय! तुं हस्तिनापुरमां जा अने पांडु राजाने आ अर्थ (वृत्तांत) निवेदन कर (कहे)—आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय! धातकीखंड नामना द्वीपमां पूर्व दिशाना अर्ध भागमां दक्षिणार्ध भरतक्षेत्रने विषे अमरकंका नामनी राजधानीमां पद्मनाभ नामना राजाना भवनमां द्रौपदी देवीनी प्रवृत्ति (खबर अंतर) प्राप्त थइ छे. तेथी पांचे पांडवो चतुरंग सेना सहित परिवर्या सता

पूर्व दिशाना वेतालिक (लवण) समुद्रने कांठे जाओ, अने त्यां मारी राह जोता सता रहो."

मू०—तते णं से दूए जाव भणाति—" पडिवालेमाणा चिट्ठह "। ते वि जाव चिट्ठंति।

अर्थ—त्यारे ते दूते पण जइने यावत् ते ज प्रमाणे कह्युं के—" राह जोता सता रहो." त्यारे ते पांचे पांडवो पण यावत् त्यां जइने राह जोता सता रह्या.

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वदासी—" गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सन्नाहियं भेरिं ताडेह "। ते वि तालेंति।

अर्थ—" त्यारपछी ते कृष्ण वासुदेवे कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ अने सांनाहिक[1] (युद्धनी) भेरी वगाडो." ते सांभळी तेओए पण ते ज प्रमाणे भेरी वगाडी.

मू०—तते णं तीसे सण्णाहियाए भेरीए सद्दं सोच्चा समुद्दविजयपामोक्खा दस दसारा जाव छप्पण्णं बलवयसाहस्सीओ सन्नद्धबद्ध जाव गहियाउहपहरणा अप्पेगतिया हयगया गयगया जाव वग्गुरापरिक्खित्ता जेणेव सभा सुधम्मा जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता

१ जेनो शब्द साभळी सैन्य संनाह—बख्तर पहेरीने तैयार थाय ते.

करयल जाव वद्धावेंति ।

अर्थ—ते वखते ते सांनाहिक (युद्धनी) भेरीनो शब्द सांभळी समुद्रविजय विगेरे दश दशारो यावत् छप्पन हजार बळवान योद्धाओ बख्तर पहेरी तैयार थइ यावत् आयुध अने प्रहरणने धारण करी केटलाएक अश्वपर आरूढ थया, केटलाएक हस्तीपर आरूढ थया, यावत् सुभटोना परिवार सहित ज्यां कृष्ण वासुदेवनी सुधर्मा नामनी सभा हती अने ज्यां कृष्ण वासुदेव हता त्यां आव्या. आवीने बे हाथ जोडी यावत् कृष्ण वासुदेवने जय जय शब्दथी वधाव्या.

मू०—तते णं कण्हे वासुदेवे हत्थिखंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धारिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुवमाणीहिं महयाहयगयभडचडगरपहकरेणं बारवतीए णयरीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छति, णिग्गच्छित्ता जेणेव पुरच्छिमवेयाली तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं एगयओ मिलइ, मिलित्ता खंधावारणिवेसं करेति, करित्ता पोसहसालं अणुपविसति, अणुपविसित्ता सुट्ठियं देवं मणसि करेमाणे करेमाणे चिट्ठति ।

अर्थ—त्यारपछी कृष्णवासुदेव श्रेष्ठ हस्तीना स्कंधपर आरूढ थया, कोरंटवृक्षना पुष्पनी माळावडे युक्त एवुं छत्र तेना मस्तकपर धारण करवामां आव्युं, तेनी बन्ने पडखे श्वेत चामरो वींझावा लाग्या, मोटा अश्व, हाथी, भट अने उत्तम

सुभटना समूहथी परिवरेला ते कृष्णवासुदेव द्वारका नगरीनी मध्यभागे थइने नीकळ्या, नीकळीने ज्यां पूर्व दिशानो वेतालिक (लवण) समुद्र हतो त्यां आव्या, आवीने पांच पांडवोनी साथे एक स्थाने एकठा थया-मळ्या, मळीने स्कंधावारने स्थापन कर्यो (छावणी नाखी), करीने पौषधशाळामां प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने सुस्थित देवने मनमां चिंतवता चिंतवता रह्या.

मू०—तते णं कण्हस्स वासुदेवस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि सुट्ठिओ जाव आगतो—"भण देवाणुप्पिया ! जं मए कायव्वं " ।

अर्थ—त्यारपछी कृष्ण वासुदेवने अट्ठम भक्त (त्रण उपवास) नो तप पूर्ण थयो त्यारे सुस्थित देव यावत् आव्यो अने बोल्यो—" हे देवानुप्रिय ! मारे जे करवानुं होय ते कहो. "

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं देवं एवं वदासी—" एवं खलु देवाणुप्पिया ! दोवती देवी जाव पउमनाभस्स रण्णो भवणंसि साहरिया, तं णं तुमं देवाणुप्पिया ! मम पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियरेहि, जं णं अहं अमरकंकारायहाणिं दोवतीए देवीए कूवं गच्छामि ।

अर्थ—त्यारे ते कृष्ण वासुदेवे सुस्थित देवने आ प्रमाणे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! द्रौपदी देवीने

पद्मनाभ राजाना भवनमां कोइए हरण करी छे, तेथी हे देवानुप्रिय ! पांच पांडवो सहित हुं पोते जेमां छट्ठो छुं एवा मारा (पांच पांडवो अने एक हुं ए छना) छ रथोने लवण समुद्रमां जवानो मार्ग आप, के जेथी हुं अमरकंका राजधानीमां द्रौपदी देवीनी वहारे जाउं (मदद करुं)."

मू०—तते णं से सुट्ठिए देवे कण्हं वासुदेवं एवं वदासी—"किण्हं देवाणुप्पिया ! जहा चेव पउमणाभस्स रन्नो पुव्वसंगतिएणं देवेणं दोवती देवी जाव संहरिया तहा चेव दोवतिं देविं धायतीसंडाओ दीवाओ भारहाओ जाव हत्थिणाउरं साहरामि ? उदाहु पउमणाभं रायं सपुरबलवाहणं लवणसमुद्दे पक्खिवामि ?"।

अर्थ—त्यारे ते सुस्थित देवे कृष्ण वासुदेवने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रिय! जेम पद्मनाभ राजाना पूर्व संगतिक (पूर्व मित्र) देवे द्रौपदी देवीने यावत् हरण करी, ते ज प्रमाणे शुं हुं द्रौपदी देवीने धातकीखंड द्वीपमांथी भरतक्षेत्रमांथी यावत् हरण करीने हस्तिनापुर नगरमां मूकुं ? के पद्मनाभ राजाने तेना नगर, सैन्य अने वाहन सहित लवण समुद्रमां नांखुं ? (डुबावी दउं ?)."

मू०—तते णं कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं देवं एवं वदासी—" मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव साहराहि, तुमं णं देवाणुप्पिया ! लवणसमुद्दे अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं मग्गं वियराहि, सयमेव णं

अहं दोवतीए देवीए कूवं गच्छामि ” ।

अर्थ—त्यारे ते कृष्ण वासुदेवे सुस्थित देवने आ प्रमाणे कह्युं–“ हे दवानुप्रिय ! तमे यावत् हरण न करो; परंतु हे देवानुप्रिय ! तमे अमारा छना छ रथोनो मार्ग आपो. हुं पोते ज द्रौपदी देवीनी व्हारे जइश (मदद करवा जइश). ”

मू०—तए णं से सुट्ठिए देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–“ एवं होउ ” पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वितरति ।

अर्थ—त्यारे ते सुस्थित देवे कृष्ण वासुदेवने आ प्रमाणे कह्युं–“ एम हो, ” एम कहीने पांच पांडवो सहित कृष्ण पोते जेमां छठ्ठा छे एवा तेमना छ रथोने लवण समुद्रमां जवानो मार्ग आप्यो.

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणीसेणं पडिविसज्जेति, पडिविसज्जित्ता पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहि लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतीवयति, वीतीवइत्ता जेणेव अमरकंका राय-हाणी जेणेव अमरकंकाए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता रहं ठवेइ, ठवित्ता दारुयं सारहिं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते कृष्ण वासुदेवे चतुरंगी सेनाने त्यांथी पाछी वाळी. पाछी वाळीने पांच पांडवो सहित पोते

छट्ठा जेमां छे एवा ते छ रथमां बेसीने लवण समुद्रना मध्य भागे थइने चालवा लाग्या. चालीने ज्यां अमरकंका राजधानी हती अने ज्यां अमरकंका राजधानीनुं अग्र (श्रेष्ठ) उद्यान हतुं त्यां आव्या. आवीने त्यां रथने स्थापन कर्यो. स्थापन करीने पोताना दारुक नामना सारथीने बोलाव्यो, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—" गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! अमरकंकारायहाणिं अणुपविसाहि, अणुपविसित्ता पउमणाभस्स रण्णो वामेणं पाएणं पायपीढं अक्कमित्ता कुंतग्गेणं लेहं पणामेहि तिवलियं भिउडिं णिडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुट्ठे कुद्धे कुविए चंडिक्किए एवं वदह—हं भो पउमणाहा ! अपत्थियपत्थिया ! दुरंतपंतलक्खणा ! हीणपुन्नचाउद्दसा ! सिरीहिरिधीपरिवज्जिया ! अज्ज ण भवसि, किं णं तुमं ण याणासि कण्हस्स वासुदेवस्स भगिणिं दोवतिं देविं इहं हव्वं आणमाणे ? तं एयमवि गए पच्चप्पिणाहि णं तुमं दोवतिं देविं कण्हस्स वासुदेवस्स, अहव णं जुद्धसज्जे णिग्गच्छाहि, एस णं कण्हे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं अप्पछट्ठे दोवतीदेवीए कूवं हव्वमागए "।

अर्थ—" हे देवानुप्रिय ! तुं जा अने अमरकंका राजधानीमां प्रवेश कर. प्रवेश करीने पद्मनाभ राजा पासे जइ तारा वाम (डाबा) पगवडे तेना पादपीठने आक्रमण करी (दबावी) कुंत (भाला)ना अग्र भागवडे लेखने आपजे. तथा

कपाळमां त्रण वळीयावाळी भृकुटि चडावी, शीघ्रपणे नेत्रने रक्त करी, रोष करी, क्रोध करी, कोप करी तथा प्रचंड थइ आ प्रमाणे कहेजे के—हे पद्मनाभ ! अप्रार्थित (मृत्यु) नी प्रार्थना करनार ! दुरंत अने प्रांते लक्षणवाळा ! हीनपुण्य-वाळा ! चतुर्दशीना जन्मेला ! (अथवा हीनपुण्यवाळी चतुर्दशी–काळी चतुर्दशीना जन्मेला !) श्री (लक्ष्मी), ह्री (लज्जा) अने बुद्धिए करीने रहित ! आजे तुं नथी–नहीं जीवे. शुं तुं नथी जाणतो के कृष्ण वासुदेवनी बहेन द्रौपदी देवीने तुं अहीं शीघ्रपणे लाव्यो छे ? तो पण आटलुं गया (थया) छतां पण तुं कृष्ण वासुदेवने द्रौपदी देवी पाछी आपी दे, अथवा युद्ध करवा सज्ज थइ बहार नीकळ. आ कृष्ण वासुदेव पांच पांडवो सहित पोते जेमां छठ्ठा छे एवा सता द्रौपदी देवीनी व्हारे (मदद करवा) शीघ्रपणे आव्या छे."

मू०—तते णं से दारुए सारही कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे जाव पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता अमरकंकारायहाणिं अणुपविसति, अणुपविसित्ता जेणेव पउमनाहे तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेत्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारे ते दारुक सारथि कृष्ण वासुदेवे आ प्रमाणे कह्युं त्यारे हृष्टतुष्ट थयो, यावत् तेनुं वचन अंगीकार कर्युं, अंगीकार करीने तेणे अमरकंका राजधानीमां प्रवेश कर्यो. प्रवेश करी ज्यां पद्मनाभ राजा हतो त्यां आव्यो. आवीने बे

१ जेनो छेडो न आवे तेवा–घणा. २ अशुभ.

हाथ जोडी यावत् जयजय शब्दवडे वधावी आ प्रमाणे बोल्यो.—

मू०—" एस णं सामी ! मम विणयपडिवत्ती इमा अन्ना मम सामिस्स समुहाणत्ति " त्ति कट्टु आसुरत्ते वामपाएणं पायपीढं अणुक्कमति, अणुक्कमित्ता कोंतग्गेणं लेहं पणामति, पणामित्ता जाव कूवं हव्वमागए "।

अर्थ—" हे स्वामी ! आ मारी पोतानी विनयप्रतिपत्ति (विनयनी क्रिया) छे. हवे आ बीजी मारा स्वामीनी पोताना मुखथी कहेली आज्ञप्ति (आज्ञा) छे. " एम कहीने शीघ्र पोताना नेत्र रक्त करीने तथा क्रोध करीने पोताना डाबा पगे तेना पादपीठने दबाव्युं. दबावीने कुंत (भाला)ना अग्र भागवडे लेख आप्यो. आपीने कृष्ण वासुदेवनो कहेलो सर्व संदेशो यावत् द्रौपदी देवीनी व्हारे (मदद माटे) शीघ्र आव्या छे त्यां सुधीनो कह्यो.

मू०—तते णं से पउमणाभे दारुएणं सारहिणा एवं वुत्ते समाणे आसुरत्ते तिवलिं भिउडिं निडाले साहट्टु एवं वदासी—" णो अप्पिणामि णं अहं देवाणुप्पिया ! कण्हस्स वासुदेवस्स दोवतिं, एस णं अहं सयमेव जुज्झसज्जो णिग्गच्छामि " त्ति कट्टु दारुयं सारहिं एवं वदासी—" केवलं भो ! रायसत्थेसु दूये अवज्झे त्ति कट्टु असक्कारिय असम्माणिय अवद्दारेणं णिच्छुभावेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते पद्मनाभ राजा दारुक नामना सारथिए आ प्रमाणे कहे सते तत्काळ नेत्र रक्त करी क्रोधथी कपाळमां त्रण वळीयावाळी भृकुटिने चडावी आ प्रमाणे बोल्यो.—" हे देवानुप्रिय ! हुं कृष्ण वासुदेवने द्रौपदी पाछी आपीश नहीं, अने आ हुं पोते ज युद्ध करवा सज्ज थइने नीकळुं छुं." एम कहीने फरीथी दारुक नामना सारथिने तेणे आ प्रमाणे कह्युं—" हे दूत ! राजनीतिना शास्त्रमां केवळ दूत अवध्य छे (अर्थात् ते कारणथी हुं तने मारतो नथी)" एम कही तेने सत्कार सन्मान कर्या विना पाछळना द्वारथी काढी मूक्यो.

मू०—तते णं से दारुए सारही पउमणाभेणं असक्कारिय जाव निच्छूढे समाणे जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल कण्हं जाव एवं वदासी—" एवं खलु अहं सामी ! तुब्भं वयणेणं जाव णिच्छुभावेति "।

अर्थ—त्यारपछी ते दारुक नामनो सारथि पद्मनाभ राजाए सत्कार कर्या विना यावत् पाछला द्वारवडे काढी मूकायो त्यारे ते ज्यां कृष्ण वासुदेव हता त्यां आव्यो. आवीने बे हाथ जोडी तेणे कृष्ण वासुदेवने यावत् आ प्रमाणे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे हे स्वामी ! हुं तमारा वचनवडे पद्मनाभ राजा पासे गयो हतो विगेरे पूर्ववत् कहेवुं, यावत् तेणे मने पाछला द्वारथी काढी मूक्यो."

मू०—तते णं से पउमणाभे बलवाउयं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—" खिप्पामेव भो

देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह "। तयाणंतरं च णं छेयायरियउवदेसमइविकप्पणाविगप्पेहिं जाव उवणेति ।

अर्थ—त्यारपछी (आ तरफ) ते पद्मनाभ राजाए सेनापतिने बोलाव्यो. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं–" हे देवानुप्रिय ! पट्टाभिषेक करेला हस्तीरत्नने सज्ज करीने लाव. " त्यारपछी (ते सांभळीने) निपुण आचार्य (कळाचार्य) ना उपदेशथी (शीखववाथी) उत्पन्न थयेली बुद्धिनी कल्पनाना विकल्पोवडे निपुण पुरुषो(मावतो)ए यावत् पट्टाभिषेक करेला हस्तीरत्नने सज्ज करी पद्मनाभ राजा पासे प्राप्त कर्यो.

मू०—तते णं से पउमनाहे सन्नद्ध जाव अभिसेयं दुरूहति, दुरुहित्ता हयगय जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

अर्थ—त्यारपछी ते पद्मनाभ राजा सन्नद्ध–सज्ज थइ यावत् पट्टाभिषेक करेला ते हाथी उपर आरूढ थयो. आरूढ थइने घोडा. हाथी, सुभटो विगेरे चतुरंगी सेना सहित ज्यां कृष्ण वासुदेव हता त्यां जवाने नीकळ्यो.

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे पउमणाभं रायाणं एज्जमाणं पासति, पासित्ता ते पंच पंडवे एवं वदासी–" हं भो दारगा ! किं णं तुब्भे पउमणाभेणं सद्धिं जुज्झिहिह उयाहु पेच्छिहिह ?"।

१ शणगारवानी रचना करवाना प्रकारोवडे.

अर्थ—त्यारपछी ते कृष्ण वासुदेवे पद्मनाभ राजाने आवतो जोयो. जोइने ते पांच पांडवोने आ प्रमाणे कह्युं—" हे बाळको ! शुं पद्मनाभनी साथे तमे युद्ध करशो के दूर रहीने जोशो ? (हुं युद्ध करुं अने तमे जोशो ?)".

मू०—तते णं ते पंच पंडवा कण्हं वासुदेवं एवं वदासी—" अम्हे णं सामी ! जुज्झामो, तुब्भे पेच्छह "।

अर्थ—त्यारे ते पांच पांडवोए कृष्ण वासुदेवने आ प्रमाणे कह्युं—" हे स्वामी ! अमे युद्ध करशुं, तमे दूर रहीने जुओ. "

मू०—तते णं पंच पंडवे सन्नद्ध जाव पहरणा रहे दुरूहंति, दुरूहित्ता जेणेव पउमणाभे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एवं वदासी—" अम्हे पउमणाभे वा राय " त्ति कट्टु पउमनाभेणं सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते पांच पांडवो सन्नद्ध-सज्ज थइ यावत् शस्त्रो धारण करी रथमां बेठा. बेसीने ज्यां पद्मनाभ राजा हतो त्यां आव्या. आवीने आ प्रमाणे बोल्या—" आजे अमे अथवा पद्मनाभ राजा. " (बेमांथी एक जीवता रहेशुं.) आ प्रमाणे बोली पद्मनाभनी साथे युद्ध करवा लाग्या.

मू०—तते णं से पउमनाभे राया ते पंच पंडवे खिप्पामेव हयमहियपवरविवडियचिन्धद्धयप-

डागा जाव दिसोदिसिं पडिसेहेति ।

अर्थ—त्यारे ते पदुमनाभ राजाए ते पांचे पांडवोने शीघ्रपणे शस्त्रवडे प्रहार कर्या, तेमना अहंकारने मथी नांख्यो, तेमना श्रेष्ठ चिन्हभूत ध्वजा पताकाने पाडी दीधी, यावत् तेमने दिशादिशामां नसाडी दीधा.

मू०—तते णं ते पंच पंडवा पउमणाभेणं रण्णा हयमहियपवरविवडिय जाव पडिसेहिया समाणा अत्थामा जाव अधारणिज्ज त्ति कट्टु जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते पांच पांडवो पदुमनाभ राजाए शस्त्रवडे हणया, अहंकारना मथवावडे मथन कर्या अने श्रेष्ठ चिन्हरूप ध्वजापताकाने पाडी दीधी यावत् दिशादिशामां नसाड्या सता स्थाम (बळ) रहित थया यावत् शत्रुसैन्यने धारण (निराकरण) करवामां अशक्त थया एम जाणी ज्यां कृष्ण वासुदेव हता त्यां आव्या.

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं वदासी—" कहण्णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! पउमणाभेण रन्ना सर्द्धि संपलग्गा ? " ।

अर्थ—ते वखते ते कृष्ण वासुदेवे ते पांच पांडवोने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रियो ! तमे पदुमनाभ राजानी साथे केवी रीते (केवी शरत करीने) युद्ध करवा लाग्या हता ? "

मू—तते णं ते पंच पंडवा कण्हं वासुदेवं एवं वदासी—" एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे तुब्भेहिं

अब्भणुन्नाया समाणा सन्नद्ध रहे दुरूहामो दुरूहित्ता जेणेव पउमणाभे जाव पडिसेहेति ”।

अर्थ—त्यारे ते पांच पांडवोए कृष्ण वासुदेवने आ प्रमाणे कह्युं—“ आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! अमे तमारावडे आज्ञा अपाया सता (तमे अमने आज्ञा आपी त्यारे) सज्ज थइने रथपर आरूढ थया. आरूढ थइने ज्यां पद्मनाभ हतो त्यां गया विगेरे सर्व पूर्ववत् कहेवुं. यावत् तेणे अमने नसाडी दीधा. ”

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं वदासी—“ जति णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! एवं वयंता अम्हे णो पउमणाभे राय त्ति कट्टु पउमणाभेणं सद्धिं संपलग्गंता, तो णं तुब्भे णो पउमणाहे हयमहियपवर जाव पडिसेहंते, तं पेच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! अहं नो पउमणाभे राय त्ति कट्टु पउमनाभेणं रन्ना सद्धिं जुज्झामि.” रहं दुरूहति, दुरूहित्ता जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सेयं गोखीरहारधवलं तणसोल्लियसिंदुवारकुंदेंदुसन्निगासं नियवलस्स हरिसजणणं रिउसेण्णविणासकरं पंचजण्णं संखं परामुसति, परामुसित्ता मुहवायपूरियं करोति ।

अर्थ—त्यारे (ते सांभळीने) ते कृष्ण वासुदेवे ते पांच पांडवोने आ प्रमाणे कह्युं—“ हे देवानुप्रियो ! जो तमे एम बोल्या होत के—‘ अमे राजा, पद्मनाभ राजा नहीं ’ आ प्रमाणे कहीने पद्मनाभनी साथे युद्ध करवा लाग्या होत

तो तमने पद्मनाभ राजा हणी शकत नहीं, मथन करी शकत नहीं, यावत् दिशामां नसाडी शकत नहीं. (अर्थात् तमे बोलवामां भूल करी) तो हवे हे देवानुप्रियो ! तमे दूर रहीने जुओ. हुं ज राजा, पद्मनाभ राजा नहीं. एम प्रतिज्ञा (शरत) करीने हुं पद्मनाभ राजा साथे युद्ध करुं छुं. " आ प्रमाणे कही ते कृष्ण वासुदेव रथपर आरूढ थया. आरूढ थइने ज्यां पद्मनाभ राजा हतो त्यां आव्या. आवीने श्वेत, गायना दूध अने मोतीना हार जेवो उज्वळ, मल्लिका पुष्प, मालती पुष्प, सिंदूवार पुष्प, कुंद पुष्प अने चंद्र जेवो श्वेत, पोताना सैन्यने आनंद आपनार अने शत्रुना सैन्यनो नाश करनार पांचजन्य नामनो शंख हाथमां ग्रहण कर्यो. ग्रहण करीने मुखना वायुथी पूर्ण कर्यो (वगाड्यो).

मू०—तते णं तस्स पउमणाहस्स तेणं संखसद्देणं बलतिभाए हते जाव पडिसेहिए ।

अर्थ—त्यारे ते शंखना शब्दवडे ते पद्मनाभ राजाना सैन्यनो त्रीजो भाग हणायो, यावत् दिशादिशामां नाशी गयो.

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे धणुं परामुसति, वेढो धणुं पूरेति, पूरित्ता धणुसद्दं करेति । तते णं तस्स पउमणाभस्स दोच्चे बलतिभाए तेणं धणुसद्देणं हयमहिय जाव पडिसेहिए ।

अर्थ—त्यारपछी ते कृष्ण वासुदेवे सारंग नामनुं धनुष हाथमां लीधुं, धनुष उपर प्रत्यंचा चडावी. चडावीने धनुषनो टंकारव कर्यो. ते वखते ते पद्मनाभना सैन्यनो बीजो त्रिभाग ते धनुषना टंकारववडे हणायो, मथित थयो, यावत् दिशामां नाशी गयो.

मू०—तते णं से पउमणाभे राया तिभागबलावसेसे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्ज त्ति कट्टु सिग्घं तुरियं जेणेव अमरकंका तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अमरकंकं रायहाणिं अणुपविसति, अणुपविसित्ता दाराति पिहेति, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठति।

अर्थ—त्यारपछी ते पद्मनाभ राजा सैन्यनो त्रीजो भाग बाकी रहेवाथी अस्थाम (सामर्थ्य रहित), अबळ (बळरहित), वीर्य (पराक्रम) रहित अने पुरुषार्थना पराक्रम रहित थयो, तथा कृष्णना प्रहार धारण (सहन) करवा अथवा तेने निवारण करवा अशक्त थयो. एम जाणीने शीघ्रपणे उतावळथी ज्यां अमरकंका राजधानी हती त्यां आव्यो. आवीने अमरकंका राजधानीने विषे प्रवेश कर्यो. प्रवेश करीने नगरीना दरवाजा बंध कर्या. बंध करीने नगररोधमां सज्ज थइने रह्यो.

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव अमरकंका तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता रहं ठवेति, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणति, समोहणित्ता एगं महं णरसीहरूवं विउव्वति, विउव्वित्ता महया महया सद्देणं पाददद्दरियं करेति। तते णं से कण्हेणं वासुदेवेणं महया महया सद्देणं पाददद्दरएणं कएणं समाणेणं अमरकंका रायहाणी संभग्गपागार-

गोपुराट्टालयचरियतोरणपल्हत्थियपवरभवणसिरिघरा सरस्सरस्स धरणियले सन्निवइया ।

अर्थ—त्यारपछी ते कृष्ण वासुदेव ज्यां अमरकंका राजधानी हती त्यां आव्या. आवीने रथ उभो राख्यो. उभो राखीने रथथी नीचे उतर्या. नीचे उतरीने वैक्रियसमुद्घातवडे समुद्घात कर्यो. समुद्घात करीने एक मोटुं नरसिंहनुं रूप विकुर्व्युं. विकुर्वीने मोटा मोटा शब्दवडे पादनुं आस्फालन कर्युं (पग पछाड्या), त्यारपछी ते कृष्णवासुदेवे मोटा मोटा शब्दवडे पादना आस्फालन करवाथी अमरकंका राजधानीना प्राकार (किल्ला), गोपुर (दरवाजा), अट्टालिका (झरुखा), चरिय (किल्ला अने नगर वच्चेना मार्ग) अने तोरण (दरवाजा उपरना भाग) ए सर्व पडी गया, तथा श्रेष्ठ महेलो अने श्रीगृहो (भंडारो) चोतरफथी विशीर्ण थइ सरसर (धस) एवा शब्द करता पृथ्वीतळने विषे पडी गया.

मू०—तते णं से पउमणाभे राया अमरकंकं रायहाणिं संभग्ग जाव पासित्ता भीए दोवतिं देविं सरणं उवेति । तते णं सा दोवई देवी पउमनाभं रायं एवं वदासी—" किण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! न जाणसि कण्हस्स वासुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स विप्पियं करेमाणे ममं इह हव्वमाणेसि ? तं एवमवि गए गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! ण्हाए उल्लपडसाडए अवचूलगवत्थणियत्थे अंतेउरपरियालसंपरिवुडे अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय ममं पुरतो काउं कण्हं वासुदेवं करयल पाय-

पडिए सरणं उवेहि, पणिवइयवच्छला णं देवाणुप्पिया ! उत्तमपुरिसा ।

अर्थ—त्यारपछी ते पद्मनाभ राजा अमरकंका राजधानीने भांगेली यावत् जोइने भय पाम्यो. तेथी ते द्रौपदी देवीने शरणे गयो. त्यारे ते द्रौपदी देवीए पद्मनाभ राजाने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रिय ! पुरुषोने मध्ये उत्तम एवा कृष्णवासुदेवनुं विप्रिय (अप्रिय) करता एवा तमे मने अहीं शीघ्र आणी छे. एम शुं तमे नहोता जाणता ? तो पण आटलुं थया छतां पण हे देवानुप्रिय ! तमे जाओ, स्नान करी, पहेरेलुं अने ओढेलुं ए बन्ने वस्त्रो जळवडे आर्द्र (नीतरता) राखी पहेरेला वस्त्रनी चूला (छेडा) अधोमुख (छुटा-मोकळा) राखी अंतःपुरनी राणीओ विगेरे परिवारने साथे राखी प्रधान अने श्रेष्ठ रत्नोनी भेट लइ तथा मने आगळ करी कृष्णवासुदेवने बे हाथ जोडी तेना पगमां पडी तेने शरणे जाओ. हे देवानुप्रिय ! उत्तम पुरुषो प्रणाम करनारा मनुष्योपर निरंतर प्रसन्न ज होय छे. (अर्थात् आ रीते तेने शरणे जवाथी ते उत्तम पुरुष तमारापर प्रसन्न थशे. आ सिवाय बीजो कोइ उपाय करवाथी ते प्रसन्न थशे नहीं.)

मू०—तते णं से पउमनाभे दोवतीए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता ण्हाए जाव सरणं उवेति, उवइत्ता करयल एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते पद्मनाभ राजाए द्रौपदी देवीनो आ अर्थ (वचन) अंगीकार कर्यो. अंगीकार करी तेना कहेवा प्रमाणे स्नान विगेरे करी यावत् ते कृष्णवासुदेवने शरणे गया. जइने बे हाथ जोडी पगमां पडी आ प्रमाणे बोल्या.—

मू०—दिट्ठा णं देवाणुप्पियाणं इड्ढी जाव परक्कमे, तं खामेमि णं देवाणुप्पिया ! जाव खमंतु णं जाव णाहं भुज्जो भुज्जो एवं करणयाए" त्ति कट्टु पंजलिवुडे पायवडिए कण्हस्स वासुदेवस्स दोवतिं देविं साहत्थिं उवणेति ।

अर्थ—आप देवानुप्रियनी ऋद्धि यावत् पराक्रम में जोया. तेथी हे देवानुप्रिय ! हुं तमने खमावुं छुं, यावत् तमे मने क्षमा करो. हुं फरी फरी आवुं कार्य नहीं करुं." आ प्रमाणे कही बे हाथ जोडी तेना पगमां पडी तेणे कृष्ण वासुदेवने पोताने हाथे द्रौपदी देवी आपी–सोंपी.

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे पउमणाभं एवं वदासी—"हं भो पउमणाभा ! अप्पत्थियपत्थिया ! किण्णं तुमं ण जाणसि मम भगिणिं दोवतिं देविं इह हव्वमाणमाणे ? तं एवमवि गए णत्थि ते ममाहिंतो इयाणिं भयमत्थि" त्ति कट्टु पउमणाभं पडिविसज्जेति, पडिविसज्जित्ता दोवतिं देविं गिण्हति, गिण्हित्ता रहं दुरूहेति, दुरूहित्ता जेणेव पंच पंडवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पंचण्हं पंडवाणं दोवतिं देविं साहत्थिं उवणेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कृष्ण वासुदेवे पद्मनाभ राजाने आ प्रमाणे कह्युं–" हे अप्रार्थित (मृत्यु) नी प्रार्थना करनार

पद्मनाभ ! शुं तुं नथी जाणतो के मारी बहेन द्रौपदी देवीने तुं शीघ्र अहीं लाव्यो छे ? तो आटलुं गया (थया) छतां पण एवुं कांइ नथी के हवे तारे मारा थकी भय होय." आ प्रमाणे कही तेणे पद्मनाभ राजाने रजा आपी, रजा आपीने द्रौपदी देवीने ग्रहण करी, ग्रहण करीने रथ उपर चड्या, चडीने ज्यां पांच पांडवो हता त्यां आव्या, आवीने पांच पांडवोने पोताने हाथे द्रौपदी देवी सोंपी.

मू०—तते णं से कण्हे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ १२४ ॥

अर्थ—त्यारपछी पांच पांडवो सहित पोते छठ्ठा एवा कृष्ण वासुदेव छ रथमां बेशी लवणसमुद्रना मध्यभागे थइने ज्यां जंबूद्वीप नामनो द्वीप छे अने ज्यां भरतक्षेत्र छे, त्यां जवा माटे चाल्या. १२४.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं धायतिसंडे दीवे पुरच्छिमद्धे भारहे वासे चंपा णामं णयरी होत्था । पुण्णभद्दे चेतिए ।

अर्थ—ते काळे ते समये धातकीखंड नामना द्वीपना पूर्व दिशाना अर्ध भागने विषे भरतक्षेत्र छे. तेमां चंपा नामनी नगरी हती. पूर्णभद्र नामनुं चैत्य हतुं.

मू०—तत्थ णं चंपाए णयरीए कविले णामं वासुदेवे राया होत्था महया हिमवंत, वण्णओ ।

अर्थ—ते चंपा नगरीने विषे कपिल नामना वासुदेव राजा हता. ते मोटा हिमवंत जेवा हता. विगेरे वर्णन कहेवुं.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं मुणिसुव्वए अरहा चंपाए पुण्णभद्दे समोसढे, कपिले वासुदेवे धम्मं सुणेति ।

अर्थ—ते काळे ते समये मुनिसुव्रत नामना अरिहंत चंपा नगरीनी बहार पूर्णभद्र नामना चैत्यमां समवसर्या. कपिल वासुदेव आवी धर्म सांभळवा लाग्या.

मू०—तते णं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयस्स अरहतो धम्मं सुणेमाणे कण्हस्स वासुदेवस्स संखसद्दं सुणेति ।

अर्थ—ते वखते ते कपिल वासुदेवे मुनिसुव्रत नामना अरिहंत पासे धर्म सांभळता सता कृष्ण वासुदेवना शंखनो शब्द सांभळ्यो.

मू०—तते णं तस्स कविलस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए समुप्पज्जित्था—" किं मण्णे धायइसंडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे ? जस्स णं अयं संखसद्दे ममं पि व मुहवायपूरिते वियंभति. " कविले वासुदेवे सद्दार्ति सुणेइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते कपिल वासुदेवने आवा प्रकारनो अध्यवसाय (विचार) उत्पन्न थयो—" हुं मानुं छुं के शुं आ धातकीखंड द्वीपना भरतक्षेत्रमां बीजो वासुदेव उत्पन्न थयो छे के जेनो आ शंखशब्द मारा मुखना वायुए पूर्ण थयो होय (वगाड्यो होय) तेवो विलास करे छे (संभळाय छे) ? " एवो शंखशब्द कपिल वासुदेवे सांभळ्यो.

मू०—मुणिसुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं वदासी—" से णूणं ते कविला ! वासुदेवा ! मम अंतिए धम्मं णिसामेमाणस्स संखसद्दं आकण्णित्ता इमेयारूवे अब्भत्थिए समुप्पण्णे—' किं मण्णे जाव वियंभइ ' से णूणं कविला ! वासुदेवा ! अयमट्ठे समट्ठे " ? । " हंता अत्थि " ।

अर्थ—मुनिसुव्रत तीर्थंकरे कपिल वासुदेवने आ प्रमाणे कह्युं—" निश्चे हे कपिल ! वासुदेव ! मारी पासे धर्म सांभळतां तमने शंखनो शब्द सांभळी आवा प्रकारनो अध्यवसाय उत्पन्न थयो के—' हुं मानुं छुं के शुं आ भरतक्षेत्रमां बीजो वासुदेव उत्पन्न थयो के जेनो यावत् आ शंखशब्द विलास पामे छे (संभळाय छे) ? ' तो हे कपिल ! वासुदेव ! आ हुं कहुं छुं ते अर्थ (वात) सत्य छे ? " वासुदेवे कह्युं—" हा, सत्य छे. "

मू०—" नो खलु कपिला ! वासुदेवा ! एवं भूयं वा भवइ वा भविस्सइ वा जन्नं एगे खेत्ते एगे जुगे एगे समए दुवे अरहंता वा चक्कवट्टी वा बलदेवा वा वासुदेवा वा उप्पज्जिसु वा उप्प-

ज्जिंति वा उप्पज्जिस्संति वा । एवं खलु वासुदेवा ! जंबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरनयराओ पंडुस्स रण्णो सुण्हा पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवती देवी तव पउमणाभस्स रण्णो पुव्वसंगतिएणं देवेणं अमरकंकाणयरिं साहरिया । तते णं से कण्हे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं अमरकंकं रायहाणिं दोवतीए देवीए कूवं हव्वमागए । तते णं तस्स कण्हस्स वासुदेवस्स पउमणाभेणं रण्णा सद्धिं संगामं संगामेमाणस्स अयं संखसद्दे तव मुहवाय-पूरिते इव इट्ठे कंते इहेव वियंभति ” ।

अर्थ—श्रीमुनिसुव्रत जिनेश्वरे कह्युं-“हे कपिल ! वासुदेव ! आ वात थइ नथी, थती नथी, अथवा थशे नहीं, के एक क्षेत्रमां, एक युगमां अथवा एक समयमां बे तीर्थंकर, बे चक्रवर्ती, बे बळराम अथवा बे वासुदेव उत्पन्न थया होय, उत्पन्न थता होय के उत्पन्न थवाना होय, परंतु हे कपिल ! वासुदेव ! आ तो जंबूद्वीप नामना द्वीपथी भरतक्षेत्रमांथी हस्तिनापुर नगरमांथी पांडु राजानी स्नुषा (पुत्रवधू) अने पांच पांडवोनी भार्या द्रौपदी देवीने तारा पद्मनाभ नामना राजाए पूर्व संगतिक (मित्र) देवनी पासे पोतानी अमरकंका नगरीमां हरण करावी छे, तेथी पांच पांडवो सहित पोते जेमां छठ्ठा छे एवा ते कृष्ण वासुदेव छ रथमां बेशीने अमरकंका राजधानीमां द्रौपदी देवीनी वहारे (मददे) शीघ्रपणे आव्या छे. तेथी ते कृष्ण वासुदेव पद्मनाभ राजा साथे संग्राम करे छे तेनो आ शंखशब्द छे के जे तारा मुखना वायुथी पूरायो होय तेम

इष्ट अने कांत (मनोहर) एवो तेनो शंखशब्द अहीं विलास करे छे-अहीं सुधी तारा सांभळवामां आवे छे. "

मू०-तए णं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी- " गच्छामि णं अहं भंते ! कण्हं वासुदेवं उत्तमपुरिसं पासामि ।

अर्थ—त्यारे ते कपिल वासुदेवे मुनिसुव्रत तीर्थंकरने वंदना करी, नमस्कार कर्या. वंदना नमस्कार करी आ प्रमाणे कह्युं—" हे भगवान ! हुं जाउं अने पुरुषोने विषे उत्तम एवा ते कृष्ण वासुदेवने जोउं-तेनां दर्शन करुं. "

मू०-तए णं मुणिसुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं वदासी-" नो खलु देवाणुप्पिया ! एवं भूयं वा भवति वा भविस्सइ वा जण्णं अरहंता वा अरहंतं पासंति चक्कवट्टी वा चक्कवट्टिं पासंति बलदेवा वा बलदेवं पासंति वासुदेवा वा वासुदेवं पासंति । तह वि य णं तुमं कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतिवयमाणस्स सेयापीयाहिं धयग्गातिं पासिहिसि " ।

अर्थ—त्यारे मुनिसुव्रत तीर्थंकरे कपिल वासुदेवने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रिय ! आवुं थयुं नथी, थतुं नथी अने थशे पण नहीं, के एक अरिहंत बीजा अरिहंतने जुए, एक चक्रवर्ती बीजा चक्रवर्तीने जुए, एक बळदेव बीजा बळदेवने जुए, के एक वासुदेव बीजा वासुदेवने जुए. तोपण हे कपिल वासुदेव ! लवणसमुद्रना मध्यभागे थइने जता एवा ते

कृष्ण वासुदेवनी श्वेत अने पीत एवी ध्वजाना अग्रभागने तमे जोइ शकशो. "

मू०—तते णं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयं वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता हत्थिखंधं दुरूहति, दुरूहित्ता सिग्घं सिग्घं जेणेव वेलाउले तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतिवयमाणस्स सेयापीयाहिं धयग्गानिं पासति, पासित्ता एवं वयइ—" एस णं मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतीवयति " त्ति कट्टु पंचयन्नं संखं परामुसति मुहवायपूरियं करेति ।

अर्थ—त्यारपछी (ते सांभळीने) कपिल वासुदेवे श्रीमुनिसुव्रत तीर्थंकरने वंदना करी, नमस्कार कर्या. वंदना नमस्कार करी ते वासुदेव हस्तीना स्कंधपर आरूढ थया. आरूढ थइने शीघ्र शीघ्र ज्यां वेलाकूल (लवणसमुद्रनो किनारो) हतो त्यां आव्या. आवीने लवणसमुद्रना मध्य भागे थइने जता एवा कृष्ण वासुदेवनी श्वेत पीत ध्वजाना अग्रभाग जोया, जोइने ते आ प्रमाणे बोल्या.—" पुरुषोने विषे उत्तम एवा आ मारी जेवा पुरुष कृष्ण वासुदेव लवणसमुद्रना मध्य भागवडे जाय छे. " एम बोलीने तेणे पोतानो पांचजन्य शंख हाथमां लीधो, लइने पोताना मुखना वायुथी पूर्ण कर्यो—वगाड्यो.

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स संखसद्दं आयन्नेति, आयन्नित्ता पंचयन्नं

जाव पूरियं करेति । तते णं दो वि वासुदेवा संखसद्दसामायारिं करेति ।

अर्थ—ते वखते ते कृष्ण वासुदेवे कपिल वासुदेवना शंखनो शब्द सांभळ्यो. सांभळीने तेणे पण पोताना पांचजन्य शंखने यावत् वायुथी पूर्ण कर्यो—वगाड्यो. त्यारपछी ते बन्ने वासुदेवोए शंखना शब्दनी सामाचारी करी—शंखना शब्द द्वारा मेलाप कर्यो अथवा उत्तर प्रत्युत्तर कर्या.

मू०—तते णं से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकंका तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अमरकंकं रायहाणिं संभग्गतोरणं जाव पासति, पासित्ता पउमणाभं एवं वदासी—" किण्णं देवाणुप्पिया ! एसा अमरकंका रायहाणी संभग्ग जाव सन्निवइया ? " ।

अर्थ—त्यारपछी ते कपिल वासुदेव ज्यां अमरकंका राजधानी हती त्यां आव्या. आवीने जेना तोरण विगेरे भांगी गया हता एवी ते अमरकंका राजधानीने यावत् जोइ. जोइने पद्मनाभ राजाने आ प्रमाणे कह्युं (पूछ्युं)—" हे देवानुप्रिय ! केम आ अमरकंका भांगी सती यावत् पडी गयेली छे ? "

मू०—तते णं से पउमणाहे कविलं वासुदेवं एवं वदासी—" एवं खलु सामी ! जंबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इहं हव्वमागम्म कण्हेणं वासुदेवेणं तुब्भे परिभूय अमरकंका जाव सन्निवाडिया "।

अर्थ—त्यारे ते पद्मनाभ राजाए कपिल वासुदेवने आ प्रमाणे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे हे स्वामी ! जंबूद्वीप नामना द्वीपना भरतक्षेत्रमांथी अहीं शीघ्रपणे आवीने कृष्ण वासुदेवे तमारो पराभव करीने (तमने पण नहीं गणीने) आ अमरकंका नगरीने यावत् पाडी दीधी छे (आ स्थितिए पहोंचाडी छे). "

मू०—तते णं से कविले वासुदेवे पउमणाहस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा पउमणाहं एवं वदासी—" हं भो पउमणाभा ! अपत्थियपत्थिया ! किं णं तुमं न जाणसि मम सरिसपुरिसस्स कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणे ? " आसुरुत्ते जाव पउमणाहं णिव्विसयं आणवेति, पउमणाहस्स पुत्तं अमरकंकारायहाणीए महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचति, जाव पडिगते ॥ १२५ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते कपिल वासुदेवे पद्मनाभनी पासेथी आ अर्थ (वृत्तांत) सांभळी पद्मनाभने आ प्रमाणे कह्युं—" अरे पद्मनाभ ! अप्रार्थित (मृत्यु) नी प्रार्थना करनार ! शुं तुं नथी जाणतो के मारी जेवा उत्तम पुरुष कृष्ण वासुदेवनुं तें अप्रिय कर्युं छे (तेनी साथे शत्रुता करी छे) ? " एम कही तेणे तत्काळ रोष करी यावत् पद्मनाभने देशनीकालनी आज्ञा आपी. तथा ते पद्मनाभना पुत्रने अमरकंका राजधानीने विषे मोटा मोटा राज्याभिषेकवडे अभिषेक कर्यो. पछी ते कपिल वासुदेव पोताने स्थाने गया. १२५.

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतिवयति गंगं उवागए ते पंच

पंडवे एवं वदासी–" गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! गंगामहानदिं उत्तरह जाव ताव अहं सुट्ठियं लवणाहिवइं पासामि " ।

अर्थ—आ तरफ ते कृष्ण वासुदेव लवणसमुद्रना मध्यभागवडे जता सता गंगा नदीनी पासे आव्या, त्यारे तेणे पांच पांडवोने आ प्रमाणे कह्युं–" हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ अने जेटलामां गंगा नदीने उतरो, तेटलामां हुं लवण समुद्रना अधिपति सुस्थित देवने जोउं–मळी आवुं. "

मू०–तते णं ते पंच पंडवा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा जेणेव गंगा महानदी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए णावाए मग्गणगवेसणं करेंति, करित्ता एगट्ठियाए नावाए गंगामहानदिं उत्तरंति, उत्तरित्ता अण्णमण्णं एवं वयंति—

अर्थ—त्यारपछी ते पांच पांडवोने कृष्णवासुदेवे आ प्रमाणे कह्युं, त्यारे तेओ ज्यां गंगा महानदी हती त्यां आव्या. आवीने एक नानी होडीनी मार्गणा गवेषणा (शोध–खोळ) करी, करीने ते नानी होडीवडे गंगा महानदीने उतर्या. उतरीने परस्पर आ प्रमाणे कहेवा लाग्या.—

मू०–" पहू णं देवाणुप्पिया ! कण्हे वासुदेवे गंगामहाणदिं बाहाहिं उत्तरित्तए ? उदाहु णो

पभू उत्तरित्तए ?" त्ति कट्टु एगट्ठियाओ नावाओ णूमेंति, णूमित्ता कण्हं वासुदेवं पडिवालेमाणा पडिवालेमाणा चिट्ठंति ।

अर्थ—" हे देवानुप्रियो ! कृष्णवासुदेव गंगा महानदीने पोताना बाहुवडे उतरवाने समर्थ छे (हशे) ? के उतरवाने समर्थ नथी (नहीं होय) ? " आ प्रमाणे करी (कही) ते नानी होडीने गुप्त करी दीधी, गुप्त करीने कृष्णवासुदेवनी राह जोता जोता रह्या.

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं पासति, पासित्ता जेणेव गंगा महाणदी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेति, करित्ता एगट्ठियं नावं अपासमाणे एगाए बाहाए रहं सतुरगं ससारहिं गेण्हइ, एगाए बाहाए गंगं महाणदिं बासट्ठिं जोयणातिं अद्धजोयणं च विच्छिन्नं उत्तरिउं पयत्ते यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते कृष्ण वासुदेवे लवणसमुद्रना अधिपति सुस्थित नामना देवने जोयो–तेने मळ्या, मळीने ज्यां गंगा महानदी हती त्यां आव्या. आवीने नानी होडीनी चोतरफ सर्वत्र मार्गणा गवेषणा (खोळ शोध) करी. करीने नानी होडीने नहीं जोता सता पोताना एक बाहुवडे अश्वो अने सारथि सहित रथने ग्रहण कर्यो, अने एक (बीजी)

बाहुवडे बासठ योजन अने अर्ध योजन एटले साडी बासठ योजन विस्तारवाळी गंगा महानदीने उतरवा माटे प्रयत्नवाळा थया.

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे गंगामहाणदीए बहुमज्झदेसभागं संपत्ते समाणे संते तंते परितंते बद्धसेए जाए यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते कृष्ण वासुदेव गंगा महानदीना मध्य भागने पामे सते (पहोंच्या त्यारे) श्रांत–थाकी गया, तांत–वहाणनी इच्छावाळा थया, परितांत–सर्व प्रकारे खेदयुक्त थया, तथा बद्धस्वेद–तेना शरीरपर परसेवो थयो. एवा ते श्रमित थया.

मू०—तते णं कण्हस्स वासुदेवस्स इमे एयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–" अहो णं पंच पंडवा महाबलवगा, जेहिं गंगा महाणदी बासट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च विच्छिण्णा बाहाहिं उत्तिण्णा, इच्छंतएहिं णं पंचेहिं पंडवेहिं पउमणाभे राया जाव णो पडिसेहिए" ।

अर्थ—त्यारे कृष्ण वासुदेवने आ आवा प्रकारनो अध्यवसाय (विचार) यावत् उत्पन्न थयो के–" अहो ! पांच पांडवो महा बळवान छे के जेओ बासठ योजन अने अर्ध योजन एटले साडी बासठ योजन विस्तारवाळी गंगा महानदीने

उतरी गया, परंतु कोइ पण इच्छाए करीने (कारणे करीने) ते पांच पांडवोए ते पद्मनाभ राजाने हण्यो नहीं, यावत् तेने दिशा दिशामां नसाड्यो नहीं, जीति शक्या नहीं."

मू०—तते णं गंगा देवी कण्हस्स इमं एयारूवं अब्भत्थियं जाव जाणित्ता थाहं वितरति ।

अर्थ---ते वखते गंगा देवीए कृष्ण वासुदेवना आ आवा प्रकारना अध्यवसायने यावत् जाणीने तेने जळनो स्ताघ (ताग) आप्यो. (जळने भूमिरूप करी दीधुं.)

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे मुहुत्तंतरं समासासति, समासासित्ता गंगामहाणदिं बावट्ठिं जाव उत्तरति, उत्तरित्ता जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पंच पंडवे एवं वदासी—

अर्थ---ते वखते ते कृष्ण वासुदेवे त्यां एक मुहूर्त सुधी विश्रांति लीधी. विश्रांति लइने साडी बासठ योजन विस्तारवाळी गंगा महानदीने यावत् उतरी गया. उतरीने ज्यां पांच पांडवो हता त्यां आव्या. आवीने पांच पांडवोने आ प्रमाणे कह्युं---

मू०—" अहो णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! महाबलवगा, जेणं तुब्भेहिं गंगा महाणदी बासट्ठिं जाव उत्तिण्णा, इच्छंतएहिं तुब्भेहिं पउम जाव णो पडिसेहिए ।

१ मनना अभिप्राये करीने.

अर्थ— ' अहो देवानुप्रियो ! तमे महा बळवान छो, केमके तमे साडी बासठ योजनना विस्तारवाळी गंगा महानदीने यावत् उतरी गया. तेथी मने एम लागे छे के कोइ पण इच्छाए (कारणे) करीने तमे पद्मनाभ राजाने यावत् नसाड्यो नथी-जीत्या नथी. "

मू०—तते णं ते पंच पंडवा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्तासमाणा कण्हं वासुदेवं एवं वदासी— " एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे तुब्भेहिं विसज्जिया समाणा जेणेव गंगा महाणदी तेणेव उवागच्छामो, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए मग्गणगवेसणं तं चेव जाव णूमेमो, तुब्भे पडिवालेमाणा चिट्ठामो "।

अर्थ— त्यारे ते पांच पांडवो कृष्ण वासुदेवे आ प्रमाणे कह्या सता कृष्ण वासुदेव प्रत्ये आ प्रमाणे बोल्या.—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! तमारावडे अमे रजा अपाया सता (तमे अमने रजा आपी त्यारे) ज्यां गंगा महानदी हती त्यां आव्या. आवीने नानी होडीनी मार्गणा गवेषणा (शोध खोळ) करी, विगेरे सर्व पूर्ववत् कहेवुं. यावत् अमे ते होडीवडे गंगा उतरीने आपनुं बळ जोवा माटे होडीने छुपावी दीधी अने तमारी राह जोता सता अहीं रह्या छीए. "

१ मनना अभिप्राये.

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे तेसिं पंचण्हं पंडवाणं एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते जाव तिवलियं एवं वदासी—" अहो ! णं जया मए लवणसमुद्दं दुवे जोयणसयसहस्सा विच्छिण्णं वीतीवइत्ता पउमणाभं हयमहिय जाव पडिसेहित्ता अमरकंका संभग्ग दोवती साहत्थिं उवणीया तया णं तुब्भेहिं मम माहप्पं ण विण्णायं इयाणिं जाणिस्सह " त्ति कट्टु लोहदंडं परामुसति, पंचण्हं पंडवाणं रहे चूरेति, चूरित्ता णिव्विसए आणवेति, आणवित्ता तत्थ णं रहमद्दणे नामं कोट्टे णिविट्ठे।

अर्थ—ते वखते ते कृष्ण वासुदेव ते पांच पांडवोनो आ अर्थ (वृत्तांत) सांभळी हृदयमां धारी तत्काळ क्रोध पामी यावत् त्रण वळीयावाळी भृकुटिने कपाळमां चडावी आ प्रमाणे बोल्या.—" अहो ! ज्यारे में बे लाख योजनना विस्तारवाळा लवणसमुद्रने उतरी पद्मनाभ राजाने हणी, मथन करी, यावत् नसाडी, अमरकंका नगरीने भांगी, द्रौपदीने पोताने हाथे प्राप्त करी, त्यारे तमे मारुं माहात्म्य जाण्युं नहीं, ते तमे हवे जाणशो. " आ प्रमाणे कही तेणे लोहदंडने हाथमां ग्रहण कर्यो, ग्रहण करी पांच पांडवोना रथोने चूर्ण कर्या, चूर्ण करी देशनीकालनी आज्ञा आपी, आज्ञा आपीने ते ठेकाणे रथमर्दन नामनो कोट स्थापन कर्यो. (ते नामनुं तीर्थ थयुं.)

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव सए खंधावारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सएणं

खंधावारेणं सद्धिं अभिसमन्नागए यावि होत्था।

अर्थ—त्यारपछी ते कृष्णवासुदेव ज्यां पोतानो स्कंधावार (सैन्यनो पडाव) हतो त्यां आव्या, आवीने पोताना स्कंधावार साथे मळ्या.

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव बारवई णयरी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता बारवतिं णयरिं अणुपविसति ॥ १२६ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते कृष्णवासुदेव ज्यां द्वारका नगरी हती, त्यां आव्या. आवीने द्वारका नगरीमां प्रवेश कर्यो.१२६.

मू०—तते णं ते पंच पंडवा जेणेव हत्थिणाउरे णयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता जेणेव पंडू तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वदासी–" एवं खलु ताओ ! अम्हे कण्हेणं णिव्विसया आणत्ता "।

अर्थ—त्यारपछी ते पांच पांडवो ज्यां हस्तिनापुर नगर हतुं त्यां आव्या, आवीने ज्यां पांडुराजा हता त्यां आव्या, आवीने बे हाथ जोडी यावत् आ प्रमाणे बोल्या–" आ प्रमाणे निश्चे हे पिता ! अमने कृष्णवासुदेवे देशनीकालनी आज्ञा करी छे. "

मू०—" तते णं पंडुराया ते पंच पंडवे एवं वदासी—" कहं णं पुत्ता ! तुब्भे कण्हेणं वासुदेवेणं णिव्विसया आणत्ता ? "।

अर्थ—ते वखते (ते सांभळीने) पांडुराजाए ते पांच पांडवोने आ प्रमाणे कह्युं (पूछ्युं)—" हे पुत्रो ! शा माटे तमने कृष्णवासुदेवे देशनीकालनी आज्ञा करी ? "

मू०—तते णं ते पंच पंडवा पंडुरायं एवं वयासी—" एवं खलु ताओ ! अम्हे अमरकंकातो पडिणियत्ता लवणसमुद्दं दोन्नि जोयणसयसहस्साइं वीतीवतित्ता(त्था), तए णं से कण्हे वासुदेवे अम्हे एवं वयासी—" गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! गंगामहाणदिं उत्तरह जाव चिट्ठह, ताव अहं एवं तहेव जाव चिट्ठमो, तते णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं दट्ठूण तं चेव सव्वं, नवरं कण्हस्स चिंता ण जुज्ज (वुच्च) ति जाव अम्हे णिव्विसए आणवेति "।

अर्थ—त्यारे ते पांच पांडवोए पांडुराजाने आ प्रमाणे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे हे पिता ! अमे (द्रौपदीने लइ) अमरकंका नगरीथी पाछा वळी बे लाख योजनना विस्तारवाळा लवण समुद्रने ओळंग्यो. त्यारे ते कृष्णवासुदेवे अमने आ प्रमाणे कह्युं.—" हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ; गंगानदीने उतरो, यावत् मारी राह जोता रहो, तेटलामां हुं सुस्थित देवने

जोइ (मळी) ने आवुं छुं इत्यादि पूर्ववत् कहेवुं. त्यारे अमे पण ते ज प्रमाणे नदी उतरीने होडी छुपावीने यावत् तेनी राह जोता रह्या. त्यारपछी ते कृष्णवासुदेव लवण समुद्रना अधिपति सुस्थित देवने जोइने (मळीने) आव्या विगेरे सर्व ते ज प्रमाणे कहेवुं. विशेष ए के कृष्णने जे विचार थयो हतो (अहो ! पांडवो घणा बळवान छे इत्यादि) ते अहीं कहेवो नहीं. यावत् अमने देशनीकालनी आज्ञा करी."

मू०—तए णं से पंडुराया ते पंच पंडवे एवं वयासी—" दुट्ठु णं पुत्ता ! कयं कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणेहिं "।

अर्थ—ते वखते ते पांडुराजाए ते पांच पांडवोने कह्युं—" हे पुत्रो ! कृष्णवासुदेवनुं अप्रिय करता तमे आ घणुं ज खोटुं कर्युं छे."

मू०—तते णं से पंडू राया कोंतिं देविं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—" गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया ! बारवतिं कण्हस्स वासुदेवस्स णिवेदेहि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुम्हे पंच पंडवा णिव्विसया आणत्ता, तुमं च णं देवाणुप्पिया ! दाहिणड्ढभरहस्स सामी, तं संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! ते पंच पंडवा कयरं दिसिं वा विदिसिं वा गच्छंतु ? "।

अर्थ—त्यारपछी ते पांडुराजाए कुंतीदेवीने बोलावी. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रिया ! तुं द्वारका

नगरीमां जा अने कृष्णवासुदेवने निवेदन कर के-हे देवानुप्रिय ! तमे पांच पांडवोने देशनीकालनी आज्ञा करी छे. पण हे देवानुप्रिय ! तमे दक्षिणार्ध भरतक्षेत्रना स्वामी छो. तेथी हे देवानुप्रिय ! तमे आज्ञा आपो के ते पांच पांडवो कइ दिशामां के कइ विदिशामां जाय ? (तमे ज्यां कहो त्यां जइने रहे, कारण के सर्व देश तमारो ज छे.)

मू०—तते णं सा कोंती पंडुणा एवं वुत्ता समाणी हत्थिखंधं दुरूहति, दुरूहित्ता जहा हेट्ठा जाव " संदिसंतु णं पिउत्था ! किमागमणपओअणं ? " ।

अर्थ—त्यारपछी ते कुंती देवी पांडु राजाए आ प्रमाणे कहे सते हस्तीना स्कंधपर आरूढ थइ. आरूढ थइने जेम पूर्वे कह्युं हतुं तेम द्वारका नगरीना अग्र उद्यानमां जइ कौटुंबिक पुरुषोद्वारा कृष्ण वासुदेवने कहेवराव्युं. तेणे पण सन्मुख आवी पोताना महेलमां लइ जइ यावत् पूछ्युं के-" हे पितृभगिनी (फइ) ! आज्ञा आपो. तमारे अहीं आववानुं शुं प्रयोजन (कारण) छे ? "

मू०—तते णं सा कोंती कण्हं वासुदेवं एवं वदासी-" एवं खलु पुत्ता ! तुमे पंच पंडवा णिव्विसया आणत्ता, तुमं च णं दाहिणड्ढभरह जाव विदिसिं वा गच्छंतु ? " ।

अर्थ—त्यारे ते कुंती देवीए कृष्ण वासुदेवने आ प्रमाणे कह्युं-" आ प्रमाणे निश्चे हे पुत्र ! तमे पांच पांडवोने देशनीकालनी आज्ञा आपी छे. अने तमे समग्र दक्षिणार्ध भरतना स्वामी छो तो यावत् तेओ कइ दिशा के विदिशामां

जाय ? जइने रहे. " १

मू०—तते णं से कण्हे वासुदेवे कोंतिं देविं एवं वदासी—" अपूईवयणा णं पिउत्था ! उत्तम-पुरिसा वासुदेवा बलदेवा चक्कवट्टी, तं गच्छंतु णं देवाणुप्पिए ! पंच पंडवा दाहिणिल्लं वेयालिं, तत्थ पंडुमहुरं णिवेसंतु ममं अदिट्ठसेवगा भवंतु " त्ति कट्टु कोंतिं देविं सक्कारेति सम्माणेति जाव पडिविसज्जेति ।

अर्थ—त्यारे ते कृष्ण वासुदेवे ते कुंती देवीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे पितृभगिनी (फइ) ! वासुदेव, बळदेव अने चक्रवर्ती विगेरे उत्तम पुरुषो अपूतिवचनवाळा होय छे एटले तेमनुं वचन असत्य होतुं नथी. (बोल्या पछी फरतुं नथी.) तेथी हे देवानुप्रिया ! ते पांच पांडवो दक्षिण दिशाना वेळातटे (समुद्रने कांठे) जाओ. त्यां पांडुमथुरा नामनी नवी नगरी वसावे. अने मारा अदृष्ट सेवको थइने त्यां रहे. " आ प्रमाणे कही कुंती देवीनो सत्कार कर्यो, सन्मान कर्युं, यावत् तेने रजा आपी.

मू०—तते णं सा कोंती देवी जाव पंडुस्स एयमट्ठं णिवेदेति ।

---

१ मारी दृष्टिए न आवे तेम.

अर्थ—त्यारपछी ते कुंती देवी त्यांथी नीकळी हस्तिनापुरमां आवी यावत् पांडु राजाने ते अर्थ (वृत्तांत) निवेदन कर्यो—कह्यो.

मू०—तते णं पंडू राया पंच पंडवे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—" गच्छह णं तुब्भे पुत्ता ! दाहिणिल्लं वेयालिं, तत्थ णं तुब्भे पंडुमहुरं णिवेसेह "।

अर्थ—त्यारपछी ते पांडु राजाए पांच पांडवोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे पुत्रो ! तमे दक्षिण दिशाना वेळातटे (समुद्रने कांठे) जाओ. त्यां तमे नवी पांडुमथुरा नगरी स्थापन करो (वसावो), स्थापन करीने रहो. "

मू०—तते णं पंच पंडवा पंडुस्स रण्णो जाव तह त्ति पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता सबलवाहणा हयगय हत्थिणाउराओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पंडुमहुरं नगरिं निवेसेति, निवेसित्ता तत्थ णं ते विपुलभोगसमितिसमण्णागया यावि होत्था ॥ १२७ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते पांच पांडवोए ते पांडु राजानुं वचन यावत् ' तह त्ति '—' बहु सारुं ' एम कही अंगीकार कर्युं.

अंगीकार करीने बल (सैन्य) वाहन सहित घोडा, हाथी विगेरे सहित हस्तिनापुरथी बहार नीकळ्या, नीकळीने ज्यां दक्षिण दिशानो वेळातट (समुद्रनो कांठो) हतो त्यां आव्या. आवीने नवी पांडुमथुरा नामनी नगरी स्थापन करी (वसावी). स्थापन करीने त्यां तेओ विपुल भोगना समूह सहित थया (भोग भोगवता रह्या). १२७.

मू०—तते णं सा दोवई देवी अन्नया कयाइ आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते द्रौपदी देवी एकदा कदाचित गर्भवती थइ.

मू०—तते णं सा दोवती देवी णवण्हं मासाणं जाव सुरूवं दारगं पयाया सूमालं, णिव्वत्तबारसाहस्स इमं एयारूवं जम्हा णं अम्हं एस दारए पंचण्हं पंडवाणं पुत्ते दोवतीए देवीए अत्तए तं होउ अम्हं इमस्स दारगस्स णामधेज्जं पंडुसेणे । तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो णामधेज्जं करेइ पंडुसेण त्ति ।

अर्थ—त्यारपछी ते द्रौपदी देवीए नव मास पूर्ण थया त्यारे यावत् सारा रूपवाळो अने सुकोमळ पुत्र प्रसव्यो. तेना जन्मथी बार दिवस व्यतीत थया त्यारे मातापिताने एवो अध्यवसाय (विचार) उत्पन्न थयो के—" आ अमारो दारक पांच पांडवोनो पुत्र अने द्रौपदी देवीनो आत्मज (कुक्षिथी उत्पन्न थयेलो) छे, तेथी अमारा आ दारकनुं नाम पांडुसेन हो. " एम धारी मातापिताए ते दारकनुं पांडुसेन एवुं नाम पाड्युं.

मू०—बावत्तरिं कलाओ जाव भोगसमत्थे जाए जुवराया जाव विहरति ।

अर्थ—ते पांडुसेन कुमार बहोंतेर कळामां निपुण यावत् भोगमां समर्थ थयो, अने युवराज पदवी पामी यावत् विचरवा लाग्यो.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं धम्मघोसा थेरा समोसढा । परिसा निग्गया, पंडवा निग्गया, धम्मं सोच्चा एवं वदासी—" जं णवरं देवाणुप्पिया ! दोवतिं देविं आपुच्छामो पंडुसेणं च कुमारं रज्जे ठावेमो, ततो पच्छा देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वयामो " अहासुहं, देवाणुप्पिया ! " ।

अर्थ—ते काळे ते समये धर्मघोष नामना स्थविर साधु त्यां पधार्या. तेमने वांदवा माटे पर्षदा नीकळी. पांच पांडवो पण नीकळ्या. धर्म सांभळी तेओ आ प्रमाणे बोल्या.—" हे देवानुप्रिय ! अमने वैराग्य थयो छे. परंतु विशेष ए छे के द्रौपदी देवीने अमे पूछीए, तथा पांडुसेन कुमारने राज्यपर स्थापन करीए, त्यारपछी आप देवानुप्रियनी समीपे मुंड थइने यावत् प्रव्रज्या ग्रहण करीए. " ते सांभळी गुरु बोल्या—" हे देवानुप्रियो ! जेम तमने सुख उपजे तेम करो. विलंब करशो नहीं. "

मू०—तते णं ते पंच पंडवा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता दोवतिं देविं

सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वदासी–" एवं खलु देवाणुप्पिए ! अम्हेहिं थेराणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव पव्वयामो, तुमं देवाणुप्पिए ! किं करेसि ?"।

अर्थ—त्यारपछी ते पांच पांडवो ज्यां पोतानुं घर हतुं, त्यां आव्या, आवीने द्रौपदी देवीने बोलावी, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं–" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिया ! अमे स्थविर साधुनी पासे धर्म सांभळ्यो छे तेथी यावत् अमे प्रव्रज्या ग्रहण करवाना छीए, हे देवानुप्रिया ! तुं शुं करीश. ?"

मू०—तते णं सा दोवती देवी ते पंच पंडवे एवं वदासी–" जति णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा पव्वयह ममं के अण्णे आलंबे वा जाव भविस्सति ? अहं पि य णं संसारभउव्विग्गा देवाणुप्पिएहिं सद्धिं पव्वतिस्सामि "।

अर्थ—त्यारे ते द्रौपदी देवीए ते पांच पांडवोने आ प्रमाणे कह्युं–" हे देवानुप्रियो ! जो तमे संसारना भयथी उद्वेग पामी प्रव्रज्या लेता हो तो मारे बीजुं कोण आलंबन यावत् थशे ? तेथी हुं पण संसारना भयथी उद्वेग पामी सती आप देवानुप्रियोनी साथे ज प्रव्रज्या ग्रहण करीश."

मू०—तते णं ते पंच पंडवा पंडुसेणस्स आभिसेओ जाव राया जाए जाव रज्जं पसाहेमाणे विहरति।

अर्थ—त्यारपछी ते पांच पांडवोए पांडुसेनने राज्याभिषेक कर्यो, यावत् ते राजा थयो, यावत् राज्यने पालन करतो सतो विचरवा लाग्यो.

मू०—तते णं ते पंच पंडवा दोवती य देवी अन्नया कयाइं पंडुसेणं रायाणं आपुच्छंति।

अर्थ—त्यारपछी ते पांच पांडवोए अने द्रौपदी देवीए एकदा कदाचित् पांडुसेन राजाने दीक्षा माटे पूछयुं–रजा मागी.

मू०—तते णं से पंडुसेणे राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी–" खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! निक्खमणाभिसेयं जाव उवट्ठवेह, पुरिससहस्सवाहणीओ सिबियाओ उवट्ठवेह." जाव पच्चोरुहंति, जेणेव थेरा तेणेव आलित्ते णं जाव समणा जाया, चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जंति, अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥ १२८ ॥

अर्थ—त्यारे ते पांडुसेन राजाए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं–" हे देवानुप्रियो! शीघ्रपणे दीक्षाभिषेकनी तैयारी करो, अने हजार पुरुषोए वहन करेली शिबिकाओ लावो." (ते ज प्रमाणे तेओए सर्व तैयार कर्युं विगेरे सर्व पूर्ववत् जाणवुं) यावत् पांच पांडवो अने द्रौपदी शिबिकामांथी उतर्या, उतरीने ज्यां स्थविर भग-

वंत हता त्यां आव्या अने कह्युं के–" हे भगवंत ! आ लोक आलिप्त, प्रदीप्त छे. (माटे अमने दीक्षा आपो.) इत्यादि " कही यावत् तेओ श्रमण थया. चौद पूर्वनो अभ्यास कर्यो. अभ्यास करीने घणा वर्षो सुधी छठ, अट्ठम, दशम (चार उपवास) द्वादशम (पांच उपवास) आदि अर्धमासखमण, मासखमण विगेरे तपवडे आत्माने भावता सता विचरवा लाग्या. १२८.

मू०—तते णं सा दोवती देवी सीयातो पच्चोरुहति जाव पव्वतिया सुव्वयाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए दलयति, इक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं जाव विहरति ॥ १२९ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते द्रौपदी देवी शिबिका थकी नीचे उतरी, यावत् तेणे पण दीक्षा ग्रहण करी. तेने सुव्रता नामनी आर्या (गुरुणी) ने शिष्या तरीके सोंपी. पछी तेणीए अग्यार अंगनो अभ्यास कर्यो, अभ्यास करीने घणा वर्षो सुधी छठ, अट्ठम, दशम, द्वादशम विगेरे तप करती यावत् विचरवा लागी. १२९.

मू०—तते णं थेरा भगवंतो अन्नया कयाई पंडुमहुरातो णयरीतो सहसंबवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति।

अर्थ—त्यारपछी ते स्थविर भगवंत एकदा कदाचित् पांडुमथुरा नगरीना सहस्राम्रवण नामना उद्यानथी बहार

नीकळ्या. बहार नीकळीने बहार देशमां विचरवा लाग्या.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं अरिहा अरिट्ठनेमी जेणेव सुरट्ठाजणवए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सुरट्ठाजणवयंसि संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति ।

अर्थ—ते काळे ते समये जिनेश्वर अरिष्टनेमि भगवान ज्यां सौराष्ट्र देश हतो त्यां आव्या, आवीने सौराष्ट्र देशने विषे संयमवडे अने तपवडे पोताना आत्माने भावता सता रह्या.

मू०—तते णं बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमातिक्खइ—" एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरिहा अरिट्ठनेमी सुरट्ठाजणवए जाव विहरति " ।

अर्थ—ते वखते घणा लोको परस्पर आ प्रमाणे कहेवा लाग्या—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान सौराष्ट्र देशमां यावत् विचरे छे. "

मू०—तते णं से जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वदासी—

अर्थ—ते वखते ते युधिष्ठिर विगेरे पांच साधुओए घणा लोकोनी पासेथी आ अर्थ (वृत्तांत) सांभळी एक बीजाने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कहेवा लाग्या.—

मू०—" एवं खलु देवाणुप्पिया! अरहा अरिट्ठनेमी पुव्वाणुव्पुविं जाव विहरइ, तं सेयं खलु अम्हं थेरा आपुच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं वंदणाए गमित्तए"। अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वदासी—" इच्छामो णं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा अरहं अरिट्ठनेमिं जाव गमित्तए"। " अहासुहं देवाणुप्पिया!"।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो! अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान पूर्वानुपूर्वीए (अनुक्रमे विचरता) यावत् सौराष्ट्र देशमां विचरे छे, तो आपणे स्थविर भगवंतने पूछीने (तेमनी रजा लइने) अरिहंत अरिष्टनेमि भगवानने वांदवा माटे जवुं योग्य छे." आ प्रमाणे परस्परना अर्थ (वचन) ने सर्वेए अंगीकार कर्यो, अंगीकार करी ज्यां स्थविर भगवंत हता त्यां आव्या. आवीने स्थविर भगवंतने वंदना करी, नमस्कार कर्या, वंदना नमस्कार करी आ प्रमाणे कह्युं—" हे भगवान! अमे तमारी आज्ञा पाम्या सता अरिहंत अरिष्टनेमि भगवानने यावत् वंदन करवा जवाने इच्छीए छीए." गुरुए कह्युं—" हे देवानुप्रियो! जेम तमने सुख उपजे तेम करो."

मू०—तते णं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा थेरेहिं अब्भणुन्नाया समाणा थेरे भगवंते

वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अंतियाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता मासंमासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं गामाणुगामं दूईज्जमाणा जाव जेणेव हत्थिकप्पे नयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता हत्थिकप्पस्स बहिया सहसंबवणे उज्जाणे जाव विहरंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते युधिष्ठिर विगेरे पांच साधुओ स्थविर भगवंते आज्ञा आप्या सता स्थविर भगवंतने वंदना करी, नमस्कार कर्या, वंदना नमस्कार करी स्थविर भगवंतनी पासेथी नीकळ्या, नीकळीने मास मासना निरंतर तपवडे एक गामथी बीजे गाम विहार करता यावत् ज्यां हस्तिकल्प नामनुं नगर हतुं त्यां आव्या. आवीने हस्तिकल्प नगरनी बहार सहस्राम्रवण नामना उद्यानमां यावत् रह्या.

मू०—तते णं ते जुहिट्ठिल्लवज्जा चत्तारि अणगारा मासखमणपारणए पढमाए पोरसीए सज्झायं करेंति बीयाए एवं जहा गोयमसामी, णवरं जुहिट्ठिल्लं आपुच्छंति जाव अडमाणा बहुजणसद्दं णिसामेंति—

अर्थ—त्यारपछी ते युधिष्ठिर सिवायना चार साधुओ मासखमणना पारणाने दिवसे पहेली पोरसीए सज्झाय ध्यान कर्युं, बीजी पोरसीए ध्यान कर्युं, ए प्रमाणे गौतमस्वामीनी जेम सर्व जाणवुं. विशेष ए के युधिष्ठिर अनगारने पूछ्युं. पूछीने यावत् भिक्षाने माटे अटन करतां तेमणे आ प्रमाणे घणा माणसोना शब्द सांभळ्या.—

मू०-" एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरहा अरिट्ठनेमी उज्जितसेलसिहरे मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं पंचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए जाव पहीणे "।

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् उज्जयंतगिरिना शिखर उपर पाणी रहित एक मासना अनशनवडे पांचसो छत्रीश साधुओ सहित काळधर्मने पाम्या, यावत् सर्व दुःखथी मुक्त थया (निर्वाणपद पाम्या).

मू०-तते णं ते जुहिट्ठिल्लवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हत्थिकप्पाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जेणेव जुहिट्ठिल्ले अणगारे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पच्चुवेक्खंति, पच्चुवेक्खित्ता गमणागमणस्स पडिक्कमंति, पडिक्कमित्ता एसणमणेसणं आलोएंति, आलोइत्ता भत्तपाणं पडिदंसेंति, पडिदंसित्ता एवं वदासी-

अर्थ—त्यारपछी ते युधिष्ठिर सिवायना चार अनगारो घणा लोकोनी पासेथी आ अर्थ (वृत्तांत) सांभळी हस्तिकल्प

१ पच्चक्खंति, पच्चक्खित्ता-पच्चक्खाण कर्युं पच्चक्खाण करीने. प्रत्यंतर.

नगरनी बहार नीकळ्या, नीकळीने ज्यां सहस्राम्रवण उद्यान हतुं अने ज्यां युधिष्ठिर अनगार हता त्यां आव्या, आवीने भक्तपाननी प्रत्युपेक्षणा करी, प्रत्युपेक्षणा करीने गमनागमननुं प्रतिक्रमण कर्युं, प्रतिक्रमण करीने एषणा अने अनेषणानी आलोचना करी, आलोचना करीने भातपाणी बताव्या, बतावीने युधिष्ठिर प्रत्ये आ प्रमाणे बोल्या—

मू०—" एवं खलु देवाणुप्पिया ! जाव कालगए, तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! इमं पुव्वगहियं भत्तपाणं परिट्ठवेत्ता सेत्तुंजं पव्वयं सणियं सणियं दुरूहित्तए संलेहणाए झूसणोसियाणं[2] कालं अणवकंखमाणाणं विहरित्तए " त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता तं पुव्वगहियं भत्तपाणं एगंते परिट्ठवेंति, परिट्ठवित्ता जेणेव सेत्तुंजे पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेत्तुंजं पव्वयं दुरूहंति, दुरूहित्ता जाव कालं अणवकंखमाणा विहरंति ।

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! (अमे आपनी आज्ञाथी भिक्षाटन करवा गया हता, त्यां अमे सांभळ्युं के अरिहंत अरिष्टनेमी भगवान्) यावत् कालधर्मने पाम्या. तो हे देवानुप्रिय ! हवे आपणे आ प्रथम (काळधर्मनी वात सांभळ्या पहेलां) अमे ग्रहण करेला भातपाणीने विधिपूर्वक परठवी शत्रुंजय पर्वतपर जइने धीमे धीमे चडी संलेखना

२ झोसणाए झोसियाणं इति प्रत्यंतरम् .

(अनशन) वडे कर्मनी झोषणा (शोषणनी क्रिया) नो आश्रय करी काळनी (मरणनी) अपेक्षा राख्या विना विच-रवुं ए श्रेयस्कर (योग्य) छे. ” आ प्रमाणे कही अन्योन्यना आ अर्थ (वृत्तांत–विचार) ने अंगीकार कर्यो. अंगीकार करी ते पूर्वे ग्रहण करेला भातपाणीने एकांतमां विधिपूर्वक परठव्यो, परठवीने ज्यां शत्रुंजय पर्वत हतो त्यां आव्या, आवीने शत्रुंजय पर्वतपर चडया, चडीने यावत् काळ (मरण) नी अपेक्षा राख्या विना अनशन करीने रह्या.

मू०–तते णं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा सामाइयमातियार्तिं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता दोमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसित्ता जस्सट्ठाए किरति णग्गभावे जाव तमट्ठं आराहेंति, आराहित्ता अणंते जाव केवलवरणाणदंसणे समुप्पण्णे जाव सिद्धा ॥ १३० ॥

अर्थ—त्यारपछी ते युधिष्ठिर विगेरे पांचे अनगारो सामायिक विगेरे चौद पूर्वनो अभ्यास करी, घणा वर्षो सुधी चारित्रपर्याय पाळी, बे मासनी संलेखना (अनशन) वडे आत्मानुं झोषण (शोषण) करी, जेने माटे नाग्न्यभाव (साधु-भाव) ग्रहण कर्यो छे यावत् ते अर्थनुं आराधन कर्युं. आराधीने अनंत यावत् श्रेष्ठ केवलज्ञान अने केवलदर्शन प्राप्त करी यावत् सिद्ध थया. १३०.

मू०–तते णं सा दोवती अज्जा सुव्वयाणं अज्जियाणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस

अंगाति अहिज्जति, अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए आलोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा बंभलोए उववन्ना।

अर्थ—त्यारपछी ते द्रौपदी आर्याए सुव्रता आर्यानी पासे सामायिक विगेरे अग्यार अंगोनो अभ्यास कर्यो. अभ्यास करीने घणा वर्षो सुधी चारित्रपर्यायने पाळी एक मासनी संलेखना (अनशन) वडे आलोचना प्रतिक्रमण करी काळमासे काळ करी ब्रह्मलोकने विषे देवपणे उत्पन्न थइ.

मू०—तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता। तत्थ णं दुवतिस्स देवस्स दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता।

अर्थ—ते पांचमा ब्रह्मदेवलोकने विषे केटलाक देवोनी दश सागरोपमनी स्थिति (उत्कृष्ट) कहेली छे. तेमां ते द्रौपदी देवनी दश सागरोपमनी स्थिति कही छे.

मू०—से णं भंते ! दुवए देवे ततो जाव महाविदेहे वासे जाव अंतं काहिति।

अर्थ—" हे भगवंत ! ते द्रुपद देव त्यांथी चवीने क्यां जशे ? " भगवाने कह्युं—" त्यांथी चवीने यावत् महाविदेह क्षेत्रने विषे उत्पन्न थइ कर्मनो अंत करशे. (सिद्ध थशे).

मू०—एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं सोलसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे

पण्णत्ते त्ति बेमि ॥ १३१ ॥

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवंत महावीरस्वामीए सोळमा ज्ञाताध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे. ते प्रमाणे में तमने कह्यो. १३१.

उपनय—" सुबहुं पि तवकिलेसो, नियाणदोसेण दूसिओ संतो ।
न सिवाय दोवतीए, जह किल सुकुमालियाजम्मे ॥ १ ॥ "

अथवा—" अमणुन्नमभत्तीए, पत्ते दाणं भवे अणत्थाय ।
जह कडुयतुंबदाणं, नागसिरिभवम्मि दोवइए ॥ २ ॥ "

" तपनो कलेश घणो कर्यो होय तोपण नियाणाना दोषथी जो तेने दूषित करवामां आवे तो ते तप मोक्षने माटे थतो नथी. जेम द्रौपदीए सुकुमालिकाना भवमां कर्यो तेम. "

अथवा—" भक्ति रहितपणे अमनोहर दान पात्रने विषे आप्युं होय तोपण ते अनर्थने माटे थाय छे. जेम द्रौपदीए नागश्रीना भवमां कडवा तुंबडानुं दान साधुने आप्युं हतुं ते अनर्थने माटे थयुं तेम. "

सोलसमं नायज्झयणं सम्मत्तं.

इति सोळमुं ज्ञाताध्ययन.

अथ सत्तरमुं अश्वज्ञात नामनुं अध्ययन.

पूर्व अध्ययनमां नियाणुं करवाथी के कुत्सित दान करवाथी अनर्थनी प्राप्ति कही. हवे आ सतरमा अध्ययनमां इंद्रियोने नियममां नहीं राखवाथी अनर्थनी प्राप्ति थाय छे ते बतावे छे.—

मू०—जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सोलसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तरसमस्स णं णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

अर्थ—जंबूस्वामी सुधर्मास्वामीने पूछे छे के-हे भगवान् ! जो श्रमण भगवान महावीरस्वामी यावत् सिद्धिगतिने पामेला छे तेमणे सोळमा ज्ञाताध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे, तो सतरमा ज्ञाताध्ययननो कयो अर्थ कह्यो छे ?

मू०—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं हत्थिसीसे णामं णयरे होत्था वण्णओ ।

अर्थ—सुधर्मास्वामी उत्तर आपे छे.-आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये हस्तिशीर्ष नामे नगर हतुं. तेनुं वर्णन कहेवुं.

मू०—तत्थ णं कणगकेऊ णामं राया होत्था, वण्णओ ।

अर्थ—ते नगरमां कनककेतु नामे राजा हतो. तेनुं वर्णन कहेवुं.

मू०—तत्थ णं हत्थिसीसे णयरे बहवे संजुत्ताणावावाणियगा परिवसंति अड्ढा जाव बहुजणस्स अपरिभूया यावि होत्था ।

अर्थ—ते हस्तिशीर्ष नगरमां घणा सांयात्रिक[1] नावेवणिक[2] रहेता हता. तेओ धनाढ्य हता, यावत् घणा लोकोथी पण पराभव न पामे तेवा पण हता.

मू०—तते णं तेसिं संजुत्ताणावावाणियगाणं अन्नया कयाइं एगयओ सहियाणं जहा अरहण्णओ जाव लवणसमुद्दं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढा यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते सांयात्रिक नाववणिक एकदा कदाचित् एक ठेकाणे भेगा थया. तेमणे अर्हन्नकनी जेम विचार करी यावत् (व्यापारार्थे प्रवहणमां नीकळ्या अने) लवणसमुद्रमां अनेक सेंकडो योजन अवगाहन करेला पण थया (दूर गया).

मू०—तते णं तेसिं जाव बहूणि उप्पातियसयाति जहा मागंदियदारगाणं जाव कालियवाए

१ देशांतरमां जइ वेपार करनारा. २ वहाणना साधनवडे वेपार करनार वणिक.

य तत्थ समुत्थिए ।

अर्थ—ते वखते तेओने यावत् माकंदीपुत्रोनी जेम घणा सेंकडो उत्पात थया. यावत् कालिक (प्रतिकूल) वायु त्यां उत्पन्न थयो.

मू०—तते णं सा णावा तेणं कालियवाएणं आघोलिज्जमाणी आघोलिज्जमाणी संचालिज्जमाणी संचालिज्जमाणी संखोहिज्जमाणी संखोहिज्जमाणी तत्थेव परिभमति ।

अर्थ—ते वखते ते नावा ते प्रतिकूळ वायुवडे कंपायमान थती कंपायमान थती, चलायमान थती चलायमान थती तथा क्षोभ पामती क्षोभ पामती ते ज ठेकाणे आमतेम भमवा लागी-डोलवा लागी.

मू०—तते णं से णिज्जामए णट्ठमतीते णट्ठसुतीते णट्ठसण्णे मूढदिसाभाए जाए यावि होत्था । ण जाणइ कयरं देसं वा दिसं वा विदिसं वा पोयवहणे वहिते त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पे जाव झियायति।

अर्थ—ते वखते ते निर्यामक (खलासी) नी मति (बुद्धि) नाश पामी, तेनी श्रुति[१] नाश पामी, तथा मननी भ्रांतिने लीधे तेनी संज्ञा नाश पामी. तेथी तेने दिशानो विभाग मूढ एटले अनिश्चित थयो, एवा प्रकारनो ते थयो. तेथी कया प्रदेशमां कइ दिशामां के कइ विदिशामां ते नाव चाले छे ? तेनी तेने खबर पण न रही. तेथी करीने हणायेला

१ श्रुति एटले शास्त्र अर्थात् समुद्रयात्रा संबंधी शास्त्रनुं ज्ञान नष्ट थयुं, एटले दिशा विगेरेनुं विवेचन करवानी शक्ति नाश पामी.

मनना संकल्पवाळो ते यावत् ध्यान-विचार करवा लाग्यो.

मू०-तते णं ते बहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भिल्लगा य संजुत्ताणावावाणियगा य जेणेव से णिज्जामए, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एवं वदासी-" किन्नं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियायासि ? "।

अर्थ—ते वखते ते घणा कुच्छिधार (पावडी चलावनारा), कर्णधार[1] (कूवाना रक्षक), गब्भिल्लक[2] (सढना रक्षक) तथा सांयात्रिक नाववणिक ए सर्वे ज्यां ते निर्यामक हतो, त्यां आव्या, आवीने आ प्रमाणे बोल्या.-" हे देवानुप्रिय ! हणाइ गयो छे मननो संकल्प जेनो एवो तुं यावत् शुं ध्यान-विचार करे छे ? "

मू०-तते णं से णिज्जामए ते बहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भिल्लगा य संजुत्ताणावावाणियगा य एवं वयासी-" एवं खलु देवाणुप्पिया ! णट्ठमतीते जाव अवहिए त्ति कट्टु ततो ओहयमणसंकप्पे जाव झियामि "।

अर्थ—त्यारे ते निर्यामके ते घणा कुच्छिधारक (पावडी चलावनारा)ने, कर्णधार (कूवाना रक्षक)ने, गब्भिल्लक

१ सुकानी. २ परचुरण काम करनार.

(सढना रचक)ने तथा सांयात्रिक नाववणिकने आ प्रमाणे कह्युं.—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! मारी मति नाश पामी छे यावत् कइ दिशाए के विदिशाए वहाण चाले छे ? तेनी पण मने खबर पडती नथी, तेथी हणायेला मनना संकल्पवाळो हुं यावत् ध्यान करुं छुं. (विचारमां पडी गयो छुं.)

मू०—तते णं ते कण्णधारा तस्स णिज्जामयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म भीया ५ ण्हाया कयबलिकम्मा करयल बहूणं इंदाण य खंदाण य जहा मल्लिनाए जाव उवायमाणा उवायमाणा चिट्ठंति।

अर्थ—त्यारपछी ते कुक्षिधारक, कर्णधारक विगेरे सर्वे ते निर्यामकनी पासे आ अर्थ (वृत्तांत) सांभळी हृदयमां धारी भय पाम्या, त्रास पाम्या विगेरे. पछी ते सर्वे स्नान करी बलिकर्म (गृहदेवतानुं पूजन) करी बे हाथ जोडी मल्लिज्ञात अध्ययनमां कह्युं छे तेम घणा इंद्रो, स्कंद (कार्तिक स्वामी) विगेरे देवोनी यावत् मानता करता करता रह्या. (मानताओ करी).

मू०—तते णं से णिज्जामए ततो मुहुत्तंतरस्स लद्धमतीते लद्धसुतीते लद्धसण्णे अमूढदिसाभाए जाए यावि होत्था।

अर्थ—त्यारपछी ते निर्यामक एक मुहूर्त्त गया पछी मति (बुद्धि)ने पाम्यो, श्रुति (समुद्रशास्त्रना ज्ञान)ने पाम्यो,

तथा मननी भ्रांति दूर थवाथी संज्ञाने पाम्यो, तेथी दिशानो विभाग अमूढ (निश्चित) होय एवो ते थयो.

मू०—तते णं से णिज्जामए ते बहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भिल्लगा य संजुत्ताणावावाणियगा य एवं वदासी—" एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! लद्धमतीए जाव अमूढदिसाभाए जाए । अम्हे णं देवाणुप्पिया ! कालियदीवंतेणं संवूढा, एस णं कालियदीवे आलोकति " ।

अर्थ—त्यारपछी ते निर्यामके ते घणा कुक्षिधारक (पावडी चलावनार), कर्णधारक (सुकानी), गब्भिल्लक (परचुरण काम करनार) तथा सांयात्रिक नाववणिकने आ प्रमाणे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! मने मति विगेरे प्राप्त थइ छे यावत् दिशानो विभाग जाणवामां अमूढ (निश्चयवाळो) थयो छुं. हे देवानुप्रियो ! आपणे कालिक नामना द्वीपनी पासे आव्या छीए. आ समीपे (सामे) कालिक द्वीप देखाय छे. "

मू०—तते णं ते कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भिल्लगा य संजुत्ताणावावाणियगा य तस्स णिज्जामगस्स आंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठा पयक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव कालीयदीवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयवहणं लंबेंति, लंबित्ता एगट्ठियाहिं कालीयदीवं उत्तरंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते सर्वे कुक्षिधार, कर्णधार, गब्भिल्लक अने सांयात्रिक नाववणिक ते निर्यामकनी पासेथी आ

अर्थ (वृत्तांत) सांभळी हृदयमां धारी हृष्ट तुष्ट थया. पछी तेओ दक्षिण तरफना अनुकूळ वायुवडे ज्यां कालिकद्वीप हतो त्यां आव्या. आवीने तेणे वहाणने लंगर कर्युं, लांगरीने नानी होडीओवडे कालिकद्वीपमां उतर्या.

मू०—तत्थ णं बहवे हिरण्णागरे य सुवण्णागरे य रयणागरे य वइरागरे य बहवे तत्थ आसे पासंति । किं ते ? हरिरेणुसोणिसुत्तगा आईणवेढो ।

अर्थ— ते कालिकद्वीपने विषे तेओए घणी हिरण्यनी (रुपानी) खाणो, सुवर्णनी खाणो, रत्ननी खाणो अने वज्ररत्ननी (हीरानी) खाणो तथा त्यां घणा अश्वो जोया. ते केवा हता ? आकीर्ण एटले जातिवंत अश्वो, तेमनो वेढ एटले तेमनुं वर्णन करनारी वाक्यरचना. अर्थात् जातिवंत अश्वोनुं जेवुं वर्णन करवामां आवे छे तेवुं वर्णन अहीं करवुं. ते आ प्रमाणे—हरिद्रेणु एटले नीलवर्णवाळी रेणु अने श्रोणिसूत्रक एटले बाळकोने केडे बांधवानो काळो दोरो विगेरेनी जेवा काळावर्णवाळा केटलाक अश्वो हता. (ए ज प्रमाणे केटलाक अश्वो धोळा, केटलाक राता विगेरे वर्णवाळा तथा जातिवंत अश्वना लक्षणवाळा अश्वोनुं अहीं वर्णन जाणवुं. टीकामां आ वर्णन सविस्तर आप्युं छे).

मू०—तते णं ते आसा ते वाणियए पासंति, पासित्ता तेसिं गंधं अग्घायंति, अग्घाइत्ता भीया तत्था उव्विग्गा उव्विग्गमणा ततो अणेगाइं जोयणाति उब्भमंति, ते णं तत्थ पउरगोयरा पउरतणपाणिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहंसुहेणं विहरंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते अश्वोए ते वाणीयाओने जोया, जोइने तेमना गंधने सुंघ्यो, सुंघीने ते अश्वो भय पाम्या, त्रास पाम्या, उद्वेग पाम्या, तेमना मनमां उद्वेग थयो, तेथी तेओ घणा योजन दूर जता रह्या. पछी त्यां तेओ घणा गोचर (चरवाना क्षेत्रो) पाम्या. घणा तृण अने पाणी मळवाथी भय रहित तथा उद्वेग रहित थइ तेओ त्यां ज सुखे सुखे विचरवा लाग्या–रह्या.

मू०—तए णं संजुत्ताणावावाणियगा अण्णमण्णं एवं वदासी–“ किण्हं अम्हे देवाणुप्पिया ! आसेहिं ? इमे णं बहवे हिरण्णागरा य सुवण्णागरा य रयणागरा य वइरागरा य, तं सेयं खलु अम्हं हिरण्णस्स य सुवण्णस्स य रयणस्स य वइरस्स य पोयवहणं भरित्तए ” त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता हिरण्णस्स य सुवण्णस्स य रयणस्स य वइरस्स य तणस्स य अण्णस्स य कट्ठस्स य पाणियस्स य पोयवहणं भरेंति, भरित्ता पयक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभीरपोयवहणपट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयवहणं लंबेंति, लंबित्ता सगडीसागडं सज्जेंति, सज्जित्ता तं हिरण्णं जाव वइरं च एगट्ठियाहिं पोयवहणाओ संचारेंति, संचारित्ता सगडीसागडं संजोइंति, संजोइत्ता जेणेव हत्थिसीसए नयरे तेणेव उवागच्छंति, उवा-

गच्छित्ता हत्थिसीसयस्स नयरस्स बहिया अग्गुज्जाणे सत्थणिवेसं करेंति, करित्ता सगडीसागडं मोएंति, मोइत्ता महत्थं जाव पाहुडं गेण्हंति, गेण्हित्ता हत्थिसीसं च नगरं अणुपविसंति, अणुपविसित्ता जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता जाव उवणेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते सांयात्रिक नाववणिक परस्पर आ प्रमाणे बोल्या–" हे देवानुप्रियो ! आपणने आ अश्वोवडे शुं प्रयोजन छे ? (कांइज नथी). अहीं आ घणी हिरण्यनी (रुपानी) खाणो छे, सुवर्णनी खाणो छे, रत्नोनी खाणो छे अने वज्ररत्नोनी (हीरानी) खाणो छे. तेथी आपणे हिरण्यवडे सुवर्णवडे, रत्नोवडे अने वज्ररत्नोवडे पोतपोताना वहाण भरी लेवा ए श्रेयस्कर छे ". आ प्रमाणे कही तेओए एक बीजाना आ अर्थने अंगीकार कर्यो. अंगीकार करी हिरण्यवडे, सुवर्णवडे, रत्नोवडे, वज्ररत्नोवडे, तृणवडे, अन्नवडे, काष्ठवडे अने मीठाजळवडे पोतपोताना वहाण भरी दीधा. भरीने दक्षिण तरफना अनुकूळ वायुवडे ज्यां गंभीरपोतवहन पट्टण[1] हतुं त्यां आव्या, आवीने वहाणने नांगर्युं. नांगरीने गाडी गाडां सज्ज कर्यां. सज्ज करी ते लीधेल हिरण्य यावत् वज्ररत्नोने एक काष्ठवाळा नाना वहाणोवडे संचार कर्यो (लइ जइने गाडी गाडांमां भर्या). संचार करीने गाडी गाडां जोड्यां, जोडीने ज्यां हस्तिशीर्ष नामनुं नगर हतुं त्यां आव्या. आवीने हस्तिशीर्ष नगरनी बहार अग्र (श्रेष्ठ) उद्यानमां सार्थने स्थापन कर्यो, करीने गाडी गाडां छोड्यां,

१ समुद्रना किनारा परनुं नगर.

छोडीने मोटी किंमतवाळुं यावत् प्राभृत ग्रहण कर्युं, ग्रहण करीने हस्तिशीर्ष नगरने विषे प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने ज्यां कनककेतु राजा हतो त्यां आव्या, आवीने यावत् ते प्राभृत राजानी पासे मूक्युं.

मू०—तते णं से कणगकेऊ तेसिं संजुत्ताणावावाणियगाणं तं महत्थं जाव पडिच्छति ॥१३२॥

अर्थ—त्यारे ते कनककेतु राजाए ते सांयात्रिक नाववणिकना ते मोटा मूल्यवाळा प्राभृतने यावत् अंगीकार कर्युं. १३२.

मू०—ते संजुत्ताणावावाणियगा एवं वदासी—" तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! गामागर जाव आहिंडह, लवणसमुद्दं च अभिक्खणं अभिक्खणं पोयवहणेणं ओगाहह, तं अत्थि याइं केइ भे कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ? "।

अर्थ—पछी राजाए ते सांयात्रिक नाववणिकोने आ प्रमाणे कह्युं (पूछ्युं)—" हे देवानुप्रिया ! तमे दरेक गाम आकर विगेरेमां यावत् फरो छो, अने लवणसमुद्रमां पण वारंवार वहाणवडे प्रवेश करो छो, तो एवुं कांइ छे के जे तमे पहेलां कोइ पण ठेकाणे कांइ पण आश्चर्य जोयुं होय ? "

मू०—तते णं संजुत्ताणावावाणियगा कणगकेउं रायं एवं वदासी—" एवं खलु अम्हे देवाणु-

प्पिया ! इहेव हत्थिसीसे नयरे परिवसामो, तं चेव जाव कालियदीवंतेणं संवूढा, तत्थ णं बहवे हिरण्णागरा य जाव बहवे तत्थ आसे, किं ते ? हरिरेणुसोणिसुत्तगा जाव अणेगाइं जोयणाइं उब्भमंति । तते णं सामी ! अम्हेहिं कालियदीवे ते आसा अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ।

अर्थ—त्यारे ते सांयात्रिक नाववणिकोए कनककेतु राजाने आ प्रमाणे कह्युं–" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! अमे आ ज हस्तिशीर्ष नगरमां वसीए छीए. इत्यादि सर्व पूर्ववत् कहेवुं. यावत् कालिकद्वीपना समीपे गया, ते द्वीपमां घणी हिरण्यनी खाणो यावत् त्यां घणा अश्वो छे. ते केवा छे ? हरिद्रेणु एटले नीलवर्णवाळी रेणु अने श्रोणिसूत्रक एटले बाळकने केडे बांधवाना काळा दोरा जेवा श्यामवर्णवाळा यावत् ते अश्वो अमारा गंधथी अनेक योजन दूर जता रह्या. आ प्रमाणे हे स्वामी ! अमे ते कालिकद्वीपने विषे ते अश्वो आश्चर्यभूत पूर्वे जोया हता."

मू०—तते णं से कणगकेऊ तेसिं संजुत्तगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा ते संजुत्तए एवं वदासी " गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! मम कोडुंबियपुरिसेहिं सद्धिं कालियदीवाओ ते आसे आणेह " ।

अर्थ—त्यारपछी ते कनककेतु राजाए ते सांयात्रिकोनी पासे आ अर्थ सांभळी ते सांयात्रिकोने आ प्रमाणे कह्युं–" हे देवानुप्रियो ! तमे मारा कौटुंबिक पुरुषोनी साथे जाओ, अने कालिकद्वीपमांथी ते अश्वोने अहीं लावो. "

मू०—तते णं ते संजुत्ता कणगकेउं रायं एवं वदासी—" एवं सामी ! " त्ति कट्टु आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति ।

अर्थ—त्यारे ते सांयात्रिकोए कनककेतु राजाने आ प्रमाणे कह्युं—" हे स्वामी ! बहु सारुं. " एम कही तेनुं वचन आज्ञाए विनये करी अंगीकार कर्युं.

मू०—तते णं कणगकेऊ राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वदासी—" गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संजुत्तएहिं सद्धिं कालियदीवाओ मम आसे आणेह " ते वि पडिसुणेंति ।

अर्थ—त्यारपछी कनककेतु राजाए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रियो ! तमे सांयात्रिकोनी साथे जाओ अने मारे माटे कालिकद्वीपमांथी अश्वो लावो. " ते सांभळी तेओए तेनी आज्ञा अंगीकार करी.

मू०—तते णं ते कोडुंबियपुरिसा सगडीसागडं सज्जेंति, सज्जित्ता तत्थ णं बहूणं वीणाण य वल्लकीण य भामरीण य कच्छभीण य भंभाण य छब्भामरीण य विचित्तवीणाण य अन्नेसिं च बहूणं सोतिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषोए गाडी गाडां सज्ज कर्यां. सज्ज करीने तेमां घणी वीणाओ, वल्लकीओ, भ्रामरी,

कच्छभी, भंभा (ढक्का), षट्भ्रांमरी विगेरे विचित्र वीणाओ[1] तथा बीजा घणा श्रोत्र इंद्रियने योग्य एवा पदार्थो गाडी गाडामां भर्या.

मू०—भरित्ता बहूणं किण्हाण य जाव सुक्किलाण य कट्ठकम्माण य ४ गंथिमाण य ४ जाव संघाइमाण य अन्नेसिं च बहूणं चक्खिदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति ।

अर्थ—ते भरीने घणा कृष्णवर्णवाळा यावत् शुक्लवर्णवाळा काष्ठकर्मादिक[2] ४ तथा ग्रथिमादिक[3] ४ यावत् संघातिम[4] विगेरे तथा बीजी घणी चक्षु इंद्रियने योग्य (प्रिय) वस्तुओ गाडी गाडामां भरी दीधी.

मू०—भरित्ता बहूणं कोट्ठपुडाण य केयइपुडाण य जाव अन्नेसिं च बहूणं घाणिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति ।

अर्थ—भरीने घणा सुगंधी कोष्ठपुट तथा केतकीपुट विगेरे यावत् बीजा घणा घ्राणेंद्रिय (नासिका)ने योग्य (प्रिय) पदार्थोवडे गाडी गाडां भर्या.

मू०—भरित्ता बहुस्स खंडस्स य गुलस्स य सक्कराए य मच्छंडियाए य पुप्फुत्तरपउमुत्तर अ-

१ आ सर्व वीणानी जाति ज छे. मात्र तेमां तातनी न्यूनाधिकता होय छे. २ काष्ठना पाटीयामां चितरेला चित्रो. ३ गुंथेली माळा विगेरे. ४ समूहरूप करेला पदार्थो.

न्नेसिं च जिब्भिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति ।

अर्थ—भरीने घणी खांड, गोळ, साकर, मत्संडिका, पुष्पोत्तर× अने पद्मोत्तर× विगेरे तथा बीजा पण जिव्हा इंद्रियने योग्य (प्रिय) द्रव्योना गाडी गाडां भर्यां.

मू०—भरित्ता बहूणं कोयवयाण य कंबलाण य पावरणाण य नवतयाण य मलयाण य मसूराण य सिलावट्टाण जाव हंसगब्भाण य अन्नेसिं च फासिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं जाव भरेंति ।

अर्थ—भरीने घणा कोयवक–रुना भरेलां वस्त्रो, कंबल–रत्नकंबलो, प्रावरण–ओढवानां वस्त्र विशेष, नवत–जीन, मलय–आसन विशेष, मसूरक–आसन विशेष, शिलापट्ट–कोमळ शिलाओ, यावत् हंसगर्भ–श्वेत वस्त्र तथा बीजा पण स्पर्शेंद्रियने योग्य (प्रिय) पदार्थोवडे यावत् गाडी गाडां भर्यां.

मू०—भरित्ता सगडीसागडं जोएंति, जोइत्ता जेणेव गंभीरए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगडीसागडं मोएंति, मोइत्ता पोयवहणं सज्जेंति, सज्जित्ता तेसिं उक्किट्ठाणं सद्दफरिसरसरूवगंधाणं कट्ठस्स य तणस्स य पाणियस्स य तंदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव

× एक जातनी साकर. १ गादलां–तळाइ, गोदडां–रजाइ विगेरे. २ अथवा मलय देशमां उत्पन्न थयेल वस्त्र.

अन्नेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं पोयवहणं भरेंति ।

अर्थ—भरीने गाडी गाडां जोड्यां, जोडीने ज्यां गंभीर पोतपट्टण हतुं त्यां आव्या. आवीने गाडी गाडां छोड्यां. छोडीने वहाण सज्ज कर्या. सज्ज करीने ते उत्कृष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप अने गंधना पदार्थो तथा काष्ठ, तृण, जळ, तंडुल (चोखा), आटो, गोरस अने यावत् बीजा घणा वहाणने योग्य पदार्थो वहाणमां भर्या.

मू०—भरित्ता दक्खिणाणुकुलेणं वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयवहणं लंबेंति, लंबित्ता ताइं उक्किट्ठाइं सद्दफरिसरसरूवगंधाइं एगट्ठियाहिं कालियदीवं उत्तारेंति, उत्तारित्ता जहिं जहिं च णं ते आसा आसयंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा, तहिं तहिं च णं ते कोडुंबियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव विचित्तवीणाओ य अन्नाणि बहूणि सोइंदियपाउग्गाणि य दव्वाणि समुदीरेमाणा चिट्ठंति, तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति, ठवित्ता णिच्चला णिप्फंदा तुसिणीया चिट्ठंति ।

अर्थ—भरीने दक्षिण तरफना अनुकूळ वायुवडे ज्यां कालिक द्वीप हतो त्यां आव्या. आवीने वहाणोने नांगर्या. नांगरीने ते उत्कृष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप अने गंधना पदार्थो एक काष्ठनी नानी होडीओवडे कालिकद्वीपमां उतार्या.

उतारीने ज्यां ज्यां ते अश्वो बेसता हता, सुता हता, रहेता हता अथवा त्वग्वर्तन करता हता—आळोटता हता, त्यां त्यां ते कौटुंबिक पुरुषो ते वीणाओने यावत् विचित्र वीणाओने तथा बीजा घणा श्रोत्रेंद्रियने योग्य पदार्थो (वाजित्रो) वगाडता सता रहेवा लाग्या. तथा तेमनी पासे चोतरफ ते वस्तुओ (वाजित्रो) स्थापन करी. स्थापन करीने निश्चळ निष्पंद अने तूष्णी (मुंगा) रह्या.

मू०—जत्थ जत्थ ते आसा आसयंति वा जाव तुयट्टंति वा तत्थ तत्थ णं ते कोडुंबियपुरिसा बहूणि किण्हाणि य ५ कट्ठकम्माणि य जाव संघाइमाणि य अन्नाणि य बहूणि चक्खिदियपाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेंति, तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति, ठवित्ता णिच्चला णिप्फंदा० चिट्ठंति ।

अर्थ—ज्यां ज्यां ते अश्वो बेसता हता, यावत् त्वग्वर्तन करता हता—आळोटता हता, त्यां त्यां ते कौटुंबिक पुरुषोए घणा कृष्णवर्णवाळा यावत् शुक्लवर्णवाळा काष्ठकर्म (चितरेला काष्ठ) यावत् संघातिम विगेरे तथा बीजा घणा चक्षु इंद्रियने योग्य पदार्थो स्थापन कर्या. तथा ते अश्वोनी पासे चोतरफ स्थापन कर्या. स्थापन करीने निश्चळ, निष्पंद अने मुंगा रह्या.

मू०—जत्थ जत्थ ते आसा आसयंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तत्थ तत्थ णं ते कोडुंबियपुरिसा तेसिं बहूणं कोट्ठपुडाण य अन्नेसिं च घाणिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं पुंजे य

णियरे य करेंति, करित्ता तेसिं परिपेरंते जाव चिट्ठंति।

अर्थ—ज्यां ज्यां ते अश्वो बेसता हता, सुता हता, उभा रहेता हता अथवा त्वग्वर्तन करता हता—आळोटता हता, त्यां त्यां ते कौटुंबिक पुरुषोए ते घणा कोष्ठपुटना यावत् बीजा घ्राणेंद्रिय (नासिका) ने योग्य पदार्थोना पुंज अने निकर कर्या. करीने तेनी पासे चोतरफ पुंज करीने यावत् मुंगा रह्या.

मू०—जत्थ जत्थ णं ते आसा आसयंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तत्थ तत्थ गुलस्स जाव अन्नेसिं च बहूणं जिब्भिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं पुंजे य निकरे य करेंति, करित्ता वियरए खणंति, खणित्ता गुलपाणगस्स खंडपाणगस्स पोरपाणगस्स अन्नेसिं च बहूणं पाणगाणं वियरे भरेंति, भरित्ता तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति जाव चिट्ठंति।

अर्थ—ज्यां ज्यां ते अश्वो बेसता हता, सुता हता, उभा रहेता हता, अथवा त्वग्वर्तन करता हता—लोटता हता, त्यां त्यां ते कौटुंबिक पुरुषोए गोळना यावत् बीजा घणा जिव्हेंद्रियने योग्य पदार्थोना पुंज अने निकर कर्या. करीने ते ते ठेकाणे वीरडा (खाडा) खोद्या. खोदीने तेमां गोळना पाणी, खांडना पाणी, पोरना (शेरडीना) पाणी, तथा बीजा

१ पर्वतना आकारवाळो ढगलो. २ छूटा छवाया समूह.

घणा पाणीना वीरडा भर्या. भरीने तेमनी पासे चोतरफ स्थापन करीने यावत् मुंगा रह्या.

मू०—जहिं जहिं च णं ते आसा आसयंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तहिं तहिं
च णं ते बहवे कोयवया य जाव सिलावट्टया अण्णाणि य फासिंदियपाउग्गाइं अत्थुयपच्चत्थुयाइं
ठवेंति, ठवित्ता तेसिं परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंति ।

अर्थ—ज्यां ज्यां ते अश्वो बेसता हता, सुता हता, उभा रहेता हता अथवा त्वग्वर्तन करता हता—लोटता हता, त्यां
त्यां ते घणा कोयवक—रुना भरेलां वस्त्रो, यावत् शिलापट्टक (कोमळ शिला) तथा बीजा स्पर्शेंद्रियने योग्य आस्तरण
प्रत्यास्तरण (उपराउपरि पाथरेलां वस्त्रादिक) स्थापन कर्या, स्थापन करीने तेमनी पासे चोतरफ यावत् मुंगा रह्या.

मू०—तते णं ते आसा जेणेव एते उक्किट्ठा सद्दफरिसरसरूवगंधा तेणेव उवागच्छंति, उवाग-
च्छित्ता तत्थ णं अत्थेगतिया आसा " अपुव्वा णं इमे सद्दफरिसरसरूवगंधा " इति कट्टु तेसु
उक्किट्ठेसु सद्दफरिसरसरूवगंधेसु अमुच्छिया ४ तेसिं उक्किट्ठाणं सद्द जाव गंधाणं दूरंदूरेणं अवक्क-
मंति, ते णं तत्थ पउरगोयरा पउरतणपाणिया णिब्भया णिरुव्विग्गा सुहंसुहेणं विहरंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते अश्वो ज्यां ते उत्कृष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप अने गंधना पदार्थो हता, त्यां आव्या. आवीने

त्यां केटलाक अश्वो–" आ शब्द, स्पर्श, रस, रूप अने गंधना पदार्थो अपूर्व (पहेलां नहीं जोयेला) छे." एम विचारीने ते उत्कृष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप अने गंधना पदार्थोने विषे मूर्छा रहित थइ ते उत्कृष्ट शब्द यावत् गंधना पदार्थोनी अत्यंत दूर दूर जता रह्या. तेथी तेओ त्यां घणा गोचरने[1] पाम्या, घणा घास पाणीने पाम्या, तथा भय रहित अने उद्वेग रहित थइ सुखे सुखे विचरवा लाग्या–रह्या.

मू०–एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं णिग्गंथो वा णिग्गंथी वा सद्दफरिसरसरूवगंधा णो सज्जति, से णं इहलोगे चेव बहूणं समणाणं समणीणं सावयाणं सावियाणं अच्चणिज्जे जाव वीतिवयति ॥ १३३ ॥

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे आयुष्मान साधुओ ! अमारा जे कोइ साधु के साध्वी शब्द, स्पर्श, रस, रूप अने गंधना पदार्थोने विषे आसक्त थता नथी, ते आ लोकने विषे घणा साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकाओने पूजवा लायक थाय छे यावत् संसारने तरी जाय छे. १३३.

मू०–तत्थ णं अत्थेगतिया आसा जेणेव उक्किट्ठसद्दफरिसरसरूवगंधा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेसु उक्किट्ठेसु सद्दफरिसरसरूवगंधेसु मुच्छिया जाव अज्झोववण्णा आसेविउं पयत्ते

१ चरवाना स्थान.

यावि होत्था ।

अर्थ—ते द्वीपमां रहेला केटलाक अश्वो ज्यां ते उत्कृष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप अने गंधना पदार्थो हता, त्यां आव्या. आवीने ते उत्कृष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप, अने गंधना पदार्थोने विषे मूर्छावाळा थया यावत् अभ्युपपन्न (आसक्त) थया सता तेने सेववा माटे प्रयत्नवाळा थया—सेववा लाग्या.

मू०—तते णं ते आसा एए उक्किट्ठसद्दफरिसरसरूवगंधा आसेवमाणा तेहिं बहूहिं कूडेहि य पासेहि य गलएसु य पाएसु य बज्झंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते अश्वो ते उत्कृष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप अने गंधने सेवता सता तेमने ते कौटुंबिक पुरुषोए घणा कूट (कपट) थी पाशवडे गळामां अने पगमां बांध्या. अर्थात् पकडीने बांधी लीधा.

मू०—तते णं ते कोडुंबिया एए आसे गिण्हंति, गिण्हित्ता एगट्ठियाहिं पोयवहणे संचारेंति, संचारित्तां तणस्स कट्ठस्स जाव भरेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषोए ते अश्वो ग्रहण कर्या. ग्रहण करीने एक काष्ठनी होडीवडे ते अश्वोने वहाणमां चडाव्या. चडावीने ते वहाणमां तृण, काष्ठ विगेरे यावत् भरी दीधां.

मू०—तते णं ते संजुत्ताणावावाणियगा दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभीरपोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयवहणं लंबेंति, लंबित्ता ते आसे उत्तारेंति, उत्तारित्ता जेणेव हत्थिसीसे णयरे, जेणेव कणगकेऊ राया, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेंति, वद्धावित्ता ते आसे उवणेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते सांयात्रिक नाववणिको दक्षिण तरफना अनुकूळ वायुवडे ज्यां गंभीरपोतपट्टण हतुं त्यां आव्या, आवीने वहाणने नांगर्युं, नांगरीने ते अश्वोने उतार्या, उतारीने ज्यां हस्तिशीर्ष नगर हतुं अने ज्यां कनककेतु राजा हतो त्यां आव्या, आवीने बे हाथ जोडी जय विजयना शब्दवडे तेने वधाव्या, वधावीने ते अश्वो अर्पण कर्या.

मू०—तते णं से कणगकेऊ राया तेसिं संजुत्तावाणियगाणं उस्सुक्कं वितरति, वितरित्ता सक्कारेति संमाणेति, सक्कारित्ता संमाणित्ता पडिविसज्जेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कनककेतु राजाए ते सांयात्रिक नाववणिकोनुं शुल्क (दाण) माफ कर्युं. माफ करीने तेमनो सत्कार कर्यो, सन्मान कर्युं, सत्कार सन्मान करीने तेमने रजा आपी.

मू०—तते णं से कणगकेऊ राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता सक्कारेति संमाणेति,

सक्कारित्ता संमाणित्ता पडिविसज्जेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कनककेतु राजाए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. बोलावीने तेमनो सत्कार कर्यो, सन्मान कर्युं, सत्कार सन्मान करीने तेमने विदाय कर्या–रजा आपी.

मू०—तते णं से कणगकेऊ राया आसमद्दए सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—" तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम आसे विणएह ।

अर्थ—त्यारपछी ते कनककेतु राजाए ते अश्वमर्दक (अश्वपाल) ने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रियो ! तमे मारा अश्वोने विनय शीखवो (पढावो).

मू०—तते णं ते आसमद्दगा तह त्ति पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता ते आसे बहूहिं मुहबंधेहि य कण्णबंधेहि य णासाबंधेहि य वालबंधेहि य खुरबंधेहि य कडगबंधेहि य खलिणबंधेहि य अहिलाणेहि य पडियाणेहि य अंकणाहि य वेलप्पहारेहि य चि(वि)त्तप्पहारेहिं य लयप्पहारेहि य कसप्पहारेहि य छिवप्पहारेहि य विणयंति, विणइत्ता कणगकेउस्स रन्नो उवणेंति ।

अर्थ—त्यारे ते अश्वमर्दको (अश्वरक्षको) ए 'तह त्ति'–'बहु सारुं' एम कही राजानुं वचन अंगीकार कर्युं.

अंगीकार करी ते अश्वोने (पोतानी अश्वशाळामां लइ जइ) घणा मुखबंधनवडे, कानने बांधवावडे, नासिकाने बांधवावडे, पुच्छना वाळ बांधवावडे, खरी बांधवावडे, कांडा बांधवावडे, चोकडाना बंधनवडे (चोकडुं चडाववावडे), अहिलाण (मुखबंध विशेष) वडे, पडियाण–पटतानक (पलाणनी नीचेना पट्टा) वडे, अंकन (खांसी करवा) वडे, वेलाना प्रहारवडे, चित्र (नेतर) ना प्रहारवडे, लता–सोटीना प्रहारवडे, कस (चाबक) ना प्रहारवडे अने छीवडीना (चावकना) प्रहारवडे विनीत कर्या, विनीत करीने (शीखवीने) कनककेतु राजानी पासे लइ गया.

मू०—तते णं से कणगकेऊ ते आसमद्दए सक्कारेति संमानेति, सक्कारित्ता संमानित्ता पडिविसज्जेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कनककेतु राजाए ते अश्वमर्दको (अश्वपालो) नो सत्कार कर्यो, सन्मान कर्युं, सत्कार सन्मान करी तेमने विदाय कर्या–रजा आपी.

मू०—तते णं ते आसा बहूहिं मुहबंधेहि य जाव छिवप्पहारेहि य बहूणि सारीरमाणसाणि दुक्खाति पावेंति ।

अर्थ—ते वखते ते अश्वो घणा मुखबंधनवडे यावत् छीवडीना प्रहारवडे शरीर अने मन संबंधी घणां दुःखो पाम्या.

१ चामडानो चाबको.

मू०—एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं णिग्गंथो वा णिग्गंथी वा पव्वइए समाणे इट्ठेसु सद्दफरिसरसरूवगंधेसु सज्जंति रज्जंति गिज्झंति मुज्झंति अज्झोववज्जंति, से णं इह लोगे चेव बहूणं समणाण य जाव साविथाण य हीलणिज्जे जाव अणुपरियट्टिस्सति ॥ १३४ ॥

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे आयुष्मान साधुओ ! जे अमारा साधु के साध्वी प्रव्रज्या लीधा पछी इष्ट एवा शब्द, स्पर्श, रस, रूप अने गंधने विषे आसक्त थाय, रागी थाय, गृद्ध थाय, मोह पामे के तेवा अध्यवसाय करे, ते आ लोकने विषे ज घणा साधुओने यावत् श्राविकाओने हीलना करवा लायक थाय, यावत् ते संसार भ्रमण करे. १३४.

इंद्रियोनो संवर नहीं करनारा मनुष्यना स्वरूपने तथा इंद्रियोनो संवर नहीं करवाथी थता दोषने कहेनारी गाथाओ वाचनांतरमां कहेली छे, ते बतावे छे.—

मू०—कलरिभियमहुरतंती—तलतालवंसकउहाभिरामेसु ।
सद्देसु रज्जमाणा, रमंती सोइंदियवसट्टा ॥ १ ॥

अर्थ—कल एटले श्रवण अने हृदयने अत्यंत हरण करनार, रिभित—स्वरघोलनाना प्रकारवाळा तथा मधुर—श्रोत्रने सुख करनार एवी तंत्री—वीणा, तलताल—हाथनी ताळीओ (अथवा तल—हाथ अने ताल—कांसी) अने वंश—वांसळी ए सर्व ककुद एटले प्रधान (श्रेष्ठ) अने मनोहर एवा वाजित्रोना शब्दने विषे राग पामेला अने श्रोत्र इंद्रियने वश थवाथी

आर्त पीडा पामेला मनुष्यो रमे छे एटले आनंद माने छे. १.

मू०—सोइंदियदुद्दंत—त्तणस्स अह एत्तिओ हवति दोसो ।
दीविगरुयमसहंतो, वहबंधं तित्तिरो पत्तो ॥ २ ॥

अर्थ—परंतु श्रोत्रेंद्रियना दुर्दांतपणानो अर्थात् श्रोत्रेंद्रियने नहीं जीतनार पुरुषनो आटलो दोष होय छे के—जेम दीपिकाना रुत (शब्द) ने नहीं सहन करवाथी वनमां रहेलो तेतर पक्षी वध अने बंधनने पामे छे. (दीपिकानो शब्द सांभळी वननो तेतर पोताना स्थानमांथी बहार नीकळे छे तेथी ते पाराधिना हाथथी वधबंधनने पामे छे, तेम ते बंधनने पामे छे). २.

मू०—थणजहणवयणकरचरणणयणगव्वियविलासियगतीसु ।
रूवेसु रज्जमाणा, रमंति चक्खिंदियवसट्टा ॥ ३ ॥

अर्थ—चक्षु इंद्रियने वश थवाथी पीडा पामेला अने रूपमां आसक्त थयेला पुरुषो स्त्रीओना स्तन, जघन, वदन (मुख), हाथ, पग अने नेत्रने विषे तथा गर्व पामेली (सौभाग्यना अभिमानवाळी) स्त्रीओनी विलासयुक्त (विकारवाळी) गतिने विषे रमे छे—जोइने आनंद पामे छे. ३.

१ पाराधिना पांजरामां रहेलो तेतर दीपिका कहेवाय छे.

मू०—चक्खिदियदुद्दंत—त्तणस्स अह एत्तिओ भवति दोसो ।
जं जलणम्मि जलंते, पडति पयंगो अबुद्धीओ ॥ ४ ॥

अर्थ—परंतु चक्षु इंद्रियना दुर्दांतपणानो एटले चक्षु इंद्रियनुं दमन नहीं करनार पुरुषनो आटलो दोष होय छे के जेम बुद्धिरहित (मूर्ख) पतंगीयो बळता अग्निमां पडे छे. ४. (तेम ते पण दुःखने पामे छे.)

मू०—अगुरुवरपवरधूवण—उउयमल्लाणुलेवणविहीसु। गंधेसु रज्जमाणा, रमंति घाणिंदियवसट्टा।५।

अर्थ—सुगंधमां रागी थयेला पुरुषो घ्राणेंद्रियना वशथी पीडा पाम्या सता श्रेष्ठ अगरु (कृष्णागरु), प्रवर (श्रेष्ठ) धूप, आर्तव (ऋतु ऋतुमां वृद्धि पामेला), माल्य (जाइ आदिकनां पुष्पो) तथा अनुलेपन (श्रीखंड, केसर विगेरेना लेप) ना विधिने विषे रमे छे (ते पदार्थोना सुगंधथी पोताना आत्माने आनंद थयो माने छे). ५.

मू०—घाणिंदियदुद्दंत—त्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
जं ओसहिगंधेणं, बिलाओ निद्धावती उरगो ॥ ६ ॥

अर्थ—परंतु घ्राणइंद्रियना दुर्दांतपणानो एटले जेणे घ्राणइंद्रिय वश न करी होय तेनो आटलो दोष थाय छे के जेम ओषधिना गंधवडे खेंचायेलो सर्प पोताना बिलमांथी बहार नीकळे छे (गारुडिकना हाथमां पकडाय छे अने दुःख पामे छे तेम ते पण दुःख पामे छे.) ६.

मू०—तित्तकडुयं कसायंब—महुरं बहुखज्जपेज्जलेज्झेसु ।
आसायंमि उ गिद्धा, रमंति जिब्भिदियवसट्टा ॥ ७ ॥

अर्थ—आस्वाद (रस) मां गृद्ध (रागी) थयेला पुरुषो जिव्हा इंद्रियना वशथी पीडा पाम्या सता तिक्त (कडवा), कटुक (तीखा), कषाय (तुरा), अम्ल (खाटा) अने मधुर (मीठा) रसवाळा घणा खाद्य (खावा लायक), पेय (पीवा लायक) अने लेह्य (चाटवा लायक) पदार्थोने विषे रमे छे (रसवाळा पदार्थो खाइने आनंद माने छे.) ७.

मू०—जिब्भिदियदुद्दंत—त्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
जं गललग्गुक्खित्तो, फुरइ थलविरल्लिओ मच्छो ॥ ८ ॥

अर्थ—परंतु जिव्हेंद्रियना दुर्दांतपणानो एटले जेणे जिव्हेंद्रिय वश न करी होय तेनो आटलो दोष थाय छे के जेम गल (बडिष) मां लग्न थयेलो होवाथी जळनी बहार उत्क्षिप्त (खेंचेलो) मत्स्य स्थळने विषे नाख्यो सतो तडफडे छे (मच्छीमार लोको मत्स्य पकडवा माटे कांटामां परोवेली मांसनी पेशी जळमां नांखे छे, तेमां लुब्ध थयेलो मत्स्य ते पेशी मुखमां ग्रहण करे छे के तरत ज तेना कांटाथी तेनुं गळुं वींधाय छे, तेथी मच्छीमार तेने जळमांथी बहार काढी पृथ्वीपर मूके छे. त्यां ते तडफडीने छेवट मरण पामे छे. (तेम ते दुःखने पामे छे.) ८.

मू०—उउभयमाणसुहेहि (सु) य, सविभवहिययमणनिव्वुइकरेसु ।
फासेसु रज्जमाणा, रमंति फासिंदियवसट्टा ॥ ९ ॥

अर्थ—स्पर्शेंद्रियमां आसक्त थयेला पुरुषो स्पर्शेंद्रियना वशथी पीडा पाम्या सता हेमंतादिक ऋतुओमां सेववाथी सुखने करनारा तथा वैभव (समृद्धि–धन) सहित, हितक[1] (हितकारक–प्रकृतिने अनुकूळ) अने मनने निर्वृति (सुख) करनारा एवा स्रक्[2], चंदन, स्त्री, वस्त्र अने तळाइ विगेरे पदार्थोने विषे रमे छे (तेमना स्पर्शथी आनंद माने छे.) ९.

मू०—फासिंदियदुद्दंत–त्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
जं खणइ मत्थयं कुं–जरस्स लोहंकुसो तिक्खो ॥ १० ॥

अर्थ—परंतु स्पर्शेंद्रियना दुर्दांतपणानो एटले जेणे स्पर्शेंद्रिय वश न करी होय तेनो आटलो दोष थाय छे के जेम तीक्ष्ण लोढानो अंकुश हाथीना मस्तकने खणे छे–पीडे छे. (वनमां स्वेच्छाए विचरनार हाथी स्पर्शना दोषथी खाडामां पडीने पकडाय छे अने तेथी ते तीक्ष्ण अंकुशना प्रहारनी अत्यंत पीडा पामे छे.) (तेम ते पीडा पामे छे.) १०.

हवे इंद्रियोनो संवर करवाथी जे गुण थाय छे ते कहे छे.—

---

१ अथवा वैभववाळाने हितकारक. २ पुष्पमाळा.

मू०—कलरिभियमहुरतंती—तलतालवंसककुहाभिरामेसु ।
सद्देसु जे न गिद्धा, वसट्टमरणं न ते मरए ॥ ११ ॥

अर्थ—कल, रिभित, मधुर, तंत्री, तलताल (अथवा तल, ताल) अने वंश ए सर्व ककुद (श्रेष्ठ) अने मनोहर वाजित्रना शब्दने विषे जेओ गृद्धिवाळा—आसक्तिवाळा न होय, तेओ वशार्त मरणे मरता नथी. (वशवडे एटले इंद्रियोना पराधीनपणावडे ऋत एटले पीडा पामेला, ते वशार्त कहेवाय छे. अथवा वशने एटले विषयोना परतंत्रपणाने ऋत एटले पामेला, ते वशार्त कहेवाय छे. आवा वशार्त प्राणीओनुं जे मरण ते वशार्त मरण कहेवाय छे. अर्थात् इंद्रियो अथवा तेना विषयोने आधीन रह्या सता ज जे मरवुं ते वशार्त मरण कहेवाय छे. आवा मरणवडे जितेंद्रिय पुरुषो मरता नथी. आ प्रमाणे पछीनी गाथाओमां पण अर्थ समजी लेवो.) ११.

मू०—थणजहणवयणकरचरणनयणगव्वियविलासियगतीसु ।
रूवेसु जे न रत्ता, वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १२ ॥

अर्थ—स्त्रीओना स्तन, जघन, वदन (मुख), हाथ, पग अने नेत्र तथा गर्विष्ठ (सौभाग्यना अभिमानवाळी) स्त्रीओनी विलासवाळी (विकारवाळी) गति ए सर्व रूपोने विषे जेओ आसक्त थता नथी, तेओ वशार्त मरणे करीने मरता नथी. १२.

मू०—अगरुवरपवरधूवण—उउयमल्लाणुलेवणविहीसु ।
गंधेसु जे न गिद्धा, वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १३ ॥

अर्थ—श्रेष्ठ अगरु, श्रेष्ठ धूप, ऋतु ऋतुमां वृद्धि पामेला जाइ आदिकनां पुष्पो तथा श्रीखंड, केसर विगेरेना लेपनी विधिवाळा गंधने विषे जेओ आसक्त थता नथी, तेओ वशार्त मरणवडे मरता नथी. १३.

मू०—तित्तकडुयं कसायंब—महुरं बहुखज्जपेज्जलेज्झेसु ।
आसाए जे न गिद्धा, वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १४ ॥

अर्थ—तिक्त, कडु, कषाय, अम्ल (खाटा) अने मधुर एवा घणा खाद्य, पेय अने लेह्य पदार्थोना आस्वादमां जेओ गृद्धिवाळा थता नथी, तेओ वशार्त मरणवडे मरता नथी. १४.

मू०—उउभयमाणसुहेसु य, सविभवहिययमणणिव्वुइकरेसु ।
फासेसु जे न गिद्धा, वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १५ ॥

अर्थ—हेमंतादिक ऋतुमां सेववाथी सुखकारक तथा वैभव (समृद्धि—धन) सहित, हितकारक[1] (प्रकृतिने अनुकूळ)

---

१ अथवा वैभववाळाने हितकारक.

अने मनने सुख करनारा स्रक् चंदनादिक स्पर्शने विषे जेओ गृद्धि पामता नथी, तेओ वशार्त मरणे मरता नथी. १५.
इंद्रिय आश्री उपदेश आपे छे.—

मू०—सद्देसु य भद्दयपा–वएसु सोयविसयं उवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया ण होयव्वं ॥ १६ ॥

अर्थ—भद्रक (शुभ) के पापक (अशुभ) शब्दो श्रोत्रना विषयने प्राप्त थये सते (प्राप्त थाय त्यारे) साधुए सर्वदा तुष्ट के रुष्ट न थवुं. १६.

मू०—रूवेसु य भद्दगपा–वएसु चक्खुविसयं उवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया ण होयव्वं ॥ १७ ॥

अर्थ—शुभ के अशुभ रूपो नेत्रना विषयमां प्राप्त थये सते साधुए सर्वदा तुष्ट के रुष्ट थवुं नहीं. १७.

मू०—गंधेसु य भद्दयपा–वएसु घाणविसयं उवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया ण होयव्वं ॥ १८ ॥

१ खुशी २ रोषवाळा.

अर्थ—शुभ के अशुभ गंधना पदार्थो घ्राणेंद्रियना विषयमां प्राप्त थये सते साधुए सर्वदा तुष्ट के रुष्ट थवुं नहीं. १८.

मू०—रसेसु य भद्दयपा—वएसु जिब्भविसयं उवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया ण होयव्वं ॥ १६ ॥

अर्थ—शुभ अथवा अशुभ रसना पदार्थो जिव्हा इंद्रियना विषयने प्राप्त थये सते साधुए सर्वदा तुष्ट के रुष्ट थवुं नहीं. १६.

मू०—फासेसु य भद्दयपा—वएसु कायविसयं उवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया ण होयव्वं ॥ २० ॥

अर्थ—शुभ अथवा अशुभ स्पर्शना पदार्थो शरीरना विषयने प्राप्त थये सते साधुए सर्वदा तुष्ट के रुष्ट थवुं नहीं. २०.

मू०—एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति बेमि ॥ १३५ ॥

॥ सत्तरसमं नायज्झयणं समत्तं ॥ १७

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवान महावीर स्वामी यावत् सिद्धि गतिने पामेला, तेणे सतरमा ज्ञाता-

ध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे. ते प्रमाणे में तमने कह्यो छे. १३५.

अहीं विशेष उपनय आ प्रमाणे कह्यो छे.

"जह सो कालियदीवो, अणुवमसोक्खो तहेव जइधम्मो। जह आसा तह साहू, वणियव्वऽणुकूलकारिजणा १"

" जेम ते कालिकद्वीप कह्यो छे तेम अनुपम सुखवाळो साधुधर्म जाणवो, जेम अश्व कह्या छे तेम साधु जाणवा, अने सांयात्रिक वणिक जेवा अनुकूळता करनारा मनुष्यो जाणवा. १. "

" जह सद्दाइअगिद्धा, पत्ता नो पासबंधणं आसा। तह विसएसु अगिद्धा, बज्झंति न कम्मणा साहू ॥ २ ॥ "

" जेम शब्दादिकमां गृद्धि नहीं करनारा अश्वो पाशना बंधनने न पाम्या, तेम विषयोमां गृद्धि नहीं करनारा साधुओ कर्मवडे बंधाता नथी. २. "

" जह सच्छंदविहारो, आसाणं तह य इह वरमुणीणं। जरमरणाइँ विवज्जिय, संपत्ताणंदनिव्वाणं ॥ ३ ॥ "

" जेम शब्दादिकमां आसक्त नहीं थयेला अश्वो स्वेच्छाए विचरता हता, तेम अहीं विषयोमां आसक्त नहीं थयेला श्रेष्ठ मुनिओ जरा, मरण विगेरेनो त्याग करीने मोक्षना (परम) आनंदने प्राप्त करे छे. ३. "

" जह सद्दाइसु गिद्धा, बद्धा आसा तहेव विसयरया। पावेंति कम्मबंधं, परमासुहकारणं घोरं ॥ ४ ॥ "

अर्थ—जेम शब्दादिकमां आसक्त थयेला अश्वो बंधाया, तेम विषयोमां आसक्त थयेला साधुओ अत्यंत दुःखना कारणरूप घोर कर्मबंधनने पामे छे. ४. "

" जह ते कालियदीवा, णीया अन्नत्थ दुहगणं पत्ता । तह धम्मपरिब्भट्ठा, अधम्मपत्ता इहं जीवा ॥५॥"

" जेम कालिक द्वीपथी बीजे स्थाने लइ जवायेला ते अश्वो दुःखना समूहने पाम्या, तेम अहीं धर्मथी भ्रष्ट थयेला अने अधर्मने पामेला जीवो दुःखना समूहने पामे छे. ५."

" पावेंति कम्मनरवइ-वसया संसारवाहयालीए । आसप्पमद्दएहि व, नेरइयाइहिं दुक्खाइं ॥ ६ ॥"

" कर्मरूपी राजाने वश थयेला प्राणीओरूपी अश्वो संसाररूपी वाह्यालिने विषे अश्वमर्दको (अश्वपालो) नी जेवा नारकी विगेरे थकी (नरक विगेरे दुर्गतिमां जइने अत्यंत) दुःखने पामे छे. ६."

। इति सप्तदशं ज्ञाताध्ययनम् । १७

इति सत्तरमुं ज्ञाताध्ययन. १७



अथ अढारमुं सुंसुमाज्ञात नामनुं अध्ययन. १८

पूर्वना अध्ययनमां इंद्रियवशवर्तीनो अनर्थ अने जितेंद्रियनो अर्थ कह्यो. हवे आ अढारमा अध्ययनमा लोभने वश थयेलाना अनर्थने अने लोभने वश नहीं थयेलाना अर्थने कहे छे.—

मू०—जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठारसमस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?"।

अर्थ—जंबूस्वामी सुधर्मास्वामीने पूछे छे के-हे भगवान ! श्रमण भगवान महावीरस्वामीए सतरमा ज्ञाताध्ययननो आ (उपर कह्या प्रमाणे) अर्थ कह्यो छे, तो अढारमा ज्ञाताध्ययननो कयो अर्थ कह्यो छे ?"

मू०—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे णामं नयरे होत्था, वण्णओ।

अर्थ—सुधर्मास्वामी उत्तर आपे छे-आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये राजगृह नामनुं नगर हतुं. तेनुं वर्णन कहेवुं.

मू०—तत्थ णं धण्णे णामं सत्थवाहे परिवसइ, तस्स णं भद्दा भारिया।

अर्थ—ते राजगृह नगरने विषे धन्य नामनो एक सार्थवाह रहेतो हतो. तेने भद्रा नामनी भार्या हती.

मू०—तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए अत्तया पंच सत्थवाहदारगा होत्था, तं जहा—धणे धणपाले धणदेवे धणगोवे धनरक्खिए ।

अर्थ—ते धन्य सार्थवाहना पुत्रो अने भद्रा भार्यांना आत्मजो पांच सार्थवाह पुत्रो हता. तेमनां नाम आ प्रमाणे.—धन, धनपाळ, धनदेव, धनगोप, अने धनरक्षित.

मू०—तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताणं अणुमग्गजातीया सुंसुमा णामं दारिया होत्था सूमालपाणिपाया ।

अर्थ—ते धन्य सार्थवाहनी पुत्री अने भद्रा भार्यांनी आत्मजा पांच पुत्रोनी पछी उत्पन्न थयेली सुंसुमा नामनी पुत्री हती, तेना हाथ पग कोमळ हता. विगेरे.

मू०—तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स चिलाए नामं दासचेडे होत्था. अहीणपंचिंदियसरीरे मंसोवचिए बालकीलावणकुसले यावि होत्था ।

अर्थ—ते धन्य सार्थवाहने चिलात नामनो दासचेटक (दासपुत्र) हतो, तेना पांचे इंद्रियो तथा शरीर अन्यून हतां,

१ पोताथी उत्पन्न थयेला.

ते मांसवडे पुष्ट हतो, तथा बाळकने क्रीडा कराववामां (रमाडवामां) कुशळ पण हतो.

मू०—तते णं से दासचेडे सुंसुमाए दारियाए बालग्गाहे जाए यावि होत्था, सुंसुमं दारियं कडीए गिण्हति, गिण्हित्ता बहूहिं दारएहि य दारियाहि य डिंभएहि य डिंभियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धिं अभिरममाणे अभिरममाणे विहरति ।

अर्थ—तेथी ते दासचेटक सुंसुमा पुत्रीनो बाळग्राहक[1] थयो हतो. ते सुंसुमा पुत्रीने केडपर ग्रहण करतो हतो, ग्रहण करीने घणा छोकराओ, छोकरीओ, बाळको, बालिकाओ, कुमारो अने कुमारिकाओनी साथे क्रीडा करतो करतो रह्यो हतो.

मू०—तते णं से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूणं दारयाण य दारियाण य डिंभयाण य डिंभियाण य कुमाराण य कुमारीण य अप्पेगतियाणं खुल्लए अवहरति, एवं वट्टए आडोलियातो तेंदुसए पोत्तुल्लए साडोल्लए अप्पेगतियाणं आभरणमल्लालंकारं अवहरति, अप्पेगतिया आउस्सति, एवं अवहसइ निच्छोडेति निब्भच्छेति तज्जेति, अप्पेगतिया तालेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते चिलात दासचेटक ते घणा दारको, दारिकाओ, डिंभो, डिंभिकाओ, कुमारो अने कुमारिकाओ-

१ बाळकने ग्रहण करनार—रमाडनार.

मांना केटलाकना क्षुल्लक कपर्दक (कोडा कोडीओ) हरण करतो हतो–खुंची लेतो हतो, ए ज प्रमाणे केटलाकना वर्तक (लाखमय गोळा) हरण करतो हतो, केटलाकनी मोइ हरण करतो हतो, केटलाकना कंदुक (दडा), केटलाकना पोचुल्लक एटले वस्त्रना ढींगला ढींगली अथवा वस्त्रो, केटलाकना साडोल्लक एटले उत्तरीय वस्त्रने अने केटलाकना आभरण, पुष्पमाळा तथा अलंकारने हरी लेतो हतो. केटलाकने आक्रोश करतो हतो. ए ज प्रमाणे केटलाकनी मश्करी करतो, केटलाकने ठगतो, केटलाकनी निर्भर्त्सना करतो, केटलाकनी तर्जना करतो अने केटलाकने ताडन करतो हतो–मारतो हतो.

मू०–तते णं ते बहवे दारगा य दारिगा य डिंभया य डिंभिगा य कुमारा य कुमारिगा य रोयमाणा य ५ साणं साणं अम्मापिऊणं णिवेदेंति ।

अर्थ—त्यारे ते घणा दारको, दारिकाओ, डिंभो, डिंभिकाओ, कुमारो अने कुमारिकाओए रोता रोता जइने पोतपोताना मातापिताने ते वृत्तांत कह्यो.

मू०–तते णं तेसिं बहूणं दारगाण य दारिगाण य डिंभाण य डिंभियाण य कुमाराण य कुमारियाण य अम्मापियरो जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता धण्णं सत्थवाहं बहूहिं खेज्जणाहि य रुंटणाहि य उवलंभणाहि य खेज्जमाणा य रुंटमाणा य उवलंभेमाणा य

धण्णस्स एयमट्ठं णिवेदेंति ।

अर्थ—ते वखते ते घणा दारको, दारिकाओ, डिंभो, डिंभिकाओ, कुमारो अने कुमारिकाओना मातापिताओ ज्यां धन्य सार्थवाह हतो त्यां आव्या, आवीने धन्य सार्थवाहने खेदकारक वचनोवडे, रुदन जेवा वचनोवडे अने 'आवुं तमारा जेवाने योग्य होय ?' एवा उपालंभना वचनोवडे खेद करता, रोता अने उपालंभ देता सता धन्य सार्थवाहने आ अर्थ-वृत्तांत निवेदन करता हवा.

मू०—तते णं धण्णे सत्थवाहे चिलायं दासचेडं एयमट्ठं भुज्जो भुज्जो णिवारेंति, णो चेव णं चिलाए दासचेडे उवरमति ।

अर्थ—ते सांभळी धन्य सार्थवाहे चिलात नामना दासचेटकने आ बाबत वारंवार निवार्यो, तो पण ते चिलात दासचेटक विराम पाम्यो नहीं.

मू०—तते णं से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूणं दारगाण य दारिगाण य डिंभयाण य डिंभियाण य कुमारगाण य कुमारियाण य अप्पेगतियाणं खुल्लए अवहरति जाव तालेति ।

अर्थ—त्यारपछी पण ते चिलात दासचेटक ते घणा दारको, दारिकाओ, डिंभो, डिंभिकाओ, कुमारो अने कुमारिकाओमांना केटलाकना कपर्दक—कोडा कोडीओ हरण करवा लाग्यो. यावत् केटलाकने ताडन करवा लाग्यो—मारवा लाग्यो.

मू०—तते णं ते बहवे दारगा य दारिगा य डिंभगा य डिंभिया य कुमारा य कुमारिया य रोयमाणा य जाव अम्मापिऊणं णिवेदेंति ।

अर्थ—त्यारे ते घणा दारको, दारिकाओ, डिंभो, डिंभिकाओ, कुमारो अने कुमारिकाओए रोता रोता यावत् पोतपोताना मातापिताओने ते वृत्तांत निवेदन कर्यो.

मू०—तते णं ते आसुरुत्ता ५ जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता बहूहिं खिज्जणाहि य जाव एयमट्ठं णिवेदिंति ।

अर्थ—त्यारे ते मातापिताओ तत्काळ क्रोध पामीने ज्यां धन्य सार्थवाह हतो त्यां आव्या, आवीने घणा खेदयुक्त वचनोवडे यावत् ते वृत्तांत निवेदन कर्यो.

मू०—तते णं से धण्णे सत्थवाहे बहूणं दारगाणं दारियाणं डिंभयाणं डिंभियाणं कुमारगाणं कुमारियाणं अम्मापिऊणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते चिलायं दासचेडं उच्चावयाहिं आउसणाहिं आउसति उद्धंसति णिब्भच्छेति निच्छोडेति तज्जेति उच्चावयाहिं तालणाहिं तालेति सातो गिहातो णिच्छुभति ॥ १३६ ॥

अर्थ--ते वखते ते धन्य सार्थवाहे ते घणा दारको, दारिकाओ, डिंभो, डिंभिकाओ, कुमारो अने कुमारिकाओना मातापितानी पासेथी आ वृत्तांत सांभळी तत्काळ क्रोध पामी चिलात दासचेटकने उंचा नीचा आक्रोशना वचनवडे आक्रोश कर्यो, तिरस्कार कर्यो, निर्भर्त्सना करी, निच्छोडणा करी (तडछोड्यो), तर्जना करी, उंच नीच ताडनावडे ताडना करी, अने पोताना घरमांथी काढी मूक्यो. १३६.

मू०-तते णं से चिलाए दासचेडे साओ गिहाओ निच्छूढे समाणे रायगिहे नयरे सिंघाडए जाव पहेसु य देवकुलेसु य सभासु य पवासु य जूयखलएसु य वेसाघरेसु य पाणघरएसु य सुहंसुहेणं परिवड्ढति ।

अर्थ—त्यारपछी ते चिलात दासचेटक पोताना (धन्यसार्थवाहना) घरमांथी काढी मूकायो त्यारे ते राजगृह नगरना शृंगाटक (शींगोडाना आकारवाळा मार्ग) ने विषे, यावत् दरेक मार्गने विषे, देवकुलने विषे, सभाने विषे, पाणीनी परबने विषे, द्यूत रमवाना स्थानने विषे, वेश्याना घरने विषे तथा मद्यपानना स्थानने विषे सुखे सुखे विचरतो सतो वृद्धि पामवा लाग्यो. (ज्यां त्यां भमवा लाग्यो.)

मू०-तते णं से चिलाए दासचेडे अणोहट्टिए अणिवारिए सच्छंदमई सइरप्पयारी मज्जपसंगी

१ घणा माणसोने बेसवाना स्थानने विषे.

चोज्जपसंगी मंसपसंगी जूयप्पसंगी वेसापसंगी परदारप्पसंगी जाए यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते चिलात दासचेटक अनपहर्तृक (जेनो हाथ पकडीने निवारण करनार कोइ न होय एवो), अनिवारित (जेने वचनथी निवारण करनार कोइ न होय तेवो), स्वच्छंदमतिवाळो (निरंकुश बुद्धिवाळो), स्वेच्छाचारी (पोतानी इच्छा प्रमाणे चालनारो), मदिरापानमां आसक्त, चोरी करवामां आसक्त, मांस खावामां आसक्त, द्यूत रमवामां आसक्त, वेश्यामां आसक्त अने परस्त्रीने विषे आसक्त थयेलो होतो हवो (साते व्यसनमां आसक्त थयो.)

मू०—तते णं रायगिहस्स नगरस्स अदूरसामंते दाहिणपुरत्थिमे दिसिभाए सीहगुहा नामं चोरपल्ली होत्था विसमगिरिकडगकोडंबसंनिविट्ठा वंसीकलंकपागारपरिक्खित्ता छिण्णसेलविसमप्पवायफरिहोवगूढा एगदुवारा अणेगखंडी विदितजणणिग्गमपवेसा अब्भिंतरपाणिया सुदुल्लभजलपेरंता सुबहुस्स वि कूवियबलस्स आगयस्स दुप्पहंसा यावि होत्था ।

अर्थ—आवा समये राजगृह नगरनी अति दूर नहीं अने अति नजीक नहीं एवा प्रदेशने विषे दक्षिण अने पूर्वनी वचेना (अग्नि खूणाना) दिशाना भागने विषे सिंहगुहा नामनी एक चोरपल्ली हती. ते पल्ली विषम एवा गिरिनितंबना प्रांतभागमां स्थापन करेली हती, वांसनी झाडीनी वाडरूपी प्राकारे करीने सहित हती, जूदी जूदी टेकरीओना विषम एवा

प्रपातरूपी परिखा(खाइ)ए करीने व्याप्त हती, तेने जवा आववा माटे एक ज द्वार हतुं, तेमां नाशी जवा माटे नानां द्वारो (छींडां) घणां हतां, जाणीता माणसो ज तेमां जवुं आववुं करी शकता हता, ते पल्लीनी अंदर ज जोइए तेटलुं पाणी हतुं, ते पल्लीनी बहार आसपास कोइपण ठेकाणे पाणी मळतुं न हतुं, कूविय-व्यावर्तक (एटले चोरेलो माल पाछो लेवाने आवेला) सैन्यवडे पण ते पल्लीनो प्रध्वंस (विनाश) थइ शके तेम नहोतुं, आवा प्रकारनी ते चोरपल्ली हती.

मू०—तत्थ णं सीहगुहाए चोरपल्लीए विजए णामं चोरसेणावती परिवसति अहम्मिए जाव अधम्मकेऊ समुट्ठिए बहुणगरणिग्गयजसे सूरे दढप्पहारी साहसीए सद्दवेही ।

अर्थ—ते सिंहगुहा नामनी चोरपल्लीने विषे विजय नामनो चोर सेनापति रहेतो हतो. ते अधर्मिष्ठ यावत् अधर्मनो केतु (ध्वज) उग्यो होय-फरकतो होय तेवो हतो. घणा नगरमांथी तेनो (चोरी करवामां बहादूरपणारूप) यश नीकळतो हतो, अथवा नगरना लोकोना मुखथी तेनो तेवो यश नीकळतो-गवातो हतो. ते शूरवीर, दृढ प्रहार करनार, साहसवाळो अने शब्दवेधी हतो.

मू०—से णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाणं आहेवच्चं जाव विहरति ।

अर्थ—ते विजय ते सिंहगुफा नामनी चोरपल्लीमां पांचसो चोरोनुं अधिपतिपणुं भोगवतो यावत् विचरतो हतो-रहेलो हतो.

१ बे पर्वतनी वच्चेनो खाडो, पर्वतनी फाट. २ अथवा द्विपदादिकनो क्षय करनार पापरूप केतु उग्यो होय, एवो अर्थ करवो.

मू०—तते णं से विजए तक्करे चोरसेणावती बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य रायावगारीण य अणधारगाण य बालघायगाण य वीसंभघायगाण य जूयकाराण य खंडरक्खाण य अन्नेसिं च बहूणं छिन्नभिन्नबहिराहयाणं कुडंगे यावि होत्था ।

अर्थ—तथा वळी ते चोरनो सेनापति विजय नामनो तस्कर बीजा घणा चोरोनो, पारदारिक(जार पुरुषो)नो, ग्रंथिभेदको (गंठीया) नो, घर विगेरेनी संधिने छेदनार लोकोनो, खातर खोदनार लोकोनो, राजानो अपकार करनार लोकोनो, ऋणने धारण करनार (देणदार) लोकोनो, बाळहत्या करनार लोकोनो, विश्वासघात करनार लोकोनो, जुगारीओनो, खंडरक्षको (दंडपाशिको) नो तथा बीजा घणा के जे मनुष्योना हाथ, पग, नासिका विगेरे बाह्य अवयवोने छेदनार भेदनार अन्यायी लोकोनो कुडंग (वंशनी झाडी) समान आधारभूत हतो, जेम अन्यायी जनो राजाना भयथी नाशीने वंशनी झाडीमां छुपाइ रहे, तेथी ते वंशनी झाडी तेमने शरणभूत आधारभूत थाय छे, तेम ते विजय चोर पण बीजा सर्व अन्यायी जनोनो शरणभूत आधारभूत हतो.

मू०—तते णं से विजए तक्करे चोरसेणावती रायगिहस्स नगरस्स दाहिणपुरच्छिमं जणवयं बहूहिं गामघाएहि य नगरघाएहि य गोग्गहणेहि य बंदिग्गहणेहि य पंथकुट्टणेहि य खत्तखणणे-

हि य उवीलेमाणे उवीलेमाणे णित्थाणं णिद्धणं करेमाणे विहरति।

अर्थ—त्यारपछी ते चोर सेनापति विजय नामनो चोर राजगृहनगरना दक्षिण अने पूर्वनी वच्चेना (अग्निखूणाना) देशोने घणा गामना घातवडे, नगरना घातवडे, गायोनुं हरण करवावडे, बंदीग्रहणवडे (लोकोने केद करवावडे), पथिक जनोने कुटवावडे तथा खातर खोदवावडे उद्वेग पमाडतो उद्वेग पमाडतो सतो (उद्वेग पमाडीने) स्थान रहित अने धन रहित करतो सतो विचरतो हतो–रह्यो हतो.

मू०—तते णं से चिलाए दासचेडे रायगिहे णयरे बहूहिं अत्थाभिसंकीहि य चोज्जा(रा)भिसंकीहि य दाराभिसंकीहि य धणिएहि य जूइकरेहि य परब्भवमाणे परब्भवमाणे रायगिहाओ नगरीओ णिग्गच्छति, णिग्गच्छित्ता जेणेव सीहगुफा चोरपल्ली तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता विजयं चोरसेणावतिं उवसंपज्जित्ता णं विहरति ।

अर्थ—तेवामां ते चिलात नामनो दासचेटक राजगृहनगरने विषे घणा अर्थाभिशंकी–आमारुं धन आ चोरी जशे एवी शंकावाळा, आ चोर छे एवी शंकावाळा, आ अमारी दारा (स्त्री)ने लइ जशे एवी शंकावाळा, धनिको अने जुगारीओ ए सर्व जनोवडे पराभव पाम्यो पराभव पाम्यो सतो राजगृहनगरथी बहार नीकळ्यो. नीकळीने ज्यां सिंहगुफा नामनी

चोरपल्ली हती त्यां आव्यो. आवीने विजय नामना चोरसेनापतिनी पासे आवी (तेने शरणे जइ) विचरवा लाग्यो-रह्यो.

मू०-तते णं से चिलाए दासचेडे विजयस्स चोरसेणावइस्स अग्गे असिलट्ठिग्गाहे जाए यावि होत्था । जाहे वि य णं से विजए चोरसेणावती गामघायं वा जाव पंथकोट्टिं वा काउं वच्चति, ताहे वि य णं से चिलाए दासचेडे सुबहुं पि हु कूवियबलं हयमहिय जाव पडिसेहेति, पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुहं चोरपल्लिं हव्वमागच्छति ।

अर्थ—त्यारपछी त्यां ते चिलात दासचेटक चोर सेनापति विजय तस्करनी आगळ खड्ग अने यष्टिने धारण करनार थयो. तेथी ज्यारे ते विजय नामनो चोर सेनापति गामनो घात यावत् पथिकनो घात करवा जतो हतो, त्यारे ते चिलात दासचेटक घणा कूविय (चोरीनो माल पाछो लेवा आवनार) सैन्यने हत मथित करी (हणी मथन करी) निषेध करतो हतो.-हांकी काढतो हतो, फरीथी धनादिक अर्थने लइ, कार्य सिद्ध करी विघ्न रहितपणे सिंहगुफा नामनी चोरपल्लीमां शीघ्रपणे पाछो आवतो हतो.

मू०-तते णं से विजए चोरसेणावती चिलायं तक्करं बहूइओ चोरविज्जाओ य चोरमंते य चोरमायाओ य चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते विजय चोर सेनापतिए ते चिलात तस्करने घणी चोर विद्याओ, चोर मंत्रो, चोरनी मायाओ अने चोरनी निकृति (छळ कपट) विगेरे घणी बाबतो शीखवी.

मू०—तते णं से विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइं कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते विजय चोर सेनापति एकदा कदाचित् काळधर्मवडे युक्त थयो—मरण पाम्यो.

मू०—तते णं ताइं पंच चोरसयातिं विजयस्स चोरसेणावइस्स महया महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं णीहरणं करेंति, करित्ता बहूइं लोइयातिं मयकिच्चाइं करेइ, करित्ता जाव विगयसोया जाया यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारे ते पांचसो चोरोए विजय चोरसेनापतिनुं मोटी मोटी ऋद्धि अने सत्कारना समूहवडे नीहरण[1] कर्युं, करीने घणा लौकिक मरणनां कार्य कर्या, करीने यावत् केटलेक काळे शोक रहित थया.

मू०—तते णं ताइं पंच चोरसयातिं अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वदासी—" एवं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! विजए चोरसेणावई कालधम्मुणा संजुत्ते, अयं च णं चिलाए तक्करे विजएणं

१ स्मशानमा लई जवानुं कार्य.

चोरसेणावइणा बहूइओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए, तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! चिलायं तक्करं सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए " त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता चिलायं तक्करं तीए सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचंति। ततेणं से चिलाए चोरसेणावती जाए अहम्मिए जाव विहरति।

अर्थ—त्यारपछी ते पांचसो चोरोए एक बीजाने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे बोल्या–" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! विजय नामना चोरसेनापति काळधर्मवडे युक्त थया छे–मरण पाम्या छे अने आ चिलात नामना तस्करने ते विजय चोरसेनापतिए घणी चोरविद्याओ यावत् शीखवी छे, तो हे देवानुप्रियो ! आपणे आ चिलात तस्करने सिंहगुफा नामनी चोरपल्लीने विषे चोरना सेनापतिपणाए करीने अभिषेक करवो श्रेयस्कर छे. " आ प्रमाणे कही एक बीजाना आ अर्थ (विचार) ने अंगीकार कर्यो, अंगीकार करी चिलात तस्करने ते सिंहगुफा नामनी चोरपल्लीने विषे चोरना सेनापतिपणे अभिषेक कर्यो. त्यारपछी ते चिलात चोरनो सेनापति थयो तथा अधर्मी थयो, यावत् ते रीते विचरवा लाग्यो.

मू०—तए णं से चिलाए चोरसेणावती चोरणायगे जाव कुडंगे यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते चिलात चोरनो सेनापति चोरनो नायक यावत् कुडंग एटले वंशनी झाडीनी जेम (घणा अत्या-

चारीओनो) शरणरूप अने आधारभूत थयो.

मू०—से णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाण य एवं जहा विजओ तहेव सव्वं जाव रायगिहस्स दाहिणपुरच्छिमिल्लं जणवयं जाव णित्थाणं निद्धणं करेमाणे विहरति ॥ १३१ ॥

अर्थ—ते चिलात नामनो चोर सेनापति ते सिंहगुफा नामनी चोरपल्लीमां पांचसो चोरनो अधिपति थयो, ए ज प्रमाणे विजय स्तेननी जेम सर्व कहेवुं. यावत् राजगृह नगरनी दक्षिण अने पूर्वनी वच्चे (अग्निखूणा) ना जनपद (देश) ने एटले देशना लोकोने यावत् स्थान रहित अने धन रहित करतो सतो विचरवा लाग्यो. १३१.

मू०—तते णं से चिलाए चोरसेणावती अन्नया कयाइं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता पंच चोरसते आमंतेइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते चिलात नामना चोर सेनापतिए एकदा कदाचित् विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने तैयार करावी ते पांचसो चोरोने आमंत्रण कर्यु.

मू०—तओ पच्छा ण्हाए कयबलिकम्मे भोयणमंडवंसि तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं विपुलं असणं पाणं खातिमं सातिमं सुरं च जाव पसण्णं च आसाएमाणे ४ विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते चिलात चोर सेनापति स्नान करी बलिकर्म (गृहदेवतानुं पूजन) करी भोजन करवाना मंडपमां ते पांच सो चोरोनी साथे ते विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम तथा सुरा (मदिरा) यावत् प्रसन्न जातिनी मदिरानो आस्वाद करतो सतो विचरवा लाग्यो-रह्यो.

मू०–जिमियभुत्तुत्तरागए ते पंच चोरसए विपुलेणं धूवपुप्फगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेति संमाणेति, सक्कारित्ता संमाणिता एवं वदासी—

अर्थ—भोजन करी रह्या पछी ते पांच सो चोरोनो विपुल एवा धूप, पुष्प, गंध, माळा अने अलंकारवडे सत्कार कर्यो, सन्मान कर्युं, सत्कार सन्मान करी आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०–" एवं खलु देवाणुप्पिया ! रायगिहे णयरे धण्णे णामं सत्थवाहे अड्ढे, तस्स णं धूया भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताणं अणुमग्गजातिया सुंसुमा णामं दारिया यावि होत्था अहीणा जाव सुरूवा, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं विलुंपामो, तुब्भं विपुले धणकणग जाव सिलप्पवाले, ममं सुंसुमा दारिया "। तते णं ते पंच चोरसया चिलायस्स चोरसेणावइस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! राजगृह नगरमां धन्य नामनो धनाढ्य सार्थवाह छे. तेनी पुत्री भद्रा भार्यानी आत्मजा पांच पुत्रनी पछी थयेली सुंसुमा नामनी दारिका (पुत्री) छे. ते संपूर्ण इंद्रियोवाळी यावत् सुंदर रूपवाळी छे. तो हे देवानुप्रियो ! आपणे जइए, अने ते धन्य सार्थवाहना घरने लुंटीए, तेमां प्राप्त थयेलुं विपुल धन, कनक यावत् शिल (पट्टकूल) प्रवाल विगेरे तमारे लेवुं अने मारे सुंसुमा दारिका लेवी. " ते सांभळी ते पांच सो चोरोए ते चिलात चोर सेनापतिना आ अर्थ (वचन) ने अंगीकार कर्यो.

मू०—तते णं से चिलाए चोरसेणावती तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं अल्लचम्मं दुरूहति, पच्चावरण्हकालसमयंसि पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणा माइयगोमुहिएहिं फलएहिं, णिकट्ठाहिं आसिलट्ठीहिं, अंसगएहिं तोणेहिं, सजीवेहिं धणूहिं, समुक्खित्तेहिं सरेहिं, समुल्लालियाहिं दीहाहिं, ओसारियाहिं उरुघंटियाहिं, छिप्पतूरेहिं वज्जमाणेहिं, महया महया उक्किट्ठसीहणायचोरकलकलरवं जाव समुद्दरवभूयं करेमाणा सीहगुहातो चोरपल्लीओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता रायगिहस्स अदूरसामंते एगं महं गहणं अणुपविसति, अणुपविसित्ता दिवसं खवेमाणा चिट्ठति ।

अर्थ—त्यारपछी ते चिलात नामनो चोर सेनापति ते पांच सो चोरोनी साथे (मंगळने माटे) आर्द्र चर्मपर बेठो. पछी दिवसना छेल्ला प्रहरने समये पांच सो चोरोनी साथे संनद्ध (बख्तर पहेरी तैयार) थयो यावत् आयुध अने प्रहरण ग्रहण कर्यां. माइ एटले रींछ विगेरेना वाळथी युक्त होवाथी कोमळ एवा गोमुखित एटले छातीने ढांकनार होवाथी गायना मुख जेवा करेला एवा फलको (ढालो) ने छाती साथे बांधी, खड्गयष्टिने म्यानमांथी बहार काढी, भाथांने खभापर लटकाव्या, धनुषने जीवा (प्रत्यंचा) सहित कर्यां, बाणोने मूकवा माटे भाथामांथी बहार काढ्या, बरछी अथवा भालां नामना हथियारने उछाळवा लाग्या, जंघाए बांधेली घंटाओ (घुघरीओ) लांबी लटकावी, तथा शीघ्रपणे वाजित्रो वगाडवा लाग्या. आवा प्रकारनी सामग्रीए करीने तथा मोटा मोटा उत्कृष्ट सिंहनाद अने चोरोना कलकल शब्दपूर्वक यावत् समुद्रना खळभळाट जेवा शब्दने करता ते सर्वे सिंहगुफा नामनी चोरपल्लीमांथी बहार नीकळ्या, नीकळीने ज्यां राजगृह नगर हतुं त्यां आव्या, आवीने राजगृहनी अत्यंत दूर नहीं तेमज अत्यंत समीपे नहीं एवा प्रदेशने विषे एक मोटा वनमां पेठा. पेसीने कांइक बाकी रहेला दिवसने खपावता सता रह्या.

मू०—तते णं से चिलाए चोरसेणावई अद्धरत्तकालसमयंसि निसंतपडिनिसंतंसि पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं माइयगोमुहितेहिं फलएहिं जाव मूइआहिं उरुघंटियाहिं जेणेव राजगिहे पुरच्छिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता उदगवत्थिं परामुसति, परामुसित्ता आयंते ३ ताल्लुग्घाड-

णिविज्जं आवाहेइ, आवाहित्ता रायगिहस्स दुवारकवाडे उदएणं अच्छोडेति, अच्छोडित्ता कवाडं विहाडेति, विहाडित्ता रायगिहं अणुपविसति, अणुपविसित्ता महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणे उग्घोसेमाणे एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते चिलात नामनो चोरसेनापति अर्ध रात्रिने समये सर्व लोको निद्रानी विश्रांति लेता हता त्यारे पांच सो चोरो सहित माइ एटले रींछना वाळ सहित होवाथी कोमळ एवा गोमुखित एटले छातीने ढांकनार होवाथी गायना मुख जेवा करेला एवा फलको (ढालो) ने छाती साथे बांधी यावत् जंघाए घुघराने लटकावी ज्यां राजगृह नगरनो पूर्व दिशा तरफनो दरवाजो हतो त्यां आव्यो. आवीने तेणे जळनी मसकनो स्पर्श कर्यो (जळनी मसक हाथमां लीधी). स्पर्श करीने तेमांथी जळनी अंजळी लइ आचमन करी पवित्र थइ ताळा उघाडवानी विद्यानुं आवाहन (स्मरण) कर्युं. करीने राजगृहना दरवाजाना कमाड उपर पाणी छांट्युं, छांटीने ते कमाड उघाड्यां, उघाडीने राजगृह नगरमां प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने मोटा मोटा शब्दवडे आघोषणा करतो करतो आ प्रमाणे बोल्यो.——

मू०—" एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! चिलाए णामं चोरसेणावई पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं सीहगुहातो चोरपल्लीओ इह हव्वमागए धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं घाउकामे, तं जो णं णवियाए माउयाए दुद्धं पाउकामे, से णं निग्गच्छउ " त्ति कट्टु जेणेव धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव

उवागच्छति, उवागच्छित्ता धणस्स गिहं विहाडेति ।

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! हुं चिलात नामनो चोरसेनापति पांच सो चोरो सहित सिंहगुफा नामनी चोरपल्लीथी अहीं शीघ्र धन्य सार्थवाहना घरने लुंटवानी इच्छाथी आव्यो छुं. तो जेने नवी मातानुं दूध पीवानी इच्छा होय, ते मारी सामे आवो." आ प्रमाणे कही ज्यां धन्य सार्थवाहनुं घर हतुं त्यां आव्यो, आवीने धन्य सार्थवाहनुं घर तेणे उघाड्युं.

मू०—तते णं से धणे सत्थवाहे चिलाएणं चोरसेणावतिणा पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं गिहं घाइज्जमाणं पासति, पासित्ता भीते तत्थे पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं एगंतं अवक्कमति ।

अर्थ—ते वखते ते धन्य सार्थवाहे चिलात नामना चोरसेनापतिने पांच सो चोरो सहित पोताना घरने घात करतो (उघाडतो) अर्थात् प्रवेश करतो जोयो. जोइने ते भय पाम्यो, त्रास पाम्यो, एटले ते पांचे पुत्रो सहित एकांत स्थळमां छुपाइ रह्यो.

मू०—तते णं से चिलाए चोरसेणावती धणस्स सत्थवाहस्स गिहं घाएति, घाइत्ता सुबहुं धणकणग जाव सावएज्जं सुंसुमं च दारियं गेण्हति, गेण्हित्ता रायगिहाओ पडिणिक्खमति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव सीहगुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ १३८ ॥

अर्थ---त्यारपछी ते चिलात नामना चोरसेनापतिए धन्य सार्थवाहना घरमां प्रवेश कर्यो. प्रवेश करीने घणा धन, कनक यावत् स्वापतेय (द्रव्य) ने तथा सुंसुमा नामनी दारिकाने ग्रहण करी. ग्रहण करीने राजगृह नगरनी बहार नीकळ्यो. नीकळीने ज्यां सिंहगुहा नामनी चोरपल्ली हती ते तरफ जवाने चाल्यो. १३८.

मू०—तते णं से धण्णे सत्थवाहे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सुबहुं धणकणगं सुंसुमं च दारियं अवहारियं जाणित्ता महत्थं ३ पाहुडं गहाय जेणेव णगरगुत्तिया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तं महत्थं पाहुडं जाव उवणेंति, उवणित्ता एवं वदासी—

अर्थ---त्यारपछी ते धन्य सार्थवाह ज्यां पोतानुं घर हतुं त्यां आव्यो. आवीने घणुं धन, कनक विगेरे तथा सुंसुमा दारिकाने हरण करेली जाणी मोटा मून्यवाळुं प्राभृत (भेटणुं) ग्रहण करी ज्यां नगरना आरक्षको हता त्यां आव्यो. आवीने ते मोटा मून्यवाळुं प्राभृत यावत् तेनी पासे मूक्युं, मूकीने ते आ प्रमाणे बोल्यो--

मू०—" एवं खलु देवाणुप्पिया ! चिलाए चोरसेणावती सीहगुहातो चोरपल्लीओ इहं हव्वमागम्म पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं मम गिहं घाएत्ता सुबहुं धणकणगं सुंसुमं च दारियं गहाय जाव पडिगए, तं इच्छामो णं देवाणुप्पिया ! सुंसुमादारियाए कूवं गमित्तए, तुब्भे णं देवाणुप्पिया !

से विपुले धणकणगे. ममं सुंसुमा दारिया "।

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! चिलात नामनो चोरसेनापति सिंहगुहा नामनी चोरपल्लीमांथी अहीं पांच सो चोरो सहित शीघ्र आवीने मारा घरमां प्रवेश करी घणुं धन, कनक तथा सुंसुमा दारिका ग्रहण करी यावत् जतो रह्यो छे. तो हे देवानुप्रियो ! सुंसुमा दारिकानी सहाये जवाने माटे हुं इच्छुं छुं. तेमां हे देवानुप्रियो ! ते विपुल धन, कनक पाछुं आवे ते तमारुं अने सुंसुमा दारिका मारी–धन तमारे लेवुं अने सुंसुमा दारिका मारे राखवी. "

मू०—तते णं ते णयरगुत्तिया धण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता सन्नद्ध जाव गहियाउहपहरणा महया महया उक्किट्ठ जाव समुद्दरवभूयं पि व करेमाणा रायगिहाओ निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव चिलाए चोरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता चिलाएणं चोरसेणावतिणा सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते नगरना रक्षकोए ते धन्य सार्थवाहनो आ अर्थ (वचन) अंगीकार कर्यो, अंगीकार करीने बख्तर पहेरी तैयार थइने आयुध अने प्रहरणोने धारण करी मोटा मोटा उत्कृष्ट सिंहनादने तथा समुद्रना खळभळाटनी जेवा शब्दोने करता सता राजगृह नगरनी बहार नीकळ्या, नीकळीने ज्यां चिलात तस्कर हतो त्यां आव्या, आवीने ते चिलात चोरसेनापतिनी साथे युद्ध करवा लाग्या.

मू०—तते णं णगरगुत्तिया चिलायं चोरसेणावतिं हयमहिया जाव पडिसेहेंति।

अर्थ—तेमां नगरना आरक्षकोए ते चिलात नामना चोरसेनापतिने हत (हणायेलो) मथित (मथन करेलो) करी यावत् तेनो प्रतिषेध कर्यो–नसाडी मूक्यो.

मू०—तते णं ते पंच चोरसया णगरगोत्तिएहिं हयमहिय जाव पडिसेहिया समाणा तं विपुलं धणकणगं विच्छड्डेमाणा य विप्पकिरेमाणा य सव्वतो समंता विप्पलाइत्था।

अर्थ—त्यारपछी ते पांच सो चोरोने नगरना रक्षकोए हत मथित कर्या यावत् तेमनो प्रतिषेध कर्यो, त्यारे तेओ ते विपुल धन कनकनो त्याग करी चोतरफ फेंकी दइ चोतरफ दिशाविदिशामां नासी गया.

मू०— तते णं ते णयरगुत्तिया तं विपुलं धणकणगं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव रायगिहे तेणेव उवागच्छंति।

अर्थ—त्यारपछी ते नगरना रक्षकोए ते विपुल धन कनकने ग्रहण कर्युं, ग्रहण करीने ज्यां राजगृह नगर हतुं त्यां आव्या.

मू०—तते णं से चिलाए तं चोरसेण्णं तेहिं णयरगुत्तिएहिं हयमहिय जाव भीते तत्थे सुंसुमं दारियं गहाय एगं महं अगामियं दीहमद्धं अडविं अणुपविट्ठे।

अर्थ—त्यारपछी ते चिलात तस्कर ते पोताना चोरसैन्यने ते नगरना आरक्षकोए हत मथित करेला यावत् जोइने भय पाम्यो, त्रास पाम्यो, अने सुंसुमा दारिकाने ग्रहण करी एक मोटा अग्रामिक एटले वच्चे गाम न आवे एवा अने लांबा मार्गवाळा अरण्यमां पेठो.

मू०—तते णं धण्णे सत्थवाहे सुंसुमं दारियं चिलाएणं अडवीमुहिं अवहीरमाणिं पासित्ता णं पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे सन्नद्धबद्ध चिलायस्स पदमग्गविहिं अभिगच्छति, अणुगच्छमाणे अणुगज्जेमाणे हक्कारेमाणे पुक्कारेमाणे अभितज्जेमाणे अभितासेमाणे पिट्ठओ अणुगच्छति ।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाह सुंसुमा दारिकाने चिलात तस्करे अरण्यनी सन्मुख हरण कराती जोइने पांच पुत्रो सहित पोते छट्ठो एम छए जण बख्तर पहेरी चिलात चोरना पगलाना मार्गे चाल्या. तेनी पाछळ चालता, गर्जना करता, हाकोटा करता, पोकार करता, गर्जना करता अने त्रास पमाडता तेनी पाछळ चाल्या.

मू०—तते णं से चिलाए तं धण्णं सत्थवाहं पंचहिं पुत्तेहिं अप्पछट्ठं सन्नद्धबद्धं समणुगच्छमाणं पासति, पासित्ता अत्थामे अबले अपरक्कमे अवीरिए जाहे णो संचाएति सुंसुमं दारियं णिव्वाहित्तए, ताहे संते तंते परिसंते नीलुप्पलं असिं परामुसति, परामुसित्ता सुंसुमाए दारियाए उत्तमंगं

छिंदति, छिंदित्ता तं गहाय तं अगामियं अडविं अणुपविट्ठे ।

अर्थ—त्यारपछी ते चिलात चोरसेनापतिए ते धन्य सार्थवाहने पांच पुत्रो सहित पोते छठो ए रीते छए जणने बख्तर पहेरी पाछळ आवता जोया, जोइने ते तेज रहित, बळ रहित, पराक्रम रहित अने वीर्य रहित थइ ज्यारे ते सुंसुमा दारिकाने निर्वाह करवा (लइ जवा) समर्थ न थयो, त्यारे ते श्रमित थयो, तांत थयो (ग्लानि पाम्यो), अत्यंत श्रांत थयो. एटले तेणे काळा कमळ जेवा खड्गनो स्पर्श कर्यो (हाथमां खड्ग लीधुं). स्पर्श करीने सुंसुमा दारिकानुं उत्तमांग (मस्तक) छेदी नांख्युं. छेदीने ते मस्तक ग्रहण करी (शबने पडथुं मूकी) ते अग्रामिक—जेनी वच्चे गाम न आवे एवा निर्जन अरण्यमां पेठो.

मू०—तते णं चिलाए तीसे अगामियाए अडवीए तण्हाते अभिभूते समाणे पम्हुट्ठदिसाभाए सीहगुहं चोरपल्लिं असंपत्ते अंतरा चेव कालगए ।

अर्थ—त्यारपछी ते चिलात स्तेन ते अग्रामिक (निर्जन) अटवीने विषे तृष्णाथी (तरशथी) पराभव पाम्यो सतो मार्गथी भ्रष्ट थयो—दिग्मूढ थयो, अने सिंहगुहा नामनी चोरपल्लीने पाम्या विना वच्चे ज काळधर्म पाम्यो—मरी गयो.

---

१ अहीं आटलुं ज चरित्र उपयोगी छे. परंतु आवश्यकादिकमां अधिक आप्युं छे के—तेने मार्गमां साधुनां दर्शन थया. तेना मुखथी उपशम, विवेक अने संवर ए त्रण पद साभळी बोध पामी ते साधुने ठेकाणे ज कायोत्सर्गे उभो रही ते त्रण पदने भाववा लाग्यो. छेवट कीडीओथी आखुं शरीर चालणी जेवुं करायुं तो पण शुभ ध्यानमां ज रही काळ करी देवलोकमा गयो. इत्यादि.

मू०—एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वतिए समाणे इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स जाव विद्धंसणधम्मरस्स वण्णहेउं जाव आहारं आहारेति, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं समणीणं सावयाणं सावियाणं हीलणिज्जे जाव अणुपरियट्टिस्सति जहा व से चिलाए तक्करे।

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे आयुष्मान् साधुओ ! यावत् अमारा जे कोइ साधु साध्वी प्रव्रज्या ग्रहण करीने वांताश्रव (वमनने झरनार) यावत् विध्वंस (विनाश) ना धर्मवाळा आ औदारिक शरीरना वर्ण (रूप) ने माटे यावत् आहार करे, तो ते आ लोकमां ज घणा साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकाओने हीलना करवा लायक थाय छे, यावत् दीर्घ संसारमां पर्यटन करे छे. जेम ते चिलात् नामनो तस्कर दुःख पाम्यो तेम.

मू०—तते णं से धण्णे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं अप्पछट्ठे चिलायं परिधाडेमाणे परिधाडेमाणे तण्हाए छुहाए य संते तंते परितंते नो संचाएइ चिलातं चोरसेणावतिं साहत्थिं गिण्हित्तए।

अर्थ—त्यारपछी पांच पुत्रोए सहित पोते जेमां छठ्ठो छे एवो ते धन्य सार्थवाह चिलात चोरनी पाछळ दोडतो दोडतो तृषा अने क्षुधाथी श्रांत, तांत, परितांत थयो सतो ते चिलात चोरसेनापतिने पोताने हाथे पकडवा समर्थ थयो नहीं.

मू०—से णं तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता जेणेव सा सुंसुमा दारिया चिलाएणं जीविया-

ओ ववरोविज्जिया तेणंतेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सुंसुमं दारियं चिलाएणं जीवियाओ ववरोवियं पासइ, पासित्ता परसुनियंतेव चंपगपायवे ।

अर्थ—त्यारे ते त्यांथी पाछो वळ्यो, पाछो वळीने ज्यां ते सुंसुमा दारिकाने चिलात तस्करे जीवितथी व्यपरोपित (रहित) करी हती ते स्थानती पासे आव्यो, आवीने सुंसुमा दारिकाने चिलात चोरे जीवित रहित करेली जोइ, जोइने कुहाडाथी कापेला चंपकना वृक्षनी जेम ते पृथ्वीपर पडी गयो.

मू०—तते णं से धण्णे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं अप्पछट्ठे आसत्थे कूवमाणे कंदमाणे विलवमाणे महया महया सद्देणं कुहकुहसुपरुन्ने सुचिरं कालं बाहमोक्खं करेति ।

अर्थ—त्यारपछी पांच पुत्रोए करीने पोते जेमां छट्ठो छे एवो ते धन्य सार्थवाह आश्वस्त (सावधान) थयो, त्यारे ते आक्रंद करवा लाग्यो, विलाप करवा लाग्यो, मोटा मोटा शब्दवडे कुहकुह (अस्पष्ट शब्द) करतो सतो ते अरण्यमां चिरकाळ सुधी बाष्पमोच करवा लाग्यो—अश्रु पाडवा लाग्यो.

मू०—तते णं से धण्णे पंचहिं पुत्तेहिं अप्पछट्ठे चिलायं तीसे अगामियाए सव्वतो समंता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य परिब्भंते (रद्धं) ते समाणे तीसे अगामियाए अडवीए सव्वतो

१ 'कुहकुहस्सपरुण्णे' इति प्र० १ पराभूते. प्र.

समंता उदगस्स मग्गणगवेसणं करेंति, करित्ता संते तंते परितंते णिव्विन्ने तीसे अगामियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसणं करेमाणे नो चेव णं उदगं आसादेति ।

अर्थ—त्यारपछी पांच पुत्रोए करीने पोते जेमां छट्ठो छे एवो ते धन्य सार्थवाह चिलात तस्करनी पाछळ ते अग्रामिक (गाम रहित निर्जन) अटवीने विषे चोतरफ दिशाविदिशामां दोडवाथी तृषा अने क्षुधाथी पराभव पाम्यो सतो ते अग्रामिक अटवीने विषे चोतरफ दिशाविदिशामां पाणीनी मार्गणा (शोध) अने गवेषणा करवा लाग्यो. करीने श्रांत (थाकी गयो), तांत (ग्लानि पाम्यो), परितांत (अत्यंत ग्लानि पाम्यो) अने निर्विण्ण (खेद पाम्यो) सतो ते अग्रामिक अटवीने विषे पाणीनी मार्गणा गवेषणा करता छतां पाणीने पाम्यो ज नहीं.

मू०—तते णं उदगं अणासाएमाणे जेणेव सुंसुमा जीवियातो ववरोएल्लिया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता जेट्ठं पुत्तं धण्णे सत्थवाहे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—

अर्थ—त्यारपछी त्यां पाणीने नहीं पाम्यो सतो ज्यां सुंसुमा दारिका जीवितथी रहित करेली पडी हती त्यां आव्यो, आवीने मोटा पुत्रने धन्य सार्थवाह बोलाव्यो, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—"एवं खलु पुत्ता ! सुंसुमाए दारियाए अट्ठाए चिलायं तक्करं सव्वओ समंता परि·

धाडेमाणा तण्हाए छुहाए य अभिभूया समाणा इमीसे आगामियाए अडवीए उदगस्स मग्गण गवेसणं करेमाणा णो चेव णं उदगं आसादेमो । तते णं उदगं अणासाएमाणा णो संचाएमो रायगिहं संपावित्तए, तं णं तुम्हं ममं देवाणुप्पिया ! जीवियाओ ववरोवेह, मंसं च सोणियं च आहारेह, आहारित्ता तेणं आहारेणं अवहिट्ठा समाणा ततो पच्छा इमं आगामियं अडविं णित्थरिहिह, रायगिहं च संपाविहिह, मित्तणाइय अभिसमागच्छिहिह, अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह । ”

अर्थ—“ आ प्रमाणे निश्चे हे पुत्र ! सुंसुमा दारिकाने अर्थे (माटे) चिलात तस्करनी पाछळ चोतरफ दिशाविदिशामां दोडता सता आपणे तृषा अने क्षुधाए करीने पराभव पाम्या सता आ अग्रामिग (गाम रहित) अटवीमां पाणीनी मार्गणा गवेषणा करता सता पाणीने पाम्या ज नहीं. तेथी पाणीने नहीं पाम्या सता आपणे राजगृह नगरने पामवा शक्तिमान नथी, तेथी हे देवानुप्रिय ! तुं मने जीवितथी रहित कर अने तमे सर्वे भाइओ मारा मांस तथा रुधिरनो आहार करो, आहार करीने ते आहारवडे सावधान (स्वस्थ) थया सता त्यारपछी आ अग्रामिक (गाम विनानी) अटवीने तरी जजो—अटवीनो पार पामजो, राजगृहने पामजो—राजगृहमां जजो, मित्र ज्ञाति विगेरेने मळजो, तथा अर्थ, धर्म अने पुण्यना भागी थजो. ”

मू०—तते णं से जेट्ठपुत्ते धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे धण्णं सत्थवाहं एवं वदासी—" तुब्भे णं ताओ ! अम्हं पिया गुरू जणया देवयभूया ठावका पतिट्ठावका संरक्खगा संगोवगा, तं कहं णं अम्हे तातो ! तुब्भे जीवियाओ ववरोवेमो ? तुब्भं णं मंसं च सोणियं च आहारेमो ? तं तुब्भे णं तातो ! ममं जीवियाओ ववरोवेह, मंसं च सोणियं च आहारेह, आगामियं अडविं णित्थरह. " तं चेव सव्वं भणइ जाव अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह ।

अर्थ—त्यारे ते ज्येष्ठ पुत्रे धन्य सार्थवाहे उपर प्रमाणे कहे सते धन्य सार्थवाहने आ प्रमाणे कह्युं—" हे तात ! तमे अमारा पिता छो, गुरु छो, जनक (जन्म आपनार) छो, देवरूप छो, स्थापक[1] छो, प्रतिष्ठापक[2] छो, कष्टथी रक्षण करनारा छो अने दुःखथी गोपवनारा छो, तो हे तात ! अमे तमने केम जीवितथी पृथक् करीए ? तथा तमारा मांस अने रुधिरनो आहार करीए ? तेथी हे पिता ! तमे मारा जीवितने पृथक् करो, तथा मारा मांस अने रुधिरनो आहार करो अने आ अग्रामिक अटवीनो पार पामो. " विगेरे पूर्वोक्त सर्व तेणे कह्युं, यावत् अर्थना यावत् पुण्यना भागी (भाजन) थाओ.

मू०—तते णं धण्णं सत्थवाहं दोच्चे पुत्ते एवं वदासी—" मा णं ताओ ! अम्हे जेट्ठं भायरं गुरुं

१ लग्नादिक करवाथी गृहीधर्ममां स्थापक छो. २ पोताना पदने विषे स्थापन करनार छो.

देवयं जीवियाओ ववरोवेमो, तुब्भे णं ताओ ! मम जीवियाओ ववरोवेह, जाव आभागी भविस्सह "। एवं जाव पंचमे पुत्ते ।

अर्थ—ते वखते धन्य सार्थवाहने बीजा पुत्रे आ प्रमाणे कह्युं—" हे पिता ! अमे गुरु अने देव समान ज्येष्ठ भ्राताने जीवितथी पृथक् नहीं करीए, परंतु हे पिता ! मने जीवितथी रहित करो. यावत् तमे सर्वे पुण्यना भागी थाओ. " आ प्रमाणे यावत् पांचमा पुत्रे पण कह्युं.

मू०—तते णं से धण्णे सत्थवाहे पंचपुत्ताणं हियइच्छियं जाणित्ता ते पंच पुत्ते एवं वदासी—"मा णं अम्हे पुत्ता ! एगमवि जीवियाओ ववरोवेमो, एस णं सुंसुमाए दारियाए सरीरए णिप्पाणे जाव जीवविप्पजढे, तं सेयं खलु पुत्ता ! अम्हं सुंसुमाए दारियाए मंसं च सोणियं च आहारेत्तए। तते णं अम्हे तेणं आहारेणं अवत्थद्धा समाणा रायगिहं संपाउणिस्सामो "।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाहे पांचे पुत्रोना हृदयनुं इच्छित जाणी ते पांचे पुत्रोने आ प्रमाणे कह्युं—" हे पुत्रो ! आपणा सर्वमांथी एकने पण आपणे जीवितथी रहित न करीए, परंतु आ सुंसुमा दारिकानुं शरीर प्राणरहित यावत् जीवथी मूकायेलुं छे, तेथी हे पुत्रो ! आपणे आ सुंसुमा दारिकाना मांस अने रुधिरनो आहार करवो श्रेयस्कर छे, तेथी

आपणे ते आहारवडे सावधान (स्वस्थ) थया सता राजगृहनगरने सुखे करीने प्राप्त करशुं. ”

मू०—तते णं ते पंच पुत्ता धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा एयमट्ठं पडिसुणेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते पांच पुत्रोए धन्य सार्थवाहना आ प्रमाणे कहेवाथी ते अर्थ अंगीकार कर्यो.

मू०—तते णं धण्णे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अरणिं करेति, करित्ता सरगं च करेति, करित्ता सरएणं अरणिं महेति, महित्ता अग्गिं पाडेति, पाडित्ता अग्गिं संधुक्खेति, संधुक्खित्ता दारुयाति पक्खेवेति, पक्खेवित्ता अग्गिं पज्जालेति, पज्जालित्ता सुंसुमाए दारियाए मंसं च पइत्ता सोणियं च आहारेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाहे पांच पुत्रोनी साथे अरणि[1] करी, करीने शेर[2] कर्युं, करीने शरवडे अरणिनुं मथन कर्युं, मथन करीने अग्नि पाड्यो (उत्पन्न कर्यो), पाडीने अग्निने संधुख्यो, संधुखीने तेमां बीजां लाकडां नांख्या, नांखीने अग्नि सळगाव्यो, सळगावीने सुंसुमा दारिकानुं मांस पकावी ते मांस अने रुधिरनो आहार कर्यो—मांस खाधुं अने रुधिर पीधुं.

मू०—तेणं आहारेणं अवत्थद्धा समाणा रायगिहं नयरिं संपत्ता मित्तणाईअभिसमण्णागया

१ अरणिना काष्ठमा खाडो करवो ते. २ अरणिना काष्ठनी लांबी लाकडी करवी ते. आ यष्टिने अरणिना खाडामा नाखी दहींनी जेम मथन करवाथी तत्काळ अग्नि उत्पन्न थाय छे.

तस्स य विउलस्स धणकणगरयण जाव आभागी जाया वि होत्था ।

अर्थ—ते आहारवडे सावधान (स्वस्थ–तृप्त) थया सता ते छए राजगृह नगरमां पहोंच्या, मित्र ज्ञातिविगेरेने मळ्या अने ते विपुल धन, कनक रत्न विगेरेना यावत् पुण्यना भागी थया.

मू०—तते णं से धण्णे सत्थवाहे सुंसुमाए दारियाए वहूइं लोइयातिं जाव विगयसोए जाए यावि होत्था ॥ १३९ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते धन्य सार्थवाहे सुंसुमा दारिकाना घणां लौकिक कार्य कर्यां, यावत् अनुक्रमे शोक रहित पण थयो. १३९.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीरे गुणसिलए चेइए समोसढे, से णं धण्णे सत्थवाहे संपत्ते, धम्मं सोच्चा पव्वतिए, एक्कारसंगवी, मासियाए संलेहणाए सोहम्मे उववण्णो महाविदेहे वासे सिज्झिहिति ।

अर्थ—ते काळे ते समये श्रमण भगवान महावीर स्वामी राजगृह नगरनी बहार गुणशील नामना चैत्यमां समवसर्या. ते वखते तेमने वांदवा माटे धन्य सार्थवाह आव्यो. तेणे धर्म सांभळी प्रव्रज्या लीधी. अनुक्रमे अभ्यास करी अग्यार

अंगनो जाणकार थयो. छेवट एक मासनी संलेखना (अनशन) करी सौधर्म नामना पहेला देवलोकमां उत्पन्न थयो. त्यांथी चवी महाविदेह क्षेत्रमां जन्म पामी चारित्र ग्रहण करी सिद्धिपदने पामशे.

मू०—जहा वि य णं जंबू ! धण्णेणं सत्थवाहेणं णो वण्णहेउं वा णो रूवहेउं वा णो बलहेउं वा नो विसयहेउं वा सुंसुमाए दारियाए मांससोणिए आहारिए नन्नत्थ एगाए रायगिहं संपावणट्ठयाए ।

अर्थ—सुधर्मा स्वामी कहे छे के–हे जंबू ! जेम ते धन्य सार्थवाहे वर्णने माटे, रूपने माटे, बळने माटे के विषयने माटे सुंसुमा दारिकाना मांस अने रुधिरनो आहार कर्यो नहोतो परंतु मात्र एक राजगृह नगरने पामवा माटे ज आहार कर्यो हतो.

मू०—एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स सोणियासवस्स जाव अवस्सं विप्पजहियव्वस्स नो वण्णहेउं वा नो रूवहेउं वा नो बलहेउं वा नो विसयहेउं वा आहारं आहारेति, नन्नत्थ एगाए सिद्धिगमणसंपावणट्ठयाए, से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं अच्चणिज्जे जाव वीतीवातिस्सति ।

अर्थ— ए ज प्रमाणे हे आयुष्मान श्रमणो ! जे अमारा साधु साध्वी वांत (वमन) ने झरता, पित्तने झरता, शुक्र—

(वीर्य) ने झरता, रुधिरने झरता यावत् अवश्य त्याग करवा लायक आ औदारिक शरीरना वर्णने माटे, रूपने माटे, बळने माटे के विषयने माटे आहार करता नथी परंतु मात्र एक सिद्धि गति पामवाने माटे ज आहार करे छे. ते आ भवमां ज घणा साधुओ, घणी साध्वीओ, घणा श्रावको अने घणी श्राविकाओने पूजनीय थाय छे, यावत् मोक्ष प्रत्ये जाय छे.

मू०—एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि ॥ १४० ॥

॥ अट्ठारसमं णायज्झयणं समत्तं ॥ १८

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवान महावीरे अढारमा ज्ञाताध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे ते में तमने कह्यो. १४०.

अहीं विशेष उपनय आ प्रमाणे कह्यो छे.—

" जह सो चिलाइपुत्तो, सुंसुमगिद्धो अकज्जपडिबद्धो । धणपारद्धो पत्तो, महाडविं वसणसयकलियं ॥१॥ "

" जेम ते चिलातिपुत्र सुंसुमाने विषे आसक्त थयो, तेथी अकार्य करवामां प्रतिबंधवाळो थयो, अने धन्य सार्थवाहे काढी मूक्यो सतो सेंकडो कष्टवाळी मोटी अटवीमां गयो. १ "

" तह जीवो विसयसुहे, लुद्धो काऊण पावकिरियाओ । कम्मवसेणं पावइ, भवाडवीए महादुक्खं ॥२॥ "

"तेम जीव विषयसुखमां लुब्ध थयो सतो पापकर्मो करीने ते कर्मना वशथी संसाररूपी अटवीमां मोटुं दुःख पामे छे. २"

" धणसेट्ठी विव गुरुणो, पुत्ता इव साहवो भवो अडवी। सुयमंसमिवाहारो, रायगिहं इह सिवं नेयं ॥३॥ "

"अहीं धन्य श्रेष्ठीनी जेवा गुरु महाराज जाणवा, पुत्रोनी जेवा साधुओ जाणवा, अटवी जेवो संसार जाणवो, पुत्रीना मांस जेवो आहार जाणवो, अने राजगृह नगरने मोक्ष नगर जाणवुं. ३."

"जह अडविनयरणित्थरणपावणत्थं तएहिं सुयमंसं। भुत्तं तहेह साहू, गुरूण आणाए आहारं ॥ ४ ॥"

"जेम अटवीने ओळंगी नगरने प्राप्त करवा माटे तेओए पुत्रीनुं मांस खाधुं, तेम अहीं साधुओए गुरुनी आज्ञाथी (सिद्धिगतिनी प्राप्ति माटे) आहार लेवो. ४."

"भवलंघणसिवपावण-हेउं भुंजंति ण उण गेहीए। वण्णबलरूवहेउं च, भावियप्पा महासत्ता ॥ ५ ॥"

"आत्माने विषे शुभ भाववाळा महासत्ववाळा मुनिओ संसारनुं उल्लंघन करवा अने मोक्षने प्राप्त करवा माटे ज आहार ग्रहण करे छे परंतु गृद्धिए करीने आहार करता नथी, तेम ज वर्ण बळ अने रूपादिकने माटे आहार करता नथी."

इति अढारमुं ज्ञाताध्ययन संपूर्ण. १८.



अथ ओगणीशमुं पुंडरीक नामनुं ज्ञाताध्ययन १९.

पूर्वना अध्ययनमां आश्रवनो (संवर न करनारनो) अनर्थ अने संवर करनारनो अर्थ कह्यो. हवे आ अध्ययनमां चिरकाळ संवर कर्या छतां पछीथी तेनो भंग करे तो तेने पण अनर्थनी प्राप्ति थाय छे, अने अल्पकाळ पण आश्रवनो संवर करे तो तेने अर्थनी प्राप्ति थाय छे ते कहे छे.

मू०—जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, एगूणवीसइमस्स णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?।

अर्थ—जंबुस्वामी सुधर्मास्वामीने पूछे छे—हे पूज्य ! जो श्रमण भगवान यावत् सिद्धि गतिने पामेला महावीरस्वामीए अढारमा ज्ञाताध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे, तो ओगणीशमा ज्ञाताध्ययननो श्रमण भगवान महावीरस्वामीए कयो अर्थ कह्यो छे ?

मू०— एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं इहेव जबुद्दीवे दीवे पुव्वविदेहे सीयाए महाणदीए उत्तरिल्ले कूले नीलवंतस्स दाहिणेणं उत्तरिल्लस्स सीतामुहवणसंडस्स पच्छिमेणं एग-

सेलगस्स वक्खारपव्वयस्स पुरच्छिमेणं एत्थ णं पुक्खलावई णामं विजए पण्णत्ते ।

अर्थ—सुधर्मास्वामी कहे छे—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये आ ज जंबूद्वीपने विषे पूर्व महाविदेह क्षेत्रमां सीता नामनी महानदीना उत्तर तरफने कांठे, नीलवंत पर्वतनी दक्षिण दिशाए, उत्तर तरफना सीतामुख नामना वनखंडनी पश्चिम दिशाए, एकशेलक नामना वखारा पर्वतनी पूर्व दिशाए—आ ठेकाणे पुष्कलावती नामनी विजय कहेली छे.

मू०—तत्थ णं पुंडरिगिणी णामं रायहाणी पन्नत्ता णवजोयणविच्छिण्णा दुवालसजोयणायामा जाव पच्चक्खं देवलोयभूया पासातीया दंसणीया अभिरूवा पडिरूवा ।

अर्थ—ते पुष्कलावती विजयमां पुंडरीकिणी नामनी राजधानी (नगरी) कहेली छे. ते नव योजन पहोळी, बार योजन लांबी यावत् प्रत्यक्ष देवलोक (स्वर्ग) जेवी मनोहर, देखवालायक, अभिरूप (सुंदर रूपवाळी) अने प्रतिरूप—देखनारने आनंद आपनारी छे.

मू०—तीसे णं पुंडरिगिणीए णयरीए उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए णलिणिवणे णामं उज्जाणे होत्था । वण्णओ ।

अर्थ—ते पुंडरीकिणी नामनी नगरीने विषे उत्तर अने पश्चिमनी वच्चेनी विदिशा (ईशान खूणा) ना भागमां नलिनीवन नामनुं उद्यान हतुं. तेनुं वर्णन कहेवुं.

मू०—तत्थ णं पुंडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे णामं राया होत्था ।

अर्थ—ते पुंडरीकिणी नामनी राजधानीमां महापद्म नामे राजा हतो.

मू०—तस्स णं पउमावती णामं देवी होत्था ।

अर्थ—ते महापद्म राजाने पद्मावती नामनी देवी (राणी) हती.

मू०—तस्स णं महापउमस्स रन्नो पुत्ता पउमावतीए देवीए अत्तया दुवे कुमारा होत्था, तं जहा—पुंडरीए य कंडरीए य सुकुमालपाणिपाया । पुंडरीए जुवराया ।

अर्थ—ते महापद्म राजाना पुत्रो पद्मावती देवीना आत्मजो बे कुमारो हता. तेनां नाम आ प्रमाणे—पुंडरीक अने कंडरीक. तेओना हाथ पग अत्यंत कोमळ हता विगेरे. तेमां पुंडरीक युवराज हतो (पुंडरीकने युवराज पदवी आपी हती).

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं थेरागमणं (धम्मघोसा थेरा पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा जाव णलिणिवणे उज्जाणे तेणेव समोसढे)।

अर्थ—ते काळे ते समये स्थविर मुनि पधार्या. (धर्मघोष नामना स्थविर मुनि पांच सो साधुओनी साथे परिवर्या सता पूर्वानुपूर्वी (अनुक्रमे) विहार करता सता यावत् ज्यां नलिनीवन नामनुं उद्यान हतुं त्यां समवसर्या-पधार्या).

मू०—महापउमे राया णिग्गए । धम्मं सोच्चा पोंडरीयं रज्जे ठवेत्ता पव्वतिए ।

अर्थ—ते गुरुने वांदवा माटे महापद्म राजा नीकळ्या. तेणे धर्म सांभळी वैराग्य पामी पुंडरीकने राज्यपर स्थापन करी प्रव्रज्या ग्रहण करी.

मू०—पोंडरीए राया जाए । कंडरीए जुवराया ।

अर्थ—पुंडरीक राजा थयो, अने कंडरीक युवराज थयो.

मू०—महापउमे अणगारे चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ । तते णं थेरा बहिया जणवयविहारं विहरंति । तते णं से महापउमे बहूणि वासाणि जाव सिद्धे ॥ १४१ ॥

अर्थ—महापद्म अनगारे चौद पूर्वनो अभ्यास कर्यो. पछी स्थविर साधुए बहार देशांतरमां विहार कर्यो. त्यारपछी ते महापद्म मुनि घणा वर्ष चारित्र पाळी यावत् सिद्ध थया. १४१.

मू०—तते णं थेरा अन्नया कयाइं पुणरवि पुंडरिगिणीए रायहाणीए णलिणिवणे उज्जाणे समोसढा । पोंडरीए राया णिग्गए । कंडरीए महाजणसद्दं सोच्चा जहा महब्बलो जाव पज्जुवासति । थेरा धम्मं परिकहेंति । पुंडरीए समणोवासए जाए जाव पडिगते ।

अर्थ—त्यारपछी ते स्थविर मुनि एकदा कदाचित् फरीने पुंडरीकिणी राजधानीनी बहार नलिनीवन नामना उद्यानमां समवसर्या (पधार्या). तेमने वांदवा पुंडरीक राजा नीकळ्यो. कंडरीक पण महाजनना शब्दने सांभळीने महा-[1] बळ कुमारनी जेम स्थविर पासे जइ तेमनी सेवा करवा लाग्यो. स्थविर भगवाने धर्म कह्यो. ते सांभळी पुंडरीक राजा प्रतिबोध पामी श्रमणोपासक (श्रावक) थयो, यावत् पोताने घेर गयो.

मू०—तते णं कंडरीए उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठाए उट्ठित्ता जाव से जहेयं तुब्भे वदह, जं णवरं पुंडरीयं रायं आपुच्छामि, तए णं जाव पव्वयामि ! " अहासुहं देवाणुप्पिया ! " ।

अर्थ—त्यारपछी कंडरीक युवराज उभो थयो, उभो थइ यावत् आ प्रमाणे बोल्यो के—" हे भगवान ! आप जे कहो छो ते तेम ज छे परंतु विशेष ए के हुं पुंडरीक राजानी रजा लउं, त्यारपछी यावत् हुं दीक्षा ग्रहण करीश. " ते सांभळी स्थविर गुरु बोल्या के—" हे देवानुप्रिय ! तने जेम सुख उपजे तेम कर (तारी इच्छा प्रमाणे कर). "

मू०—तए णं से कंडरीए जाव थेरे वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता तमेव चाउघंटं आसरहं दुरूहति जाव पच्चोरुहति, जेणेव पुंडरीए राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल जाव पुंडरीयं एवं वयासी—" एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए

१ घणा लोकोना मुखथी स्थविर मुनिनुं आगमन सांभळीने.

थेराणं अंतिए जाव धम्मे निसंते, से धम्मे अभिरुइए, तए णं देवाणुप्पिया ! जाव पव्वइत्तए ।

अर्थ—त्यारपछी ते कंडरीक युवराजे यावत् ते स्थविर गुरुने वंदना करी, नमस्कार कर्यो, वंदना नमस्कार करी त्यांथी नीकळ्यो, नीकळीने ते ज पोताना चार घंटावाळा अश्व जोडेला रथपर आरूढ थयो, यावत् राजमहेलमां आवी रथमांथी नीचे उतर्यो, उतरीने ज्यां पुंडरीक राजा हतो त्यां आव्यो, आवीने बे हाथ जोडी यावत् पुंडरीक राजाने आ प्रमाणे कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! में स्थविर साधुनी पासे यावत् धर्म सांभळ्यो छे, ते धर्म मने रुच्यो छे, तेथी हे देवानुप्रिय ! तमारी आज्ञाथी यावत् हुं प्रव्रज्या लेवाने इच्छुं छुं."

मू०—तए णं से पुंडरीए राया कंडरीयं जुवरायं एवं वदासी—" मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! इदाणिं मुंडे जाव पव्वयाहि, अहं णं तुमं महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचयामि " ।

अर्थ— त्यारे ते पुंडरीक राजाए कंडरीक युवराजने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रिय ! तुं हमणां मुंड थइने यावत् प्रव्रज्या ग्रहण न कर, हुं तने मोटा मोटा राज्याभिषेकवडे अभिषेक करवानो छुं. "

मू०—तए णं से कंडरीए पुंडरीयस्स रण्णो एयमट्ठं णो आढाति जाव तुसिणीए संचिट्ठति ।

अर्थ—ते सांभळीने ते कंडरीके पुंडरीक राजाना आ अर्थ (वचन) नो आदर कर्यो नहीं यावत् ते मौन ज रह्यो.

मू०—तते णं पुंडरीए राया कंडरीयं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी, जाव तुसिणीए संचिट्ठति।

अर्थ—त्यारे ते पुंडरीक राजाए कंडरीकने बीजीवार त्रीजीवार पण ए ज प्रमाणे कह्युं यावत् कंडरीक मौन ज रह्यो.

मू०—तते णं पुंडरीए कंडरीयं कुमारं जाहे नो संचाएति बहूहिं आघवणाहिं पण्णवणाहि य ४ ताहे अकामए चेव एयमट्ठं अणुमन्नित्था जाव णिक्खमणाभिसेएणं अभिसिंचाति जाव थेराणं सीसभिक्खं दलयति, पव्वतिए, अणगारे जाए, एक्कारसंगविऊ ।

अर्थ – त्यारपछी ते पुंडरीक राजा ते कंडरीक कुमारने ज्यारे घणा समजुतीना अने प्रज्ञापनाना वचनवडे समजाववाने समर्थ न थयो, त्यारे तेणे इच्छा विना ज ते अर्थनी (प्रव्रज्यानी) अनुमति आपी, यावत् निष्क्रमण (प्रव्रज्या)ना अभिषेकवडे अभिषेक कर्यो. यावत् उद्यानमां गुरु पासे जइ ते स्थविरने शिष्यरूप भिक्षा आपी. कंडरीके प्रव्रज्या ग्रहण करी, ते अनगार (साधु) थयो, अग्यार अंगनो अभ्यास कर्यो.

मू०—तते णं थेरा भगवंतो अन्नया कयाइं पुंडरीगिणीओ नयरीओ णलिणीवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरति ॥ १४२ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते स्थविर भगवान एकदा कदाचित् पुंडरीकिणी नगरीना नलिनीवन नामना उद्यानमांथी नीकळ्या. नीकळीने बहार देशांतरमां विचरवा लाग्या. १४२.

मू०—तते णं तस्स कंडरीयस्स अणगारस्स तेहिं अंतेहि य पंतेहि य जहा सेलगस्स जाव

दाहवक्कंतीए यावि विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कंडरीक अनगारने तेवा प्रकारना अंत प्रांत आहारे करीने सेलक मुनिनी जेम यावत् दाहज्वर उत्पन्न थयो. ए रीते ते व्याधिग्रस्त रह्यो.

मू०—तते णं थेरा अन्नया कयाई जेणेव पोंडरिगिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता णलिणिवणे समोसढा, पोंडरीए णिग्गए, धम्मं सुणेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते स्थविर भगवान एकदा कदाचित् ज्यां पुंडरीकिणी नगरी हती त्यां आव्या. आवीने नलिनीवन नामना उद्यानमां समवसर्या (पधार्या). तेमने वांदवा माटे पुंडरीक राजा नीकळ्यो. तेणे गुरुने वांदी धर्म सांभळ्यो.

मू०—तए णं पुंडरीए राया धम्मं सोच्चा जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छाति, उवागच्छित्ता कंडरीयं वंदाति णमंसाति, वंदित्ता णमंसित्ता कंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगं सव्वाबाहं सरोयं पासाति, पासित्ता जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छाति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदाति णमंसाति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वदासी—

१ लुखा सुका.

अर्थ—त्यारपछी ते पुंडरीक राजा धर्म सांभळी ज्यां कंडरीक साधु हता त्यां आव्यो. आवीने कंडरीक साधुने वंदना करी, नमस्कार कर्या, वांदी नमस्कार करी कंडरीक अनगारनुं शरीर सर्व प्रकारनी बाधावाळुं अने रोग सहित जोयुं, जोइने ज्यां स्थविर भगवान हता त्यां आव्या, आवीने स्थविर भगवानने वंदना करी, नमस्कार कर्या, वांदी नमस्कार करी आ प्रमाणे बोल्यो.—

मू०—“ अहं णं भंते ! कंडरीयस्स अणगारस्स अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जेहिं जाव तेइच्छं आउट्टामि, तं तुब्भे णं भंते ! मम जाणसालासु समोसरह । ”

अर्थ—“ हे भगवान ! हुं कंडरीक साधुनी यथाप्रवृत्ति (जे प्रमाणे आपनी प्रवृत्ति हशे ते प्रमाणे) औषध भेषजवडे यावत् चिकित्सा करावुं (करावा इच्छुं छुं). तेथी हे भगवान ! आप मारी यानशाळामां समवसरो (पधारो). ”

मू०—तते णं थेरा भगवंतो पुंडरीयस्स रन्नो एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जाव उवसंपज्जित्ता णं विहरंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते स्थविर भगवाने पुंडरीक राजानो आ अर्थ अंगीकार कर्यो, अंगीकार करीने यावत् तेनी यानशाळामां रहेवानी आज्ञा लइने विचरवा लाग्या. (त्यां रह्या.)

मू०—तते णं पुंडरीए राया जहा मंडुए सेलगस्स जाव बलियसरीरे जाए ।

अर्थ—त्यारपछी ते पुंडरीक राजाए जेम सेलक मुनिनी मंडुक राजाए चिकित्सा करावी हती तेम कंडरीक मुनिनी चिकित्सा करावी. यावत् ते कंडरीक मुनि बळवान शरीरवाळा थया.

मू०—तते णं थेरा भगवंतो पोंडरीयं रायं पुच्छंति, पुच्छित्ता बाहिया जणवयाविहारं विहरंति।

अर्थ—त्यारपछी ते स्थविर भगवाने पुंडरीक राजाने पूछ्युं, पूछीने बहार जनपद (देशो) मां विहारवडे विचरवा लाग्या.

मू०—तते णं से कंडरीए ताओ रोयायंकाओ विप्पमुक्के समाणे तंसि मणुण्णंसि असणपाण-खाइमसाइमंसि मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे णो संचाएइ पोंडरीयं आपुच्छित्ता बाहिया अब्भुज्जएणं जणवयविहारं विहरित्तए। तत्थेव ओसण्णे जाए।

अर्थ—त्यारपछी ते कंडरीक मुनि ते रोगातंकथी मुक्त थया छतां तेवा मनोहर अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने विषे मूर्छावाळा, गृद्धिवाळा, आसक्तिवाळा अने तेमां लीन थवाथी पुंडरीक राजाने पूछीने (तेनी रजा लइने) बहार देशोमां अभ्युद्यत (उग्र) विहारवडे विचरवाने शक्तिमान न थया. तेथी त्यां ज ओसन्ना थया (शिथिल आचारवाळा थइने रह्या).

मू०—तते णं से पोंडरीए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए अंतेउरपरियालसंपरिवुडे जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता कंडरीयं तिखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ,

करित्ता वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते पुंडरीक राजाए आ कथा (वृत्तांत) नो अर्थ जाण्यो त्यारे ते स्नान करी विभूषित थइ अंतःपुरना परिवारथी परिवरी ज्यां कंडरीक मुनि हता त्यां आव्या, आवीने कंडरीक मुनिने त्रण वार दक्षिण भागथी आरंभी दक्षिण भाग सुधी प्रदक्षिणा करी, करीने वंदना करी, नमस्कार कर्या, वांदी नमस्कार करी आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—" धन्ने सि णं तुमं देवाणुप्पिया! कयत्थे कयपुन्ने कयलक्खणे, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया! तव माणुस्सए जम्मजीवियफले, जे णं तुमं रज्जं च जाव अंतेउरं च छड्डइत्ता विगोवइत्ता जाव पव्वतिए, अहं णं अहण्णे अकयपुन्ने रज्जे जाव अंतउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने नो संचाएमि जाव पव्वतित्तए, तं धन्ने सि णं तुमं देवाणुप्पिया! जाव जीवियफले "।

अर्थ—" हे देवानुप्रिय ! तुं धन्य छे, कृतार्थ छे, कृतपुण्य (पुण्यवंत) छे, अने सारा लक्षणवाळो छे. हे देवानुप्रिय ! मनुष्य संबंधी जन्म अने जीवितनुं फळ तने सारुं प्राप्त थयुं छे. केमके तें राज्यने यावत् अंतःपुरने तजीने तथा विशेषे करीने गोपवीने (त्याग करीने) यावत् प्रव्रज्या ग्रहण करी छे. अने हुं तो अधन्य छुं, अकृतपुण्य (पुण्य रहित) छुं. राज्यने विषे यावत् अंतःपुरने विषे तथा मनुष्य संबंधी कामभोगने विषे मूर्छा पामेलो छुं. यावत् अध्युपपन्न (तन्मय) थयो छुं, तेथी हुं प्रव्रज्या लेवाने शक्तिमान नथी, ते कारण माटे हे देवानुप्रिय ! तुं धन्य छे. यावत् तारा जन्म अने

जीवितनुं फळ सारुं प्राप्त थयुं छे.

मू०—तते णं से कंडरीए अणगारे पुंडरीयस्स एयमट्ठं णो आढाति जाव संचिट्ठति ।

अर्थ—ते सांभळी ते कंडरीक साधुए पुंडरीकना अर्थ (वचन) नो आदर न कर्यो, यावत् मौन रह्यो.

मू०—तते णं कंडरीए पोंडरीएणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे अकामए अवस्सवसे लज्जाए गारवेण य पोंडरीयं रायं आपुच्छति, आपुच्छित्ता थेरेहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कंडरीक साधुए पुंडरीक राजाए बीजी वार त्रीजी वार आ प्रमाणे कहे सते इच्छा रहित तथा पराधीनपणे लज्जावडे अने मोटा भाइना गौरववडे पुंडरीक राजानी रजा लीधी. रजा लइने स्थविर गुरुनी साथे बहार देशांतरोमां विचरवा लाग्यो.

मू०—तते णं से कंडरीए थेरेहिं सद्धिं किंचि कालं उग्गंउग्गेणं विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कंडरीक साधुए स्थविर गुरुनी साथे केटलोक काळ उग्र उग्र विहारवडे विहार कर्यो (गुरुनी साथे रह्या.)

मू०—ततो पच्छा समणत्तणपरितंते समणत्तणणिव्विण्णे समणत्तणणिब्भत्थिए समणगुणमुक्कजोगी थेराणं अंतियाओ सणियं सणियं पच्चोसक्कति, पच्चोसक्कित्ता जेणेव पुंडरिगिणी णयरी जेणेव

पुंडरीयस्स भवणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टगंसि णिसीयति, णिसीइत्ता ओहयमणसंकप्पे जाव झियायमाणे संचिट्ठति ।

अर्थ—त्यारपछी ते साधुपणा (चारित्र) थी थाक्यो, साधुपणाथी निर्वेद पाम्यो, साधुपणाथी निर्भर्त्सना पाम्यो अने साधुना गुणथी मुक्त थयो सतो स्थविर भगवाननी पासेथी धीमे धीमे (आज्ञा लीधा विना) नीकळ्यो, नीकळीने ज्यां पुंडरीकिणी नगरी हती अने ज्यां पुंडरीक राजानुं भवन हतुं त्यां आव्यो, आवीने अशोकवनमां अशोक नामना श्रेष्ठ वृक्षनी नीचे पृथ्वीना शिलातळ उपर बेठो, बेसीने हणाइ गया छे मनना संकल्प (विचार) जेना एवो ते यावत् आर्तध्यान करतो रह्यो.

मू०—तते णं तस्स पोंडरीयस्स अम्मधाती जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता कंडरीयं अणगारं असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टयंसि ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणं पासति, पासित्ता जेणेव पोंडरीए राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोंडरीयं रायं एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते पुंडरीक राजानी धात्री माता ज्यां अशोकवन हतुं त्यां आवी, आवीने कंडरीक अनगारने श्रेष्ठ अशोक वृक्षनी नीचे पृथ्वीशिलातल उपर हणायेला मनना संकल्पवाळो यावत् आर्तध्यान करतो जोयो, जोइने ज्यां

पुंडरीक राजा हतो त्यां आवी, आवीने पुंडरीक राजाने आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—" एवं खलु देवाणुप्पिया ! तव पिउभाउए कंडरीए अणगारे असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टे ओहयमणसंकप्पे जाव झियायति "।

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! तमारो प्रिय भाइ कंडरीक अनगार अशोकवनमां श्रेष्ठ अशोक वृक्षनी नीचे पृथ्वीशिलापट्ट उपर हणायेला मनना संकल्पवाळा थइने यावत् आर्तध्यान करे छे."

मू०—तते णं पोंडरीए अम्मधाइए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म तहेव संभंते समाणे उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठित्ता अंतेउरपरियालसंपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जाव कंडरीयं तिक्खुत्तो एवं वदासी—

अर्थ—ते वखते पुंडरीक राजा धात्रीमाता पासेथी आ अर्थ (वृत्तांत) सांभळी हृदयमां धारी ते ज प्रमाणे संभ्रांत थयो सतो उभो थयो, उभो थइ अंतःपुर अने परिवारवडे परिवर्यो सतो ज्यां अशोकवन हतुं त्यां आव्यो, आवीने यावत् कंडरीकने त्रण वार आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—" धण्णे सि णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव पव्वतिए, अहं णं अधण्णे जाव पव्वइत्तए, तं धन्ने सि णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले "।

अर्थ—" हे देवानुप्रिय ! तुं धन्य छे, यावत् तें राज्यादिकनो त्याग करी प्रव्रज्या ग्रहण करी छे अने हुं तो अधन्य छुं, यावत् प्रव्रज्या ग्रहण करवा शक्तिमान नथी. तथा हे देवानुप्रिय ! तुं धन्य छे, यावत् तें जन्म अने जिवितनुं फळ सारुं प्राप्त कर्युं छे. " (इत्यादिक प्रथमनी जेम सर्व त्रण वार कह्युं.)

मू०—तते णं कंडरीए पुंडरीएणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठति, दोच्चं पि तच्चं पि जाव चिट्ठति ।

अर्थ—ते वखते पुंडरीके आ प्रमाणे कहे सते कंडरीक अणगार मौनपणे ज रह्या. बीजी वार त्रीजी वार कह्या छतां पण यावत् मौनपणे ज रह्या.

मू०—तते णं पुंडरीए कंडरीयं एवं वयासी—" अट्ठो भंते ! भोगेहिं ? " । " हंता अट्ठो " ।

अर्थ—त्यारे पुंडरीक राजाए कंडरीक अणगारने आ प्रमाणे कह्युं—" हे भगवंत ! तमारे भोगवडे अर्थ छे ? (तमारे भोग भोगववानी इच्छा छे ?) " त्यारे कंडरीक बोल्यो—" हा, मारे भोगवडे अर्थ छे (मारे भोग भोगववानी इच्छा छे.) "

मू०—तते णं से पोंडरीए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति सद्दावेत्ता एवं वदासी—" खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कंडरीयस्स महत्थं जाव रायाभिसेअं उवट्ठवेह " । जाव रायाभिसेएणं अभिसिंचति ॥ १४३ ॥

अर्थ—त्यारे ते पुंडरीक राजाए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं–" हे देवानुप्रियो ! शीघ्रपणे कंडरीकने माटे मोटा मूल्यवाळा यावत् राज्याभिषेकने (राज्याभिषेकनी सामग्रीने) लावो." ते सांभळी तेओ ते प्रमाणे लाव्या. यावत् कंडरीकने राज्याभिषेकवडे अभिषेक कर्यो. १४३.

मू०—तते णं पुंडरीए सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति, सयमेव चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जति, पडिवज्जित्ता कंडरीयस्स संतियं आयारभंडयं गेण्हति, गेण्हित्ता इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ—

अर्थ—त्यारपछी पुंडरीके पोतानी जाते ज पंचमुष्टि लोच कर्यो अने पोते ज चतुर्याम (चार महाव्रत) रूप धर्म अंगीकार कर्यो, अंगीकार करीने कंडरीक संबंधी आचारभांड (भांड उपकरण) ग्रहण कर्या, ग्रहण करीने आवा प्रकारनो अभिग्रह ग्रहण कर्यो.—

मू०—" कप्पति मे थेरे वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अंतिए चाउज्जामं धम्मं उवसंपज्जित्ता णं ततो पच्छा आहारं आहारित्तए" त्ति कट्टु इमं च एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हेत्ता णं पोंडरीगिणीए पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे थेरा भगवंतो तेणेव

पहारेत्थ गमणाए ॥ १४४ ॥

अर्थ—" मारे स्थविर गुरुने वांदी नमस्कार करी ते स्थविर गुरुनी पासे चतुर्याम (चारमहाव्रतवाळो) धर्म अंगीकार करी त्यारपछी आहार करवो कल्पे." एम कही आ आवा प्रकारनो अभिग्रह ग्रहण करी पुंडरीकिणी नगरीनी बहार नीकळ्या. नीकळीने पूर्वानुपूर्वी (अनुक्रमे) चालता एक गामथी बीजे गाम जता ते पुंडरीक मुनि ज्यां स्थविर भगवान हता, त्यां जवाने नीकळ्या. १४४.

मू०—तते णं तस्स कंडरीयस्स रण्णो तं पणीयं पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स अतिजागरिएण य अइभोयणप्पसंगेण य से आहारे णो सम्मं परिणमइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते कंडरीक राजाए ते प्रणीत (रसवाळा) पानभोजननो आहार करवाथी तथा अति जागरण करवाथी तथा अति भोजनना प्रसंगथी तेनो ते आहार सारी रीते परिणाम पाम्यो नहीं (पाचन थयो नहीं).

मू०—तते णं तस्स कंडरीयस्स रण्णो तंसि आहारंसि अपरिणममाणंसि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि सरीरंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला विउला पगाढा जाव दुरहियासा पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए यावि विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कंडरीक राजाने ते आहार परिणाम नहीं पामे सते (पाचन नहीं थवाथी) मध्य रात्रिने समये तेना शरीरमां उज्वळ, विपुल, अति गाढ यावत् दुःखे करीने सहन थाय तेवी (असह्य) वेदना प्रगट थइ. तेना शरीरमां पित्तज्वर व्याप्त थयो, तेथी घणो दाह थवा लाग्यो. आ रीते विचरवा लाग्यो—रह्यो.

मू०—तते णं से कंडरीए राया रज्जे य रट्ठे य अंतेउरे य जाव अज्झोववण्णे अट्टदुहट्टवसट्टे अकामते अवस्सवसे कालमासे कालं किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरयंसि नेरइयत्ताए उववण्णे ।

अर्थ—त्यारपछी ते कंडरीक राजा राज्य अने राष्ट्र (देश) ने विषे तथा अंतःपुरने विषे यावत् अध्युपपन्न (तन्मय) थयेलो, आर्तध्यानने वश थयेलो, इच्छा विना ज पराधीन थयो सतो काळ समये काळ करीने (मरीने) नीचे सातमी पृथ्वीने विषे उत्कृष्ट स्थितिवाळा नारकीने विषे नारकीपणे उत्पन्न थयो. (तेनी सारवार कोइए न करवाथी तेमनी उपर अत्यंत दुर्ध्यान चिंतवीने आवी दुर्गतिने पाम्यो).

मू०—एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वतिए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसाइए जाव अणुपरियट्टिस्सति, जहा व से कंडरीए राया ॥ १४५ ॥

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे आयुष्मान श्रमण ! यावत् अमारा जे साधु साध्वी दीक्षा ग्रहण करीने फरीथी मनुष्य संबंधी

कामभोगनी इच्छा करे छे, ते यावत् ते कंडरीक राजानी जेम संसारमां पर्यटन करे छे. १४५.

मू०—तते णं से पोंडरीए अणगारे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता थेराणं अंतिए दोच्चं पि चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जति, छट्ठखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेति, करित्ता जाव अडमाणे सीयलुक्खं पाणभोयणं पडिगाहेति, पडिगाहित्ता अहापज्जत्तमिति कट्टु पडिणियत्तति, पडिणियत्तित्ता जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पडिदंसेति, पडिदंसित्ता थेरेहिं भगवंतेहिं अब्भणुन्नाए समाणे अमुच्छिते ४ बिलमिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं तं फासुएसणिज्जं असणं पाणं खातिमं सातिमं सरीरकोट्ठगंसि पक्खिवति ।

अर्थ—त्यारपछी ते पुंडरीक अनगार ज्यां स्थविर भगवान हता त्यां आव्या. आवीने स्थविर भगवानने वंदना करी, नमस्कार कर्या. वांदी नमस्कार करी ते स्थविर भगवाननी पासे बीजीवार चतुर्याम (चार व्रतवाळो) धर्म अंगीकार कर्यो, पछी छठ-बे उपवासना पारणाने विषे पहेली पोरसीए तेणे स्वाध्याय कर्यो. करीने यावत् भिक्षाने माटे अटन करता तेणे शीतळ अने लुखुं पान तथा भोजन ग्रहण (प्राप्त) कर्युं. ग्रहण करीने पोताने माटे आटलुं भोजन पर्याप्त (पूर्ण) छे एम

धारी ते पाछा वळ्या, पाछा वळीने ज्यां स्थविर भगवान हता त्यां आव्या, आवीने भक्त पाणी गुरुने बताव्या, बतावीने स्थविर भगवानना अनुज्ञा थतां मूर्छा, गृद्धि, लोलुपता अने तन्मयपणा रहित बिलमां सर्प पेसे तेनी जेम पोते ज ते प्रासुक अने एषणीय आहार, पान, खादिम अने स्वादिमने शरीररूपी कोठामां नांख्युं.

मू०—तते णं तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स तं कालाइक्कंतं अरसं विरसं सीयलुक्खं पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स से आहारे णो सम्मं परिणमति ।

अर्थ—त्यारपछी ते पुंडरीक अनगार ते कालातिक्रांत[1], रस रहित, खराब रसवाळा, शीतळ अने लूखा पानभोजनना आहार करवाथी रात्रिना पूर्वभाग अने अपर भागनी वच्चे (मध्यरात्रि) ना समये धर्म जागरिका प्रत्ये जागता हता त्यारे तेने ते आहार सम्यक् प्रकारे परिणम्यो नहीं (पाचन थयो नहीं).

मू०—तते णं तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए विहरति ।

अर्थ—तेथी ते पुंडरीक अणगारना शरीरने विषे वेदना उत्पन्न थइ. ते उज्वळ यावत् दुःखे सहन करी शकाय तेवी

१ जेनो काळ वीती गयो होय तेवा.

(असह्य) थइ. तेनुं शरीर पित्तना ज्वरथी व्याप्त थयुं अने शरीरमां दाह थवा लाग्यो. ए रीते ते विचरवा लाग्या-रह्या.

मू०—तते णं से पुंडरीए अणगारे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे करयल जाव एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते पुंडरीक अणगार स्थाम (तेज) रहित, बळ रहित, वीर्य रहित तथा पुरुषकार (उद्यम) अने पराक्रम रहित थया. त्यारे ते बे हाथ जोडी यावत् आ प्रमाणे बोल्या.—

मू०—" नमोऽत्थु णं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं, णमोऽत्थु णं थेराणं भगवंताणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसयाणं, पुव्विं पि य णं मए थेराणं अंतिए सव्वे पाणातिवाए पच्चक्खाए जाव मिच्छादंसणसल्ले णं पच्चक्खाए " जाव आलोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे उववण्णे । ततोऽणंतरं उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाणमंतं काहिति ।

अर्थ—" अरिहंत यावत् सिद्धिगतिने पामेला सिद्ध भगवानने मारो नमस्कार हो. मारा धर्माचार्य धर्मनो उपदेश करनार स्थविर भगवानने नमस्कार हो. पहेलां पण में स्थविर भगवाननी पासे सर्व प्राणातिपातनुं पच्चख्खाण कर्युं छे, यावत् मिथ्यादर्शनरूपी शल्यनुं पच्चख्खाण कर्युं छे. " इत्यादि कही यावत् आलोचना अने प्रतिक्रमण करी काळ समये काळ करी (मरण पामी) सर्वार्थसिद्धिने विषे उत्पन्न थया. त्यांथी अनंतर (आंतरा रहित) चवीने महाविदेह

क्षेत्रने विषे सिद्धिपदने पामशे, यावत् सर्व दुःखनो अंत करशे.

मू-एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वतिए समाणे माणुस्सएहिं कामभोगेहिं णो सज्जति णो रज्जति जाव नो विप्पडिघायमावज्जति, से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं अच्चणिज्जे वंदणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जे त्ति कट्टु परलोए वि य णं णो आगच्छति बहूणि दंडणाणि य मुंडणाणि य तज्जणाणि य ताडणाणि य जाव चाउरंतं संसारकंतारं जाव वीतीवइस्सति जहा व से पोंडरीए अणगारे।

अर्थ—ए ज प्रमाणे हे आयुष्मान श्रमण ! यावत् अमारा जे साधु साध्वी प्रव्रज्या ग्रहण करीने मनुष्य संबंधी कामभोगमां आसक्त न थाय, रागवंत न थाय, यावत् विशेषे करी प्रतिघातने न पामे, ते आ भवमां ज घणा साधुओ, घणी साध्वीओ, घणा श्रावको अने घणी श्राविकाओने अर्चन करवा लायक, वांदवा लायक, पूजवा लायक, सत्कार करवा लायक, सन्मान करवा लायक, कल्याणकारक, मंगळकारक, देव समान अने चैत्य (प्रतिमा) समान पर्युपासना (सेवा) करवा लायक थाय छे. ए हेतु माटे परलोकने विषे पण घणा राजदंडने, मुंडनने (राजनिग्रहने), अंगुलिवडे तर्जना (तिरस्कार) ने तथा चपेटानी ताडनाने पामता नथी. यावत् चातुरंत (चार गतिरूप) संसारने यावत् ओळंगी जाय छे.

जेम ते पुंडरीक अनगार संसारथी मुक्त थया तेम.

मू०—एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं आदिगरेणं तित्थगरेणं जाव सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं एगूणवीसइमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू! श्रमण भगवान महावीर तीर्थनी आदिने करनार तीर्थंकर यावत् सिद्धि गति नामना स्थानने पामेला छे, तेणे ओगणीशमा ज्ञाताध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे.

मू०—एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढमस्स सुयक्खंधस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि ॥ १४६ ॥

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू! श्रमण भगवान महावीर यावत् सिद्धिगति नामना स्थानने पामेला छे, तेमणे आ छठा अंगना पहेला श्रुतस्कंधनो आ अर्थ कह्यो छे. ते प्रमाणे में तमने कह्यो. अर्थात् में मारी बुद्धिथी कह्यो नथी. १४६.

मू०—तस्स णं सुयक्खंधस्स एगूणवीसं अज्झयणाणि एक्कसरगाणि एगूणवीसाए दिवसेसु समप्पंति ॥ १४७ ॥

अर्थ—ते (आ) पहेला श्रुतस्कंधनां ओगणीश अध्ययनो छे. तेना एक सरवाळा एटले एक एक अध्ययन एक एक दिवसे भणवाथी ओगणीश दिवसे आ पहेलो श्रुतस्कंध संपूर्ण थाय छे. (अर्थात् आना योगवहन करतां ओगणीश

अथ ज्ञातांगे धर्मकथा नामनो द्वितीयः श्रुतस्कन्धः २

प्रथम श्रुतस्कंध पूर्ण थयो. हवे बीजो श्रुतस्कंध कहे छे. तेमां पहेला श्रुतस्कंधमां आप्त पुरुषना उपालंभादिक दृष्टांतोवडे धर्मनो अर्थ उपनयवडे बताव्यो छे (दृष्टांतोना उपनयवडे धर्मनो अर्थ कह्यो छे.) हवे आ बीजा श्रुतस्कंधने विषे साक्षात् कथाओवडे धर्मनो अर्थ कहे छे.—

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे नामं नयरे होत्था । वण्णओ ।

अर्थ—ते काळे ते समये राजगृह नामनुं नगर हतुं. तेनुं वर्णन कहेवुं.

मू०—तस्स णं रायगिहस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए तत्थ णं गुणसीलए णामं चेइए होत्था । वण्णओ ।

अर्थ—ते राजगृह नगरनी बहार उत्तर अने पूर्वनी वच्चे (ईशान) ना दिशाभागमां ते ज ठेकाणे गुणशैल नामनुं चैत्य हतुं. तेनुं वर्णन कहेवुं.

म०—ते णं काले णं ते णं समए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मा

दिवस थाय छे.)

आ अध्ययननो विशेष उपनय आ प्रमाणे कह्यो छे.—

" वाससहस्सं पि जई, काऊणं संजमं सुविउलं पि । अंते किलिट्ठभावो, न विसुज्झइ कंडरीउ व्व ॥१॥ "

" जे साधु हजार वर्ष सुधी पण अत्यंत विपुल संयम (चारित्र) ने करीने (पाळीने) छेवट क्लिष्ट भाववाळो (पडवाइ) थाय, तो ते कंडरीकनी जेम शुद्ध थतो नथी (आत्मकार्य साधी शकतो नथी–सुगति पामतो नथी). १ "

" अप्पेण वि कालेणं, केइ जहागहियसीलसामण्णा । साहिंति निययकज्जं, पुंडरीयमहारिसि व्व जहा ॥२॥

" केटलाएक मनुष्यो जे रीते शील (चारित्र) ग्रहण कर्युं होय ते रीते ज आचारवडे पण युक्त होय तो ते अल्प काळे करीने पण पुंडरीक महर्षिनी जेम आत्मकार्य साधे छे. " २.

। इति ओगणीशमुं ज्ञाताध्ययन. १९. ।

। इति ज्ञातांगे प्रथमः श्रुतस्कंधः ।



णामं थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना कुलसंपन्ना जाव चउद्दसपुव्वी चउणाणोवगया पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दुइज्जमाणा सुहंसुहेणं विहरमाणा जेणेव रायगिहे णयरे जेणेव गुणसीलए चेइए जाव संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति।

अर्थ—ते काळे ते समये श्रमण भगवान महावीर स्वामीना अंतेवासी (शिष्य) आर्यसुधर्मा नामना स्थविर भगवान उच्च जातियुक्त, उच्च कुळ सहित, यावत् चौद पूर्वधर, चार ज्ञान (मनःपर्यव सुधीना) ने पामेला, पांच सो साधुओनी साथे परिवरेला, पूर्वानुपूर्वीए (अनुक्रमे) विहार करता, एक गामथी बीजे गाम जता अने सुखे सुखे विचरता सता ज्यां राजगृह नगर हतुं अने ज्यां गुणशील नामनुं चैत्य हतुं त्यां पधार्या, यावत् संयम अने तपवडे पोताना आत्माने भावता सता विचरवा लाग्या—रह्या.

मू०—परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया।

अर्थ—ते वखते तेमने वंदन करवा माटे नगरमांथी पर्षदा नीकळी. सुधर्मास्वामीए धर्म कह्यो. ते सांभळी पर्षदा जे दिशामांथी आवी हती, ते ज दिशाए पाछी गइ.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अंतेवासी अज्जजंबू णामं अणगारे जाव पज्जुवासमाणे एवं वदासी—

अर्थ—ते काळे ते समये आर्यसुधर्मास्वामी नामना अनगारना अंतेवासी (शिष्य) आर्य जंबूस्वामी नामना अनगार यावत् गुरुनी सेवा करता सता आ प्रमाणे बोल्या.–

मू०–जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढमसुयक्खंधस्स णायसुयाणं अयमट्ठे पन्नत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! सुयक्खंधस्स धम्मकहाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?।

अर्थ—हे भगवान ! श्रमण भगवान महावीर स्वामी यावत् सिद्धि गतिने पामेला छे तेणे छट्ठा अंगना पहेला श्रुतस्कंधना ज्ञातश्रुतो (दृष्टांतो) नो आ (तमे उपर कही गया ते प्रमाणे) अर्थ कह्यो छे, तो हे भगवान् ! बीजा श्रुतस्कंधनी धर्मकथाओनो श्रमण भगवान महावीर यावत् सिद्धिगतिने पामेला छे तेमणे कयो अर्थ कह्यो छे ?"

मू०–एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दस वग्गा पन्नत्ता, तं जहा–चमरस्स अग्गमहिसीणं पढमे वग्गे १, बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो अग्गमहिसीणं बीए वग्गे २, असुरिंदवज्जाणं दाहिणिल्लाणं इंदाणं अग्गमहिसीणं तइए वग्गे ३, उत्तरिल्लाणं असुरिंदवज्जियाणं भवणवासिइंदाणं अग्गमहिसीणं चउत्थे वग्गे ४, दाहिणिल्लाणं वाणमंतराणं इंदाणं अग्गमहिसीणं

पंचमे वग्गे ५, उत्तरिल्लाणं वाणमंतराणं इंदाणं अग्गमहिसीणं छट्ठे वग्गे ६, चंदस्स अग्गमहिसीणं सत्तमे वग्गे ७, सूरस्स अग्गमहिसीणं अट्ठमे वग्गे ८, सक्कस्स अग्गमहिसीणं णवमे वग्गे ९, ईसाणस्स अग्गमहिसीणं दसमे वग्गे १०।

अर्थ—सुधर्मास्वामी उत्तर आपे छे.–आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवान महावीरस्वामी यावत् सिद्धिपदने पामेला छे तेमणे धर्मकथाना दश वर्गो कहेला छे. ते आ प्रमाणे.—चमरेंद्रनी अग्र(मुख्य)महिषीओ (पट्टदेवीओ–इंद्राणीओ) नो पहेलो वर्ग १, बलि नामना वैरोचनेंद्रनी एटले वैरोचन राजानी (बलींद्रनी) अग्रमहिषीओनो बीजो वर्ग २, असुरेंद्र विनाना बीजा दक्षिण दिशाना भवनपतिना (नव) इंद्रोनी अग्रमहिषीओनो त्रीजो वर्ग ३, असुरेंद्र विनाना बीजा उत्तर दिशाना भवनपतिना (नव) इंद्रोनी अग्रमहिषीओनो चोथो वर्ग ४, दक्षिण दिशाना वानमंतर देवोना इंद्रोनी अग्रमहिषीओनो पांचमो वर्ग ५, उत्तर दिशाना वानमंतर देवोना इंद्रोनी अग्रमहिषीओनो छठ्ठो वर्ग ६, चंद्रनी अग्रमहिषीओनो सातमो वर्ग ७. सूर्यनी अग्रमहिषीओनो आठमो वर्ग ८, शक्र इंद्रनी अग्रमहिषीओनो नवमो वर्ग ९ तथा ईशानेंद्रनी अग्रमहिषीओनो दशमो वर्ग १०. आ प्रमाणे दश वर्ग कहेला छे.

मू०–जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दस वग्गा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते !

१ विरोचनो पुत्र ते वैरोचन कहेवाय छे. बलि इंद्रनो पूर्वभवे पितृस्थानीय कोइ विरोचन नामनो होवो जोइए.

वग्गस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

अर्थ—जो हे भगवान ! श्रमण भगवानमहावीरस्वामी यावत् सिद्धिगतिने पामेला छे तेमणे धर्मकथाना दश वर्ग कह्या छे, तो हे भगवान ! श्रमण भगवान यावत् सिद्धिगतिने पामेला महावीरस्वामीए पहेला वर्गनो कयो अर्थ कह्यो छे?

मू०—एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—काली १ राई २ रयणी ३ विज्जू ४ मेहा ५।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवान यावत् सिद्धिगतिने पामेला महावीरस्वामीए पहेला वर्गना पांच अध्ययनो कह्यां छे. ते आ प्रमाणे—काली १, राइ (राजी) २, रजनी ३, विद्युत ४ अने मेघा ५ ए पांच नामनां (पांच इंद्राणीओना) पांच अध्ययन कह्यां छे.

मू०—जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

अर्थ—हे भगवान् ! जो श्रमण भगवान यावत् सिद्धिपदने पामेला महावीरस्वामीए पहेला वर्गना पांच अध्ययन कह्यां छे, तो पहेला अध्ययननो श्रमण यावत् सिद्धिपदने पामेला महावीरस्वामीए कयो अर्थ कह्यो छे ?

मू०—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे णयरे गुणसीलए चेइए से-

णिए राया चेलणा देवी सामी समोसरिए परिसा निग्गया जाव परिसा पज्जुवासति ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये राजगृह नामना नगरनी बहार गुणशील नामनुं चैत्य हतुं. तेमां श्रेणिक नामे राजा हता. तेने चेलणा नामनी देवी (पट्टराणी) हती. एकदा श्री महावीर स्वामी गुणशील नामना चैत्य-मां समवसर्या (पधार्या), तेमने वांदवा माटे नगरमांथी पर्षदा नीकळी यावत् पर्षदा भगवाननी सेवा करती रही.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं काली नामं देवी चमरचंचाए रायहाणीए कालवडिंसगभवणे कालंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं मयहरियाहिं सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवतीहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं बहुएहि य कालवडिंसयभवणवासीहिं असुरकुमारेहिं देवीहिं देवेहि य सद्धिं संपरिवुडा महयाहय जाव विहरइ ।

अर्थ—ते काळे ते समये काली नामनी देवी चमरचंचा नामनी राजधानीने विषे कालावतंसक नामना भवनने विषे काल नामना सिंहासन उपर बेठी हती. ते वखते चार हजार सामानिक देवीओ, चार महत्तरिका देवीओ, परिवार सहित त्रण पर्षदा, सात अनीक, सात अनीकना अधिपति, सोळ हजार आत्मरक्षक देवो तथा बीजा पण कालावतंसक नामना भव-

नमां वसनारा घणा असुरकुमार जातिना देवो अने देवीओनी साथे परिवरेली मोटा सुभटो विगेरे सहित यावत् विचरती हती–रहेली हती.

मू०–इमं च णं केवलकप्पं जंबूद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी आभोएमाणी पासइ।

अर्थ—ते वखते आ केवलकल्प (संपूर्ण) जंबूद्वीप नामना द्वीपने विपुल अवधिज्ञानवडे जोती जोती (उपयोग आपती आपती) देखती हती.

मू०–तत्थ समणं भगवं महावीरं जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासति, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्त-माणंदिया पीतिमणा हयहियया सीहासणाओ अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहति, प-च्चोरुहित्ता पाउया ओमुयति, ओमुइत्ता तित्थगराभिमुही सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छति, अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेति, अंचित्ता दाहिणं जाणुं धरणियलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि निवेसेति, निवेसित्ता ईसिं पच्चुण्णमइ, पच्चुण्णमइत्ता कडयतुडियथंभियातो भुयातो साहरति, साहरित्ता करयल जाव कट्टु एवं वदासी—

अर्थ—त्यां श्रमण भगवान महावीर स्वामीने जंबूद्वीप नामना द्वीपना भरतक्षेत्रमां राजगृह नगरना गुणशील नामना चैत्यने विषे यथाप्रतिरूप (साधुने योग्य) अवग्रह (स्थान) याचीने (मागीने) संयम अने तपवडे आत्माने भावता सता रहेला जोया. जोइने ते काली देवी हृष्ट (हर्ष पामी), तुष्ट (संतोष पामी), चितमां आनंद पामी, मनमां प्रीति पामी (प्रसन्न थइ), यावत् हृतहृदय (जेनुं हृदय हरण करायुं होय एवी) थइ सती सिंहासन उपरथी उभी थइ. उभी थइने पादपीठथी नीचे उतरी. नीचे उतरीने पादुका (मोजडी) काढी नांखी. काढी नांखीने तीर्थंकरनी सन्मुख सात आठ पगलां चाली. चालीने वाम (डाबा) ढींचणने उंचो राख्यो. उंचो राखीने दक्षिण (जमणो) ढींचण पृथ्वीतळने विषे स्थापन करीने त्रण वार मस्तकने पृथ्वीतळने विषे स्थापन कर्युं (अडकाव्युं). स्थापन करीने ते मस्तकने कांइक उंचुं कर्युं. उंचुं करीने कटक (कडां) अने त्रुटित (बाजुबंध) वडे स्तंभरूप थयेली बे भुजाओने भेगी करी. भेगी करीने करतल (बे हाथना तळने) यावत् जोडी आ प्रमाणे बोली.–

मू०–" णमोऽत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं जाव संपत्ताणं, णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स, वंदामि णं भगवंतं तत्थ गयं इह गए, पासउ णं मे समणे भगवं महावीरे तत्थ गए इह गयं " ति कट्टु वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा निसण्णा ।

अर्थ—" अरिहंत भगवान यावत् सिद्धिगतिने पामेलाने मारो नेमस्कार थाओ. श्रमण भगवान महावीरस्वामी यावत् सिद्धिगति पामवानी इच्छावाळाने मारो नेमस्कार थाओ. अहीं रहेली हुं त्यां रहेला भगवानने वांदुं छुं. त्यां रहेला श्रमण भगवान महावीर स्वामी अहीं रहेली मने जुओ. " आ प्रमाणे कही वंदना करी, नमस्कार कर्या, वंदना नमस्कार करी पोताना श्रेष्ठ सिंहासन उपर पूर्वाभिमुखे (पूर्व दिशा तरफ मुख राखी) बेठी.

मू०—तते णं तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पाजित्था—" सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता जाव पज्जुवासित्तए " त्ति कट्टु एवं संपेहेति, संपेहित्ता आभिओगिए देवे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते काली देवीने आवा प्रकारनो अध्यवसाय यावत् उत्पन्न थयो के—" मारे श्रमण भगवान महावीर स्वामीने वांदी यावत् तेमनी सेवा करवी श्रेयकारक छे. " ए प्रमाणे विचार कर्यो, विचार करीने आभियोगिक देवोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—" एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे एवं जहा सुरियाभो तहेव आण-

१ सर्व तीर्थंकरोने आ नमस्कार छे. २ मात्र महावीर स्वामीने ज आ नमस्कार छे.

त्तियं देइ, जाव दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं करेह, करित्ता जाव पच्चप्पिणह ”। ते वि तहेव करित्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवरं जोयणसहस्सविच्छिण्णं जाणं, सेसं तहेव तहेव णामगोयं साहेइ, तहेव नट्टविहिं उवदंसेइ, जाव पडिगया।

अर्थ—“ आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! श्रमण भगवान महावीर स्वामी (जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रमां राजगृह नगरना गुणशील चैत्यमां रहेला छे विगेरे) ” जेम सूर्याभ देवे (पोताना आभियोगिक देवोने बोलावी आज्ञा आपी हती) तेम आज्ञा आपी के “ यावत् दिव्य (मनोहर) अने श्रेष्ठ देवताओने गमन करवा योग्य यान-विमान बनावो, बनावीने यावत् मारी आज्ञा पाछी आपो. ” ते सांभळी ते आभियोगिक देवोए पण ते ज प्रमाणे करी यावत् तेनी आज्ञा पाछी आपी. विशेष एटलो छे के-हजार[1] योजनना विस्तारवाळुं यान (विमान) बनाव्युं. शेष (बाकीनुं सर्व) ते ज प्रमाणे जाणवुं. ते ज प्रमाणे (सूर्याभनी जेम प्रभुनी पासे आवी) पोतानां नाम गोत्र कह्यां. कहीने ते ज प्रमाणे (सूर्याभनी जेम एक सो ने आठ कुमारो अने कुमारिकाओने हाथमांथी काढीने) नाटकनो विधि बताव्यो. बतावीने यावत् ते काली देवी पाछी गई.

मू०—भंते त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं

१ सूर्याभने माटे लाख योजनना विस्तारवाळुं बनाव्युं हतुं.

वदासी—" कालिए णं भंते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी कहिं गया ? "। कुडागारसालादिट्ठंतो ।

अर्थ—' हे भगवान ! ' एम संबोधन करीने भगवान गौतम स्वामीए श्रमण भगवान महावीर स्वामीने वंदना करी, नमस्कार कर्या. वांदी नमस्कार करी आ प्रमाणे कह्युं—" हे भगवान ! काली देवीनी ते दिव्य (मनोहर) देवऋद्धि क्यां गइ ? " तेना उत्तरमां भगवान महावीर स्वामीए कूटाकार शाळानुं दृष्टांत (पूर्वे कह्युं छे तेम) आप्युं.

मू०—" अहो णं भंते ! काली देवी महिड्ढिया । कालिए णं भंते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी किण्णा लद्धा ? किण्णा पत्ता ? किण्णा अभिसमण्णागया ? " एवं जहा सूरियाभस्स जाव एवं खलु गोयमा ! ते णं काले णं ते णं समए णं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्पा णाम णयरी होत्था । वण्णओ । अंबसालवणे चेइए । जितसत्तू राया ।

अर्थ— " अहो ! भगवान ! काली देवीनी आवी मोटी ऋद्धि आश्चर्यकारक छे. हे भगवान ! काली देवीने ते दिव्य (मनोहर) देवऋद्धि शी रीते मळी [1] ? शी रीते प्राप्त थइ [2] ? अने शी रीते तेनी पासे आवी [3] ? " अहीं सूर्याभनी जेम सर्व कहेवुं. त्यारे भगवाने उत्तर आप्यो के—आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम ! ते काळे ते समये आ ज जंबूद्वीपने विषे भरतक्षेत्रने

१ पूर्वभवे शुं करवाथी मळी ? २ देवभवमा प्राप्त थई ? ३ उपभोगना उपयोगमा आवी ?

विषे आमलकल्पा नामनी नगरी हती. तेनुं वर्णन कहेवुं. ते नगरीनी बहार ईशान दिशामां आम्रशाळवन नामनुं चैत्य (वन) हतुं. ते नगरीमां जितशत्रु नामे राजा हतो.

मू०—तत्थ णं आमलकप्पाए नयरीए काले नामं गाहावती होत्था, अड्ढे जाव अपरिभूए ।

अर्थ—ते आमलकल्पा नामनी नगरीने विषे काल नामनो एक गाथापति (गृहस्थ) रहेतो हतो. ते आढ्य (धनवान) यावत् कोइथी पराभव न पामे तेवो हतो.

मू०—तस्स णं कालस्स गाहावइस्स कालसिरी णामं भारिया होत्था, सुकुमालपाणिपाया जाव सुरूवा ।

अर्थ—ते काल नामना गाथापतिने कालश्री नामनी भार्या हती. तेना हाथ पग सुकोमळ हता, यावत् ते मनोहर रूपवाळी हती.

मू०—तस्स णं कालगस्स गाहावतिस्स धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली णामं दारिया होत्था, वड्डा वड्डकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडियपुयत्थणी णिव्विन्नवरा वरपरिवज्जिया वि होत्था ।

अर्थ—ते काल नामना गाथापतिनी दीकरी अने कालश्री भार्यानी आत्मजा काली नामनी दारिका (पुत्री) हती.

ते बृहती (वयवडे मोटी) हती, बृहत्कुमारी (वयवडे मोटी छतां कुमारीका) हती, जीर्णा (शरीरे जीर्ण थवाथी वृद्धा) हती, जीर्ण अने अपरिणीत होवाथी जीर्णकुमारी हती, तेना स्तन नितंब प्रदेश सुधी पडी गया हता (लांबा थइ गया हता), वर (पति थवाने लायक पुरुषो) तेनापर वैराग्य पाम्या हता, (तेने इच्छता नहोता) अने तेथी ज ते वर (पति) रहित रहेली हती.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा वद्धमाणसामी णवरं णवहत्थुस्सेहे सोलसहिं समणसाहस्सीहिं अट्ठत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे जाव अंबसालवणे समोसढे, परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासति।

अर्थ—ते काळे ते समये पुरुषादानीय तथा धर्मनी आदिने करनारा श्रीपार्श्वनाथ अरिहंत वर्धमानस्वामीनी जेवा हता. विशेष ए के ते श्रीपार्श्वनाथ स्वामी नव हाथ उंचा हता, सोळ हजार साधुओ अने आडत्रीश हजार साध्वीओनी साथे परिवरेला हता. ते एकदा आम्रशाल नामना वनमां समवसर्या. तेमने वांदवा माटे पर्षदा नीकळी. यावत् भगवाननी सेवा करवा लागी.

मू०—तते णं सा काली दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ जाव हियया जेणेव

---

१ पुरुषोने विषे आदेय नामकर्मवाळा. २ पोतपोताना शासननी अपेक्षाए आदिना करनारा.

अम्मापियरो तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते काली नामनी दारिका आ (प्रभु पधार्यानी) कथानो अर्थ पामी सती (जाणीने) हर्ष पामी यावत् हृदयमां आनंद पामी, अने ज्यां पोताना मातापिता हता त्यां आवी. आवीने बे हाथ जोडी यावत् आ प्रमाणे बोली.

मू०—" एवं खलु अम्मयाओ ! पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जाव विहरति, तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवंदिया गमित्तए "। अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ।

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे हे मातापिता ! श्रीपार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषादानीय अने धर्मनी आदिने करनारा यावत् अहीं विचरे छे (पधार्या छे), तेथी हे मातापिता ! तमारी अनुज्ञा पामी सती पुरुषादानीय पार्श्वनाथ अरिहंतना पादने वंदन करवा जवाने हुं इच्छुं छुं. " ते सांभळी मातापिताए कह्युं—" हे देवानुप्रिया ! तने सुख उपजे तेम कर, प्रतिबंध (धर्ममां विलंब) न कर. "

मू०—तते णं सा कालिया दारिया अम्मापिईहिं अब्भणुन्नाया समाणी हट्ठजाव हियया पहाया कयवलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पवेसाइं मंगल्लातिं वत्थातिं पवर परिहिया

अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा सातो गिहातो पडिणिक्खमति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छाति, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणपवरं दुरूढा।

अर्थ—त्यारपछी ते काली नामनी दारिका मातापितानी अनुज्ञा पामी सती हर्ष पामी यावत् हृदयमां आनंद पामी. तेणीए स्नान कर्यु, बलिकर्म (गृहदेवतानुं पूजन) कर्यु, कौतुक (मषीनुं तिलक विगेरे), मंगळ अने प्रायश्चित्त कर्यु, शुद्ध—निर्मळ, सभाने लायक, मांगलिक श्रेष्ठ वस्त्रो पहेर्यां, अल्प भारवाळां अने मोटा मूल्यवाळां आभूषणोवडे शरीरने अलंकृत कर्यु, तथा दासीओना परिवारथी व्याप्त थइ पोताना घरमांथी बहार नीकळी, नीकळीने ज्यां बहारनी उपस्थानशाळा (सभा) हती त्यां आवी, आवीने धर्म संबंधी श्रेष्ठ यान (मीयाना) उपर आरूढ थइ.

मू०—तते णं सा काली दारिया धम्मियं जाणपवरं एवं जहा दोवती जाव पज्जुवासाति।

अर्थ—त्यारपछी ते काली नामनी दारिका धर्म संबंधी श्रेष्ठ यानमां बेसीने समवसरणमां गइ, अने द्रौपदीनी जेम (भगवानने वांदीने) भगवाननी सेवा करवा लागी.

मू०—तते णं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महतिमहालयाए परिसाए धम्मं कहेति।

अर्थ—त्यारपछी श्री पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषादानीय भगवाने काली दारिका पासे तथा ते मोटी पर्षदानी पासे धर्म कह्यो.

मू०—तते णं सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियया पासं अरहं पुरिसादाणीयं तिक्खुत्तो वंदति नमंसाति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते काळी दारिका पुरुषोने विषे आदान नाम कर्मवाळा श्रीपार्श्वनाथ अरिहंतनी पासे धर्म सांभळीने हृदयमां धारीने हर्ष पामी यावत् हृदयमां आनंद पामी. पुरुषादानीय श्रीपार्श्वनाथ अरिहंतने त्रण वार वंदना करी नमस्कार कर्या, वंदना नमस्कार करी आ प्रमाणे बोली.

मू०—" सद्दहामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वयह, जं णवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तते णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि "। " अहासुहं देवाणुप्पिये ! "।

अर्थ—" हे भगवान ! हुं निर्ग्रंथ प्रावचननी श्रद्धा करुं छुं, यावत् जे आप कहो छो ते तेमज छे. विशेष ए छे के

हे देवानुप्रिय ! हुं मारा मातापितानी रजा लउं अने पछी हुं आप देवानुप्रियनी पासे यावत् प्रव्रज्या ग्रहण करुं." त्यारे भगवान बोल्या–"हे देवानुप्रिया ! तने जेम सुख उपजे तेम कर."

मू०–तते णं सा काली दारिया पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठ जाव हियया पासं अरहं वंदति नमंसति, वांदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहति, दुरुहित्ता पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतियाओ अंबसालवणाओ चेइयाओ पडिणिक्खमति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता आमलकप्पं णयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणपवरं ठवेति, ठवित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते काली नामनी दारिकाने पुरुषादानीय श्रीपार्श्वनाथ अरिहंते आ प्रमाणे कह्युं त्यारे हर्ष पामी यावत् हृदयमां आनंद पामी पार्श्वनाथ अरिहंतने वंदना करी नमस्कार कर्या. वांदी नमस्कार करी ते ज पोताना धार्मिक श्रेष्ठ यानपर आरूढ थइ. आरूढ थइने पुरुषादानीय श्री पार्श्वनाथ अरिहंतनी पासेथी आम्रशालवन नामना चैत्यमांथी बहार

नीकळी. नीकळीने ज्यां आमलकल्पा नगरी हती त्यां आवी. आवीने आमलकल्पा नामनी नगरीना मध्यभागे थइने ज्यां बहारनी उपस्थान शाला (सभा) हती त्यां आवी. आवीने धर्म संबंधी श्रेष्ठ यानने स्थापन कर्युं, स्थापन करीने धर्म संबंधी श्रेष्ठ यानपरथी नीचे उतरी. उतरीने ज्यां तेना मातापिता हता त्यां आवी, आवीने बे हाथ जोडी यावत् आ प्रमाणे बोली—

मू०—" एवं खलु अम्मयाओ ! मए पासस्स अरहतो अंतिए धम्मे णिसंते, से वि य धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुतिए, तए णं अहं अम्मयाओ ! संसारभउव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहतो अंतिए मुंडा भवित्ता अगारातो अणगारियं पव्वतित्तए "। " अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह "।

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे हे मातापिता ! में पार्श्वनाथ अरिहंतनी पासे धर्म सांभळ्यो छे. वळी ते धर्म में इच्छ्यो छे, वांछ्यो छे अने मने रुच्यो पण छे. तेथी हुं हे मातापिता ! संसारना भयथी उद्वेग (वैराग्य) पामी छुं, तथा जन्म अने मरणथी भय पामी छुं. तेथी तमारी अनुज्ञा पामी सती हुं श्री पार्श्वनाथ अरिहंतनी पासे मुंड थइने अगार थकी नीकळी अनगारपणाने पामवाने (प्रव्रज्या ग्रहण करवाने) इच्छुं छुं. " ते सांभळी मातापिताए कह्युं—" हे देवानुप्रिया ! जेम तने सुख उपजे तेम कर. प्रतिबंध—धर्मकार्यमां विघ्न (विलंब) न कर. "

मू०—तते णं से काले गाहावई विपुलं असणं पाणं खातिमं सातिमं उवक्खडावेति, उवक्ख-

डावित्ता मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरियणं आमंतेति, आमंतित्ता ततो पच्छा ण्हाए जाव विपुलेणं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणातिणियगसयणसंबंधिपरियणस्स पुरतो कालियं दारियं सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेति, ण्हावित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेति, करित्ता पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं दुरुहेति, दुरुहित्ता मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरियणेणं सद्धिं संपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं आमलकप्पं नयरिं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छति, णिग्गच्छित्ता जेणेव अंबसालवणे चेइए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता छत्ताइए तित्थगराइसए पासति, पासित्ता सीयं ठवेइ, ठवित्ता कालियं दारियं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—

अर्थ—त्यारपछी ते काल नामना गाथापतिए विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने तैयार कराव्या. तैयार करावीने मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन, संबंधी अने परिजन (परिवार) ए सर्वने आमंत्रण कर्युं. आमंत्रण करीने त्यारपछी स्नान करी यावत् विपुल एवा पुष्प, वस्त्र, गंध, माल्य अने अलंकारवडे सत्कार करी सन्मान करी मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन, संबंधी अने परिजननी पासे काली नामनी दारिकाने श्वेत अने पीत कळशोवडे स्नान कराव्युं. स्नान

करावी सर्व अलंकारोवडे विभूषित करी. करीने हजार पुरुषोए वहन करवा लायक शिबिका उपर आरूढ करी, आरूढ करीने मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन, संबंधी अने परिवारनी साथे परिवर्या सता सर्व ऋद्धिवडे यावत् वाजिंत्रोना शब्दवडे आमलकल्पा नगरीना मध्यभागे थइने नीकळ्या, नीकळीने ज्यां आम्रशाल नामनुं चैत्य (उद्यान) हतुं त्यां गया. जइने छत्र विगेरे तीर्थंकरना अतिशयो जोया. जोइने शिबिकाने स्थापन करी. स्थापन करीने काली नामनी दारिकाने ते मातापिता आगळ करीने ज्यां पुरुषादानीय श्रीपार्श्वनाथ अरिहंत हता त्यां आव्या. आवीने भगवानने वंदना करी तथा नमस्कार कर्या. वांदी नमस्कार करी आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—एवं खलु देवाणुप्पिया ! काली दारिया अम्हं धूया इट्ठा कंता जाव किमंग पुण पासणयाए ? एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ता णं जाव पव्वइत्तए, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिभिक्खं दलयामो, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्खं "। अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह "।

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! काली नामनी दारिका अमारी पुत्री अमने इष्ट छे, कांत (वहाली) छे, यावत् तेना दर्शन पण दुर्लभ छे, तेमां शुं कहेवुं ? ते आ काली दारिका हे देवानुप्रिय ! संसारना भयथी उद्वेग पामी छे अने आप देवानुप्रियनी पासे मुंडित थइने यावत् प्रव्रज्या ग्रहण करवाने इच्छे छे. तेथी आप देवानुप्रियने अमे आ काली

दारिकाने शिष्यारूप भिक्षा तरिके आपीए छीए. माटे हे देवानुप्रिय ! आप आ शिष्यारूप भिक्षाने ग्रहण करो." त्यारे भगवान बोल्या के-" हे देवानुप्रियो ! जेम तमने सुख उपजे तेम करो. प्रतिबंध (धर्मकार्यमां विलंब) न करो."

मू०—तते णं काली कुमारी पासं अरहं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसिभागं अवक्कमति, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयति, ओमुइत्ता सयमेव लोयं करोति, करित्ता जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पासं अरहं तिक्खुत्तो वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—" आलित्ते णं भंते ! लोए, " एवं जहा देवाणंदा जाव सयमेव पव्वाविउं।

अर्थ—त्यारपछी काली कुमारीए पार्श्वनाथ अरिहंतने वंदना करी, नमस्कार कर्या. वंदना नमस्कार करीने ते उत्तर पूर्व (ईशान) दिशाना भागमां गइ. जइने पोतानी मेळे ज आभूषण, माल्य अने अलंकार उतार्या. उतारीने पोतानी मेळे ज लोच कर्यो. करीने ज्यां पुरुषादानीय पार्श्वनाथ अरिहंत हता त्यां आवी. आवीने पार्श्वनाथ अरिहंतने त्रण वार वंदना करी, नमस्कार कर्या, वंदना नमस्कार करी आ प्रमाणे बोली—" हे भगवान ! आ लोक आलिप्त प्रदीप्त छे. " इत्यादिक देवानंदानी जेम सर्व जाणवुं. यावत् तमे पोते ज मने दीक्षा आपो एम हुं इच्छुं छुं.

मू०—तते णं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालिं सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए दलयति ।

अर्थ—त्यारपछी पुरुषादानीय श्रीपार्श्वनाथ अरिहंते ते काली साध्वीने पोते ज पुष्पचूला नामनी आर्याने शिष्या तरिके आपी.

मू०—तते णं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं कुमारिं सयमेव पव्वावेति जाव उवसंपज्जित्ता णं विहरति ।

अर्थ—त्यारे ते पुष्पचूला आर्याए काली कुमारीने पोते ज प्रव्रज्या आपी. यावत् ते काली ते गुरुणीनी पासे प्रव्रज्या अंगीकार करी विचरवा लागी—रही.

मू०—तते णं सा काली अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तबंभयारिणी ।

अर्थ—त्यारपछी ते काली साध्वी ईर्यासमितिवाळी यावत् गुप्त ब्रह्मचारिणी थइ.

मू०—तते णं सा काली अज्जा पुप्फचूलाअज्जाए अंतिए सामाइयमाइयातिं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, बहूहि चउत्थ जाव विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते काली साध्वी पुष्पचूला आर्यानी पासे सामायिक विगेरे अग्यार अंगो भणी, तथा घणा उपवास, छठ, अठम विगेरे करती सती यावत् विचरवा लागी.

मू०—तते णं सा काली अज्जा अन्नया कयाति सरीरबाउसिया जाया यावि होत्था, अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवइ पाए धोवइ सीसं धोवइ मुहं धोवइ थणंतराइं धोवइ कक्खंतराणि धोवइ गुज्झंतराइं धोवइ, जत्थ जत्थ वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेइ तं पुव्वामेव अब्भुक्खेत्ता पच्छा आसयति वा सयइ वा ।

अर्थ—त्यारपछी ते काली साध्वी एकदा कदाचित् शरीरबाकुशिका[1] (शबल चारित्रवाळी) थइ. तेथी ते वारंवार हाथ धोवा लागी, पग धोवा लागी, मस्तक धोवा लागी, मुख धोवा लागी, स्तनना आंतरा धोवा लागी, काखना आंतरा धोवा लागी तथा गुह्यस्थानना आंतरा धोवा लागी. ज्यां ज्यां ते स्थान (कायोत्सर्ग) ने, शय्याने के स्वाध्यायने करती हती ते स्थानने प्रथम जळथी छांटीने पछी त्यां बेसती अथवा सुवुं विगेरे करती हती.

मू०—तते णं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं अज्जं एवं वदासी—" नो खलु कप्पति, देवाणुप्पिए !

---

१ स्नानादिकवडे शरीरनी शुश्रूषा करे ते.

मू०—दसमस्स उक्खेवओ। एवं खलु जंबू ! जाव अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

कण्हा १ य कण्हराती २, रामा ३ तह रामरक्खिया ४ वसूया ५।
वसुगुत्ता ६ वसुमित्ता ७, वसुंधरा ८ चेव ईसाणे ॥ १ ॥

अर्थ—हवे दशमा वर्गनो उत्क्षेप करे छे—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! यावत् महावीर स्वामीए दशमा वर्गना आठ अध्ययन कह्यां छे. ते आ प्रमाणे.—कृष्णा १, कृष्णराजी २, रामा ३, रामरक्षिता ४, वसु ५, वसुगुप्ता ६, वसुमित्रा ७ अने वसुंधरा ८. आ आठे ईशान देवलोकनी देवीओ छे.

मू०—पढमज्झयणस्स उक्खेवओ। एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे समोसरणं, जाव परिसा पज्जुवासति।

अर्थ—तेमां पहेला अध्ययननो उत्क्षेप करे छे.—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये राजगृह नगरमां स्वामी समवसर्या. यावत् पर्षदा तेमने सेववा लागी.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं कण्हा देवी ईसाणे कप्पे कण्हवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए कण्हंसि सीहासणंसि, सेसं जहा कालीए।

अर्थ—ते काळे ते समये कृष्णा नामनी देवी ईशानकल्प नामना बीजा देवलोकमां कृष्णावतंसक नामना विमानमां

सभाए सुहम्माए पउमंसि सीहासणंसि, जहा कालीए।

अर्थ—ते काळे ते समये पद्मावती देवी सौधर्मकल्प नामना पहेला देवलोकमां पद्मावतंसक नामना विमानमां सुधर्मा नामनी सभामां पद्म नामना सिंहासन उपर बेठी हती. शेष सर्व अधिकार काली देवीनी जेवो कहेवो.

मू०—एवं अट्ठ वि अज्झयणा कालीगमएणं नायव्वा, णवरं सावत्थीए दो जणीओ, हत्थिणाउरे दो जणीओ, कंपिल्लपुरे दो जणीओ, सागेयनयरे दो जणीओ, पउमे पियरो, विजया मायराओ, सव्वाओ वि पासस्स अंतिए पव्वतियाओ, सक्कस्स अग्गमाहिसीओ, ठिई सत्त पलिओवमाइं, महाविदेहे वासे अंतं काहिंति। णवमो वग्गो समत्तो (९)॥ १५७॥

अर्थ—ए ज प्रमाणे आठे अध्ययनो काली देवीना गमावडे जाणवा. विशेष ए के-पूर्व भवे बे श्रावस्ति नगरीमां उत्पन्न थइ, बे हस्तिनापुरमां उत्पन्न थइ, बे कांपिल्यपुरमां उत्पन्न थइ अने बे साकेत नगरमां उत्पन्न थइ हती. ते सर्वेना पिताओ पद्म नामना हता अने माताओ विजया नामनी हती. ते सर्वे (आठे पुत्रीओ) ए श्रीपार्श्वनाथनी पासे प्रव्रज्या लीधी. यावत् शक्र इंद्रनी अग्रमहिषीओ थइ. तेमनी स्थिति सात पल्योपमनी कहेली छे. ते सर्वे महाविदेह क्षेत्रमां उत्पन्न थइ दीक्षा लइ सिद्धिपदने पामशे. नवमो वर्ग समाप्त थयो (९). १५७.

आठ अध्ययनवाळो नवमो वर्ग समाप्त.

समत्तो (८) ॥ १५६ ॥

अर्थ—ए ज प्रमाणे शेष त्रण पुत्रीओ पण मथुरा नगरीमां उत्पन्न थइ. तेमना नाम सदृश मातापितानां नाम पण जाणवां, (ते त्रणे चंद्र इंद्रनी इंद्राणीओ समजवी.) आठमो वर्ग समाप्त थयो. (८). १५६.

चार अध्ययनवाळो आठमो वर्ग समाप्त.

मू०—णवमस्स उक्खेवओ । एवं खलु जंबू ! जाव अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—पउमा १ सिवा २ सती ३ अंजू ४ रोहिणी ५ णवमिया ६ अचला ७ अच्छरा ८।

अर्थ—हवे नवमा अध्ययननो उत्क्षेप करे छे.—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! यावत् महावीर स्वामीए नवमा वर्गना आठ अध्ययन कह्यां छे ते आ प्रमाणे.—पद्मा १, शिवा २, सती ३, अंजू ४, रोहिणी ५, नवमिका ६, अचला ७ अने अप्सरा ८.

मू०—पढमज्झयणस्स उक्खेवओ । एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे समोसरणं, जाव परिसा पज्जुवासइ ।

अर्थ—तेमां पहेला अध्ययननो उत्क्षेप करे छे.—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये राजगृह नगरने विषे स्वामी समवसर्या. यावत् पर्षदा तेमने सेववा लागी.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं पउमावई देवी सोहम्मे कप्पे पउमवडेंसए विमाणे

रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासति ।

अर्थ—तेमां पहेला अध्ययननो उत्क्षेप करे छे.—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये राजगृह नगरमां स्वामी समवसर्या. यावत् पर्षदा सेववा लागी.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं चंदप्पभा देवी चंदप्पभंसि विमाणंसि चंदप्पभंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए, णवरं पुव्वभवे महुराए णयरीए भंडि(चंद)वडेंसए उज्जाणे चंदप्पभे गाहावती चंदसिरी भारिया चंदप्पभा दारिया, चंदस्स अग्गमहिसी, ठिती अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं, सेसं जहा कालीए ।

अर्थ—ते काळे ते समये चंद्रप्रभा नामनी देवी चंद्रप्रभ नामना विमानमां चंद्रप्रभ नामना सिंहासन उपर बेठी हती. शेष अधिकार काली देवीनी जेवो कहेवो. विशेष ए के—पूर्व भवमां मथुरा नामनी नगरी हती, तेनी बहार चंद्रावतंसक नामनुं उद्यान हतुं. ते नगरीमां चंद्रप्रभ नामे गाथापति हतो. तेने चंद्रश्री नामनी भार्या हती. तेमने चंद्रप्रभा नामनी पुत्री हती. ते यावत् चंद्र देवेंद्रनी अग्रमहिषी थइ. तेनी स्थिति अर्ध पल्योपम उपर पचास हजार वर्षनी कही छे. शेष सर्व अधिकार काली देवीनी सदृश कहेवो.

मू०—एवं सेसाओ वि महुराए णयरीए मायापियरो वि धूयासरिसणामा अट्ठमो वग्गो

अर्थ—ते काळे ते समये सूरप्रभा नामनी देवी सूर नामना विमानने विषे सूरप्रभ नामना सिंहासन उपर बेठी हती, विगेरे शेष सर्व वृत्तांत काली देवीनी जेवो कहेवो. विशेष ए के—पूर्वभवमां अरक्खुरी नगरीमां सूरप्रभ नामना गाथापतिनी सूरश्री नामनी भार्यानी सूरप्रभा नामनी पुत्री हती. ते सूर (सूर्य) नामना इंद्रनी अग्रमहिषी थइ, अर्ध पल्योपम उपर पांच सो वर्षनी तेनी स्थिति कहेली छे. शेष सर्व अधिकार काली देवी सदृश जाणवो.

मू०—एवं सेसाओ वि सव्वाओ अरक्खुरीए णयरीए। सत्तमो वग्गो समत्तो (७) ॥ १५५ ॥

अर्थ—ए ज प्रमाणे शेष सर्व (३) देवीनो (सूर्य इंद्रनी इंद्राणीओनो) अधिकार जाणवो. ते पण अरक्खुरी नगरीमां उत्पन्न थइ हती. विगेरे. सातमो वर्ग समाप्त थयो (७) १५५.

चार अध्ययनवाळो सातमो वर्ग समाप्त.

मू०—अट्ठमस्स उक्खेवओ। एवं खलु जंबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—चंदप्पभा १ दोसिणाभा २ अच्चिमाली ३ पभंकरा ४।

अर्थ—हवे आठमा वर्गनो उत्क्षेप करे छे—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! यावत् श्रीमहावीर स्वामीए आठमा वर्गनां चार अध्ययन कह्यां छे. ते आ प्रमाणे—चंद्रप्रभा १, दोषीनाभा २, अर्चिर्माली ३, अने प्रभंकरा ४.

मू०—पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ। एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं

मू०—सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ । एवं खलु जंबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—सूरप्पभा १ आयवा २ अच्चिमाली ३ पभंकरा ४ ।

अर्थ—हवे सातमा वर्गनो उत्क्षेप करे छे—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! यावत् श्रीमहावीर स्वामीए सातमा वर्गना चार अध्ययन कह्यां छे. ते आ प्रमाणे—सूरप्रभा १, आतपा २, अर्चिमाली ३ अने प्रभंकरा ४.

मू०—पढमज्झयणस्स उक्खेवओ । एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ ।

अर्थ—पहेला अध्ययननो उत्क्षेप करे छे—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काले ते समये राजगृह नगरमां स्वामी समवसर्या यावत् पर्षदा तेमने सेववा लागी.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं सूरप्पभा देवी सूरंसि विमाणंसि सूरप्पभंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहा, णवरं पुव्वभवो अरक्खुरीए नयरीए सूरप्पभस्स गाहावइस्स सूरसिरीए भारियाए सूरप्पभा दारिया, सूरस्स अग्गमहिसी, ठिती अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससएहिं अब्भहियं, सेसं जहा कालीए ।

मत्तो (५) ॥ १५३ ॥

अर्थ—ए ज प्रमाणे बाकीना एकत्रीश अध्ययनो दक्षिण दिशाना वानमंतरना आठ इंद्रोनां कहेवां. कमलप्रभा विगेरे सर्व (३१) कन्याओए नागपुरमां सहस्राम्रवण उद्यानमां दीक्षा लीधी. तेमना मातपितानां नाम पुत्री सदृश जाणवा. सर्वेनी अर्ध पल्योपमनी स्थिति जाणवी. ए रीते पांचमो वर्ग पूर्ण थयो. (५) १५३.

बत्रीश अध्ययनवाळो पांचमो वर्ग समाप्त.

मू०—छट्ठो वि वग्गो पंचमवग्गसरिसो । णवरं महाकालिंदाणं उत्तरिल्लाणं इंदाणं अग्गमहिसीओ । पुव्वभवे सागेयनयरे उत्तरकुरुउज्जाणे मायापिया धूयासरिसणामया । सेसं तं चेव । छट्ठो वग्गो समत्तो (६) ॥ १५४ ॥

अर्थ—छट्ठो वर्ग पण पांचमा वर्ग जेवो ज कहेवो. विशेष ए के—ते सर्व कन्याओ महाकालेंद्र विगेरे उत्तरदिशाना आठ इंद्रोनी (३२) अग्रमहिषीओ थइ. पूर्वभवमां साकेत नगरने विषे तेओ उत्पन्न थइ. उत्तरकुरु नामना उद्यानमां तेमणे दीक्षा ग्रहण करी. ते पुत्रीओनां नामनी सदृश तेमना मातपितानां नाम जाणवां. शेष अधिकार सर्व पूर्ववत् कहेवो. ए रीते छट्ठो वर्ग समाप्त थयो. (६). १५४.

बत्रीश अध्ययनवाळो छट्ठो वर्ग समाप्त.

स्वामी समवसर्या यावत् पर्षदा आवीने तेमने सेववा लागी.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं कमला देवी कमलाए रायहाणीए कमलवडेंसए भवणे कमलंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहेव, णवरं पुव्वभवे नागपुरे नयरे सहसंबवणे उज्जाणे कमलस्स गाहावतिस्स कमलसिरीए भारियाए कमला दारिया पासस्स अरहओ अंतिए निक्खंता कालस्स पिसायकुमारिंदस्स अग्गमहिसी अद्धपलिओवमं ठिती।

अर्थ—ते काळे ते समये कमला नामनी देवी कमला नामनी राजधानीमां कमलावतंसक नामना भवनमां कमल नामना सिंहासन उपर बेठी हती. विगेरे शेष अधिकार काली देवीनी जेम कहेवो. विशेष ए के—पूर्व भवने विषे नागपुर नामनुं नगर हतुं, तेनी बहार सहस्राम्रवण नामनुं उद्यान हतुं. ते नगरमां कमल नामनो गाथापति हतो, तेने कमलश्री नामनी भार्या हती. तेमने कमला नामनी पुत्री हती. तेणे पार्श्वनाथ अरिहंतनी पासे दीक्षा लीधी. विगेरे सर्व पूर्ववत् जाणवुं. यावत् काल नामना पिशाच कुमारेंद्रनी अग्रमहिषी थइ. तेनी अर्ध पल्योपमनी स्थिति कहेली छे.

मू०—एवं सेसा वि अज्झयणा दाहिणिल्लाणं वाणमंतरिंदाणं भाणियव्वाओ, सव्वाओ णागपुरे सहसंबवणे उज्जाणे मायापिया धूयासरिसनामया, ठिती अद्धपलिओवमं। पंचमो वग्गो स-

मू०—एवं खलु सुरूया वि १ रूयंसा वि २ रूयगावती वि ३ रूयकंता वि ४ रूयप्पभा वि ५। एयाओ चेव उत्तरिल्लाणं इंदाणं भाणियव्वाओ जाव महाघोसस्स। णिक्खेवओ चउत्थवग्गस्स (४) ॥ १५२ ॥

अर्थ—ए ज प्रमाणे निश्चे अनुक्रमे सुरुचा १, रुचांशा २, रुचकावती ३ रुचकांता ४ अने रुचप्रभा ५ नामनी पांच देवीओनां पांच अध्ययन कहेवां. ए ज प्रमाणे कुल छ छ देवीओ यावत् नवमा महाघोष सुधी उत्तरदिशाना इंद्रोनी कहेवी. ते ज रीते छ छ अध्ययनो नवेनां कहेवाथी चोपन अध्ययन थाय छे, आ रीते चोथा वर्गनो निक्षेप कह्यो. (४) १५२.

चोपन अध्ययनवाळो चोथो वर्ग समाप्त.

मू०—पंचमवग्गस्स उक्खेवओ। एवं खलु जंबू ! जाव बत्तीसं अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

कमला १ कमलप्पभा २ चेव, उप्पला ३ य सुदंसणा ४।
रूववती ५ बहुरूवा ६, सुरूवा ७ सुभगा ८ वि य ॥ १ ॥
पुण्णा ९ बहुपुत्तिया १० चेव, उत्तमा ११ भारिया १२ वि य।
पउमा १३ वसुमती १४ चेव, कणगा १५ कणगप्पभा १६ ॥ २ ॥
वडेंसा १७ केउमती १८ चेव, वइरसेणा १९ रयिप्पिया २०।

रोहिणी २१ नवमिया २२ चेव, हिरी २३ पुप्फवती २४ ति य ॥ ३ ॥
भुयगा २५ भुयगवती २६ चेव, महाकच्छा २७ ऽपराइया २८ ।
सुघोसा २९ विमला ३० चेव, सुस्सरा ३१ य सरस्सती ३२ ॥ ४ ॥

अर्थ—हवे पांचमा वर्गनो उत्क्षेप करे छे.—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! यावत् महावीर स्वामीए पांचमा वर्गना बत्रीश अध्ययन कह्यां छे. ते आ प्रमाणे—कमला देवी १, कमलप्रभा देवी २, उत्पला ३, सुदर्शना ४, रूपवती ५, बहुरूपा ६, सुरूपा ७, सुभगा, ८, पूर्णा ९, बहुपुत्रिका १०, उत्तमा ११, भारिका १२, पद्मा १३, वसुमती १४, कनका १५, कनकप्रभा १६, अवतंसा १७, केतुमती १८, वज्रसेना १९, रतिप्रिया २०, रोहिणी २१, नवमिका २२, ह्री २३, पुष्पवती २४, भुजगा २५, भुजगवती २६, महाकच्छा २७, अपराजिता २८, सुघोषा २९, विमला ३०, सुस्वरा ३१ अने सरस्वती ३२ (आ बत्रीश देवीओनां बत्रीश अध्ययन जाणवां.)

मू०—उक्खेवओ पढमज्झयणस्स । एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासति ।

अर्थ—हवे पहेला अध्ययनो उत्क्षेप करे छे—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये राजगृह नगरमां महावीर

१ फुडाइय (स्फुटा नामनी देवी) मत्यंतर.

यगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासति ।

अर्थ—तेमां पहेला अध्ययननो उत्क्षेप करे छे—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये राजगृह नगरना गुणशील चैत्यमां महावीर स्वामी समवसर्या यावत् पर्षदा आवी स्वामीने सेववा लागी.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं रूया देवी रूयाणंदा[1] रायहाणी रूयगवर्डिसए भवणे रूयगंसि सीहासणंसि जहा कालीए तहा, नवरं पुव्वभवे चंपाए पुण्णभद्दे चेतिए रूयगगाहावई रूयगसिरी भारिया रूया दारिया, सेसं तहेव, णवरं भूयाणंदअग्गमहिसित्ताए उववाओ देसूणं पलिओवमं ठिई । णिक्खेवओ ।

अर्थ—ते काळे ते समये रुचा देवी रुचानंदा राजधानीमां रुचकावतंसक नामना भवनमां रुचक नामना सिंहासनपर बेठी हती. विगेरे सर्व काली देवीनी जेम जाणवुं. विशेष ए के—पूर्वभवमां चंपा नामनी नगरी हती. पूर्णभद्र नामे चैत्य हतुं. त्यां रुचक नामनो गाथापति हतो, तेने रुचकश्री नामनी भार्या हती. तेमने रुचा नामनी पुत्री हती. शेष अधिकार पूर्ववत् कहेवो. विशेष ए के—भूतानंद नामना इंद्रनी अग्रमहिषीपणे ते उत्पन्न थइ. तेनी कांइक ओछी एक पल्योपमनी स्थिति छे. आ प्रमाणे चोथा वर्गना पहेला अध्ययननो निक्षेप कह्यो.

---

१ भूयाणंदा (भूतानंदा) प्रत्यंतर.

अर्थ—आवी रीते ज छ अध्ययनो कांइ पण विशेष (फारफेर) विना वेणुदेवनां पण कहेवां. ए ज प्रमाणे यावत् नवमा घोषेंद्रनां पण आ ज प्रमाणे छ अध्ययनो कांइ पण विशेष विना कहेवां.

मू०—एवमेते दाहिणिल्लाणं इंदाणं चउप्पण्णं अज्झयणा भवंति, सव्वाओ वि वाणारसीए काममहावणे चेइए। तइयवग्गस्स णिक्खेवओ (३) ॥ १५१ ॥

अर्थ—आ प्रमाणे दक्षिण दिशाना नव इंद्रोनां आ चोपन अध्ययनो थाय छे. आ सर्वे वाराणसी नगरीना काममहावन नामना चैत्यमां जाणवां. आ प्रमाणे त्रीजा वर्गनो निक्षेप कह्यो. (३). १५१.

चोपन अध्ययनवाळो त्रीजो वर्ग समाप्त.

मू०—चउत्थस्स उक्खेवओ। एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं चउत्थवग्गस्स चउप्पण्णं अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—पढमे अज्झयणे जाव चउप्पण्णइमे अज्झयणे।

अर्थ—हवे चोथा वर्गनो उत्क्षेप कहे छे—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवान यावत् मोक्षपदने पामेला महावीर स्वामीए धर्मकथाना चोथा वर्गना चोपन अध्ययन कह्यां छे. ते आ प्रमाणे—पहेलुं अध्ययन यावत् चोपनमुं अध्ययन.

मू०—पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ। एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं रा-

अद्धपलिओवमठिती, सेसं तहेव।

अर्थ—(ते वखते गौतम स्वामीए) ते देवीना पूर्वभवनी पृच्छा करी. (त्यारे भगवान बोल्या–) वाराणसी नामनी नगरी हती. काम महावन नामनुं चैत्य हतुं. ते नगरीमां इल नामनो गाथापति हतो, तेने इलश्री नामनी भार्या हती. तेमने इला नामनी पुत्री हती. शेष अधिकार काली देवीनी जेम-जाणवो. विशेष ए के–ते धरणेंद्रनी अग्रमहिषीपणे उत्पन्न थइ छे. तेनी स्थिति अर्ध पल्योपमथी कांइक अधिक जाणवी. शेष अधिकार ते ज प्रमाणे (कालीदेवी प्रमाणे) जाणवो.

मू०—एवं खलु णिक्खेवओ पढमज्झयणस्स ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे पहेला अध्ययननो निक्षेप कह्यो.

मू०—एवं कमा सतेरा १ सोयामणी २ इंदा ३ घणा ४ विज्जुयावि ५, सव्वाओ एयाओ धरणस्स अग्गमहिसीओ एव ।

अर्थ—ए ज प्रमाणे अनुक्रमे सतेरा १, सौदामिनी २, इंद्रा ३, घना ४, अने विद्युता ५, ए पांच देवीओ पण कहेवी (तेमनां पांच अध्ययन कहेवां.) ते सर्वे धरणेंद्रनी अग्रमहिषीओ ज छे.

मू०—एते छ अज्झयणा वेणुदेवस्स वि अविसेसिया भाणियव्वा, एवं जाव घोसस्स वि एए चेव छ अज्झयणा ।

मू०—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे णयरे, गुणसीलए चेइए, सामी समोसढे, परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासति ।

अर्थ—(सुधर्मा स्वामी उत्तर आपे छे–) आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये राजगृह नामनुं नगर हतुं, तेनी बहार गुणशील नामनुं चैत्य हतुं. त्यां एकदा महावीर स्वामी समवसर्या. तेमने वंदन करवा नगरमांथी पर्षदा नीकळी, यावत् भगवाननी सेवा करवा लागी.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं इला देवी धरणीए रायहाणीए इलावडंसए भवणे इलंसि सीहासणंसि एवं कालीगमएणं जाव णट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया ।

अर्थ—ते काळे ते समये इला नामनी देवी धरणी नामनी राजधानीमां इलावतंसक नामना भवनने विषे इल नामना सिंहासन उपर बेठी हती. विगेरे सर्व ए ज प्रमाणे कालीदेवीना गमावडे यावत् नाट्यविधि देखाडीने पाछी गइ.

मू०—पुव्वभवपुच्छा । वाराणसीए णयरीए काममहावणे चेइए, इले गाहावती, इलसिरी भारिया, इला दारिया, सेसं जहा कालीए । णवरं धरणस्स अग्गमहिसित्ताए उववाओ सातिरेग-

१ प्रत्यतरमां अलादेवी अलावतंसक भवन अल नामनुं सिंहासन लख्युं छे. ते ज प्रमाणे आगल पण जाणवुं.

अर्थ—ए ज प्रमाणे शेष चार अध्ययन पण श्रावस्ती नगरीना जाणवा. विशेष ए के–पुत्रीनां नाम सदृश माता पितानां नाम जाणवां (२–३–४–५). आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! बीजा वर्गनो निक्षेप कह्यो. (२). १५०

इति पांच अध्ययनवाळो बीजो वर्ग समाप्त थयो.

मू०—उक्खेवओ तइयवग्गस्स। एवं खलु जंबू समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं तइयस्स वग्गस्स चउपण्णं अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–पढमे अज्झयणे जाव चउपण्णतिमे अज्झयणे ।

अर्थ—हवे त्रीजा वर्गनो उत्क्षेप करे छे.–आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवान यावत् मोक्षपदने पामेला महावीर स्वामीए त्रीजा वर्गना चोपन अध्ययन कह्यां छे. ते आ प्रमाणे–पहेलुं अध्ययन, यावत् चोपनमुं अध्ययन.

मू०—जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं तइयस्स वग्गस्स चउप्पन्नज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ।

अर्थ—(जंबूस्वामी पूछे छे–) हे भगवान ! जो श्रमण भगवान यावत् मोक्षपदने पामेला श्रीमहावीरस्वामीए धर्मकथाना त्रीजा वर्गना चोपन अध्ययन कह्यां छे, तो पहेला अध्ययननो श्रमण भगवान यावत् मोक्षपदने पामेला महावीर स्वामीए कयो अर्थ कह्यो छे ?

नामना सिंहासनपर बेठी हती. इत्यादिक काली देवीना गमा (आलावा) वडे सर्व कहेवुं, यावत् ते नाट्यविधिने देखाडी यावत् पाछी गइ.

मू०—पुव्वभवपुच्छा । सावत्थी णयरी, कोट्ठए चेइए, जियसत्तू राया, सुंभे गाहावती, सुंभसिरी भारिया, सुंभा दारिया, सेसं जहा कालिया, णवरं अध्धुट्ठातिं पलिओवमाइं ठिती । एवं खलु जंबू ! निक्खेवओ अज्झयणस्स (१)।

अर्थ—(ते वखते गौतम स्वामीए महावीर स्वामीनी पासे) पूर्वभवनी पृच्छा करी. (त्यारे भगवान बोल्या—) श्रावस्ती नामनी नगरी हती. तेनी बहार कोष्ठक नामनुं चैत्य हतुं. ते नगरीमां जितशत्रु नामे राजा हतो. ते नगरीमां शुंभ नामनो गाथापति हतो. तेने शुंभश्री नामनी भार्या हती. तेमने शुंभा नामनी पुत्री हती. शेष सर्व अधिकार काली देवीनी जेवो कहेवो. विशेष ए के—आ शुंभा देवीनी स्थिति साडा त्रण पल्योपमनी जाणवी. आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! बीजा वर्गना पहेला अध्ययननो निक्षेप (अर्थ) कह्यो छे. (१).

मू०—एवं सेसा वि चत्तारि अज्झयणा सावत्थीए । नवरं माया पिया सरिसनामया (५)। एवं खलु जंबू ! निक्खेवओ बितीयवग्गस्स (२)॥ १५० ॥

मू०—जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दोच्चस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? ।

अर्थ—(प्रश्न) हे भगवान् ! जो श्रमण भगवान यावत् मोक्षपदने पामेला महावीर स्वामीए धर्मकथाना बीजा वर्गना पांच अध्ययन कह्या छे, तो हे भगवान् ! बीजा वर्गना पहेला अध्ययननो शो अर्थ कह्यो छे ?

मू०—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं तेणं समए णं रायगिहे णयरे, गुणसीलए चेइए, सामी समोसढो, परिसा निग्गया जाव पज्जुवासति ।

अर्थ—(उत्तर-) आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये राजगृह नामनुं नगर हतुं. तेनी बहार गुणशील नामनुं चैत्य हतुं. त्यां एकदा श्रीमहावीर स्वामी समवसर्या. तेमने वंदन करवा नगरमांथी पर्षदा नीकळी, यावत् भगवानने सेववा लागी.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं सुंभा देवी बलिचंचाए रायहाणीए सुंभवडेंसए भवणे सुंभंसि सीहासणंसि कालीगमएणं जाव णट्टविहिं उवदंसेत्ता जाव पडिगया ।

अर्थ—ते काळे ते समये शुंभा नामनी देवी बलिचंचा नामनी राजधानीमां शुंभावतंसक नामना भवनमां शुंभ

मू०—एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते (१) ॥ १४६ ॥

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवान यावत् मोक्षने पामेला महावीर स्वामीए धर्मकथाना पहेला वर्गनो आ अर्थ कह्यो छे.

इति पांच अध्ययनवाळो प्रथम वर्ग संपूर्ण.

मू०—जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं जाव दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ ।

अर्थ—(जंबूस्वामी प्रश्न करे छे.) हे भगवान ! जो श्रमण भगवान यावत् मोक्षने पामेला महावीर स्वामीए (पहेला-वर्गनो आ-उपर प्रमाणे अर्थ कह्यो छे तो) बीजा वर्गनो शो उत्क्षेप (अर्थ) कह्यो छे ?

मू०—एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पन्नत्ता, तं जहा—सुंभा १, निसुंभा २, रंभा ३, निरंभा ४, मदणा ५ ।

अर्थ—(सुधर्मास्वामी उत्तर आपे छे—) आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवान यावत् मोक्षपदने पामेला महावीर स्वामीए बीजा वर्गना पांच अध्ययन कह्यां छे. ते आ प्रमाणे.—शुंभा १, निशुंभा २, रंभा ३, निरंभा ४ अने मदना ५.

અર્થ—(सुधर्मास्वामी उत्तर आपे छे–) आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये राजगृह नगर हतुं. त्यां गुणशील नामनुं चैत्य हतुं. ए ज प्रमाणे जेम राजीना संबंधमां कह्युं तेम रजनी नामनी देवीनो पण नाट्यादिक संबंध कहेवो. विशेष ए के (पूर्व भवमां) आमलकल्पा नामनी नगरी, रजनी नामनो गाथापति, तेनी रजनीश्री नामनी भार्या अने तेमने रजनी नामनी पुत्री हती. बाकीनो सर्व वृत्तांत ते ज प्रमाणे (उपर प्रमाणे) कहेवो. यावत् अंतने करशे. (३)।

मू०—एवं विज्जू वि, आमलकप्पा नयरी, विज्जुगाहावती, विज्जुसिरी भारिया, विज्जू दारिया, सेसं तहेव (४)।

अर्थ—ए ज प्रमाणे विद्युत देवीनो संबंध पण कहेवो. (विशेष ए के–पूर्वभवे) आमलकल्पा नगरी, विद्युत नामनो गाथापति, तेनी विद्युतश्री नामनी भार्या अने विद्युत नामनी पुत्री हती. शेष सर्व अधिकार ते ज प्रमाणे (उपर प्रमाणे) जाणवो. (४)।

मू०—एवं मेहा वि, आमलकप्पाए नयरीए मेहे गाहावती, मेहसिरी भारिया, मेहा दारिया, सेसं तहेव (५)।

अर्थ—ए ज प्रमाणे मेघा देवीनो संबंध पण कहेवो. (विशेष ए के–पूर्वभवे) आमलकल्पा नगरी, मेघ नामनो गाथापति, तेने मेघश्री नामनी भार्या अने तेमने मेघा नामनी पुत्री हती. शेष सर्व अधिकार ते ज प्रमाणे जाणवो. (५).

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम ! ते काळे ते समये आमलकप्पा नामनी नगरी हती. त्यां आम्रशालवन नामनुं चैत्य (उद्यान) हतुं. जितशत्रु नामे राजा हतो. ते नगरीमां राजी नामनो गाथापति हतो, तेने राजीश्री नामनी भार्या हती. तेमने राजी नामनी पुत्री थइ हती. एकदा श्रीपार्श्वनाथ स्वामी (ते नगरीनी बहार आम्रशालवन नामना चैत्यमां) समवसर्या. तेमनी पासे राजी नामनी पुत्रीए जइ कालीनी जेम दीक्षा ग्रहण करी. ते ज प्रमाणे (कालीनी जेम) ते शरीर-बकुश थइ, विगेरे ते ज सर्व कालीनी जेम कहेवुं. यावत् अंतने करशे. (मोक्ष पामशे.)

मू०—एवं खलु जंबू ! विइयज्झयणस्स निक्खेवओ (२) ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू बीजा अध्ययननो निक्षेप जाणवो (२) ।

मू०—जति णं भंते ! तइयज्झयणस्स उक्खेवतो ।

अर्थ—(जंबूस्वामीए सुधर्मास्वामीने पूछ्युं) हे भगवान ! जो (बीजा अध्ययननो आ उपर कह्या प्रमाणे निक्षेप कह्यो छे तो) त्रीजा अध्ययननो शो उत्क्षेप (अर्थ) कह्यो छे?

मू०—एवं खलु जंबू ! रायगिहे णयरे, गुणसीलए चेइए, एवं जहेव राती तहेव रयणी वि । णवरं आमलकप्पा णयरी, रयणी गाहावती, रयणसिरी भारिया, रयणी दारिया, सेसं तहेव जाव अंतं काहिति (३) ।

समणीणं णिग्गंथीणं सरीरबाउसियाणं होत्तए, तुमं च णं देवाणुप्पिए ! सरीरबाउसिया जाया अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवासि जाव आसयाहि वा सयाहि वा, तं तुमं देवाणुप्पिए ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पायच्छित्तं पडिवज्जाहि "।

अर्थ—ते जोइने ते पुष्पचूला आर्याए ते काली साध्वीने आ प्रमाणे कह्युं—"हे देवानुप्रिया! श्रमणी निर्ग्रंथी (साध्वी)-ओने शरीर बाकुशिका थवुं कल्पतुं नथी—योग्य नथी. अने हे देवानुप्रिया! तुं तो शरीर बाकुशिका थइ सती वारंवार हाथ पग विगेरे धुए छे यावत् पाणी छांटीने बेसे छे, सुवे छे विगेरे कार्य करे छे, तेथी तुं हे देवानुप्रिया! आ पापस्थाननी आलोचना कर यावत् प्रायश्चित्त अंगीकार कर."।

मू०—तते णं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्ठं नो आढाति जाव तुसिणीया संचिट्ठति।

अर्थ—त्यारे (ते सांभळीने) ते काली साध्वीए पुष्पचूला आर्याना आ अर्थ (वचन) उपर आदर न कर्यो. यावत् मौन ज रही.

मू—तते णं ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ कालिं अज्जं अभिक्खणं अभिक्खणं हीलेंति णिंदंति

खिंसंति गरिहंति अवमण्णंति, अभिक्खणं अभिक्खणं एयमट्ठं निवारेंति ।

अर्थ—त्यारे ते पुष्पचूला विगेरे साध्वीओ ते काली साध्वीनी वारंवार हीलना करवा लागी, निंदवा लागी, खिंसा करवा लागी, गर्हा करवा लागी, अवज्ञा करवा लागी, अने वारंवार ए अर्थ (पापकर्म)नुं निवारण करवा लागी.

मू०—तते णं तीसे कालीए अज्जाए समणीहिं णिग्गंथीहिं अभिक्खणं अभिक्खणं हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—

अर्थ—ते वखते ते श्रमणी निर्ग्रंथीओ (साध्वीओ) थी वारंवार हीलना कराती यावत् निवारण कराती ते काली नामनी साध्वीने आवा प्रकारनो अध्यवसाय (विचार) यावत् उत्पन्न थयो.

मू०—"जया णं अहं आगारवासमज्झे वसित्था, तया णं अहं सयंवसा, जप्पभिइं च णं अहं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वतिया, तप्पभिइं च णं अहं परवसा जाया, तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते पाडिक्कियं उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए" त्ति कट्टु एवं संपेहेति, संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते पाडिएक्कं उवस्सयं गिण्हति, तत्थ णं अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छंदमती अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवेति जाव आसयइ वा सयइ वा ।

अर्थ—त्यारपछी ते काली साध्वीए [1]पासत्था, पासत्थविहारी, [2]अवसन्ना, अवसन्नविहारी, कुशीला, कुशीलविहारी, [3]यथाच्छंदा, यथाच्छंदविहारी, संसक्तो अने संसक्त विहारवाळी थइने घणा वर्षो सुधी चारित्र पर्याय पाळ्यो. पाळीने अर्ध मासनी संलेखना (अनशन) वडे पोताना आत्माने (देहने) क्षीण कर्यो. क्षीण करीने त्रीश भक्त (भोजन) ने अनशन वडे छेद्या. छेदीने ते स्थान (पापकर्म) नी आलोचना कर्या विना अने प्रतिक्रमण कर्या विना काळ समये काळ (मरण) पामीने चमरचंचा नामनी राजधानीमां कालावतंसक नामना भवनमां [5]उपपात नामनी सभामां देवनी शय्यामां देवदूष्यने आंतरे रही अंगुलना असंख्यातमा भाग मात्रनी अवगाहना वडे काली नामनी देवीपणे उत्पन्न थइ.

मू०—तते णं सा काली देवी अहुणोववण्णा समाणी पंचविहाए पज्जत्तीए जहा सूरियाभो जाव भासामणपज्जत्तीए ।

अर्थ—त्यारपछी ते काली देवी हमणा उत्पन्न थइ सती सूर्याभ देवनी जेम यावत् भाषापर्याप्ति अने मनपर्याप्ति विगेरे पांच प्रकारनी पर्याप्तिवडे पूर्ण थइ.

मू०—तते णं सा काली देवी चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव अण्णेसिं च बहूणं कालवडें-

---

१ ज्ञान, दर्शन, चारित्रनी पासे रहे ते. २ शुद्ध क्रियामा आळसु.

३ इच्छा प्रमाणे वर्ते ते. ४ ज्ञानादिकनी विराधना करे ते. ५ जेमा देवता उत्पन्न थाय ते.

अर्थ—" ज्यारे हुं गृहवासने विषे वसती हती, त्यारे हुं स्ववश (स्वतंत्र) हती, अने ज्यारथी आरंभीने में मुंडित थइ अगारवासथी अनगार वासनी प्रव्रज्या लीधी छे त्यारथी आरंभीने हुं परवश (पराधीन) थइ छुं, तेथी हवे मारे काले प्रभातकाळ प्रकाशमान होय एवी रात्री थाय त्यारे (प्रातःकाळे) यावत् सूर्य देदीप्यमान थाय त्यारे जूदो उपाश्रय अंगीकार करीने विचरवुं (रहेवुं) श्रेयस्कर छे." आ प्रमाणे तेणीए विचार कर्यो, विचार करीने काले (बीजे दिवसे) यावत् सूर्य देदीप्यमान थयो त्यारे तेणीए पृथक् उपाश्रय ग्रहण कर्यो. त्यां ते अनिवारिता[1], अनिषेधिता[2] अने स्वेच्छाचारी मतिवाळी वारंवार हाथ पग विगेरे धोवा लागी, यावत् पाणी छांटीने बेसवा लागी अने सुवा लागी.

मू०—तए णं सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहाछंदा अहाछंदविहारी संसत्ता संसत्तविहारी बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेति, झूसित्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ, छेदित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयअप्पडिकंता कालमासे कालं किच्चा चमरचंचाए रायहाणीए कालवडिंसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिया अंगुलस्स असंखेज्जाइभागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदेवीत्ताए उववण्णा।

१ कोइ निवारण करनार नथी एवी. २ कोइ निषेध करनार नथी एवी.

सगभवणवासीणं असुरकुमाराणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं जाव विहरति ।

अर्थ—त्यां ते काली देवी चार हजार सामानिक देवो यावत् बीजा घणा कालावतंसक नामना भवनमां वसनारा असुरकुमार जातिना देव अने देवीओनुं अधिपतिपणुं पाळती सती यावत् विचरे छे-रहेली छे.

मू०—एवं खलु गोयमा ! कालीए देवीए सा दिव्वा देविड्ढी ३ लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम ! काली देवीए ते दिव्य (मनोहर) देवऋद्धि लब्ध करी छे, प्राप्त करी छे अने अत्यंत प्राप्त करी छे.

मू०—कालीए णं भंते ! देवीए केवतियं कालं ठिती पन्नत्ता ?

अर्थ—गौतमस्वामीए पूछ्युं—हे भगवान ! काली देवीनी केटलो काळ स्थिति कहेली छे ?

मू०—गोयमा ! अड्ढाइज्जाइं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ।

अर्थ—भगवाने उत्तर आप्यो—हे गौतम ! तेनी अढी पल्योपमनी स्थिति कहेली छे.

मू०—काली णं भंते ! देवी ताओ देवलोगाओ अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ? ।

अर्थ—प्रश्न—हे भगवान ! काली नामनी देवी ते (भवनपति) देवलोकथी अनंतर (तरतज) चवीने क्यां जशे ? क्यां उत्पन्न थशे ?

मू०—गोयमा ! महाविदेह वासे सिज्झिहिति ।

अर्थ—उत्तर—हे गौतम ! महाविदेह क्षेत्रमां उत्पन्न थइ यावत् सिद्धिपदने पामशे.

मू०—एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमवग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि ॥ १४८ ॥

धम्मकहाणं पढमज्झयणं समत्तं.

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण यावत् सिद्धिपदने पामेला भगवान महावीरस्वामीए पहेला वर्गना पहेला अध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे. ते में तमने कह्यो. १४८.

इति धर्मकथाना पहेला वर्गनुं काली नामनुं पहेलुं अध्ययन समाप्त. १.





(वन) हतुं. त्यां एकदा श्री महावीर स्वामी समवसर्या. तेमने वांदवा माटे पर्षदा नगरमांथी नीकळी यावत् भगवाननी सेवा करवा लागी.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं राई देवी चमरचंचाए रायहाणीए एवं जहा काली तहेव आगया णट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया।

अर्थ—ते काले ते समये राजी नामनी देवी चमरचंचा नामनी राजधानीथी एज प्रमाणे जेम काली देवी आवी हती तेम ज आवी अने नाट्यविधि देखाडीने पाछी गइ।

मू०—भंते त्ति भगवं गोयमे पुव्वभवपुच्छा।

अर्थ—ते वखते हे भगवान ! एम कहीने भगवान प्रत्ये गौतम स्वामीए ते (राजीदेवी) ना पूर्वभवनी पृच्छा[1] करी. (त्यारे भगवान बोल्या के)—

मू०—एवं खलु गोयमा ! ते णं काले णं ते णं समए णं आमलकप्पा णयरी, अंबसालवणे चेइए, जियसत्तू राया, राई गाहावती, राईसिरी भारिया, राई दारिया, पासस्स समोसरणं, राई दारिया जहेव काली तहेव निक्खंता, तहेव सरीरबाउसिया, तं चेव सव्वं जाव अंतं काहिति।

---

१ प्रश्न.

अथ प्रथमवर्ग द्वितीय अध्ययन.

मू०—जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, बितियस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

अर्थ—जंबूस्वामी सुधर्मास्वामीने पूछे छे—जो हे भगवान ! श्रमण यावत् सिद्धिपदने पामेला भगवान् महावीर स्वामीए धर्मकथाना पहेला वर्गना पहेला अध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे, तो हे भगवान ! बीजा अध्ययननो श्रमण यावत् सिद्धिपदने पामेला भगवान् महावीर स्वामीए कयो अर्थ कह्यो छे ?

मू०—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे णगरे, गुणसीलए चेइए, सामी समोसढे, परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासति ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये राजगृह नामनुं नगर हतुं. ते नगरनी बहार गुणशील नामनुं चैत्य

सुधर्मा नामनी सभामां कृष्ण नामना सिंहासन उपर बेठी हती. शेष सर्व अधिकार काली देवीनी जेम कहेवो.

मू०—एवं अट्ठ वि अज्झयणा कालीगमएणं णेयव्वा, णवरं पुव्वभवे वाणारसीए नयरीए दो जणीओ, रायगिहे नयरे दो जणीओ, सावत्थीए नयरीए दो जणीओ, कोसंबीए नयरीए दो जणीओ, रामे पिया, धम्मा माया, सव्वाओ वि पासस्स अरहओ अंतिए पव्वइयाओ, पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए, ईसाणस्स अग्गमहिसीओ, ठिती णवपलिओवमाइं, महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति बुज्झिहिंति मुच्चिहिंति सव्वदुक्खाणं अंतं काहिंति । एवं खलु जंबू ! णिक्खेवओ दसमवग्गस्स । दसमो वग्गो समत्तो (१०) ॥ १५८ ॥

अर्थ—ए ज प्रमाणे आठे अध्ययनो काली देवीना गमावडे जाणवा. विशेष ए के–पूर्व भवे बे पुत्रीओ वाणारसी नगरीमां उत्पन्न थइ, बे राजगृह नगरमां उत्पन्न थइ, बे श्रावस्ति नगरीमां उत्पन्न थइ, अने बे कौशंबी नगरीमां उत्पन्न थइ हती. ते सर्वना पिताओ राम नामे हता अने माताओ धर्मा नामनी हती. ते सर्वे (आठे पुत्रीओ) ए श्रीपार्श्वनाथ अरिहंतनी पासे प्रव्रज्या ग्रहण करी हती. तेमणे पुष्पचूला नामनी आर्याने शिष्यापणे ते सर्व आपी हती. यावत् ते आठे ईशानेंद्रनी अग्रमहिषीओ थइ. तेमनी स्थिति नव पल्योपमनी कही छे. त्यांथी चवी महाविदेह क्षेत्रने विषे उत्पन्न थइ दीक्षा लइ सिद्ध थशे, बुद्ध थशे, कर्मथी मूकाशे अने सर्व दुःखनो अंत करशे. आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! दशमा वर्गनो

निक्षेप कह्यो छे. दशमो वर्ग समाप्त थयो. (१०) १५८.

आठ अध्ययनवाळो दशमो वर्ग समाप्त.

मू०—एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आदिगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं पुरिसोत्तमेणं जाव संपत्तेणं० । धम्मकहा सुयक्खंधो समत्तो, दसहिं वग्गेहिं नायाधम्मकहाओ समत्ताओ ॥ १५९ ॥

। समाप्तो द्वितीयः श्रुतस्कन्धः ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवान महावीर स्वामी के जे धर्मनी आदिने करनारा, तीर्थने करनारा, स्वयं बोध पामेला, पुरुषोने विषे उत्तम यावत् सिद्धिपदने पामेला छे तेमणे आ प्रमाणे कह्युं छे. आ रीते धर्मकथा नामनो श्रुतस्कंध समाप्त थयो. दश वर्गवडे ज्ञाताधर्मकथाओ समाप्त थइ. १५९.

। बीजो श्रुतस्कंध समाप्त ।

ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र समाप्त.

॥ इति श्री ज्ञाताधर्म कथाङ्ग सूत्रम् समाप्तम् ॥